Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जय गुरुदेव

उत्तर भारत के पञ्चांगों का समीक्षात्मक अध्ययन

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय की विद्यावारिधि
(पी-एच्.डी.) हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

मार्च - २००२

निर्देशक :
डॉ. मानवेन्द्र पाण्डेय
व्याख्याता - ज्योतिष
म.म.यो.वै.वि.वि.
परिसर - ग्वालियर

अनुसन्धाता :
रूपेन्द्र कुमार वर्मा
म.म.यो.वै.वि.वि.
परिसर - ग्वालियर

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, परिसर ग्वालियर
सन् २००२ ई. मार्च

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Narayan Bookbinders & Printers
221675
& Electrostat
High Court
Road
GWALIOR

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur MP Collection.

22625

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मूल्यांकन हेतु अग्रसारित

मुकुन्द शर्मा
8/4

सङ्काय प्रमुखः / विभागाध्यक्षः
महर्षि वेद विज्ञानसङ्कायः
महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालयः
जबलपुरम् – म.प्र.

परीक्षितोऽयं शोध प्रबन्धः विद्यावारिधिः
(पी.एच.डी) योग्यः। संस्तौमि।

सदानन्द शुक्लः
2.11.2002
ज्योतिषविभागस्य
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयः
लयः वाराणसी:. 2

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जय गुरुदेव

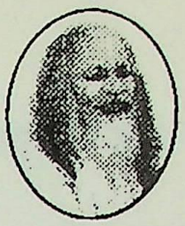

उत्तर भारत के पञ्चांगों का समीक्षात्मक अध्ययन

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय की विद्यावारिधि
(पी-एच्.डी.) हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

मार्च - २००२

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय पुस्तकालय
क्र. 22625
करौंदी, कटनी (म.प्र.)

सन्दर्भ पुस्तक

यह पुस्तक देय नहीं है।

निर्देशक :
डॉ. मानवेन्द्र पाण्डेय
व्याख्याता - ज्योतिष
म.म.यो.वै.वि.वि.
परिसर - ग्वालियर

अनुसन्धाता :
रूपेन्द्र कुमार वर्मा
म.म.यो.वै.वि.वि.
परिसर - ग्वालियर

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, परिसर ग्वालियर
सन् २००२ ई. मार्च

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जय गुरुदेव

उदार भारत के पञ्चांगों का समीक्षात्मक अध्ययन

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय की विद्यावारिधि
(पी-एच्.डी.) हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

मार्च - २००२

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय ग्रन्थालय
क्र. 22625
करौंदी, कटनी (म.प्र.)

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय

सन्दर्भ पुस्तक

यह पुस्तक देय नहीं है।

निर्देशक :
डॉ. मानवेन्द्र पाण्डेय
व्याख्याता - ज्योतिष
म.म.यो.वै.वि.वि.
परिसर - ग्वालियर

अनुसन्धाता :
रूपेन्द्र कुमार वर्मा
म.म.यो.वै.वि.वि.
परिसर - ग्वालियर

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, परिसर ग्वालियर
सन् २००२ ई. मार्च

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शोधार्थी का घोषणा-पत्र

(पैरा - १२ बी)

मैं घोषणा करता हूँ कि ''उत्तरभारत के पञ्चांगों का समीक्षात्मक अध्ययन'' शीर्षक के अंतर्गत किया गया कार्य डॉ. मानवेन्द्र पाण्डेय के निरीक्षण एवं मार्गदर्शन में महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय परिसर ग्वालियर से किया गया और शोध उपाधि समिति द्वारा स्वीकृत मेरा स्वयं का शोध कार्य है। मैंने केन्द्र पर मार्गदर्शक के पास ३०० से अधिक दिवसों की उपस्थिति दर्ज कराई है।

मैं यह भी घोषणा करता हूँ कि मेरी पूर्ण जानकारी के अनुसार शोध प्रबन्ध में कार्य का कोई भाग ऐसा नहीं है जो उपाधि प्रदान करने हेतु इस विश्वविद्यालय या किसी अन्य विश्वविद्यालय/सह–विश्वविद्यालय में बिना उचित दृष्टांत के प्रस्तुत किया गया हो।

मार्गदर्शक के हस्ताक्षर

''रूपेन्द्र कुमार वर्मा''

शोधार्थी

प्राचार्य ''शोध केन्द्र'' के हस्ताक्षर

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय
ग्वालियर – परिसर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मार्गदर्शक का प्रमाण-पत्र

(पैरा - १२ सी)

यह प्रमाणित किया जाता है कि **''उत्तरभारत के पञ्चांगों का समीक्षात्मक अध्ययन''** शीर्षक के अंतर्गत किया गया कार्य रूपेन्द्र कुमार वर्मा द्वारा मेरे मार्गदर्शन व निरीक्षण में महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय जबलपुर भारत में शोध उपाधि के लिये किया गया शोध कार्य है। यह कि शोधार्थी ने मेरे पास ३०० दिवसों से अधिक की उपस्थिति दर्ज कराई है।

मेरी पूर्ण जानकारी और विश्वास में शोध :–

(अ) शोधार्थी का स्वयं का कार्य है।

(ब) पूर्ण किया जा चुका है।

(स) विश्वविद्यालय की शोध उपाधि से सम्बन्धित अध्याय देश की आवश्यकताओं को पूर्ण करता है, और

(द) विषय वस्तु तथा भाषा दोनों ही दृष्टि से परीक्षकों के सम्मुख प्रस्तुत करने के स्तर का है।

डॉ. मानवेन्द्र पाण्डेय
सील एवं हस्ताक्षरे

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय
ग्वालियर – परिसर

अग्रेषित,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'' संकल्पना ''

भारतीय संस्कृति अपनी शक्ति एवं प्रेरणा वेदों से ही ग्रहण करती है। प्राचीनकाल से ही हमारे ऋषि–महर्षि, आचार्य एवं भारतीय संस्कृति व परम्पराओं में आस्था रखने वाले विद्वानों ने वेद को सनातन, नित्य और अपौरूषेय माना है। इस अनादि, अनन्त, अखण्ड ब्रह्माण्ड नायक परमात्मा के निःश्वासभूत प्राणियों के आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक–इन तीनों प्रकार के दुःखों का अपहरण करने वाला और चतुर्वर्ग प्राप्ति का अतिशय मनोरम मार्गदर्शक 'वेद' है। मनुमहाराज के अनुसार तीनों कालों में वेद का उपयोग है तथा सब वेद से ही प्राप्त होता है– '' भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात् प्रसिध्यति''। वेद से ही धर्म निकला है– '' वेदाद्धर्मो हि निर्बभौ ''। वेद सभी धर्मों का मूल है ; ऐसा मनुस्मृति में लिखा है– '' वेदोऽखिलो धर्ममूलम् ''। धर्म के साथ–साथ आध्यात्म, मनुष्य जाति का प्राचीनतम इतिहास, ज्ञान–विज्ञान, कला–कौशल, शिल्प–उद्योग आदि ऐसा कौन सा विषय है, जिसका प्रतिपादन वेदों में न किया गया हो ? जीवन और साहित्य की ऐसी कौन सी विधा नहीं है जिसका बीज वैदिक वाङ्मय में न मिले। वेदों के ज्ञान की दृष्टि से वर्तमान में किये जा रहे प्रयोगात्मक भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन विज्ञान की श्रेणी में रखे जा सकते हैं। ज्योतिष के मूल सिद्धान्त वेदों में निहित है, जिनके आधार पर क्रमशः वेदांग ज्योतिष, गर्गादि संहिताऐं एवं सिद्धान्त ग्रन्थों की रचनाऐं हुयीं। चारों वर्णों के कर्तव्य–कर्मों का बोध कराने वाले वेद के शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छंद एवं ज्योतिष–ये छः वेदांग हैं। वेदांग वेदों के अर्थ–ज्ञान में तथा उनके कर्मकाण्ड के प्रतिपादन में भरपूर सहायता प्रदान करते हैं। '' षड.ङ्गों वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च''।

ज्योतिष का मूल सिद्धान्त है कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड आकाशीय पिण्डों द्वारा प्रभावित होता है। दूसरे शब्दों में आकाशीय पिण्डों एवं मानव संसार में पारस्परिक सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध को वेदों में स्पष्ट रूप से दर्शाया है। कोई भी वेद या वेदभाग में आकाश, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, तारे, मास, दिन, रात एवं मुहूर्त इत्यादि के विषय में कुछ न कुछ वर्णन अवश्य ही मिलता है। ऋग्वेद संहिता की एक ऋचा (१/१०५/११) का आशय स्पष्ट करते हुये आचार्य यास्क एवं आचार्य सायण ने अन्तरिक्ष में चन्द्रमा सूर्य से नीचे माना है। इसी प्रकार अथर्ववेद के १९वें काण्ड के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'' संकल्पना ''

भारतीय संस्कृति अपनी शक्ति एवं प्रेरणा वेदों से ही ग्रहण करती है। प्राचीनकाल से ही हमारे ऋषि–महर्षि, आचार्य एवं भारतीय संस्कृति व परम्पराओं में आस्था रखने वाले विद्वानों ने वेद को सनातन, नित्य और अपौरूषेय माना है। इस अनादि, अनन्त, अखण्ड ब्रह्माण्ड नायक परमात्मा के निःश्वासभूत प्राणियों के आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक–इन तीनों प्रकार के दुःखों का अपहरण करने वाला और चतुर्वर्ग प्राप्ति का अतिशय मनोरम मार्गदर्शक 'वेद' है। मनुमहाराज के अनुसार तीनों कालों में वेद का उपयोग है तथा सब वेद से ही प्राप्त होता है– '' भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात् प्रसिध्यति''। वेद से ही धर्म निकला है– '' वेदाद्धर्मो हि निर्बभौ ''। वेद सभी धर्मों का मूल है ; ऐसा मनुस्मृति में लिखा है– '' वेदोऽखिलो धर्ममूलम् ''। धर्म के साथ–साथ आध्यात्म, मनुष्य जाति का प्राचीनतम इतिहास, ज्ञान–विज्ञान, कला–कौशल, शिल्प–उद्योग आदि ऐसा कौन सा विषय है, जिसका प्रतिपादन वेदों में न किया गया हो ? जीवन और साहित्य की ऐसी कौन सी विधा नहीं है जिसका बीज वैदिक वाङ्मय में न मिले। वेदों के ज्ञान की दृष्टि से वर्तमान में किये जा रहे प्रयोगात्मक भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन विज्ञान की श्रेणी में रखे जा सकते हैं। ज्योतिष के मूल सिद्धान्त वेदों में निहित है, जिनके आधार पर क्रमशः वेदांग ज्योतिष, गर्गादि संहिताऐं एवं सिद्धान्त ग्रन्थों की रचनाऐं हुयीं। चारों वर्णों के कर्तव्य–कर्मों का बोध कराने वाले वेद के शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरूक्त, छंद एवं ज्योतिष–ये छः वेदांग हैं। वेदांग वेदों के अर्थ–ज्ञान में तथा उनके कर्मकाण्ड के प्रतिपादन में भरपूर सहायता प्रदान करते हैं। '' षड.ङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च''।

ज्योतिष का मूल सिद्धान्त है कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड आकाशीय पिण्डों द्वारा प्रभावित होता है। दूसरे शब्दों में आकाशीय पिण्डों एवं मानव संसार में पारस्परिक सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध को वेदों में स्पष्ट रूप से दर्शाया है। कोई भी वेद या वेदभाग में आकाश, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, तारे, मास, दिन, रात एवं मुहूर्त इत्यादि के विषय में कुछ न कुछ वर्णन अवश्य ही मिलता है। ऋग्वेद संहिता की एक ऋचा (१/१०५/११) का आशय स्पष्ट करते हुये आचार्य यास्क एवं आचार्य सायण ने अन्तरिक्ष में चन्द्रमा सूर्य से नीचे माना है। इसी प्रकार अथर्ववेद के १९वें काण्ड के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

७वें सूक्त के प्रथम मन्त्र में नक्षत्रों को सुख और सुमति देने में समर्थ माना गया है। इसमें अश्विनी, भरणी आदि २८ नक्षत्रों के नाम वही हैं जो ज्योतिष ग्रन्थों में है।

संसार के शुभाशुभ फलों का निरूपण करने वाले ज्योतिषशास्त्र को वेदांगों में प्रमुख माना है तथा इसे वेद का निर्मल नेत्र कहा है– ''वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्र मनुत्तमम्''। (नारद संहिता १/४) भास्कराचार्य प्रथम ने भी ज्योतिष को वेद का नेत्र कहा है तथा अंगों में नेत्रों की प्रमुखता को स्वीकार किया है–

वेदचक्षुः किलेदं स्मृतं ज्योतिषं
मुख्यता चाङ्ग.मध्येऽस्य तेनोच्यते।
संयुतोऽपीतरैः कर्णनासादिभि-
श्चक्षुषाङ्गन हीनो न किंचित्करः।। सि.शि.,गणिताध्याय,श्लोक११

स्पष्ट है कि जिस प्रकार बिना नेत्रों के कोई मनुष्य एक पैर भी नहीं चल सकता, उसी प्रकार ज्योतिष शास्त्र के बिना वेद पुरूष में अन्धता आ जाती है। वैदिककाल में यज्ञादि के काल निर्धारण हेतु समय शुद्धि की विशेष आवश्यकता होती थी जिसके लिये ज्योतिषशास्त्र का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। इसीलिये विद्वान ज्योतिष को '' काल विज्ञापक शास्त्र '' भी कहते हैं ; क्योंकि मूहूर्तादि निकालकर की जाने वाली यज्ञादि–क्रिया–विशेष फलदायिक होती है। भास्कराचार्य ने सिद्धान्त शिरोमणि में लिखा है कि वेद यज्ञ कर्म में प्रवृत्त होते हैं और यज्ञ काल के आश्रित होते हैं तथा ज्योतिषशास्त्र से काल का ज्ञान होता है, इससे ज्योतिष का वेदांगत्व सिद्ध होता है–

वेदास्तावद् यज्ञकर्म प्रवृत्ता यज्ञाः
प्रोक्तास्ते तु कालाश्रयेण।
शास्त्रादस्मात् कालबोधो यतःस्यात्
वेदाड़त्व ज्योतिषस्योक्तमस्मात्।। (सिद्धान्त शिरोमणि)

एक समय था जब ज्योतिष को मात्र ग्रह–नक्षत्रादि का ज्ञान कराने वाला शास्त्र माना जाता था। डॉ. नेमीचन्द्र शास्त्री ने लिखा है कि– '' सूर्यादिग्रहाणां बोधकम् शास्त्रम्''। इस प्रकार सूर्यादि ग्रहों और काल का बोध कराने वाला शास्त्र ही ज्योतिष शास्त्र है। आदिकाल (५०० ई. पू. से ५०० ई. तक) के अन्त से ज्योतिषशास्त्र को गणित और फलित–दो रूपों में स्वीकार किया गया, बाद में यह स्कन्ध–त्रय कहा जाने लगा। सिद्धान्त, संहिता एवं होरा–इन तीन भागों में इसे विभाजित किया गया–

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ज्योतिषः शास्त्रमनेकभेद वितत-स्कन्धत्रयाधिष्ठितम्।। (वराहमिहिर संहिता, श्लोक १)

सम्प्रति यह स्कन्धपञ्च–सिद्धान्त, संहिता, होरा, प्रश्न एवं शकुन के रूप में परिभाषित है। सिद्धान्त (गणित) स्कन्ध के अन्तर्गत त्रुटि से लेकर कल्प तक की कालगणना, सौर्यचान्द्रमासों का प्रतिपादन, ग्रहगतियों का निरूपण, दिक्–देश–काल का ज्ञान एवं अक्षक्षेत्र सम्बन्धी अक्षज्या, लम्बज्या, द्युज्या इत्यादि का आनयन रहता है।

संहिता स्कन्ध में भू–शोधन, दिक्शोधन, मेलापक, गेहाराम्भ, गृहप्रवेश, मांगलिक कार्यों के मुहूर्त, ग्रहों के उदयास्त का विचार एवं ग्रहणफल आदि बातों का समावेश रहता है।

होरा स्कन्ध के अन्तर्गत आने वाले जातक शास्त्र के द्वारा कुण्डली फलादेश से भी लोग लाभान्वित होते आ रहे हैं। जन्मकालीन ग्रहों की स्थिति के अनुसार व्यक्ति के शुभाशुभ फल का निरूपण इसमें किया जाता है।

प्रश्न स्कन्ध का सम्बन्ध मनोविज्ञान से है। इसमें प्रश्नाक्षर, प्रश्नलग्न एवं स्वर ज्ञान का विचार प्रश्नकर्ता के हाव–भाव एंव आंगिक चेष्टाओं के आधार पर किया जाता है। प्रश्नशास्त्र के ग्रन्थों के आधार पर आधुनिक ''केरल प्रश्नशास्त्र'' की रचना हुई।

शकुन या निमित्त स्कन्ध में प्रत्येक कार्य के पूर्व में होने वाले लक्षणों के आधार पर शुभाशुभा फलों का निरूपण होता है।

अब ज्योतिष का क्षेत्र इतना व्यापक हो गया है कि जीव विज्ञान, मनोविज्ञान, पदार्थ विज्ञान, रसायन विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान एवं अपराध शास्त्र जैसे अनेक महत्वपूर्ण विषयों तक उसका प्रवेश हो गया है और व्यक्ति के जीवन के लक्ष्य एवं भविष्य निर्धारण मे उसकी भूमिका बहुत बढ़ गई है। प्राचीनकाल से चली आ रही ज्योतिर्विद्या के साथ मनुष्य का जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक अटूट सम्बन्ध रहता है।

ज्योतिष कोई नया विज्ञान नहीं है और न ही कोई नवीन आविष्कार है, बल्कि अतीतकाल में यह अत्यन्त विकसित शास्त्र रहा है जिसके अनेक मौलिक सूत्र सभ्यता

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और इतिहास के थपेड़ों से कहीं विखर गये थे। प्रस्तुस्त शोध प्रबन्ध उन्हीं विकीर्ण सूत्रों को एक सूत्र में पिरोने की मेरी अल्प चेष्टा मात्र होगी।

ज्योतिष वस्तुतः एक वैज्ञानिक चिन्तन है, जो अतीत, वर्तमान एवं भविष्य–तीनों के साथ अविछिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। ज्योतिर्विज्ञान की दृष्टि में सम्पूर्ण विश्व एक जीवन्त संरचना है। इस संसार में घटित प्रत्येक घटना सापेक्षित है। प्रत्येक घटनां कारण और कार्य के रूप में किसी अन्य वस्तु पिण्ड से प्रभावित है। भविष्य पूर्णतः अनिश्चित नहीं है, अपितु संश्लिष्ट रूप से वर्तमान एवं अतीत से जुड़ा है। ज्योतिष केवल ग्रह–नक्षत्रों आदि का अध्ययन मात्र ही नहीं ; अपितु यह मनुष्य व प्रकृति को भिन्न–भिन्न आयामों से जानने की प्रक्रिया है। यह एक सूचनात्मक शास्त्र है जिसके द्वारा मनुष्यकेशुभाशुभ काल, यश–अपयश, लाभ–हानि, भाग्योदय–विवाह, जन्म–मृत्यु इत्यादि का पूर्वानुमान होता है। इस शास्त्र की सर्वाधिक उपयोगिता यही है कि यह मनुष्य जीवन के अनेकानेक प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रहस्यों का विवेचन करता है। व्यवहार के लिये अत्यन्त उपयोगी दिन, सप्ताह, पक्ष, मास, ऋतु, अयन, वर्ष, संवत्सर एवं उत्सवों आदि का ज्ञान इसी के द्वारा होता है। काल के मुख्य पाँचों अंगों–तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण का सम्पूर्ण वर्णन ज्योतिष के वार्षिक प्रकाशन पञ्चांग द्वारा कराया जाता है। इनके अतिरिक्त पञ्चांग में ग्रहों के उदय–अस्त, वक्री–मार्गी, राशि परिवर्तन, नक्षत्र प्रवेश, सूर्य–चन्द्र ग्रहण, सर्वार्थसिद्धादि योग, राशिचक्र, विवाह आदि शुभ मुहूर्तो, धार्मिक पर्व, सामाजिक उत्सव एवं आर्थिक लाभ हानि इत्यादि का विशद वर्णन दिया रहता है, जिस कारण प्रत्येक धर्म परायण व्यक्ति का इस शुद्ध गणित ग्रन्थ (पञ्चांग) के प्रति श्रद्धावान होना स्वाभाविक ही है। पञ्चांग के तत्वों का ज्ञान चाहे सर्वसाधारण को न भी हो किन्तु ज्योतिषियों द्वारा नियोजित अनेक पञ्चांग उत्तर भारत में अपनी–अपनी पद्धतियों के अनुसार प्रचलित एवं मान्य हैं। उत्तरभारत से निकलने वाले विभिन्न पञ्चांगों में दर्शाये तिथ्यादि के घटी–पलात्मक मानों, ग्रहों के उदयास्त, वक्रत्व–मार्गत्व एवं राशि परिवर्तन काल इत्यादि में दृष्टिगत होने वाले अन्तर ने मुझे शोधकार्य के लिये प्रेरित किया। चूँकि ज्योतिषशास्त्र प्रत्यक्ष शास्त्र है, सूर्यचन्द्रादि ग्रह इसके स्वयं सिद्ध साक्षी हैं– '' प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ''। फिर उत्तरभारत के भिन्न–भिन्न पञ्चांगों में व्यक्त तिथ्यादि के मानों में अन्तर क्यों है ? सिद्धान्त गणितागत परिणामों का यथावत् घटित होना प्रत्यक्षता कही जाती है। उत्तरभारत के पञ्चांगों में सूर्यसंक्रान्ति के कालमान, ग्रहों की गति–स्थिति,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उदय–अस्त, वक्रत्व–मार्गत्व एवं ग्रहणकाल में समानता का न होना इस दिशा में सूक्ष्म अध्ययन एवं अनुशीलन के लिये मुझे उत्प्रेरित करता है। इसी आधार पर शोध प्रबन्ध भूमिका तैयार हुई है।

ग्रहों की गति एवं स्थिति को काल कहते हैं जो कि अनादि एवं अनन्त है। काल की गणना हेतु भारतीय ज्योतिष एवं पञ्चांग पद्धति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बराहमिहिर से पूर्व एवं वेदांगकाल के पश्चात भारतवर्ष में पञ्चांग पद्धति के संकेत मिलने लगते हैं। प्राचीनकाल में वेद और वेदांग में उल्लेखित गणित के आधार पर ज्योतिषीय गणना करके मानव पूर्वानुमान या भविष्यवाणियाँ करता था। कालान्तर में हमारे ऋषिमुनियों ने अपनी इन्द्रियों द्वारा ब्रह्माण्ड में घटित घटनाओं का अपनी चेतना में अनुभव किया तथा ज्योतिष के अनेक सिद्धान्त ग्रन्थों का निर्माण किया। पञ्चांग गणना का विकास विभिन्न ऋषियों द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तज्योतिष का विषय है। ज्योतिष के इन सिद्धान्तों की संख्या १८ दर्शायी है–

सूर्यः पितामहो व्यासो वशिष्ठोऽत्रि पराशरः।
कश्यपो नारदो गर्गो मरीचिर्मनुरंगिराः।।
लोमशः पौलिशश्चैव च्यवनो यवनो भृगुः।
शौनकोऽष्टादशाश्चैते ज्योतिःशास्त्रप्रवर्त्तकाः।। (सू.सि., भूमिका, श्लोक १४)

ज्योतिष शास्त्र के उक्त १८ प्रवर्त्तकों द्वारा रचित सिद्धान्तों में से अनेक सिद्धान्त प्रायः लुप्त हो चुके हैं; किन्तु सर्वाधिक प्रमाणिक सूर्यसिद्धान्त भारतीय पञ्चांग गणना हेतु उत्तम सिद्धान्त ग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठित है। ज्योतिष शास्त्र इन १८ प्रवर्त्तक मनीषियों के बाद अनेक मूर्धन्य ज्योतिषाचार्य हुये जिन्होंने इन्हीं सिद्धान्त ग्रन्थों के आधार पर अपने–अपने ग्रन्थ एवं टीकाऐं लिखी हैं जिनमें आर्यभट्ट, बराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य, मकरन्दाचार्य, गणेश दैवज्ञ एवं नीलकण्ठ जैसे अनेक गणितज्ञों तथा ज्योतिर्विदों ने कालगणना के विविध आयामों को उद्घाटित एवं समृद्ध किया।

ज्योतिष वास्तव में एक वस्तु स्थिति का नाम है जिसे खगोलीय स्थिति के आधार पर सैद्धान्तिक गणित द्वारा ज्ञात किया जाता है। पञ्चांग आकाशस्थ ग्रह–नक्षत्रों आदि की प्रतिदिन की स्थिति को व्यक्त करता है जिसके द्वारा शुभाशुभ फल का निर्णय होता है। यदि पञ्चांग द्वारा व्यक्त आकाशस्थ ग्रह नक्षत्रों की स्थिति

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में प्रत्यक्षता नहीं है तब उसके आधार पर किया गया फलित सत्य नहीं होगा। अतः फलित की सत्यता हेतु पञ्चांग का शुद्ध होना अतिआवश्यक है।

भारत के स्वतंत्र होने के बाद पं. जवाहर लाल नेहरू का ध्यान कुछ गणितज्ञों (पञ्चांगकारों) के कहने पर पञ्चांगों में व्याप्त "पौंगावाद" की ओर गया था। तभी उन्होंने "भारतीय पञ्चांग संशोधक समिति" का गठन कराने की सोची। "दं काउन्सिल ऑफ साइन्टीफिक एण्ड इण्डस्ट्रियल रिसर्च" नामक संस्था ने १३ अगस्त १६५२ ई. को प्रो. मेघनाथ शाह की अध्यक्षता में सात लोगों की एक समिति का सृजन किया, जिसमें गणितकला निधि श्री निर्मलचन्द्र लहरी को मन्त्री मनोनीत किया था। इस समिति ने देश के समस्त पञ्चांगकारों के नाम एक "प्रश्नावली" जारी की और उसमें प्रश्नों के उत्तर सहित अपने–अपने पञ्चांग प्रस्तुत करने को कहा गया था। पहली बार केवल ५० लोगों ने ही अपने पञ्चांग प्रस्तुत किये थे। इनमें से २ पञ्चांग कुछ पुराना कुछ नया गणित वाले, ४ पञ्चांग सूर्यसिद्धान्त वाले तथा ८ पञ्चांग सौर्य, ग्रहलाघव, मकरन्द, केतकी अयनांश वाले थे, शेष ३६ पञ्चांग वेधसिद्ध दृक्तुल्य गणित के थे। भारत शासननेसन् १६५५ ई. में पञ्चांग शोधन समिति का गठन किया, जिसने दो वर्ष पश्चात केतकी चित्रापक्षीय दृग्गणित पर सहमति प्रस्तुत की और तभी से भारत शासन का राष्ट्रीय पञ्चांग सभी भारतीय भाषाओं में इसी गणित के आधार पर प्रतिवर्ष प्रकाशित हो रहा है। कुछ समय पश्चात भारत सरकार के मौसम–विभाग और अखिल भारतीय ज्योतिष परिषद के संयुक्त तत्वाधान मे दिनांक १६–२० नवम्बर १६६८ ई. को विज्ञान भवन, नई दिल्ली मे विशाल पञ्चांग–गोष्ठी का आयोजन हुआ था, उसमें समस्त भारत के नवीन–प्राचीन पद्धति के शताधिक प्रसिद्ध पञ्चांगकार सम्मिलित हुये थे। दो दिन के विचार विमर्श के बाद भारी बहुमत से दृकपक्षीय पञ्चांग गणना को ही शास्त्र सम्मत प्रमाण माना गया।

मैं प्रारम्भ से ही गणित का छात्र रहा हूँ। सिद्धान्त ज्योतिष में मेरी रूचि होना स्वाभाविक है। पञ्चांगों की अनेकरूपता से प्रभावित होकर मैंने उत्तरभारत के पञ्चांगों का समीक्षात्मक अध्ययन करने का संकल्प किया। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध इसी परिप्रेक्ष्य में है। चूँकि फलित ज्योतिष पूर्णतः ग्रह गणित पर आधारित है। अशुद्ध ग्रह गणित से हम फलित की सत्यता सिद्ध नहीं कर सकते हैं। अतः पञ्चांग का ग्रह गणित शुद्ध एवं प्रत्यक्ष होने पर ही उसके आधार पर किये जाने वाले कृत्य मनुष्य को चारों पुरूषार्थों–धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष को प्रदान करने में सहायक सिद्ध होंगे।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उद्धेश्य को मूल–मन्त्र बनाकर उत्तरभारत के पञ्चांगों की ग्रह गणितीय स्थिति तथा उसे आधार पर प्राप्त तिथ्यादि के घटी–पलात्मक मानों, सूर्यसंक्रान्ति एवं चन्द्रमा का राशि संचरण इत्यादि का बिन्दुवार समीक्षात्मक अध्ययन करने का एक छोटा सा प्रयास ही यह शोध प्रबन्ध है।

शोध प्रबन्ध को आकार देने कुछ विराम व पड़ाव निर्धारित कर उसे कुल ७ अध्यायों में विभाजित किया गया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'' कृतज्ञता ज्ञापन ''

जो भाव–विचार मेरे हृदय में हैं उन्हें शब्दों के द्वारा पूर्णतः व्यक्त कर पाना असम्भव है। जहाँ खामोशी है वहीं सत्य प्रतीत होता है और जो सत्य है उसके विषय में क्या कहना ? फिर भी उस अव्यक्त को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया है। इसे पूर्व जन्मार्जित सत्कर्मों का फल ही कहा जायेगा कि मुझे वेदांग का नेत्र कहे जाने वाले ज्योतिष विज्ञान का अध्ययन करने का अवसर मिला। कोई भी व्यक्ति अपने आप में पूर्ण नहीं होता है, किसी भी कार्य को करते समय मार्गदर्शन एवं सहयोग देने वाले उसे पूर्णता प्रदान कर सफलता के शिखर तक पहुँचाते हैं। सफलता के इस सोपान को स्पर्श करते समय मैं उन समस्त विद्वतजनों एवं सहयोगियों के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करने की अभिलाषा रखता हूँ।

जिनके स्वप्न, संकल्प एवं प्रेरणायें प्रस्तुत ग्रन्थ के आकार में परिणित हुये हैं, उन प्रातः स्मरणीय पिता श्री श्यामबाबू वर्मा एवं माता श्रीमति रूकमणि देवी को प्रणाम पूर्वक कृतज्ञता प्रदर्शन करना मेरा प्रथम कर्तव्य है।

मेरे मनीषि निर्देशक डॉ. मानवेन्द्र पाण्डेय जी का आशीर्वाद, महत्वपूर्ण मार्गदर्शन तथा कठिनतम परिस्थितियों में मेरी संकल्प शक्ति को जाग्रत रखना, मेरे जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि रही है। व्यस्तता के बीच उन्होंने अपने अनुभवों, सुझावों से मेरी त्रुटियों को दूर कर उत्साहवर्धन किया, उनका मैं सादर प्रणाम पूर्वक आभार व्यक्त करता हूँ।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रूपरेखा तैयार करने में विशेष सहयोग देने के लिये मैं डॉ. सीमा श्रीवास्तव (प्रभारी महिला परिसर, म.म.यो.वै.वि.वि. ग्वालियर) के प्रति कृतज्ञ हूँ। उन्होंने अपने अनुभवों, सुझावों के द्वारा मेरे शोध प्रबन्ध की त्रुटियों को दूर किया। अपने शोधकार्य से सम्बन्धित पञ्चांगों के विषय में विशेष जानकारी देने के लिये मैं श्री कल्याण दत्त शर्मा जी (भू. पू. ज्योतिष यन्त्रालयाध्यक्ष (जन्तर–मन्तर) जयपुर (राज.)) एवं डॉ. प्रेम कुमार शर्मा ज़ी (रीडर, ज्योतिष विभाग, लाल बहादुर शास्त्री, संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली) के प्रति कृतज्ञ हूँ। जिनकी कृपा से मैंने अपने शोधकार्य को और भी गहन एवं पूर्ण बनाने का प्रयास किया।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, जबलपुर के अनुसन्धान विभाग में सह–निदेशक के रूप में कार्यरत डॉ. राजेन्द्र चन्द्र सूठा जी का आभारी हूँ जिन्होंने अपने अनुभव एवं सुझावों से मेरे शोध की अनेक त्रुटियों को दूर किया।

महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय, ग्वालियर परिसर के उन सभी कर्मचारियों एवं मित्रों का अत्यन्त ऋणी हूँ जिनके प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष सहयोग से मेरा प्रयास प्रबन्ध का स्वरूप धारण कर सका।

इनके अतिरिक्त मैं ज्ञात–अज्ञात उन सभी व्यक्तियों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी शुभकामनाऐं शोध प्रबन्ध के साथ संलग्न है।

दिनांक :

स्थान :

शोधार्थी

रूपेन्द्र कुमार वर्मा

म. म. यो. वै. वि. वि.

परिसर – ग्वालियर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनुक्रमणिका

पृष्ठ क्रमांक

प्रथम अध्याय - पञ्चांग का परिचय एवं परिभाषा १–४५

(अ) पञ्चांग की उत्पत्ति

(ब) पञ्चांग का परिचय

(स) पञ्चांग की परिभाषा

(द) पञ्चांग–तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण का परिचय

(इ) पञ्चांग का प्रयोग से पूर्व निर्देश

द्वितीय अध्याय - पञ्चांग का महत्व ४६–६५

(अ) तिथि का महत्व

(ब) वार का महत्व

(स) नक्षत्र का महत्व

(द) योग का महत्व

(इ) करण का महत्व

तृतीय अध्याय -उत्तरभारत में पञ्चांग निर्माण के स्थल ६६–७२

चतुर्थ अध्याय -पञ्चांग में गणित का स्थान एवं महत्व ७३–१६८

(अ) काल विभाग

(ब) पञ्चांगों में काल गणना की युग पद्धति

(स) उत्तरभारत के पञ्चांगों में प्रचलित काल वर्ष

(द) दिक्, देश एवं काल का ज्ञान

(इ) अयन

(क) ऋतु

(ख) सम्पात

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(ग) अयन चलन

(घ) अयनांश

(ड.) समय

(च) सूर्य क्रान्ति

(छ) चर साधन

(ज) दिनमान, रात्रिमान एवं मिश्रमान

(झ) सूर्योदयास्त

पंचम अध्याय -पञ्चांग निर्माण की विधियाँ १६६–३१८

(अ) प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थों द्वारा निर्मित पञ्चांग–

(क) अहर्गण साधन

(ख) ग्रह साधन– १. मध्यम ग्रह साधन

२. सूर्यचन्द्र स्पष्टीकरण

३. पञ्चतारा स्पष्टीकरण

४. पञ्चतारा गतिसाधन

५. पञ्चतारा की वक्र–मार्गगति

६. पञ्चतारा का उदयास्त

(ग) पाँचों अंगों– तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण का आनयन–

१. तिथि का आनयन

२. वार का आनयन

३. नक्षत्र का आनयन

४. योग का आनयन

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५. करण का आनयन

(घ) लग्न–

१. लग्न गणना

२. दैनिक लग्न सारणी

३. लग्न सारणी

४. दशम लग्न सारणी

(ब) वेधशाला द्वारा निर्मित पञ्चांग

(क) वेध यंत्रों का परिचय एवं प्रयोग विधि

षष्ठ अध्याय - पञ्चांग द्वारा शुभाशुभ का ज्ञान ३१६–३५६

(अ) मुहूर्त

(ब) विवाह मुहूर्त

सप्तम अध्याय - पञ्चांग द्वारा फल निरूपण ३५७–३७०

(अ) संवत्सर का फल

(ब) ग्रहमण्डल की विधानसभा के अधिकारियों का फल

(स) ग्रह गोचर का फल

(द) संक्रान्ति का फल

(इ) ग्रहण का फल

उपसंहार ३७१–३७८

महर्षि चिन्तन ३७९–३८७

परिशिष्ट- १. उत्तर भारत के प्रमुख पञ्चांगों की सूची

२. संदर्भ ग्रन्थ सूची

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रथम अध्याय

पञ्चांग का परिचय एवं परिभाषा

(अ) पञ्चांग की उत्पत्ति :- पञ्चांग भारतीय ज्योतिष की कुंजी है। इतना स्पष्ट ज्ञात होता है कि पञ्चांग का प्रचलन तब से सम्भव हुआ होगा जब हमें ज्योतिष विद्या का थोड़ा बहुत ज्ञान हो चुका होगा परन्तु उस समय का पञ्चांग वर्तमान में प्रचलित पञ्चांग जैसा नहीं रहा होगा। प्राचीन काल में पाँचों अंगों के स्थान पर चतुरंग, त्र्यंग, द्वयंग अथवा एकांग ही प्रचलित रहा होगा। कालान्तर में जैसे–जैसे ज्योतिषशास्त्र का विकास होता रहा वैसे–वैसे पञ्चांग का स्वरूप परिवर्तित होता गया।

पञ्चांग की उत्पत्ति कब से हुई इस बात का प्रमाणिक पता लगाना कठिन है लेकिन पञ्चांग के महत्व को देखते हुये कहा जा सकता है कि हमारे यहाँ पञ्चांग निर्माण की प्रथा अत्यधिक प्राचीन है। पूर्व में बड़े–बड़े नगरों में ज्योतिषी लोग पञ्चांग स्वयं बनाते थे, परन्तु मुद्रित पञ्चांग थोड़े मूल्य में बाजार में मिलने से हस्तलिखित पञ्चांग प्रायः लुप्त हो गये।

प्राचीनकाल में जब लिपि का विकास नहीं हुआ था, मनुष्य का समस्त ज्ञानानुभव मुखाग्र था। वह आकाश मण्डल में सीधे ग्रह नक्षत्रों की स्थिति देखकर शुभाशुभ स्थिति का आँकलन करता था। अतः प्रत्यक्ष ब्रह्माण्ड को ही हम प्रथम पंचांग कह सकते हैं। ब्रह्माण्ड सम्बन्धी खगोलीय जानकारी का पता जनसाधारण को न होकर कुछ ही लोगों तक सीमित होने से प्रत्येक व्यक्ति ज्योतिष विद्या का लाभ नहीं ले पाता था। कालान्तर में लिपि का विकास होने के बाद मानव ने अपने समस्त ज्ञानानुभव को साहित्य के रूप में परिणित किया, उसने वेदों को लिपिबद्ध किया। 'वेद' समस्त ज्ञान का भंडार हैं, ये प्राचीन मानव के ज्योतिष सम्बन्धी ज्ञानानुभव को व्यक्त करते हैं।

वैदिक काल में मनुष्य ज्योतिष को भी धर्म मानता था। अतः वेद–वेदांग से लेकर धर्मशास्त्रों तक में ज्योतिष सम्बन्धी घटनाओं की चर्चा देखने को मिलती है। उदाहरणार्थ – अथर्ववेद के एक मंत्र के अनुसार स्पष्ट है कि जिन नक्षत्रों को चन्द्रमा समर्थ करता हुआ चलता है, वे सब नक्षत्र मेरे लिये आकाश में, जल में, पृथ्वी पर,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रथम अध्याय

पञ्चांग का परिचय एवं परिभाषा

(अ) पञ्चांग की उत्पत्ति :- पञ्चांग भारतीय ज्योतिष की कुंजी है। इतना स्पष्ट ज्ञात होता है कि पञ्चांग का प्रचलन तब से सम्भव हुआ होगा जब हमें ज्योतिष विद्या का थोड़ा बहुत ज्ञान हो चुका होगा परन्तु उस समय का पञ्चांग वर्तमान में प्रचलित पञ्चांग जैसा नहीं रहा होगा। प्राचीन काल में पाँचों अंगों के स्थान पर चतुरंग, त्र्यंग, द्वयंग अथवा एकांग ही प्रचलित रहा होगा। कालान्तर में जैसे–जैसे ज्योतिषशास्त्र का विकास होता रहा वैसे–वैसे पञ्चांग का स्वरूप परिवर्तित होता गया।

पञ्चांग की उत्पत्ति कब से हुई इस बात का प्रमाणिक पता लगाना कठिन है लेकिन पञ्चांग के महत्व को देखते हुये कहा जा सकता है कि हमारे यहाँ पञ्चांग निर्माण की प्रथा अत्यधिक प्राचीन है। पूर्व में बड़े–बड़े नगरों में ज्योतिषी लोग पञ्चांग स्वयं बनाते थे, परन्तु मुद्रित पञ्चांग थोड़े मूल्य में बाजार में मिलने से हस्तलिखित पञ्चांग प्रायः लुप्त हो गये।

प्राचीनकाल में जब लिपि का विकास नहीं हुआ था, मनुष्य का समस्त ज्ञानानुभव मुखाग्र था। वह आकाश मण्डल में सीधे ग्रह नक्षत्रों की स्थिति देखकर शुभाशुभ स्थिति का आँकलन करता था। अतः प्रत्यक्ष ब्रह्माण्ड को ही हम प्रथम पंचांग कह सकते हैं। ब्रह्माण्ड सम्बन्धी खगोलीय जानकारी का पता जनसाधारण को न होकर कुछ ही लोगों तक सीमित होने से प्रत्येक व्यक्ति ज्योतिष विद्या का लाभ नहीं ले पाता था। कालान्तर में लिपि का विकास होने के बाद मानव ने अपने समस्त ज्ञानानुभव को साहित्य के रूप में परिणित किया, उसने वेदों को लिपिबद्ध किया। 'वेद' समस्त ज्ञान का भंडार हैं, ये प्राचीन मानव के ज्योतिष सम्बन्धी ज्ञानानुभव को व्यक्त करते हैं।

वैदिक काल में मनुष्य ज्योतिष को भी धर्म मानता था। अतः वेद–वेदांग से लेकर धर्मशास्त्रों तक में ज्योतिष सम्बन्धी घटनाओं की चर्चा देखने को मिलती है। उदाहरणार्थ – अथर्ववेद के एक मंत्र के अनुसार स्पष्ट है कि जिन नक्षत्रों को चन्द्रमा समर्थ करता हुआ चलता है, वे सब नक्षत्र मेरे लिये आकाश में, जल में, पृथ्वी पर,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पर्वतों पर और सब दिशाओं में सुखदायी हों।[1] इसी में आगे लिखा है कि आकाश में घूमने वाले सभी ग्रह हमारे लिये शान्तिदायक हो।[2] इसी प्रकार तैत्तिरीय ब्राह्मण के एक मंत्र में शुभाशुभ मुहूर्त के विषय में कहा गया है कि यदि यह इच्छा रहे कि कन्या अपने पति को प्रिय बनी रहे तो स्वाती नक्षत्र में उसका दान करें।[3]

वैदिक ग्रन्थों के आधार पर हमें पञ्चांग का ज्ञान होता है। वेदों के अतिरिक्त ज्योतिष ग्रन्थों में अति प्राचीन ग्रंथ वेदांग ज्योतिष है। उसमें गणित द्वारा सूर्य और चन्द्रमा की स्थिति का विचार किया गया है। इसके बाद का ग्रन्थ अथर्ववेदांग ज्योतिष ज्ञात होता है, जिसमें संहिता एवं होरा स्कन्ध का विचार किया गया है। इहकाल में ज्योतिष विद्या की विशेष उन्नति दृष्टिगोचर होती है। इसके बाद के ग्रन्थों में संहिताऐं आती हैं।

वैदिक साहित्य का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि पाँचों अंगों – तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण की उत्पत्ति एक ही काल में नहीं हुई होगी। इनकी उत्पत्ति का काल भिन्न–भिन्न प्रतीत होता है। लिपि का ज्ञान होने से पूर्व प्रचलित पाँचों अंगों का ज्ञान मौखिक ही होता था। अस्तु स्पष्ट है कि ज्योति स्थिति दर्शक कोई पदार्थ अति प्राचीनकाल से ही विद्यमान रहा है, उसे हम यहाँ ज्योति दर्पण कह सकते हैं। वैदिक ग्रन्थों में लिखा है कि अमुक दिन, नक्षत्र एवं ऋतु में अमुकामुक कार्य करना उत्तम होता है।[4] इससे स्पष्ट होता है कि ज्योति दर्पण बहुत प्राचीन है। ज्योति दर्पण का प्रथम अंग सावन दिन[5] है। वर्तमान में सावन दिन के स्थान पर वार का प्रयोग किया जाता है। वेदों में सौर्यमास एवं सौर्यदिन का स्पष्ट उल्लेख नहीं है किन्तु सावन दिन का है।[6] वह बड़ा व्यवहारोपयोगी है। यज्ञ, अनुष्ठान उसी के अनुसार किये जाते थे।

---

[1] यानि नक्षत्राणि दिव्यन्तरिक्षे अप्सु भूमौ यानि नगेषु दिक्षु।
प्रकल्प यंश्चन्दमा यान्येति सर्वाणि ममैतानि शिवानी सन्तु।। अथर्ववेद, काण्ड १६,सूक्त ८,मंत्र १

[2] शं नो दिविचरा ग्रहाः। अथर्ववेद १६/६/७

[3] या कामयते दुहितरं प्रिया स्यादिति।
तां निष्ट्यायां दद्यात्। प्रियैव भवति। तैत्तिरीय ब्राह्मण – श्लोक १/५/२

[4] तैत्तिरीय ब्राह्मण संहिता – ६/१/४/४

[5] दो सूर्य उदयों के बीच का काल

[6] तैत्तिरीय ब्राह्मण – ३/१०/१/१,२,३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ऋग्वेदज्योतिष में स्पष्ट लिखा है कि एक दिन (सावनदिन) में ३० मुहूर्त होते हैं तथा एक मुहूर्त में दो नाड़ी होती हैं।[७] इसी प्रकार यजुर्वेद ज्योतिष में लिखा है कि एक सौर्यवर्ष में ३६६ दिन तथा युग में ३६६ × ५ = १८३० सावन दिन होते हैं।[८] इसमें आगे लिखा है कि एक युग में वर्ष की दिन संख्या के पञ्चगुणित (१८३०) सूर्योदय होते हैं, चन्द्रमा (ऋषि) के उससे ६२ कम होते हैं।[९] इस प्रकार स्पष्ट होता है कि सावनदिन का ज्ञान वैदिक काल में ही हो गया था। सावन दिन के बाद नक्षत्रों का ज्ञान हुआ और ज्योति दर्पण का दूसरा अंग बना, सम्भवतः उसके बाद तिथि का ज्ञान हुआ। वेदों में बतलाई नक्षत्र पद्धति मूलतः भारतीयों की है। भारतीयों को नक्षत्रों का ज्ञान ईसा पूर्व लगभग ५००० वर्ष पहिले ही हो चुका था। वेदों की जिन संहिताओं एवं ब्राह्मण ग्रन्थों में नक्षत्रों का वर्णन हुआ है। उनका रचनाकाल लगभग ईसा पूर्व ३००० वर्ष निर्धारित किया गया है।[१०]

ऋग्वेद संहिता में कुछ ऐसे मंत्र आये हैं जिनसे किसी नक्षत्र विशेष का नहीं बल्कि आकाशस्थ सर्वत्र फैले हुये तारों का वर्णन हुआ है। ऋग्वेद संहिता के एक मंत्र में कहा गया है कि विश्वदर्शी सूर्य के आते ही नक्षत्र एवं रात्रि चोरों की तरह भाग जाते हैं।[११]

अथर्व संहिता में २७ नक्षत्रों के नाम[१२] और तैत्तिरीय ब्राह्मण में नक्षत्रों के नाम, उनके देवता, वचन और लिंग का उल्लेख हुआ है।[१३] इनमें से कुछ बातें नक्षत्र के शुभाशुभ फल के उद्देश्य से तथा कुछ बातें उनकी आकृति इत्यादि के विषय में कही गयी है। वैदिक काल में नक्षत्र विद्या की इतनी उन्नति हुई कि उनकी आकृति और आकार भी विचार के विषय बन गये। वैदिक काल में नक्षत्रों का आरम्भ धनिष्ठ से

---

[७] ऋग्वेद ज्योतिष – श्लोक १६

[८] यजुर्वेद ज्योतिष – श्लोक २७,२८

[९] यजुर्वेद ज्योतिष – श्लोक २६

[१०] भारतीय ज्योतिष – वेदांगकाल, नक्षत्र पद्धति, पृष्ठ १८३

[११] अप त्ये तावयो यथा नक्षत्र यन्त्यक्तुभिः।
सूराय विश्वचक्षसे। ऋग्वेद संहिता – १/५०/२ एवं अथर्ववेद संहिता – १३/२/१७

[१२] अथर्ववेद संहिता – १६/७

[१३] तै. ब्रा. – ४/४/१०; २/७/१८/३ तथा १/५/१

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिखाया है।[१४] महाभारत में नक्षत्रों का आरम्भ कृतिका से दिखाया है।[१५] सूर्य सिद्धान्त एवं आधुनिक ज्योतिष ग्रन्थों में नक्षत्रों का आरम्भ अश्विन्यादि ही है।[१६] जातक के जन्म नक्षत्र के चरण के अनुसार उसका नाम रखने की प्रथा का वर्णन ऋग्वेद ज्योतिष में दृष्टिगत होता है।[१७]

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि वेदांग ज्योतिष काल (शक पूर्व १४०० वर्ष) तक नक्षत्र एवं सावनदिन दो अंग मुख्यतः प्रचलित थे।

नक्षत्रों के ज्ञान के बाद तिथ्यादि का ज्ञान हुआ। वेदों में चन्द्रमास का ३० वाँ भाग और सूर्य–चन्द्रमा में १२° अंशों का अन्तर होने में लगा समय के अर्थ में तिथि का उल्लेख नहीं है। ज्योतिष ग्रन्थोक्त अर्थ में वेदों में तिथि शब्द और प्रतिपदादि तिथियाँ नहीं मिलती हैं, तथापि पूर्णिमा एवं अमावस्या को पञ्चदशी कहा है।[१८] यहाँ पञ्चदशी शब्द से ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय प्रथमा, द्वितीय इत्यादि तिथियाँ रही होंगी। पहले वे रात्रिवाचक रही होंगी बाद में तिथि वाचक बनी होंगी। ऋग्वेद संहिता में लिखा है कि चन्द्रमा की कला की न्यूनाधिकता का कारण यह है कि देव उसका प्राशन्न करते हैं।[१९] तैत्तिरीय ब्राह्मण में कृष्ण पक्ष की अन्तिम रात को अमावस्या के स्थान पर कामदुधा और शुक्लपक्ष की अंतिम रात को पौर्णमासी कहा है।[२०] इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वैदिक काल में चन्द्रमा की कला (रश्मि) के रूप में तिथि का प्रादुर्भाव हो चुका था।

वेदांग ज्योतिष काल में तिथि का मान लगभग ६० घटी होता था जो कि अहोरात्र का दर्शक था। यजुर्वेद ज्योतिष में तिथि को इस प्रकार से परिभाषित किया है कि सावन दिन में से उसका ६२ वाँ भाग घटाने पर जो शेष बचता है उसे

---

[१४] ऋग्वेद ज्योतिष – श्लोक ५

[१५] महाभारत – अनुशासन पर्व, अध्याय ६४, श्लोक , अध्याय ६६, श्लोक

[१६] प्रोच्यन्ते लिप्तिका भानां स्वाभोगोऽथ दशाहतः
भवन्त्यतीतधिष्ण्यानां भोगलिप्ता युता ध्रुवा।। सूर्यसिद्धांत – नक्षत्रग्रहयुत्यधिकार, श्लोक १

[१७] ऋग्वेद ज्योतिष – श्लोक २८

[१८] चन्द्रमा वै पञ्चदशः। एष हि पञ्चदश्याम पक्षीयते।
पंच दश्यामापूर्यते।। तैत्तिरीय ब्राह्मण संहिता – १/५/१०

[१९] ऋग्वेद संहिता – १०/८५/५

[२०] तै. ब्रा. सं. – ३/१०/१/२,३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चान्द्रदिन (तिथि) कहते हैं।[२१] यहाँ स्पष्ट है कि तिथि का मान सावनदिन से कम होता है। वहवृचब्राह्मण में लिखा है कि जिसमें चन्द्रमा का उदय और अस्त होता है, उसे तिथि कहते हैं।[२२]

वेदांग ज्योतिष के अनुसार ३६६ दिनों का एक वर्ष तथा पाँच वर्षों का एक युग होता है।[२३] एक युग में ६१ सावनमास, ६२ चान्द्रमास, ६७ नाक्षत्रमास होते हैं तथा ३० दिनों का सावनमास एवं ३० $\frac{१}{२}$ दिनों का सौर्यमास होता है।[२४] इस प्रकार स्पष्ट है कि एक युग में १८३० सावन दिन (सूर्योदय) होते हैं। तब

१ तिथि $= \frac{१८३०}{६२ \times ३०}$ सावन दिन $= \frac{६१}{६२} = १ - \frac{१}{६२}$ सावन दिन

इसलिये १ तिथि $= \left(६० - \frac{६०}{६२} \right)$ घटी = ५६ घटी २ पल लगभग

चूँकि वेदांग ज्योतिष पद्धति में सूर्य और चन्द्रमा की गति हमेशा एक समान मानी गयी है। इसी को अन्य ज्योतिष ग्रन्थों में मध्यम गति कहा है। मध्यमगति का मान सावन दिन (६०३ कला) से छोटा होने के कारण तिथि की वृद्धि कभी नहीं होती थी। तिथि का मान सौर्य (सावन) दिन से कम होने के कारण युग (पाँच वर्षों में) के मध्य या अन्त में अधिमास आते थे। इस पद्धति से ६५ वर्षों में ३८ अधिमास आते हैं जबकि आधुनिक सूक्ष्मपद्धति से लगभग ३५ अधिमास आते हैं। अतः स्पष्ट है कि वेदांग ज्योतिष काल में तिथि का मान प्रचलित तिथि के मान से भिन्न रूप में विद्यमान था।

महाभारत में १३ दिन का पक्ष होने का प्रसंग आया है।[२५] उसे क्षय पक्ष कहते हैं। वेदांग ज्योतिष में एक पक्ष (अर्द्ध चान्द्रमास) का मान १४ दिन ४५ घटी के लगभग आता है–

चूँकि एक तिथि का मान = ५६ घटी २ पल के बराबर होता है

इसलिये १५ तिथि (एक पक्ष) = ५६ घटी २ पल × १५ = १४ दिन ४५ घटी ३० पल

---

[२१] द्युनं द्विषाष्टि भागेन हेयं सूर्यात् सपावर्णम्।
यत्कृतावुपजायेते मध्ये चान्ते चाधिमासकौ।। यजुर्वेद ज्योतिष – श्लोक ३७

[२२] भारतीय ज्योतिष – प्रथम भाग, वैदिक काल, पृष्ठ ६०

[२३] यजुर्वेद ज्योतिष – श्लोक २७,२८

[२४] यजुर्वेद ज्योतिष – श्लोक ३१

[२५] महाभारत – भीष्मपर्व, अध्याय २,३ श्लोक ३२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वेदांग ज्योतिष के गणित द्वारा अथवा अन्य किसी सिद्धान्त के गणित द्वारा मध्यम मान से १४ दिन से कम किसी पक्ष में नहीं आते हैं। अतः सूर्य और चन्द्रमा की मध्यम गति से १३ दिन का पक्ष होना असम्भव है। किन्तु स्पष्ट तिथि मान से पक्ष में १३ दिन होना सम्भव है।

उदाहरणार्थ :– शाके १८०० में ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में १३ दिन होते हैं। इस प्रकार ऐसा प्रतीत होता है कि महाभारत काल तक भारतीयों को स्पष्ट तिथि के गणित का ज्ञान हो चुका था। सूर्य और चन्द्रमा की स्पष्ट गति के गणित का ज्ञान था किन्तु वह वर्तमान पद्धति से भिन्न रहा होगा क्योंकि बिना गणित किये चन्द्रमा की प्रत्यक्ष स्थिति के अवलोकन मात्र से १३ दिन का पक्ष (अर्द्ध चान्द्रमास) प्राप्त होना असम्भव है।

कालान्तर में सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों की गति स्थिति का जैसे–जैसे ज्ञान होता गया वैसे–वैसे भारतीयों को स्पष्ट तिथि का ज्ञान होता गया। वराहमिहिर ने पञ्चासिद्धान्तिका में तथा ब्रह्मगुप्त ने ब्रह्मसिद्धान्त में तिथिनक्षत्रानयन की रीति दी है।

तिथि के बाद भारतीयों को करण का ज्ञान हुआ होगा क्योंकि करण नामक कालविभाग तिथि द्वारा स्वतः ही ध्यान में आने योग्य है। वेदों में ज्योतिष ग्रन्थोक्त अर्थ में करण का कोई उल्लेख नहीं हुआ है। वेदांग ज्योतिष के अनुसार करण नामक अंग का प्रचार तिथि के थोड़े दिनों बाद हुआ होगा और उसके बाद सम्भवतः वार प्रचलित हुये होंगे। अथर्ववेदांग ज्योतिष एवं प्राचीन जैन ग्रन्थों (जम्बूदीप प्रज्ञप्ति) में करण दिन एवं रात्रि से सम्बद्ध रूप में परिभाषित किये हैं। अथर्ववेद ज्योतिष के चतुर्थ प्रकरण में तिथियों के करण बतलाये हैं। जिनके नाम एवं पद्धति वर्तमान अनुरूप ही है। इसमें स्थिर करणों में किंस्तुध्न करण के स्थान पर कौस्तुभ नाम का उल्लेख हुआ है। इसके बाद करणों के शुभाशुभ का विचार तथा उनके देवताओं का नामोच्चारण हुआ है। अथर्वज्योतिष में पञ्चांग के तीन प्रमुख अंगों–तिथि, नक्षत्र व करण के साथ–साथ मुहूर्त का नाम आया है, किन्तु योग नामक अंग का उल्लेख नहीं है।[२६] इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि तिथि का आधा भाग होने कारण करण का ज्ञान भारतीयों को तिथि के कुछ समय बाद हो चुका होगा।

वारों के सात नामों का उल्लेख वेदों में कहीं नहीं मिलता है। वेदांग काल के

---

[२६] अथर्ववेद ज्योतिष – चतुर्थप्रकरण, श्लोक ८६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथर्वज्योतिष, याज्ञवल्क्यस्मृति और ऋक्गृह्यपरिशिष्ट इत्यादि ग्रन्थों में वारों के नाम दृष्टिगत होते हैं। याज्ञवल्क्य स्मृति में ग्रहों के नाम उनके वारक्रम के अनुसार दिये हैं[२७] जबकि अथर्वज्योतिष में सात वारों के सम्बन्ध में केवल सात ग्रहों का निर्देश है राहु और केतु के नाम नहीं हैं।[२८] महाभारत में सात वारों के नाम कहीं नहीं आये हैं, किन्तु वार शब्द का प्रयोग इस अर्थ में हुआ है कि आज का वार एक के यहाँ तथा कल का वार दूसरे के वहाँ।[२९] इसके बाद सातवारों का स्पष्ट उल्लेख सूर्यसिद्धान्तादि ग्रथों में मिलता है। वारों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में आर्यभट्ट ने लिखा है :–

शीघ्रक्रमात चतुर्थाः दिनपाः।[३०]

ज्योतिष ग्रन्थों में वारों की उत्पत्ति का मूल कारण होरा नामक काल विभाग माना है। इनमें दिन के होरात्मक २४ भाग वारोत्पत्ति के सम्बन्ध में माने गये हैं। वराहमिहिराचार्य के अनुसार होरा शब्द की व्युत्पत्ति ''अहोरात्र'' शब्द के आदि एवं अन्त के अक्षर को छोड़देने से हुई है।[३१] यूरोपियन विद्वानों के अनुसार हिन्दूओं ने सात वारों तथा १२ राशियों को यूरोपियन विद्वानों से ग्रहण किया है। उनके अनुसार वारों की उत्पत्ति का सम्बन्ध होरा नामक काल विभाग से है, जो कि हमारे देश का नहीं है। उन्होंने वारों की उत्पत्ति का स्थान मिश्र अथवा खांडिल्य माना है। वारों की उत्पत्ति चाहे जहाँ हुई हो किन्तु इतना स्पष्ट है कि वे ग्रन्थ जिनमें वारों का स्पष्ट उल्लेख हुआ है वे शक पूर्व १००० वर्ष से अधिक प्राचीन नहीं हैं।

पञ्चांग में ''योग'' नामक अंग की उत्पत्ति सबसे बाद में हुई। वेद एवं वेदांग ज्योतिष में वर्तमान में प्रचलित योग के सम्बन्ध में कोई उल्लेख नहीं मिलता है। ऋक्गृह्य – परिशिष्ट में तिथि, करण, नक्षत्र, वार, मुहूर्त एवं दिनक्षय का वर्णन आया है किन्तु योग का कोइ उल्लेख नहीं है। महाभारत में भी योग के सम्बन्ध में कोई उल्लेख नहीं मिलता है। वराहमिहिर ने पञ्चासिद्धान्तिका में तिथि एवं नक्षत्र साधन की रीति दी है परन्तु योग साधन की रीति नहीं है। अतः ज्ञात होता है कि

---

[२७] याज्ञवल्क्य स्मृति – आचारध्याय, श्लोक २५६
[२८] अथर्ववेद ज्योतिष – चतुर्थप्रकरण, श्लोक ६३
[२९] महाभारत – आदिपर्व, अध्याय १६०, श्लोक ७
[३०] आर्य सिद्धांत – कालक्रियापाद, आर्या १६
[३१] बृहज्जातकम् – राशि प्रभेदाध्याय, श्लोक ३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वराहमिहिर के समय में योग नामक अंग का प्रचार नहीं रहा होगा। ब्रह्मगुप्त ने अपने सिद्धान्त में अनेक स्थान पर तिथि, नक्षत्र, करण शब्दों का उल्लेख किया है किन्तु योग का नाम नहीं लिया है।[३२] इन्होंने व्यातीपात योग का उल्लेख किया है किन्तु योग शब्द का नहीं। सूर्य सिद्धान्त में योग साधन की रीति का स्पष्ट वर्णन है।[३३]

इस प्रकार हम देखते हैं कि पञ्चांग के पाँचों अंगों – तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण का ज्ञान भारतीयों को एक साथ नहीं हुआ था। प्राचीनकाल में जब भारतीयों को नौ ग्रहों का विशेष ज्ञान नहीं था तब ज्योतिष विद्या का अर्थ नक्षत्र विद्या ही लिया जाता था। इस प्रकार नक्षत्र सम्बन्धी ज्ञान भारतीयों को अति प्राचीनकाल से है। उसके बाद तिथि, करण, वार एवं योग का ज्ञान क्रमानुसार हुआ। शक ५०० तक भारतीयों को पाँचों अंगों का ज्ञान हो चुका था। कालान्तर में उन्हें पञ्चांग के अन्य तत्वों का ज्ञान होता गया होगा।

(ब) पञ्चांग का परिचय :- भारतीय ज्योतिर्विज्ञान की शास्त्रसिद्ध एवं प्रयोग सिद्ध एक स्वस्थ परम्परा 'पञ्चांग' के माध्यम से हमारे जीवन को आलोकित करती आ रही है। पञ्चांग ज्योतिषीय अध्ययन का एक अनिवार्य उपकरण है। पञ्चांग को तिथि पत्र या पत्रा भी कहते हैं। इसका नाम पञ्चांग इसलिये है कि इसमें पाँच मुख्य अंग होते हैं – १. तिथि २. वार ३. नक्षत्र ४. योग ५. करण।

प्राचीनकाल में श्रौत–स्मार्त एवं गृहस्थों के सभी धार्मिक एवं सांकल्पिक अनुष्ठान आदि कृत्यों का मार्गदर्शन पञ्चांग के तिथ्यादि अंगों के द्वारा ही सिद्ध हुआ माना जाता था। इसी कारण कालरूपी ईश्वर के अंगभूत पञ्चांग को नमस्कार किया जाता था।[३४]

पञ्चांग समय की विभिन्न इकाइयों – युग, संवत्, शाके, मास, पक्ष, वारादि विधाओं को व्यक्त करने का एकमात्र सशक्त माध्यम है। पञ्चांग में काल के पाँचों अंगों के अतिरिक्त अनेक महत्वपूर्ण विषयों का समावेश रहता है। पञ्चांग के

---

[३२] संक्रान्तिभतिथिकरण व्यतीपाताद्यन्तगणितानि।। ब्राह्मस्फुट्य सिद्धान्त – अध्याय २,श्लोक ६६
एवं नक्षत्रान्तात्तिथिकरणान्ताच्छारी प्रमाणाद्धति।। ब्राह्मस्फुट्य सिद्धान्त – अध्याय १४,श्लोक ३१

[३३] सूर्य सिद्धान्त – स्पष्टाधिकार, श्लोक ६५

[३४] श्रौतं स्मार्तं च गार्हस्थ्यं यद् विना नैव सिद्धयति।
तत् कालाख्येश्वरस्यागं वन्दे तिथ्यादि पंचकम्।।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आधुनिक स्वरूप में अनेक प्रकार की आकाशीय घटनायें – सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, सूचनाऐं, दैनिक ग्रहसंचार एवं राशि परिवर्तन, ग्रह विवरण, व्रत–पर्व, त्यौहार, राशिफल, यंत्र–तंत्र–मंत्र एवं साधनाकाल, उपनयन – विवाह संस्कार, विवाह, मुण्डन, गृह प्रवेश, गृह निर्माण, विपणन आदि मुहूर्त भविष्यवाणियाँ एवं अन्य ज्योतिष सम्बन्धी स्थायी ज्ञानवर्धक विषय वस्तु आदि विविध विषयों का समावेश रहता है।

पञ्चांग के अनेक स्वरूप देखने को मिलते हैं जैसे– पञ्चांग, जन्त्रियाँ, एफेमरीज, कैलेंडर व एलमनेक इत्यादि। पञ्चांग का आधार विक्रम संवत् या शाके संवत् तथा जन्त्रियों, एफेमरीज व कलैण्डरों का आधार ईस्वी सन् होता है। उत्तर भारत के सभी पञ्चांग चैत्र सुदी प्रतिपदा से चैत्रवदी अमावस्या तक की अवधि (एक चन्द्र वर्ष) के लिये बनाये जाते हैं। कुछ पञ्चांग एक वर्ष से अधिक अवधि के भी होते हैं जैसे – पं. श्री ईश्वरदत्त शर्मा, नवलगढ़ द्वारा रचित पञ्चवर्षीय श्री सरस्वती पञ्चांग, १०० वर्षों का शताब्दी पञ्चांग अपने आप में एक विशेष पञ्चांग है। आधुनिक युग में कम्प्यूटर, कैल्कुलेटर द्वारा कितने ही वर्षों का पञ्चांग बनाया जा सकता है।

प्रत्येक प्रमाणिक पञ्चांग किसी स्थान विशेष के अक्षांश – रेखांश पर आधारित होता है। उसके मुख्य पृष्ठ पर अक्षांश रेखांश का स्पष्ट उल्लेख रहता है। जैसे – आर्यभट्ट पञ्चांग का निर्माण ग्रीनविच (लंदन) से २८° ३८′ उत्तरी अक्षांश तथा ७७° १२′ पूर्वी देशांतर के आधार पर होता है।

पञ्चांग दो पद्धतियों पर निर्मित होते हैं – एक सायन पद्धति, दूसरी निरयन पद्धति। उत्तर भारत के सभी पञ्चांग निरयन पद्धति पर निर्मित होते हैं, जबकि पाश्चात्य देशों में सायन पद्धाति प्रचलित है।

प्रत्येक पञ्चांग में एक पक्ष का एक पृष्ठ होता है। इस प्रकार १२ माह के २४ पृष्ठ होते हैं। प्रत्येक पृष्ठ के ऊपर विक्रम संवत्, शक संवत्, चान्द्रमास, पक्ष, ईस्वी सन्, मास, तारीख से तारीख तक, ऋतु, अयन एवं सूर्य की गोलार्द्ध में स्थिति का

उल्लेख रहता है। प्रत्येक पृष्ठ पर एक पंक्ति होती हैं जिसमें तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के साथ–साथ आनंदादियोग का विवरण रहता है। इसके पश्चात इसी पंक्ति में आगे दिनमान, सूर्योदयास्त, तारीखें, राष्ट्रीय, प्रतिष्ठा, मुस्लिम, बंगाली, अंग्रेजी आदि के उल्लेख के साथ–साथ चन्द्र एवं सूर्य की राशिगत स्थिति का विवरण रहता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अंतिम लम्बी पंक्ति में सूर्य व अन्य ग्रहों की संक्रान्तियाँ, नक्षत्र प्रवेश, व्रत त्यौहार, भद्रा, पंचक, कुयोग, सुयोग, ग्रहों का उदयास्त, एवं वक्री–मार्गी इत्यादि की सूचनाऐं रहती है, इस पंक्ति को लस्टर कहा जाता है।

अलग अलग पञ्चांग उपरोक्त सूचनाऐं भिन्न–भिन्न इकाईयों में देते हैं। कोई पञ्चांग चन्द्र संचार, ग्रहों के नक्षत्र–राशि प्रवेश काल, कुयोग, सुयोग आदि के प्रारम्भिक काल को भारतीय मानक समय में व्यक्त करते हैं तो कोई पञ्चांग घटी–पलात्मक मान में । जैसे – हृषीकेष पञ्चांग में चन्द्र संचार का समय घटी–पल में दर्शाया है जवकि आर्यभट्ट पञ्चांग में यह समय मानक समय में है। इन दोनों पञ्चांगों में लस्टर पंक्ति की सभी सूचनाऐं भारतीय मानक समय में ही दी गई हैं।

पक्ष विवरण के नीचे दो साप्ताहिक कुण्डलियाँ सूर्योदय कालीन या प्रातः ५.३० बजे की ग्रह स्थिति के आधार पर निर्मित होती हैं जो कि ज्योतिर्विदों की सुविधा के लिये दी जाती हैं। सबसे नीचे पाक्षिक भविष्य फल दिया रहता है जिसमें राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय घटनाऐं, सूचनाऐं एवं आर्थिक स्थिति का उल्लेख रहता है। वर्तमान में निर्मित उत्तर भारत के सभी पञ्चांगों में उपर्युक्त बातें वांछनीय हैं।

(स) पञ्चांग की परिभाषा :- पञ्चांग का शाब्दिक अर्थ है – ''पाँच अंग'' । ज्योतिर्विज्ञान के तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण ये पाँच प्रमुख अंग होते हैं। इन पाँचों अंगों के सम्मिश्रण को पञ्चांग कहा गया है–

तिथि वारिश्च नक्षत्रं योग करणमेव च ।
एतेषां यत्र विज्ञानं पञ्चांग तन्निगद्यते ।।[३५]

---

[३५] वृहदवकहडाचक्रम, पञ्चांग प्रकरण, श्लोक १

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

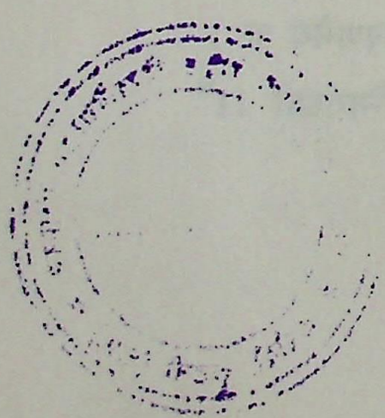

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(द) पञ्चांग - तिथि,वार,नक्षत्र, योग और करण का परिचय :-

१. **तिथि** :- चन्द्रमा की एक कला को तिथि कहते हैं। कला का मान सूर्य और चन्द्रमा के अन्तरांशों पर निकाला जाता है। तिथि का निरूपण सूर्य सिद्धान्त में इस प्रकार किया है :-

अर्काद्विनिसृजः प्राचीं यद्यात्यहरहः शशी।

तच्चान्द्रमानमंशैस्तु ज्ञेया द्वादशभिस्तिथिः।।[३६]

सम्पूर्ण भचक्र (३६०°) में ३० तिथियाँ होती हैं। अतः एक तिथि का मान ३६०÷३०=१२° अंश होता है। इन तिथियों में १५ तिथियाँ कृष्ण पक्ष की तथा १५ तिथियाँ शुक्ल पक्ष की होती हैं। इन दोनों पक्षों में १ से १४ वीं तिथियों को क्रमशः प्रतिपदा (पड़वा), द्वितीया (दौज), तृतीया (तीज), चतुर्थी (चौथ), पंचमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी (ग्यारस), द्वादसी (बारस), त्रयोदसी (तेरस), चतुर्दशी (चौदस) कहते हैं। शुक्ल पक्ष की अन्तिम (१५ वीं) तिथि को पूर्णिमा तथा कृष्णपक्ष की अन्तिम (३० वीं) तिथिको अमावस्या कहते हैं।[३७]

पूर्णिमा एवं अमावस्या के भेदः- महर्षिनारद के मतानुसार जो पूर्णिमा दिन में पूर्णचन्द्र से युक्त हो अर्थात् जिसमें रात्रि के समय चन्द्रमा कलाहीन हो उस पूर्णिमा को 'अनुमति' कहते हैं। जिस पूर्णिमा में रात्रि में पूर्ण चन्द्रमा हो उसे 'राका' कहते हैं। इसीप्रकार जिस अमावस्या में चन्द्रमा की कला का किञ्चित अंश शेष रहता हो वह 'सिनीवाली' और जिसमें चन्द्रमा की सम्पूर्ण कला लुप्त हो जाती हो उसे 'कुहू' कहते हैं।[३८]

---

[३६] सूर्य सिद्धान्त–मानाध्याय, श्लोक १३

[३७] प्रतिपच्च द्वितीया च तृतीया तदनन्तरम्।
चतुर्थी पञ्चमी षष्ठी सप्तमी चाष्टमी तथा।।
नवमी दशमी चैवैकादशी द्वादशी तथा।
त्रयोदशी ततो ज्ञेया ततः प्रोक्ता चतुर्ददशी।।
पूर्णिमा शुक्ल पक्षेऽन्त्या कृष्णपक्षेत्वमा स्मृता।।

[३८] या पौर्णिमा दिवा चन्द्रमती सानुमती स्मृता।
रात्रो चन्द्रवती राकाप्यमावास्या तथा द्विधा।
सिनीवाली चेंदुमती कुहूर्नेदुमती मता।। नारद पुराण,पूर्वभाग, २/५६/१४५ परार्ध, १४६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चन्द्रमा द्वारा पृथ्वी की एक पूर्ण परिक्रमा करने में लगा समय चान्द्रमास कहलाता है। चान्द्रमास में दिनों को तिथि के रूप में गिनते हैं। तिथि का मध्यममान लगभग ६० घटी होता है। परन्तु चन्द्रमा की गति में तीव्र भिन्नता होने के कारण तिथि के मान में न्यूनाधिकता बनी रहती है। चन्द्रमा एक दिन में लगभग १३° अंश अपने परिक्रमण पथ पर बढ़ता है। सूर्य भी पृथ्वी के सन्दर्भ में एक दिन में १° (या ६० कला) आगे बढ़ता है। इस प्रकार एक दिन में चन्द्रमा की कुल बढ़त १३°– १° = १२° ही रह जाती है। यह बढ़त ही सूर्य और चन्द्रमा की गति का अन्तर होता है।

अमावस्या को आकाश में सूर्य और चन्द्रमा साथ–साथ (एक ही राशि व अंशों में) होते हैं। उनका राश्यान्तर शून्य होता है, इसलिये चन्द्रमा दिखाई नहीं देता है। जब दोनों का अन्तर शून्य से बढ़ने लगता है तब एक तिथि का आरम्भ होने लगता है अर्थात् प्रतिपदा तिथि शुरू होती है। जब यह अन्तर बढ़ते–बढ़ते १२° अंश का हो जाता है, तब प्रतिपदा तिथि पूर्ण हो जाती है और द्वितीया तिथि शुरू हो जाती है। चूँकि प्रतिपदा तिथि को चन्द्रमा सूर्य से केवल १२° अंश ही आगे निकलता है। इसलिये इस तिथि में भी साधारणतः आकाश में चन्द्रदर्शन नहीं होते हैं। इसी प्रकार सूर्य–चन्द्रमा के राश्यान्तरों से तिथि का निर्धारण होता है –

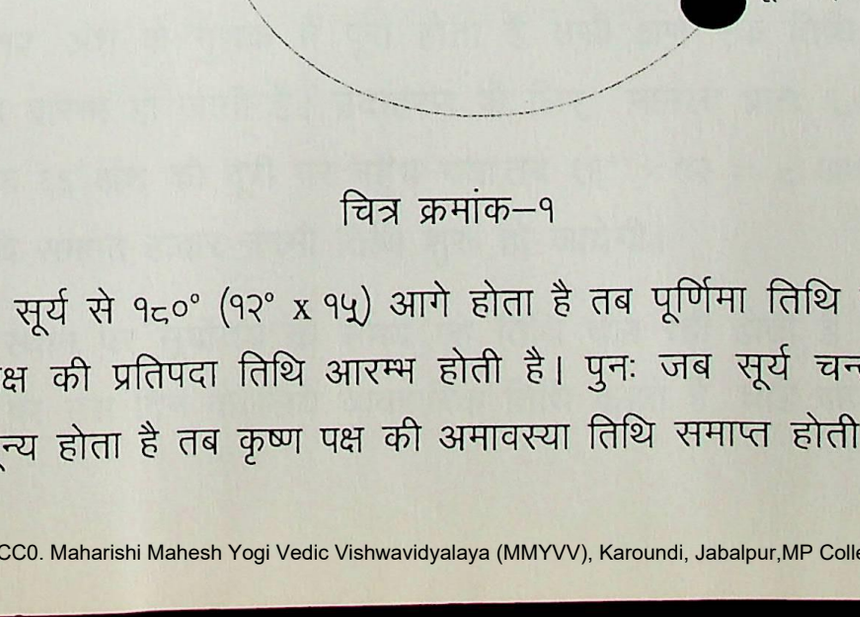

चित्र क्रमांक–१

जब चन्द्रमा सूर्य से १८०° (१२° x १५) आगे होता है तब पूर्णिमा तिथि समाप्त होती है तथा कृष्णपक्ष की प्रतिपदा तिथि आरम्भ होती है। पुनः जब सूर्य चन्द्रमा का अन्तर ३६०° या शून्य होता है तब कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि समाप्त होती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

'सूर्य चन्द्र राश्यंतर के अनुसार तिथि चक्र' तालिका–१

शुक्ल पक्ष			कृष्ण पक्ष		
क्र.	तिथिनाम	सूर्य-चन्द्र राश्यन्तर	क्र.	तिथिनाम	सूर्य-चन्द्र राश्यन्तर
१	प्रतिपदा	०० अंश से १२ अंश तक	१६	प्रतिपदा	१८० अंश से १९२ अंश तक
२	द्वितीया	१२ अशं से २४ अंश तक	१७	द्वितीया	१९२ अंश से २०४ अंश तक
३	तृतीया	२४ अंश से ३६ अंश तक	१८	तृतीय	२०४ अंश से २१६ अंश तक
४.	चतुर्थी	३६ अंश से ४८ अंश तक	१९	चतुर्थी	२१६ अंश से २२८ अंश तक
५	पंचमी	४८ अंश से ६० अंश तक	२०	पंचमी	२२८ अंश से २४० अंश तक
६	षष्ठी	६० अंश से ७२ अंश तक	२१	षष्ठी	२४० अंश से २५२ अंश तक
७	सप्तमी	७२ अंश से ८४ अंश तक	२२	सप्तमी	२५२ अंश से २६४ अंश तक
८	अष्टमी	८४ अंश से ९६ अंश तक	२३	अष्टमी	२६४ अंश से २७६ अंश तक
९	नवमी	९६ अंश से १०८ अंश तक	२४	नवमी	२७६ अंश से २८८ अंश तक
१०	दशमी	१०८ अंश से १२० अंश तक	२५	दशमी	२८८ अंश से ३०० अंश तक
११	एकादशी	१२० अंश से १३२ अंश तक	२६	एकादशी	३०० अंश से ३१२ अंश तक
१२	द्वादशी	१३२ अंश से १४४ अंश तक	२७	द्वादशी	३१२ अंश से ३२४ अंश तक
१३	त्र्योदशी	१४४ अंश से १५६ अंश तक	२८	त्र्योदशी	३२४ अंश से ३३६ अंश तक
१४	चतुर्दशी	१५६ अंश से १६८ अंश तक	२९	चतुर्दशी	३३६ अंश से ३४८ अंश तक
१५	पूर्णिमा	१६८ अंश से १८० अंश तक	३०	अमावस	३४८ अंश से ३६० अंश तक

साधारणतः प्रचलन में एक दिन को एक तिथि की संज्ञा दी जाती है। यद्यपि तिथि दिन–रात में कभी भी बदल सकती है। जब भी सूर्य और चन्द्रमा का राश्यान्तर १२° अंश के गुणक में पूरा होता है उसी क्षण एक तिथि समाप्त होकर दूसरी तिथि प्रारम्भ हो जाती है। उदाहरण के लिए मानलो प्रातः ९.०० बजे चन्द्रमा सूर्य से ठीक ९६° अंश की दूरी पर पहुँच गया,तब ९६° ÷ १२ = ८ अर्थात उसी समय अष्टमी तिथि समाप्त होकर नवमी तिथि शुरू हो जायेगी।

किसी स्थान पर सूर्योदय के समय जो तिथि चल रही होती है उसी तिथि को उस स्थान पर उस दिन के लिये व्यवहारिक तिथि कहते हैं, चाहे वह तिथि सूर्योदय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के १ मिनट पूर्व से ही शूरू होती हो। पञ्चांग में सूर्योदय कालीन तिथियाँ ही लिखी जाती हैं।

पञ्चांग में तिथि दर्शाना :- पञ्चांग में तिथि को घटी–पल में तथा भारतीय मानक समय में व्यक्त किया जाता है। उदाहरणार्थ – शाके २०५७ के आर्यभट्ट पञ्चांग के अनुसार दिनांक ८ मई २००० को वैशाख शुक्ल प्रतिपदा का मान निम्नानुसार है –

सारणी क्रमांक–२

तिथि	वार	समाप्तकाल (स्टैंडर्ड समय में)		सूर्योदय
		घटी–पल	घंटा–मिनट	घंटा–मिनट
१	शुक्र	२ ३७	६ ४५	५ ४३

तात्पर्य है कि शुक्रवार को प्रतिपदा तिथि का मान सूर्योदय के बाद २ घटी ३७ पल तक रहता है।

तिथि वृद्धि एवं क्षयत्व :- सूर्य और चन्द्रमा की गतियों की असमानता के कारण तिथियों का मान सदा एक समान (६० घटी) नहीं रहता है। जब चन्द्रमा की गति बहुत कम होती है तब तिथि का मान ६० घटी से अधिक होता है और जब चन्द्रमा की गति बहुत अधिक होती है तब तिथि का मान ६० घटी से कम होता है। फलस्वरूप कोई तिथि सूर्योदय के बाद तक भी रहती है, कोई तिथि सूर्योदय से पूर्व ही समाप्त हो जाती है। जब कोई तिथि सूर्योदय के पहिले शुरू होकर अगले दिन सूर्योदय के बाद तक रहती है तो उसे तिथि वृद्धि कहते हैं। ऐसी स्थिति में तिथि तीन वारों को स्पर्श करती है अर्थात् दो दिन तक व्यवहारिक तिथि के रूप में रहती है।[३६]

उदाहरणार्थ - संवत् २०५७ के विद्यापीठ पञ्चांग में २६ मई २००० ई. शुक्रवार को ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी तिथि की वृद्धि दिखाई है –

---

[३६] "तिथिर्वारत्रये त्वेका ह्यधिका द्वेच निंदिते।" नारद पुराण, पूर्वभाग २, अध्याय ५६, श्लोक १५४।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सारणी क्रमांक–३

तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल		सूर्योदय	दिनांक
		घटी – पल	घंटा – मिनट	घंटा – मिनट	
७	गुरू	५६ ५४	२८ १६	५ ३०	२५ मई २०००
८	शुक्र	६० ००	...	५ २६	२६ मई २०००
८	शनि	०० १६	५ ३७	५ २६	२७ मई २०००

पञ्चांग के अनुसार अष्टमी तिथि गुरूवार को २८ बजकर १६ मिनट (प्रातः ४:१६ बजे) से शुरू होकर शनिवार को प्रातः ५ बजकर ३७ मिनट तक रहती है। जबकि पञ्चांग में २७ मई २००० शनिवार को दिल्ली में सूर्योदय ५ बजकर २६ मिनट पर होता है। इस प्रकार अष्टमीतिथि शनिवार को ८ मिनट तक रहती है। अतः अष्टमीतिथि अधितिथि है, यह तीन वारों–गुरू, शुक्र, शनि को स्पर्श करती है।

जब कोई तिथि सूर्योदय के बाद शुरू होकर अगले सूर्योदय से पूर्व ही समाप्त हो जाती हैं तब ऐसी तिथि को अवम या क्षय तिथि कहते हैं। ऐसी स्थिति में एक वार को तीन तिथियाँ स्पर्श करती हैं।[४०] कोई भी क्षय तिथि व्यवहारिक तिथि नहीं हो सकती है ।

उदाहरणार्थः– संवत् २०५७ के विद्यापीठ पञ्चांग के अनुसार १६ नवम्बर २००० ई. रविवार को अष्टमी तिथि प्रातः ७ बजकर ४३ मिनट तक रहती है जबकि सूर्योदय ६ बजकर ५१ मिनट पर होता हैं। रविवार को नवमी तिथि ७ बजकर ४३ मिनट से शुरू होकर रात्रि ३० बजकर ६ मिनट (प्रातः ६:६ बजे) तक रहती हैं। चूँकि २० नवम्बर (सोमवार) को भी सूर्योदय ६ बजकर ५१ मिनट पर होता है, अतः नवमी तिथि सूर्योदय से ४२ मिनट पूर्व ही समाप्त हो जाती है। यहाँ नवमी तिथि क्षयतिथि होगी।

सारणी क्रमांक–४

तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल		सूर्योदय	दिनांक
		घटी – पल	घंटा – मिनट	घंटा – मिनट	
८	रवि	२ ११	७ ४३	६ ५१	१६ नवम्बर २०००
६	रवि	५८ १४	३० ६	६ ५१	१६ नवम्बर २०००
१०	सोम	५५ १४	२८ ५७	६ ५१	२० नवम्बर २०००

---

[४०] एकस्मिन्वासरे तिस्रस्तिथयः स्यात्तिथिक्षयः।'' नारद पुराण पूर्वभाग २ अध्याय ५६, श्लोक १५३।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिथि की वृद्धि और क्षय स्थान विशेष के सूर्योदय पर निर्भर करता हैं। जब एक तिथि किसी एक स्थान पर सूर्योदय समय के अनुसार अवम अथवा अधिक तिथि हो तब यह आवश्यक नहीं है कि वही तिथि किसी दूसरे स्थान पर भी अवम (क्षय) अथवा अधिक (वृद्धि) तिथि हो।

उदाहरणार्थ – आर्यभट्ट पञ्चांग के अनुसार ११ अप्रैल २००० ई. मंगलवार को चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि का समाप्तिकाल स्टैण्डर्ड समय में ३० बजकर ४ मिनट (प्रातः ६:४ बजे) है। जबकि बुधवार को दिल्ली में सूर्योदय ६ बजकर ५ मिनट पर होता हैं इस प्रकार अष्टमी तिथि सूर्योदय से १ मिनट पूर्व मंगलवार में ही समाप्त हो जाती है। इस पंञ्चांग में अष्टमी तिथि को क्षयतिथि दर्शाया है अर्थात् मंगलवार को दिल्ली में अष्टमी तिथि का क्षय होता है। किन्तु दिल्ली से पूर्व दिशा के स्थलों (जैसे–मथुरा, ग्वालियर, कलकत्ता इत्यादि) में सूर्योदय भारतीय मानक समयानुसार ६ बजकर ४ मिनट से पहिले ही होता है अतः वहाँ अष्टमी तिथि अवम तिथि नहीं होगी।

जो तिथि सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त तक रहती है वह 'अखण्ड' तिथि कहलाती है। यदि सूर्यास्त से ही पूर्व समाप्त हो जाती है तब वह 'खण्ड' तिथि कहलाती है।[४१] यदि तिथि का कुलमान ज्ञात करना हो जो गततिथि को ६० घटी में से हीन करके शेष को वर्तमान तिथि में जोड़ देने से तिथि का कुलमान प्राप्त होता है।

उदाहरणार्थ – विद्यापीठ पञ्चांग के अनुसार दिनांक ५ अप्रैल २००० ई. बुधवार को प्रतिपदा तिथि रात्रि २१ बजकर ५८ मिनट तक रहती है तथा ६ अप्रैल २००० गुरूवार को द्वितीया तिथि रात्रि १६ बजकर ५४ मिनट तक रहती है।

सारणी क्रमांक–५

तिथि	वार	तिथि समाप्ति काल	सूर्योदय	दिनांक
		घटी – पल	घंटा – मिनट	
प्रतिपदा	बुध	३६ २६	२१ ५८	५ अप्रैल २०००
द्वितीय	गुरू	३४ २०	१६ ५४	६ अप्रैल २०००

[४१] सूर्यास्तमनपर्यन्तं यस्मिन्वारे तु या तिथिः।
विद्यते सा त्वखंडा स्यान्न्यूना चेत्खंड संज्ञिता। नारादपुराण पूर्वभाग, २/५६/१५४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

६० घटी – ३६ घटी २६ पल = २० घटी ३४ पल,

यह बुधवार को द्वितीया तिथि का मान है।

तब द्वितीया तिथि का कुल मान = २० घटी ३४ पल + ३४ घटी २० पल

अतः द्वितीया तिथि का कुल मान ५४ घटी ५४ पल होगा।

२. वार :- भारतीय ज्योतिष में वार एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक रहता है। वार को परिभाषित करते हुये कहा गया है – उदयात् उदयं वारः। वार को प्राचीन गणित ज्योतिष में सावन दिन या अहर्गण के नाम से भी जाना जाता है। वारों का प्रचलित क्रम समस्त विश्व में एक जैसा है। पाश्चात्य देशों में रात्रि १२.०० बजे जब अंग्रेजी तारीख बदलती है उसी समय वार भी बदल जाता है, परन्तु भारतीय ज्योतिष में ऐसा नहीं है। इसमें सूर्योदय के साथ ही वार (दिन) बदलता है। वार सात होते हैं जिनका क्रम इस प्रकार है – १. रविवार (सूर्यवार) २. सोमवार (चन्द्रवार) ३. मंगलवार (भौमवार) ४. बुधवार ५. बृहस्पतिवार (वीरवार) ६. शुक्रवार (भृगुवार) ७. शनिवार।[४२]

वारों का क्रम निर्धारण :-सातवारों के नाम सातग्रहों के नाम पर रखे गये हैं। वारों का क्रम होराक्रम के आधार पर है और होरा क्रम ब्रह्माण्ड में सूर्यादि ग्रहों की कक्षा क्रम के अनुसार हैं। अतः वारों का क्रम समझने के लिये सर्वप्रथम होरा क्रम को समझना होगा।

ग्रहों में सूर्य से कक्षा दूरी के आधार पर सबसे ऊपर (दूर) शनिग्रह की कक्षा है और उसके नीचे क्रमशः गुरू, मंगल, पृथ्वी, शुक्र एवं बुध की कक्षाऐं हैं। इस प्रकार सूर्य के सर्वाधिक पास बुध की कक्षा होगी।

भारतीय ज्योतिष में सूर्य को पृथ्वी के सापेक्ष एक ग्रह माना गया है तब ग्रहों की कक्षाओं का घटता हुआ क्रम होगा – शनि, गुरू, मंगल, सूर्य (पृथ्वी), शुक्र और बुध। चूँकि चन्द्रमा को भी एक ग्रह माना गया है तथा पृथ्वी से देखने पर चन्द्रमा सर्वाधिक पास दृष्टिगत होता है। अतः सबसे नीचे चन्द्रमा की कक्षा का निर्धारण होगा। इस प्रकार ग्रह पिण्डों में सबसे ऊपर शनि और उसके नीचे क्रमशः गुरू,

---

[४२] आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधश्चाथ बृहस्पतिः।
शुक्रः शनैश्चरश्चैव वाराः सप्त प्रकीर्तिताः।। सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्याय, वारप्रकरण श्लोक १
एवं वहदवकहडाचक्रम, वार प्रकरणम् – शलोक १

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध तथा चन्द्रमा की कक्षाओं का निर्धारण होता है। ग्रहों का यह कक्षा क्रम ही होराक्रम कहलाता है।

भारतीय ज्योतिष में ''होरा'' शब्द Hour (घंटा) का पर्यायवाची है। एक दिन (वार) में एक–एक घण्टा की क्रम से २४ होराऐं होती है। जिस दिन की प्रथम होरा का स्वामी जो ग्रह होता है वह दिन उसी ग्रह के नाम के वार से जाना जाता है। चूँकि सृष्टि के आरम्भ में सर्वप्रथम सूर्य को देखा गया इसलिये प्रथम होराका स्वामी सूर्य माना गया और रविवार को वार क्रम में प्रथम स्थान दिया।

सारणी क्रमांक–६

क्रमांक	१	२	३	४	५	६	७
होराक्रम	सूर्य	शुक्र	बुध	चन्द्र	शनि	गुरू	मंगल
वारक्रम	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार

वार के विषय में सूर्य सिद्धान्त में लिखा है कि शनि से नीचे अधः कक्षाक्रम से चौथाग्रह दिवसाधिपति (वारेश्वर) होता है।[४३]

चूँकि अहोरात्र के होरा नामक २४ विभाग होते हैं। सातग्रह क्रम से उनके अधिपति होते हैं। अहोरात्र में इनकी तीन–तीन (७ x ३ = २१) आवृत्तियाँ समाप्त हो जाने के पश्चात् ३ होराऐं शेष बचती हैं। इस प्रकार चतुर्थ ग्रह द्वितीय दिन की प्रथम होरा का स्वामी होगा। होराक्रम में सूर्य से चतुर्थ ग्रह चन्द्रमा है अतः चन्द्रवार को दूसरा स्थान दिया। इसी तरह चन्द्रमा से चतुर्थ ग्रह मंगल है, मंगल से चतुर्थ ग्रह बुध, बुध से चतुर्थग्रह गुरू, गुरू से चतुर्थग्रह शुक्र, शुक्र से चतुर्थग्रह शनि होता है। वारों का क्रम भी इसी प्रकार निर्धारित होता है।

पञ्चांग में वार को घटी–पल या भारतीयय मानक समय में नहीं दर्शाया जाता है। मात्र एक कालम वार का होता है, जो तिथि क्रमांक कालम के ठीक पास से लिखा जाता है। जिससे वार में तिथि का मान देखने में सुविधा होती है। अलग–अलग स्थान पर वार का आरम्भ सूर्योदय के आधार भिन्न–भिन्न समय से होता है।

---

[४३] मन्दादधः क्रमेण स्युश्चतुर्था दिवसाधिपाः। सूर्यसिद्धान्त, भूगोलाध्याय, श्लोक ७६–८०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रत्येक वार में एक–एक घंटा की २४ होराऐं होती हैं। वार के आरम्भ का प्रथम घंटा, उसी वार की होरा से होता है, जिसे कालहोरा या क्षणवार कहते हैं। प्रत्येक क्षणवार गतकाल होरेश से छठा होता है। सूर्योदय से शुरू करके उसी वार क्रम से प्रति एक–एक घण्टे की वार आवृत्ति की जाती है। जैसे – सोमवार की प्रथम होरा चन्द्र की, दूसरी होरा चन्द्र से छठी अर्थात् शानि की, तीसरी होरा शनि से छठी अर्थात् गुरू की और चौथी होरा गुरू से छठी अर्थात् मंगल की होती है।[४४]

''काल होरा चक्र'' सारणी क्रमांक–७

घंटा	घटी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
१	२–३०	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
२	५–००	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल	वुध	गुरू
३	७–३०	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल
४	१०–००	चन्द्र	मंगल	वुध	गुरू	शुक्र	शनि	सूर्य
५	१२–३०	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र
६	१५–००	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध
७	१७–३०	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र
८	२०–००	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
९	२२–३०	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल	वुध	गुरू
१०	२५–००	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल
११	२७–३०	चन्द्र	मंगल	वुध	गुरू	शुक्र	शनि	सूर्य
१२	३०–००	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र
१३	३२–३०	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध
१४	३५–००	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र
१५	३७–३०	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
१६	४०–००	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल	वुध	गुरू
१७	४२–३०	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल
१८	४५–००	चन्द्र	मंगल	वुध	गुरू	शुक्र	शनि	सूर्य
१९	४७–३०	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र
२०	५०–००	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध
२१	५२–३०	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	चन्द्र
२२	५५–००	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
२३	५७–३०	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल	वुध	गुरू
२४	६०–०	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्र	मंगल

[४४] यो वारो यत्र दिवसे तदादि गणयेत्क्रमात्।
वारा त्षष्ठस्य षष्ठस्य होरा सार्धद्विनाडिका।। सुगमज्योतिष, संज्ञाध्याय,वारप्रकरणम् पृ.७०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

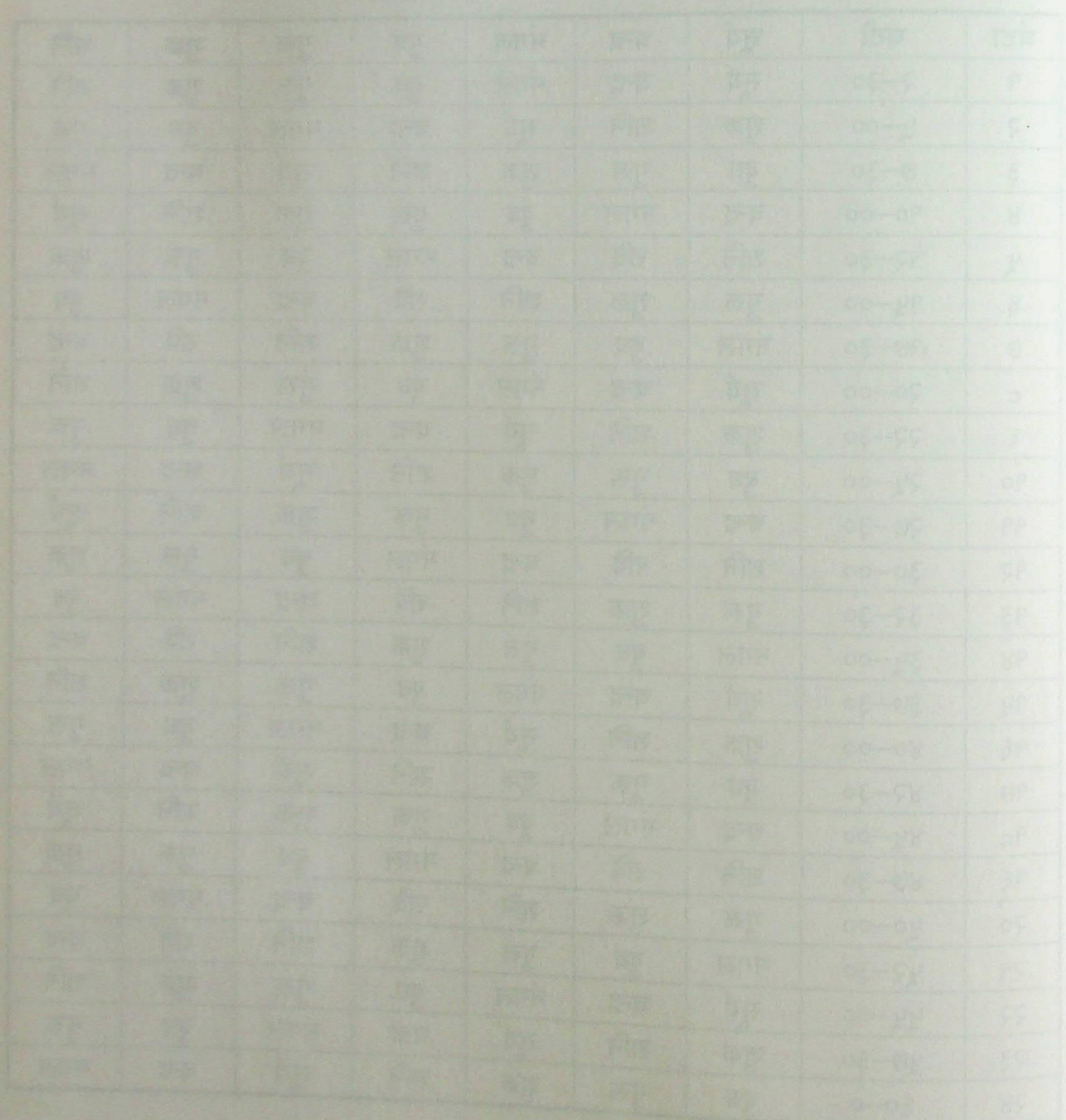

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रत्येक वार में १ली, ८वीं, १५वीं तथा २२ वीं होरा उसी वार की होती है। यदि परिस्थिति वश शीघ्रता में और कोई निर्दिष्ट मुहूर्त न निकलता हो तब विहित वार की काल होरा में अभीष्ट कार्य सम्पादन करना उचित माना गया है।

वार की प्रवृत्ति का ज्ञान केवल इसी निमित्त से है कि वार किस समय से आरम्भ होता है। वार प्रवृत्ति के विषय में सूर्य सिद्धान्त एवं नारद पुराण का मत एक समान है। इनके अनुसार लंका के अर्द्ध रात्रि काल से वार प्रवृत्ति मानते हैं। जो देश (स्थान) भूमध्य रेखा से पूर्व दिशा में हैं वहाँ वार का आरम्भ उस स्थान की अर्द्ध रात्रि से देशांतर काल के तुल्य समय पीछे से होता है। खमध्य (भूमध्य) रेखा से पश्चिम में स्थित देशों में वार का आरम्भ उस स्थान की अर्द्धरात्रि से देशान्तर काल के तुल्य समय आगे से होता है।[४५] नारद पुराण में आगे कहा गया है कि जिस समय लंका (भूमध्यरेखा) में सूर्योदय होता है उसी समय से सर्वत्र रवि आदि वारों का आरम्भ होता है। उस समय से देशांतर एवं चरार्ध घटी तुल्य पहिले अथवा बाद में अन्य देश में सूर्योदय होता है।[४६] इस प्रकार स्पष्ट है कि नारद पुराण में वार प्रवृत्ति को लेकर दो प्रकार के मत हैं किन्तु महर्षि नारद द्वारा एक साथ दो मतों का देना एक विरोधाभास है। वास्तव में इन दो मतों में से प्रथम मत महर्षि सूर्यदेव का तथा दूसरा मत महर्षि नारद का होना चाहिये।

वार प्रवृत्ति के विषय में ब्रह्मगुप्त और भास्कराचार्य का मत् एक ही है जो कि सूर्यसिद्धान्त से भिन्न है। इनके अनुसार जिस समय लंका में सूर्योदय होता है, उसी समय से वार प्रवृत्ति होती है।[४७] इनका कथन है कि सृष्टि के आरम्भ के समय से पहला सूर्य लंका में देखा गया और उसी समय से प्रथम दिन की शुरूवात हुई। वर्तमान में इसी नियम का अधिक समर्थन होता है। परन्तु वैष्णव सम्प्रदाय के अनुयायी अर्धरात्रि से ही वार का आरम्भ मानते हैं।[४८] धार्मिक कृत्यों में वैष्णवी लोग

---

[४५] वार प्रवृतिः प्राग्देशे क्षपार्धेभ्यधिके भवेत्।
तदेशांतरनाडीभिः पश्चादूने विनिर्दिशेत्।। सूर्यसिद्धान्त, मध्यमाधिकार, श्लोक ७६
तथा नारद पुराण, पूर्वभाग, अध्याय ५४, श्लोक ८७ परार्ध, ८८ पूर्वार्ध

[४६] नारद पुराण, पूर्वभाग २/५६/१५६

[४७] ब्राह्मस्फुट सिद्धान्त, मध्यमाधिकार, श्लोक ३३, एवं सिद्धान्त शिरोमणि गणिताध्याय, श्लोक १५

[४८] माधुरी, खण्ड२, संख्या ४, पृष्ठ ४३६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिन में उसी तिथि को मानते हैं जो पिछली अर्धरात्रि के समय विद्यमान रहती है। यही कारण है वैष्णवों की एकादशी प्रायः द्वादशी के दिन होती हैं।

आचार्य श्रीरामदैवज्ञ ने जिस समय लंका में सूर्योदय होता है, उस समय को वार प्रवृति माना है। इनके मत से वार प्रवृत्ति ज्ञात करने के लिये लंका के याम्योत्तर (भूमध्य) रेखा से पूर्व या पश्चिम जितने योजन पर अपना देश स्थित हो, उस योजन संख्या में से उसी का चतुर्थांश घटाते हैं, प्राप्त शेषफल पल होते हैं। यदि अपना देश लंका के पूर्व में स्थित हो तो १५ घटी में से पलात्मक शेषफल को घटाते हैं और यदि अपना देश लंका के पश्चिम में स्थित हो तो १५ घटी में पलात्मक शेषफल को जोड़ते हैं। इस प्रकार प्राप्तफल घटी–पल में होगा। यह घटी–पल अपने देश के इष्ट दिन के दिनार्द्ध से जितना कम होंगे उतना घटी–पल सूर्योदय के बाद उस देश में वार प्रवृत्ति होगी और जितना अधिक होंगे उतना घटी–पल सूर्योदय से पहले उस देश में वार–प्रवृत्ति होगी।[४६]

उदाहरणार्थ – विक्रम संवत् २०५५ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा रविवार (दिनांक २६ मार्च १९९८ ई.) को काशी में दिनमान ३० घटी २६ पल है तब इस दिन काशी में वार प्रवृत्ति ज्ञात करते हैं। चूँकि रेखादेश उज्जैयनी से काशी ६४ योजन पूर्व है। अतः

$$६४ - \frac{६४}{४} = ६४ - १६ = ४८ \quad \text{पल}$$

काशी के उज्जैन (दक्षिणोत्तर रेखा) से पूर्व दिशा में स्थित होने के कारण ४८ पलों को १५ घटी में से घटाते हैं अर्थात्

१५ घटी – ०० : ४८ = १४ घटी १२ पल

चूँकि इष्ट दिन (रविवार) को काशी में दिनार्द्ध ३० : २६ ÷ २ = १५ घटी १४ पल ३० विपल प्राप्त होता है इसलिये

१५/१४/३० – १४/१२/०० = ००/२/३० घट्यादि

---

[४६] पदोनरेखापरपूर्वयोजनैः पलैर्युतोनास्तिथयो दिनार्द्धतः।
ऊनाधिकास्तद्विवरोद्भवैः पलैरूर्ध्व तथाऽधो दिनपप्रवेशनम्।।
मूहूर्त चिंतामणि, शुभाशुभ प्रकरण, श्लोक ५४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतः विक्रम संवत् २०५५ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को काशी में सूर्योदय होने के २ पल २० विपल (१ मिनट) बाद काशी में रविवार की प्रवृति होगी।

वार प्रवृति के आधार पर ही काल होरेश का आनयन होता है। आचार्य श्रीराम दैवज्ञ के अनुसार जिस समय पर काल होरेश ज्ञात करना हो, उस इष्ट घटी संख्या को दुगना करके अलग–अलग दो स्थानों पर रखें। एक स्थान में ५ का भाग देकर प्राप्त शेष घट्यादि को दूसरे स्थान पर रखी हुई घट्यादि में से घटावें। जो शेष बचे उसमें १ जोड़कर ७ का भाग देने पर पुनः जो शेष संख्या आये उसे वारपति से गिनने पर काल होरेश ज्ञात होता है।[५०]

उदाहरणार्थः– विक्रम संवत् २०५५ चैत्रशुक्ल प्रतिपदा रविवार (दिनांक २६ मार्च १९९८) को ४० घटी २० पल पर काशी में कालहोरेश ज्ञात करते हैं। उपर्युक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि इस दिन काशी में वार प्रवृत्ति सूर्योदय के २ पल ३० विपल बाद है इसलिये इस वार प्रवृत्तिकाल को इष्ट घटी ४०/२० में से घटायेंगे –

४०/२० – ०/२/३० = ४०/१७/३० घट्यादि

यह वार प्रवृत्तिकाल से गत घटी हुई। इसे दुगना करके ५ का भाग देते हैं–

तथा ८०/३५/०० ÷ ५ = लब्धि १६ तथा शेष ०/३५/००

पुनः ८०/३५/०० – ०/३५/०० = ८०/००/०० शेष

८० में १ जोड़कर ७ का भाग दिया अर्थात् ८१ ÷ ७ = शेषफल ४ आया । अतः रविवार से गिनने पर चतुर्थवार बुधवार प्राप्त होगा। इसलिये इष्ट समय में बुध काल होरेश कहलायेगा।

३. नक्षत्रः- आकाश में दैदीप्यमान एक अथवा अनेक तारासमूह को नक्षत्र (constellation) कहते हैं। ये तारा समूह कुछ विशेष प्रकार की आकृति दर्शाते प्रतीत होते हैं अथवा इन्हें पहिचान देने के लिये कोई न कोई नाम दिया गया है।

सूर्य की भाँति सभी नक्षत्र स्वतः प्रकाशमान हैं। भचक्र में नक्षत्र के आधार पर

---

[५०] वारदेर्घटिका द्विघ्नाः स्वाक्षहृच्छेषवर्जिताः।
सैकास्तष्टा नगैः कालहोरेशा दिनपात् क्रमात्।। मुहूर्त चिंतामणी, शुभाशुभ प्र., श्लोक ५५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूर्यादि ग्रहों की गति – स्थिति का निर्धारण होता है। प्राचीन वैदिक ग्रन्थों में वर्णित तथा आधुनिक खगोल वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिपादित कुल नक्षत्रों की संख्या २८ है।[५१] भारतीय ज्योतिष में इन नक्षत्रों का विवेचन निम्नानुसार है –

१. अश्विनी	२. भरणी	३. कृतिका	४. रोहिणी	५. मृगशिरा
६. आर्द्रा	७. पुनर्वसु	८. पुष्य	९. आश्लेषा	१० मघा
११. पूर्वाफाल्गुनी	१२ उत्तराफाल्गुनी	१३. हस्त	१४. चित्रा	१५. स्वाती
१६. विशाखा	१७. अनुराधा	१८. ज्येष्ठा	१९. मूल	२०. पूर्वाषाढ़ा
२१. उत्तराषाढ़ा	२२. अभिजित	२३. श्रवण	२४. धनिष्ठा	२५. शतभिषा
२६. पूर्वाभाद्रपद	२७. उत्तराभाद्रपद	२८. रेवती।		

तारासंख्याऐं :- इन २८ नक्षत्रों में ताराओं की संख्या भिन्न– भिन्न है। अश्विनी नक्षत्र की ३, भरणी की ३, कृतिका की ६, रोहिणी की ५, मृगशिरा की ३, आर्द्रा की १ पुनर्वसु की ४, पुष्य की ३, आश्लेषा की ५, मघा ५, पूर्वाफाल्गुनी की २, उत्तराफल्गुनी की २, हस्त की ५, चित्रा की १, स्वाती की १, विशाखा की ४, अनुराधा की ४, जेष्ठा की ३, मूला की ११, पूर्वाषाढ़ा की २, उत्तराषाढ़ा की २, अभिजित् की ३, श्रवण की ३, धनिष्ठा की ४, शतभिषा की १००, पूर्वाभाद्रपद की २, उतराभाद्र पद की २ और रेवती की ३२ ताराऐं होती हैं।[५२]

स्वरूपः- इन २८ नक्षत्रों को भचक्र में पहिचान अथवा नाम देने के लिये भिन्न–भिन्न स्वरूप प्रदान किये गये हैं। आचार्य श्री रामदैवज्ञ ने अश्विनी नक्षत्र का स्वरूप घोड़े के मुख के समान, भरणी का स्वरूप भग (योनि) के समान, कृतिका का छुरे, रोहिणी का सकट (गाड़ी), मृगशिरा का हरिण के मुख, आर्द्रा का मणि, पुनर्वसु का भवन (ग्रह), पुष्य का बाण, आश्लेषा का चक्र, मघा का मकान, पूर्वाफाल्गुनी का मचान, उत्तराफल्गुनी का शैया (पलंग), हस्त का हाथ (पंजा), चित्रा का मोती, स्वाती का मूँगा, विशाखा का तोरण, अनुराधा का बलि (भात के पिण्ड), जेष्ठा का कुण्डल, मूल

---

[५१] सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्याय, नक्षत्र प्रकरण, श्लोक १ एवं बृहदवकडाचक्र, न. प्र., श्लोक १

[५२] त्रित्र्यंगपञ्चाग्निकुवेदवह्नयः शरेषुनेत्राश्विशरेन्दुभूकृताः।
वेदाग्निरूद्राश्वियमाग्निवह्नयोऽब्धयः शतं द्विद्विरदा भतारकाः।।
मुहुर्त चिन्तामणि, नक्षत्र प्रकरण, श्लोक ५८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

का सिंह की पूँछ, पूर्वाषाढ़ा का हाथी के दाँत, उत्तराषाढ़ा का मचान, अभिजित् का त्रिकोण, श्रवण का त्रिचरण (वामन), धनिष्ठा का मृदंग, शतभिषा का वृत्त, पूर्वाभाद्रपदा का मचान, उत्तराभाद्रपद का यमल (जुड़वा पुरूष) और रेवती का मृदंग के समान स्वरूप निर्धारित किया हैं।[५३]

भारतीय ज्योतिषाचार्यों ने गणितीय दृष्टि से क्रान्तिवृत्त (Ecliptic) एवं भचक्र में निर्धारित अश्विनी, भरणी इत्यादि २७ नक्षत्रों को ही मान्यता दी है, २८ वां नक्षत्र अभिजित क्रान्तिवृत्त से ६१° ४४° दूर उत्तर में होने से सामान्यतः कम प्रयोग किया जाता है। इन २७ नक्षत्रों को अपमण्डल में कैसे स्थान मिला होगा यह आजतक निश्चित नहीं हो सका है। वास्तव में भचक्र में अश्विन्यादि प्रत्येक नक्षत्र का भोग ८००′ कला नहीं है।

ज्योतिषशास्त्र में समस्त मेषादिराशि चक्र (३६०°) को २७ भागों में बाँटा गया हैं। प्रत्येक भाग में एक नक्षत्र की स्थापना की गई है। अतः एक नक्षत्र का मान ३६०° ÷ २७ अर्थात्त् १३ अंश २० कला होता है।[५४] अभिजित् को मिलाकर २८ नक्षत्र हो जाते हैं। कुछ आचार्यों के मतानुसार उत्तराषाढ़ा नक्षत्र की अंतिम १५ घटियाँ तथा श्रवण नक्षत्र की प्रथम चार घटियाँ सब मिलाकर १६ घटियाँ अभिजित नक्षत्र का मान है। बृहत्संहिता के चन्द्रचार प्रसंग में चन्द्रमा का नक्षत्रों से योग बताते समय कहा गया है –

षडनागतानि पौष्णाद् द्वादशरौद्राच्च मध्ययोगीनि।

जेष्ठाद्यानि नवर्क्षाण्यफडुपतिनातीत्य युज्यन्ते।।[५५]

इससे भी २७ नक्षत्रों वाला मत् ही सिद्ध होता है। पाश्चात्य ज्योतिष में भी अभिजित को उत्तराषाढ़ा एवं श्रवण के मध्य में माना गया है तथा इसका नाम ह्वेगा (VEGA) कहा है।

---

[५३] अश्व्यादिरूपं तुरगास्ययोनिक्षुरोऽन एणास्यमणिर्गृहं च।
पृषत्कचक्रे भवनं च मञ्चः शय्या करो मौक्तिकविद्रमं च।।
तोरणं बलिनिभं च कुण्डलं सिंहपुच्छगजदन्त मञ्चकाः।
त्र्यस्रि च त्रिचरणाभमर्दलो वृत्तमञ्चयमलाभमर्दलाः।। मुहूर्त चिंतामणि, नक्षत्र प्र.,श्लोक ५६, ६०

[५४] सूर्य सिंद्धान्त, भूगोलाध्याय श्लोक २५

[५५] वृहत्संहिता, चन्द्रचाराध्याय (४), श्लोक ७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

''नक्षत्र परिचय चक्र'' सारणी क्रमांक–८

क्र.	नक्षत्रनाम	राशि	अंश	कला	से	राशि	अंश	कला	तक
१	अश्विनी	०	०	०	से	०	१३	२०	तक
२	भरणी	०	१३	२०	से	०	२६	४०	तक
३	कृतिका	०	२६	४०	से	१	१०	००	तक
४	रोहिणी	१	१०	००	से	१	२३	२०	तक
५	मृगशिर	१	२३	२०	से	२	६	४०	तक
६	आर्द्रा	२	६	४०	से	२	२०	००	तक
७	पुनर्वसु	२	२०	००	से	३	३	२०	तक
८	पुष्य	३	३	२०	से	३	१६	४०	तक
९	आश्लेष	३	१६	४०	से	४	००	००	तक
१०	मघा	४	००	००	से	४	१३	२०	तक
११	पूर्वाफाल्गुनी	४	१३	२०	से	४	२६	४०	तक
१२	उत्तराफाल्गुनी	४	२६	४०	से	५	१०	००	तक
१३	हस्त	५	१०	००	से	५	२३	२०	तक
१४	चित्रा	५	२३	२०	से	६	६	४०	तक
१५	स्वाती	६	६	४०	से	६	२०	००	तक
१६	विशाखा	६	२०	००	से	७	३	२०	तक
१७	अनुराधा	७	३	२०	से	७	१६	४०	तक
१८	ज्येष्ठा	७	१६	४०	से	८	००	००	तक
१९	मूला	८	००	००	से	८	१३	२०	तक
२०	पूर्वाषाढ़ा	८	१३	२०	से	८	२६	४०	तक
२१	उत्तराषाढ़ा	८	२६	४०	से	९	१०	००	तक
२२	श्रवण	९	१०	००	से	९	२३	२०	तक
२३	धनिष्ठा	९	२३	२०	से	१०	६	४०	तक
२४	शतभिषा	१०	६	४०	से	१०	२०	००	तक
२५	पूर्वाभाद्रपद	१०	२०	००	से	११	३	२०	तक
२६	उत्तराभद्रपद	११	३	२०	से	११	१६	४०	तक
२७	रेवती	११	१६	४०	से	१२	००	००	तक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ज्योतिष में २७ नक्षत्रों को १२ राशियों में वितरित किया गया है। एक नक्षत्र के चतुर्थांश का वितरण करने के लिये प्रत्येक नक्षत्र के चार भाग किये गये हैं, जिन्हें नक्षत्र का चरण या पाद कहते हैं। प्रत्येक चरण का मान १३° २०′ ÷ ४ = ३ अंश २० कला होता है। इस प्रकार २७ नक्षत्रों में कुल १०८ चरण होते हैं। प्रत्येक राशि में १०८ ÷ १२ = ९ चरण होंगे।[५६]

''राशि एवं नक्षत्र चरण चक्र'' सारणी क्रमांक–६

क्र	राशिनाम	नक्षत्र नाम	चरण			
			प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
१	**मेष**	अश्विनी	चू	चे	चो	ला
		भरणी	ली	लू	ले	लो
		कृतिका	अ	ग	ग	ग
२	**वृष**	कृतिका	ग	ई	ऊ	ए
		रोहिणी	ओ	बा	बी	बू
		मृगशिरा	वे	वो	ग	ग
३	**मिथुन**	मृगाशिरा	ग	ग	का	कि
		आर्द्रा	कु	घ	ङ	छ
		पुनर्वसु	के	को	ह	ग
४	**कर्क**	पुनर्वसु	ग	ग	ग	हि
		पुष्य	हु	हे	हो	डा
		आश्लेषा	डि	डु	डे	डो
५	**सिंह**	मघा	म	मी	मु	मे
		पूर्वाफल्गुनी	मो	टा	टि	टू
		उत्तराफाल्गुनी	टे	ग	ग	ग
६	**कन्या**	उत्तरा फाल्गुनी	ग	टो	प	पी
		हस्त	पू	ष	ण	ठ
		चित्रा	पू	पो	ग	ग

क्रमशः

---

[५६] मेषाश्विप्रथमा नवर्क्ष चरणाश्चक्रस्थिता राशयो,
राशिक्षेत्र गहर्क्षभानि भवनं चैकार्थ सम्प्रत्यये। वृहज्जातकम्, राशि प्रभेदाध्यायः श्लोक ४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्र	राशिनाम	नक्षत्र नाम	चरण			
			प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
७	तुला	चित्रा	ग	ग	र	री
		स्वाती	रू	रे	रो	ता
		विशाखा	ति	तु	ते	ग
८	वृश्चिक	विशाखा	ग	ग	ग	तो
		अनुराधा	न	नि	नु	ने
		जेष्ठा	यो	या	यि	यु
९	धनु	मूला	य	यो	भा	भि
		पूर्वाषाढ़ा	भ	ध	फा	ढ
		उत्तराषाढ़ा	भे	ग	ग	ग
१०	मकर	उत्तराषाढ़ा	ग	भो	ज	जि
		श्रवण	खि	खु	खे	खो
		धनिष्ठा	ग	गि	ग	ग
११	कुम्भ	धनिष्ठा	ग	ग	गु	गे
		शतभिषा	गो	स	सि	सु
		पुर्वाभाद्रपद	से	सो	द	ग
१२	मीन	पूर्वाभाद्रपद	ग	ग	ग	दि
		उत्तराभाद्र पद	दु	थ	झ	ञ
		रेवती	दे	दो	च	चि

बालक अथवा बालिका के जन्म के समय चन्द्रमा भचक्र में नक्षत्र के जिस चरण में होता है उसी के अनुसार बालक का नामाक्षर चुना जाता है। जैसे – चित्रा नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्में बालक का नाम 'रा' अक्षर पर रखा जायेगा।

भचक्र में प्रत्येक ग्रह प्रति क्षण किसी न किसी नक्षत्र में विचरण करता है। ये ग्रह नक्षत्र मण्डल की परिक्रमा भिन्न–भिन्न समय में करते हैं। भारतीय ज्योतिष में चान्द्र नक्षत्रों का विशेष महत्व है। चन्द्रमा एक दिन में जितना चलता है उसी के आधार पर भचक्र को २७ भागों में विभाजित किया गया है। आधुनिक मत से चन्द्रमा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लगभग २७ दिन ७ घण्टे ४३ मिनट में पृथ्वी की नाक्षत्रिक (Sidereal) परिक्रमा करता है। नक्षत्रों की कुल संख्या भी २७ ही है। इस प्रकार चन्द्रमा लगभग १ दिन (६० घटी) में एक नक्षत्र भोगता है। किन्तु चन्द्रमा की गति में न्यूनाधिकता होने के कारण चन्द्रमा एक नक्षत्र को पार करने में अपनी न्यूनतम गति से लगभग ६७ घटी तथा अपनी अधिकतम गति से पार करने में लगभग ५२ घटी का समय लगा सकता है।

नक्षत्र, पञ्चांग के पाँचों अंगों में से एक है। जब बोलचाल की भाषा में कहा जाता है कि आज अश्विनी नक्षत्र है। तब इसका तात्पर्य यह होता है कि आज चन्द्रमा अश्विनी नक्षत्र में भ्रमण कर रहा है। पञ्चांग के संदर्भ में नक्षत्र वह कालमान है जो भचक्र में चन्द्रमा को १३° अंश २०′ कला (एक नक्षत्र) को पूरा भोगने में लगता है। इसे 'भभोग' भी कहते हैं। ज्योतिषीय गणना में भभोग का अत्यधिक महत्व है क्योंकि इसी के आधार पर चन्द्रमा की कोणीय स्थिति को दर्शाया जाता है। भभोग के मान में त्रुटि होने पर चन्द्रस्पष्ट का मान सही नहीं होगा।

तिथि की भाँति नक्षत्र भी दिनरात में कभी भी बदल सकता है। जब भी चन्द्रमा भचक्र में ८०० कला के गुणक में दूरी तय करेगा उसी समय एक नक्षत्र समाप्त होकर दूसरा नक्षत्र शुरू हो जायेगा। किसी स्थान पर सूर्योदय या निर्दिष्ट समय पर चन्द्रमा जिस नक्षत्र में भ्रमण कर रहा होता है। पञ्चांग में उसी नक्षत्र का नामोल्लेखित होता है। पञ्चांग में नक्षत्र का समाप्तिकाल घटी–पल तथा भारतीय मानक समय में दिया जाता है। जैसे – विक्रम संवत् २०४६ के श्री गजेन्द्र विजय पञ्चांग के अनुसार–

सारणी क्रमांक –१०

वार	नक्षत्र	समाप्तिकाल		सूर्योदयकाल	दिनांक
		घटी पल	घण्टा मिनट	घण्टा मिनट	
रवि	भरणी	१७ ४५	१३ १०	६ ४	३ मई १९९२
सोम	कृतिका	१६ ८	१२ ३०	६ ४	४ मई १९९२

यहाँ स्पष्ट है कि रविवार को चन्द्रमा भरणी नक्षत्र में दोपहर १३ : १० बजे तक रहता है तत्पश्चात् कृतिका नक्षत्र में प्रवेश करता है। अतः चन्द्रमा रविवार को दोपहर १३ बजकर १० मिनट से सोमवार को दोपहर १२ बजकर ३० मिनट तक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कृतिका नक्षत्र को भोगता है। इस प्रकार कृतिका नक्षत्र की कुल समयावधि २३ घंटा २० मिनट होगी। इस अवधि को नक्षत्र का भभोग या सर्वर्क्ष कहा जाता है। चूँकि भचक्र में कृतिका नक्षत्र की स्थिति ० राशि २६ अंश ४० कला से १ राशि १० अंश ० कला तक है। श्री गजेन्द्र विजय पञ्चांग के अनुसार चन्द्रमा रविवार को दोपहर १३ बजकर १० मिनट तक मेष राशि में २६ अंश ४० कला चलकर भरणी नक्षत्र को भोग चुका था। उसके बाद चन्द्रमा मेष राशि में कृतिक नक्षत्र का एक चरण ३°२०′ भोगकर वृष राशि में प्रवेश करता है तथा १० अंश ओर चलकर सोमवार को दोपहर १२ बजकर ३० मिनट तक कृतिका नक्षत्र को भोगता है।

नक्षत्र की भी तिथि की भाँति क्षय एवं वृद्धि होती है। जब कोई नक्षत्र सूर्योदय के बाद से शुरू होकर अगले सूर्योदय के पूर्व ही समाप्त हो जाता है, तब ऐसी स्थिति को नक्षत्र का क्षयत्व कहते हैं। उदाहरणार्थ – संवत् २०४६ के श्री गजेन्द्र विजय पंञ्चांग के अनुसार

सारणी क्रमांक–११

वार	नक्षत्र	समाप्ति काल		सूर्योदय		दिनांक
		घटी पल		घंटा मिनट		घण्टा मिनट	
शनि	पुष्य	००/५७	४३/१०	६/२८	१६/५१	६ ००	६ मई १९९२
रवि	मघा	५३ ४२		२७ २८		५ ५६	१० मई १९९२

स्पष्ट है कि यहाँ आश्लेषा नक्षत्र का क्षय दर्शाया है क्योंकि आश्लेषा नक्षत्र शनिवार को सूर्योदय के १६ मिनट बाद शुरू होता है और रात्रि २८ बजकर ५१ मिनट (४ :५१ बजे) पर समाप्त होता है। जबकि रविवार को सूर्योदय ५ बजकर ५६ मिनट पर होता है।

इसी प्रकार जब कोई नक्षत्र सूर्योदय से पूर्व ही शुरू होकर अगले सूर्योदय के बाद समाप्त होता है तब ऐसी स्थिति को नक्षत्र की वृद्धि कहते हैं। उदाहरणार्थ – संवत् २०४६ के श्री गजेन्द्र विजय पञ्चांग में दिनांक २७ अप्रैल १९९२ सोमवार को धनिष्ठा नक्षत्र की वृद्धि दर्शायी है –

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सारणी क्रमांक–१२

वार	नक्षत्र	समाप्ति काल		सूर्योदय	दिनांक
		घटी पल	घंटा मिनट	घण्टा मिनट	
रवि	धनिष्ठा	६० ०	२४ ००	६ १०	२६ अप्रैल १९९२
सोम	धनिष्ठा	१ २०	६ ४०	६ ६	२७ अप्रैल १९९२

तिथि की भाँति नक्षत्र की वृद्धि एवं क्षय स्थान विशेष के सूर्योदय समय पर निर्भर करता है।

४. **योग** :- पञ्चांग में दो प्रकार के योग देखने को मिलते हैं – एक आनन्ददियोग, दूसरे विष्कम्भादि योग।

आनन्दादि योग :- यह योग पंञ्चांग के पाँचों अंगों में से एक अंग है। जिस प्रकार सूर्य चन्द्रमा के राश्यान्तर से तिथि का निर्धारण होता है, उसी प्रकार सूर्य और चन्द्रमा के राश्यंशों के योग (जोड़) से विष्कम्भादि योग का निर्धारण होता है। नक्षत्रों की भाँति योग कोई तारा समूह नहीं है बल्कि यह एक वस्तु स्थिति है।

आकाश में निरयन आदि बिन्दु से सूर्य और चन्द्रमा को संयुक्त रूप से १३ अंश २० कला (८०० कलाऐं) को पूरा भोगने में जितना समय लगता है। वह योग कहलाता है। इस प्रकार एक योग का मान नक्षत्र की भाँति ८०० कला होता है।

विष्कम्भादि योगों की कुल संख्या २७ है। योग का दैनिक भोग मध्यम मान लगभग ६० घटी १३ पल होता है। सूर्य और चन्द्रमा की गतियों की असमानता के कारण मध्यम मान में न्यूनाधिकता बनी रहती है। इन योगों को यथा नाम तथा गुण फलदायक कहा है।[५७]

---

[५७] सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्यायः, योगप्रकरणम, श्लोक१ एवं वृहदवकहड़ाचक्रम्, योगप्रकरणम्, श्लोक१

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

''योग परिचय चक्र'' सारणी क्रमांक–१३

क्र.	योग नाम	प्रारम्भिक राश्यंश			क्र.	योग नाम	प्रारम्भिक राश्यंश		
		राशि	अंश	कला			राशि	अंश	कला
१	विष्कम्भ	०	१३	२०	१५	वज्र	६	२०	००
२	प्रीति	०	२६	४०	१६	सिद्धि	७	०३	२०
३	आयुष्मान	१	१०	००	१७	व्यतीपात	७	१६	४०
४	सौभाग्य	१	१३	२०	१८	वरीयान	८	००	००
५	शोभन	१	२६	४०	१९	परिघ	८	१३	२०
६	अतिगण्ड	२	२०	००	२०	शिव	८	२६	४०
७	सुकर्मा	३	०३	२०	२१	सिद्ध	९	१०	००
८	धृति	३	१६	४०	२२	साध्य	९	२३	२०
९	शूल	४	००	००	२३	शुभ	१०	०६	४०
१०	गण्ड	४	१३	२०	२४	शुक्ल	१०	२०	००
११	वृद्धि	४	२६	४०	२५	ब्रह्म	११	०३	२०
१२	ध्रुव	५	१०	००	२६	ऐन्द्र	११	२६	४०
१३	व्याघात	५	२३	२०	२७	वैधृति	१२	००	००
१४	हर्षल	६	०६	४०					

इन योगों में 'वैधृति' एवं 'व्यतीपात' नामक योगों को महापात कहते हैं। आकाश में जब सायन सूर्य–चन्द्र का योग ठीक १८०° या ३६०° होता है उस समय दोनों की संक्रान्तियाँ समान होती है। १८०° अंश के क्रान्तिसाम्य को 'व्यतीपात' नामक महापात तथा ३६०° अंश के क्रान्तिसाम्य को 'वैधृति' नामक महापात कहते हैं। तांत्रिक क्रियाओं के लिये क्रान्तिसाम्य अथवा महापात की स्थिति को अत्युत्तम माना है।[५८]

तिथि एवं नक्षत्र की भाँति योग भी दिनरात में कभी भी बदल सकता है। जब भी सूर्य और चन्द्रमा के राश्यंशों का जोड़ ८०० कलाओं के गुणक में पूर्ण होगा उसी समय से अगला योग शुरू हो जायेगा।

किसी भी स्थान पर सूर्योदय के समय जो योग बनता है। उसे ही पञ्चांग में

---

[५८] सूर्यसिद्धान्त, पाताधिकार, श्लोक १, २ एवं २०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दर्शाया जाता है। वही व्यवहारिक योग कहलाता है। योग के आगे घटी–पल अथवा घण्टा मिनट में उसका समाप्तिकाल लिखा रहता है। उदाहरणार्थ :– विक्रम संवत् २०५७ के मात्तण्र्ड पञ्चांग के अनुसार

सारणी क्रमांक–१४

वार	योग	समाप्तिकाल		सूर्योदय		दिनांक
		घटी	पल	घण्टा	मिनट	
गुरू	शुक्ल	३६	१०	६	३३	१८ मार्च १६६६
शुक्र	ब्रह्म	३०	२	६	३२	१६ मार्च १६६६

तात्पर्य है कि १८ मार्च १६६६ गुरूवार को शुक्ल नामक योग सूर्योदय के बाद ३६ घटी १० पल तक रहता है। उसके बाद ब्रह्म नामक योग शुरू होता है जो कि शुक्रवार को सूर्योदय से ३० घटी २ पल तक रहता है।

वर्तमान योग जानने के लिये इष्ट दिन जिस नक्षत्र में सूर्य तथा जिस नक्षत्र में चन्द्रमा हो उन दोनों नक्षत्रों की संख्याओं के योगफल में से १ घटा देने से शेष तुल्य विष्कम्भादि वर्तमान योग होता है।[५६]

उदाहरणार्थ – विक्रम संवत् २०५७ के पञ्चांग दिवाकर में चैत्र शुक्ल पूर्णिमा मंगल वार (दिनांक १८ अप्रैल २००० ई.) को हर्षण योग को दर्शाया है। इस दिन सूर्य अश्विनी नक्षत्र में तथा चन्द्रमा चित्रा नक्षत्र में हैं। यहाँ सूर्य नक्षत्र संख्या १ एवं चन्द्र नक्षत्र संख्या १४ है। इन दोनों का योग १ + ४ = १५ इसमें से १ घटाने पर शेष १४ बचते हैं। अतः विष्कम्भादि गणना से १४ वाँ हर्षण नामक योग है।

आनन्दादियोग - वार और नक्षत्र के संयोग से तात्कालिक आनन्दादि योग बनते हैं। नारदपुराण एवं मुहूर्तचिंतामणि ग्रथों में इनकी संख्या २८ दर्शाई है।[६०] इन्हें स्थिर योग भी कहते हैं। इनकी गणितीय क्रिया नहीं है। यह योग सूर्योदय से सूर्योदय पर्यन्त तक रहते हैं। इन योगों का निर्धारण वार विशेष को निर्दिष्ट नक्षत्र से विद्यमान नक्षत्र

---

[५६] यन्नक्षत्रे स्थितिः सूर्यो यन्नक्षत्रे च चन्द्रामः।
द्वयोर्योगात् त्यजेदेकं योगो विष्कम्भकादिकः।। नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/२१३;
ग्रहलाघव, पञ्चांगचंदग्रहणाधिकार श्लोक ६, एवं सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्याय, योग प्रकरण

[६०] नारदपुराण, पूर्वाभाग, २/५६, श्लोक २३७ से २३६ तक
एवं मुहूर्त चिंतामणि, शुभाशुभ प्रकरण, श्लोक २३, २४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

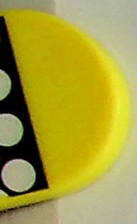

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(अभिजित् सहित) तक की गणना द्वारा होता है अर्थात् प्रथमवार रविवार के साथ अश्विनी नक्षत्र से, सोमवार को मृगशिरा नक्षत्र से, मंगलवार को आश्लेषा नक्षत्र से, बुधवार को हस्त नक्षत्र से, गुरूवार को अनुराधा नक्षत्र से, शुक्रवार को उत्तराषाढ़ा से तथा शनिवार को शतभिषा से वर्तमान नक्षत्र पर्यन्त जितनी संख्या हो उसी संख्यावाला आनन्दादि योग वर्तमान स्थिर योग होता हैं।[६१]

उदाहरणार्थ – काशी के श्री हषीकेष पञ्चांग के अनुसार विक्रम संवत् २०५५ चैत्र शुक्ल पूर्णिमा शनिवार को हस्त नक्षत्र है। स्थिरयोग ज्ञात करना है। शनिवार होने से शतभिषा नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र हस्त पर्यन्त गणना करने से १७ संख्या प्राप्त होती है अतः १७ वाँ ''मृत्यु'' नामक योग वर्तमान स्थिर योग हुआ। पंचांग में भी मृत्यु'' योग को दर्शाया है।

''स्थिर योग परिचय चक्र'' सारणी क्रमांक–१५

क्र	योगनाम	रविवार	सोमवार	मंगलवार	वुधवार	गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार
१	आनन्द	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उतराषाढा	शतलिष
२	कालदण्ड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	श्रेष्ठा	अभिजित	पूर्वभाद्र
३	धूम्र	कृतिका	पुनर्वसु	पूर्वाफाल्गुनी	स्वाती	मूल	श्रवण	उत्तराभाद्र
४	प्रजा	रोहिणी	पुष्य	उत्तराफाल्गुनी	विशाखा	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती
५	सुधा	भृगशिरा	आश्लेष	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ़	शतिभिषा	अश्विनी
६	ध्वाड्क्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	श्रेष्ठा	अभिजित	पूर्वभाद	भरणी
७	ध्वजा	पुनर्वसु	पूर्वाफाल्गुनी	स्वाती	मूल	श्रवण	उत्तराभाद्र	कृतिका
८	श्रीवत्स	पुष्य	उत्तराफाल्गुनी	विशाखा	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती	रोहणी
९	वज्र	आश्लेष	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ़	शतिभिषा	अश्विनी	मृगशिरा
१०	मुदगर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पूर्वभाद	भरणी	आर्द्रा
११	छत्र	पूर्वाफाल्गुनी	स्वाती	मूल	श्रवण	उत्तरा भाद्र	कृतिका	पुर्नवसु
१२	मित्र	उत्तराफाल्गुनी	विशाखा	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती	रोहणी	पुष्य
१३	मानस	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ़	शतिभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेष
१४	पद्म	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पूर्वभाद	भरणी	आर्द्रा	मघा

[६१] दास्त्रादर्के मृगादिन्दौ सार्पाद्भौमे कराद्बुधे।
मैत्राद् गुरौ भृगौ वैश्वाद्गण्या मन्दे च वारूणात्।। मुहूर्तचिंतामणि शुभाशुभ प्रकरणमशलोक २५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

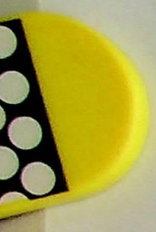

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्र	योगनाम	रविवार	सोमवार	मंगलवार	वुधवार	गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार
१५	लुम्बकर	स्वाती	मूल	श्रवण	उत्तराभाद्र	कृतिका	पुर्नवसु	पूर्वाफाल्गुनी
१६	उत्पात	विशाखा	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती	रोहणी	पुष्य	उत्तराफाल्गुनी
१७	मृत्यु	अनुराधा	उत्तराषाढ़	शतिभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेष	हस्त
१८	काण	ज्येष्ठा	अभिजित	पूर्वभाद	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
१६	सिद्धि	मूल	श्रवण	उत्तराभाद्र	कृतिका	पुर्नवसु	पूर्वाफाल्गुनी	स्वाती
२०	शुभ	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती	रोहणी	पुष्य	उत्तराफाल्गुनी	विशाखा
२१	अमृत	उत्तराषाढ़	शतिभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेष	हस्त	अनुराधा
२२	मुसल	अभिजित	पूर्वभाद	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा
२३	अन्तक	श्रवण	उत्तरा भाद्र	कृतिका	पुर्नवसु	पूर्वाफाल्गुनी	स्वाती	मूल
२४	कुञ्जर	धनिष्ठा	रेवती	रोहणी	पुष्य	उत्तराफाल्गुनी	विशाखा	पूर्वाषाढ़ा
२५	राक्षस	शतिभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेष	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ़
२६	चर	पूर्वभाद	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित
२७	सुस्थिर	उत्तराभाद्र	कृतिका	पुर्नवसु	पूर्वाफाल्गुनी	स्वाती	मूल	श्रवण
२८	वर्धमान	रेवती	रोहणी	पुष्य	उत्तराफाल्गुनी	विशाखा	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा

पञ्चांग में इन योगों का निर्धारण वार के साथ सूर्योदय के समय वर्तमान नक्षत्र के आधार पर होता है। वार अथवा नक्षत्र बदलने पर योग बदल जाता है। इन योगों के नाम के आगे घटी–पल या घण्टा मिनट नहीं लिखा होता है। उदाहरणार्थः– विक्रम संवत् २५५५ के श्री हृषीकेष पञ्चांग के अनुसार

सारणी क्रमांक–१६

वार	नक्षत्र	समाप्तिकाल		योग	सूर्योदय	दिनांक
		घटी पल	घंटा मिनट	नाम	घण्टा मिनट	
शनि	चित्रा	५४ ४६	रात्रि३ २०	करण	५ २६	६ मई १६६२
रवि	स्वाती	६० ००	....	लुम्बक	५ २६	१०मई १६६२
सोम	स्वाती	१ ००	प्रातः५ ४६	क्षत्र	५ २५	११मई १६६२

स्पष्ट है कि यहाँ ६ मई १६६२ शनिवार में चित्रा नक्षत्र होने से करण नामक योग होता है। शनिवार को चित्रा नक्षत्र रात्रि ३ बजकर २० मिनट तक रहता है उसके बाद स्वाती नक्षत्र शुरू हो जाता है। रविवार को स्वाती नक्षत्र होने से लुम्बक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

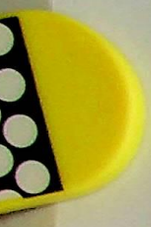

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नामक योग पञ्चांग में दर्शाया है। यही स्वाती नक्षत्र जब सोमवार को सूर्योदय के बाद १ घटी २४ मिनट तक रहता है तब पञ्चांग में क्षत्र नामक योग को दर्शाया है।

उत्तर भारत के सभी पञ्चांगों में इन योगों का उल्लेख नहीं हैं। विक्रम संवत् २०५५ के श्री आर्यभट्ट पञ्चांग, श्री मार्तण्ड पञ्चांग, पञ्चांग दिवाकर, श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग एवं श्री गजेन्द्र विजय पञ्चांग इत्यादि का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि इनमें आनन्दादि योगों का स्तम्भ (कॉलम) कहीं नहीं है। जबकि काशी हिन्दू विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित विश्व पञ्चांग, निर्णय सागर पञ्चांग एवं श्री हृषीकेष पञ्चांग इत्यादि में एक कॉलम आनन्दादि योगों का दृष्टिगत होता है। इन पञ्चांगों में प्रमुख पाँच अंगों के साथ इन योगों के नाम का स्तम्भ होता है।

५. **करण** :- करण तिथि का आधा होता है अर्थात् सूर्य और चन्द्रमा में ६° अंश का अन्तर होने में जितना समय लगता है, उसे करण कहते हैं। किन्तु कुछ पञ्चांगकार तिथि की सम्पूर्ण अवधि के दो समान भाग करके स्थूल रूप से करणों का निर्धारण कर देते हैं। ऐसा करने पर हम करण के मान में ४–५ मिनट का अन्तर देख सकते हैं। करण का मध्यममान लगभग ३० घटी या १२ घंटे होता है। यह एक उचित काल विभाग है। एक तिथि में दो करण होते हैं। इनकी कुल संख्या ११ है। इनके दो भेद माने गये है– पहला चर और दूसरा स्थिर।[६२]

बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज एवं विष्टि (भद्रा)–ये सात करण चर संज्ञक हैं। शकुनि, चतुष्पद, नाग एवं किंस्तुध्न–ये चार करण स्थिर संज्ञक हैं। चर करणों की आवृत्ति एक माह में आठ–आठ बार होती है जबकि स्थिर करण एक चान्द्रमास में एक–एक बार ही आते हैं। स्थिर करणों की तिथियाँ निश्चित है। कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के उत्तरार्द्ध में शकुन, अमावस्या के पूर्वार्द्ध में चतुष्पाद एवं उत्तरार्द्ध में नाग तथा शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के पूर्वार्द्ध में किंस्तुध्न करण होता है।[६३]

---

[६२] गततिथ्यों द्विनिघ्नाश्च शुक्ल प्रतिपदादितः। सुगमज्योतिष, करण प्रकरण, श्लोक १

[६३] सूर्य सिद्धान्त, स्पष्टाधिकार, श्लोक ६७–६८,; नारद पुराण, २/५४/१२३–१२५ एवं वृहत्संहिता, करणगुणाध्याय, श्लोक १–२।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

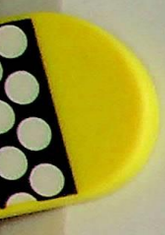

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

''करण परिचय चक्र'' सारणी क्रमांक–१७

तिथि	शुक्लपक्ष में करण		तिथि	कृष्णपक्ष में करण	
क्र.	पूर्वार्द्ध के प्रथम ६°	उत्तरार्द्ध के अंतिम ६°	क्र.	पूर्वार्द्ध के प्रथम ६°	उत्तरार्द्ध के अंतिम ६°
१	किंस्तुघ्नं (स्थिर)	बव (१)	१	बालव (२)	कौलव (३)
२	बालव (२)	कौलव (३)	२	तैतिल (४)	गर (५)
३	तैतिल (४)	गर (५)	३	वणिज (६)	विष्टि (७)
४	वाणिज (६)	विष्टि (७)	४	बव (१)	बालव (२)
५	बव (१)	बालव (२)	५	कौलव (३)	तैतिल (४)
६	कौलव (३)	तैतिल (४)	६	गर (५)	वणिज (६)
७	गर (५)	वणिज (६)	७	विष्टि (७)	बव (१)
८	विष्टि (७)	बव (१)	८	बालक (२)	कौलव (३)
९	बालव (२)	कौलव (३)	९	तैतिल (४)	गर (५)
१०	तैतिल (४)	गर (५)	१०	वणिज (६)	विष्टि (७)
११	वणिज (६)	विष्टि (७)	११	बव (१)	बालव (२)
१२	बव (१)	बालव (२)	१२	कौलव (३)	तैतिल (४)
१३	कौलव (३)	तैतिल (४)	१३	गर (५)	वणिज (६)
१४	गर (५)	वणिज (६)	१४	विष्टि (७)	शकुन (स्थिर)
१५	विष्टि (७)	बव (१)	३०	चतुष्पाद(स्थिर)	नाग (स्थिर)

पञ्चांग में करण का समाप्तिकाल तिथि की भाँति सूर्योदय से घटी पल एवं घण्टा–मिनट में व्यक्त किया जाता है। कुछ पञ्चांग में करण नामक अंग का एक स्तम्भ होता है तथा कुछ पञ्चांगों में करण के दो स्तम्भ (तिथि के पूर्वार्द्ध का करण तथा तिथि के उत्तरार्द्ध का करण) होते हैं। आर्यभट्ट पञ्चांग, श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग, निर्णय सागर पञ्चांग, श्री बल्लभ मनीराम पञ्चांग, पञ्चांग दिवाकर इत्यादि पञ्चांगों में करण को सूर्योदय कालीन तिथि के पूर्वार्द्ध या उत्तरार्द्ध के रूप में व्यक्त किया जाता है। जबकि श्री हृषीकेष पञ्चांग, विश्व पञ्चांग, श्री महावीर पञ्चांग, श्री गणेश आपा पञ्चांग इत्यादि पञ्चांगों में करण को दो स्तम्भों में व्यक्त किया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

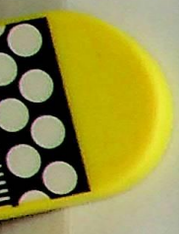

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विक्रम संवत् २०५७ के विश्व पञ्चांग, काशी के अनुसार चैत्र शुक्ल पक्ष में करण की स्थिति को इस प्रकार दर्शाया है –

सारणी क्रमांक–१८

दिनांक २००० ई	वार	तिथि	समाप्तिकाल		करण	समाप्तिकाल		करण	समाप्तिकाल		सूर्योदय
			घ प	घं मि	नाम	घ प	घं मि	नाम	घ प	घ मि	घ मि
५ अप्रैल	बुध	१	४२ २२	२२ ४५	किंस्तुघ्न	१३ ३५	११ १५	बव	४२ २२	२२ ४५	५ ४६
६ अप्रैल	गुरू	२	३८ ५३	२१ २१	बालव	१० ३७	१० ३	कौलव	३८ ५३	२१ २१	५ ४८
७ अप्रैल	शुक्र	३	३४ ३३	१६ ३६	तैतिल	६ ४३	८ २८	गर	३४ ३३	१६ ३६	५ ४७

स्पष्ट है कि चैत्रशुक्ल प्रतिपदा बुधवार को स्थिरकरण किंस्तुघ्नं तिथि के पूर्वार्द्ध में दोपहर ११ बजकर १५ मिनट तक है तथा तिथि के उत्तरार्द्ध में ११ बजकर १५ मिनट से तिथि के समाप्तिकाल रात्रि २२ बजकर ४५ मिनट तक बव नामक करण है। बुधवार की रात्रि २२ बजकर ४५ से द्वितीय तिथि शुरू होती है, यह गुरूवार की रात्रि २१ बजकर २१ मिनट तक रहती है। इस तिथि के पूर्वार्द्ध में गुरूवार को दोपहर १० बजकर ३ मिनट तक बालव नामक करण रहता है तथा उसके बाद कौलव नामक करण तिथि के उत्तरार्द्ध में तिथि समाप्तिकाल तक रहता है। इस प्रकार विश्व पञ्चांग में करण को दर्शाया है।

विश्व पञ्चांग के अनुसार द्वितीय तिथि का कुल कालमान

= २२ घंटा ४५ मिनट – २१ घंटा २१ मिनट

= १ घंटा. २४ मिनट

तथा २४ घंटा – १ घंटा २४ मिनट = २२ घंटा ३६ मिनट

अर्थात् विक्रम सम्वत् २०५७ के विश्व पञ्चांग के अनुसार द्वितीय तिथि का कुल कालमान २२ घंटा ३६ मिनट है। तिथि के एक करण का कालमान ११ घंटा १८ मिनट होगा। चूँकि प्रतिपदा तिथि बुधवार की रात्रि २२ बजकर ४५ मिनट तक है इसलिये तिथि के पूर्वार्द्ध में बालव करण का मान २२ घंटा ४५ मिनट + ११ घंटा १८ मिनट = ३४ घंटा ३ मिनट अर्थात् १० घंटा ३ मिनट तक रहेगा। पञ्चांग में बालव करण का समाप्ति काल १० बजकर ३ मिनट दिखाया है उसके बाद तिथि के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत्तरार्द्ध में ११ घंटा १८ मिनट तक कौलव करण रहता है जिसका पञ्चांग में समाप्ति काल गुरूवार की रात्रि २१ बजकर २१ मिनट दर्शाया है।

चूँकि करण की शुरूवात स्थिर करण किंस्तुघ्न से होती है जब आकाश (भचक्र) में सूर्य और चन्द्रमा का राश्यंतर शून्य होता है तब प्रतिपदा तिथि के साथ ही किंस्तुघ्न स्थिर करण शुरू होता है। चन्द्रमा अपनी तीव्र गति के कारण सूर्य से ६ अंश आगे पहुँच जाता है उसी समय किंस्तुघ्न करण समाप्त हो जाता है। इस प्रकार सूर्य और चन्द्रमा में ६ अंश के राश्यंतर होने में जो समय लगता है, वह किंस्तुध्न करण कहलाता है। जैसे ही चन्द्रमा सूर्य से ६° से आगे बढ़ना शुरू करता है बव नामक चर करण शुरू हो जाता है। जब सूर्य और चन्द्र का राश्यंतर १२° हो जाता है तब बव करण के साथ–साथ प्रतिपदा तिथि भी समाप्त हो जाती है और द्वितीय तिथि के साथ ही बावल चर करण की शुरूवात होती है। यही क्रम आगे भी जारी रहता है। हम जानते हैं, कि सूर्य और चन्द्रमा की गतियों में तीव्र भिन्नता होने के कारण तिथियों के मान एक समान नहीं होते अर्थात् चन्द्रमा सूर्य के सापेक्ष १२–१२ अशों को भिन्न–भिन्न कालमानों में तय करता है। इसी प्रकार यह स्पष्ट है कि चन्द्रमा सूर्य के सापेक्ष ६–६ अशों को भी भिन्न–भिन्न कालमानों में तय करेगा अर्थात् यह आवश्यक नहीं है कि एक तिथि के पूवार्द्ध में सूर्य व चन्द्रमा के बीच ६° का राश्यंतर होने में जो समय लगता है वही समय उस तिथि के उत्तरार्द्ध में सूर्य व चन्द्रमा के बीच पुनः ६° का राश्यंतर होने में लगे। क्योंकि सूर्य व चन्द्रमा की गति पल–पल घटती–बढ़ती रहती है। यह सत्य है कि एक तिथि के दोनों करणों के कालमान का योगफल तिथि के कुल कालमान के बराबर होता है

तिथि का कुल समय = प्रथम करण का समय + द्वितीय करण का समय।।

काशी के विश्व पञ्चांग में तिथि के पूर्वार्द्ध में करण का कालमान और तिथि के उत्तरार्द्ध में करण का काल मान एक बराबर है। इस स्थिति को सूक्ष्मरूप से सही नहीं कहा जा सकता है।

करण के भुक्तांश व भोग्यांश :– यदि तिथि के भुक्तांश व भोग्यांश ज्ञात हो तो करण के भुक्तांश व भोग्यांश ज्ञात किये जा सकते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

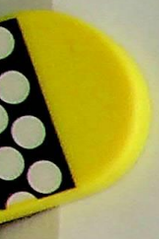

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(१) तिथि के पूर्वार्द्ध में :– प्रथम करण के भुक्तांश = तिथि के भुक्तांश

प्रथम करण के भोग्यांश = तिथि के भोग्यांश – ६ अंश

(२) तिथि के उत्तरार्द्ध में :– द्वितीय करण के भुक्तांश = तिथि के भुक्तांश – ६ अंश

द्वितीय करण के भोग्यांश = तिथि के भोग्यांश

उदाहरणार्थ :– संवत २०५७ के विद्यापीठ पञ्चांग के अनुसार १७ मई २००० बुधवार को दिल्ली में सूर्योदय ५ : ४३ बजे होता है। सूर्योदय के आसन्न प्रातः ६ : २१ बजे पर चन्द्र स्पष्ट ६ रा. : १७° : ५७′ : ५६″ (गति ७४०′ : ५१″) तथा सूर्य स्पष्ट १ रा. : २° : ३६′ : ७″ (गति ५७′ : ४७″) दिये है। तब १७ मई २००० ई. को प्रातः ६ : २१ बजे –

		राशि	अंश	कला	विकला		कला	विकला
चन्द्रराश्यंश	=	६	१७	५७	५६	चन्द्रगति =	७४०	५१
सूर्य राश्यंश	=	१	२	३६	७	सूर्यगति =	५७	४७
राश्यंतर	=	५	१५	२१	४६	गत्यंतर =	६८३	४

राश्यंतर के अंशादि बनाने पर, ५×३० = १५० + १५

= १६५ अंश २१ कला ४६ विकला

राश्यंतर में १२ का भाग देने पर, १२) १६५ अंश २१ कला ४६ विकला (१३ लब्धि

१५६

शेष ६ अंश २१ कला ४६ विकला

अतः स्पष्ट है कि शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि समाप्त हो चुकी है।

१४ वीं (चौदस) तिथि के भुक्तांश = ६° २१′ ४६″

१४ वीं तिथि के भोग्यांश = १२° – ६° २१′ ४६″ = २° ३८′ ११″

चूँकि प्रातः ६:२१ बजे पर तिथि अपना आधे से अधिक भाग भोग चुकी है। इसलिये ६:२१ बजे में १४ वी तिथि के उत्तरार्द्ध का करण वणिज होगा। विद्यापीठ पञ्चांग में १४ वीं तिथि को वणिज करण दर्शाया है जो कि सही है। १४ वीं तिथि के पूर्वार्द्ध में गर करण होगा जो कि ६ बजकर २१ मिनट से पूर्व ही समाप्त हो चुका

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

था। अतः

१४ वीं तिथि के पूर्वार्द्ध में – गर करण के भुक्तांश = ६°

गर करण के भोग्यांश = ०

१४ वीं तिथि के उत्तरार्द्ध में –

वणिज करण के भुक्तांश = ६° २१′ ४६″ – ६° = ३° २१′ ४६″

वणिज करण के भोग्यांश = तिथि के भोग्यांश = २° ३८′ ११″

अथवा ६° – ३° २१′४६″ = २° ३८′ ११″

तिथि के पूर्वार्द्ध का चर करण ज्ञात करने की विधि :– जिस तिथि के पूर्वार्द्ध का करण ज्ञात करना हो उस तिथि से पूर्व की गति तिथियों को शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से गिने। तदुपरांत प्राप्त संख्या में २ से गुणा करके ७ का भाग देने पर जो शेषफल प्राप्त हो, वह उस तिथि के पूर्वार्द्ध में बवादि क्रम से गिनने पर अभीष्ट करण होगा।[६४]

जैसे – कृष्णपक्ष की अष्टमी को तिथि के पूर्वार्द्ध में करण ज्ञात करना है तो –

१५ + ७ = २२ गततिथियों तथा २२ × २ = ४४ गुणनफल,

४४ ÷ ७ = लब्धि ६ एवं शेषफल २

चूँकि शेषफल २ है तथा चर करणों की क्रम संख्या में दूसरा करण बावल है। अतः कृष्णपक्ष की अष्टमी के पूर्वार्द्ध में बालव करण होगा। स्पष्ट है कि अष्टमी के उत्तरार्द्ध में बालव के बाद का तीसरा करण कौलव होगा।

इस प्रकार किसी भी तिथि में करण को ज्ञात किया जा सकता है।

भद्रा : - पञ्चांगों की लस्टर पंक्ति में भद्रा का विशेष उल्लेख रहता है। अतः पञ्चागीय अध्ययन की दृष्टि से इसे समझना अति आवश्यक है। ''विष्टि'' करण को भद्रा कहते हैं। जिन तिथियों के पूर्वार्द्ध (प्रथम दो चरण) अथवा उत्तरार्द्ध (अंतिम दो चरण) में विष्टि करण हो तो इसकाल को भद्रा तिथि कहा जाता है। भद्रा तिथि में

---

[६४] तिथयः शुक्लप्रतिपदो द्विध्नाः सैका न गाहताः ।
शेषं बवो बालवश्च कौलवस्तैतिलो गरः।
वणिजोभ्रे भवेद्विष्टिः कृष्णभूतापरार्द्धतः।। नारद पुराण, पूर्वभाग २/५४/१२३–१२४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

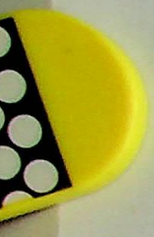

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मांगलिक कार्य वर्जित है। जैसे – विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, नवीन व्यवसाय, यज्ञोपवीत इत्यादि। भद्रा में अग्नि सम्बंधी कार्य, यज्ञ करना, शत्रु का उच्चाटन करना, दुष्ट का वध करना, आप्रेशन, मुकदमा करना, भैंस, ऊँट, घोड़ा आदि पशु सम्बन्धी कृत्य करना प्रशस्त माना गया है।[६५] एक पक्ष में चार बार भद्रा तिथि आती है। शुक्ल पक्ष में अष्टमी एवं पूर्णिमा तिथि के पूर्वार्द्ध में तथा चतुर्थी और एकादशी तिथि के उत्तरार्द्ध में भद्रा होती है। जबकि कृष्ण पक्ष की तृतीय एवं दशमी तिथि के उत्तरार्द्ध में और सप्तमी तथा चतुर्दशी तिथि के पूर्वार्द्ध में भद्रा होती है।

चन्द्रमा की राशिगत स्थिति के अनुसार भद्रा तीन लोक – स्वर्ग, भू, पाताल में वास करती है। तदनुसार उसका शुभाशुभ फल कहा है।

उदाहरणार्थः– संवत् २०५७ के विश्व पंचाग, काशी के अनुसार चैत्रशुक्ल पक्ष, एकादशी शनिवार को तिथि का समाप्ति काल रात्रि १ बजकर ५६ मिनट दर्शाया है। इसतिथि के पूर्वार्द्ध में वणिज करण का समाप्तिकाल दोपहर २ बजकर ४६ मिनट है। उसके बाद विष्टि करण शुरू होता है। इसी पञ्चांग में आगे लस्टर पंक्ति में लिखा है– "भ. २२/४१ (दि. १४/४४)" अर्थात् दिन में १४ बजकर ४४ मिनट से रात्रि १ बजकर ५६ मिनट तक भद्रा तिथि है।

(इ) पञ्चांग प्रयोग से पूर्व निर्देश :- भिन्न–भिन्न पञ्चांग कालांगों का दिग्दर्शन भिन्न–भिन्न ईकाईयों व विधाओं में करते हैं तथा भिन्न–भिन्न अक्षांश–रेखांश के आधार पर निर्मित होते हैं। अतः पञ्चांग को उपयोग में लाने से पूर्व निम्नलिखित निर्देशों का पालन करना चाहिये जिससे गणन में त्रुटि न हो ।

१. पञ्चांग का निर्माण ग्रीनविच से कितने अक्षांश एवं रेखांश पर हुआ है, यह तथ्य देख लेना चाहिये। जिससे अपने स्थल अथवा जातक के जन्म स्थल से चरान्तर एवं देशान्तर संस्कार करने में त्रुटि नहीं हो। अक्षांशीय एवं देशान्तरीय अन्तर के आधार पर अभीष्ट स्थान एवं पंञ्चाग निर्माण के स्थान का शुद्ध समयान्तर ज्ञात होता है।

२. पञ्चांग की रचना में कौन सा अयनांश प्रयुक्त किया है ? जैसेः– ग्रहलाघवीय, चित्रापक्षीय या लहरी इत्यादि। उत्तरभारत में चित्रापक्षीय अयनांश प्रयुक्त

---

[६५] नारदपुराण, पूर्वभाग २/५६/२१६–२२१ एवं वृहत्संहिता, करणगुणाध्याय, श्लोक ४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

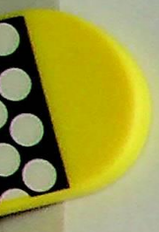

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होता है। भारत सरकार ने भी इसे मान्यता प्रदान की है। यह भी देखना चाहिये कि पञ्चांग में दिये गये अयनांश धनून–संस्कार–संस्कृत है अथवा नहीं। यथाः– मार्त्तण्ड पञ्चांग में धनून – संस्कार–संस्कृत चित्रापक्षीय अयनांश प्रयुक्त होता है।

३. पञ्चांग में तिथि, नक्षत्र, योग, करण के समाप्ति काल तथा सूर्योदयास्त किस इकाई में है ? यथा – स्थानीय समय में है अथवा स्टैण्डर्ड समय में। काशी के श्री हृषीकेष पञ्चांग तथा श्री महावीर पञ्चांग में सूर्योदयास्त तथा तिथि, नक्षत्र, योग, करण का समाप्तिकाल स्थानीय समय में दिया है जबकि दिल्ली के विद्यापीठ पञ्चांग एवं विश्व विजय पञ्चांग में सूर्योदयास्त एवं तिथि, नक्षत्र, योग, करण का समाप्तिकाल भारतीय मानक समय में दिया है। यदि पञ्चांग में दर्शाये प्रतिदिन के सूर्योदय एवं सूर्यास्त काल का योग १२ घण्टे होता है तब यह समझना चाहिये कि पञ्चाग में स्थानीय समय प्रयुक्त हुआ है। दूसरी पहिचान यह है कि दिनमान (घटी–पल) में ५ का भाग देने पर स्थानीय समय में सर्यास्तकाल (घण्टा–मिनट में) प्राप्त होता है।

४. पञ्चांग में दिनमान का सूर्योदय एवं सूर्यास्त द्वारा प्रमाणीकरण होना चाहिये। पञ्चांग में सूर्योदय एवं सूर्यास्त किसी भी इकाई में हो किन्तु दिनमान अपरिवर्तित रहता है। सूर्योस्त में से सूर्योदय घटाकर शेष घण्टे–मिनट में ढ़ाई गुना करने पर दिनमान प्राप्त होता है, यह दिनमान (घटी–पल) पञ्चांग में दिये दिनमान के तुल्य होना चाहिये।

५. पञ्चांग में तिथि, नक्षत्र, योग, करण के सूर्योदय से समाप्तिकाल (घंटा–मिनट) इनके घटी–पलात्मक मान के तुल्य होना चाहिये। जैसे– विद्यापीठ पञ्चांग के अनुसार १४ जून १९९९ को दिल्ली में मृगशिरा नक्षत्र का मान १९ घटी ५७ पल तथा स्टैण्डर्ड समय में समाप्तिकाल १३ घंटा २६ मिनट है, जबकि इस दिन दिल्ली में सूर्योदय (स्टैण्डर्ड) ५ बजकर २७ मिनट पर होता है। तब

मृगशिरा नक्षत्र का समाप्तिकाल = १३ घंटा २६ मिनट (स्टै. समय)

सूर्योदय काल = (–) ५ घंटा २७ मिनट (स्टै. समय)

शेष ७ घंटा ५९ मिनट

इसलिये मृगशिरा नक्षत्र का सूर्योदय से घटी–पलात्मक मान

$$= ७ \text{ घंटा } ५९ \text{ मिनट} \times \frac{५}{२} = १९ \text{ घटी } ५७ \text{ पल } ३० \text{ विपल}$$

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

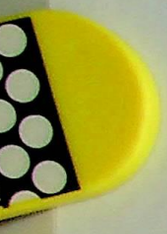

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतः इस पञ्चांग में दर्शाये तिथि, नक्षत्र, योग एवं करण के घटी–पलात्मक मान शुद्ध हैं।

नवलगढ़ के अक्षांश रेखांश पर बने श्री सरस्वती पञ्चांग में तिथि, नक्षत्र, योग व करण को घटी–पल तथा घंटा–मिनट (स्टैण्डर्ड समय) में भिन्न प्रकार से व्यक्त किया है। इसमें तिथि, नक्षत्र, योग एवं करण के घटी–पलात्मक मान सूर्योदय से इनके समाप्तिकाल (घण्टा–मिनट) के ढाई गुने के बराबर प्राप्त नहीं होते हैं। इस पञ्चांग में तिथि, नक्षत्र, योग एवं करण के घटी पलात्मक मान नवलगढ़ के मध्यमार्कोदय के लिखे गये हैं। घटी पल में ढाई का भाग देकर भागफल (घंटा–मिनट) के ६ घंटा २६ मिनट में जोड़ने पर तिथि, नक्षत्र, योग एवं करण का सूर्योदय से समाप्ति काल भारतीय स्टैण्डर्ड समय में प्राप्त होता है।

जैसेः– सरस्वती पञ्चांग में दिनांक ६ सितम्बर१९९४ को पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का मान १६ घटी ४ पल तथा स्टैण्डर्ड समय में १२ बजकर ५३ मिनट दिया है, जबकि इस दिन नवलगढ़ में सूर्योदय ६ बजकर १३ मिनट पर होता है। तब–

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का घटी पलात्मक मान = १६ घटी ४ पल $\div \frac{५}{२}$

= ६ घंटा २५ मिनट ३६ सेकण्ड

इसमें ६ घंटा २६ मिनट जोड़ने पर पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का समाप्तिकाल (स्टैण्डर्ड समय में) १२ बजकर ५४ मिनट प्राप्त होता है जो कि लगभग पञ्चांग में दर्शाये मान के तुल्य है। इसी प्रकार तिथि, योग एवं करण के समाप्तिकाल स्टैण्डर्ड समय में ज्ञात कर सकते हैं।

६. पञ्चांग में यह देखना चाहिये कि सूर्योदयास्तकाल में किरण वक्री भवन संस्कार किया गया है अथवा नहीं। सूर्योदयास्तकाल में किरण वक्री भवन संस्कार करने से वास्तविक क्षितिज वृत्त के उदयास्तकाल में सूक्ष्मान्तर आ जाता है। जिससे इष्ट बनाने में तथा धार्मिक निर्णयों में त्रुटि होना सम्भव है परन्तु सूर्योदयास्त काल में घड़ी का मिलान करना हो तो पञ्चांग में दर्शाये सूर्योदय में २ मिनट किरण वक्री भवन संस्कार घटाकर तथा सूर्यास्त में २ मिनट जोड़कर घटी यंत्र से मिलना चाहिये। किरण वक्री भवन संस्कार के कारण दिनमान भी लगभग १० पल बढ़ जाता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

७. पञ्चांग प्रयोग से पूर्व देखें कि चन्द्र संचार स्टैण्डर्ड समय में दिया है या घटी–पलात्मक मान में। वाणीभूषण पञ्चांग में तिथि, नक्षत्र, योग एवं करण का मान घटी–पल तथा स्टैण्डर्ड समय (घण्टा–मिनट) में और विद्यापीठ पञ्चांग, दिवाकर पञ्चांग में चन्द्र संचार को स्टैण्डर्ड समय (घंटा–मिनट) में व्यक्त किया है जबकि निर्णय सागर एवं विश्व पञ्चांग में चन्द्र संचार घटी–पल में दर्शाया है।

८. पञ्चांग में ग्रह स्पष्ट कितने बजे के दिये है ? यह भी देख लेना चाहिये कि ग्रह स्पष्ट किस दिन के है ? जैसे निर्णय सागर पञ्चांग में अष्टमी, पूर्णिमा एवं अमावस्या के सूर्योदय कालीन ग्रह स्पष्ट दिये रहते हैं। विद्यापीठ पञ्चांग में प्रातः ६.२१ बजे के प्रतिदिन के ग्रहस्पष्ट दिये हैं। आर्यभट्ट तथा श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग में प्रातः ५.३० बजे की दैनिक ग्रह स्पष्ट सारणी दी है। शतक मार्त्तण्ड पञ्चांग में सन् १९८०ई. से पूर्व ग्रहों की स्थिति सांय ५.३० बजे की दी गयी है। जीवाजी वेधशाला उज्जैन की एफेमरीज में दोपहर १२.०० के सायन ग्रह स्पष्ट दर्शाये हैं।

९. पञ्चांग में स्पष्ट राहू दिया है अथवा मध्यम ? मध्यम राहू एवं स्पष्ट राहू में अधिकतम १ अंश का अन्तर होता है। केतु राहू से १८० अंश की दूरी पर रहता है।

१०. वेलान्तर सारणी ऋणात्मक तथा धनात्मक चिन्हों के अनुसार सही है अथवा नहीं ? वेलान्तर संस्कार करने के पञ्चांग में क्या निर्देश दिये है ? विद्यापीठ पञ्चांग में दी गई वेलान्तर सारणी के अनुसार २६ दिसम्बर से १४ अप्रैल तक तथा १५ जून से ३१ अगस्त तक वेलान्तर ऋण (–) और १५ अप्रैल से १४ जून तक तथा १ सितम्बर से २५ दिसम्बर तक वेलान्तर धन (+) होता है।

११. पञ्चांग में दी गई लग्न सारणी किस अक्षांश एवं किस अयनांश पर बनी हुई है ? उत्तर भारत के अनेक पञ्चांगों में भिन्न–भिन्न अक्षांशों एवं अयनांश पर बनी लग्न सारणीयों को दिया गया है। जैसे– निर्णय सागर पञ्चांग (शक २०५८) में उत्तरी अक्षांश १७.५० अंश से लेकर २८.५० अंश तक की आठ लग्न सारणीयाँ दी गई है। ये लग्न सारणीयाँ २४ अंश अयनांश पर बनी हुई हैं।

१२. पञ्चांग में सिद्धान्तीय वर्ष प्रवेश सारणी दी है अथवा नवीन वेधोपलब्ध वर्ष प्रवेश सारणी दी है ? दोनों सारणीयों में सूक्ष्मांतर होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१३. पञ्चांग की लस्टर पंक्ति में व्यक्त भद्रा, पंचक एवं सर्वार्थसिद्धादि योगों का समाप्तिकाल भारतीय मानक समय (घंटा–मिनट) में है अथवा घटी–पल में ?

इत्यादि अनेकानेक बातें जिन्हें पञ्चांग से पूर्व ध्यान में रखने पर मुहूर्त, लग्नादि की गणना करने पर त्रुटि होने की सम्भावना नहीं रहती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

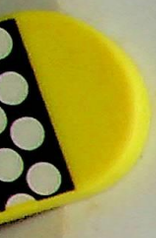

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्वितीय अध्याय

पञ्चांग का महत्व

भारतीय ज्योतिर्विज्ञान में पञ्चांग का बड़ा ही महत्व है। पञ्चांग को भारतीय ज्योतिष की कुंजी कहा जाता है। भारतीय दर्शन में वेदों की स्थिति सर्वोपरि होने के कारण उनमें प्रतिपादित धार्मिक कृत्यों के ज्ञानार्थ व सही निर्णयों के लिये तदंगभूत ज्योतिर्विज्ञान की महत्ता भी वेदों के तुल्य ही मानवमात्र हेतु शुभ एवं कल्याणकारी मानी गई है। इसमें जिस कालज्ञान एवं शुभाशुभ मुहूर्तों का उल्लेख हुआ है, उन सबका सम्यक ज्ञान पञ्चांग के द्वारा ही जन साधारण तक पहुँचता है। इस बात में यत्किंचित भी संदेह नहीं है कि एक आस्तिक जीवन जीने के लिये जितने भी श्रोत–स्मार्त्त और गृहस्थ धर्म के कार्य वर्णित हैं, उनको सविधि सम्पादनार्थ हमारे धर्मशास्त्रों में यथोक्त काल निर्धारित है। काल का यथार्थ ज्ञान सहजता एवं सरलता से पञ्चांग से ही हो सकता है।

भारतीय ज्ञान–विज्ञानवेत्ता महर्षियों का कथन है कि परमात्मा स्वरूप काल को जानने के लिये वर्ष, मास, दिन, लग्न एवं मुहूर्त के शुभाशुभत्व का विचार परम आवश्यक है। पञ्चांग समय की विभिन्न इकाईयों को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। प्राचीनकाल में पञ्चांग का उपयोग व्रत, त्यौहार, यज्ञ, अनुष्ठान, संक्रान्ति एवं गृहस्थों के सभी धार्मिक वैदिक आदि कृत्यों के मार्गदर्शनार्थ किया जाता था। कालांतर में पञ्चांग का विकास होता गया और इसमें शास्त्रोक्त नवीन तथ्यों को समाहित किया। वर्तमान में पञ्चांग का उपयोग सृष्टि में उद्भूत समस्त पदार्थों एवं कृत्यों के लिये किया जाने लगा है। मानव प्राणी के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त का लेखा–जोखा इसके द्वारा निर्मित जन्मपत्रिका द्वारा ही किया जाता है। पञ्चांग के बिना एक ज्योतिषी वैसे ही है जैसे शस्त्र (गन) विहीन एक सैनिक। प्राचीनकाल में ज्योतिर्विद स्वयं के द्वारा निर्मित पञ्चांग रखते थे। वर्तमान में ज्योतिषी प्रतिवर्ष दृक्सिद्ध आतिम शुद्ध पञ्चांग बाजार से अवश्य खरीदता है। अतः ज्योतिषीय अध्ययन की दृष्टि से पञ्चांग एक प्रमुख साधन है। पञ्चांग का महत्व इस दृष्टि से भी है कि इसके द्वारा हमें अनेक प्रकार की आकाशीय घटनाओं का पता चलता है, जैसे– सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, दैनिक ग्रह, संचार, राशि परिवर्तन, चन्द्रोदयास्त, सूर्योदयास्त, ग्रहों का उदयास्त, ग्रहों की युति इत्यादि। पञ्चांग के द्वारा न केवल वर्णों के संस्कार आदि कराके मानव को मानवीय गुणों से परिपूर्ण किया जा सकता

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्वितीय अध्याय

पञ्चांग का महत्व

भारतीय ज्योतिर्विज्ञान में पञ्चांग का बड़ा ही महत्व है। पञ्चांग को भारतीय ज्योतिष की कुंजी कहा जाता है। भारतीय दर्शन में वेदों की स्थिति सर्वोपरि होने के कारण उनमें प्रतिपादित धार्मिक कृत्यों के ज्ञानार्थ व सही निर्णयों के लिये तदंगभूत ज्योतिर्विज्ञान की महत्ता भी वेदों के तुल्य ही मानवमात्र हेतु शुभ एवं कल्याणकारी मानी गई है। इसमें जिस कालज्ञान एवं शुभाशुभ मुहूर्तों का उल्लेख हुआ है, उन सबका सम्यक ज्ञान पञ्चांग के द्वारा ही जन साधारण तक पहुँचता है। इस बात में यत्किंचित भी संदेह नहीं है कि एक आस्तिक जीवन जीने के लिये जितने भी स्रोत–स्मार्त्त और गृहस्थ धर्म के कार्य वर्णित हैं, उनको सविधि सम्पादनार्थ हमारे धर्मशास्त्रों में यथोक्त काल निर्धारित है। काल का यथार्थ ज्ञान सहजता एवं सरलता से पञ्चांग से ही हो सकता है।

भारतीय ज्ञान–विज्ञानवेत्ता महर्षियों का कथन है कि परमात्मा स्वरूप काल को जानने के लिये वर्ष, मास, दिन, लग्न एवं मुहूर्त के शुभाशुभत्व का विचार परम आवश्यक है। पञ्चांग समय की विभिन्न इकाईयों को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है। प्राचीनकाल में पञ्चांग का उपयोग व्रत, त्यौहार, यज्ञ, अनुष्ठान, संक्रान्ति एवं गृहस्थों के सभी धार्मिक वैदिक आदि कृत्यों के मार्गदर्शनार्थ किया जाता था। कालांतर में पञ्चांग का विकास होता गया और इसमें शास्त्रोक्त नवीन तथ्यों को समाहित किया। वर्तमान में पञ्चांग का उपयोग सृष्टि में उद्भूत समस्त पदार्थों एवं कृत्यों के लिये किया जाने लगा है। मानव प्राणी के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त का लेखा–जोखा इसके द्वारा निर्मित जन्मपत्रिका द्वारा ही किया जाता है। पञ्चांग के बिना एक ज्योतिषी वैसे ही है जैसे शस्त्र (गन) विहीन एक सैनिक। प्राचीनकाल में ज्योतिर्विद स्वयं के द्वारा निर्मित पञ्चांग रखते थे। वर्तमान में ज्योतिषी प्रतिवर्ष दृक्सिद्ध अप्रतिम शुद्ध पञ्चांग बाजार से अवश्य खरीदता है। अतः ज्योतिषीय अध्ययन की दृष्टि से पञ्चांग एक प्रमुख साधन है। पञ्चांग का महत्व इस दृष्टि से भी है कि इसके द्वारा हमें अनेक प्रकार की आकाशीय घटनाओं का पता चलता है, जैसे– सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, दैनिक ग्रह, संचार, राशि परिवर्तन, चन्द्रोदयास्त, सूर्योदयास्त, ग्रहों का उदयास्त, ग्रहों की युति इत्यादि। पञ्चांग के द्वारा न केवल वर्णों के संस्कार आदि कराके मानव को मानवीय गुणों से परिपूर्ण किया जा सकता

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

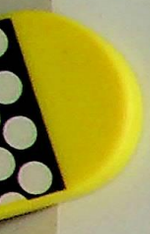

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है वरन् इसके एक–एक तत्व का अलग – अलग महत्व है। तिथि के ज्ञान से ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। वार(दिन) से आयु की वृद्धि, नक्षत्र से पापों का शमन, योग से रोग का निवारण और करण से कार्य सिद्धि होती है। जो कि पञ्चांग के उत्तम फल को परिलक्षित करता है।[१] आगे पञ्चांग के पाँचों अंगों के महत्व को विस्तार से प्रकट किया गया है।

(अ) तिथि का महत्व :- पञ्चांग में तिथि की शुभाशुभता की उपयेागिता को देखते हुये इसका बड़ा ही महत्व है। प्रत्येक तिथि का एक स्वामी होता है। १५ तिथियों के क्रमशः १५ तिथीश हैं। प्रतिपदा के स्वामी अग्नि, द्वितीया के स्वामी ब्रह्मा, तृतीया के गौरी, चतुर्थी के गणेश, पंचमी के नाग, षष्ठी के कार्तिकेय, सप्तमी के सूर्य, अष्टमी के शिव, नवमी के दुर्गा, दशमी के यम, एकादशी के विश्वदेव, द्वादशी के विष्णु, त्रयोदशी के कामदेव, चतुर्दशी के शिव, पूर्णिमा के चन्द्रमा और अमावस्या के स्वामी पितर होते हैं।[२] महर्षि नारद ने भी तिथियों के स्वामी इसी प्रकार बतलाये हैं।[३] जिस तिथि के जो देवता हैं उनका उसी तिथि में पूजन, व्रत, स्थापना आदि करना उत्तम होता है। प्राचीन शास्त्रकारों ने तिथियों की शुभाशुभता को देखते हुये उन्हें भिन्न–भिन्न नाम दिये है। यह तिथियाँ जब किसी वार विशेष में पड़ती हैं तब ये सिद्धातिथि कहलाती हैं।[४] सिद्धातिथि सब दोषों का नाश करती है तथा समस्त कार्यो में सिद्धि को प्रदान करती है।[५]

---

[१] तिथिंन्चैश्वर्यमाप्नोति वारादायुष्मवर्धनम्।
नक्षत्राद्वरते पापं योगाद् रोगनिवारणम्
करणात् कार्यसिद्धिन्च पञ्चांग फलमुत्तम।। सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्याय १

[२] तिथीशा वह्निकौ गौरी गणेशोऽहिर्गुहो रविः।
शिवो दुर्गान्तको विश्वे हरिः कामः शिवः शशी
अमायाः पितरः स्मृताः।। मुहूर्तचिन्तामणि , शुभाशुभ प्रकरण , श्लोक–३

[३] नारद पुराण , पूर्वभाग २/५६/१३४ , १३५.

[४] नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णेति तिथ्योऽशुभमध्यशस्ताः।
सितेऽसिते शस्तसमाधमाः स्युः सितज्ञभौमाक्रिगुरौ च सिद्धाः।।
मुहूर्त चिन्तामणि , शुभाशुभ प्रकरण , श्लोक – ४

[५] सुगम ज्योतिष , संज्ञाध्याय , तिथि प्रकरण , पृष्ठ – ६३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सारणी क्रमांक-१

संज्ञा	तिथि			वार	कार्य
नन्दा	१	६	११	शुक्र	उत्सवकर्म,मकान बनाना,तंत्र विद्यारम्भ, गीतवाद्यनृत्य
भद्रा	२	७	१२	बुध	विवाह, आभूषण, सवारी, यात्रा, पौष्टिक कर्म
जया	३	८	१३	भौम	युद्ध, संग्राम सम्बन्धी कर्म
रिक्ता	४	६	१४	शनि	घातकर्म, विषप्रयोग, शल्यक्रिया
पूर्णा	५	१०	१५(३०)	गुरू	मंगल कर्म, विवाह, यात्रा
शुक्ल पक्ष	अशुभ	मध्य	शुभ	सिद्धा	
कृष्ण पक्ष	शुभ	मध्य	अशुभ	तिथि	

चन्द्रमा के पूर्ण एवं क्षीण होने से तिथियों में बलत्व और निर्बलत्व होता है। इन तिथियों के नाम के अनुसार इनकी उपादेयता है। जैसे – पूर्णा तिथि में मांगलिक कर्म करना चाहिये, रिक्ता तिथि में विष प्रयोग, अग्निकर्म इत्यादि करना उत्तम होता है।

प्रत्येक तिथि का महत्व उसके फल के अनुसार कहा गया है। प्रतिपदा सिद्धि देने वाली है, द्वितीय कार्यसाधन करने वाली है, तृतीया आरोग्य देने वाली है, चतुर्थी हानिकारण है, पंचमी शुभ देने वाली है, षष्ठी अशुभ है, सप्तमी शुभ है, अष्टमी व्याधि नाश करने वाली तथा नवमी मृत्यु को प्रदान करने वाली है, दशमी द्रव्य देने वाली है तथा एकादशी शुभ है, द्वादशी एवं त्रयोदशी सब प्रकार की सिद्धि देने वाली है, चतुर्दशी शुभ है, पूर्णिमा पुष्ट देने वाली है तथा अमावस्या अशुभ है। इस प्रकार इन तिथियों के प्रभाव के अनुसार इनका महत्व है।[६]

तिथियों का वार एवं नक्षत्र विशेष से संबंध होने पर योग बनते हैं जिनका ज्ञान भी पञ्चांग के माध्यम से होता है। रविवार को नन्दा, सोमवार का भद्रा, भौमवार को नन्दा, बुधवार को जया, गुरूवार को रिक्ता, शुक्रवार को भद्रा एवं शनिवार को पूर्णा तिथियों के आ जाने से मृतयोग होता है।[७]

---

[६] सुगम ज्योतिष,संज्ञाध्याय,तिथिप्रकरण पृष्ठ–६३ एवं वृहदवकहड़ाचक्र,तिथिप्रकरणश्लोक–१०–१३.

[७] नन्दा भद्रा नन्दिकारख्या जया च रिक्त भद्रा चैव पूर्णा मृतार्कात्।
मुहूर्त चिन्तामणि , शुभाशुभ प्रकरण श्लोक–५ पूर्वार्ध।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसी प्रकार रविवार को द्वादशी, सोमवार को एकादशी, मंगलवार को पंचमी, बुधवार को तृतीया, बृहस्पतिवार को षष्ठी, शुक्रवार को अष्टमी और शनिवार को नवमी पड़ जाये तो दग्ध योग होता है। महर्षि नारद ने भी मृतयोग एवं दग्धयोग को इसी प्रकार कहा है।[८] यदि रविवार को चतुर्थी, सोमवार को षष्ठी, भौमवार को सप्तमी, बुधवार को द्वितीया, गुरूवार को अष्टमी, शुक्रवार को नवमी और शनिवार को सप्तमी पड़े तो विषयोग होता है। इसी प्रकार रविवार को द्वादशी, सोमवार को षष्ठी, मंगलवार को सप्तमी, बुधवार को अष्टमी, बृहस्पतिवार को नवमी, शुक्रवार को दशमी एवं शनिवार को एकादशी तिथि पड़े तो हुताशन योग होता है।[९] इन चारों योगों – मृतयोग, दग्धयोग, विषयोग, हुताशनयोग में शुभकार्य वर्जित है। विशेषकर यात्रा में ये निन्द्य हैं।

यदि द्वादशी तिथि में आश्लेषा, प्रतिपदा में उत्तराषाढ़ा, द्वितीया में अनुराधा पंचमी में मघा, तृतीया में तीनों उत्तरा, एकादशी में रोहणी, त्रयोदशी में स्वाती एवं चित्रा, सप्तमी में हस्त तथा मूल, नवमी में कृतिका, अष्टमी में पूर्वाभाद्रपद और षष्ठी तिथि में रोहिणी नक्षत्र का सम्बन्ध हो तो निन्द्य योग बनाता है। इस योग को समस्त शुभकार्यों में निषिद्ध बतलाया है।[१०]

चैत्रादि मास में पड़ने वाली तिथियाँ मासशून्य तिथियाँ कहलाती है। मासशून्य तिथियों में मंगलकार्य करने से वंश एवं धन का नाश होता है। भाद्रपद मास में प्रतिपदा व द्वितीया तिथि, श्रावण में द्वितीया–तृतीया, वैशाख में द्वादशी, पौष में पंचमी, आश्विन में दशमी–एकादशी, अषाढ़ कृष्ण में षष्ठी, फाल्गुन कृष्ण में चतुर्थी, ज्येष्ठ कृष्ण में चतुर्दशी, माघ कृष्ण में पंचमी, कार्तिक शुक्ल में चतुर्दशी, अषाढ़ शुक्ल में

---

[८] नारद पुराण , पूर्वभाग –२ , अध्याय–५६ , श्लोक–२४३ परार्ध , २४४ पूर्वार्ध एवं २४५–२४६.

[९] सूर्येशपंचाग्निरसाष्टनन्दा वेदांग्ड़सप्तारिवगजाक्ड़शैलाः।
सूर्यागसप्तोरगगोदिगीशा दग्धा विषाख्याश्च हुताशनाश्च।।
मुहूर्त चिन्तामणि, शुभाशुभ प्रकरण, श्लोक– ८

[१०] तथा निन्द्यं शुभे सार्प द्वादश्यां वैश्वमादिमे।
अनुराधा द्वितीयायां पञ्चम्यां पित्र्यभं तथा।।
त्र्युत्तराश्च तृतीयायामेकादश्यां च रोहिणी।
स्वातीचित्रे त्रयोदश्यां सप्तम्यां हस्तराक्षसे।।
नवम्यां कृतिकाष्टाम्यां पूभा षष्ठ्यां च रोहिणी। मुहूर्त चिन्तामणि,शुभाशुभ प्रकरण,श्लोक–११–१३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सप्तमी, फाल्गुन शुक्ल में तृतीया, ज्येष्ठ शुक्ल में षष्ठी तिथि पड़े तो ये तिथियाँ मासशून्य कहलाती हैं।[११]

चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशी एवं चतुर्दशी तिथि ये ६ तिथियाँ पक्षरन्ध्र तिथि कहलाती हैं। महर्षि नारद ने इन्हें अत्यन्त रूक्ष कहा है। इनकी आरम्भ की क्रमशः ६/६/४/२५/१४/१५ घटियाँ सब शुभ कार्यों में त्याज्य हैं।[१२] जबकि आचार्य श्री रामदैवज्ञ के मतानुसार इन तिथियों की क्रमशः ८/६/१४/२५/१०/५ घटियाँ त्याग कर शुभकार्य करना चाहिये।[१३]

इसी प्रकार कृष्ण पक्ष में अष्टमी, चतुर्दशी, अमास्या, पूर्णिमा एवं सूर्य संक्रान्ति के दिन विद्यमान तिथि पर्व संज्ञक है। इनमें स्त्री प्रसंग, सहवास एवं अन्य विशेष मांगलिक कार्यों को निषिद्ध कहा है।[१४]

इस प्रकार तिथियों को ध्यान में रखते हुये प्राणी मात्र को अपना कर्म करना चाहिये। जिस कार्य को जब करना हो उस समय में व्याप्त तिथि जब हो तब वह कर्म करना चाहिये। तिथि की क्षय–वृद्धि से इसका कोई मतलब नहीं है। सूर्योदय से मध्याह्न तक जो तिथि न हो वह खण्डित है, इसमें व्रतों का आरम्भ अथवा समाप्ति नहीं होती है। एकादशी व्रत के लिये सूर्योदय व्यापिनी तिथि लेनी चाहिये। यदि दो दिन उदयव्यापनी हो तो दूसरे दिन व्रत करना चाहिये, यदि दोनों दिन उदयकाल में न हो तो पूर्व दिन व्रत करना चाहिये। जिस तिथि में सूर्योदय हो, उस तिथि को दान, अध्ययन, पूजाकर्म आदि में पूर्ण मानना चाहिये। दैवकर्म में पूर्वाह्नव्यापिनी, श्राद्ध में कुतुपकाल (८ वाँ मुहूर्त) व्यापिनी तिथि तथा व्रतों में प्रदोष व्यापिनी तिथि ग्रहण करनी चाहिये।[१५]

(ब) नक्षत्र का महत्व :- क्रान्तिवृत्त में नक्षत्र मील के पत्थर की तरह से हैं। तिथियों की तरह २८ नक्षत्रों के क्रम से देवता (स्वामी) होते हैं। महर्षि नारद एवं

---

[११] मुहूर्त चिन्तामणि , शुभाशुभ प्रकरण , श्लोक १० , ११ का पूर्वार्ध।

[१२] नारद पुराण, पूर्वभाग २/५६/१३७ परार्ध–१३८ , सुगम ज्योतिष , संज्ञाप्रकरण , तिथिप्रकरण , पृष्ठ–६४ एवं वृहदवकहड़ाचक्रम् , तिथिप्रकरण, श्लोक १७

[१३] वेदांगाष्टनवार्केन्द्रपछरन्ध्रतिथौ त्यजेत्।
वस्वक्डमनुतत्वाशाशरा नाडीः पराः शुभाः। मुहूर्त चिन्तामणि , शुभाशुभप्रकरण, श्लोक–३६.

[१४] .....

[१५] सुगम ज्योतिष , संज्ञाध्याय , तिथिप्रकरण , पृष्ठ ६३.

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

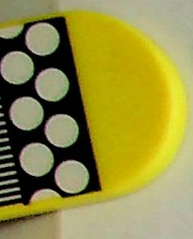

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आचार्य श्रीराम दैवज्ञ के अनुसार अश्विनी नक्षत्र के स्वामी नासत्य (अश्विनी कुमार), भरणी के यमराज, कृतिका के अग्नि, रोहिणी के ब्रह्मा, मृगशिरा के चन्द्रमा, आर्द्रा के रूद्र, पुनर्वसु के अदिति, पुष्य के बृहस्पति, आश्लेषा के सर्प, मघा के पितर, पूर्वाफाल्गुनी के भग(सूर्य), उत्तराफाल्गुनी के अर्य्यमा, हस्त के सूर्य, चित्रा के विश्वकर्मा, स्वाती के वायु, विशाखा के शक्राग्नी, अनुराधा के मित्र ज्येष्ठा के इन्द्र, मूल के निर्ऋति (राक्षस), पूर्वाषाढ़ा के जल, उत्तराषाढ़ा के विश्वदेवा, अभिजित् के ब्रह्मा, श्रवण के विष्णु, धनिष्ठा के वसु, शतभिषा के वरूण, पूर्वाभाद्रपदा के अजैकपाद, उत्तराभाद्रपदा के अहिर्बुध्न्य, रेवती के पूषा नाम के सूर्य होते हैं।[१६]

ज्योतिष ग्रन्थों में नक्षत्रों की उपादेयता की दृष्टि से उनका ध्रुव, क्षिप्र, चर, मृदु, उग्रादि विविध वर्गो में विभाजन किया गया है।[१७] जिससे उनके फलकथन और मुहूर्तो के विषय में विशेष ज्ञान होता है।

मुहूर्तकारों के अनुसार तीनों उत्तरा, रोहिणी–ये ४ नक्षत्र ध्रुव एवं स्थिर संज्ञक हैं। ये नक्षत्र स्थिर कार्यो की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इन नक्षत्रों में बीज बोना, गृहप्रवेश, ग्रामवास, व्यवसाय, गायनादि, विद्यारम्भ, आभूषण धारण, मैत्री इत्यादि स्थिर कर्म करना शुभ है।[१८]

इसी प्रकार पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा--ये ४ नक्षत्र चर संज्ञक हैं। इनमें हाथी, घोड़ा वाहनादि की सवारी करना, दुकान खोलना, बगीचा में यात्रा करना, आभूषण बनवाना इत्यादि कार्य करना शुभ होता है।[१९]

तीनों पूर्वा, भरणी, मघा– ये ५नक्षत्र उग्र संज्ञक कहे जाते हैं। इनमें अग्निप्रज्वलन, घातकर्म (मारना, धोखा देना, विषदेना), शठता का कार्य (ठगना, चोरी करना) शस्त्रकार्य (शस्त्र खरीदना, शस्त्र का लाइसेंस लेना, शस्त्र चलाना, सीखना) आदि कार्य करना सफल होता है।[२०]

---

[१६] नारद पुराण , पूर्वभाग २/५६/१६८–१७० वृहत्संहिता , नक्षत्रकर्म गुणाध्याय , श्लोक ४–५ एवं मुहूर्त चिन्तामणि , नक्षत्रप्रकरण , श्लोक १

[१७] नारद पुराण , पूर्वभाग , २/५६/१७७–१७८.

[१८] मुहूर्त चिन्तामणि , नक्षत्रप्रकरण , श्लोक २

[१९] मुहूर्त चिन्तामणि , नक्षत्रप्रकरण , श्लोक ३

[२०] मुहूर्त चिन्तामणि , नक्षत्रप्रकरण , श्लोक ४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कृतिका एवं विशाखा ये दो नक्षत्र मिश्र संज्ञक कहलाते हैं। इनमें अग्निकार्य (यज्ञ, हवन, औषधियों को पुट देना) विभिन्न वस्तुओं का मिश्रण करना, किसी को बन्धन या वशीकरण करना आदि कर्म प्रशस्त्र हैं।[६]

अश्विनी, पुष्प, हस्त एवं अभिजित् इन ४ नक्षत्रों को क्षिप्र और लघु संज्ञक कहा है। इन नक्षत्रों दुकान बनवाना, वस्तु बेचना, रतिक्रिया, शास्त्रों का पठन–पाठन, आभूषण निर्माण, शिल्पकार्य सीखना, कलाओं का सीखना आदि कर्म प्रशस्त कहे हैं। इन नक्षत्रों में चर संज्ञक नक्षत्रों के कृत्य करना भी शुभदायक है।[७]

मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा ये ४ नक्षत्र मृदु और मैत्र संज्ञक होते है। इनमें गीत सीखना, गीत गाना, वस्त्र बनवाना एवं धारण करना, स्त्री संग रमण या मित्रता करना, खेलना, मित्रों का कार्य सम्पादन करना श्रेष्कर होता है।[८]

आर्द्रा, आश्लेषा, जेष्ठा और मूल नक्षत्रों को तीक्ष्ण तथा दारूण संज्ञक कहा है। इनमें अभिचार कर्म (मारण, उच्चाटण, स्तम्भन आदि तांत्रिक प्रयोग) घातकर्म, पशुदमन, शत्रु उत्पीड़न, मुकद्दमा दायर करना आदि कार्य सिद्ध होते हैं।[९]

मूल, आश्लेषा, विशाखा, कृतिका, भरणी, तीनों पूर्वा एवं मघा ये ६ नक्षत्र अधोमुखी कहे जाते हैं। रोहिणी, आर्द्रा, पुष्य, तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा ये ६ नक्षत्र ऊर्ध्वमुखी कहे जाते हैं। अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, जेष्ठा और रेवती ये ६ नक्षत्र पार्श्वमुखी या तिर्यकमुखी नक्षत्र कहलाते हैं।[१०] इन नक्षत्रों में नक्षत्र संज्ञक कार्य करना उत्तम होता है। अधोमुखी नक्षत्रों में अधोमुखी कार्य करने चाहिये, जैसे – कुँआ, तालाब आदि बनवाना, गणित तथा ज्योतिष विद्या के अध्ययन, प्रेतादि साधन, तृणादि संचय करना उपयोगी होता है। ऊर्ध्वमुख वाले नक्षत्रों में देव मंदिर, मठ आदि बनवाना, ध्वजारोहण, राज्याभिषेक आदि कार्य करना

---

६ मुहूर्त चिन्तामणि , नक्षत्रप्रकरण , श्लोक ५
७ मुहूर्त चिन्तामणि , नक्षत्रप्रकरण , श्लोक ६
८ मुहूर्त चिन्तामणि , नक्षत्रप्रकरण , श्लोक ७
९ मुहूर्त चिन्तामणि , नक्षत्रप्रकरण , श्लोक ८
१० मुहूर्त चिन्तामणि , नक्षत्रप्रकरण , श्लोक ६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शुभप्रद है। तिर्यकमुखी नक्षत्रों में हाथी, घोड़ा, वाहनादि खरीदना, हल चलाना, सवारी करना, आकाशीय यात्रा करना, पुल निर्माण आदि कर्म प्रशस्त हैं।[२६]

इसके अतिरिक्त रोहिणी, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा और रेवती –ये अन्धाक्ष नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें खोई वस्तु पूर्व दिशा में प्राप्त होती है। भरणी, आर्द्रा, मघा, चित्रा, जेष्ठा, पूर्वाभाद्रपद और अभिजित्–ये मध्याक्ष नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें गुम हुई वस्तु पश्चिम दिशा में दूर प्राप्त होती है। अश्विनी, मृगशिरा, आश्लेषा, हस्त, अनुराधा, उत्तराषाढ़ा और शतभिषा–ये मन्दाक्ष नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें चोरी गई वस्तु दक्षिण दिशा की ओर प्राप्त होती है। कृतिका, पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाती, मूल, श्रवण, उत्तराभाद्रपद–ये सुलोचन नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें गुम हुई वस्तु कभी प्राप्त नहीं होती है।[२७]

विभिन्न कर्मों के भेद के अनुरूप ही विहित नक्षत्रों का उल्लेख किया गया है। परन्तु शून्य नक्षत्र किसी कर्म विशेष में शुभ होने पर भी त्याज्य माने जाते हैं। मासशून्य तिथियों की तरह मासशून्य नक्षत्रों का उल्लेख भी मुहूर्त ग्रन्थों में हुआ है। आचार्य श्री रामदैवज्ञ के अनुसार चैत्रमास में रोहिणी–अश्विनी, वैशाख में चित्रा–स्वाती, जेष्ठ में उत्तराषाढ़ा–पुष्य, आषाढ़ में पूर्वाफाल्गुनी–धनिष्ठा, श्रावण में उत्तराषाढ़ा–श्रवण, भाद्रपद में शतभिषा–रेवती, आश्विन में पूर्वाभाद्रपदा, कार्तिक में कृतिका–मघा, मार्गशीर्ष में चित्रा–विशाखा, पौष में आर्द्रा–अश्विनी, माघ में श्रवण–मूल और फाल्गुन मास में भरणी–जेष्ठा नक्षत्र मासशून्य नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें शुभकार्य करने से कर्ता के धनादि का नाश होता है।[२८]

नक्षत्रों का वार विशेष से योग होने पर उनका महत्व अधिक हो जाता है। रविवार को भरणी, सोमवार को चित्रा, मंगलवार को उत्तराषाढ़ा, बुधवार को धनिष्ठा, बृहस्पतिवार को उत्तराफाल्गुनी, शुक्रवार को जेष्ठा और शनिवार को रेवती नक्षत्र आ जाये तो दग्ध योग बनता है। [२९] दग्धयोग में शुभकार्य वर्जित है, विशेषकर यात्रा नहीं करना चाहिये।

---

[२६] नारद पुराण , पूर्वभाग २/५६/१७१–१७६.

[२७] मुहूर्त चिन्तामणि , नक्षत्रप्रकरण , श्लोक २२ , २३

[२८] मुहूर्त चिन्तामणि , शुभाशुभप्रकरण , श्लोक १४ , १५

[२९] याम्यं त्वाष्ट्रं वैश्वदेवं धनिष्ठार्यम्णं जेष्ठान्त्यं रवेर्दग्धभं स्यात्।
मुहूर्त चिन्तामणि , शुभाशुभ प्रकरण , श्लोक ५ उत्तार्ध

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसी प्रकार रविवार को मघा, सोमवार को विशाखा, मंगलवार को आर्द्रा, बुधवार को मूल, गुरूवार को कृतिका, शुक्रवार को रोहिणी, शनिवार को हस्त नक्षत्र पड़ता है तो यमघण्ट नामक योग होता है। यह योग समस्त शुभकार्यों, विशेषकर यात्रा में वर्जित होता है।[३०]

सूर्यादिवारों में नक्षत्र विशेष के आ जाने पर सर्वार्थसिद्ध योग बनता है। मुहूर्त चिन्तामणि के अनुसार रविवार में हस्त, मूला, तीनों उत्तरा, पुष्य, अश्विनी ये ७ नक्षत्र; सोमवार में श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा ये ५ नक्षत्र; भौमवार में अश्विनी, उत्तराभाद्रपदा, कृतिका, आश्लेषा ये ४ नक्षत्र; बुधवार में रोहिणी, अनुराधा, हस्त, कृतिका, मृगशिरा ये ५ नक्षत्र; बृहस्पतिवार में रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य ये ५ नक्षत्र; शुक्रवार में रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुर्नवसु, श्रवण ये ५ नक्षत्र और शनिवार में श्रवण, रोहिण, स्वाती ये ३ नक्षत्र आ जायें तो **सर्वार्थसिद्धियोग** होता है।[३१] यह एक शुभफलदायक योग है। शीघ्रता में कोई मुहूर्त न बनता हो तब क्रय–विक्रय, जमीन–जायदाद, आवेदन, नगादिधारण करने में सर्वार्थसिद्धादि शुभ योगों में कार्य आरम्भ करके अभीष्ट सिद्धि की जा सकती है। उत्तर भारत के पञ्चांगों में सर्वार्थसिद्ध योगों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल भा. स्टे. स. में दिया रहता है।

रवि नक्षत्र एवं चन्द्रनक्षत्र के आधार पर रवियोग बनता है। सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उससे वर्तमान नक्षत्र चौथा, छठा, नवाँ, दसवाँ, तेरहवाँ और बीसवाँ हो तो **रवियोग** होता है। यह योग समस्त दोषों को नष्ट करने वाला होता है।[३२] उत्तर भारत के पञ्चांगों रवियोग का आरम्भ एवं समाप्तिकाल दर्शाया जाता है।

जैसे– विक्रम संवत् २०५८ के मार्त्तण्ड पञ्चांग में दिनांक २५ सितम्बर २००१ ई. को रात्रि २:१८ बजे से २७ सितम्बर २००१ ई. को रात्रि ३:३२ बजे तक रवियोग होता है। इसके अनुसार २५ सितम्बर २००१ ई. को निरयन सूर्य उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र(१२) में होता है। २५ सितम्बर २००१ ई. की रात्रि २:१८ बजे से चन्द्रमा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में प्रवेश करता है तथा २७ सितम्बर २००१ ई. को रात्रि ३:३२ बजे पर श्रवण

---

[३०] सूर्यादिवारे तिथयो भवन्ति मघाविशाखाशिवमूलवह्निः।
ब्राह्मं करोऽर्काद्यमघण्टकाश्च शुभे विवर्ज्या गमने त्ववश्यम्।। मु. चि., शुभाशुभ, श्लोक ६

[३१] मुहूर्त चिन्तामणि, शुभाशुभ प्रकरण, श्लोक २८, २९

[३२] सूर्यभाद्वेदगोतक्रदिग्विश्वनख सम्मिते।
चन्द्रर्क्षे रवियोगाः स्युर्दोषसघ्ड़ विनाशकाः।। मुहूर्त चिन्तामणि, शुभाशुभ प्रकरण, श्लोक २७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नक्षत्र में प्रवेश करता है। इस प्रकार उत्तराफाल्गुनी (सूर्य नक्षत्र) से गिनने पर नवाँ चन्द्रनक्षत्र पूर्वाषाढ़ा एवं दसवाँ नक्षत्र उत्तराषाढ़ा होता है। चन्द्रमा जब तक पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों में रहता है तब तक रवियोग होता है। इस प्रकार रवि आदि योगों को ज्ञात किया जा सकता है।

सर्वार्थसिद्धियोग की तरह अमृतसिद्धियोग भी होते हैं यदि रविवार को हस्त नक्षत्र, सोम को मृगशिरा, मंगल को आश्विनी, बुध को अनुराधा, गुरू को पुष्य, शुक्र को रेवती और शनिवार को रोहिणी नक्षत्र पड़े तो **अमृतसिद्धि** योग होता है। यह येाग सब प्रकार की सिद्धि देने वाला है।[३३] रविवार को पुष्य नक्षत्र आता है तो रविपुष्य योग तथा गुरूवार को पुष्य नक्षत्र आता है तो गुरूपुष्य योग होता है। ये दोनों योग विवाह को छोड़कर अन्य सभी कार्यो में सिद्धिदायक होते हैं तथा नगधारण, जड़ी–बूटी ग्रहण करने में श्रेष्ठकर हैं। गुरूपुष्य योग व्यापारिक कार्यो में अधिक फलिभूत होता है। गुरूपुष्य योग कामुकता का वर्धक होने से विवाह मे निषिद्ध है।[३४]

ज्योतिष में नक्षत्रों का वार एवं तिथि दोनों के साथ विशेष सम्बन्ध होने पर महत्वपूर्ण योग बनते हैं। उत्तर भारत के पञ्चांगों के द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योगों को दर्शाया जाता है, जो कि तिथि, वार एवं नक्षत्र के विशेष सम्बन्ध के आधार पर बनते हैं।

भद्रा तिथि (२/७/१२) में रवि, मंगल, शनिवार के साथ–साथ कृतिका, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, उत्तराषाढ़ा एवं पूर्वाभाद्रपद ये तीन चरण वाले नक्षत्र आयें तो **त्रिपुष्कर** योग होता है। त्रिपुष्कर योग तिथि–वार–नक्षत्र का योग है। त्रिपुष्कर योग मृत्य, विनाश एवं वृद्धि में तीन गुना फल देता है। यदि इस योग में कुटुम्ब में किसी की मृत्यु हो जाये तो उस कुटुम्ब में ३ व्यक्तियों की मृत्यु और होती है। यदि व्यापार में घाटा हो जाये तो वह ३ गुना होगा और यदि लाभ हो जाये तो वह भी ३ गुना होगा।[३५]

---

[३३] सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्याय प्रथम, तिथिवारर्क्षयोग प्रकरण, पृष्ठ ८५

[३४] नारद पुराण, पूर्वभाग २/५६/२०१ पूर्वार्ध एवं मु. चि., शुभाशुभ प्रकरण, श्लोक १२ टीका विशेष

[३५] भद्रातिथि रविजभूतनयाक्रवारे द्वीशार्यमाजचरणदितिवह्निवैश्वे।
त्रैपुष्कारो भवति मृत्यु विनाशवृद्धौ त्रैगुण्यदो द्विगुणकृद्वसुतक्षचान्द्रे।।
मुहूर्त चिन्तामणि, नक्षत्र प्रकरण, श्लोक ५०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो चरण वाले नक्षत्रों में चित्रा, धनिष्ठा एवं मृगशिरा में भद्रातिथि (२/७/१२) तथा रवि, भौम, शनिवार पड़े तो **द्विपुष्कर** योग होता है। इसका फल दुगना होता है। इन योगों में अप्रिय घटना या कार्य होने पर उसकी शांति अवश्य करा लेनी चाहिये।[११]

उत्तर भारत के पञ्चांगों में द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योगों का काल भारतीय स्टैण्डर्ड समय में दिया रहता है। विक्रम संवत् २०५५ के दिवाकर पञ्चांग के अनुसार १६ अप्रैल १९९८ ई. को प्रातः ८:५४ बजे से १३:३७ बजे तक त्रिपुष्कर योग रहता है।

सारणी क्रमांक–२

तिथि	वार	समाप्तिकाल		नक्षत्र	समाप्तिकाल		दिनांक
		घ. प.	घ. मि.		घ. प.	घ. मि.	
७	रवि	१९ : ८	१३ : ३७	पूर्वाषाढ़ा	७ : २०	८ : ५४	१६/४/९८
८	सोम	१७ : ३३	१२ : ५८	उत्तराषाढ़ा	७ : ४८	९ : ४	२०/४/९८

पंचक संज्ञक नक्षत्र :- पञ्चांग में पंचक आरम्भ एवं समाप्तिकाल दिया रहता है। धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद एवं रेवती ये ५ नक्षत्र पंचक नाम से जाने जाते हैं। इनका बड़ा ही महत्व है। ये नक्षत्र क्रमशः लगभग ५ दिनों तक रहते हैं। इन नक्षत्रों के काल में कुछ विशेष कृत्यों का आरम्भ करना वर्जित होता है। पंचकों के प्रारम्भ होते ही दक्षिण की यात्रा, मकान, दुकान की छत डालना, चारपाई, पलंग आदि बनाना, लकड़ी बांस या ईटों की दीवाल बनाना, ताँबा, लोहा, पीतल, लकड़ी आदि को इकट्ठा, प्रेतदाह इत्यादि कृत्यों को करना अशुभ माना जाता है।[१२] पंचकों में हानि, लाभ और रोग पांच गुना होता है। पंचकों का फल अग्निदाह, भय, रोग, प्रजापीड़ा तथा धननाश है।

मूलसंज्ञक नक्षत्र :- रेवती–अश्विनी, आश्लेषा–मघा तथा जेष्ठा–मूला ये गण्डमूल संज्ञक नक्षत्र कहलाते हैं। इन नक्षत्रों के विशेष चरण में उत्पन्न बालक/बालिका को स्वयं अपनी आयु के लिये अथवा कुल में माता–पिता आदि की आयु, सेहत एवं

---

[११] दद्यात्तद्दोषनाशाय गोत्रयं मूल्यमेव वा।
द्विपुष्करे द्वयं दद्यान्न दोषस्त्ववृक्षभोऽपि वा।।नारद पुराण,पूर्वभाग २/५६/१६६ परार्ध, २०० पूर्वार्ध

[१२] क्षिप्राहिमूलेन्दुहरीशवायुभे प्रेतक्रिया स्याज्झषकुम्भगे विधौ।
प्रेतस्य दाहं यमदिग्गमं त्येजच्छय्यावितानं गृहगोपनादि च।। मुहूर्त चिन्तामणि, न.प्र., श्लोक ४८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सौभाग्यादि के लिये अरिष्ट होता है। यदि जातक पुण्य कर्मों के फलस्वरूप बच जाये तो वह भूमि, सवारी, बहुधन आदि सुखों से संयुक्त राज तुल्य सुख पाता है।[३८] यदि जातक का जन्म मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में हो तो पिता का नाश, द्वितीय चरण में हो तो माता का नाश, तृतीय चरण में जन्म हो तो धन की हानि होती है, चतुर्थ चरण में जन्म होना शुभप्रद है। शान्ति करा लेने से मूल का दोष नष्ट हो जाता है। आश्लेषा नक्षत्र मे जन्म होने पर मूल के विपरीत फल होता है। आश्लेषा का प्रथम चरण दोषकारी नहीं है, द्वितीय चरण में पितृ धन की हानि, तृतीय चरण में माता को कष्ट तथा चतुर्थ चरण जन्म होने से पिता को अरिष्टकर होता है।[३९] जेष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में जातक का जन्म होने से बड़े भाई को, द्वितीय चरण से छोटे भाई को, तृतीय चरण से माता–पिता को और चतुर्थ चरण में जन्म होने से स्वयं को अरिष्ट होता है। इस प्रकार मुहूर्त ग्रन्थों में मूल नक्षत्रों में जन्मे बालक का शुभाशुभ फल चरण भेदानुसार बतलाया है।[४०]

यदि जातक का जन्म मूल संज्ञक नक्षत्र में होता है तब २७ दिन के पश्चात जब वही नक्षत्र आ जाता है तब विधिपूर्वक शान्ति करवा लेनी चाहिये, जिससे मूल का दोष नष्ट हो जाये।

(स) वार का महत्व :- पञ्चांग में तिथि की तरह वार का भी महत्व होता है। भारतीय ज्योतिष में कुल सात वार हैं। इन सात वारों के सात देवता (स्वामी) होते हैं– शिव, दुर्गा, कार्तिकेय, विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र और काल ये सात क्रम से सूर्यादि सात वारों के देवता हैं।[४१]

प्राचीन शास्त्रकारों ने वारों को स्वभावानुसार दो प्रकार का बतलाया है– सोम, बुध, गुरू एवं शुक्र ये शुभ वार हैं तथा रवि, मंगल, शनि ये क्रूर वार हैं। शुभवारों में शुभकार्य एवं क्रूरवारों में क्रूरकार्य करना उत्तम होता है।[४२] सोम, बुध, गुरू एवं

---

३८ जातो न जीवति नरो मातुरपथ्यों भवेत् स्वकुलहन्ता।
यदि जीवति गण्डान्ते बहुगज तुरंगो भवेद् भूपः।। सारावली,

३९ मुहूर्त चिन्तामणि, नक्षत्र प्रकरण, श्लोक ५५

४० सुगम ज्योतिष

४१ सुगम ज्योतिष,संज्ञाध्याय,वारप्रकरण,श्लोक २, पृष्ठ ६७ एवं वृहदवकहड़ाचक्र,वारप्रकरण,श्लोक २

४२ सुगम ज्योतिष,संज्ञाध्याय,वारप्रकरण,श्लोक ३, पृष्ठ ६७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शुक्रवार सब कार्यों में सिद्धि देने वाले हैं। सूर्य, मंगल, शनिवार, खलकर्मों में सिद्ध दायक होते हैं।[४३]

मुहूर्तग्रन्थों में वारों की उपादेयता की दृष्टि से उनका स्थिरादि संख्याओं में नामकरण किया गया है। रविवार स्थिर संज्ञक, सोमवार चर, भौमवार उग्र, बुधवार सम, गुरूवार लघु, शुक्रवार मृदु और शनिवार तीक्ष्ण संज्ञक होता है।[४४] इन वारों में इनके स्वभावानुसार शास्त्रोक्त कर्म करना उत्तम होता है। रविवार को तेल लगाने से रोग, सोम को कान्ति, मंगल को व्याधि, बुध–गुरू को सौभाग्य, शुक्र को हानि तथा शनिवार को तेल लगाने से धन सम्पत्ति की हानि होती है।[४५]

वारवेला :- एक वार (दिन–रात) में कुल ८ प्रहर होते हैं। चार प्रहर दिन में और चार रात्रि में होते हैं। प्रायः ८ घड़ी (३ घण्टा लगभग) का एक प्रहर (पहर) होता है। एक प्रहर के आधे (४ घड़ी) को यामार्द्ध कहते हैं। दिनमान के घटने–बढ़ने से भी इसमें अन्तर आता है। दिन में कुल ८ यामार्द्ध होते हैं, जिसमें से एक वारवेला होती है। वारवेला के विषय में में मुहूर्त ग्रन्थों में लिखा है कि रविवार को चतुर्थ, सोमवार को सप्तम्, मंगल को द्वितीय, बुध को पंचम, बृहस्पतिको अष्टम, शुक्र को तृतीय और शनिवार को षष्ठी यामार्द्ध वारवेला होती है। वारवेला मे कोई शुभकार्य नहीं करना चाहिये। प्रत्येक वार में पूर्वोक्त वारवेला राहु की होती है।[४६]

कालहोरा :- दिन–रात (वार) में २४ घण्टा (६० घटी) होते हैं। एक वार में २४ होरा होती है। इस प्रकार एक घण्टा अथवा ढाई घटी की एक होरा होती है। जिस दिन जो वार हो उस दिन पहली होरा उसी के नाम की होती है। होराक्रम इस प्रकार से है– सूर्य, शुक्र, बुध, चन्द्र, शनि, गुरू और मंगल। प्रत्येकवार की पहली होरा उसी की होती है, इसके बाद अगली होरा वार से छठे–छठे वार की होती है, जैसे– रविवार को पहली होरा सूर्य की, दूसरी होरा रवि से छठे शुक्रवार की, तीसरी होरा शुक्रवार से छठे बुधवार की होती है।[४७]

---

[४३] नारद पुराण, पूर्वभाग २/५६/१६१ एवं सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्याय, वारप्रकरण, श्लोक ४, पृ. ६७

[४४] नारद पुराण, पूर्वभाग २/५६/१५६ परार्ध, १५७ पूर्वार्ध

[४५] नारद पुराण, पूर्वभाग २/५६/१५७ परार्ध, १५८

[४६] नारद पुराण, पूर्वभाग २/५६/१६५ एवं सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्याय, वारप्रकरण, पृष्ठ ७०

[४७] नारद पुराण, पूर्वभाग २/५६/१६६–१६७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कालहोरा जानने का सूत्र यह है कि सूर्योदय से गत नाड़ियों को दूना करो तथा उसमें ५ का भाग दो, शेषफल को छोड़ दो, भागफल में १ जोड़कर पुनः ७ का भाग दो जो लब्धि आवे वह काल कालहोरा होती है। यदि सौम्यवार की होरा आये तो सौम्यफल देने वाली होती है।[१३]

जिसवार में जो कर्म करने को कहा गया है वास्तव में वह कर्म उस वार की होरा में ही करना चाहिये। कालहोरा के प्रयोजन के विषय में मुहूर्त ग्रन्थों में लिखा है कि जिस वार में कोई कार्य करना शास्त्रोक्त हो और वर्तमान में वह वार नहीं हो जबकि कार्य करना अति आवश्यक है, तब वर्तमान निषिद्ध वार में भी निहित वार के कालहोरा में उस कार्य को कर लेना अशुभ नहीं होता है। जैसे किसी को रविवार को पश्चिम में यात्रा करनी है तो वह व्यक्ति रविवार को सोम की (दूसरी) होरा में यात्रा आरम्भ कर सकता है अर्थात रविवार को सूर्योदय के एक घण्टे बाद वह व्यक्ति अपनी यात्रा आरम्भ कर सकता है।[१४]

कालवेला :- वारवेला की तरह से कालवेला भी होती है। जो दिन और रात की अलग–अलग होती है। चूंकि दिन में ८ यामार्द्ध होते हैं। दिन में रविवार को पंचम, सोम को द्वितीय, मंगल को षष्ठ, बुध को तृतीय, बृहस्पति को सप्तम, शुक्र को चतुर्थ, शनिवार को प्रथम तथा अष्टम यामार्द्ध कालवेला होती है। रात्रि में भी ८ यामार्द्ध होते हैं। रात्रि में रविवार को षष्ठ, सोम को चतुर्थ, मंगल को द्वितीय, बुध को सप्तम, गुरू को पंचम, शुक्र को तृतीय एवं शनिवार को प्रथम एवं अष्टम यामार्द्ध कालरात्रि कहलाती है।[१५]

''कालवेला चक्रम्'' सारणी क्रमांक–३

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
दिवा	५	२	६	३	७	४	१/८
रात्रि	६	४	२	७	५	३	१/८

---

[१३] सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्याय, वारप्रकरण, पृष्ठ ७०

[१४] वारे प्रोक्तं कालहोरासु तस्य धिष्ण्ये प्रोक्तं स्वामितिथ्यंशकेऽस्य।
कुर्याद्दिक्शूलादि चिन्त्यं क्षणेषु नैवोल्लङ्ध्यः पारिघश्चापि दण्डः।। मुहूर्त चिन्ता., शु.प्र.,श्लोक ५६

[१५] सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्याय, वारप्रकरण, पृ. ७२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कालवेला में यात्रा करना मृत्यु दायक है तथा विवाह करने से कन्या विधवा होती है। व्रतबन्ध करना ब्रह्महत्या तुल्य होता है। इसलिये कालवेला में समस्त शुभकार्य अति निन्दनीय हैं।[१६]

चौघड़िया (वेला) :- पञ्चांगों दिन का चौघड़िया एवं रात्रि का चौघड़िया दिया रहता है। ये चौघड़िया क्या है? इसे समझते हैं। मुहूर्त ग्रन्थों में वारवेला के समान प्रायः ४ घड़ी की एक वेला होती है। दिन–रात में कुल १६ वेलाऐं होती हैं। आम बोल चाल की भाषा में इसे चौघड़िया कहते हैं। मुहूर्तग्रन्थों में चौघड़िया के विषय में लिखा है कि सूर्यादि सात वारों की क्रमशः उद्वेग, अमृत, रोग, लाभ, शुभ, चल, काल ये सात वेलाऐं होती हैं। जिस दिन जो वार होता है उस दिन उसी वार की वेला से वेलाओं को गिना जाता है। जैसे– सोमवार को अमृत से, मंगलवार को रोग से इत्यादि। होराक्रम की तरह इन वेलाओं का क्रम होता है जो इस प्रकार है– उद्वेग, चर, लाभ, अमृत, काल, शुभ, रोग। अपने से छठे–छठे वार की वेला क्रमशः आती जाती है। सात वेलाओं की एक आवृति होने पर उसी क्रम से पुनरावृति होकर रात्रि में वेलाऐं होती हैं। [१७] जब यात्रा आदि का अच्छा मुहूर्त न निकले तो चौघड़िया से काम लिया जाता है। क्रूरवारों की चौघड़िया (वेला) में कोई भी शुभ कार्य नहीं करना चाहिये। विशेषतः यात्रा नहीं करनी चाहिये।

दिन का चौघड़िया						
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
उद्वेग	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात्रि का चौघड़िया						
रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

---

[१६] यात्रायां मरणं काले वैधव्यं पाणिपीडने।
व्रते ब्रह्मवधः प्रोक्तः सर्वकर्मसु तां त्यजेत्।। सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्याय, वारप्रकरण

[१७] उद्वेगामृतनाम्नी च रोगा लाभा शुभा चला।
कालः सूर्याच्च वेलाः स्युर्होरावद्वार्धयामिकाः।।
वाराच्छष्ठस्य। एताः स्वदेश सूर्योदयात्स्युः।
पूर्वावृतिसमाप्तौ पुनस्तथैव स्युः।। सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्याय, वारप्रकरण, पृष्ठ ७२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत्तर भारत के अनेक पञ्चांगों मे दिन–रात का चौघड़िया चक्र दिया रहता है, जैसे– निर्णयसागर पञ्चांग, श्री मातृभूमि पञ्चांग, श्री सरस्वती पञ्चांग इत्यादि।

(स) योग का महत्व :- पञ्चांग का वैदिककाल से विकास हुआ है। अतः पञ्चांग में योगों का समावेश तिथि–नक्षत्र के बाद में हुआ है। वेदांग ज्योतिषकाल में एक मात्र व्यतीपात योग का उल्लेख मिलता है। वर्तमान में भारतीय ज्योतिष में विष्कम्भादि २७ योगों को उनके देवताओं सहित व्यक्त किया है। विष्कम्भ योग का स्वामी यम, प्रीति का विष्णु, आयुष्मान का चन्द्र, सौभाग्य का ब्रह्मा, शोभन का बृहस्पति, अतिगण्ड का चन्द्र, सुकर्मा का इन्द्र, धृति का जल, शूल का सर्प, गण्ड का अग्नि, वृद्धि का सूर्य, ध्रुव का भूमि, व्याघात का वायु, हर्षण का भग, वज्र का वरूण, सिद्धि का गणेश, व्यतीपात का रूद्र, वरीयान का कुबेर, परिध का विश्वकर्मा, शिव का मित्र, सिद्ध का कार्तिकेय, साध्य का सावित्री, शुभ का लक्ष्मी, शुक्ल का पार्वती, ब्रह्म का अश्विनी कुमार, ऐन्द्र का पितर, वैधृति का दिति नाम स्वामी होता है।[५३] वैधृति और व्यतीपात योगों को महापात कहा गया है। इन दोनों को शुभकर्यो में सदा त्याग देना चाहिये।[५४]

इन योगों में जो निन्दित नाम वाले योग हैं उनका पहला चरण अनिष्टकारक होता है। मुहूर्तकारों के अनुसार विष्कम्भ, वज्र, व्यतीपात, परिध, वैधृति–इन ५ योगों की प्रथम ३ घड़ियाँ, व्याघात की प्रथम ६ घड़ियाँ, शूल की प्रथम ५ घड़ियाँ तथा गण्ड, अतिगण्ड योग की प्रथम ६–६ घड़ियाँ शुभकर्यो में विशेषता त्याज्य मानी जाती है। मत मतान्तर से वैद्यृति एवं व्यतीपात के चारों चरण, परिधियोग के प्रथम दो चरण अरिष्टकारी माने जाते हैं।[५५]

पञ्चांग में दूसरे प्रकार के आनन्दादि २८ योग होते हैं, जो स्वनामानुसार फल देने वाले होते हैं। आनन्दादि योग वार एवं नक्षत्र के संयोग विशेष से बनते हैं।[५६] इनका उल्लेख पूर्व में ''पञ्चांग परिचय एवं परिभाषा'' प्रकरण में कर चुके हैं। आनन्दादि २८ योगों में ध्वांक्ष (६), वज्र (६) और मुद्गर (१०) योगों की आदि की ५

---

[५३] नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/२११ परार्ध से २१३ पूर्वार्ध तक

[५४] नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/२१३ परार्ध

[५५] नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/२१४–२१५, सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्याय, योगप्रकरण, पृ. ८६ एवं वृहदवकहड़ाचक्र, योग, श्लोक ७, ८

[५६] मुहूर्त चिन्तामणि, शुभाशुभ प्रकरण, श्लोक २३–२५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घटी और पद्म (१४) तथा लुम्ब (१५) योगों की प्रारम्भ की ४–४ घटियाँ, गद (२३) योग की आदि की ७ घटी, धूम्र (३) योग की आदि की १ घटी, काण (१८) योग की आदि की २ घटी तथ चर योग की आदि की ३ घटियाँ शुभ कार्यों में वर्जित हैं। राक्षस (२५), मृत्यु (१७) और मुसल (२२), उत्पात (१६) और काल (२) योगों की समस्त घटियाँ शुभ कार्यों में वर्जित होती है।[५७]

(इ) करण का महत्व :- पञ्चांग के विकासक्रम में करण का समावेश तिथियों के साथ अथवा बाद में हुआ प्रतीत होता है। करण पञ्चांग का पाँचवा अंग है। इसका भी ज्योतिष में बहुत महत्व है। गणित के माध्यम से इसका भी समय निर्धारण किया जाता है। राष्ट्रीय पञ्चांग विभाग पोजिशनल ऐस्ट्रॉनामी सेंटर ने तो करणों को बहिष्कृत ही कर दिया है, किन्तु उत्तर भारत के सभी पञ्चांगों में करण एवं भद्रा को भारतीय स्टैण्डर्ड समय में दिया जाता है। आज भी होरा एवं संहिता में इसका पूर्ण उपयोग होता है। तिथियों की तरह करणों के भी स्वामी (देवता) होते हैं – बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज और विष्टि-इन ७ करणों के क्रमशः इन्द्र, ब्रह्म, मित्र, अर्यमा, पृथ्वी, लक्ष्मी और यम स्वामी होते हैं।[५८] इसी प्रकार कृष्णाचतुर्दशी के शेषार्द्ध से आरम्भ होकर शुक्ल प्रतिपदा के पूर्वार्द्ध पर्यन्त शकुनि, चतुष्पद, नाग एवं किस्तुध्न-ये चार करण होते हैं। इन्हें ध्रुव कहते हैं। इनके क्रमशः कलि, वृक्ष(रूद्र), फणी(सर्प) एवं मारूत(वायु) स्वामी हैं।[५९] करणों के स्वामीयों की आराधना करना शुभप्रद होता है। नारद पुराण में भी करणों के स्वामी इसी प्रकार बतलाये हैं।[६०] बव से वणिज पर्यन्त ६ करण शुभ संज्ञक तथा शेष अशुभ संज्ञक होते हैं। अंतिम पाँच करणों में पितृकर्म करना उत्तम होता है।[६१]

किस करण में क्या कार्य करना चाहिये इसके विषय में मुहूर्त ग्रन्थों में लिखा है कि बव करण में पुष्टि के निमित्त कर्म, बालव में मैत्रीकरण एवं स्त्रीकर्म आदि, तैतिल में सज्जन सेवा, राजसेवा, सौभाग्यवती स्त्री के प्रिय कर्म आदि, गर में हल

---

५७ ध्वाङ्क्षे वज्रे मुद्गरे चेषुनाङ्ग्यो वर्ज्या वेदाः पद्मलुम्बे गदेऽश्वाः।
धूम्रे काणे मौसले भूर्द्वयं द्वे रक्षोमृत्यूत्पातकालाश्च सर्वे।। मुहूर्त चिन्तामणि, शु. प्र., श्लोक २६

५८ सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्याय, करणप्रकरण, पृ.६२ एवं वृहदवकहडाचक्र, करणप्रकरण, श्लोक १, ८

५९ सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्याय, करणप्रकरण, पृ.६२ एवं वृहदवकहडाचक्र, करणप्रकरण, श्लोक २

६० नारद पुराण, पूर्वभाग २/५६/श्लोक २१६ परार्ध से २२० पूर्वार्ध

६१ बवादि वणिगन्तानि करणानि शुभानि षट्।। नारद पुराण, पूर्वभाग २/५६/२२० परार्ध

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चलाना, बीजारोपण आदि भूमि सम्बन्धी कर्म, वणिज में क्रय–विक्रय, व्यापार आदि कर्म, विष्टि(भद्रा) में अग्नि, युद्ध, विषादि, दुष्ट–चोर आदि का वध, उग्र कर्म करना उत्तम माना जाता है। शकुनि करण में मंत्र–साधना, औषध आदि कर्म, चतुष्पद में राज्य प्रशासनिक कर्म, पितरों का श्राद्ध आदि कर्म, नाग में विषादि रासायनिक कर्म एवं किस्तुध्न करण में नाचना, गाना आदि मांगलिक कर्म करना शुभ माना जाता है। समान्यतः शकुनि, चतुष्पद, नागादि अंतिम चार करणों में पितृ कर्म करने प्रशस्त माने जाते हैं।[६२]

करणों में ''विष्टि'' नामक करण का विशेष महत्व है जिसे भद्रा भी कहते हैं। एक पक्ष में लगभग ४ बार भद्रा की आवृति होती है। शुक्लपक्ष की अष्टमी एवं पौर्णमासी के पूर्वार्द्ध में तथा चतुर्थी एवं एकादशी के उत्तरार्द्ध में भद्रा होती है। कृष्णपक्ष में तृतीया एवं दशमी के उत्तरार्द्ध में तथा सप्तमी एवं चतुर्दशी के पूर्वार्द्ध में भद्रा होती है। इस प्रकार एक चन्द्रमास में ८ बार भद्रा की पुनरावृति होती है।[६३]

भद्रा में प्रायः शुभकार्य नहीं करते हैं जैसे – विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, यज्ञोपवीत, रक्षाबन्धन, नवीन व्यवसायादि। भद्रा के विषय में मुहूर्त ग्रन्थों में लिखा है कि भद्रा में किया हुआ कार्य सिद्ध नहीं होता है, परन्तु विष, शत्रुघात, तांत्रिक कर्म आदि में सिद्धि होती है। जो मुनष्य जीवित रहना चाहे तो भद्रा में कभी शुभ कर्म न करे।[६४] आचार्य वराह ने भी अपनी बृहत् संहिता में भद्रा के दोष पर लिखा है।[६५]

ज्योतिष ग्रन्थों में भद्रा को कालपुरूष के शरीर में इस प्रकार विभाजित किया है कि भद्रा की ५ घटी मुख में, १ घटी गले में, ११ घटी छाती में, ४ घटी नाभि में, ६ घटी कमर में और ३ घटी पुच्छ में होती हैं, जबकि भद्रा का भोगमान ३० घटी हो।[६६] महिर्ष नारद ने भी भद्रा का इसी प्रकार से विभाजन किया है। नारद के कथनानुसार

---

६२ सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्याय, करणप्रकरण, पृष्ठ ६२

६३ शुक्ले पूर्वार्द्धेऽष्टमी पञ्चदश्योर्भद्रैकादश्यां चतुर्थ्या परार्धे।
कृष्णेऽन्त्यार्ध स्यात्तृतीया दशम्योः पूर्वे भागे सप्तमी शम्भुतिथ्योः। मुहूर्त चिन्तामणि,शु.प्र.,श्लोक ४३

६४ सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्याय, करणप्रकरण, पृष्ठ ६४

६५ नहि विष्टिकृतं विदधाति शुभं परिधातविषादिषु सिद्धिकरम्।।
वृहत् संहिता, करण गुणाध्याय, श्लोक ५

६६ सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्याय, करणप्रकरण, पृष्ठ ६४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भद्रा के मुख की घटियों में कार्य आरम्भ करने से कार्य की हानि, गले की घटियों में पतन(च्युति) और पुच्छ की घटियों में कार्य करने से जय प्राप्त होती है।[६७]

यदि तिथि का भोगमान ६० घटी माना जाये तो शुक्लपक्ष में चतुर्थी के पाँचवे प्रहर के आदि की ५ घटी, अष्टमी तिथि के दूसरे प्रहर के आदि की ५ घटी, एकादशी के सातवें प्रहर के आदि को ५ घटी, पूर्णिमा के चौथे प्रहर के आदि की ५ घटी भद्रा का मुख होता है। कृष्ण पक्ष में तृतीय के आठवें प्रहर के आदि की ५ घटी, सप्तमी के तीसरे प्रहर के आदि की ५ घटी, दशमी के छठे प्रहर के आदि की ५ घटी और चतुर्दशी के प्रथम प्रहर के आदि की ५ घटी भद्रा का मुख होता है। उपर्युक्त तिथियों में क्रम से ८/१/६/३/७/२/५/४ प्रहरों के अंत की ३–३ घटी भद्रा का पुच्छ होता है जिसे शास्त्रकारों ने शुभफलदायक कहा है। तिथि के उत्तरार्ध की भद्रा दिन में तथा पूर्वार्द्ध की भद्रा रात्रि में हो तो वह शुभ फल देने वाली होती है।[६८]

उदाहरणार्थ :– सम्वत् २०५७ के श्री ब्रजभूमि पञ्चांग के अनुसार दिनांक ७ अप्रैल २००० ई. शुक्रवार को रात्रि ४:६ बजे से भद्रा प्रारम्भ होती है जो कि दिनांक ८ अप्रैल २००० ई. शनिवार को दोपहर २:५६ बजे तक रहती है। यह भद्रा चैत्र शुक्ल पक्ष चतुर्थी का उत्तरार्द्ध भाग है। यहाँ चतुर्थी का भोगमान ५३ घटी ५५ पल दिया है। तिथि के भोगमान के ८ वें भाग को प्रहर माना जाता है। चार प्रहर का एक करण होता है। चूँकि चतुर्थी के पाँचवे प्रहर के आदि की ५ घटी भद्रा का मुख होता है। अतः त्रैराशिक गणित से –

६० घटी की एक तिथि होने पर भद्रा का मुख = ५ घटी

५३ घटी ५५ पल की एकतिथि होने पर भद्रा का मुख

$$= \frac{५३/५५ \times ५}{६०} = \frac{३२३५ \times ५}{३६००} = ४/२६/३५ \text{ घट्यादि}$$

चतुर्थी तिथि का आधा २६ घटी ५७ पल ३० विपल समय व्यतीत होने पर भद्रा शुरू होती है तथा ४ घटी २६ पल ३५ विपल तक मुख में रहती है अर्थात २६

---

[६७] नारद पुराण, पूर्वभाग २/५६/२२२ पूर्वार्ध, २२३ परार्ध

[६८] मुहूर्त चिन्तामणि, शुभाशुभ प्रकरण, श्लोक ४४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

घटी ५७ पल ३० विपल से ३१ घटी २७ पल ५ विपल तक भद्रा मुख में रहती है और ५१ घटी १३ पल १५ विपल से ५३ घटी ५५ पल तक भद्रा का पुच्छा होता है। इस प्रकार प्रत्येक तिथि में भद्रा की मुखादि स्थिति को ज्ञात किया जा सकता है।

शास्त्रकारों ने भद्रा को लोकवास के अनुसार शुभाशुभ बतलाया है – मेष, वृष, मिथुन एवं वृश्चिक का चन्द्रमा होने पर भद्रा स्वर्गलोक में, कन्या, तुला, मकर का चन्द्रमा होने से भद्रा पाताल में तथा कक्र, सिंह, कुम्भ एवं मीन का चन्द्रमा होने पर भद्रा मृत्युलोक में निवास करती है। भद्रा का निवास जिस लोक में होता है, उस लोक के लिये भद्रा अशुभप्रद होती है। [६६]

भद्रा निवास चक्र			
लोकवास	स्वर्ग	पाताल	भू–लोक
चन्द्रराशि	१,२,३,८	६,७,९,१०	४,५,११,१२
भद्रामुखी	ऊर्ध्वमुखी	अधोमुखी	सम्मुख

जब स्वर्ग में भद्रा हो तो धन की प्राप्ति होती है। परन्तु जब मृत्युलोक में हो तो कार्य की सिद्धि नहीं होती है।[७०]

---

[६६] कुम्भेकक्रद्वये मर्त्ये स्वर्गेऽब्जेऽजात्त्रयेऽलिगे।
स्त्रीधनुर्जूकनक्रेऽधो भद्रा तत्रैव तत्फलम्।। मुहूर्त चिन्तामणि, शुभाशुभ प्रकरण, श्लोक ४५

[७०] स्वर्गे भद्रा धनं धान्यं पाताले च धनागमः।
मृत्युलोके यदा भद्रा कार्यसिद्धिस्तदा नहि।। सुगम ज्योतिष, करण प्रकरण, पृ. ६४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तृतीय अध्याय

उत्तरभारत में पञ्चांग निर्माण के स्थल

पञ्चांग का निर्माण वैदिक काल से होता आ रहा है। पहले कभी यह एकांग तिथि मात्र था, बाद में नक्षत्र एवं वार के सम्मिलित हो जाने पर यह द्विअंग एवं त्रिअंग बना। कालान्तर में योग एवं करण के समाविष्ट होने पर यह पञ्चांग कहा जाने लगा। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि उत्तरभारत में पञ्चांग का निर्माण प्राचीनकाल से होता आ रहा है। दृक्सिद्ध शुद्ध पञ्चांग के निर्माणार्थ सवाई राजा जयसिंह ने उत्तर भारत में–उज्जैन, काशी, दिल्ली, जयपुर एवं मथुरा में भव्य वेधशालाओं का निर्माण करवाया है। भिन्न–भिन्न स्थल पर स्थित वेधशालाओं से प्राप्त ग्रह, नक्षत्रों की राशिचक्र में अंशात्मक स्थिति ज्ञात कर शुद्ध गणित से पाँच अंगों–तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण का आनयन किया जाता था।

यद्यपि पञ्चांग का निर्माण किसी भी स्थल पर किया जा सकता है क्योंकि पञ्चांग का निर्माण सिद्धान्त ग्रन्थों में व्यक्त गणित द्वारा होता है। गणित की सहायता से सापेक्षतः पृथ्वी के किसी भी स्थल के दिक्, देश एवं काल का आनयन किया जा सकता है। सिद्धान्तग्रन्थों के आधार पर निर्मित होने वाले पञ्चांगों का गणित केवल एक स्थान विशेष के लिये ही नहीं है, अपितु सिद्धान्तग्रन्थों में व्यक्त गणित के द्वारा हम भारत के किसी समय की सूर्य, चन्द्र इत्यादि ग्रहों की गति–स्थिति, उदयास्त, ग्रहण इत्यादि ज्योतिष सम्बन्धी तथ्यों को ज्ञात कर सकते हैं। अतः स्पष्ट है कि पञ्चांग का निर्माण किसी भी स्थल पर किया जा सकता है। उत्तरभारत के पञ्चांगों में पञ्चांग परिवर्तन की गणितीय विधि को समझाया जाता है। जिसके द्वारा एक स्थल पर निर्मित पञ्चांग को अन्य स्थल के पञ्चांग में परिवर्तित कर सकते हैं।

पञ्चांग के सार्वभौमिक महत्व को ध्यान में रखते हुये यह प्रयास किया जाता है कि पञ्चांग का निर्माण ऐसे स्थल (अक्षांश–रेखांश) पर किया जाये जहाँ के जनसमुदाय की संख्या अधिक हो, जिससे वह पञ्चांग अधिकतम लोगों के लिये कल्याणकारी सिद्ध हो। यही कारण है कि उत्तरभारत में दिल्ली एवं काशी से अनेक पञ्चांग निकलते हैं। यद्यपि भारत के किसी भी स्थल पर बने पञ्चांग को देशान्तर, चरान्तर इत्यादि संस्कारों द्वारा स्थानीय पञ्चांग में परिवर्तित कर सकते हैं, किन्तु स्थानीय पञ्चांग का उपयोग करना अधिक उचित होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तृतीय अध्याय

उत्तरभारत में पञ्चांग निर्माण के स्थल

पञ्चांग का निर्माण वैदिक काल से होता आ रहा है। पहले कभी यह एकांग तिथि मात्र था, बाद में नक्षत्र एवं वार के सम्मिलित हो जाने पर यह द्विअंग एवं त्रिअंग बना। कालान्तर में योग एवं करण के समाविष्ट होने पर यह पञ्चांग कहा जाने लगा। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि उत्तरभारत में पञ्चांग का निर्माण प्राचीनकाल से होता आ रहा है। दृक्सिद्ध शुद्ध पञ्चांग के निर्माणार्थ सवाई राजा जयसिंह ने उत्तर भारत में–उज्जैन, काशी, दिल्ली, जयपुर एवं मथुरा में भव्य वेधशालाओं का निर्माण करवाया है। भिन्न–भिन्न स्थल पर स्थित वेधशालाओं से प्राप्त ग्रह, नक्षत्रों की राशिचक्र में अंशात्मक स्थिति ज्ञात कर शुद्ध गणित से पाँच अंगों–तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण का आनयन किया जाता था।

यद्यपि पञ्चांग का निर्माण किसी भी स्थल पर किया जा सकता है क्योंकि पञ्चांग का निर्माण सिद्धान्त ग्रन्थों में व्यक्त गणित द्वारा होता है। गणित की सहायता से सापेक्षतः पृथ्वी के किसी भी स्थल के दिक्, देश एवं काल का आनयन किया जा सकता है। सिद्धान्तग्रन्थों के आधार पर निर्मित होने वाले पञ्चांगों का गणित केवल एक स्थान विशेष के लिये ही नहीं है, अपितु सिद्धान्तग्रन्थों में व्यक्त गणित के द्वारा हम भारत के किसी समय की सूर्य, चन्द्र इत्यादि ग्रहों की गति–स्थिति, उदयास्त, ग्रहण इत्यादि ज्योतिष सम्बन्धी तथ्यों को ज्ञात कर सकते हैं। अतः स्पष्ट है कि पञ्चांग का निर्माण किसी भी स्थल पर किया जा सकता है। उत्तरभारत के पञ्चांगों में पञ्चांग परिवर्तन की गणितीय विधि को समझाया जाता है। जिसके द्वारा एक स्थल पर निर्मित पञ्चांग को अन्य स्थल के पञ्चांग में परिवर्तित कर सकते हैं।

पञ्चांग के सार्वभौमिक महत्व को ध्यान में रखते हुये यह प्रयास किया जाता है कि पञ्चांग का निर्माण ऐसे स्थल (अक्षांश–रेखांश) पर किया जाये जहाँ के जनसमुदाय की संख्या अधिक हो, जिससे वह पञ्चांग अधिकतम लोगों के लिये कल्याणकारी सिद्ध हो। यही कारण है कि उत्तरभारत में दिल्ली एवं काशी से अनेक पञ्चांग निकलते हैं। यद्यपि भारत के किसी भी स्थल पर बने पञ्चांग को देशान्तर, चरान्तर इत्यादि संस्कारों द्वारा स्थानीय पञ्चांग में परिवर्तित कर सकते हैं, किन्तु स्थानीय पञ्चांग का उपयोग करना अधिक उचित होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पञ्चांग के निर्माण में स्थल का विशेष महत्व है। निर्माण स्थल के अक्षांश–रेखांश अथवा पलभा के आधार ही गणित द्वारा तिथि, वार (वार प्रवृति), नक्षत्र, योग एवं करण के घटी–पलात्मक मानों को पञ्चांग के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। भिन्न–भिन्न स्थलों पर निर्मित पञ्चांगों में तिथ्यादि के घटी–पलात्मक मान भिन्न–भिन्न होते हैं, जो स्थानीय सूर्योदय के आधार पर ज्ञात किये जाते हैं।

आज से कुछ वर्ष पूर्व ज्योतिर्विद स्वयं के द्वारा निर्मित स्थानीय पञ्चांग प्रयोग करते थे। कालान्तर में उत्तरभारत में पञ्चांग का निर्माण अधिकांशतः हर प्रान्त एवं मण्डल में होने लगा। वर्तमान में उत्तरभारत में पञ्चांग निर्माण के प्रमुख स्थल निम्नलिखित हैं–

(१)	काशी (उ.प्र.)	(२)	दिल्ली	(३)	उज्जैन (म.प्र.)
(४)	कलकत्ता (प.बं.)	(५)	जोधपुर (राजस्थान)	(६)	चंडीगढ़(हरियाणा)
(७)	जालंधर (पंजाब)	(८)	दरभंगा (बिहार)	(९)	नवलगढ़(राजस्थान)
(१०)	मथुरा (उ.प्र.)	(११)	जबलपुर (म.प्र.)	(१२)	रामगढ़ (राजस्थान)
(१३)	अयोध्या (उ.प्र.)	(१४)	दतिया (म.प्र.)	(१५)	गढ़वाल (उत्तरांचल)

१. **काशी (वाराणसी)** :- उत्तरभारत में काशी धार्मिक दृष्टि से ही नहीं वरन् ज्योतिषीय अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल है। काशी को शिव का वास स्थान कहा जाता है। महर्षि नारद ने काशी के महात्म्य का वर्णन करते हुये कहा है कि सब देवों का एक मात्र वास स्थान वाराणसी पुरी सम्पूर्ण तीर्थों में उत्तम तीर्थ है। जो इस अविमुक्त परम तीर्थ वाराणसी (काशी) क्षेत्र का स्मरण करते हैं वे सब पापों से मुक्त होकर शिवलोक को चले जाते हैं।[१]

आगे महर्षि नारद ने लिखा है कि वाराणसी के गुणवर्णन के विषय में अधिक क्या कहा जाये, केवल काशी नाम स्मरण से भी चतुर्वर्ग (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) की प्राप्ति दूर नहीं रहती है।[२]

---

[१] तीर्थानामुत्तमं तीर्थं क्षेत्राणां क्षेत्रमुत्तमम्। वाराणसीति विख्यातं सर्वदेवनिषेवितम्।।
ते एव श्रवणे धन्ये संविदाते बहुश्रुतम्। इह श्रुतिमतां पुंसां काशी याम्यां श्रुताऽसकृत्।।
ये यं स्मरन्ति संस्थानमविमुक्तं द्विजोत्तमम्। निर्धूतसर्वपापास्ते शिवलोकं व्रजन्ति वै।।
नारद पुराण, भाग २, अध्याय ६, श्लोक ३४–३६

[२] बहुनात्र किमुक्तेन वाराणस्या गुणान्प्रति। नामापि गृहन्तां काश्याश्चतुर्वर्गो न दूरतः।।
नारद पुराण, पूर्वभाग २/६/४०, श्लोक ४०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतः स्पष्ट है कि काशी का धार्मिक दृष्टि से अत्यधिक महत्व है। भारत के मानचित्र पर काशी ग्रीनविच रेखा से पूर्वी रेखांश ८३° : ०′ तथा उत्तरी अक्षांश २५° : १६′ पर स्थित है। गंगा के किनारे स्थित होने के कारण काशी में जप, दान, व्रत एवं स्नान आदि धार्मिक कृत्यों का विशेष महत्व है। धार्मिक कृत्यों के सम्पादन की विधि एवं शुभाशुभ समयानुसार सम्पन्न करने का ज्ञान पञ्चांग के माध्यम से होता है। अतः पञ्चांग निर्माण की दृष्टि से भी काशी महत्वपूर्ण स्थल है। ज्योतिष का अध्ययन यहाँ प्राचीनकाल से होता आ रहा है। काशी से निकलने वाले पञ्चांगों में प्रमुख है। विश्व पञ्चांग, श्री हृषीकेष (काशी विश्वनाथ) पञ्चांग, बापूदेव शास्त्री प्रवर्तित दृक्सिद्ध पञ्चांग, ज्ञानमण्डल सौर पञ्चांग, श्री महावीर पञ्चांग एवं श्री गणेश आपा पञ्चांग इत्यादि। इन पञ्चांगों का निर्माण अलग–अलग सिद्धान्त अथवा करण ग्रन्थों के आधार पर निरयन पद्धति से होता है।

२. **दिल्ली** :- दिल्ली न केवल भारत की राजधानी है, बल्कि उत्तरभारत में पञ्चांग निर्माण का महत्वपूर्ण स्थल है। भारत के मानचित्र पर दिल्ली नगर ग्रीनविच रेखा से पूर्वी रेखांश ७७° : १२′, उत्तरी अक्षांश २८° : ३८′ पर स्थित है। दिल्ली की जनसंख्या एक करोड़ से भी अधिक है, फलतः यहाँ ज्योतिष की आवश्यकता की दृष्टि से पञ्चांगों की बिक्री भी अधिक होती है। दिल्ली का प्रभाव सम्पूर्ण भारत पर दिखाई देता है अतः यहाँ के घटनाक्रम का अध्ययन ज्योतिष की दृष्टि से भी किया जाता है।

दिल्ली से निकलने वाले पञ्चांगों मे प्रमुख हैं–विश्वविजय पञ्चांग, श्री आर्यभट्ट पञ्चांग, विद्यापीठ पञ्चांग एवं पं. जैनी जीयालाल शिखर चन्द्र जी चौधरी कृत असली पञ्चांग इत्यादि। इन सभी पञ्चांगों का निर्माण चित्रापक्षीय एवं निरयन पद्धति से यिका जाता है। विद्यापीठ पञ्चांग का निर्माण लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ (मानित वि.वि.) के तत्वाधान में होता है। इसके प्रधान सम्पादक कुलपति महोदय होते हैं। इस पञ्चांग का निर्माण विद्यापीठ (दिल्ली) के तत्वाधान में निर्मित वेधशाला की सहायता से होता है। यह एक दृक्सिद्ध शुद्ध पञ्चांग है। श्री आर्यभट्ट पञ्चांग के प्रधान सम्पादक पं. लक्ष्मीनारायण शर्मा तथा प्रकाशन धर्मसन प्रकाशन नई दिल्ली है। यह मुख्यतः आर्यसिद्धान्त पर आधारित है। विश्वविजय पञ्चांग के आद्य सम्पादक स्व. श्री हरदेव शर्मा (त्रिवेदी) एवं सम्पादक श्री सुधाकर शर्मा त्रिवेदी हैं। वर्तमान में विश्वविजय पञ्चांग के मुद्रक एवं वितरक रूचिका पब्लिकेशन हैं। इन सभी पञ्चांगों का निर्माण दिल्ली के अक्षांश–रेखांश अथवा पलभा के आधार पर नवीन दृक् गणित

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्वारा हो रहा है। अतः स्पष्ट है कि उत्तरभारत में पञ्चांग निर्माण की दृष्टि से दिल्ली महत्वपूर्ण स्थल है।

३. **उज्जैन** :- उज्जयिनी या अवंतिका गुप्तकाल में खगोल–ज्योतिष का प्रमुख केन्द्र एवं विख्यात खगोलज्ञ वराहमिहिर की कर्मभूमि रही थी। ज्योतिषीय अध्ययन की दृष्टि से उज्जैन का विशेष महत्व है। भारत के मानचित्र पर उज्जैन ग्रीनविच रेखा से पूर्वी रेखांश ७५° ४३′ उत्तरी अक्षांश २३° १′ पर स्थित है प्राचीन आचार्यों उज्जैन को याम्योत्तर (दक्षिणोत्तर) रेखा पर दर्शाया है। सूर्यसिद्धान्त के अनुसार लंका और सुमेरू पर्वत के बीच पृथ्वी पर खींची गई रेखा पर स्थित नगर रेखापुर कहलाते हैं। रोहीतक, अवन्ती (उज्जयिनी) एवं कुरूक्षेत्र इत्यादि ऐसे ही नगर हैं।[३]

याम्योत्तर रेखा पर स्थित होने के कारण सिद्धान्तग्रन्थों में उदाहरण स्वरूप उज्जयिनी के सूर्योदय कालीन मध्यम ग्रहों को दर्शाया है। सिद्धान्त शिरोमणि के अनुसार जो रेखा लंका, उज्जयिनी, कुरूक्षेत्र आदि देशों को स्पर्श करती हुई सुमेरू पर्वत तक गई है, उसे विद्वानों ने भू–मध्य रेखा कहा है।[४] भारतीय ज्योतिष में रेखोदश (० देशान्तर) अर्थात लंका के आधार पर सभी ग्रह गणना की गई है तथा देशान्तर आदि स्थानीय संस्कार उज्जयिनी से किये गये हैं। भारतीय ज्योतिर्सिद्धान्त में उज्जैन की स्थिति ठीक कर्क रेखा पर होने से तथा भारतीय ज्योतिष पूर्णतः उज्जैन मध्यरेखा पर आधारित होने से सवाई राजा जयसिंह ने यहाँ एक वेधशाला का निर्माण कराया। आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व जब सूर्य की परमक्रान्ति २४° तथा उज्जैन के अक्षांश तुल्य थे[५] तब सूर्य उज्जैन के ख–मध्य में आकर ही अपना परमोत्तर गमन पूर्ण करके दक्षिणाभिमुख यात्रा करता था। वार–प्रवृति का ज्ञान भी रेखादेश–उज्जैनी से किया जाता है। अतः स्पष्ट है कि उत्तर भारत में पञ्चांग निर्माण की दृष्टि से उज्जैन एक महत्वपूर्ण स्थल है।

महाकालेश्वर की नगरी से विख्यात उज्जैन से निकलने वाले पञ्चांगों में प्रमुख है–दृश्यग्रहस्थिति पञ्चांग एवं विक्रम विजय पञ्चांग। एस्ट्रोनोमीकल एफेमरीज का निर्माण जीवाजी शासकीय वेधशाला, उज्जैन से प्राप्त खगोलीय दृश्य ग्रहस्थिति

---

[३] राक्षसालयदेवौकः शैलयोर्मध्यसूत्रगाः। रोहतकीभवन्ती चं यथा सन्निहितंसरः।। (मध्यमाधि) चित्र केतकी–विवरणम् पृ. ३६

[४] मुहूर्त चिन्तामणि, शुभाशुभ प्रकरण, श्लोक ५४, करणकुहूतहल–प्रथमाध्याय, श्लोक १४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के आधार पर होता है। इस एफेमरीज में भारतीय समयानुसार दोपहर १२:०० बजे के सायन ग्रहस्पष्ट दर्शाये हैं। एस्ट्रोनोमीकल एफेमरीज द्वारा व्यक्त स्पष्टग्रहों के भोग्यांशों में चालन एवं अयनांश हीन करने पर लहरी एफेमरीज, कलकत्ता द्वारा व्यक्त स्पष्टग्रहों के भोग्यांशों के तुल्य प्राप्त होते हैं। विक्रम विजय पञ्चांग के प्रधान सम्पादक डा. मदन व्यास एवं प्रकाशन सन्दीपन व्यास प्रकाशन उज्जैन है। यह एक शास्त्रसम्मत् पञ्चांग है। उज्जैन के अक्षांशादि पर ही श्री मातृभूमि पञ्चांग का निर्माण केतकी चित्रापक्षीय दृश्य गणितानुसार होता है। इस पञ्चांग के कर्ता डा. विष्णु कुमार शर्मा हैं।

४. **कलकत्ता** :- कलकत्ता भारत के पूर्वोत्तर भाग में विद्यमान है। यह भारत की सर्वाधिक जनसंख्या वाले नगरों में से एक है। अतः यहाँ से निर्मित पञ्चांग अधिकतम लोगों के लिये सरल एवं उपयोगी सिद्ध होता है। कलकत्ता भारत के मानचित्रों पर ग्रीन विच रेखा से पूर्वी रेखांश ८८° २३′ तथा उत्तरी अक्षांश २३ ३५′ पर स्थित है। यहाँ स्थित पोजीशनल एस्ट्रोनॉमी सेन्टर से दि इण्डियन एस्ट्रोनॉमीकल एफेमरीज निकलती है। जिसका प्रकाशन सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार का प्रकाशन विभाग करता है। इसके अतिरिक्त लहरी इण्डियन एफेमरीज का निर्माण भी कलकत्ता के अक्षांश–रेखांश पर होता है। लहरी इण्डियन एफेमेरीज में भा.मा.स. में प्रातः ५:३० बजे के निरयन स्पष्ट ग्रहों को दर्शाया जाता है। इस एफेमेरीज की शुरूवात खगोलज्ञ श्री निर्मल चन्द लहरी ने सन् १९४८ से की। श्री निर्मल चन्द्र लहरी के अनुसार शक २०७ (२८५ ई.) में अयनांश शून्य मानकर निरयन ग्रह गणना निर्देशित है। कलकत्ता से निकलने वाले पञ्चांगों में यह दोनों एफेमेरीज प्रमुख हैं। तदनुसार पञ्चांग निर्माण की दृष्टि से कलकत्ता एक महत्वपूर्ण स्थल है।

५. **जोधपुर** :- भारत में जोधपुर राजस्थान प्रान्त का प्रमुख शहर है जो कि ग्रीनविच रेखा से पूर्वी रेखांश ७३° २′ तथा उत्तरी अक्षांश २६° १८′ पर स्थित है। निर्णयसागर चण्डमार्त्तण्ड पञ्चांग तथा श्री गजेन्द्र विजय पञ्चांग का निर्माण जोधपुर के अक्षांश–रेखांश के आधार पर होता है। स्वल्पान्तर से निर्णय सागर पञ्चांग में जोधपुर का रेखांश ७३° ४′ प्रयुक्त किया है। दोनों पञ्चांगों में चित्रापक्षीय अयनांश ग्रहण किया गया है। पं. श्री भवानी शंकर का निर्णयसागर पञ्चांग सम्पूर्ण उत्तरभारत

---

[५] सूर्यसिद्धान्त–स्पष्टाधिकार–श्लोक २८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में प्रसिद्ध है। श्री गजेन्द्र विजय पञ्चांग एवं श्री विश्वविजय पञ्चांग नई दिल्ली दोनों का ग्रहगणित एवं निर्माण पद्धति एक समान है। श्री गजेन्द्र विजय एवं श्री विश्वविजय पञ्चांगों के आद्य सम्पादक श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी है।

६. **चंडीगढ़** :- हरियाणा प्रान्त में स्थित चंडीगढ़ भारत के मानचित्र पर ग्रीनविच रेखा से पूर्वी रेखांश ७६° ५२′ तथा उत्तरी अक्षांश ३०° ४४′ पर स्थित है जिनके आधार पर श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग का निर्माण होता है। निरयन पद्धति के इस पञ्चांग में चित्रापक्षीय अयनांश ग्रहण किया गया है। इस पञ्चांग के आद्य सम्पादक पं. श्री मुकुन्दवल्लभ मिश्र है।

७. **जालंधर** :- पंजाब प्रान्त में स्थित जालंधर स्थित शहर भारत के मानचित्र पर ग्रीनविच रेखा से पूर्वी रेखांश ७५° १८′ तथा उत्तरी अक्षांश ३१° २१′ पर स्थित है जिनके आधार पर पञ्चांग दिवाकर का निर्माण होता है। इस पञ्चांग में भी चित्रापक्षीय नियन पद्धति को अपनाया है। इस पञ्चांग के संस्थापक पं. देवी दयालु ज्योतिषी लाहौर वाले हैं।

८. **दरभंगा** :- बिहार प्रान्त मे स्थित दरभंगा शहर भारत के मानचित्र पर ग्रीनविच रेखा से पूर्वी रेखाशं ८५° ५४′ तथा उत्तरी अक्षांश २६° १०′ पर स्थित हैं। कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा के तत्वाधान में विश्वविद्यालय पञ्चांग का प्रकाशन होता है। यह पञ्चांग पूर्णतः शास्त्र सम्मत है।

९. **नवलगढ़** :- नवलगढ़ राजस्थान प्रान्त का एक शहर हैं जो कि भारत के मानचित्र पर ग्रीनविच रेखा से पूर्वी रेखांश ७५° १८′ तथा उत्तरी अक्षांश २७° ५१′ पर स्थित है। इन्हीं अक्षांशादि के आधार पर जयपुर ज्योतिष यन्त्रालय द्वारा बारम्बार प्रत्यक्षानुभाव करके सूक्ष्म दृश्य गणित से वेंकटेश्वर शताब्दी पञ्चांग तथा पंचवर्षीय श्री सरस्वती पञ्चांग का निर्माण होता है। दोनों पञ्चांगों के सम्पादक पं. ईश्वर दत्त जी शर्मा हैं।

१०. **मथुरा** :- मथुरा उत्तरप्रदेश प्रान्त का एक शहर है जो कि भारत के मानचित्र पर ग्रीनविच से पूर्वी रेखांश ७७° ४१′ तथा उत्तरी अक्षांश २७° २८′ पर स्थित है। भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि मथुरा के अक्षांशादि के आधार पर श्री ब्रजभूमि पञ्चांग का निर्माण होता है। इस पञ्चांग में केतकी चित्रापक्षीय अयनांश प्रयुक्त होता है। इस

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पञ्चांग के सम्पादक पं. श्री कौशल किशोर कौशिक हैं। सन् १९९४ ई. से यह पञ्चांग प्रकाशित हो रहा है।

११. **जबलपुर** :- जबलपुर भारत के मानचित्र पर ग्रीनविच रेखा से पूर्वी रेखांश ७९° ५७′ तथा उत्तरी अक्षांश २३° १०′ पर स्थित है। यहाँ से निकलने वाले पञ्चांगों में प्रमुख हैं–भुवन विजय पञ्चांग एवं लोक विजय पञ्चांग।

१२. **रामगढ़ (शेखावटी)** :- रामगढ़ (शेखावटी) भारत के मानचित्र पर ग्रीनविच से पूर्वी रेखांश ७४° ५९′ तथा उत्तरी अक्षांश २८° ०′ पर स्थित है। रामगढ़ (शेखावटी) के अक्षांशादि के आधार पर वेधसिद्ध सूक्ष्मदृश्य गणित से पं. श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग का निर्माण होता है। इस पञ्चांग के गणित कर्ता पं. श्री ग्यारसीलाल शास्त्री हैं। श्री वेंकटेश्वर शताब्दी पञ्चांग, श्री सरस्वती पञ्चांग एवं श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग के ग्रह गणित का सिद्धान्त एक ही प्रतीत होता है।

१३. **अयोध्या** :- अयोध्या भगवान श्री राम की जन्मस्थली के रूप में एक धार्मिक स्थल है। यह ग्रीनविच रेखा से पूर्वी रेखांश ८२° १२′ तथा उत्तरी अक्षांश २६° ४७′ पर स्थित हैं, जिनके आधार पर श्रीराम जन्मभूमि पञ्चांग का निर्माण होता है इस पञ्चांग के सम्पादक पं. विन्ध्येश्वरी प्रसाद शुक्ल हैं।

उपर्युक्त स्थलों के अतिरिक्त उत्तरभारत में ग्वालियर से डा. श्री कृष्ण भालचन्द्र शास्त्री मुसलगांवकर द्वारा रचित पञ्चांग; दतिया (म.प्र.) से तांत्रिक पञ्चांग; अहमदाबाद से संदेश प्रत्यक्ष पञ्चांग; रूद्रपुर (नैनीताल) से पं. श्री भोलदत्त महतोलिया कृत श्री देवभूमि पञ्चांग; करौली (राजस्थान) से राजज्योतिषी पं. श्री शिवनारायण शर्मा ''महेश'' द्वारा सम्पादित शिवविनोदी मदनमोहन पञ्चांग इत्यादि निर्मित होते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चतुर्थ अध्याय

पञ्चांग में गणित का स्थान एवं महत्व

भारतीय ज्योतिष के रहस्य को समझने के लिये गणित का ज्ञान अनिवार्य है। गणित की आधारभूत पद्धतियाँ जैसे – जोड़ना, घटाना, गुणा करना, भागदेना, वर्ग एवं वर्गमूल निकालना आदि के द्वारा ही पञ्चांग में निहित तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण का आवगमन किया जाता है। वेदांग ज्योतिष में गणित को प्रमुख स्थान दिया है। उसके अनुसार जिस तरह से मोरों की शिखाऐं तथा नागों की मणियाँ उच्चस्थ होती है उसी प्रकार वेदांगशास्त्रों में गणित का उन्नत स्थान है।[1]

ज्योतिष शास्त्र गणित का ऋणी है। ज्योतिष से यदि गणित को अलग कर दिया जाये तब ज्योतिष का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता हैं। ग्रहों की गति का निर्धारण, ग्रहों का स्पष्टीकरण, नक्षत्रों का क्रान्तिवृत्त में वितरण एवं सूर्यादि ग्रहण का ज्ञान गणित पर ही आधारित है। ज्योतिषी जिस जन्मपत्रिका के आधार पर जातक के जीवन के शुभाशुभ घटनाक्रम का वर्णन करता है, उसका निर्माण भी गणित के द्वारा होता है। अतः ज्योतिषयों ने गणित को सिद्धान्त शब्द से व्यवहृत किया है। "सिद्धान्त" शब्द का शाब्दिक अर्थ है – 'सिद्ध है अंतिम भाग जिसका' । गणित के लिये सिद्धान्त शब्द का प्रयोग सर्वथा उपयुक्त है क्योंकि गणित की प्रक्रिया का अन्तभाग हमेशा सत्य सिद्ध होता है। जैसे ५ + ५ = १० सत्य है।

महर्षि नारद ने ज्योतिष शास्त्र के तीन स्कन्ध – गणित, जातक और संहिता बतलाये है। उन्होंने गणित में परिकर्म (योग, अन्तर, गुणन, भाग वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल, इत्यादि) ग्रहों की चाल एवं स्पष्ट करने की प्रक्रिया, अनुयोग (दिक्, देश, काल का ज्ञान), सूर्य–चन्द्र ग्रहण, उदय, अस्त, छायाधिकार चन्द्रश्रृंगोन्नति, ग्रहयुति एवं पात (सूर्य चन्द्रमा के क्रान्तिसाम्य) का साधन–प्रकार कहा है।[2] प्राचीन काल में ज्योतिष के सामान्यतः दो भेदों का वर्णन मिलता है – एक गणित ज्योतिष और दूसरा फलित ज्योतिष। गणित और फलित में वही सम्बन्ध है जो भाषा एवं व्याकरण

---

[1] यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वद् वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि स्थितम्।। वेदांग ज्योतिष, श्लोक ४

[2] त्रिस्कंधं ज्योतिषं शास्त्रं चतुर्लक्षमुदाहृतम्।
गणितं जातकं विप्र संहितास्कन्धसंज्ञिताः। नारदपुराण, पूर्वभाग २/५४ श्लोक २–४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चतुर्थ अध्याय

पञ्चांग में गणित का स्थान एवं महत्व

भारतीय ज्योतिष के रहस्य को समझने के लिये गणित का ज्ञान अनिवार्य है। गणित की आधारभूत पद्धतियाँ जैसे – जोड़ना, घटाना, गुणा करना, भागदेना, वर्ग एवं वर्गमूल निकालना आदि के द्वारा ही पञ्चांग में निहित तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण का आवगमन किया जाता है। वेदांग ज्योतिष में गणित को प्रमुख स्थान दिया है। उसके अनुसार जिस तरह से मोरों की शिखाऐं तथा नागों की मणियाँ उच्चस्थ होती है उसी प्रकार वेदांगशास्त्रों में गणित का उन्नत स्थान है।[१]

ज्योतिष शास्त्र गणित का ऋणी है। ज्योतिष से यदि गणित को अलग कर दिया जाये तब ज्योतिष का अस्तित्व ही समाप्त हो जाता हैं। ग्रहों की गति का निर्धारण, ग्रहों का स्पष्टीकरण, नक्षत्रों का क्रान्तिवृत्त में वितरण एवं सूर्यादि ग्रहण का ज्ञान गणित पर ही आधारित है। ज्योतिषी जिस जन्मपत्रिका के आधार पर जातक के जीवन के शुभाशुभ घटनाक्रम का वर्णन करता है, उसका निर्माण भी गणित के द्वारा होता है। अतः ज्योतिषयों ने गणित को सिद्धान्त शब्द से व्यवहृत किया है। ''सिद्धान्त'' शब्द का शाब्दिक अर्थ है – 'सिद्ध है अंतिम भाग जिसका' । गणित के लिये सिद्धान्त शब्द का प्रयोग सर्वथा उपयुक्त है क्योंकि गणित की प्रक्रिया का अन्तभाग हमेशा सत्य सिद्ध होता है। जैसे ५ + ५ = १० सत्य है।

महर्षि नारद ने ज्योतिष शास्त्र के तीन स्कन्ध – गणित, जातक और संहिता बतलाये है। उन्होने गणित में परिकर्म (योग, अन्तर, गुणन, भाग वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल, इत्यादि) ग्रहों की चाल एवं स्पष्ट करने की प्रक्रिया, अनुयोग (दिक्, देश, काल का ज्ञान), सूर्य–चन्द्र ग्रहण, उदय, अस्त, छायाधिकार चन्द्रश्रृंगोन्नति, ग्रहयुति एवं पात (सूर्य चन्द्रमा के क्रान्तिसाम्य) का साधन–प्रकार कहा है।[२] प्राचीन काल में ज्योतिष के सामान्यतः दो भेदों का वर्णन मिलता है – एक गणित ज्योतिष और दूसरा फलित ज्योतिष। गणित और फलित में वही सम्बन्ध है जो भाषा एवं व्याकरण

---

[१] यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा।
तद्वद् वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि स्थितम्।। वेदांग ज्योतिष, श्लोक ४

[२] त्रिस्कंधं ज्योतिषं शास्त्रं चतुर्लक्षमुदाहृतम्।
गणितं जातकं विप्र संहितास्कन्धसंज्ञिताः। नारदपुराण, पूर्वभाग २/५४ श्लोक २–४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में है। गणित के बिना फलित ज्योतिष किसी भी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सकता है। वह सर्वथा परतंत्र एवं गणित ज्योतिष के अधीन है। शास्त्रानुसार बनने वाले पञ्चांग का निर्माण गणित ज्योतिष के सिद्धान्त, तन्त्र अथवा करण ग्रन्थों के अनुसार होता है। इन तीनों प्रकार के ग्रन्थों का गणित भिन्न–भिन्न है। सिद्धान्त ग्रन्थों में कल्प से, तंत्र ग्रन्थों में युग (कलियुग) से तथा करण ग्रन्थों में अपने अभीष्ट शक से गणित करने की विधि का निर्देश है। जिन पञ्चांगों का निर्माण वेधशाला के आधार पर होता है उनका गणित दृक् गणित कहलाता है। इनमें वेधयन्त्रों द्वारा प्राप्त होने वाले परिणामों के आधार पर दृक् गणित करके ग्रह, पिण्डों की स्थिति का आनयन किया जाता है।

ज्योतिषशास्त्र को काल विधान शास्त्र भी कहा गया है। काल (समय) के बिना तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण की स्थिति तथा उसके अनुसार व्रत, निर्देश, जातक, एवं होरा विषयक मूहूर्तादि का विचार असम्भव है। समासतः काल ज्ञान का आधार पञ्चांग ही है। काल का ज्ञान बिना गणित के सम्भव नहीं है। त्रुटि[३] से लेकर प्रलय पर्यन्त तक के काल तथा सूर्यादि ग्रहों से सम्बन्धित कालमान की गणना गणित विद्या के द्वारा ही की जाती है। काल के यथार्थ ज्ञान का एकमात्र साधन पञ्चांग ही है। पञ्चांग भारतीय ज्योतिष की कुंजी है जो पूर्णतः गणित पर आधरित है। पञ्चांग के निर्माण में अंक गणित, रेखागणित, त्रिकोणमिति एवं ग्रहगोलगणित का यथायोग्य प्रयोग देखने को मिलता है। ज्योतिर्विज्ञान के प्रमुख सिद्धान्त ग्रन्थ – सूर्य सिद्धान्त, आर्य सिद्धान्त, ब्रह्मसिद्धान्त, मकरन्द सारणी, सिद्धान्त शिरोमणि, करण कुतूहल, करण प्रकाश, ग्रहलाघव, सर्वानन्दकरण एवं केतिकी ज्योतिर्गणित इत्यादि पूर्णतः गणित पर आधारित हैं। उत्तर भारत में अनेक पञ्चांग इन्हीं ग्रन्थों के आधार पर निर्मित होते हैं।

वेधशाला एवं वेधयन्त्रों का निर्माण गणित के द्वारा ही होता है। उत्तर भारत के अनेक पञ्चांगों का निर्माण प्रत्यक्ष वेधसिद्ध शुद्ध दृक्तुल्य सूक्ष्म गणित द्वारा हो रहा है। जैसे – खगोलीय पञ्चांग, लहरी एफेमरीज एवं जीवाजी वेधशाला उज्जैन द्वारा निर्मित एफेमरीज इत्यादि। यहाँ हम पञ्चांग में गणित का स्थान एवं महत्व के अन्तर्गत निम्नलिखित तथ्यों को प्रकट करते हैं –

---

[३] यह समय का अत्यंत सूक्ष्म भाग है। कमल पत्र पर सूई से छेद करने में जो समय लगता है, उसे त्रुटि कहते है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(अ) कालविभाग :- काल का आधार सूर्य है। यह काल सूर्य के अधीन चक्रवत परिवर्तित होता रहता है। मानव जीवन को नियमित एवं सुव्यवस्थित रूप निर्धारण करने के लिये हमारे ऋषियों ने व्यवहारिक कालमान का प्राणयन किया है। ब्रह्माण्डीय ग्रह नक्षत्रों की गति–स्थिति जानने के लिये ज्योतिष के आचार्यो ने काल के व्यवहारिक रूपों की खोज की। भारतीय ज्योतिषचार्यों ने कल्प, युग, वर्ष, मास, अहोरात्र, घटी, पल, विपल एवं मुहूर्त इत्यादि में अतिसूक्ष्म रूप में काल विभाजन किया था। घड़ी का आविष्कार होने से पूर्व धूपघड़ी या अन्य उपकरणों से समय मापन करते थे। समय मापन की अनेक इकाईयाँ थीं।

१. घटी-पल-विपलः- भारतीय मान्यतानुसार स्वस्थ पुरूष जितने समय में १० बार गुरू अक्षर का उच्चारण करता है, उतने समय को प्राण अथवा असु कहते हैं। सूर्यसिद्धान्तानुसार ६ प्राण का एक पल (विनाड़ी) होता है। ६० पल की एक घटिका होती है। ६० घटिकाओं की एक अहोरात्र एवं ३० अहोरात्रों का एक मास होता है।[४] दिन के ६० भाग भारत में वेदांग ज्योतिष काल से ही प्रचलित हैं। वेदांग ज्योतिष के अनुसार एक दिन में ३० मुहूर्त एवं एक मुहूर्त में दो नाड़ी (घड़ी) होती हैं। इस प्रकार एक दिनरात्र में ६० घड़ी (नाड़ी) होंगी। १ नाड़ी = १०$\frac{१}{२}$ कला, २ नाड़ी = १ मुहूर्त तथा ३० मुहूर्त = १ दिन = ६०३ कलाऐं।[५]

आरम्भ में ''पल'' एक भार का नाम था।[६] घटिका यन्त्र से जितने समय में १ पल पानी निकल जाता था, वह काल एक पल कहलाने लगा। काल वाचक पल शब्द पानी के पल से ही निकला प्रतीत होता है। ज्योतिष ग्रन्थों में अनेक जगह कालात्मक पल के लिये ''पानीयपल'' शब्द का प्रयोग हुआ है।[७]

---

[४] प्राणादिः कथितो मूर्त्तस्त्रुट्याद्योऽमूर्त्त संज्ञकः
षडभिः प्राणैर्विनाड़ी स्मात्तत्षष्ट्या नाडिका स्मृता। सूर्यसिद्धान्त, मध्यमाधिकार, श्लोक ११
एवं सिद्धांत शिरोमणी, मध्यमाधिकार, श्लोक १७

[५] कला दश च विंशा स्यात् द्विमुहूर्तस्तु नाडिके।
द्वित्रिंशस्तत् कलानां तु षट्शती त्र्यधिकं भवेत्। त्रग्वेद ज्योतिष, श्लोक १६

[६] ऋग्वेद ज्योतिष, श्लोक १७, यजर्वेद ज्योतिष श्लोक २४ एवं भारतीय ज्योतिष, पं. बालकृष्ण दीक्षित, पृ. ११०–१११

[७] षडभिः प्राणैरेकं पानीय पलं। पलानां षष्ट्या घटी। घटीनां षष्ट्या दिनम्।
(सि. शि. श्लोक १८ का भाष्य)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आर्यभट्ट[८] एवं ब्रह्मगुप्त[९] ने पल के स्थान पर विनाडिका शब्द का प्रयोग किया है। महाभारत काल तक घटी–पल नामक काल मापक इकाई का प्रचलन देखने को नहीं मिलता है, किन्तु आर्यभट्ट के परिवर्ती सभी लेखकों ने षष्टि–विभाजन ग्रहण किया है।

२. प्रहर :- धर्मशास्त्र ग्रन्थों में दिन के अर्थात् सूर्योदय से सूर्यास्त तक के काल के लिये २, ३, ४, ५ और ८ विभाग किये हैं। दो विभाग– पूर्वाह्न और अपराह्न है, जो स्वाभाविक हैं। तीन विभाग– पूर्वाह्न, मध्याह्न एवं अपराह्न है।[१०] चार विभाग पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न और सायाह्न है। ये दिन के चार प्रहर है। उसी प्रकार दिन के पांच प्रहर संगव, पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न और सांय का उल्लेख भी धर्मशास्त्र ग्रन्थों में मिलता है।[११]

३.मुहूर्त एवं क्षण :- भारतीय मान्यतानुसार १८ निमेष अर्थात् पलक मारने में एक काष्ठा होती है, ३० काष्ठाओं की एक कला होती है, ३० कलाओं का एक क्षण होता हे और १२ क्षणों का एक मुहूर्त होता है।[१२]

तैत्तिरीय ब्राह्मण में दिवस एवं रात्रि दोनों के मुहूर्त संज्ञक १५ विभाग वतलाये हैं।[१३] वेदोत्तर कालीन ग्रन्थों में मुहूर्त नामक यह विभाग तो हैं किन्तु मुहूर्तों के अन्य भी बहुत से नाम है। अथर्वज्योतिष में १५ मुहूर्तों के नाम बतलाये हैं। द्वादशांगुलशंकु की छाया के भिन्न–भिन्न प्रमाण ही उन मुहूर्तों की अवधियाँ हैं–

क्र.	मुहूर्त	छायांगुल	क्र.	मुहूर्त	छायांगुल
१	रौद्र	६६ परम्	५	सावित्र	५ परम्
२	श्वेत	६०	६	वेराज	४
३	मैत्र	१२	७	विश्वावसु	३
४	सारभट	६	८	अभिजित्	०

---

[८] "षष्टिर्नाड्यो दिवसः षष्टिश्च विनाडिका नाड़ी।" (आर्य. सि. का. क्रि. पा–१)

[९] ते षड्हृता विनाड्यो विनाडिका नाडिकाः षष्ट्या।" (ब्रा. स्फु. सि. पृ. २१५)

[१०] तैत्तिरीय ब्राह्मण ३/१२/६/१ एवं शतपथ ब्राह्मण २/४/२/८

[११] ऋक संहिता ५/७६/३ एवं तैत्तिरीय ब्राह्मण १/५/३

[१२] अष्टादशनिमेषास्तु काष्टात्रिंशत्तु ताः कलाः।
तास्तुत्रिंशत्क्षणस्ते तु मुहूर्तो द्वादशास्त्रियाम्।। सुगमज्योतिष, संज्ञाध्याय, कालमान प्रकरण

[१३] तैत्तिरीय ब्राह्मण ३/१०/१/१,२,३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

''यास्मिंश्छाया प्रतिष्ठिता'' अर्थात् जिसमें छाया स्थित हो जाये उसे अभिजित् मुहूर्त कहते हैं। मध्याह्न के बाद के मुहूर्तों की छाया ऊपर लिखी हुई छाया के विपरीत क्रम में होती है। महाभारत में भी दिन का आठवाँ मुहूर्त अभिजित् बतलाया है।[१४] नारदपुराण एवं मुहूर्त चिंतामणि में दिन एवं रात्रि के १५ मुहूर्तों का स्पष्ट उल्लेख है।[१५]

हिन्दी में क्षण का अर्थ वही है जो अंग्रेजी में मोमेंट का होता है। ज्योतिष में क्षण स्वयं समय का एक माप था, जो आधुनिक इकाई में लगभग ४८ मिनट (२ घड़ी) के बराबर माना जाता था, इसे मुहूर्त भी कहते थे। मुहूर्त शब्द अब शुभ घड़ी या वेला के अर्थ में प्रयुक्त होता है। भास्कर द्वितीय ने मुहूर्त एवं क्षण शब्दों का प्रयोग किया है।[१६]

सुविधा हेतु काल विभाजन को इस प्रकार समझा जा सकता है –

१	पलक झपकना	=	१	निमेष
३	निमेष	=	१	क्षण
१८	निमेष	=	१	काष्ठा
१५	काष्ठा	=	१	लघु
१५	लघु	=	१	घटी (या २४ मिनट)

दूसरे प्रकार अनुसार

१	असु	=	१०	विपल या ४ सेकण्ड
६०	विपल	=	१	पल या २४ सेकण्ड
६०	पल	=	१	घड़ी (घटी)
१	घटी	=	२४	मिनट
६०	घटी	=	१	अहोरात्र या २४ घण्टा
२	घटी	=	१	मुहूर्त ४८ मिनट
३०	मुहूर्त	=	१	अहोरात्र
१	अहोरात्र	=	८	प्रहर

---

[१४] महाभारत, आदिपर्व, अध्याय १२३, श्लोक ६

[१५] नारद पुराण पूर्वभाग २/५६/२२४–२२६ एवं मु.चि., विवाह प्रकरण, श्लोक ५२–५३

[१६] ''घटिकाद्वेन क्षणों मुहूर्त्तः क्षणानां त्रिंशत दिनम्।''
(सिद्धांत शिरोमणी, मध्यमाधिकार, कालमानाध्याय श्लोक १७ का भाष्य)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ज्योतिष में अनेक स्थानों पर गणना घटी–पल में की जाती है। अतः घटी–पल एवं घण्टा–मिनट के अन्तर्सम्बन्ध को समझलेना आवश्यक है –

१ सेकण्ड	=	$२\frac{१}{२}$	विपल	१ पल	=	२४	सेकण्ड
१ मिनट	=	$२\frac{१}{२}$	पल	१ घटी	=	२४	मिनट
१ घण्टा	=	$२\frac{१}{२}$	घटी	१ अहोरात्र	=	२४	घण्टा

यहाँ स्पष्ट है कि घण्टा, मिनट, सेकण्ड में $२\frac{१}{२}$ से गुणा करके क्रमशः घटी, पल, विपल बनाये जा सकते है। इसके विपरीत क्रिया से घटी, पल, विपल, को क्रमशः घण्टा, मिनट, सेकण्ड में बदला जा सकता है।

४.काल विभाग एवं क्षेत्र विभाग में साम्य :- भचक्र में भ्रमण करते हुये सूर्य (वास्तव में पृथ्वी) के एक चक्र को 'वर्ष' की संज्ञा दी गई है। इस चक्र के ३६० अंश अथवा भाग किये जायें तो इन भागों को चक्रांश कहेंगे।[१७]

कालांतर में चक्रांश को संक्षिप्त में अंश शब्द से ही व्यक्त किया जाने लगा। इस प्रकार अंश शब्द का सम्बन्ध क्षेत्र विभाग से है। भारतीय क्षेत्र विभाग, काल विभाग के अनुसार है। एक वर्ष में १२ मास, १ मास में ३० दिन, १ दिन में ६० घटी एवं १ घटी में ६० पल (विनाडिकाऐं) होती है। इसी प्रकार ज्योतिश्चक्र क्रान्तिवृत्त के १२ भाग (राशियाँ) होते हैं। एक भाग (राशि) में ३० अंश, १ अंश में ६० कला, १ कला में ६० विकलाऐं होती हैं। सूर्यसिद्धन्तानुसार ज्योतिष ग्रन्थों में कालविभाग एवं क्षेत्र विभाग का साम्य इस प्रकार है[१८]–

कालविभाग				**क्षेत्रविभाग**			
६०	पल	=	१ घटी	६०	विकला	=	१ कला
६०	घटी	=	१ दिन	६०	कला	=	१ अंश
३०	दिन	=	१ मास	३०	अंश	=	१ राशि
१२	मास	=	१ वर्ष	१२	राशि	=	१ भचक्र
३६०	दिन	=	१ वर्ष	३६०	अंश	=	१ राशिचक्र

---

[१७] चक्रांशकै ३६० स्तदूनै रनुवक्रं तदधिकोन भाग कलाः।
मण्डलभागै ३६० स्तदूनैः प्राक्राशिषु चतुर्षु वक्रम्।। (ब्रा. स्फु. सि. पृ. ४६५१)

[१८] सूर्य सिद्धान्त, मध्यमाधिकार, श्लोक २८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्षेत्रविभाग जैसी कालविभाग मानने की पद्धति वेदांग ज्योतिष काल में ही स्थापित हो चुकी थी। ब्रह्मगुप्त[१९] एवं आर्यभट्ट[२०] ने इन दोनों विभागों की तुल्यता को प्रदर्शित किया है।

इन्होंने वार्षिक भूभ्रमण में १ दिवस की १ अंश से तुलना की है। जबकि दैनिक घूर्णन में दोनों विभागों की तुलना के लिये पृथ्वी १ प्राण ($\frac{१}{६}$ पल) में १ कला पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती है। अर्थात् –

चूँकि ६० घटी (एक दिनरात) में पृथ्वी घूमती है ३६० अंश

इसलिये १ घटी –––––"––––– $\frac{३६०}{६०}$ = ६ अंश

पुनः ६० पल में पृथ्वी घूमती है ३६० कला

इसलिये $\frac{१}{६}$ पल में –––––––"––––– $\frac{३६०}{६०} \times \frac{१}{६}$ = १ कला

यहाँ काल विभाग एवं क्षेत्र विभाग दोनों के मूलभूत एककों को पृथक शब्दों प्राण एवं काल से व्यक्त किया गया है।

५. दिन एवं मासः- सामान्यतः दिन का अर्थ है– रात्रि के बाद का वह काल जिसमें प्रकाश (सूर्य) रहता है। यहाँ दिन से तात्पर्य अहोरात्र से है। भारतीय ज्योतिष में चार प्रकार के दिन एवं मासों का उल्लेख होता है– चान्द्र, सौर्य, सावन एवं नाक्षत्र। ज्योतिष ग्रन्थों में चारों प्रकार के दिनों एवं मासों का वर्णन हुआ है,[२१] जो इस प्रकार हैं –

---

[१९] प्राणैर्विनाडिकार्क्षी षड्भिर्घटिका विनाडिका षष्ट्या।
घटिका षष्ट्या दिवसो दिवसानां त्रिंशता भवेन्मासः।।
मासद्वादशवर्ष विकला लिप्तांशराशि भगणान्तः।
क्षेत्र विभागस्तुल्यः कालेन विनाडिकाद्येन।। (ब्रा.स्फु.सि.,मध्यमाधिकार)

[२०] वर्षद्वादश मासास्त्रिंशद्दिवसो भवेत्स मासः।
षष्टिर्नाड्यो दिवसः षष्टिश्च विनाडिका नाडी ।
गुर्वक्षराणि षष्टिर्विनाडिकार्क्षी षडेव वा प्राणाः।
एवं कालविभागः क्षेत्र विभागस्तथा भगणात्। आर्यसिद्धान्त का.क्रि.पाद श्लोक १–२

[२१] सूर्यसिद्धान्त, मध्यमाधिकार, श्लोक १२–१३; आर्यसिद्धान्त, का.क्रि.पा. आर्या ५–६ एवं वृहत्संहिता, सांवत्सर सूत्राध्याय, श्लोक ४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(१) **चान्द्र दिवस** :- आर्यभट्ट आदि विद्वानों के मतानुसार जितने समय में चन्द्रमा सूर्य से १२° अंश आगे निकलता है, उसे चान्द्रदिन अथवा तिथि कहते हैं। पन्द्रह चान्द्रदिनों (तिथियों) से मिलकर एक पक्ष बनता है।

(२) **सौर्य दिवस** :- आर्यभट्ट इत्यादि विद्वानों के अनुसार जितने समय में आकाश में सूर्य १° अंश चलता है। वह काल सौर्य दिवस कहलाता है। आधुनिक मतानुसार सौर्य दिवस लगभग २४ घण्टा ३ मिनट ५३ सेकण्ड अवधि का होता है। इस समय में पृथ्वी अपने परिक्रमण पथ पर १° अंश आगे बढ़ते हुये एक चक्कर पूर्ण करती है।

(३) **सावन दिवस** :- एक सूर्योदय से लेकर दूसरे सूर्योदय तक के काल को सावन दिवस कहते है।[२२] वर्तमान में सावन दिन से आशय वार से होता है। सात सावन दिनों से मिलकर एक सप्ताह बनता है जिसमें ७ वार सम्मिलित होते हैं। यज्ञ, जन्मकाल के कार्य, प्रसूतिस्नान इत्यादि कार्य में सावन दिन का उल्लेख होता है।

(४) **नाक्षत्र दिवस** :- सामान्यतः चन्द्रमा द्वारा एक नक्षत्र के भोगकाल को नाक्षत्र दिवस कहते हैं। सूर्यसिद्धान्तानुसार ६० घटिकाओं का एक नाक्षत्र अहोरात्र होता है। आर्य सिद्धान्तानुसार जितने समय में पृथ्वी अपनी धूरी पर एक बार घूमती है। वह काल नक्षत्र दिवस कहलाता है। आधुनिक मतानुसार पृथ्वी का यह चक्कर लगभग २३ घण्टा ५६ मिनट में पूरा होता है।

महर्षि नारद ने चार प्रकार के मासों का उल्लेख किया।[२३] जो इस प्रकार है –

(१) **चान्द्रमास** :- प्रत्येक भारतीय पञ्चांग चान्द्रमासों पर आधारित होता है। शुक्ल प्रतिपदा से लेकर अमावस्या पर्यंत अथवा कृष्ण प्रतिपदा से लेकर पूर्णिमा तक के काल को चान्द्रमास कहते हैं। सूर्यसिद्धान्त में दर्शान्त से दर्शान्त पर्यन्त अथवा पूर्णिमा से पूर्णिमा पर्यन्त के काल को चान्द्रमास कहा है। एक चान्द्रमास में ३० तिथियाँ होती है। प्रत्येक चान्द्रमास लगभग २९$\frac{१}{२}$ दिनों का होता है। आधुनिक

---

[२२] उदयादुदयं भानोर्भूमेः सावनवासराः।। नारदपुराण, पूर्वभाग २ अध्याय ५४, श्लोक ७०

[२३] चान्द्रो दर्शावधिः सौर्यः संक्रान्त्या सावनो दिनैः।
त्रिंशिद्भश्चंद्रभगणो मासो नाक्षत्र सज्ञकः। नारदपुराण, पूर्वभाग २/५६/१२६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मतानुसार चन्द्रमा सूर्य के सापेक्ष पृथ्वी की परिक्रमा २६ दिन १२ घण्टा ४४ मिनट में पूर्ण करता है। इस काल को चान्द्रमास कहते हैं।

वैदिक काल में मधु, माधव, शुक्र, शुचि, नभः, नभस्य, इष, ऊर्ज, सहः, सहस्य, तप और तपस्य – ये चैत्रादि १२ मासों की क्रमशः संज्ञाऐं थीं।[२४] वर्तमान में प्रचलित चान्द्रमासों का नामकरण पूर्णिमा के अन्त में स्थित चन्द्रनक्षत्र के आधार पर हुआ है। इस प्रकार स्पष्ट है कि एक पूर्णिमा के बाद दूसरी पूर्णिमा पर जो नक्षत्र आता है, उसी के नाम पर गत चान्द्रमास का नाम होता है। जैसे-चैत्र मास की पूर्णिमा को चित्रा नक्षत्र होता है, वैशाख मास की पूर्णिमा को विशाखा नक्षत्र होता है, इत्यादि।[२५]

चन्द्रमास	चैत्र	वैशाख	जेष्ठ	अषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विनी	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	मघा	फाल्गुन
पूर्णिमा	चित्रा	विशाखा	जेष्ठा	पूर्वाषाढ़ा	श्रवण	पूर्वाभाद्रपद	अश्विन	कृतिका	मृगशिरा	पुण्य	मघा	पूर्वाफाल्गुनी

पूजा आदि कर्मों में,गृह प्रवेश, पितृकर्म इत्यादि में चान्द्रमास का स्मरण होता है।

उदाहरणार्थ :– आर्यभट्ट पञ्चांगमें दिनांक १८ अप्रैल सन् २००० ई. चैत्र शुक्ल पूर्णिमा तिथि मंगलवार को प्रातः ५.३० बजे के ग्रह स्पष्टीकरण में चन्द्रमा को चित्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में दिखाया है। अतः गतमास चैत्र हुआ।

(२) **सौर्यमास :-** सूर्य द्वारा एक राशि (३०° अंश) के भोगकाल को सौर्यमास कहते हैं। दूसरे शब्दों में सूर्य के एक संक्रांति से दूसरी संक्रांति तक के काल को सौर्यमास कहते हैं। एक सौर्यमास लगभग ३० दिन १० घण्टे का होता हैं जिस दिन निरयन सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है उस दिन से वैशाख मास प्रारम्भ होता है। वर्ष के १२ सौर्यमासों के नाम इस प्रकार हैं –

(१) वैशाख (२) जेष्ठ (३) अषाढ़ (४) श्रावण (५) भाद्रपद (६) अश्विन (७) कार्तिक (८) मार्गशीर्ष (९) पौष (१०) माघ (११) फाल्गुन (११) चैत्र।

---

[२४] मधुश्च माधवः शुकः शुचिश्चाथ नभस्ततः।
नभस्य इष ऊर्जश्च सहाश्चैव सहस्यकः।
तपास्तपस्य क्रमशश्चैत्रादीनां समाह्वयाः।
यस्मिन्मासे पौर्णमासी येन घिष्ण्येन संयुता। नारदपुराण, पूर्वभाग २/५६/१३०–१३१

[२५] सूर्यसिद्धान्त, मानाध्याय, श्लोक १६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत्तर भारत के प्रमुख पञ्चांगों में सौर्य मास के प्रारम्भ का उल्लेख रहता है। शाके १९२२ के श्री ब्रजभूमि पञ्चांग मथुरा एवं काशी हिन्दू विश्व विद्यालय से प्रकाशित विश्व पञ्चांग के अनुसार १४ अप्रैल २००० ई. से बंग वैशाख मास का आरम्भ दर्शाया है। इस दिन निरयन सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है। इसी प्रकार श्री हृषीकेश पञ्चांग में सौर्यमास की तारीख का एक स्तम्भ दिया है।

(३) **सावनमास** :- सूर्यसिद्धान्तानुसार ३० सावन दिनों का एक सावनमास होता है। यज्ञादि कर्मों में सावनमास का नामोच्चरण होता है।

(४) **नाक्षत्रमास** :- चन्द्रमा द्वारा अश्विन्यादि २७ नक्षत्रों के भोगकाल को नाक्षत्रमास कहते है। सूर्यसिद्धान्तानुसार एक नाक्षत्र मास में लगभग २७ दिन ७ घण्टा ४३ मिनट होते है। इस प्रकार चन्द्रमा एक नक्षत्र को लगभग एक दिन में पार करता है।

(५) **अधिमास और क्षयमासः** :- भास्कराचार्य के मतानुसार जिस चान्द्रमास में सूर्य संक्रान्ति न हो उसे 'अधिमास' तथा जिस चान्द्रमास में दो सूर्य संक्रान्तियाँ हो उसे 'क्षयमास' कहते हैं। क्षयमास केवल कार्तिक, मार्ग, पौष मासों में होता है। जिस वर्ष क्षयमास होता है उस वर्ष में क्षयमास के भीतर दो अधिमास होते है।[२६] क्षयमास प्रायः १९ वर्षों या १४१ वर्षों में पड़ता है।

गणित की दृष्टि से सौर्यवर्ष चान्द्रवर्ष से लगभग ११ दिन बड़ा होता है। इस प्रकार सौर्यवर्ष एवं चान्द्रवर्ष में एकरूपता स्थापित करने के लिये हर तीसरे वर्ष पञ्चांग में एक चान्द्रमास की वृद्धि कर दी जाती है। इसी को अधिमास या पुरूषोत्तम मास कहते हैं। स्थूल मान से –

सौर्यमास = $३०\frac{१}{२}$ दिन सौर्यवर्ष = ३६५ दिन

चान्द्रमास = $२९\frac{१}{२}$ दिन चान्द्रवर्ष = ३५४ दिन अन्तर = ११ दिन

चूँकि एकवर्ष में ११ दिन का अन्तर आता है इसलिये $२\frac{१}{२}$ वर्ष में $२७\frac{१}{२}$ दिन का अन्तर आयेगा। इस प्रकार एक चान्द्रवर्ष १२ मासों के स्थान पर १३ मासों का हो

---

[२६] असंक्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटं स्याद् (१) द्विसंक्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित्।
क्षयः कार्तिकदित्रये नान्यतः स्यात् तदा वर्षमध्येऽधिमासद्वयं च (२)। सि.शि. मध्यामा.,श्लोक ६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जायेगा। ऐसी स्थिति स्वतः उत्पन्न हो जाती है क्योंकि ३२ महिने १६ दिन ४ घड़ी व्यतीत होने पर अधिमास बढ़ता है।[२७]

सूर्य सिद्धान्तानुसार गणित करने पर हमें ३३.५३५१ चान्द्रमासों में ३२.५३४३ सौर्यमास प्राप्त होते हैं।[२८] इस कारण सौर्यमासों को चान्द्रमास बनाने के लिये लगभग ३२ महिनों के बाद अधिमास जोड़ा जाता है।

उदाहरणार्थ :– निर्णय सागर पञ्चांग के अनुसार दिनांक १८ अगस्त १९९३ ई. से १६ सितम्बर १९९३ तक भाद्रपद अधिमास के रूप में देखने को मिलता हैं। तत्पश्चात (३२ चान्द्रमासों के बाद) दिनांक १७ जून १९९६ ई. से १५ जुलाई १९९६ ई. तक अषाढ़ अधिमास के रूप में दृष्टिगत होता है।

हर तीसरे वर्ष एक अधिमास की वृद्धि होने से कुछ समय बढ़ जाता है, (११×३ = ३३ दिन) फलतः कुछ वर्षों बाद एक चान्द्रमास कम (क्षय) करना पड़ता है।

उदाहरणार्थ :– विक्रम संवत् २०२० में मार्गशीर्ष क्षयमास आता है। उसके १९ वर्ष बाद विक्रम संवत् २०३९ में पौष क्षयमास के रूप में दृष्टिगत होता है। बेंकटेश्वर शताब्दी पञ्चांग में दिनांक ३१ दिसम्बर १९८२ ई. से १४ जनवरी १९८३ ई. तक पौषकृष्ण पक्ष दर्शाया है उसके बाद माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ हो जाता है। विक्रम संवत् २०३९ में अश्विन एवं फाल्गुन को अधिमास के रूप में बताया है।

क्षय एवं अधिमास में विवाह, यक्ष, मुण्डनादि शुभकृत्यों का आरम्भ करना निषेध है।

६. पक्ष :- एक चान्द्रमास में ३० तिथियाँ (चान्द्रदिन) होती हैं, १५ तिथियों का एक चान्द्रपक्ष होता है। इस प्रकार एक चान्द्रमास में दो पक्ष होते हैं उनको शुक्ल (सुदी) और कृष्ण (वदी) कहते है। शुक्ल पक्ष देवताओं का तथा कृष्ण पक्ष पितरों का होता है।[२९] प्रत्येक पक्ष १५ दिनों का होता है, किन्तु कभी–कभी तिथि क्षय वृद्धि के

---

[२७] द्वित्रिंशाभ्दिर्गतैर्मासैदिनः षोडशभिस्तथाः।
घटिकानां चतुष्केण पतत्यधिक मासकः। सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्याय संवत्सरादिप्रकरण, पृ.

[२८] सूर्यसिद्धान्त, मध्यमाधिकार, श्लोक ३५ से ३८ तक

[२९] तत्पक्षौ देवपित्राख्यौ शुक्लकृष्णौ तथा परे।
शभाशुभे कर्मणि च प्रशस्तौ भवतः सदा।। ना.पु., पूर्वाभाग, २/५६/१३२ परार्ध, १३३ पूर्वार्द्ध

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कारण न्यूनाधिक भी हो जाता है।

प्रत्येक चान्द्रमास में पहले कृष्ण पक्ष और बाद में शुक्ल पक्ष आता है। ऐसे मास के बीच में अमावस्या तथा अन्त में पूर्णिमा आती है। इन्हें पूर्णिमान्त मास भी कहते है। उत्तरीभारत एवं म.प्र., पश्चिम बंगाल जैसे प्रांतों में इस मास का प्रचलन होता है। किन्तु दक्षिणीभारत एवं गुजरात, महाराष्ट्र जैसे प्रांतों में चान्द्रमास में पहिले शुक्ल पक्ष बाद में कृष्ण पक्ष आता है। ऐसे मासों में पूर्णिमा बीच में तथा अमावस्या अन्त में आती है। इन्हें अमावस्याँत मास भी कहते है।

उदाहरणार्थ :– शालिवाहन शाके १९२२ के दाँते बृहत पञ्चांग में वर्षारम्भ में चैत्रशुक्ल पक्ष के बाद चैत्र कृष्ण पक्ष लिखा होता है। इस पञ्चांग में ५ अप्रैल सन् २००० ई. से १८ अप्रैल सन् २००० ई. तक चैत्र शुक्ल पक्ष तथा १९ अप्रैल सन् २००० ई. से ४ मई सन् २००० ई. तक चैत्र कृष्ण पक्ष होता हैं जबकि उत्तर भारत के पञ्चांगों में १९ अप्रैल से ४ मई सन् २००० ई. तक वैशाख कृष्ण पक्ष दिखाया है। **डॉ. श्री कृष्ण भालचन्द्र शास्त्री मुसलगॉवकर** द्वारा रचित ग्वालियर पञ्चांग में संवत् २०५८ शाके १९२३ में २३ मार्च से ८ अप्रैल २००१ ई. तक चैत्र शुक्ल पक्ष तथा ९ अप्रैल से २३ अप्रैल २००१ ई. तक चैत्र कृष्ण पक्ष दिया है। उत्तर भारत (ग्वालियर) के इस पञ्चांग में पक्ष गणना दक्षिणभारत जैसी है। काशी के श्री हृषीकेष पञ्चांग इत्यादि में ९ अप्रैल से २३ अप्रैल २००१ ई. तक वैशाख कृष्ण पक्ष दर्शाया है। इस प्रकार दक्षिणी भारत का चान्द्रमास उत्तरी भारत के चान्द्रमास से सदा एक पक्ष पीछे हेाता है।

७. वर्षमान :- भारतीय पूर्वाचार्यो द्वारा मुख्यतः चार प्रकार के वर्षमान ही व्यवहार में रहे हैं।[३०] महर्षि नारद ने ९ प्रकार के वर्षमान बतलायें है– १. ब्राह्म २. दैव ३. मानुष ४. पैत्र्य ५. सौर्य ६. सावन ७. चान्द्र ८. नाक्षत्र ९. ब्रार्हस्पत्य। इनमें अंतिम ५ मानों को व्यवहार में बतलाया है।[३१] यहाँ हम चार प्रमुख वर्ष मानों को समझते है –

(१) सावन वर्ष :- वह काल जिसमें ३९० बार सूर्य का उदय होता है, सावन वर्ष कहलाता है। एक सावन वर्ष में १२ सावन मास होते हैं।

(२) नाक्षत्र वर्ष :- चन्द्रमा द्वारा २७ नक्षत्रों को १२ बार भोगने में जो समय

---

[३०] सूर्यसिद्धान्त, मध्यमाधिकार, श्लोक १३

[३१] नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५९/१०९,११०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लगता है, उसे नाक्षत्र वर्ष कहते हैं। एक नाक्षत्र वर्ष प्रायः ३२४ दिनों का होता है।

(३) **चान्द्र वर्ष** :- जितने समय में चन्द्रमा पृथ्वी की १२ बार परिक्रमा करता है, उसे चान्द्रवर्ष कहते हैं। एक चान्द्रवर्ष औसतन् ३५४ दिन २२ घटी १ पल २३ विपल के लगभग होता है।

(४) **सौर्य वर्ष** :- जितने समय में सूर्य मेषादि द्वादश राशियों (भचक्र) का एक भ्रमण करता है, उसे सौर्य वर्ष कहते है। आधुनिक मतानुसार एक सौर्य वर्ष में ३६५ दिन १५ घटी २२ पल ५७ विपल ३० प्रतिविपल होते है। इसे नाक्षत्र सौर्य वर्ष भी कहते हैं। यह स्थिर तारों से पुनः स्थिर तारों की सीध तक अथवा अचल सम्पात के अनुसार पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा करने में लगा समय होता है। सूर्य सिद्धान्त के अनुसार १२,००० दिव्यवर्षों का एक चतुर्युगमान (महायुग) होता है।[३२] एक महायुग मे ४३,२०००० सौर्य वर्ष तथा १,५७,७६,१७,८२८ सावनदिन होते हैं।[३३] तब एक वर्ष (सौर्यवर्ष) में सावन दिनों की संख्या = १,५७,६६,१७,८२८ ÷ ४३,२०००० = ३६५दिन १५घटी ३१पल ३०विपल (लगभग)

ज्योतिष के विभिन्न ग्रन्थों में निरयन सौर्य वर्षमान को निम्नलिखितानुसार दर्शाया है–

	दिन	घटी	पल	विपल
वेदांग ज्योतिष	३६६	००	००	००
सूर्य सिद्धान्त	३६५	१५	३१	३०५
ब्रह्मगुप्त सिद्धान्त	३६५	१५	३०	२२.५
आर्य सिद्धान्त	३६५	१५	३१	३०
ग्रहलाघव	३६५	१५	३२	३०
आधुनिक मतानुसार	३६५	१५	२२	५७.५

८. **संवत्सर** :- उत्तर भारत के सभी पञ्चांगों में प्रतिवर्ष के संवत्सर का नाम लिखा रहता है। बृहस्पति की मध्यम गति से एक राशि का भोग काल संवत्सर कहलाता है। इसी को बृहस्पति संवत्सर भी कहते हैं। वेदांग ज्योतिष में संवत्सर

---

[३२] "तद्दादशसहस्त्राणि चतुर्युगमुदाहृतम्" सूर्य सिद्धान्त, मध्यमाधिकार श्लोक १५

[३३] "वसुद्व्यष्टाद्रिरूपांग सप्ताद्रितिथयो युगे। सूर्य सिद्धान्त, मध्यमाधिकार श्लोक ३७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शब्द ''वर्ष'' के अर्थ में आया है। महर्षि नारद के मतानुसार बृहस्पति की अपनी मध्यम गति से प्रभव आदि नाम वाले ६० संवत्सर होते हैं।[3] इस प्रकार संवत्सरों की कुल संख्या ६० है, जिसकी पुनरावृत्ति होती रहती है। संवत्सरों के नाम क्रमशः निम्नलिखित है।

१. प्रभव	२. विभव	३. शुक्ल	४. प्रमोद	५. प्रजापति	६. अंगिरा
७. श्रीमुख	८. भाव	९. युव	१०. धात	११. ईश्वर	१२. बहुधान्य
१३. प्रथामी	१४. विक्रम	१५. वृष	१६. चित्रभानु	१७. सुभानु	१८. तारण
१९ पार्थिव	२०. व्यय	२१ सर्वजित	२२. सर्वधारी	२३. विरोधी	२४. विकृति
२५. खर	२६. नंदन	२७. विजय	२८. जय	२९. मन्मथ	३०. दुर्मुख
३१. हेमलम्बी	३२. विलम्बी	३३. विकारी	३४. शार्वरी	३५. प्लव	३६. शुभकृत
३७. शोभन	३८. क्रोधन	३९. विश्वावसु	४०. पराभव	४१. प्लवंग	४२. कीलक
४३. सौम्य	४४. साधारण	४५. विरोधकृत	४६. परिधावी	४७. प्रमादी	४८. आनन्द
४९. राक्षस	५०. नल	५१. पिंगल	५२. कालयुक्त	५३. सिद्धार्थ	५४. रौद्र
५५. दुर्मति	५६. दुंदुभि	५७. रूधिरोद्गारी	५८. रक्ताक्षी	५९. क्रोधन	६०. क्षय।।

उत्तर भारत में ३६१ दिनों का एक ब्राहस्पत्य वर्ष माना जाता है। इस प्रकार ब्राहस्पत्य वर्ष, सौर्यवर्ष की अपेक्षा ४ दिन छोटा होता है। संवत्सर प्रतिवर्ष गतवर्ष की अपेक्षा ४ दिन पूर्व शुरू हो जाता है, किन्तु विक्रम संवत् आरम्भ होने की तारीख को जो संवत्सर होगा इसी को पूरे संवत् में व्यवहारिक संवत्सर माना जाता हैं। विवाह, यज्ञ, अनुष्ठानादि शुभ कार्यों के आरम्भ में संवत्सर का उच्चारण अवश्य किया जाता है।

संवत्सरों के स्वामी :- साठ (६०) संवत्सरों को १२ भागों में बाँटने पर प्रत्येक भाग में पाँच–पाँच संवत्सर होंगे। पाँच–पाँच संवत्सरों से निर्मित समूहों के अधिपति क्रमानुसार इस प्रकार से होंगे।[4]

समूह	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
स्वामी	विष्णु	गुरू	इन्द्र	अग्नि	विश्वकर्मा	अहिर्बुध्न्य	पितर	विश्वदेवा	चन्द्र	इन्द्राग्नि	अश्विनी	भग

[3] 'गुरू मध्यम चारेण षष्टयाब्दाः प्रभवादयः।। नारद पुराण पूर्वभाग २/५६/११४ परार्ध

[4] नारद पुराण पूर्वभाग २/५६/१२२–१२३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यहाँ स्पष्ट है कि प्रभव से प्रजापति तक संवत्सरों के प्रथम समूह का देवता (स्वामी) विष्णु होगा। शाके १६२२ विक्रम संवत् २०५७ में विजय नामक संवत्सर है, जिसका स्वामी अहिर्बुध्न्य है।

संवत्सर निकालने की विधि :– सूर्यसिद्धान्त के अनुसार बृहस्पति के गत भगणों को १२ से गुणा करके उनमें गतराशियों को जोड़कर एक ओर मिलाने से जो संख्या आये उसमें ६० का भाग देने से, जो शेष बचे वह विजयादि संवत्सर होंगे।[३६]

सृष्टि के आरम्भ काल में विजय नाम संवत्सर था। शकारम्भ में प्रभव नाम संवत्सर था। एक अन्य विधि के अनुसार जिस विक्रम संवत् में संवत्सर (ब्राहस्पत्य वर्ष) जानना हो, उसमें ६ जोड़कर प्राप्त संख्या को ६० से भाग देने पर जो शेष बचे उसमें १ जोड़ देने पर प्रभवादि संवत्सर होगा।

उदाहरणार्थ :– यदि विक्रम संवत् २०५७ में संवत्सर जानना हो तव

२०५७ + ६ = २०६६, २०६६ ÷ ६० = लब्धि ३४ शेष २६ बचे,

२६ + १ = २७

सवंत्सर तालिका में देखने पर २७ वाँ संवत्सर विजय नामक संवत्सर है। विक्रम संवत् २०५७ के सभी पञ्चांगों में विजय नामक सवत्सर दर्शाया है। संवत्सर के अनुसार ही वर्ष के शुभाशुभ फल को जाना जाता है। मानसागरी पद्धति के अनुसार वर्तमान शक संख्या में २३ जोड़कर ६० का भाग देने से शेषतुल्य प्रभवादि संख्या समझनी चाहिये।[३७]

(ब) पञ्चांगों में कालगणना की युग पद्धति :- मनुस्मृति के प्रथमाध्याय में जिस युग पद्धति का वर्णन हुआ हैं वही पुराण, ज्योतिष इत्यादि भिन्न–भिन्न विषयों के प्रायः

---

[३६] द्वादशघ्ना गुरोर्याता भगणा वर्तमान कैः।
राशिभिः सहिताः शुद्धाः षष्ट्या स्युर्विजयादयः।। सू. सि. मध्यमाधिकार श्लोक ५५

[३७] शाकं रामाक्षि (२३) संयुक्तं कृत्वा षष्ट्या विभाजयेत्।
शेषात् संवत्सरो ज्ञोयो प्रभवाद्यो बुधैः सदा।। मानसागरी, प्रथमोऽयायः, श्लोक ८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सभी ग्रन्थों में पायी जाती है।[३८] भारतीय कालमान की पद्धति प्राचीन काल से ही अत्यंत सूक्ष्म रही है। भारतीय सिद्धान्त ग्रन्थों के अनुसार ४३ लाख २० हजार सौर्यवर्षों का एक महायुग होता हैं।[३९] एक महायुग में चार युग होते हैं – सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग एवं कलियुग। कलियुग का मान ४,३२,००० वर्ष है। द्वापर, त्रेता एवं सत्ययुग, कलियुग के क्रमशः द्विगुणित, त्रिगुणित और चतुर्गुणित होते है, अर्थात् द्वापर युग में ८,६४,००० वर्ष, त्रेतायुग में १२,९६,००० वर्ष तथा सत्ययुग में १७,२८,००० वर्ष होंगे। चारों युगों को मिलाकर एक महायुग बनता है, जिसका मान कलियुग का दस गुना होता है। ७१ महायुगों का एक मन्वन्तर (मनु) तथा एक सहस्त्र (१०००) महायुगों का एक कल्प अथवा प्रलय होता है। इसी प्रमाण की ब्रह्मा की रात्रि भी होती है अर्थात २००० महायुगों का ब्रह्मा का अहोरात्र होता है। ३६० कल्पों में ब्रह्मा का एक वर्ष होता है। प्रत्येक मन्वन्तर के आदि और अन्त में सत्ययुग प्रमाण की एक संधि होती है। इस संधि को प्रलय काल भी कहते हैं। १५ संधि सहित १४ मनु का एक कल्प होता है। कल्प के अन्त में महाप्रलय होता है।

सूर्यसिद्धान्तानुसार कल्पारम्भ से लेकर वर्तमान महायुग के आरम्भ तक ६ मनु एवं २७ महायुग बीत चुके हैं। २८ वें महायुगके सत्य, त्रेता एवं द्वापर तीन युग बीत चुके हैं। इस समय कलियुग चल रहा है।

युगनाम	सत्ययुग	त्रेतायुग	द्वापरयुग	कलियुग	महायुग
युग प्रमाण	१४,४०,०००	१०,८०,०००	७,२०,०००	३,६०,०००	३६,००,०००
संधि प्रमाण	२,८८,०००	२,१६,०००	१,४४,०००	७२,०००	७,२०,०००
ससन्धियुग प्रमाण	१७,२८,०००	१२,९६,०००	८,६४,०००	४,३२,०००	४३,२०,०००

सृष्टि के आरम्भ से सत्ययुग के अन्त तक सौर्यवर्ष प्रमाण से

१ मनु प्रमाण	= ४३२०००० × ७१	=	३०,६७,२०,००० सौर्यवर्ष
६ मनु प्रमाण	= ३०,६७,२०,०० × ६	=	१८, ४०,३२,०००० सौर्यवर्ष
७ संधि प्रमाण	= १७,२८००० × ७	=	१,२०,९६,००० सौर्यवर्ष
२७ महायुग प्रमाण	= ४३,२०,००० × २७	=	११,६६४०,००० सौर्यवर्ष

---

[३८] मनुस्मृति, प्रथमोऽध्याय, श्लोक ६८से ८६ तक; नारद पुराण, पूर्वभाग २/५४/श्लोक ६१ से ६४ तक एवं सि. शि. – मध्यमाधिकर, कालमानाध्याय, श्लोक २१–२५

[३९] सूर्यसिद्धान्त, मध्यमाधिकार, श्लोक १५ से २० तक।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सत्ययुग संधि प्रमाण	=	= १७,२८,००० सौर्यवर्ष
सर्वयोगफल	=	= १,९७,०७,८४,००० सौर्यवर्ष
सृष्टि का निर्माणकाल	=	= १,७०,९४,००० सौर्यवर्ष
शेष घटाने पर	=	= १,९५,३७,२०,००० सौर्यवर्ष

अतः सूर्य सिद्धान्तानुसार सृष्टि आरम्भ से लेकर सत्ययुग के अन्त तक १,९५,३७,२०,००० सौर्यवर्ष व्यतीत हो चुके है। इसके बाद त्रेतायुग के १२,९६,००० वर्ष, द्वापर युग के ८,६४,००० वर्ष भी व्यतीत हो चुके है। वर्तमान में कलियुग चल रहा है। विक्रम संवत् २०५७ तक कलियुग के ५१०१ वर्ष व्यतीत हो चुके है।

(स) **उत्तर भारत के पञ्चांगों में प्रचलित काल (वर्ष) :-** ज्योतिष गणित में ग्रह स्थिति लाने के लिये कोई न कोई आरम्भ काल मानना आवश्यक होता है। सिद्धान्त ग्रन्थों में महायुगारम्भ से अथवा किसी युग के आरम्भ, विशेषतः कलियुग के आरम्भ से और करण ग्रन्थों में किसी शक वर्ष से गणितारम्भ काल माना जाता है। किसी–किसी ग्रन्थ में शक के साथ विक्रम सवंत् भी दिया रहता है। आधुनिक काल (सन् १६०१ ई. से १७५१ ई. तक) के अनेक ज्योतिर्विदों ने अपने–अपने ग्रन्थों में विक्रम संवत् का प्रयोग किया है। जैसे – आचार्य लब्धिचन्द्रगणि ने विक्रम संवत् १७५१ के कार्तिक मास में ज्योतिष का जन्मपत्रीपद्धति नामक एक व्यवहारोपयोगी ग्रन्थ बनाया है।

उत्तर भारत के पञ्चांगों में हमें अनेक प्रकार के कालमानों का उल्लेख मिलता है, जो इस प्रकार है –

(१) कलिकाल :- ज्योतिष ग्रन्थों और पञ्चांगों में काल गणना के लिये कलियुग कालमान का उपयोग करते हैं। हमारे सभी ज्योतिष ग्रन्थ शकारम्भ के ३१७६ वर्ष पूर्व कलियुग का आरम्भ मानते हैं।[४०] इस काल के चैत्रादि और मेषादि दो वर्ष प्रचलित हैं। पञ्चांगों में कभी इसका गतवर्ष, कभी वर्तमान वर्ष और कभी–कभी दोनों लिखे होते हैं। शाके १६२२ के उत्तर भारत के प्रमुख पञ्चांगों में गतकलि ५१०१ वर्ष लिखा है। पुराणों में कलियुग आदि युगों के नामों का आधार उन युगों में धर्म की अपेक्षाकृत स्थिति है।

---

[४०] वेदवेदखवह्निभि ३०४४ र्युते विक्रमवत्सरे। गतकलिः स्यात्।।
शाके नवाद्रिभूरामै (३१७६) र्युक्तेऽब्दास्ते कलेर्गताः।। आर्यभट्टीय, कालक्रियापाद, श्लोक १० (म)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(२) **विक्रम काल** :- विक्रम संवत् नाम का एक नया संवत् ५७ ई.पू. में राजा विक्रमादित्य द्वारा शकों पर विजय से आरम्भ हुआ।[४१] यह काल सम्पूर्ण उत्तर भारत में प्रचलित है और सभी पञ्चांगों में इसका उल्लेख मिलता है। इसे विक्रम संवत् या श्री संवत् भी कहते हैं। यह मूलतः चान्द्र वर्ष है। उत्तर भारत के अधिकांश राज्यों – उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, राजस्थान एवं पश्चिमोत्तर भारत में विक्रम संवत् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से तथा गुजरात, महाराष्ट्र एवं पश्चिम बंगाल जैसे अहिन्दी भाषी प्रान्तों में विक्रम संवत् कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होता है।

उदाहरणार्थ – काशी से प्रकाशित सभी पञ्चांग विश्व–पञ्चांग, श्री हृषीकेष पञ्चांग इत्यादि में विक्रम संवत् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रारम्भ होना दर्शाया है, किन्तु महाराष्ट्र राज्य के दॉते बृहत पञ्चांग के अनुसार कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा (२८ अक्टूबर सन् २००० ई.)से विक्रमसंवत् २०५७ शुरू होता है।

(३) **शककाल** :- 'शक' शब्द वस्तुतः एक जाति का बोधक है। इतिहासकारों के मतानुसार शक जाति के राजाओं ने अपने नाम पर ७८ ई. में इस काल को आरम्भ किया।[४२] ज्योतिष करण ग्रन्थों – ग्रहलाघव इत्यादि में यही काल लिया है। उत्तर भारत के सभी पञ्चांगों में शक वर्ष का उल्लेख रहता है। इसका वर्ष चान्द्र एवं सौर्य है। चान्द्रवर्ष चैत्रादि और सौर्यवर्ष मेषादि है। इसी को शालवाहन शाके संवत भी कहते हैं। भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय कैलेण्डर के रूप में इसे मान्यता प्राप्त है। इसमें वर्ष का आरम्भ सायन मेष संक्रान्ति (२१–२२ मार्च) से होता है। इसीलिये २१–२२ मार्च से चैत्रमाह के आरम्भ से वर्ष की शुरूवात होती है। इस वर्ष में तिथियों के स्थान पर तारीखें होती है, जो सूर्य के अंशों के अनुसार प्रतिदिन बढ़ती जाती है। जैसे – सूर्य मेष राशि में प्रवेश करने के बाद ८° पार कर गया हो तो वैशाख की ८ तारीख होगी। दृश्य ग्रह स्थिति पञ्चांग, जीवाजी वेधशाला, उज्जैन (म.प्र.), में ग्रेगन तारीख के साथ भारतीय दिनांक का कॉलम दिया है। इसमें २१ मार्च २००० ई. को भारतीय तारीख १ दिखाई है। राष्ट्रीय कैलण्डर के अनुसार चैत्रादि ६ माह ३१–३१ दिनों के तथा अश्विन आदि ६ माह ३०–३० दिनों के होते हैं।

(४) **इस्वी सन् (अंग्रेजी वर्ष)** :- यह काल ईसामसी के निर्वाण दिवस से

---

[४१] प्राचीन भारत (एन.सी.ई.आर.टी) रामशरण शर्मा, अध्याय १६ पृष्ठ १४६

[४२] प्राचीन भारत (एन.सी.ई.आर.टी) रामशरण शर्मा, अध्याय १६ पृष्ठ १५१

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

माना जाता है। इससे पहले का समय ईसा पूर्व (Before Christ) तथा बाद का समय मृत्योपरान्त (After Death) काल कहलाता है। यह रात्रि १२.०० बजे को १ जनवरी से प्रारम्भ होकर ३१ दिसम्बर रात्रि १२.०० बजे तक समाप्त होता है। ज्योतिष के सिद्धान्त ग्रन्थों में इसकाल का कोई उल्लेख नहीं हैं, किन्तु व्यवहारोपयोगी होने के कारण पञ्चांगों में इसका प्रयोग वांछनीय है। वर्तमान में यह वर्ष पृथ्वी के परिक्रमण काल के तुल्य है।

(५) **हिजरी सन्** :- हिजरा का अर्थ है – भागना। मुसलमानों के पैगम्बर मुहम्मद साहब १५ जुलाई सन् ६२२ ई. (शाके ५४४ श्रावण शुक्ल प्रतिपदा गुरूवार) की रात्रि (मुसलमानों की शुक्रवार की रात्रि) को मक्का से मदीना भाग गये थे। उनके भागने का समय ही इस काल की शुरूवात है। यह चान्द्र वर्ष है, जिसके मास मुहर्रम इत्यादि हैं। मास का आरम्भ शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा या द्वितीया के चन्द्रदर्शन के बाद से होता है। मास में चान्द्र दिनों (तिथियों) की संख्या २६ या ३० होती है। अधिमास लेने की पद्धति न होने के कारण यह वर्ष ३५४ या ३५५ दिनों का होता है। वार और तारीख का आरम्भ सूर्यास्त से होता है, इस कारण हमारे यहाँ गुरूवार की रात्रि को मुसलमानी पद्धति में शुक्रवार की रात्रि कहा जाता है परन्तु दिन का नाम समान होता है। उत्तरभारत के पञ्चांगों में इस काल का उल्लेख देखने को मिलता है। निर्णय सागर चण्डमार्त्तण्ड पञ्चांग, नीमच के अनुसार १६ मार्च २००२ ई. को मुहर्रम मास १ मुसलमान हिजरी सन् १४२३ प्रारम्भ होता है।

(६) **बंगाली सन्** :- यह भी सौर्यवर्ष है जो कि बंगाल में प्रचलित है। इसका आरम्भ निरयन मेष संक्रान्ति से होता है। महिनों के नाम चैत्र, वैशाखादि चान्द्र ही है। शाके १६२२ के काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से प्रकाशित विश्व पञ्चांग में दिनांक १५ मार्च २००१ ई. से तथा शाके १६२३ के निर्णय सागर पञ्चांग, नीमच में दिनांक १४ मार्च २००२ ई. से बंग चैत्रमास का आरम्भ दिखाया है।

(७) **फसली सन्** :- उत्तर भारत में यह काल तब प्रारम्भ हुआ जब बादशाह अकबर गद्दी पर बैठा था (ई. सन् १५५६)। फसली सन् सौर्य वर्ष पर आधारित है उत्तर भारत में प्रायः पूर्णिमान्त आश्विन की कृष्ण प्रतिपदा से फसली सन् का आरम्भ मानते है। धार्मिक कृत्यों से इसका कोई सम्बन्ध नहीं है। इस वर्ष का प्रयोग केवल सरकारी लेखा–जोखा के लिये होता था। उत्तर भारत के कुछ एक पञ्चांगों में इस सन् का उल्लेख देखने को मिलता है।

विभिन्न प्रकार के प्रचलित वर्षों का पारस्परिक परिवर्तन निम्न है :–

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विक्रम संवत्	+ ३०४४	=	कलिकाल
शक संवत्	+ ३१७६	=	कालिकाल
शक संवत्	+ १३५	=	विक्रम संवत्
शक संवत्	+ ७८	=	ईसवी सन्
विक्रम संवत्	− ५७	=	ईस्वी सन्
ईस्वी सन्	− ५६२	=	फसली सन्
हिजरी सन्	− १०	=	फसली सन्
फसली सन्	− १	=	बंगाली सन्

(द) दिक्, देश एवं काल का ज्ञान :- सूर्यसिद्धान्त, सिद्धान्त शिरोमणी, सिद्धान्त तत्वविवेक इत्यादि ज्योतिष के ग्रन्थों के त्रिप्रश्नाधिकार भाग में तीन प्रश्नों का विचार किया जाता है जिन्हें दिक् (दिशा), देश (अक्षांशीयदूरी), काल (समय) का ज्ञान कहते हैं[४३] जो निम्नलिखित है –

(१) एक देश या नगर से दूसरा देश या नगर किस दिशा (दिक्) में है ?

(२) अमुक देश विषुवत्तवृत्त से उत्तर या दक्षिण में कितनी दूरी पर है ?

(३) समय का ज्ञान।

प्राचीन काल में इन तीनों प्रश्नों के उत्तर के लिये द्वादशांगुल शंकु की सहायता ली जाती थी। पुराणों एवं सिद्धान्त ग्रन्थों में द्वादशांगुल शंकु का अत्यधिक महत्व दिखाया है।[४४] सूर्य सिद्धान्त में द्वादशांगुल शंकु की छाया द्वारा दिशा ज्ञान की जिस विधि का वर्णन है, वह बहुत स्थूल है।[४५] क्योंकि छाया का प्रवेश एवं निर्गम हमेशा एक समान नहीं होता है। भास्कराचार्य ने सिद्धान्त शिरोमणी में दिक् साधन का एक सूक्ष्म प्रकार बतलाया है।[४६] आचार्य बटेश्वर ने भी दिग्ज्ञान के विविधि रूपों को बतलाया है।[४७] कुछ प्राचीन आचार्यों के अनुसार जिस दिन रवि की स्थिति नाड़ी

---

[४३] जगुर्विदोऽदः किल कालतंत्र, दिग्देशकालावगमोऽत्र यस्मिन्
त्रिप्रश्ननाम्नि प्रचुरोक्तिधाम्नि ब्रुर्वेऽधिकारं तमशेषसारम्। सि.शि., त्रिप्रश्नाधि. श्लोक १

[४४] नारद पुराण, पूर्वभाग २/५४/१२५–१३१

[४५] सूर्य सिद्धान्त, त्रिप्रश्नाधिकार, श्लोक १–४

[४६] सिद्धान्त शिरोमणि, त्रिप्रश्नाधिकार, श्लोक ८–६ एवं इन पर भाष्य

[४७] बटेश्वर सिद्धान्त, त्रिप्रश्नाधिकार, श्लोक २–८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वृतस्थ होती है, उसी दिन दिक् साधन करना चाहिये। उस दिन प्रवेश–निर्गम बिन्दु पर खींची गई रेखा वास्तव में पूर्वापर की समान्तर रेखा होगी, क्योंकि क्रान्ति की गति इस दिन शून्य है। किन्तु सिद्धान्त की दृष्टि से यहाँ भी स्थूलता होगी क्योंकि छाया निर्गम कालीन क्रान्ति, प्रवेश कालीन क्रान्ति के तुल्य कभी नहीं होती है। १६ वीं शताब्दीके प्रसिद्ध ग्रहलाघव करण ग्रन्थ के प्रणेता श्री गणेश दैवज्ञ ने तुरीय यन्त्र से दिशा का साधन किया है।[४८] इनके मतानुसार तुरीय यन्त्र (एक चतुर्थांश की आकृति का वृत) को समतल भूमि पर रखकर इस प्रकार इसे दिगंशों से चिन्हित करें कि वह पूर्वा पर स्थिति में दिखाई दे और तुरीय यन्त्र के केन्द्र बिन्दु पर एक शलाका को इस प्रकार खड़ी करें, जिससे उसकी छाया तुरीय यन्त्र के केन्द्र और दिगंश के अग्र बिन्दु को स्पर्श करे।

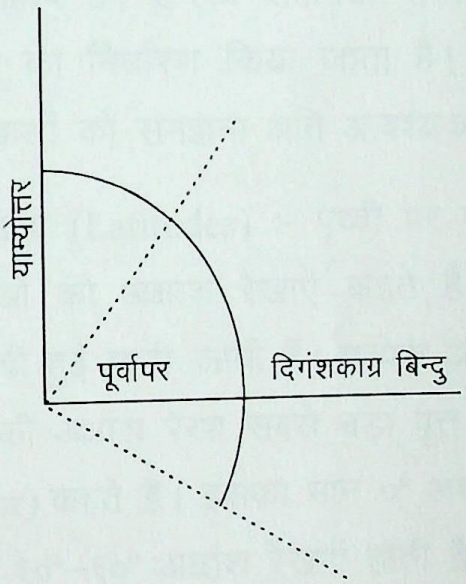

चित्र क्रमांक–१

इस प्रकार उक्त लक्ष्य को सिद्ध करके दोनों के मध्य में एक रेखा खींचे, इस पर पूर्वापर रेखा के मध्य से एक लम्ब खींचने पर याम्योत्तर रेखा का साधन होता है। ग्रहों की आकाशीय स्पष्ट स्थिति को जानकर नलिका वेध से उसे प्रत्यक्ष देखने के लिये दिशाओं का ज्ञान होना आवश्यक है। सारे वैदिक कर्म – यज्ञ, यागादिकों में मंडप आदि का निर्माण, प्राची, प्रतीची इत्यादि को दिशाओं के ज्ञान से नियत किया गया है, तथैव गृह उद्यान जलाशय आदि सारे कार्यों तथा विश्वभ्रमण आदि में दिशाओं का ज्ञान परमावश्यक है।

---

[४८] ग्रहलाघव, त्रिप्रश्नाधिकार, श्लोक २४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

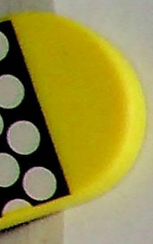

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अक्षांश-देशांतर रेखाओं से दूरी ज्ञान :- प्राचीन काल में भारत वर्ष का खमध्य स्थान उज्जयिनी मानकर उसी स्थान से ग्रह गणित करने की प्रथा थी। उज्जयिनी एवं उत्तरी–दक्षिणी ध्रुवों पर जाने वाली दक्षिणोत्तर रेखा को भारत की ख मध्यरेखा मानते थे।[४६] उससे अपना स्थान जितने योजन★ पूर्व या पश्चिम में होता था, उन्ही योजनों पर देशांतर संस्कार लाने की विधि ग्रन्थों में मिलती है।[५०] श्री भास्कराचार्य ने करणकुतूहल में भूमध्य रेखा का वर्णन लिखा है।[५१] वर्तमान में वैज्ञानिक ग्रीनविच (लंदन) से गुजरती हुई रेखा को देशांतर रेखा मानते है।

आज पञ्चांग में किसी भी स्थान की स्थिति को अक्षांश और देशांतर रेखाओं की सहायता से व्यक्त किया जाता है। पञ्चांग के गणित में अक्षांश व देशांतर रेखाओं का विशेष महत्व है। इनकी सहायता से किसी भी स्थल पर तिथि, वार, नक्षत्र, योग व करण का निर्धारण किया जाता है। पञ्चांग में गणित की दृष्टि से अक्षांक्ष व देशांतर रेखाओं को समझना अति आवश्यक है।

१. अक्षांश रेखाएं (Latitudes) :- पृथ्वी पर पश्चिम से पूर्व समानान्तर खींची हुई काल्पनिक रेखाओं को अक्षांश रेखाऐं कहते हैं। ये पृथ्वी के केन्द्र से समान कोणिक दूरी पर खींची हुई मानी जाती हैं। प्रत्येक अक्षांश रेखा अपने में पूर्ण वृत्त है। पृथ्वी के ठीक मध्य की अक्षांश रेखा सबसे बड़ा वृत्त बनाती है, जिसे भूमध्य रेखा या विषुवत् वृत्त (Equator) कहते है। इसका मान ०° अंश होता है। भूमध्य रेखा से उत्तर तथा दक्षिण दिशा में ६०°–६०° अक्षांश रेखाऐं होती हैं। भूमध्य रेखा से उत्तर का भाग उत्तरी गोलार्द्ध एवं दक्षिण का भाग दक्षिणी गोलार्द्ध कहलाता है। ६०° उत्तर एवं ६०° दक्षिण बिन्दुमान हैं जो क्रमशः उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुव कहलाते हैं। शून्य अक्षांश रेखा से २३° ३०′ उत्तरी एवं २३° ३०′ दक्षिणी अक्षांश रेखाऐं क्रमशः कर्कवृत एवं मकरवृत कहलाती है। इन रेखाओं का महत्व इसलिये है क्योंकि ये सूर्य के लम्बवत् चमकने

---

[४६] सूर्यसिद्धान्त, मध्यमाधिकार,श्लोक ७२;नारदपुराण, पूर्वभाग २/५४/८६ एवं सि.शि.मध्याम,श्लोक २

★१योजना= ४कोस या ८मील। रेखादेश (उज्जयिनी) से काशी नगरी ६४योजन पूर्व में स्थित है।

[५०] निज–निज पुर रेखान्तः स्थितात् स्व–स्वनगर रेखान्तर्गतात्,
योजनौघात् योजन–समूहात्, रसलवमितलिप्ताः षष्ठांशतुल्यकलाः
परे प्राक् इन्दौ चन्द्रमसि, स्वर्ण स्व स्वनगर रेखातः परे पश्चिमे
देशे सति स्वं धनमृणं च भवतीत्याशयः। ग्रहलाघव, मध्यमाधिकार, श्लोक ६ की तारा

[५१] करणकुतूहल, १/१४ श्लोक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

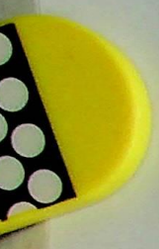

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(क्रांति) की क्रमशः उत्तरी एवं दक्षिणी सीमाऐं हैं। २१–२२ जून को कर्क रेखा पर तथा २२–२३ जून को मकर रेखा पर सायन सूर्य की किरणें लम्बवत् पड़ती हैं।

२. देशांतर रेखाऐं (Longitudes) :- उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव को मिलाने वाली अर्द्धवृत्ताकार काल्पनिक रेखाऐं देशांतर रेखाऐं (रेखांश) कहलाती है। इनकी कुल संख्या ३६० है। इनकी गणना लन्दन के निकट ग्रीनविच वेधशाला से १८० अंश पूर्वी तथा १८० अंश पश्चिमी देशांतरों के रूप में होती है। ग्रीनविच देशांतर को शून्य देशांतर रेखा या मध्यान्त रेखा (Mecideams) कहते है।

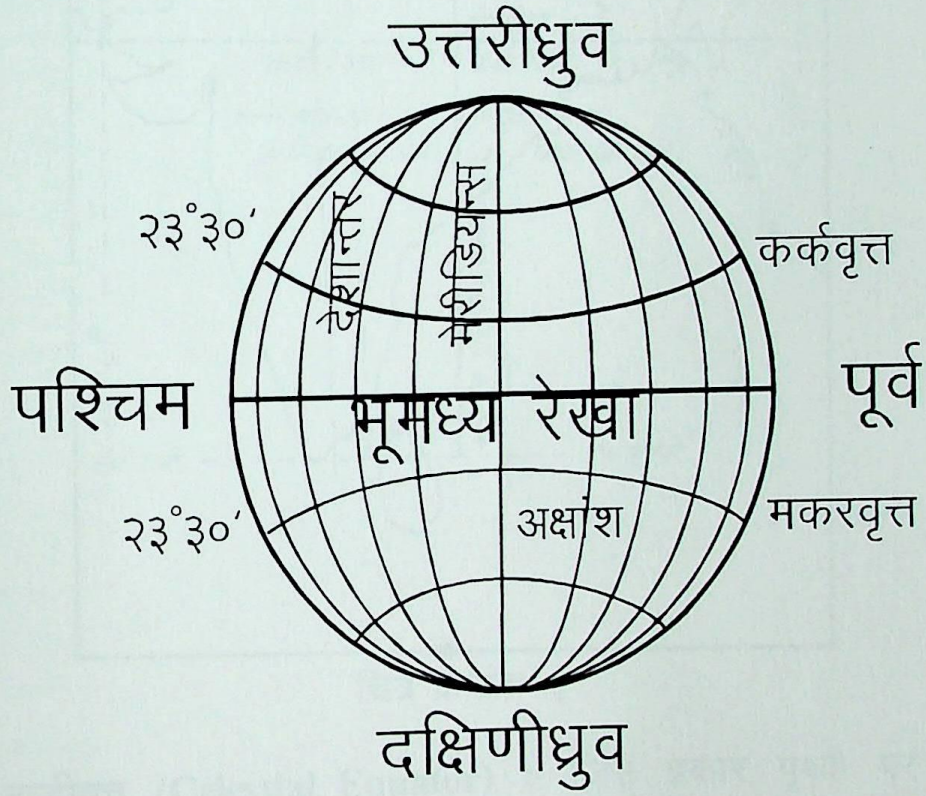

चित्र क्रमांक–२

पृथ्वी अथवा भारत के मानचित्र पर किसी स्थल की स्थिति को अक्षांश व देशांतर रेखाओं के कटान बिन्दु के रूप में व्यक्त किया जाता है। जैसे :– दिल्ली २८°३६' उत्तरी अक्षांश एवं ७७°१३' पूर्वी देशान्तर रेखाओं के कटान बिन्दु पर स्थित है। इसी प्रकार ग्वालियर भारत के मानचित्र पर २६°१६' उत्तरी अक्षांश तथा ७८°१०' पूर्वी देशांतर रेखाओं के कटाने बिन्दु पर स्थित है। भारत के निम्नलिखित रेखाचित्र (मानचित्र) में ग्वालियर एवं दिल्ली की स्थिति को अक्षांश व देशांतर रेखाओं की सहायता से स्पष्ट किया है –

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

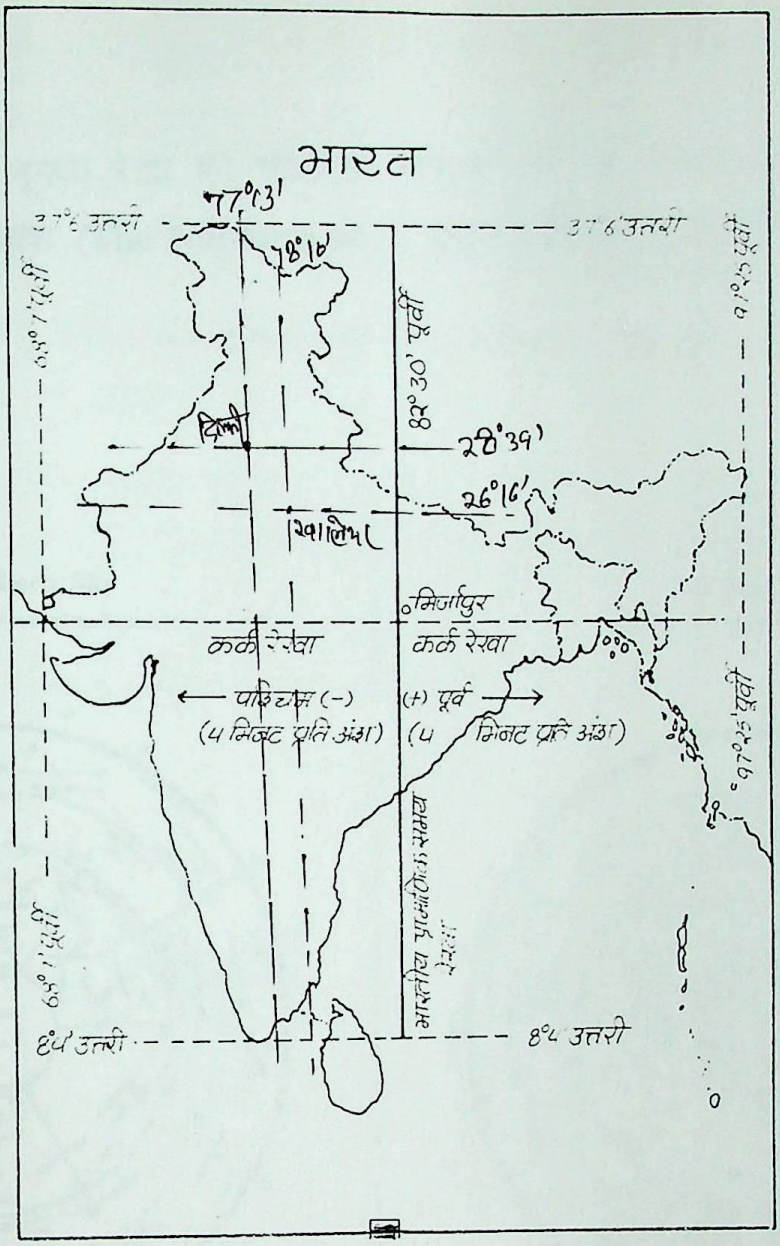

चित्र क्रमांक–३

३. **नाड़ीवृत्त (Celestial Equator)** :- जिस प्रकार पृथ्वी पर अक्षांश व देशांतर रेखाऐं मानी गई हैं। उसी प्रकार आकाश में भी इन्हीं की सीध में आकाशीय अक्षांश–देशांतर रेखाओं की कल्पना की गई है। वृत्ताकार भूमध्य रेखा के ठीक ऊपर आकाश में एक विशाल वृत की कल्पना की गई है, जिसकी परिधि आकाश में अनंत दूरी पर स्थित नक्षत्र मण्डल (राशिचक्र) को स्पर्श करती है। नक्षत्र मण्डल पर बनने वाले इस विशाल वृत्त को, जो पृथ्वी पर बने विषुवत वृत का विस्तारित रूप है, नाड़ीवृत्त या खगोलीय विषुवत् कहते है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नाड़ीवृत्त भूमध्य रेखा की भाँति ही आकाश को दो समान भागों में बाँटता है एक उत्तरी आकाश (The Northern sky) दूसरा दक्षिणी आकाश (The Southern Sky)

The Northern Sky

(Extended up to 25° South of the Equator)

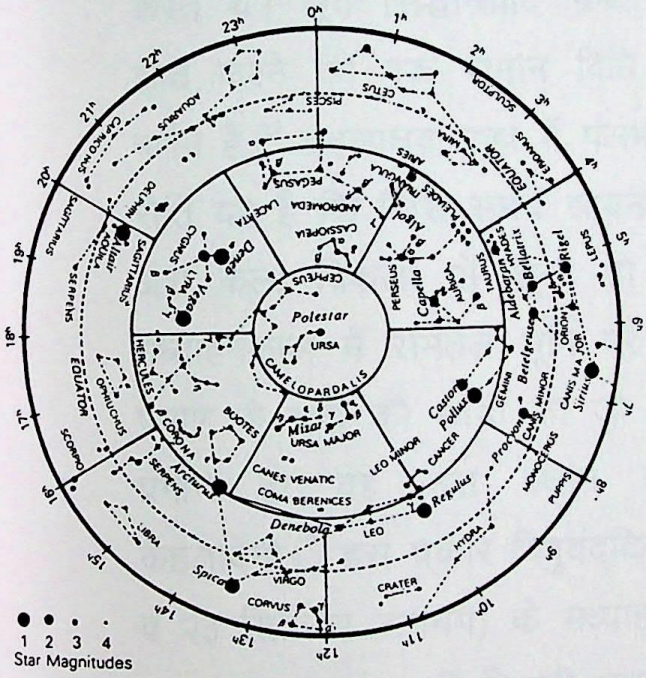

(The numerals around the edge of the circle indicate **Right Ascension**)

Dotted line indicate Equator

Bright Stars

Vega *(Abhijit)*, Capella *(Brahmahriday)*, Arcturus *(Svati)*, Procyon *(Sarama)*, Altair *(Sravana)*, Betelgeuse *(Ardra)*, Aldebaran *(Rohini)*, Pollux *(Punarvasu)*, Regulus *(Magha)*, Sirius *(Lubdhaka)*

[ ]

The Southern Sky

(Extended up to 25° North of the Equator)

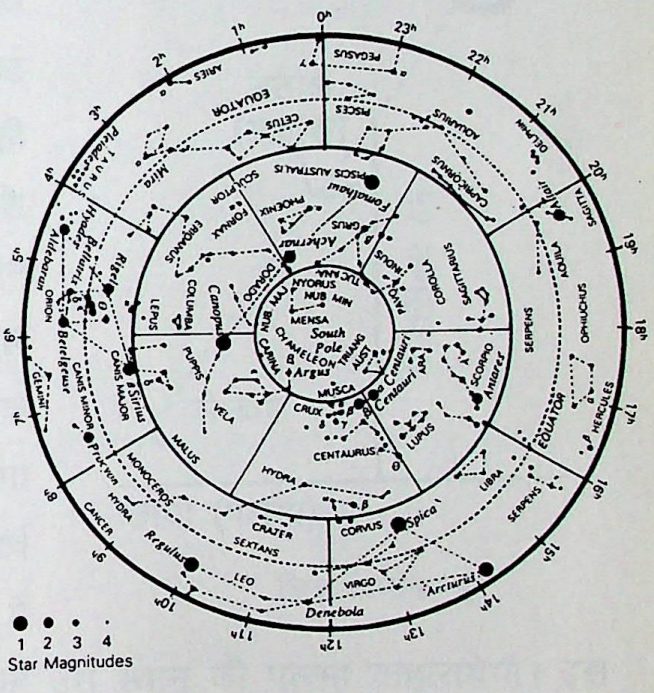

(The numerals around the edge of the circle indicate **Right Ascension**)

Dotted line indicate Equator

Bright Stars

Canopus *(Agastya)*, Alpha Centauri *(Kinnar)*, Beta Centauri, Rigel *(Vanaraja)*, Achernar *(Sulatara)*, Antares *(Jyestha)*, Fomulhaut, Spica *(Chitra)*, Alpha Crucis, Deneb *(Krishnasakha)*

[ ]

चित्र क्रमांक–४

सोजन्य – लहरी ऐफेमरीज से रेखा चित्र

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

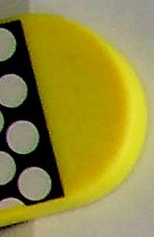

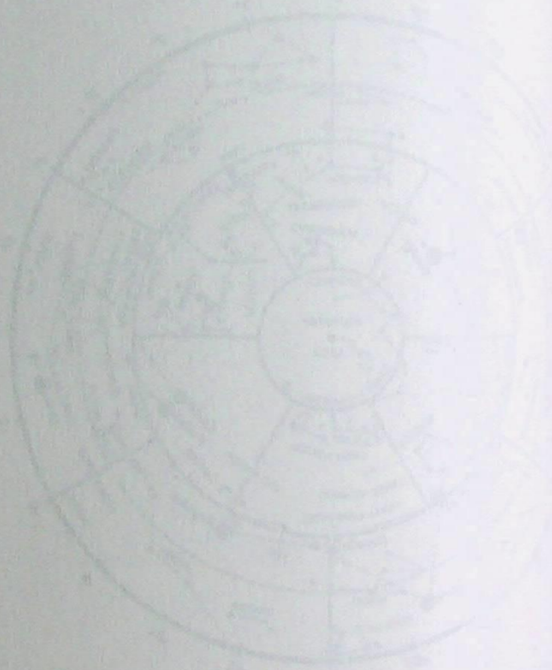

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४. क्रान्तिवृत्त (Ecliptic) :- सूर्य के चारोंओर पृथ्वी के घूमने के मार्ग को क्रान्तिवृत कहते है। यह बृहदवृत्त नाड़ीवृत से लगभग २३° ३०′ का कोण बनाता है। समस्त आकाश (क्रान्तिवृत) के देशांतरीय विस्तार को राशियों की दृष्टि से १२ मुख्य भागों में तथा नक्षत्रों की दृष्टि से २७ उपविभागों में विभाजित किया है।[५२]

इस प्रकार एक राशि में ३६० ÷ १२ = ३० अंश तथा एक नक्षत्र में ३६० ÷ २७ = १३° २०′ का क्षेत्र होता है।

५.पलभा :- प्राचीन काल में अक्षांश व देशांतर रेखाओं के प्रचलन से पूर्व गणितज्ञ पलभा के द्वारा ही पृथ्वी पर किसी स्थान विशेष की स्थिति ज्ञात करते थे। उस स्थित के आधार पर पञ्चांगीय गणना करते थे। सूर्य सिद्धान्तादि ग्रन्थों में पलभा ज्ञात करने की एक समान विधि का स्पष्ट वर्णन हैं।[५३] ग्रहलाघव ग्रन्थ में पलभा लाने की रीति यह है कि जिस समय सायन सूर्य राशि अंश कला विकला से शून्य हो उस दिन मध्याह्नकाल में समतल भूमि पर १२ अंगुल प्रमाण के शंकु की छाया का जो अंगुलात्मक प्रमाण हो वह उस स्थान की पलभा कहलायेगी।[५४] इस प्रकार विषुवद्दिन (२१ मार्च व २३ सितम्बर लगभग) के मध्याह्न काल में १२ अंगुल के शंकु की जितनी छाया होगी वह उस स्थान की पलभा कहलायेगी। इस दिन विषुवत् रेखा पर शंकु की छाया शून्य होती है। परन्तु जैसे–जैसे ध्रुवों की ओर बढ़ते है शंकु की छाया (पलभा) बढ़ती जाती है। वास्तव में पलभा स्थान विशेष पर सूर्य की किरणों का तिरछा (oblique) होना है। सिद्धान्त शिरोमणी के अनुसार विषुवत दिन को ठीक मध्याह्न काल में सूर्य की किरणों का तिरछापन नतांश

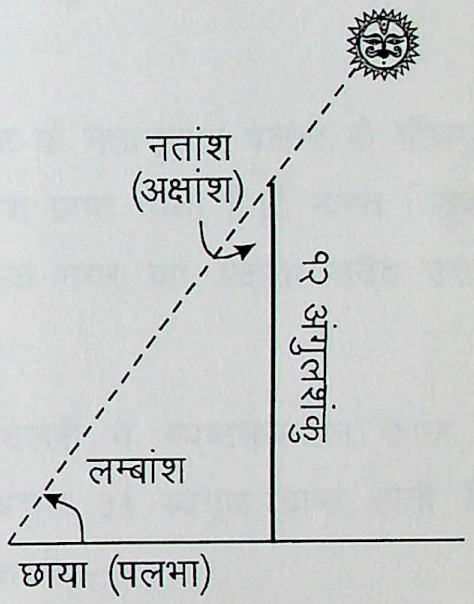

चित्र क्रमांक–५

---

[५२] पुनर्द्वादशधात्मानं व्यभजद्राशिसंज्ञकम् !
नक्षत्ररूपिणं भूयः सप्तविंशात्मकं वशी। सूर्यसिद्धान्त, भूगोलाध्याय, श्लोक २५

[५३] सूर्यसिद्धान्त, त्रिप्रश्नाधिकार, श्लोक१२–१६ एवं सिद्धान्त शिरोमणि, त्रिप्रश्नाधिकार श्लोक ४५,४६

[५४] मेषादिगे सायनाभागसूर्य्ये दिनार्द्धजाभापलभा भवेत्सा। ग्रहलाघव रविचंन्द्र स्पष्टाधिकार श्लोक ३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

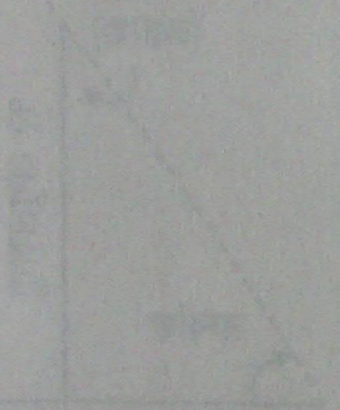

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(अक्षांश) कहलाता है और उसी समय सूर्य की जो उन्नति या उन्नतांश होगा वह लम्बांश कहलाता है।[५५] त्रिकोणमिति के शब्दों में पलभा एक समकोण त्रिभुज के लम्ब की छाया अर्थात् आधार की लम्बाई है।

उत्तर भारत के अधिकांश पञ्चांगों में भारत के प्रमख नगरों की पलभा का उल्लेख न करते हुये अक्षांश का प्रयोग किया गया है। शाके १६२२ के श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग, शिवविनोदी मदनमोहन पञ्चांग, करौली, विद्यापीठ पञ्चांग, दिल्ली, श्री महावीर पञ्चांग, काशी इत्यादि में प्रमुख नगरों की पलभा ज्ञान सारणी दी है जबकि वाणीभूषण पञ्चांग, पञ्चांग दिवाकर, श्री आर्यभट्ट पञ्चांग, श्री काशी विश्वनाथ पञ्चांग, एवं निणर्य सागर पञ्चांग, नीमच इत्यादि में प्रमुख नगरों की अक्षांश सारणी दी है किन्तु पलभा सारणी नहीं है।

पलभा से अक्षांश ज्ञात करना :– आचार्य गणेश दैवज्ञ के मतानुसार पलभा के पाँचगुने में उसके वर्ग का १० वाँ भाग घटाने पर इष्ट अक्षांश प्राप्त होता है।[५६] भारत विषुवत रेखा के उत्तर में स्थित है इसलिये भारत के प्रत्येक नगर का अक्षांश सदैव उत्तरी होता है।

उदाहरणार्थ :– २१ मार्च एवं २३ सितम्बर को दिल्ली में स्पष्टमध्याह्न काल में द्वादशांगुल शंकु की छाया (पलभा) की माप ६ अंगुल ३३ व्यंगुल प्राप्त होती है। पलभा के इस मान से हम दिल्ली के अक्षांश ज्ञात करेंगे –

$६ : ३३ \times ५ = ३० : १६५$ = ३२ अंश ४५ कला

$(६ : ३३)^२$ = ४२ : ५४ ÷ १० = ४ अंश १७ कला

अक्षांश = ३२° ४५′ – ४° १७′ = २८ अंश २८ कला उत्तरी

त्रिकोणमितीय सूत्र से त्रिभुज अ ब स में,

$$\text{स्पर्शज्या} = \frac{\text{दिल्ली की पलभा}}{१२}$$

$$\tan\theta = \frac{\text{दिल्ली की पलभा}}{१२}$$

$$\tan\theta = \frac{६ \text{ अंगुल } ३३ \text{ व्यंगुल}}{१२}$$

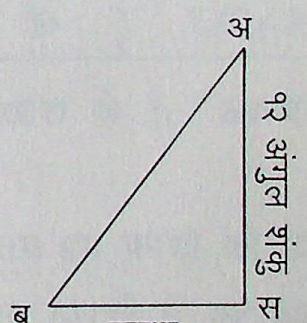

चित्र क्रमांक–६

[५५] सिद्धान्त शिरोमणि, त्रिप्रश्नाधिकार, श्लोक १२ एवं भाष्य

[५६] ग्रहलाघव, रविचन्द्र स्पष्टधिकार, श्लोक ६ क्षेपक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

$$\theta = \tan^{-1}\left(\frac{६ : ३३}{१२}\right)$$

$$\theta = \tan^{-1}(०.५४५८) = २८.६२१७ = २८^{\circ}\ ३७'\ ३७''\ \text{उत्तरी}$$

यह मान दिल्ली के अक्षांश (२८°३८') के लगभग बराबर है। अतः यह विधि प्रथम (ग्रहलाघवी) विधि से ज्यादा प्रमाणित है। इस प्रकार किसी भी स्थान की पलभा की माप से उस स्थान के अक्षांश ज्ञात किये जा सकते हैं।

अक्षांश से पलभा ज्ञात करना :– प्रत्येक नगर (स्थान) की पलभा अपने स्थान के अक्षांशों से निम्नलिखित पलभाज्ञानार्थ चक्र की सहायता से ज्ञात कर सकते हैं।[५७]

पलभा ज्ञानार्थ चक्र

अक्षांश	पलभा (अंगुलात्म)	अक्षांश	पलभा (अंगु.)	अक्षांशः	पलभा अंगु
५	१/३/०	१६	३/२६/२४	२७	६/६/५०
६	१/१५/४४	१७	३/४०/५	२८	६/२२/४८
७	१/२८/२३	१८	३/५३/५६	२९	६/३६/४
८	१/४१/१०	१९	४/७/५५	३०	६/५५/४१
९	१/५४/५०	२०	४/२२/१	३१	७/१२/३६
१०	२/६/५४	२१	४/३६/२२	३२	७/२६/५३
११	२/१६/५५	२२	४/५०/५१	३३	७/४७/३१
१२	२/३३/०	२३	५/५/३८	३४	८/५/३८
१३	२/४६/१२	२४	५/२०/३१	३५	८/२४/७
१४	२/५९/२८	२५	५/३५/४२	३६	८/४३/५
१५	३/१२/५४	२६	५/५१/७	३७	९/२/३५

मानचित्र में भारत की स्थिति उत्तरी गोल में लगभग ८° अक्षांश से ३८° अक्षांश के बीच है।

उदाहरणार्थ :– काशी का अक्षांश २५°१८' उत्तरी है तब हम काशी की पलभा उपर्युक्त सारणी की सहायता से निम्नानुसार ज्ञात करेगें।पलभा सारणी में २५° अक्षांश की पलभा(अंगुलात्मक)५/३५/४२ है। तब १८'कला की पलभा निकालने के लिये,

---

[५७] मकरन्द प्रकाश, पं. लषणलाल झा, स्पष्टाधिकार, श्लोक ३३ पेज ७८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२६° अक्षांश की पलभा – २५° अक्षांश की पलभा = अन्तर

५/५१/७ – ५/३५/४२ = ०/१५/२५

यह अन्तर एक अंश (६० कला) की पलभा है।

अतः १८′ की पलभा = $\frac{०/१५/२५ \times १८}{६०}$ = ०/४/३७ अंगुलात्मक

तब काशी की पलभा = ५/३५/४२ + ०/४/३७ = ५/४०/२१

अर्थात् ५ अंगुल ४० व्यंगुल २१ प्रतिव्यंगुल काशी की पलभा का माप है

त्रिकोणमिति की सहायता से बिना पलभा ज्ञान सारणी के केवल अक्षांश की सहायता से पलभा ज्ञात की जा सकती है।[५८] उपर्युक्त उदाहरण में देखें

सूत्र – पलभा = अक्षांश की स्पर्शज्या × १२ (शंकु की ऊँचाई)

= tan (२५°१८′) × १२

= ०.४७२६६ × १२

= ५.६७२ = ५/४०/२०.५

अतः काशी (२५°१८′ उ.अक्षांश) की पलभा ५ अंगुल ४० व्युंगुल २०.५ प्रतिव्यंगुल होगी। उपर्युक्त दोनों विधियों से काशी की पलभा का मान एक समान आता है। इस प्रकार हम अक्षांश से पलभा तथा पलभा से अक्षांश, नतांश इत्यादि ज्ञात कर सकते है। आगे हम पलभा की सहायता से चरखण्ड ज्ञात करगें और चरखण्ड संस्कार द्वारा लंकोदय लग्नमानों को स्वोदय लग्न मानों में बदलेने की प्रक्रिया देखेंगे।

(इ) अयन :- ज्योतिष ग्रन्थों में दो प्रकार के अयन बतलाये हैं :– उत्तरायण और दक्षिणायन। महर्षि नारद के मत से सूर्य के राशि भोग के आधार पर मकर से मिथुन राशि पर्यन्त ६ मास का सौम्यायान (उत्तरायण)देवताओं का दिन और कर्क से धनु राशि पर्यन्त ६ मास का दक्षिणायन देवताओं की रात्रि होती है।[५९]

उत्तर भारत के पञ्चांगों में सूर्य की अयन में स्थिति का उल्लेख रहता है। अयन से तात्पर्य सूर्य की गति की दिशा से है। पृथ्वी की धुरी के लगभग २३° ३०′

---

[५८] केतकीग्रह गणित, केतकी स्पष्टाधिकार, पृ. १११

[५९] सौम्यायनं मासषट्कं मृगाद्यं भानुभुक्तितः।
अहः सुराणां तद्रात्रिः कर्काद्यं दक्षिणायनम्। नारद पुराण, पूर्वभाग २/५६/१२५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

झुकाव के कारण सूर्य का कर्क रेखा से दक्षिण की ओर तथा मकर रेखा से उत्तर की ओर यात्रा आरम्भ करना क्रमशः दक्षिणायन एवं उत्तरायण कहलाता है। आचार्य वराहमिहिर के मतानुसार पूर्वकाल में आश्लेषा के आधे से दक्षिणायन तथा धनिष्ठा से उत्तरायण होता था।[५] वर्तमान में कर्क तथा मकर से होता है। मकर संक्रान्ति से ६ राशियों में जब सूर्य रहता है उसको उत्तरायण काल कहते हैं तथा कर्क से जब ६ राशियों में सूर्य रहता है उसको दक्षिणायन कहते है।

निरयन सूर्य उत्तरायण में १४ जनवरी से १६ जुलाई तक रहता है तथा दक्षिणायन में १७ जुलाई से १३ जनवरी तक रहता है। विक्रम संवत् २०५१ से २०५५ तक के पंचवर्षीय सरस्वती पञ्चांग में १७ जुलाई (शाके १६१६ अषाढ़ शुक्लाष्टमी शनिवार, शाके १६१७ श्रावण कृष्ण पंचमी रविवार, शाके १६१८ अधिक अषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा मंगलवार, शाके १६१६ अषाढ़ शुक्ल एकादशी बुधवार एवं शाके १६२० श्रावणकृष्ण सप्तमी बुधवार) को निरयन सूर्य कर्क राशि में प्रवेश कर रहा है। उत्तर भारत के अन्य पञ्चांगों में भी दक्षिणायन में निरयन सूर्य को १७ जुलाई से १३ जनवरी तक कर्कादि से धनुषान्त तक रहता है। इसी प्रकार उत्तरायण में निरयन सूर्य को १४ जनवरी से १६ जुलाई तक मकरादि से मिथुनान्त तक रहता है।

ज्योतिष के सिद्धान्त ग्रन्थों के अनुसार उत्तरायण में सायन सूर्य मकर, कुम्भ, मीन (दक्षिणी गोलार्द्ध) राशियों तथा मेष, वृष, मिथुन (उत्तरी गोलार्द्ध) राशियों में संचरण करता है, दक्षिणायन में यह कर्क, सिंह, कन्या (उत्तरी गोलार्द्ध) राशियों तथा तुला, वृश्चिक, धनु (दक्षिणी गोलार्द्ध) राशियों में संचरण करता है।

सायनसूर्य २१–२२ दिसम्बर को मकर रेखा पर लम्बवत् चमकता है तथा मकर राशि में प्रवेश करता है। इसी दिन सायनसूर्य से मकर संक्रान्ति होती है। २२ दिसम्बर से २१ जून तक सायनसूर्य उत्तर की ओर यात्रा करता है। यह काल उत्तरायण है। २१ जून को सायन सूर्य कर्क रेखा पर लम्बवत् चमकता हैं और कर्क राशि में प्रवेश करता है। सायन कर्क राशि में प्रवेश करते ही कर्क रेखा से सूर्य की दक्षिण की ओर यात्रा प्रारम्भ हो जाती है। २१ जून से २१ दिसम्बर तक सूर्य दक्षिणायन में रहता है।

---

[५] आश्लेषार्धादृक्षिणमुत्तरमयनं रवेर्धनिष्ठाद्याम्।
नूनं कदाचिदासीद्यदुक्तं पूर्वशास्त्रेषु। वृहत्संहिता, अध्याय ३, आदित्यचाराध्याय, श्लोक १,२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जिस दिन से दिनमान घटने लगे उस दिन से सायन सूर्य दक्षिणायन में और जिस दिन से दिनमान बढ़ने लगे उस दिन से सायन सूर्य उत्तरायणमें दर्शाया जाता है, यह बात आकाश में प्रत्यक्षः दिखाई देने लगती है। उत्तर भारत के पञ्चांगों का अवलोकन करने पर हम पाते है कि उत्तरायण में दिनमान बढ़ रहा है और दक्षिणायन में दिनमान घट रहा है। उदाहरणार्थ :– निर्णय सागर पञ्चांग, नीमच के अनुसार प्रतिवर्ष २२ जून से दिनमान घटता है। प्रतिवर्ष २२ जून को दिनमान ३४ घटी १६ पल होता है जो कि घटते–घटते २२ दिसम्बर तक २५ घटी ४४ पल ही रह जाता है। निर्णय सागर पञ्चांग में इस काल में सूर्य की स्थिति दक्षिणायन में दिखाई है। पुनः २३ दिसम्बर को दिनमान २५ घटी ४४ पल से बढ़ना शुरू करता है जो कि २१ जून को ३४ घटी १५ पल तक पहुँच जाता है। पञ्चांग में इस काल में सूर्य की स्थिति उत्तरायण में दिखाई है।

(क) ऋतुः- वेदों से लेकर ज्योतिष के सिद्धान्त ग्रन्थों में ऋतुओं का वर्णन हुआ है।[६१] महर्षि नारद ने चान्द्रमासों के आधार पर ऋतु विभाजन किया है। महर्षि नारद के मत से माघ से आरम्भ करके दो–दो मास की शिशिर आदि ऋतुऐं होती है अर्थात् माघ–फाल्गुन मास में शिशिर, चैत्र–वैशाख मास में वसन्त, जेष्ठ–अषाढ़ में ग्रीष्म,

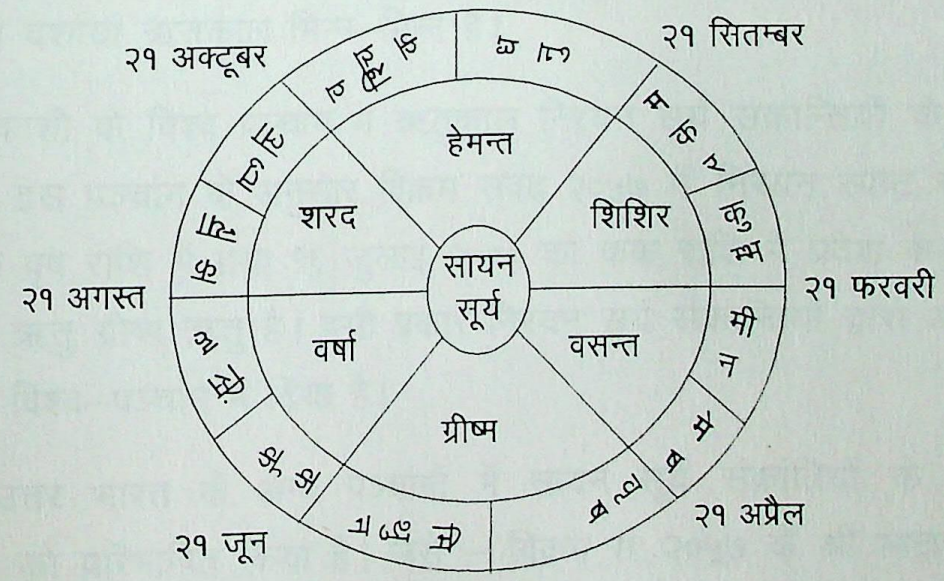

चित्र क्रमांक–७

[६१] तस्य ते वसन्तः शिरः। ग्रीष्म दक्षिणः पक्षः।
वर्षाः पुच्छं। शरदुत्तरः पक्षः। हेमन्तो मध्यम्। तैत्तिरीय ब्राह्मण संहिता ३/१०/४/१
एवं शतपथ ब्राह्मण संहिता ६/७/१/१८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

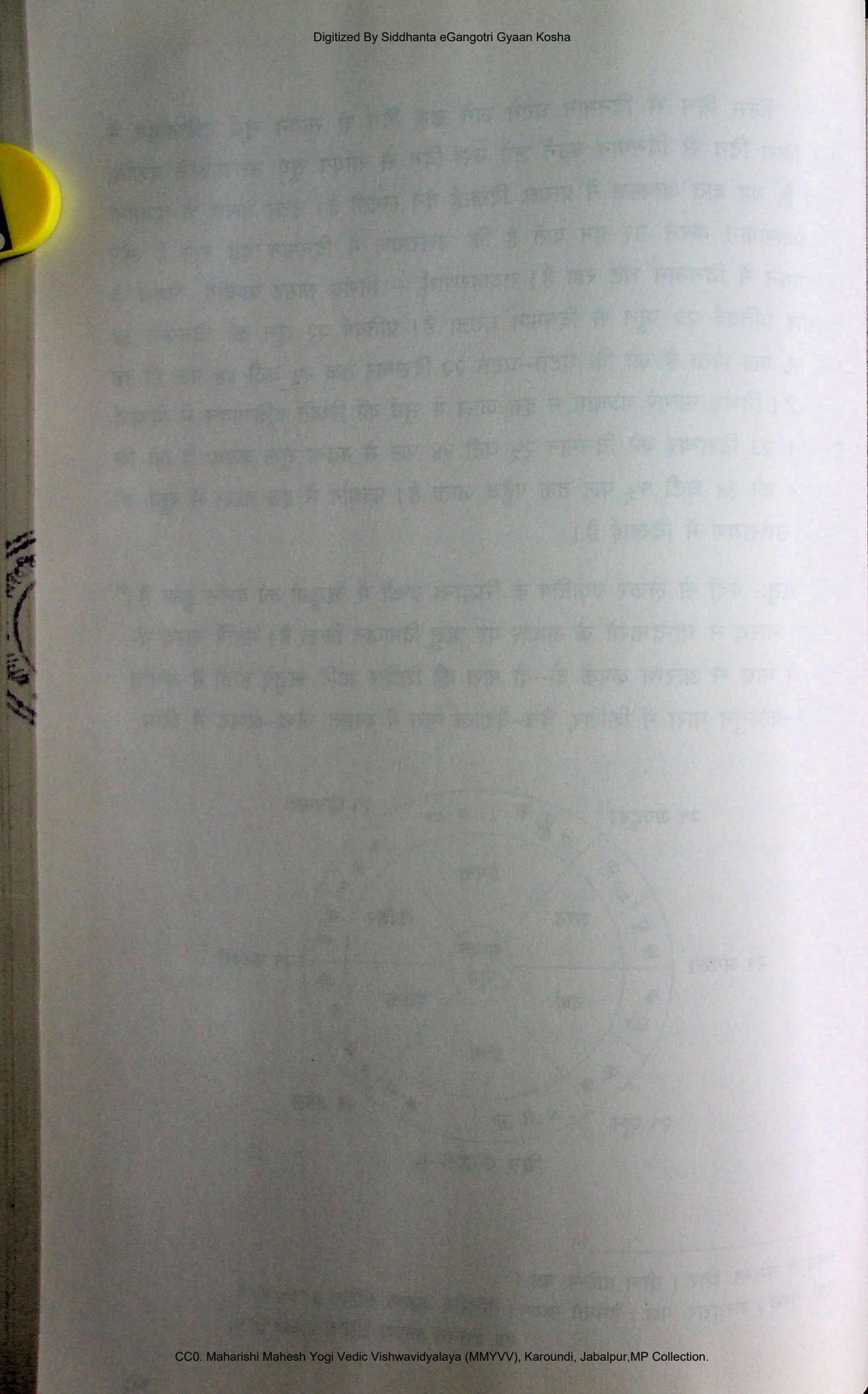

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्रावण–भाद्रपद में वर्षा, अश्विनी–कार्तिक में शरद एवं मार्गशीर्ष–पौष में हेमन्त ऋतु होती है। मकर से दो–दो राशियों में सूर्यभोग के अनुसार क्रमशः शिशिर, वसन्त एवं ग्रीष्म ऋतुऐं उत्तरायण में तथा कर्क से दो–दो राशियों में सूर्य भोग के अनुसार क्रमशः वर्षा, शरद एवं हेमन्त ऋतुऐं दक्षिणायन में होती है।[६२] सूर्यसिद्धान्त में सूर्य संक्रान्ति के आधार पर ऋतु–विभाजन बतलाया है।[६३]

पञ्चांग में ऋतुऐं प्रत्येक पृष्ठ पर ऊपर की पक्ति में लिखी रहती है। उत्तर भारत के पञ्चांगों में ऋतुकाल दो प्रकार से दिया है। कुछ पञ्चांगों में सायन सूर्य संक्रीति के आधार पर तथा कुछ पञ्चांगों में चान्द्रमास के आधार पर ऋतुकाल दिया है। विक्रम संवत् २०५७ के वल्लभ मनीराम पञ्चांग में वैशाख शुक्ल प्रतिपदा से आषाढ़ कृष्ण अमावस्या तक ग्रीष्म ऋतु, अषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा से भाद्र कृष्ण अमावस्या तक वर्षाऋतु, भाद्रशुक्ल प्रतिपदा से कार्तिक कृष्ण अमावस्या तक शरद ऋतु तथा इस क्रम से आगे अन्य ऋतुओं का काल दर्शाया है, जबकि इसी वर्ष में काशी के श्री हृषीकेष पञ्चांग में ग्रीष्मऋतु काल वैशाख शुक्ल प्रतिपदा से अषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा तक (२ चान्द्रमास), वर्षा ऋतुकाल श्रावण कृष्ण प्रतिपदा से आश्विन अमावस्या तक तथा शरद ऋतुकाल आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या तक दिया है। अतः स्पष्ट है कि श्री हृषीकेष पञ्चांग एवं वल्लभ मनीराम पञ्चांग में दर्शाया ऋतुकाल भिन्न–भिन्न है।

काशी के विश्व पञ्चांग में ऋतुकाल निरयन सूर्य संक्रान्तियों के आधार पर दिया है। इस पञ्चांग के अनुसार विक्रम संवत् २०५७ में निरयन स्पष्ट सूर्य १५ मई २००० को वृष राशि में तथा १६ जुलाई २००० को कर्क राशि में प्रवेश करता है। इस काल की ऋतु ग्रीष्म ऋतु है। इसी प्रकार निरयन सूर्य संक्रान्तियों द्वारा अन्य ऋतुओं का काल विश्व–पञ्चांग में दिया है।

उत्तर भारत के अन्य पञ्चांगों में सायन सूर्य संक्रांतियों के आधार पर ऋतुकाल को परिभाषित किया है। जैसे – विक्रम सं. २०५७ के श्री मात्तण्र्ड पञ्चांग,

---

[६२] माघादिमासौ द्वौ–द्वौ च ऋतवः शिशिरादयः।
मृगाच्छिशिखसंतश्च ग्रीष्माः स्युश्चोत्तरायणे।।
वर्षा शरच्च हेमंतः कर्काद्धै दक्षिणायने।। नारदपुराण, पूर्वभाग२/५६/१२७ परार्ध, १२८

[६३] द्विराशिनाथा ऋतवस्ततोऽपि शिशिरदयः
मेषादयो द्वादशैते मासास्तैरेव वत्सरः।। ११।। सूर्य सिद्धान्त, मानाध्याय, श्लोक ११

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विद्यापीठ पञ्चांग, श्री आर्यभट्ट पञ्चांग एवं दिवाकर पञ्चांग इत्यादि में दर्शाया ऋतु काल एक समान है, जो इस प्रकार है –

सारणी क्रमांक–१

ऋतुनाम	ऋतुकाल	सायन सूर्य राशि
ग्रीष्म	१६ अप्रैल २००० ई. से २० जनू २००० ई. तक	वृष–मिथुन
वर्षा	२१ जून २००० ई. से २१ अगस्त २००० ई. तक	कक्र–सिंह
शरद	२२ अगस्त २००० ई. से २२ अक्टूबर २००० ई. तक	कन्या–तुला
हेमंत	२३ अक्टुबर २००० ई. से २० दिसम्बर २००० ई. तक	वृश्चिक–धनु
शिशिर	२१ दिसम्बर २००० ई. से १७ फरवरी २००१ ई. तक	मकर–कुम्भ
वसंत	१८ फरवरी २००१ ई. से १८ अप्रैल २००१ ई. तक	मीन–मेष

जिस समय ऋतु का ज्ञान करना हो उस दिन के निरयन स्पष्ट सूर्य में अयनांश जोड़कर सायन सूर्य बना लें और सायन मेषादि संक्रान्तियों के आधार पर ऋतु को आनयन करें।

(ख) सम्पात (Equinox) :- सूर्य का दैनिक पथ (क्रान्तिपथ) विषुवत रेखा पर लम्बवत् न होकर लगभग २३° ३०′ झुका हुआ है। नाड़ीवृत एवं क्रान्तिवृत्त एक दूसरे को दो स्थानों पर काटते हैं। ये दोनों स्थान एक दूसरे से १८० अंश के अन्तर पर होते हैं। सूर्य विषुवत रेखा को इन दोनों बिन्दुओं पर होकर वर्ष में दो बार पार करता है उन्हें सम्पात बिन्दु कहते हैं। इनमें से एक स्थान वसन्त सम्पात् (Vernal Equinox) या मेष का प्रथम बिन्दु तथा दूसरा स्थान शरद सम्पात् (Autumnal Equinox) कहलाता हैं। इन्हीं दोनों बिन्दुओं को अयन भी कहते हैं। सम्पातकाल (२१ मार्च व २३ सितम्बर) को सायन सूर्य की किरणें विषुवत् रेखा पर लम्बवत् पड़ती हैं।

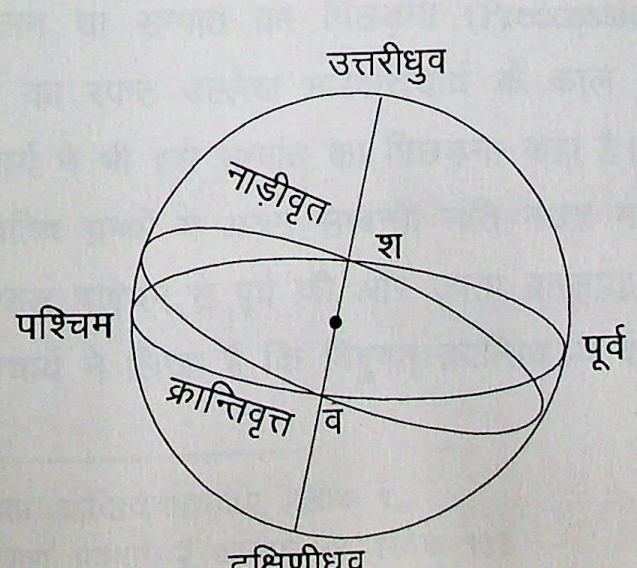

ब – वसन्त सम्पात विन्दु
श – शरद सम्पात विन्दु
ब श – उत्तरी गोलार्द्ध
श ब – दक्षिणी गोलार्द्ध

चित्र क्रमांक–८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जब सूर्य क्रान्तिवृत्त में घूमते हुये नाड़ीवृत्त को स्पर्श करता है, तब प्रथम सम्पात् बिन्दु को उत्तर सम्पात कहते हैं। यहीं से सायन सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध में प्रवेश करता है। उस समय पृथ्वी पर दिन–रात समान अवधि के होते हैं। यह स्थिति प्रतिवर्ष २१ मार्च के लगभग होती है। सायन मेषारम्भ इसी बिन्दु से माना जाता है। इसी स्थान से ग्रहों का भोगांश एवं विषुवांश नापा जाता है। पञ्चांगों में सायन मेष संक्रमण वसन्त ऋतु का आरम्भ माना जाता है। इसी समय सूर्य ठीक पूर्व में उदित होता है।

शरद सम्पात् को दक्षिण सम्पात भी कहते है। यहीं से सूर्य दक्षिणी गोलार्द्ध में प्रवेश करता है। उस समय पृथ्वी पर पुनः दिनरात समान अवधि के होते हैं। यह स्थिति प्रतिवर्ष लगभग २३ सितम्बर को होती है। सायन तुलारम्भ इसी बिन्दु से माना जाता है। इस समय भी सूर्य ठीक पूर्व में उदित होकर ठीक पश्चिम में अस्त होता है।

(ग) अयनचलन :- क्रान्तिवृत्त और नाड़ीवृत्त के सम्पात बिन्दु नक्षत्र मण्डल में जिन तारों के पास होते हैं, वे सदा उन्हीं तारों में नहीं रहते हैं। कुछ वर्षो बाद वे तारे पूर्व की ओर चले जाते हैं अथवा सम्पात बिन्दु पश्चिम की ओर चला जाता है। सम्पात के इस चलन का ज्ञान सर्वप्रथम अयनों द्वारा हुआ, इसलिये इसे अयन चलन कहते है।

वेदांग ज्योतषिकाल में उत्तरायण धनिष्ठारम्भ में होता था।[६४] उसके कुछ वर्षों बाद श्रवण में और वराहमिहिर के समय में उत्तराषाढ़ा में होता था। हमारे अधिकांश ज्योतिष ग्रन्थों में इसे अयन चलन कहा है। आधुनिक यूरोपियन विद्वान इसे विषुव चलन या सम्पात का पिछड़ना (Preccession of Equinoxes) कहते हैं। अयनगति का स्पष्ट उल्लेख भास्कराचार्य के काल (शक ११०५) से ही मिलता है। भास्कराचार्य ने भी इसे सम्पात का पिछड़ना कहा है। सिद्धान्त शिरोमणी को छोड़कर अन्य ज्योतिष ग्रन्थों में अयन सम्बन्धी गति नक्षत्र मण्डल में मानी है, उन ग्रन्थों में नक्षत्र मण्डल पश्चिम से पूर्व की ओर जाता बतलाया है।[६५] जबकि सिद्धान्त शिरोमणी में भास्काचार्य ने लिखा है कि विषुवत् क्रान्तिवलय का जो सम्पात है वही क्रान्तिपात्

---

[६४] बृहत्संहिता, आदित्यचाराध्याय, श्लोक १

[६५] नारद पुराण, पूर्वभाग २, अध्याय ५४, श्लोक १३३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है, जिसके सूर्य सिद्धान्त के अनुसार एक कल्प में ६०० भगण होते है। सम्पात का ही नाम क्रान्तिपात है। मुंज्जाल के अनुसार एक कल्प में १६६६६६ भगण होते हैं। अतः ये दोनों भगण कहे जाते हैं।[६६]

आधुनिक यूरोपियन विद्वान भी सम्पात में गति मानते हैं। आर्यभट्ट द्वितीय ने अयन को एक ग्रहमानकर उसके भगण लिखे है। इनके अनुसार अयनगति सदा समान नहीं आती है। इन्होंने अयनांश लाने की रीति लिखी है।[६७]

सिद्धान्त ग्रन्थों में अयनगति को लेकर सूक्ष्मातंर हैं। वर्ष में सूर्य सम्पात से चलकर पुनः सम्पात में आने के बाद जितना आगे जाते है, वही वार्षिक अयन गति कहलाती है। प्रचलित सभी ज्योतिष ग्रन्थों में सम्पात की वार्षिक अयनगति लगभग ६० विकला मानी गई है, जबकि आधुनिक सूक्ष्म अन्वेषकों द्वारा सम्पात की वार्षिक अयन गति लगभग ५०.२ विकला मानी गई है। ग्रहलाघवकार ने १ कला, मकरन्दकार ने ५४ विकला एवं केतकी में ५० विकला वार्षिक अयन गति मानी गई है। आधुनिक मतानुसार सम्पात २६००० वर्षो में एक चक्र (३६०°) घूमता है। इस प्रमाण से इसको १ अंश चलने में ७२.२ वर्ष लगते है।

(घ) अयनांश (Precession):- चर सम्पात (वसन्तसम्पात) एवं अचल सम्पात (पौष्णांत बिन्दु) के बीच की कोणात्मक दूरी को अयनांश कहते है। भारतीय मान्यतानुसार

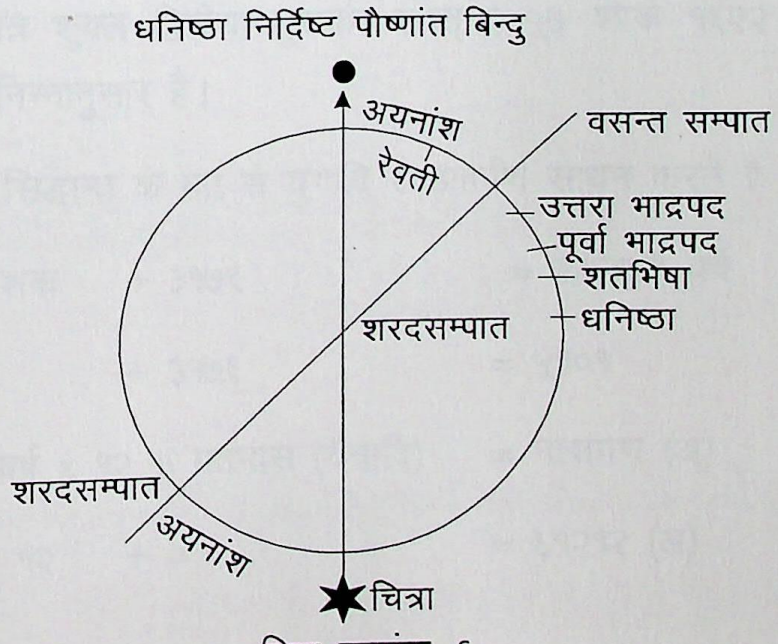

चित्र क्रमांक–६

---

[६६] सिद्धान्त शिरोमणि, गोलबन्धाधिकार, श्लोक १७–१८ एवं भाष्य

[६७] आर्यभट्टीय, स्पष्टाधिकार, आर्य १२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

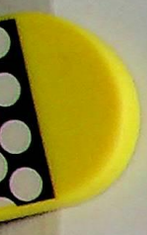

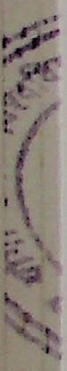

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्रान्तिवृत्त पर काल्पनिक स्थिर बिन्दु है, जिसकी स्थिति चित्रा (α-virginis) नक्षत्र के ठीक सामने लगभग १८०° पर है। इस बिन्दु को भारतीय नक्षत्र विद् पौष्णान्त बिन्दु या रेवत्यन्त बिन्दु कहते हैं। इस स्थिर बिन्दु से वसन्त सम्पात तक की दूरी अयनांश कहलाती है। यह दूरी चित्रा नक्षत्र से शरद सम्पात बिन्दु तक की दूरी होने के कारण इसे चित्रापक्षीय अयनांश भी कहते हैं।

यूरोपियन ज्योतिषी अयनांश की गणना रेवतीयोगतारा (जीटापिशियम) से करते है। भारतीय ज्योतिष ग्रन्थों में सायनसूर्य बनाने के लिये अयनांश साधन की विधियाँ अलग–अलग हैं, जिनका वर्णन निम्नलिखित हैं –

सूर्य सिद्धान्त द्वारा अयनांश साधन :- सूर्य सिद्धान्तानुसार एक महायुग में अयन (भचक्र) के ६०० भगण होते हैं। इष्ट अहर्गण का ६०० में गुणा करके इसमें युगीन सावन दिनों (१,५७,७६,१७,८२८) का भाग देने पर जो फल (राश्यादि) आवे, उसके भुज में ३ का गुणा करके १० का भाग देने से जो अंशादि प्राप्त होते हैं, वे अयनांश कहलाते हैं।[६८] अयनांश से संस्कृत ग्रह से क्रान्ति, छाया, लग्न, चर, अयनबल इत्यादि का साधन होता है।[६९] इस रीति से अयनांश बनाने के लिये पहिले अहर्गण बनाना पड़ता है तत्पश्चात अहर्गण पर से अयनांश निकाला जाता है। महर्षि नारद ने भी अयनांश साधन की इसी विधि का समर्थन किया है।[७०]

उदाहरणार्थ :– चैत्र शुक्ल द्वितीया गुरूवार संवत् २०५७ शाके १६२२ का अयनांश साधन का गणित निम्नानुसार है।

सर्वप्रथम हम सूर्य सिद्धान्त के मत से युगादि से अहर्गण साधन करते है

वर्तमान शक	+ ३१७६	= कलिगत वर्ष
१६२२	+ ३१७६	= ५१०१
कलिगतवर्ष x १२ + गतमास (चैत्रादि)		= मासगण (अ)
५१०१ × १२	+ ०	= ६१२१२ (अ)

---

[६८] सूर्य सिद्धान्त, त्रिप्रश्नाधिकार, श्लोक ६
[६९] सूर्य सिद्धान्त, त्रिप्रश्नाधिकार, श्लोक १०
[७०] नारद पुराण, पूर्वभाग २, अध्याय ५४, श्लोक १३३–१३५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तदनुसार

$$\left(\text{अ} + \left\{ \left(\text{अ} + \frac{\text{अ}}{७०} \right) \div ३३ \right\} \right) \times ३० + \text{गततिथि}$$

$$= \left(६१२१२ + \left\{ \left(६१२१२ + \frac{६१२१२}{७०} \right) \div ३३ \right\} \right) \times ३० + १$$

$$= \left(६१२१२ + \frac{६१२१२ + ८७४}{३३} \right) \times ३० + १$$

$$= (६१२१२ + १८१८) \times ३० + १ \qquad = १८६२७६१ = \text{ब}$$

$$\text{अहर्गण} = \text{ब} - \left(\frac{\text{ब} \times ११}{७०३} \right) = १८६२७६१ - \left(\frac{१८६२७६१ \times ११}{७०३} \right)$$

$$= १८६२७६१ - २६६१६ = १८६३१७५$$

इष्टवार हेतु अहर्गण में ७ का भाग देने पर शेषफल ६ आता है। रविवार से गिनने पर ६ वाँ वार शुक्रवार आता है, अतः इष्टवार हेतु अहर्गण में से १ घटाने पर चैत्र शुक्ल द्वितीया गुरूवार शाके १६२२ को कलयुगादि अहर्गण १८६३१७४ होगा।

सूर्यसिद्धान्त रीति से अयनांश साधन :– पूर्वसाधित कलियुगादि अहर्गण = १८६३१७४

$$\frac{\text{अहर्गण} \times ६००}{१५७७६१७८२८} = \frac{१८६३१७४ \times ६००}{१५७७६१७८२८} = \text{भणणादि}$$

$$= \frac{१११७६०४४०० \times १२}{१५७७६१७८२८} = \text{राश्यादि}$$

$$= \frac{१३४१४८५२८००}{१५७७६१७८२८} = ८\text{रा. } १५^{\circ}\ २'\ ५५''$$

अब ८ रा. १५ अं २ क. ५५ वि., इसके भुज बनायेंगे

८ रा. : १५° : २′ : ५५″ – ६ राशि = २ रा. : १५° : २′ : ५५″

२ रा. : १५° : २′ : ५५″ x (३/१०) = २२° ३०′ ५२″

यह सूर्य सिद्धान्तीय रीति से तात्कालिक अयनांश होगा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूर्यसिद्धान्त में उधृत विधि के अनुसार अयनांश २७ अंश से अधिक कभी नहीं आता है। इसमें भचक्र (सम्पात) का पूर्व–पश्चिम गमन बतलाया है। सम्पात ग्रहादिकों की भांति नक्षत्र मंडल की सम्पूर्ण परिक्रम नहीं करता है। सूर्य सिद्धान्त की सुधावर्षिणीकार के मत से सृष्टि के आदि में क्रान्तिपथ और विषुवृत का सम्पात २७ अंश पूर्व चलकर वापिस अपने पूर्व स्थान पर आता हुआ पुनः २७ अंश पश्चिम चलते हुये पूर्वगति से अपने निर्दिष्ट सृष्टि के आदि बिन्दु (रेवतीयोगतारा) पर पहुँचता हैं। इस प्रकार २७° + २७° + २७° + २७° = १०८° चलने में सम्पात बिन्दु की एक परिक्रमा (भगण) होती है।

चूँकि अयन बिन्दु का भ्रमण एक राशि (३०°) के भीतर ही होता है, इसलिये अयनांशों के भगणों को छोड़ दिया जाता है और शेषफल के भुजांश बनाकर निम्नलिखित अनुपात से अयनांश ज्ञात करते है।

$$\text{अयनांश} = \frac{२७ \times \text{इष्टभुजांश}}{६०} = \frac{३ \times \text{इष्टभुजांश}}{१०}$$

इस प्रकार सूर्य सिद्धान्तानुसार अयनांश का ज्ञान होता है।

सूर्य सिद्धान्त के अनुसार एक महायुग ४३,२०,००० सौर्य वर्ष) में अयन बिन्दु के ६०० भगण होते है।[७१] अतः ४३२०००० ÷ ६०० = ७२०० सौर्य वर्षों में अयनांश का एक भगण पूर्ण होता है तथा ७२०० ÷ ४ = १८०० सौर्य वर्षों में अयन बिन्दु २७ अंश पूर्व या पश्चिम गमन करता है। चूँकि सृष्टि के निर्माण से लेकर द्वापर के अन्त तक कुल सौर्यवर्षों की संख्या १६,५५,८०००० है।[७२] इस वर्ष संख्या में ७२०० का भाग देने पर सृष्टि से द्वापरांत या कलियुगारम्भ तक अयन भगण २७१६५० होते है। अतः द्वापरांत या कलियुगारम्भ में पौष्णान्त बिन्दु एवं वसन्त सम्पात एक ही बिन्दु पर थे अर्थात् अयनांश शून्य था। चूँकि ३६०० वर्षों में भचक्र (अयन बिन्दु) पूर्व या पश्चिम में २७ अंश चलकर पुनः अपने स्थान (पौष्णांत बिन्दु) पर लौट आता है, तब अयनांश शून्य होता है। इस प्रकार कलियुगारम्भ के ३६०० सौर्य वर्षों बाद अयनांश पुनः शून्य होगा। शक १६२१ श्री संवत् २०५६ तक गतिकलिवर्ष ५१०० होते है, तब ५१००–३६०० = १५०० सौर्यवर्ष शेष तथा पुनः १६२१–१५०० = ४२१

---

[७१] सूर्य सिद्धान्त, त्रिप्रश्नाधिकार, श्लोक ६ पूर्वार्ध

[७२] सूर्य सिद्धान्त, मध्यमाधिकार, श्लोक २२–२४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सौर्यवर्ष शेष, अतः सूर्य सिद्धान्तानुसार शक ४२१ में अयनांश शून्य था।

चूँकि ७२०० वर्षों में १०८ अंश का एक अयनान्दोलन होता है, अतः सम्पात की वार्षिक गति ५४ विकला आती है।[७३] सूर्य सिद्धान्त में आगे वेधगणित के द्वारा चक्र (अयन) के पूर्व या पश्चिम में चलन की स्पष्ट किया हैं। इसमें लिखा है कि भचक्र का चलन अयन (उत्तरायण–दक्षिणायन) और दोनों विषुव दिनों में स्पष्ट दिखाई देता है। छाया द्वारा लाये हुये स्पष्ट सूर्य से करणागत सूर्य का अन्तर जितना कम हो चक्र उतने अंश पूर्व में गमन करता है और यदि अन्तर अधिक हो तो चक्र उतने अंश पश्चिम में गमन करता है।[७४]

छाया से साधित किया हुआ सूर्य वर्तमान (चल) सम्पात से आता है। गणित से साधन किया हुआ सूर्य स्थिर सम्पात मीनान्त अथवा रेवतीयोग तारा के आसन्न से आता है। इसलिये दोनों सूर्यों का अन्तर अयनांश होता है। तात्पर्य यह है कि चल सम्पातीय कर्कादि मकरादि या मेषादि तुलादि संक्रान्तियों के समय उक्त भचक्र का चलन प्रत्यक्ष दिखाई देता है अर्थात् चल सम्पात से कक्र और मकरादि के सूर्य में सूर्य की परम क्रान्ति तथा मेषादि और तुलादि के सूर्य में सूर्य की शून्य क्रान्ति होती है। इस प्रकार वेध करने से जिस दिन की क्रान्ति सर्वाधिक या शून्य हो, उस दिन वेध से स्पष्ट सूर्य ३/ ०/ ०/ ० या ६/ ०/ ०/ ० या ०/ ०/ ०/ ० या ६/०/ ०/० होता है। यह आकाश में दृष्टि देने से नितान्त प्रत्यक्ष है। वेध और गणित से आगत दोनों सूर्यों का अन्तर अयनांश होता है। जिस दिन वेध से परम उत्तराक्रान्ति उपलब्ध होती है, उस दिन गणित से उपलब्ध सूर्य और ३ राशि (९० अंश) का अन्तर अयनांश होता है। जिस दिन वेध से परम दक्षिणा क्रांति उपलब्ध होती हे, उस दिन गणित से उललब्ध सूर्य और ६ राशि (२७०° अंश) का अन्तर अयनांश हेाता है। इसी प्रकार क्रान्ति के अभाव में (शून्य क्रान्ति होने पर) मेष और तुलादि बिन्दुओं से भी उक्त भाँति अयनांश (चल सम्पात) का ज्ञान सूर्य सिद्धान्त ने किया है। इसी आधार पर उत्तर भारत के कुछ पञ्चांगकार सायन एवं निरयन सूर्य के अन्तर तुल्य अयनांश मानते है। बापूदेव शास्त्री का पञ्चांग इंगलिश नाटिकल आल्मनाक से बनता है। उसमें अक्षांश–रेखांश काशी के हैं। इसमें सूर्यसिद्धान्तादि ग्रन्थों द्वारा लाये हुये रवि

---

[७३] १०८° ÷ ७२०० = (१०८ × ६० × ६०) ÷ ७२०० विकला = ५४ विकला

[७४] सूर्य सिद्धान्त, त्रिप्रश्नाधिकार, श्लोक ११

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तथा सूक्ष्म सायन रवि के अन्तर तुल्य अयनांश माना है।

मकरन्दानुसार अयनांश साधन :- मकरन्दाचार्य ने सरल प्रक्रिया द्वारा पञ्चांग निमाणार्थ श्री सूर्यसिद्धान्त के आधार पर मकरन्दसारणी नामक ग्रन्थ का निर्माण किया। इसमें अयनांश लाने की विधि का स्पष्ट उल्लेख है। मकरन्दानुसार इष्ट शकाब्द में से ४२१ घटाकर शेषफल को दो स्थानों पर रखते है। एक स्थान में १० का भाग देकर लब्धि को द्वितीय स्थान में से घटायें। अन्तर में ६० का भाग देने से लब्धि अंश तथा शेष कला होगी। यही वर्षारम्भ काल का अयनांश होगा।[७५] अर्थात्–

$$(\text{इष्टशक} - ४२१) = \text{अन्तर तथा अन्तर} - \frac{\text{अन्तर}}{१०} \div ६० = \text{वर्षारम्भ का अयनांश}$$

इस रीति के अनुसार अयनगति १ दिन में ६ प्रतिविकला तथा १ वर्ष में ३२४० प्रतिविकला = ५४ विकला आती है। ऊपर जो रीति बतलाई है उसका स्पष्टीकरण निम्नलिखित है :–

$$५४ \text{ विकला} = (६० - ६) \text{ विकला} = \frac{६०-६}{६०} \text{ कला} = \left(१ - \frac{१}{१०}\right) \text{कला}$$

$$\text{इष्टवर्ष} - ४२१ = \text{गत वर्ष}$$

$$\left(\text{गतवर्ष} - \frac{\text{गतवर्ष}}{१०}\right) \div ६० = \text{वर्ष के आरम्भ में अयनांश}$$

इसी सिद्धान्त पर अयनांश निकालना बताया है।

$$\text{चलित अयनांश} = \frac{\text{तात्कालिक सूर्य अंशादि} \times ३}{२०} \text{ विकला}$$

इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है –

$$\frac{५४ \times \text{सूर्य का इष्ट अंश}}{३६०} = \frac{\text{इष्ट अंश} \times ३}{२०} \text{ विकला}$$

$$\text{ताकालिक अयनांश} = \text{आरम्भ का अयनांश} + \text{चलित अयनांश}$$

इस प्रकार हम मकरन्दानुसार किसी भी दिन का अयनांश निकाल सकते है।

उदाहरणार्थ :– श्री संवत् २०५६ शक १६२१ वैशाख शुक्लाष्टमी शुक्रवार का अयनांशानयन करते हैं –

---

[७५] मकरन्द सारणी, स्पष्टाधिकार एवं मकरन्द प्रकाश, स्पष्टाधिकार, श्लोक २८–२६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इष्ट शंक १६२१ – ४२१ = १५०० गतवर्ष

१५०० – $\frac{१५००}{१०}$ ÷ ६० अंशादि = १३५० ÷ ६० = २२° लब्धि, शेष ३०′

अतः वर्ष के आरम्भ में अयनांश २२° ३०′ होगा।

तात्कालिक अयनांश :– वैशाख शुक्लाष्टमी शुक्रवार को श्री हृषीकेष पञ्चांगनुसार निरयन स्पष्ट सूर्य ० : ८° : ३१′ : ३३″ है। इसके अंश बनाये, तब ८०° : ३१′ : ३३″

$$\frac{\text{तात्कालिक सूर्य अंशादि} \times ३}{२०} = \frac{८०° : ३१′ : ३३″ \times ३}{२०} = १′ : १७″$$

यह चलित अयनांश हुआ।

तात्कालिक अयनांश = २२° : ३०′ : ० + ० : १′ : १७″

= २२° : ३०′ : १″

यह शाके १६२१ वैशाख शुक्लाष्टमी शुक्रवार का अयनांश होगा। मकरन्द प्रकाश ज्योतिष ग्रन्थानुसार इष्टतिथि कालिक अयनांश बनाने के लिये गत चैत्र शुक्लादि चान्द्रमास की संख्या को ३० से गुणाकर गुणनफल में गतमान्त से इष्ट तिथि संख्या जोड़कर उसमें ६ का गुणा करें। यह गुणनफल प्रतिविकला होगा इसको ६० से भाग देकर विकलादि बनाते है। इस विकलादि को वर्षारम्भकालिक अयनांश में जोड़कर इष्ट दिवसीय अयनांश बनाते हैं, अर्थात्

उपर्युक्त उदाहरण से इष्ट दिवसीय साधनार्थ गत चैत्र शुक्लादि चान्द्रमास संख्या = १ तथा वैशाख मास की इष्ट तिथि संख्या = ८

अतः १ × ३० + ८ = ३८ तथा ३८ × ६ = ३४२ प्रतिविकलादि

३४२ ÷ ६० = ५ विकला ४२ प्रति वकला

अतः इष्टदिवसीय अयनांश = २२° : ३०′ : ० : ० + ० : ० : ५″ : ४२‴

= २२° : ३०′ : ५″ : ४२‴

ग्रहलाघवानुसार अयनांशानयन :- ग्रहलाघव के अनुसार शक ४४४ में अयनांश शून्य था तथा अयनांश की वार्षिक गति ६० विकला आती है। ग्रहलाघव से अभीष्ट शालिवाह शक में से ४४४ घटाने पर जो शेष रहे वह कला होती है। उसमें

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

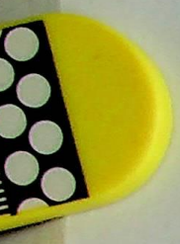

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

६० का भाग देने पर जो लब्धि प्राप्त हो, वह अयनांश होती है। यह अयनांश १ मास में ५ विकला तथा १ दिन में १० प्रति विकला बढ़ता है।[७६]

उदाहरणार्थ :– श्री संवत् २०५६ शक १६२१ वैशाख शुक्लाष्टमी शुक्रवार का अयनांशानयन ग्रहलाघव विधि के अनुसार करते है –

इष्टशक १६२१ – ४४४ = १४७७ शेष

१८७० ÷ ६० = २४ लब्धि, ३७ शेष

इसलिये वर्ष के आरम्भ में अयनांश २४ अंश ३७ कला हुआ।

चलित अयनांश :– गतमास = १ तब १ × ५'' = ५''

गतदिन = ८ तब ८ × $\frac{१}{६}$ = १' २०'''

इसलिये वर्षारम्भ से वैशाख शुक्लष्टमी तक १ माह ८ दिनों में अयनांश की गति(५'' + १'' २०''' =) ६' २०''' हुई। यह चलित अयनांश हुआ।

तात्कालिक अयनांश = वर्षारम्भ का अयनांश + चलित अयनांश

= २४° : ७ : ३७' : ०'' : ०'''+० : ० : ६'' : २०'''

= २४° : ३७' : ६'' : ३७'''

यह शक १६२१ वैशाख शुल्काष्टमी को ग्रहलाघवीय अयनांश हुआ। जब इस प्रकार लाया हुआ अयनांश २७° से अधिक हो तो ५४ में से घटाकर शेष लेना, वह ऋणात्मक अयनांश होगा अर्थात् जब तक अन्तर शून्य नहीं होगा अयनांश जोड़ने की जगह घटायेगे। ग्रहलाघवीय अयनांश अत्यन्त स्थूल है। उत्तर भारत के ग्रहलाघवीय पञ्चांगों तक ने भी आचार्य के स्थूल अयनांश को त्यागकर वर्तमान शोधपूर्ण सही अयनांश का आश्रय लिया है। वर्तमान में वाणी भूषण पञ्चांग को छोड़कर उत्तर भारत के किसी भी पञ्चांग में ग्रहलाघवीय अयनांश को नहीं दर्शाया है। वाणी भूषण पञ्चांग में शक १६२१ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (५ अप्रैल २००० ई.) को ग्रहलाघवीय अयनांश २४°३८'०'' दिया है, साथ ही चित्रापक्षीय केतकी अयनांश २३° ५१'०० दिया है।

---

[७६] ग्रहलाघव, रविचन्द्र स्पष्टाधिकार, श्लोक ५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ताजिकसार के मत से ४४४ के स्थान पर ४४५ घटाया जाता है। इसमें अयनांशनयन के विषय में लिखा है कि इष्टशक में से ४४५ घटाकर ६० का भाग देने पर जो लब्धि प्राप्त हो वह अयनांश होती है।[७७]

केतकी मत से अयनांश निकालना :- श्री वेंकटेश बापू जी केतकर ने "ज्योतिर्गणित" नामक संस्कृत ग्रन्थ में अयनगति लगभग ५०.२ विकला तथा जीटापिशियम को रेवती का योग–तारा मानकर उसका भोग अयनांश माना है। इस आधार पर शक १८०० में १८° १०′ २५″ अयनांश प्राप्त होता है। बाद में इनका मत बदल गया और वे चित्रा–पक्ष के समर्थनक तथा जीटा–पक्ष के विरोधी हो गये।[७८]

केतकी स्पष्टाधिकार में अयनांश साधन की विधि का वर्णन इस प्रकार हुआ है –

इष्टशक – १८०० = अन्तर

$\frac{\text{अन्तर}}{७०}$ = अंशादि लब्धि $\frac{\text{अन्तर}}{५०}$ = कलादि लब्धि

इष्ट शक अयनांश = (अंशादि – कलादि) + क्षेपक (२२° : ८′ : ३३″)

इसमें शाके १८०० का अयनांश निकाल लिया गया है, जिसे क्षेपक कहते है। उसके आगे जितने कलादि अयनांश होता है, शाके १८०० के अयनांश अर्थात् क्षेपक में जोड़ दिया जाता है जिससे इष्टवर्ष का अयनांश निकल आता है।[७९]

यदि शाके १८०० के पहिले का अयनांश निकालना हो तो गणित से शाके १८०० और इष्ट शक के अन्तर के अनुसार जो अयनांश आये उसे क्षेपक में से घटा देने पर इष्ट वर्ष का अयनांश निकल आयेगा।

उदाहरणार्थ :– चैत्र शुक्ल द्वितीय गुरूवार संवत् २०५७ शाके १९२२ के अयनांश साधन का केतकी गणित निम्नानुसार है –

---

[७७] अथ शराब्धियुगै ४४५ रहितः शकोऽप्यथ हृतः खरसै ६० रयनांशका। ताजिकसार, स्पष्टाधिकार

[७८] केतकी ग्रहगणितम्, प्रस्ताविकाधिकार, अरम्भस्थानं श्लोक ५, पृ. १०

[७९] खखाष्टभृम्यून – १८०० शकात्खशैलैः ७० ।
खपंचभि ५० र्भागकलादिलब्ध्यो :।
यदंतरं तत्सहिता द्विहस्ता २२।
अष्टौ ८ सुरा ३३ स्तेऽयनभागसंज्ञाः। केतकी ग्रहगणितम्, स्पष्टाधिकार, चरं पृ.७ श्लोक ६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इष्टशक १६२२ – १८०० = १२२ गतवर्ष

$\frac{१२२}{७०}$ = १° : ४४′ : ३४″ तथा $\frac{१२२}{५०}$ = ०° : २′ : २६″

अतः अयनांश $= \left[\left(\frac{१२२}{७०}\right) - \left(\frac{१२२}{५०}\right)\right]$ + क्षेपक

= १° : ४२′ : ८″ + २२° : ८′ : ३३″

= २३° : ५०′ : ४१″

यह शाके १६२२ में वर्षारम्भ का अयनांश होगा।

चूँकि केतकी मत से वार्षिक अयन गति ५०.२ विकला के लगभग होती है, इसलिये ४ विकला ११ प्रतिविकला प्रतिमाह तथा ८ प्रतिवकला प्रतिदिन के लगभग अयन गति होगी। नीचे इस चित्रा पक्षीय अयनांश की सारणी भी है।

वर्ष :	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१००
कला :	०	१	२	३	४	५	५	६	७	८	१६	२५	३३	४१	५०	५८	६६	७५	८३
विकला :	५०	४०	३१	२१	११	१	५१	४२	२२	२०	४४	७	२६	५२	१४	३६	५६	२२	४३

शाके १८०० को (सायन मेष संक्रमण काल का) अयनांश २२° : ८′ : ३३″ है। इसके आगे जितने वर्ष हों उतने की कला विकला जोड़ें तब इष्ट अयनांश प्राप्त होगा। यदि १८०० शक के पहिले का ज्ञात करना हो तो घटाकर अयनांश निकालना होगा।

उपर्युक्त उदाहरण में शाके १६२२में १२२ वर्ष अधिक है तब सारणी से–

१०० वर्ष की अयनगति	= ८३′ : ४३″
२० वर्ष की अयनगति	= १६′ : ४४″
२ वर्ष की अयनगति	= १′ : ४०
१२२ वर्ष की अयनगति	= १०२′ : ७″
क्षेपक (शक १८०० में अयनांश)	= २२° : ८′ : ३३″
शक १६२२ में अयनांश	= २३° : ५०′ : ४०″

इस प्रकार केतकी गणित से किसी भी वर्ष का (सायन मेष संक्रमण काल का) अयनांश निकाल सकते है। उत्तर भारत के अनेक पञ्चांगों में केतकी अयनांश प्रयुक्त होता है। जैसे – चौ. पं. जैनी जीयालाल शिखरचंद कृत असली पञ्चांग में शाके १६२२ चैत्रशुक्ल ११ को केतकी अयनांश २३° : ५०′ : ४०″ : ५४″ दिया है। इसी प्रकार श्री हृषीकेष पञ्चांग में केतकी अयनांश प्रयुक्त होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

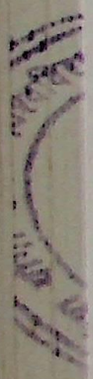

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

केतकर के अतिरिक्त अनेक ज्योतिर्विदों ने चित्रापक्षीय अयनांश की गणना की। अर्वाचीन ज्योतिर्विदों ने सर्वप्रथम यह जाने का प्रयास किया कि किस ईस्वी सन् अथवा शाके वर्ष में दोनों सम्पात एक ही बिन्दु पर थे अर्थात अयनांश शून्य था। सभी ज्योतिर्विदों ने अपनी–अपनी बुद्धि के अनुसार उस वर्ष का अनुमान लगाया। आधुनिक ज्योतिर्विदों में स्व. श्री निर्मल चन्द्र लहरी के अनुसार २२ मार्च सन् २८५ (शाके २०७) को दोनों सम्पात एक ही स्थान पर थे तथा अयन की गति ५०.२८ विकला प्रतिवर्ष है। डा. बेंगलौर वेंकटरमण के अनुसार ई. सन् ३६७ में दोनों सम्पात समान थे तथा अयन चलन गति ५०.२ विकला प्रतिवर्ष है। कुछ विद्वानों ने ई. सन् २३८, ३६१, ३६४, ४२६ व ५५६ में सम्पातों की समानता मानकर विभिन्न वर्षों में अयनांश की गणना की है। आधुनिक ज्योतिर्विदों द्वारा प्रतिपादित अयनांश में अन्तर निम्न से स्पष्ट हो जायेगा।

१ जनवरी १६६६ का चित्रापक्षीय अयनांश :–

१. डा. वी. वी. रमण द्वारा अयनांश = २२ अंश २१ कला २१ विकला

२. प्रो. के. एस. कृष्णमूर्ति द्वारा अयनांश= २३ आं ४२ कला

३. लहरी द्वारा अयनांश = २३ अंश ४८ कला ११ विकला

स्पष्ट है कि भिन्न–भिन्न अयन गति एवं शून्यायनांश वर्ष मानने से अयनांश में अन्तर आ जाता है। उत्तर भारत के पञ्चांगों में अधिकांशतः लहरी अथवा केतकी अयनांश का प्रयोग होता है। निम्नलिखित सारणी में उत्तर भारत के विभिन्न पञ्चांगों में दिये अयनांश को दर्शाया है –

सारणी क्रमांक–२

क्र.	दिनांक	पञ्चांग नाम	अयनांश
			अंश कला विकला
१.	५ अप्रैल सन् २००० ई. (शक १६२२ आरम्भ)	श्री हृषीकेष पञ्चांग	२३ : ५० : ३७
२.	——"——	विश्व पञ्चांग	२३ : ३६ : २८
३.	——"——	श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग	२३ : ५० : २२
४.	——"——	शिवविनोदी मदनमोहन पं.	२३ : ५० : ४१
५.	——"——	श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग	२३ : ५१ : २३
६.	——"——	पञ्चांग दिवाकर	२३ : ५१ : २३
७.	——"——	श्री ब्रजभूमि पञ्चांग	२३ : ५१ : २२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

क्र.	दिनांक	पञ्चांग नाम	अयनांश अंश कला विकला
८.	५ अप्रैल सन् २००० ई.	श्री आर्यभट्ट पञ्चांग	२३ : ५१ : २३
९.	———"———	वाणी भूषण पञ्चांग	२३ : ५१ : ००
	———"———	———"———	२४ : ३ : ००
१०.	———"———	जीयालाल शिखरचंद कृत पं.	२३ : ५० : ४०
११.	———"———	निर्णय सागर पञ्चांग	
	२६ मार्च सन् २००१ ई.	———"———	२३: ५२ : १०
१२	———"———	श्री महावीर पञ्चांग	२३ : ५१ : २२
	———"———	श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग	२३ : ५२ : १०
१३.	५ अप्रैल सन् २००० ई.	लहरी एफेमरीज	२३ : ५१ : २३
१४.	११ अप्रैल सन् १९९४ ई.	श्री देवभूमि पञ्चांग	२३ : ४९ : ५१.१
	———"———	लहरी एफेमरीज	२३ : ४९ : ५१
१५.	१ अप्रैल सन् १९९२ ई.	श्री गजेन्द्र विजय पञ्चांग	२३ : ४५ : १२
	———"———	लहरी एफेमरीज	२३ : ४५ : १२
१६.	१८ मार्च सन् १९९९	श्री मातृभूमि पञ्चांग	२३ : ५० : ३५

इस सारणी का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि शक १९२२ (दि. ५/४/२०००) श्री हृषीकेश पञ्चांग, श्री मातृभूमि पञ्चांग, शिवविनोदी मदनमोहन पञ्चांग, श्री महावीर पञ्चांग, जीयालाल शिखरचंद कृत असली पञ्चांग में दिया अयनांश का मान लगभग समान है, जबकि श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग में दिया अयनांश का मान अपेक्षाकृत कुछ कम एवं वाणीभूषण पञ्चांग में दिया अयनांश का मान अपेक्षाकृत कुछ अधिक है इन पञ्चांगों में केतकी अयनांश को व्यक्त किया है। पूर्व में केतकर मत् से अयनांश साधन की विधि में उदाहरण द्वारा हमने ज्ञात किया कि शक १९२२ में वर्ष के आरम्भ का अयनांश लगभग २३° ५०' ४०" आता है, जो कि उत्तर भारत के श्री हृषीकेष पञ्चांग, वाणीभूषण पञ्चांग एवं श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग में दिये अयनांश के मान के लगभग बराबर है।

उत्तर भारत के कुछ अन्य पञ्चांगों, जैसे– निर्णय सागर पञ्चांग, श्री देवभूमि पञ्चांग, श्री गजेन्द्र विजय पञ्चांग इत्यादि में लहरी अयनांश के प्रयुक्त होने का संकेत मिलता है। चूँकि लहरी ऐफेमरीज के अनुसार शक १९२२ (५अप्रैल २०००ई.)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

को अयनांश २३° ५१ २३'' दिया है, जो कि श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग, आर्यभट्ट पञ्चांग, पञ्चांग दिवाकर, श्री ब्रजभूमि पञ्चांग एवं निर्णय सागर पञ्चांग में दिये अयनांश के तुल्य है। इसी प्रकार श्री गजेन्द्र विजय पञ्चांग, श्री देवभूमि पञ्चांग में दर्शाया अयनांश का मान, लहरी एफेमरीज में दिये अयनांश के मान के तुल्य है। इस प्रकार स्पष्ट है कि उत्तर भारत के अधिकांश पञ्चांगों में केतकी अथवा लहरी अयनांश का उपयोग होता है, चाहे यह पञ्चांग किसी भी विधि से बने हों। एकमात्र वाणीभूषण पञ्चांग में चित्रापक्षीय केतकी अयनांश के साथ–साथ ग्रहलाघवी अयनांश को दर्शाया है। काशी हिन्दू विश्व विद्यालय द्वारा प्रकाशित विश्व पञ्चांग में शक १९२२ (५ अप्रैल सन् २००० ई.) को अयनांश २३° ३६' २८'' दिया है, जो कि न तो केतकी अयनांश है और ना ही लहरी अयनांश हैं। इस दिन का ग्रहलाघवी अथवा मकरन्दी गणित करने पर भी इतना अयनांश नहीं आता है। अतः इस पञ्चांग के अयनांश का गणित स्पष्ट नहीं है।

(ड.) समय :- पृथ्वी एवं ब्रह्माण्ड दोनों ही गतिशील हैं। यह गतिशीलता ही समय है। गति के रुकते ही समय रुक जायेगा। गणित में एक सूत्र है गति (speed) = $\frac{\text{दूरी}}{\text{समय}}$

speed = $\frac{1}{\text{time}}$ अर्थात यदि चली गई दूरी शून्य है तो गति (चाल) भी शून्य (स्थिर) होगी अथवा चली गई दूरी शून्य है तो समय भी शून्य होगा क्योंकि समय = $\frac{\text{दूरी}}{\text{समय}}$

सूर्य सिद्धान्त के अनुसार पृथ्वी जितने समय अपनी धुरी पर घड़ी की विपरीत दिशा में ३६० अंश घूमती है वह समय एक अहोरात्र माना जाता है।[८०] पृथ्वी की दैनिक गति (घूर्णन) के कारण दिन–रात होते है तथा पृथ्वी के अपनी अक्ष पर लगभग २३° ३०' झुके होने के कारण दिन–रात बड़े–छोटे होते रहते हैं[८१] दिनरात छोटे–बड़े होने से सूर्योदय–सूर्यास्त समय में भी भिन्नता होती है। पृथ्वी की दैनिकगति (घूर्णन) के कारण पूर्व दिशा के स्थानों में सूर्य पहले उदित होता है तथा पश्चिम दिशा के स्थानों में बाद में (देर से) उदित होता है। अतः स्थान का प्रभाव समय पर पड़ता है। तदनुसार समय का प्रभाव आकाशीय मानचित्र पर दृष्टिगत होता है। अतः समय और स्थान एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। प्रत्येक पञ्चांग के मुख्य पृष्ठ पर लिखा रहता है कि यह पञ्चांग अमुक स्थान (अक्षांश–रेखांश) के आधार पर निर्मित है। इसका

---

[८०] नाडीषष्ट्या तु नाक्षत्रमहोरात्रं प्रकीतितम। सूर्यसिद्धान्त, मध्यमाधिकार, श्लोक २

[८१] सूर्य सिद्धान्त, भूगोलाध्याय श्लोक २ से ८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अर्थ है कि उस पञ्चांग का दृश्य गणित अमुक स्थान का है।

उदाहरणार्थ :– आर्यभट्ट पञ्चांग का निर्माण ग्रीनविच से २८° : ३६′ उत्तरी अक्षांश एवं ७७° : १२′ पूर्वी देशांतर के आधार पर किया गया है। अतएव इस पञ्चांग में निर्णीत सूर्योदयास्त भी पूर्वोक्त अक्षांशादि वाले स्थान (दिल्ली) के हैं।

समय को अनेक इकाइयों में व्यक्त किया जाता है। पञ्चांग के गणित में समय की इकाईयों का ज्ञान आवश्यक है। समय की प्रमुख इकाईयाँ निम्नलिखित हैं :–

(१) **भारतीय मानक समय (I.S.T.)** :- सूर्य के अनुसार प्रत्येक स्थान का समय भिन्न–भिन्न होता है क्योंकि स्थानान्तर के अनुसार सूर्य के उदयास्त में अन्तर होता है। भारत के पूर्वी तथा पश्चिमी छोरों के समय में लगभग २ घंटे का अन्तर है। इस समयांतर को कम करने के उद्देश्य से दोनों छोरों के मध्य ८२° : ३०′ देशांतर रेखा को भारतीय मानक समय रेखा मान लिया गया है। यह रेखा उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर नामक स्थान से गुजरती है। मिर्जापुर के स्थानीय मध्यम समय को पूरे देश में मानक समय के रूप में ग्रहण किया गया है। यही समय हमारी घड़ियों में होता है।

भारतीय मानक समय किसी स्थान विशेष का समय नहीं है बल्कि ८२° ३०′ रेखांश पर स्थित सभी स्थलों का स्थानीय समय है।

(२) **ग्रीनविच मध्यम समय (G.M.T.)** :- लंदन के निकट ०° देशांतर पर स्थित ग्रीनविच वेधशाला से पूरे विश्व में समय की गणना की जाती है। भारतीय मानक समय ग्रीन विच मध्यम समय से ५ घण्टा ३० मिनट आगे है। अतः कुछ पञ्चांगों में प्रातः ५.३० बजे की ग्रह स्थिति दी रहती है। वह जी.एम.टी. के अनुसार रात्रि २४.०० बजे की होती है, जहाँ से तारीख शुरू होती है। उदाहरणार्थ– आर्यभट्ट पञ्चांग में प्रातः ५.३० बजे के ग्रह स्पष्ट दर्शाये गये है।

(३) **स्थानीय दृष्ट समय (Local Apparent Time)** :- प्राचीनकाल में जब आधुनिक घड़ी का आविष्कार नहीं हुआ था उस समय धूपघड़ी के अनुसार जिस स्थान पर सूर्य लम्बवत् आजाता था वहाँ मध्याह्न काल या १२ बजे का समय मान लिया जाता था। मध्याह्न से दिनार्ध काल पूर्व सूर्योदय तथा दिनार्धकाल बाद सूर्यास्त होता था। इस प्रकार किसी स्थान का धूपघड़ी के अनुसार व्यक्त समय ही वास्तविक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रूप से उस स्थान का स्थानीय दृष्ट समय कहलाता है। इसे स्थानीय समय (Local Time) भी कहते है। ज्योतिष की अधिकांश गणनाऐं स्थानीय समयानुसार की जाती है। यह समय रेखांश के अनुसार बदलात है।

(४) स्थानीय मध्यम समय (Local mean time) :- आज हमारे देश की सभी घड़ियाँ ८२° : ३०′ रेखांश पर स्थित स्थानों (जैसे – मिर्जापुर) का स्थानीय समय (L.T.) बतलाती है। इन स्थलों पर सूर्य प्रतिदिन ठीक मध्याह्न (१२ बजे) के समय सिर पर नहीं होता है। पृथ्वी की दैनिक असमान गति के कारण सूर्य वर्ष के कुछ महिने (ग्रीष्मकाल में) १२ बजे से पूर्व तथा कुछ महिने (शीतकाल में) १२ बजे के बाद सिर पर (लम्बवत्) होता है। समय के इस अन्तर को प्रतिदिन घड़ियों में सही करना सम्भव नहीं है। इसलिये मध्यम सूर्य की कल्पना की गई जिसे भूमध्य रेखा पर एक सी गति से घूमते हुये मान लिया गया है। मध्यम सूर्य का ठीक ६ बजे उदय होना, १२ बजे मध्याह्न काल, एवं ६ बजे सांय अस्त होना माना जाता है। मध्यम सूर्य के अनुसार एक समानगति से ठीक १२ बजे मध्याह्न काल (किसी भी स्थान पर दिन के बीच का वह काल (समय) जव सूर्य उस स्थान पर लम्बवत हो) होता है। जबकि वास्तविक सूर्य के अनुसार मध्याह्न काल १२ बजे से पूर्व या बाद में हेाता है।

अतः मध्यम सूर्य के अनुसार माने जाने वाले समय को स्थानीय मध्यम समय कहते है। घड़ी का समय मध्यम समय है और इससे जो स्थानिक समय निकाला जाता है वह भी स्थानिक मध्यम समय होता है।

स्थानीय मध्यम काल = ग्रीनविच मध्यम काल + (देशान्तर ÷ १५)

स्थानीय मध्यम समय = भारतीय मानक समय समयांतर

यदि स्थानिक देशांतर ८२° ३०′ के अधिक हो तो धन (+)

यदि स्थानिक देशांतर ८२° ३०′ के अधिक हो तो ऋण (–)

(५) देशांतर संस्कार :- पृथ्वी अपनी अक्ष पर पश्चिम से पूर्व की ओर ३६० अंश २४ घण्टा में घूमती है। अतः १ अंश को पार करने में ४ मिनट लगते है तथा १ घंटे में पृथ्वी १५ अंश घूमती है। यदि भारतीय मानक समय को भारत के किसी नगर या स्थल पर स्थानीय समय बनाना है तो ८२° : ३०′ पूर्वी देशांतर से पूर्व या पश्चिम में स्थित नगर के लिये प्रति देशांतर ४ मिनट क्रमशः धन (+) या ऋण (–) करना पड़ेगा। जिसे देशांतर संस्कार कहते है। इस प्रकार देशांतर संस्कार वह समय है जो

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दो देशों (स्थलों) के बीच रेखांशीय दूरी द्वारा ज्ञात होता है।

उत्तरभारत के सभी पञ्चांगों में भारत के प्रमुख नगरों की अक्षांश रेखांश सारणी द्वारा देशांतर संस्कार उन नगरों से भारतीय मानक समयांतर में व्यक्त रहता है।

उदाहरणार्थ (१) :– ग्वालियर का समयांतर (देशान्तर संस्कार) ज्ञात करना है तो

भारतीय मानक रेखांश (८२° ३०′) – ग्वालियर का रेखांश (७८° १०′) = ४° २०′

४° २०′ × ४ = १६ मिनट ८० सकेण्ड = १७ मिनट २० सेकण्ड

चूँकि ग्वालियर नगर मिर्जापुर (८२° ३० रेखांश) से पश्चिम में स्थित है। अतः समयांतर ऋण (–) १७ मिनट २० सेकण्ड होगा।

उदाहरणार्थ (२) :– जगन्नाथपुरी का समयांतर ज्ञात करना हो तो –

जगन्नाथपुरी का रेखांश (८५° ४८′)–भारतीय मानक रेखांश (८२° ३०′) = ३° १८′

देशांतर ३° १८′ × ४ = १३ मिनट १२ सेकण्ड

चूँकि जगन्नाथपुरी स्थल मिर्जापुर (८२°/३०′ रेखांश) के पूर्व में स्थित है अतः यह समयांतर धन (+) ३ मिनट १२ सेकण्ड होगा।

इसी प्रकार प्रधान मध्याह्न रेखा ग्रीनविच को मानकर वहाँ से पूर्व – पश्चिम अन्तर देशांतर का नापा जाता है। ग्रीनविच में दोपहर के १२ बजे होते है तब भारत वर्ष में सांय के ५.३० बजते है। अतः जब ग्रीनविच का समय दिया हो तो उससे भारत के किसी भी स्थल का समय बना सकते है या भारत के स्थानीय समय से ग्रीनविच समय ज्ञात कर सकते है।

स्थानीय समय (L.M.T.) = ग्रीनविच समय (G.M.T.) ± (देशान्तर ÷ १५)

देशांतर पूर्व होने से (+) देशांतर पश्चिम होने से (–)

उदाहरणार्थ :– जबलपुर ८०° पूर्वी रेखांश पर स्थित है तब ८०° ÷ १५=५ घं.२० मि.

जबलपुर के ग्रीनविच रेखा से पूर्व में स्थित होने से यह समयांतर धन (+) ५ घण्टा २० मिनट होगा। जब ग्रीनविच में दोपहर के १२ बजेंगे तब जबलपुर में सांय के ५.२० बजे होंगे

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसी प्रकार कलकत्ता ८८° २३′ पूर्वी रेखांश पर स्थित है तब

८८° २३′ ÷ १५ = + ५ घण्टा ५३ मिनट ३२ सेकण्ड

अतः कलकत्ता का ग्रीन विच से समयांतर (+) ५ घण्टा ५३ मिनट ३२ से. होगा।

इस प्रकार हम देखते है कि रेखांश द्वारा हम किन्ही दो स्थलों (नगरों) के बीच देशांतर संस्कार ज्ञात कर सकते है। जैसे जबलपुर और उज्जैन के बीच देशांतर संस्कार ज्ञात करना है तो

जबलपुर का रेखांश (८८° २३′) – उज्जैन का रेखांश (७५ ४६) = १२° ३७′

समयांतर = १२° : ३७′ × ४ = ५० मिनट २८ सेकण्ड

आगे स्थानीय मध्यम समय तथा पञ्चांग परिवर्तन में हम देशान्तर का प्रयोग स्पष्ट करते हैं–

(६) **वेलान्तर (Equation of time)** :- घड़ी से जो स्थानीय समय निकाला जाता है वह मध्यम स्थानीय समय होता है। सूर्य की गति एक सी नहीं रहती परन्तु घड़ियों की गति एक सी रहती है इस कारण इस मध्यम स्थानीय समय को सूर्य के अनुसार करना पड़ता है। इसमें वेलान्तर संस्कार करने पर स्थानीय शुद्ध समय निकलता है। इस प्रकार स्थानीय शुद्ध समय और स्थानीय मध्यम समय का अन्तर ज्योतिष में वेलान्तर कहलाता है।

वेलान्तर (E.T.) = धूपघड़ी का समय (L.A.T.)–स्थानीय माध्यम समय (L.M.T.)

यदि स्थानीय दृष्ट समय, मध्यम समय से अधिक हो तो वेलान्तर (+) धन होता है अर्थात् स्थानीय शुद्ध समय ज्ञात करने के लिये मध्यम समय में वेलान्तर जोड़ना होता है। इसके विपरीत यदि स्थानीय दृष्ट समय, मध्यम समय से कम हो तो वेलान्तर (–) ऋण होता है अर्थात् स्थानीय शुद्ध समय ज्ञात करने के लिये मध्यम समय में वेलान्तर घटाते है।

वेलान्तर को निम्नलिखित तालिका से समझा जा सकता है। शाके १६२२ के विद्यापीठ पञ्चांग के अनुसार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सारणी क्रमांक–३

दिनांक	धूपघड़ी का समय	स्थानीय मध्यम समय	वेलान्तर
		घं मि. से.	मि. से.
१६ फरवरी	१२ बजे मध्याह्न	११ : ४५ : ५२	(–) १४ : ८
१६ अप्रैल	———"———	१२ : ० : ०	० : ०
६ मई	———"———	११ : ५६ : ३८	(+) ३ : २२
१ सितम्बर	———"———	१२ : ० : ०	० : ०

इस प्रकार स्पष्ट है कि १६ फरवरी कोस्थानीय मध्यम समय में से १४ मिनट ८ सेकण्ड घटने से और ६ मई को स्थानीय मध्यम समय में ३ मिनट २२ सेकण्ड जोड़ने पर स्थानीय शुद्ध समय ज्ञात होता है।

उत्तर भारत के अधिकांश पञ्चांगों में वेलान्तर सारणी दी रहती है। इन सारणियों में समान्यतः १३ से १६ अप्रैल तक, ११ से १६ जून तक, ३१ अगस्त से ३ सितम्बर तक और २४ से २६ दिसम्बर तक वेलान्तर शून्य दर्शाया है। वेलान्तर शून्य होने का अर्थ है कि वर्ष के इन दिनों में स्थानीय मध्यम समय और धूपघड़ी का समय बराबर होता है। भिन्न–भिन्न पञ्चांगों की वेलान्तर सारणियों में एक–दो दिन आगे–पीछे होने का सूक्ष्मांतर पाया जाता हैं। समान्यतया २५, २६ दिसम्बर से १४, १५ अप्रैल तक तथा १४, १५, जून से १ सितम्बर तक वेलान्तर ऋणात्मक होता है जबकि १५, १६ अप्रैल से १३, १४ जून तक और १, २ सितम्बर से २४, २५ दिसम्बर तक वेलान्तर धनात्मक होता है।

इस प्रकार भारतीय मानक समय में देशांतर संस्कार करके स्थानीय मध्यम समय प्राप्त होता है। स्थानीय मध्यम समय में वेलान्तर संस्कार करने पर स्थानीय समय (L.T.) प्राप्त होता है।

(७) **समय परिवर्तन** :- हमारी घड़ियाँ में जो समय दर्शाया जाता है वह भारतीय मानक समय होता है। भारतीय मानक समय से किस प्रकार स्थानीय शुद्ध समय (L.T.) ज्ञात किया है, उसे निम्नलिखित उदाहरणों से समझेंगे –

उदाहरण (१) :– दिनांक १ जनवरी को ग्वालियर में घड़ी के समयानुसार दोपहर के १२.०० बजे है तब धूपघड़ी के अनुसार ग्वालियर का समय होगा –

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भारतीय मानक रेखांश (८२° ३०′) – ग्वालियर का रेखांश (७८° १०′) = ४° २०′

समयान्तर = ४° २०′ x ४ = १७ मिनट २० सेकण्ड

चूँकि ग्वालियर का रेखांश ८२° ३०′ से कम है अतः समयांतर ऋणात्मक होगा। इसलिये ग्वालियर का मध्यम समय = १२ घ. ०० मि. – १७ मि. २० से.

= ११ घं. ४२ मि. ४० से.

स्थानीय दृष्ट समय बनाने के लिये वेलान्तर संस्कार करना पड़ता है। अतएवं १ जनवरी को वेलान्तर (–) ३ मिनट ३२ सेकण्ड है।

तब ग्वालियर में शुद्ध स्थानीय समय = ११ घं. ४२ मि. ४० से. – ३ मि. ३२ से.

= ११ घण्टा ३९ मिनट ८ सेकण्ड

यही १ जनवरी को ग्वालियर में धूपघड़ी का समय होगा।

उदाहरण (२) :– दिनांक २५ मई २००० ई. को कलकत्ता में भारतीय घड़ी के अनुसार सांय ४.०० बजे है तब धूपघड़ी के अनुसार कलकत्ता का समय क्या होगा –

कलकत्ता का रेखांश (८८° २३′) – भारतीय मानक रेखांश (८२° ३०′) = ५° ५३′

समयांतर = ५° ५३′ x ४ = २३ मिनट ३२ सेकण्ड (धनात्मक)

कलकत्ता का रेखांश ८२° ३०′ से अधिक होने से समयान्तर धनात्मक होगा। इसलिये, कलकत्ता का स्थानीय मध्यमसमय = ४ घण्टा + २३ मिनट ३२ सेकण्ड

= ४ घण्टा बजकर २३ मिनट ३२ सेकण्ड

चूँकि २५ मई २००० ई. को वेलान्तर (+) ३ मिनट ११ सेकण्ड है तब इष्ट दिन कलकत्ता का शुद्ध स्थानीय समय = ४ घ. २३ मि. ३२ से. + ३ मि. ११ से.

= ४ घण्टा २५ मिनट ४३ सेकण्ड

यही २५ मई को कलकत्ता में धूपघड़ी का समय होगा।

(च) सूर्यक्रान्ति (Declination of the sun) :- सूर्य जिस दिन जिस अक्षांश पर लम्बवत् चमकता है, वह उस दिन सूर्य की क्रान्ति (Declination) कहलाती है। पृथ्वी के झुकाव के कारण सूर्य २३° ३०′ उत्तरी कक्र रेखा से २३° ३०′ दक्षिणी मकर रेखा तक ही लम्बवत् चमक सकता है। सूर्य के लम्बवत् चमकने की अधिकतम सीमा या

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पृथ्वी की धुरी के झुकाव का कोण सूर्य की परमक्रान्ति कहलाता है। २१ मार्च व २३ सितम्बर के आस–पास सूर्यक्रान्ति शून्य होती है। २१ जून को सायनसूर्य कक्र रेखा पर तथा २२ दिसम्बर को मकर रेखा पर लम्बवत् चमकता है, इन दिनों सूर्य क्रान्ति परम (अधिकतम) होती है। परमक्रान्ति एवं सायनसूर्य के अंशों की सहायता से त्रिकोणमिती द्वारा यह ज्ञात किया जा सकता है कि अमुक दिन सूर्य किस अक्षांश पर लम्बवत् चमकता है।

प्राचीनकाल में पृथ्वी के झुकाव के कारण नाड़ीवृत्त एवं क्रान्तिवृत्त के कटान द्वारा उत्पन्न कोण की निश्चित ठीक माप २४ अंश मानी जाती थी। सूर्यसिद्धान्तादि ज्योतिष ग्रन्थों में लंकोदयासु, लग्नोदय पल, दिन–रात्र मान, सूर्योदयास्त व जातक के ग्रहों के कुछ बल आज भी २४ अंशात्मक मान से बनाये जाते है।[८२] परन्तु आधुनिक खोजों से यह सिद्ध हो चुका है कि उक्त कोणीय माप २४ अंश से कुछ कम हो सकती है। इन दिनों यह मान औसतन ०.४६१८५ विकला की वार्षिक गति से निरंतर कम हो रहा है। आधुनिक मतानुसार सन् १६०० ई. में इस कोण का मध्यम मान २३° : २७′ : ०८″ था। ०.४६८१५ विकला की वार्षिक गति से १०० वर्षों में कोणीय मान में ४६ कला ४८ विकला की कमी होने से सन् २००० ई. में इसका मान लगभग २३° : २६′ : २२″ होगा। गणित ज्योतिष में इस कोणीय माप को **परमक्रान्ति** कहते है। इस प्रकार स्पष्ट है कि क्रान्ति नाड़ीवृत्त एवं क्रान्तिवृत के बीच की दूरी की कोणात्मक माप है। यह क्रान्ति ध्रुवपोत वृत्त में होती है। जब पृथ्वी मेष या तुला राशि में होती है तो उसकी स्थिति विषुववृत्त में होती है अतः वहाँ क्रान्ति का अभाव होता है क्योंकि नाड़ीवृत्त एवं क्रान्तिवृत्त के बीच की दूरी शून्य होती है। ऐसी स्थिति में पूरी पृथ्वी पर दिन–रात समान अवधि के होते है। जैसे –जैसे पृथ्वी अयन राशियों की ओर बढ़ने लगती है, वैसे –वैसे वह विषुवतवृत्त (नाड़ीवृत) से दूर हटने लगती है, यही दूरी क्रान्ति है। जो सम्पात से तीन राशि (९० अंश) के अन्तर पर अयन बिन्दुओं में परमक्रान्ति (प्राचीनकाल में २४°) के तुल्य तथा सम्पात बिन्दुओं में शून्य होती हैं।

अधिकांश पञ्चांगों में २२ जून एवं २३ दिसम्बर को क्रान्ति का अधिकतम मान २३° : २७′ के लगभग दिया है। अतः २३° : २७′ को ही हम परमक्रान्ति मानते हैं।

---

[८२] सूर्य सिद्धान्त, स्पष्टाधिकार, श्लोक १५–१६ एवं २८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

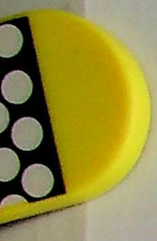

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूर्यसिद्धान्त, ग्रहलाघव, केशवीजातक, मकरन्द सारणी, सिद्धान्तशिरोमणी एवं केतकी ज्योतिर्गणित इत्यादि ग्रन्थों में क्रान्ति साधन की विधि को बतलाया है। नारद पुराण एवं सूर्य सिद्धान्तानुसार स्पष्टतः एक राशि में जितनी कलाऐं (१८००) होती है उसके ८ वें भाग (२२५ कला) को पहली ज्या कहते हैं। इस (प्रथम ज्या) को प्रथम ज्या से भाग देकर लब्धि को प्रथम ज्या में से घटाकर शेष (प्रथम खण्ड) को प्रथम ज्या में ही जोड़ने पर द्वितीय ज्या प्राप्त होती है। इसी प्रकार आदि से लेकर सभी ज्याओं को प्रथम ज्या से भाग देकर लब्धि को जोड़कर योगफल को पहली ज्या में से घटाने पर शेष को अंतिम ज्या में जोड़ने से अगली ज्या प्राप्त होती है। इस प्रकार क्रम से २४ ज्या सिद्ध होती हैं। परम क्रान्ति ज्या का मान १३६७ कला होता है। इस परम क्रान्ति ज्या से ग्रह की भुज ज्या को गुणा करके त्रिज्या द्वारा भाग दने पर इष्ट क्रान्ति ज्या प्राप्त होती है।[८३]

ग्रहलाघव में क्रान्ति साधन के लिये ग्रन्थकार ने ६० अंशों को १०–१० अशों के ६ भागों में बाँटकर प्रत्येक भाग पर क्रान्ति साधन किया है। आचार्य द्वारा निर्देशित ६ क्रान्तिअंक निम्नानुसार है।

सारणी क्रमांक–४

अंश	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	६०
भाग	१	२	३	४	५	६	७	८	६
क्रांत्यांक	४०	८०	११७	१५१	१८१	२०६	२२४	२३६	२४०

जिस दिन की सूर्यक्रान्ति का साधन करना हो उस दिन के सायन सूर्य के भुजांश बनाकर १० का भाग दें। जो लब्धि मिले उसके अनुसार उपर्युक्त सारणी से क्रांत्यांक ग्रहण करें। लब्धि में १ जोड़कर पुनः क्रांत्यांक प्राप्त करें तथा अग्रिम को घटाकर शेषफल ग्रहण करें। इसमें पहले शेष के रूप में प्राप्त अंशादि को गुणा करें। जो गुणनफल हो, उसमें १० का भाग देकर प्राप्त में पूर्वोक्त अंकों को जोड़ दें। तब जो योगफल मिले उसमें १० का भाग देने से जो लब्धि प्राप्त हो, वह क्रांति होती है।

---

[८३] परमापक्रमज्या तु सप्तरन्ध्रगुणेन्दवः।
तदगुणाज्या त्रिजीवाप्ता तच्चापं क्रान्तिरूच्यते। सूर्य सिद्धान्त, स्पष्टाधिकार, श्लोक २८
एवं नारद पुराण पूर्वभाग २/५४/६३ परार्ध, ६४ पूर्वार्ध

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

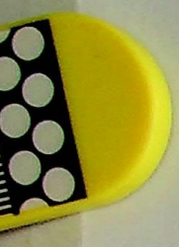

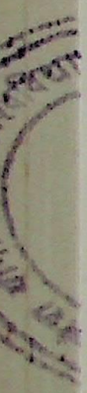

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यदि सायनसूर्य उत्तरीगोल में हो तो उसे उत्तरा क्रान्ति और यदि दक्षिणीगोल में हेा तो दक्षिणा क्रान्ति होती है।[८४]

उदाहरणार्थ :– शक १६२० वैशाख शुक्ल अष्टमी सोमवार (४ मई १६६८ ई.) को सूर्यक्रान्ति लाघव गणित से ज्ञात करते है। श्री हृषीकेष पञ्चागानुसार इस दिन प्रातः कालीन स्पष्ट सूर्य के राश्यांश ० : १६° : २६′ : ४४″ तथा केतकी अयनांश २३° : ४६′ : २″ है। तब निरयन सूर्य में अयनांश जोड़ने पर सायन सूर्य स्पष्ट १ राशि १३ अंश १५ कला ४६ विकला होगा। सायनसूर्य के भुजांश ४३ अंश १५ कला ४६ विकला होंगे। भुजांशों में १० का भाग देने पर लब्धि ४ तथा शेषांश ३ अंश १५ कला ४६ विकला होगा। अब लब्धि ४ के अनुसार क्रांत्यांक १५१ तथा ४ में १ जोड़ने से ५ हुआ, इसके अनुसार क्रांत्यांक १८१ मिला। क्रांत्यांक १८१ में से १५१ को घटाने पर शेष ३० बचा, इस संख्या का शेषांश ३ अंश १५ कला ४६ विकला से गुणा किया तो गुणनफल ६७ अंश ५३ कला मिला। गुणनफल में १० का भाग दिया तो भागफल ६ अंश ४७ कला १८ विकला प्राप्त हुआ। इस भागफल में क्रांत्यांक १५१ को जोड़ा तो योगफल १६० अंश ४७ कला १८ विकला हुआ। इस योगफल में १० का पुनः भाग देन पर भागफल १६ अंश ४ कला ४४ विकला प्राप्त हुआ, यही सूर्य क्रान्ति का मान १६ अंश ४ कला ४४ विकला हुआ। चूँकि सायन सूर्य उत्तर गोल में है इसलिये यह उत्तर दिशा की क्रान्ति हुई। श्री हृषीकेष पञ्चांग में इस दिन सूर्य की उत्तर क्रान्ति का मान १५ अंश ४६ कला दिया है। इस प्रकार लाघवगणित से हम सायनसूर्य के द्वारा सूर्यक्रान्ति का साधन कर सकते है।

ग्रहलाघव में क्रान्ति साधन की एक ओर विधि का वर्णन है, जो कि स्थूल है।[८५] इस विधि द्वारा साधित क्रान्तिमान तथा उपर्युक्त विधि के अनुसार प्राप्त क्रान्तिमान में लगभग १८ कलाओं का अन्तर आता है। पञ्चांग के सूक्ष्मगणितीय अध्ययन की दृष्टि से यह विधि अनुपयुक्त है। केशवीय जातक ग्रन्थ में सूर्यक्रान्ति ज्ञात करने के लिये सारणियाँ दी गई हैं।[८६] जिनकी सहायता से सायन सूर्य के भुजांश बनाकर सरल गणित से सूर्यक्रान्ति का साधन किया जा सकता है। इनके

---

[८४] ग्रहलाघव, त्रिप्रश्नाधिकार श्लोक ११

[८५] ग्रहलाघव, त्रिप्रश्नाधिकार, श्लोक १३,

[८६] केशवी जातक पृ.

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्वारा प्राप्त सूर्यक्रान्ति का मान लगभग ग्रहलाघवीय क्रान्तिमान के बराबर होता है। मकरन्द प्रकाश नामक ग्रन्थ में सूक्ष्मक्रान्ति ज्ञानार्थ हेतु सारणी दी है।[८७] जिसके द्वारा सायनसूर्य के भुजांशों के आधार पर सरलता से सूर्यक्रान्ति का आनयन किया जा सकता है –

सूक्ष्मक्रांति ज्ञानार्थ सारणी क्रमांक-५

भुजांश	**१**	**२**	**३**	**४**	**५**	**६**	**७**	**८**	**९**	**१०**	**११**	**१२**	**१३**	**१४**	**१५**
अंश	००	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५	५	६
कला	२४	४८	१२	३६	००	२४	४८	१२	३६	००	२४	४८	१२	३६	००
विकला	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
भुजांश	**१६**	**१७**	**१८**	**१९**	**२०**	**२१**	**२२**	**२३**	**२४**	**२५**	**२६**	**२७**	**२८**	**२९**	**३०**
अंश	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११
कला	२४	४८	१२	३६	००	२२	४४	६	२८	५१	१३	३५	५७	१८	४२
विकला	०	०	०	०	००	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०
भुजांश	**३१**	**३२**	**३३**	**३४**	**३५**	**३६**	**३७**	**३८**	**३९**	**४०**	**४१**	**४२**	**४३**	**४४**	**४५**
अंश	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६
कला	२	२२	४२	३	२४	४४	४	२५	४५	६	२४	४२	००	१८	३६
विकला	२४	४८	१२	३६	००	२४	४८	१२	३६	००	००	००	००	००	०
भुजांश	**४६**	**४७**	**४८**	**४९**	**५०**	**५१**	**५२**	**५३**	**५४**	**५५**	**५६**	**५७**	**५८**	**५९**	**६०**
अंश	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०
कला	५४	१२	३०	४८	६	२१	३६	५१	६	२१	३६	५१	६	२१	३६
विकला	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
भुजांश	**६१**	**६२**	**६३**	**६४**	**६५**	**६६**	**६७**	**६८**	**६९**	**७०**	**७१**	**७२**	**७३**	**७४**	**७५**
अंश	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कला	४६	५७	८	१९	३०	४०	५१	२	१३	२४	२१	३८	४५	५२	००
विकला	४८	३६	२४	१२	००	४८	३६	२४	१२	००	४८	३६	२४	१२	००
भुजांश	**७६**	**७७**	**७८**	**७९**	**८०**	**८१**	**८२**	**८३**	**८४**	**८५**	**८६**	**८७**	**८८**	**८९**	**९०**
अंश	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
कला	७	१४	२१	२८	३६	३८	४०	४३	४५	४८	५०	५२	५५	५७	००
विकला	१२	२४	३६	४८	००	२४	४८	१२	३६	००	२४	४८	१२	३६	००

[८७] मकरन्द्र प्रकाश, परिशिष्टम, पृ. १६६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

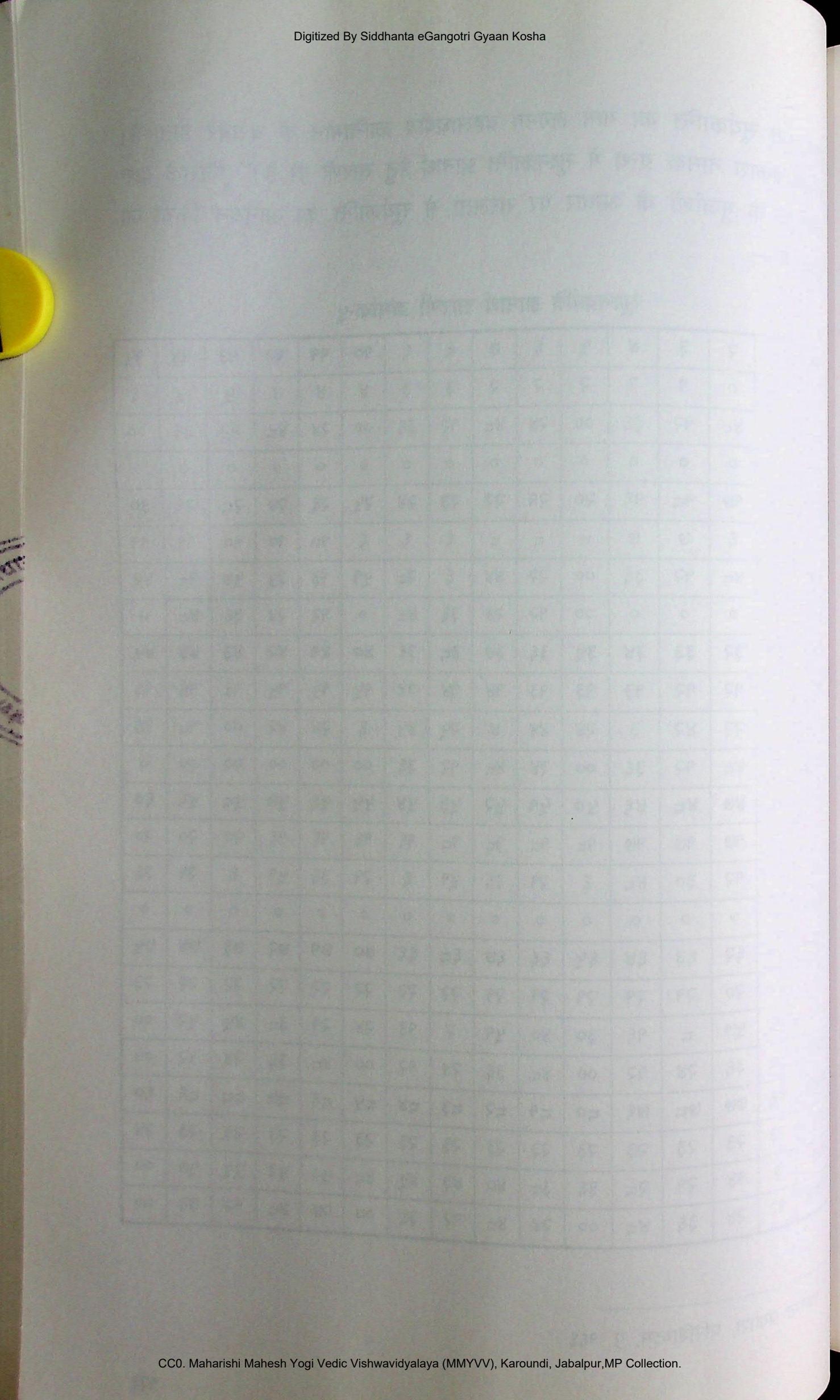

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पूर्वोक्त उदाहरण में शक १६२० वैशाख शुक्लाष्टमी सोमवार (४ मई १६६८) को सायनसूर्य के भुजांश ४३ अंश १५ कला ४६ विकला है। उपर्युक्त सारणी से ४३ अंश के नीचे सूर्यक्रान्ति का मान १६ अंश दिया है। तब १५ कला ४६ विकला हेतु –

४४ अंश के नीचे सूर्यक्रांति = १६° : १८′
४३ अंश के नीचे सूर्यक्रांति = १६° : ००
घटाने पर, अन्तर = १६° : ००
अतः इष्ट दिन सूर्य क्रान्ति = १६° : ०′ + ४′ : ४″ = १६° : ४′ : ४४″

केतकर ने क्रान्तिसाधन के लिये ग्रहलाघव की तरह नौ भागों पर क्रान्ति कलाऐं निकाली है, जो निम्नलिखित है –

सारणी क्रमांक–६

अंश	१०	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०
भाग	१	२	३	४	५	६	७	८	९
क्रांतिकला	२३८	४६९	६८९	८८९	१०६५	१२१०	१३१५	१३८५	१४०७

जिसदिन की सूर्यक्रान्ति निकालना हो उस दिन सायन सूर्य के भुजांशों में १० का भाग दें, जो लब्धि मिले उसके अनुसार उपर्युक्त सारणी से क्रान्तिकलाऐं ग्रहण करें। लब्धि में १ जोड़कर पुनः क्रान्तिकालाऐं प्राप्त करें तथा अग्रिम क्रान्ति कलाओं को घटाकर शेषफल ग्रहण करें। इसमें पहले शेषांश के रूप में प्राप्त फल का गुणा करें तथा गुणनफल में १० का भाग देकर प्राप्त भागफल में पूर्वोक्त लब्धि अंक की क्रान्ति कलाऐं जोड़ दे, जो योगफल मिले वह इष्टकाले सूर्यक्रान्ति होगी।[९९]

उदाहरणार्थ :- शक १६२० वैशाख शुक्लाष्टमी रविवार (३ मई १६६८ ई.) को सूर्यक्रान्ति केतकी गणित से ज्ञात करते हैं। श्री सरस्वती पञ्चांगानुसार इस दिन प्रातः स्पष्ट निरयन सूर्य के राश्यांश ० : १८° : ३६′ : ५″ तथा केतकी अयनांश २३°:४६′:००″ है। तब सायन सूर्य स्पष्ट ० : ४२° : २५′ : ५″ होगा। सायनसूर्य के भुजांश ४२ अंश २५ कला ५ विकला होंगे। अतः

४२° : २५′ : ५″ ÷ १० = लब्धि ४ शेषांश २° : २५′ : ५″

---

[९९] केतकी ग्रहगणितम्, त्रिप्रश्नाधिकार, श्लोक ७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लब्धि ४ के अनुसार सूर्यक्रान्ति कलाऐं ८८६ तथा ४ में १ जोड़कर ५ अंक के अनुसार सूर्यक्रान्ति कलाऐं १०६५ प्राप्त होती है, तब

१०६५ – ८८६ = १७६ कलाऐं अन्तर

शेषांश २° : २५′ : ५″ x १७६ = ७° : ५′ : ३५″

अब ८८६ कलाऐं + ४२ कला ३३ विकला = ६३१ कला ३३ विकला

= १५ अंश ३१ कला ३३ विकला

यही शक १६२० वैशाख शुक्लाष्टमी रविवार (३ मई १६६८) को सूर्यक्रान्ति हुई। चूँकि सूर्य उत्तरगोल में है अतः यह सूर्य की उत्तराक्रान्ति होगी। पंचवर्षीय श्री सरस्वती पञ्चांग में इस दिन सूर्य की उत्तराक्रान्ति का मान १५ अंश ३२ कला दिया है जो कि केतकी गणितानुसार शुद्ध है।

आधुनिक गणित से वर्ष के किसी भी दिन की सूर्यक्रान्ति उस दिन के सायन सूर्य के स्पष्ट राश्यांशों एवं परमक्रान्ति के आधार पर निम्नलिखित सूत्र द्वारा ज्ञात की जा सकती है –

ज्या (Sin) सूर्यक्रान्ति = ज्या सायन सूर्य x ज्या परमक्रान्ति

अतः सूर्यक्रान्ति = जया$^{-1}$ (ज्या सायन सूर्य x ज्या परमक्रान्ति)

यदि सायन सूर्य के राश्यांश १८० अंश से कम से हो तो सूर्यक्रांति उत्तरी (+) तथा १८० अंश से अधिक हों तो सूर्य क्रांति दक्षिणी (–) होती है।

आधुनिक मतानुसार सूर्य की परमक्रान्ति २३° अंश २६ कला के लगभग है।

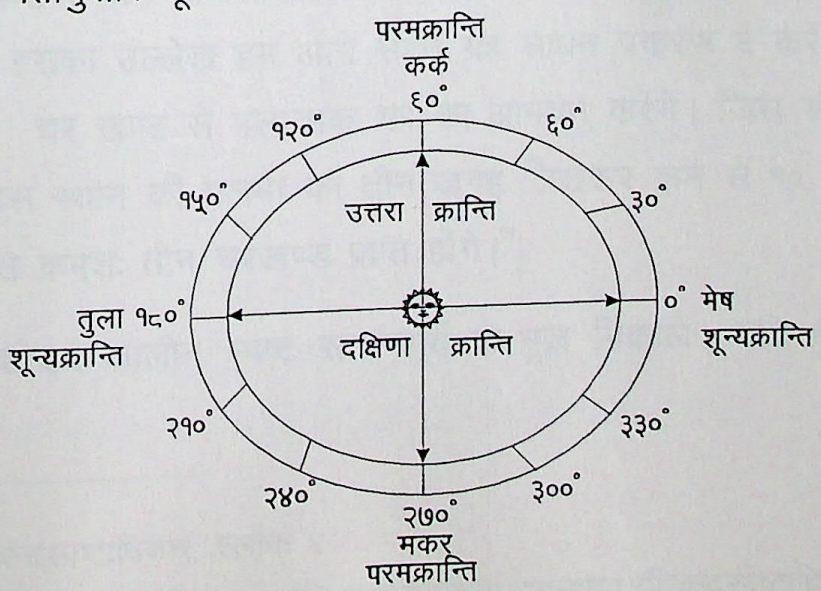

चित्र क्रमांक–१०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

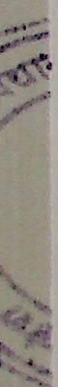

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उदाहरणार्थ :– ३ मई २००० ई. को जीवाजी वेधशाल उज्जैन की एफेमरीज के अनुसार सायन सूर्य के स्पष्ट राश्यांश १ राशि १३ अंश ८ कला १० विकला दिये है तब इस दिन आधुनिक गणित से सूर्य क्रान्ति का मान निकालते हैं।

सूर्यक्रान्ति = ज्या$^{-१}$ (ज्या सयनसूर्य x जया परमक्रान्ति)

$= \sin^{-1}$ [Sin (४३° ८′ १०″) x sin (२३° : २६′)]

$= \sin^{-1}$ [०.६८३७ x ०.३९७६८]

$= \sin^{-1}$ (०.३७१६०८४) = १५.७७७८ = १५ अंश ४६ कला ४० विकला

अतः ३ मई सन् २००० ई. को सूर्यक्रान्ति का मान १५ अंश ४६ कला ४० विकला प्राप्त होता है। चूँकि सायन सूर्य उत्तर गोल में है अतः यह उत्तरा क्रान्ति हुई। एफेमरीज में इस दिन सूर्य की उत्तरीक्रान्ति का मान १५ अंश ४६ कला दिया है जो कि आधुनिक गणितानुसार शुद्ध है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भिन्न–भिन्न मतानुसार बतलाई गयी क्रान्ति साधन की विधियों के द्वारा हम सायनसूर्य के आधार पर इष्टदिन की सूर्यक्रान्ति निकाल सकते है। उत्तरभारत के अधिकांश पञ्चांगों में प्रतिदिन की सूर्यक्रान्ति को सारणी द्वारा व्यक्त किया है।

(छ) **चरसाधन** :- पलात्मक चर के द्वारा स्थानीय सूर्योदयास्त, दिनमान व रात्रिमान का आनयन किया जाता है। ग्रहलाघव के अनुसार चर को मंदस्पष्ट सूर्य की विकलाओं में यथोक्त धन अथवा ऋण करने पर स्वदेशोदय कालीन स्पष्ट निरयन सूर्य होता है।[८९] इसका उल्लेख हम आगे स्पष्ट ग्रह साधन प्रकरण में करेंगे। यहाँ हम ग्रहलाघवानुसार चर खण्ड से पलात्मक चर का आनयन करेंगें। जिस स्थान पर चर निकलाना हो उस स्थान की पलभा को तीन जगह लिखकर क्रम से १०, ८ व $\frac{१०}{३}$ से गुणा करें। इससे क्रमशः तीन चरखण्ड प्राप्त होंगे।[९०]

अब स्वदेशोदय कालीन स्पष्ट सायनसूर्य के भुज निकालें। यदि भुज में शून्य

---

[८९] ग्रहलाघव, रविचन्द्रस्पष्टाधिकार, श्लोक ४

[९०] त्रिष्ठाहता स्युर्दशभिर्भुजंगै र्दिग्भिश्चरार्द्धानि गुणोद्धृतान्त्या ।ग्रहलाघव,रविचन्द्रस्पष्टाधिकार,श्लोक ३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

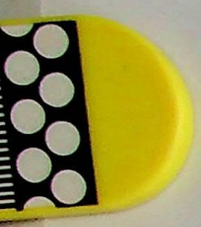

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राशि हो तो राशि को छोड़कर केवल अंशादि से प्रथम चरखण्ड का गुणा करें और यदि भुज में १ राशि हो तो राशि को छोड़कर केवल अंशादि से द्वितीय चरखण्ड का गुणा करें। यदि भुज में २ राशि हो तो केवल अंशादि से तृतीय चरखण्ड का गुणा करें । जो गुणनफल प्राप्त हो उसमें ३० का भाग दें। जो लब्धि मिले, उसमें जिस चरखण्ड का गुणा किया गया हो उससे पूर्व के चरखण्ड में जोड़ दें, प्राप्त योगफल चर–पल होता है।[६१] अर्थात्

$$\text{चरपल} = \frac{\text{सायन रवि की राशि छोड़कर केवल अंशादि} \times \text{वर्तमान चरखण्ड}}{३०} + \text{गत चरखण्ड}$$

सायनसूर्य यदि उत्तरी गोल में हो तो पलात्मक चर धन और यदि दक्षिणी गोल में हो तो चर ऋण होगा।

उदाहरणार्थ :– शक १६२० चैत्र शुक्लाष्टमी (४ अप्रैल १६६८ ई.) को काशी में दिनमान आदि जानने हेतु चर–पल निकलना है। श्री हृषीकेष पञ्चांगानुसार इष्ट दिन काशी में प्रातः स्पष्ट सूर्य ११ राशि २० अंश १० कला ३६ विकला है तथा अयनांश २३° : ४८′ : ५८″ है।

चूँकि काशी की पलभा ५ अंगुल ४५ प्रतिअंगुल है। तब

प्रथम चरखण्ड	द्वितीय चरखण्ड	तृतीय चरखण्ड
५ : ४५ x १०	५ : ४५ x ८	५ : ४५ x $\frac{१०}{३}$
= ५७ : ३०	= ४६ : ०	= १६ : १०

सायन सूर्य = निरयन सूर्य + अयनांश

= ११ रा. : २०° : १०′ : ३६″ + ० रा. : २३° : ४८′ : ५८″

= ० रा. : १३° : ५६′ : ३४″

चूँकि यहाँ सायन स्पष्ट रवि में ० राशि है अतः राशि को छोड़कर शेष अंशादि से प्रथम चरखण्ड का गुणा होगा –

चरपल = (१३° १६′ ३४″ × ५७ : ३०) ÷ ३० + गतचर खण्ड

= (८०४° ३५′ ५″ ÷ ३०) + ० = २६ पल ४६ विपल (धन)

चूँकि सायन सूर्य उत्तरगोल में है अतः चर पल धनात्मक होंगे।

---

[६१] ग्रहलाघव, रविचन्द्र स्पष्टाधिकार, श्लोक ४,५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिनार्द्ध = १५ घटी + चरपल (२६ : ४६) = १५ घटी २७ पल (लगभग)
तथा दिनमान = दिनार्द्ध x २ = १५ घटी २७ पल x २ = ३० घटी ५४ पल

श्री हृषीकेष पञ्चांग में ४ अप्रैल सन् १९९८ ई. को दिनमान ३० घटी ५१ पल दिया है जो कि लगभग शुद्ध है।

चूँकि दिनार्द्ध (दिन का आधाभाग) ६ घंटे से जितने मिनट कम या अधिक होता है, वह चर मिनट कहलाता है। इसका अर्थ है कि दिन या रात १२ घंटे से चर मिनट के दुगने के बराबर न्यूनाधिक होता है।

केतकीयादि के आधुनिक गणितानुसार सूर्यक्रान्ति एवं स्थानीय अक्षांशों की सहायता से चर मिनट या चर–पल सरलता से ज्ञात किये जा सकते है।[६२] उत्तराक्रान्ति होने पर चरमिनट धनात्मक (+) तथा दक्षिणाक्रान्ति होने पर चरमिनट ऋणात्मक (–) होते हैं।

प्रथम विधि :– चरमिनट या पल ज्ञात करने की यह सर्वशुद्ध विधि है। इसमें त्रिकोणमिति की सहायता से निम्नलिखित सूत्रानुसार चरमिनट या पल ज्ञात किये जा सकते है –

ज्या चरांश = स्पर्श ज्या (Tan) सूर्यक्रान्ति x स्पर्शज्या (Tan) अक्षांश
चरांश = Sin^{-1} [tan सूर्यक्रान्ति x tan अक्षांश]
चर मिनट = चरांश x ४ (क्योंकि १° = ४ मिनट तथा १° = १० पल)
चरपल = चरांश x १०

उदाहरणार्थ :– शाके १९२१ के श्री आर्यभट्ट पञ्चांग की रविक्रान्ति सारणी के अनुसार १ जनवरी सन् १९९९ ई. को सूर्यक्रान्ति २३ अंश ४ कला दक्षिणी है। यह पञ्चांग दिल्ली के अक्षांश २८° : ३८'' पर निर्मित है तब १ जनवरी सन् १९९९ ई. को नवीन गणित से चर मिनट होंगे –

चरांश = Sin^{-1} [Tan २३° : ४' x Tan २८° : ३८'']
= Sin^{-1} [०.४२५८ x ०.५४५९]
= Sin^{-1} [०.२३२५] = १३.४४४ अंश
चर मिनट = १३.४४४ x ४ = ५३.७७ मिनट

---

[६२] केतकी ग्रहगणितम, स्पष्टाधिकार, चरं पृष्ठ १११

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चर पल = १३.४४४ x १० = १३४.४४ पल

चूँकि सूर्यक्रान्ति दक्षिणी है तथा दिल्ली उत्तरगोलार्द्ध में है। इसलिये चर ऋण (–) ५३ मिनट ४६ सेकण्ड अथवा २ घटी १४ पल होगा।

दूसरी विधि :– यह विधि प्रथम विधि से अपेक्षाकृत स्थूल एवं सरल है। इससे चर मिनट में अधिकतम १ मिनट का अन्तर आ सकता है। इसमें निम्नालिखित सूत्र से स्पष्ट चरांतर संस्कार प्राप्त होता है।

चरपल = (सूर्यक्रान्ति × अक्षांश) ÷ ५

उदाहरणार्थ :– शाके १६२१ के श्री आर्यभट्ट पञ्चांग में १ जनवरी १६६६ को सूर्यक्रान्ति २३° : ४′ दी है तब सूत्रानुसार

चरपल = (२३° ४′ × २८° ३८′) ÷ ५ = १३२.०६५ पल = २ घटी १२ पल(ऋण)

यह मान प्रथम विधि से प्राप्त परिणाम से लगभग २ पल कम है। इस प्रकार चर निकालने की उपर्युक्त विधियों के द्वारा इष्टदिन की सूर्यक्रान्ति एवं स्थानीय अक्षांश की सहायता से हम चर मिनट या पल ज्ञात कर सकते है।

उत्तर भारत के अधिकांश पञ्चांगों एवं एफेमरीज में चर सारणी दी रहती है, जिससे सूर्यक्रान्ति एवं अक्षांश की सहायता से इष्ट दिन के चर मिनट या पल ज्ञात किये जा सकते है। चर सारणी में ऊपर की प्रथम पंक्ति में क्रांत्यांश (Dictination) तथा प्रथम कालम में अक्षांश (Latitude) लिखे रहते है। भारत के जिस नगर के चर मिनट निकालने हों, उस नगर के अक्षांश एवं अमुक दिन के सूर्यक्रांत्यांश दोनों के कटान बिन्दु से ज्ञात करते है।[६३]

(ज) दिनमान - रात्रिमान एवं मिश्रमान :- सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक की अवधि को दिनमान कहते है। इसके विपरीत सूर्यास्त से लेकर सूर्योदय तक की अवधि को रात्रिमान कहते है। सूर्योदय से लेकर अर्द्धरात्रि तक के काल मे मिश्रमान कहते है। भारतीय ज्योतिष में दिनमान व रात्रिमान को मिलाकर ६० घटी का एक अहोरात्र माना जाता है। सम्पात दिवसों (२१ मार्च व २३ सितम्बर) को दिन व रात्रि बराबर अवधि (३०–३० घटी) के होते है। यदि दिनमान ३० घटी से अधिक हो तो दिन बड़े

[६३] भारतीय ज्योतिष – डा. नेमीचंद शास्त्री, द्वितीय अध्याय पेज १२८ से १३१ तक

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तथा रातें छोटी होती है, इसके विपरीत यदि दिनमान ३० घटी से कम हो तो दिन छोटे व राते बड़ी होती हैं। २१ मार्च को जैसे ही सायन सूर्य मेषादि राशियों में प्रवेश करता है, दिनमान ३० घटी से बढ़ने लगता है। सायन सूर्य के कर्क राशि में प्रवेश के समय (२१ जून) दिनमान अधिकतम ३५ घटी होता है। कर्क राशि से सायनसूर्य जैसे–जैसे आगे बढ़ता है, दिनमान ३५ घटी से घटने लगता है। सायन सूर्य के तुलाराशि में प्रवेश के समय (२२ सितम्बर) दिनमान पुनः ३० घटी हो जाता है। जैसे–जैसे सायनसूर्य तुलादि राशियों में आगे बढ़ता है, वैसे–वैसे दिनममान ३० घटी से भी कम होने लगता है। सायनसूर्य के मकर संक्रान्ति के समय (२३ दिसम्बर) दिन मान न्यूनतम २५ घटी होता है। सायन सूर्य के मकरादि राशियों में आगे बढ़ने पर दिनमान २५ घटी से बढ़ने लगता है और सायन सूर्य के मेष संक्रान्ति के समय दिनमान पुनः ३० घटी का होता है।

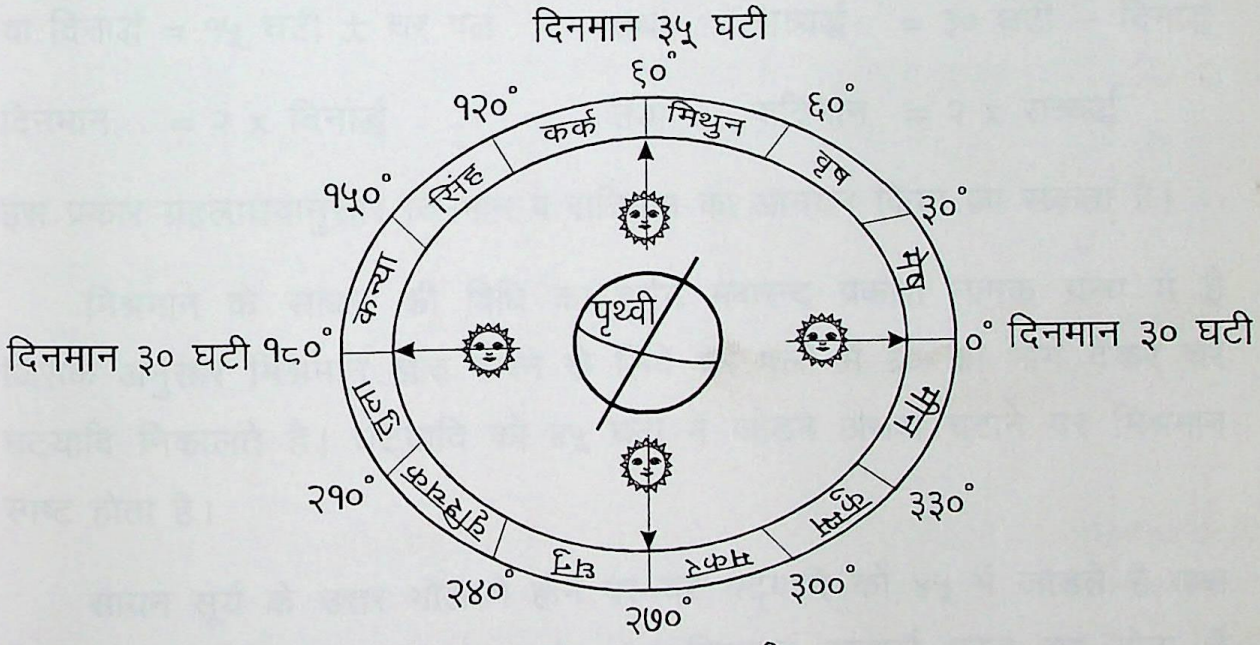

चित्र क्रमांक–११

दिनमान + रात्रिमान = अहोरात्र (६० घटी या २४ घण्टा)

ज्योतिष के सिद्धान्त ग्रन्थों में दिनमान–रात्रिमान इत्यादि साधन की विधियों का वर्णन हुआ है। सूर्यसिद्धान्त में चरानयन पूर्वक दिनरात्रि मान ज्ञात करने की विधि

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

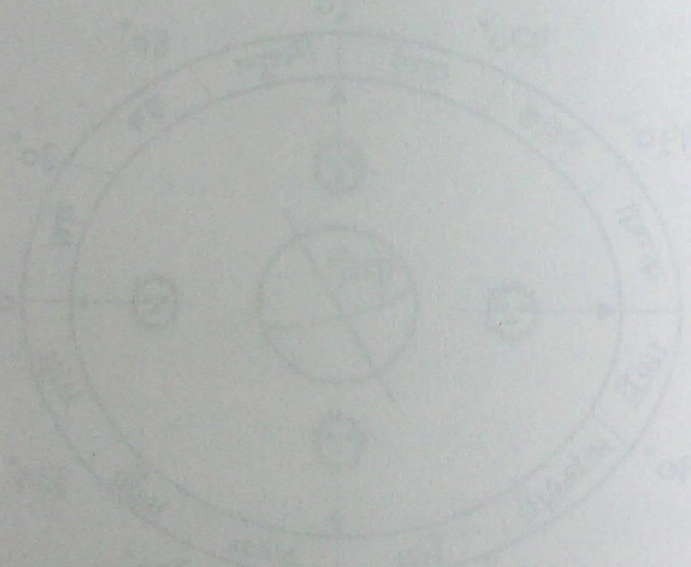

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उधृत है[६४] ग्रहलाघव में दिनरात्रिमान साधन की विधिका उल्लेख सूर्य सिद्धान्त के समान ही है।[६५]

ग्रहलाघव के अनुसार जिस दिन का दिन रात्रि मान निकालना हो, उस दिन १५ घटी या ६ घण्टा में चर संस्कार धन (+) अथवा ऋण (–) करने से दिनार्द्ध आता है। उस दिनार्द्ध को दुगना करने पर दिनमान प्राप्त होता है। यदि सायनसूर्य उत्तरीगोल (सौम्यगोल) में हो तो पलात्मकचर को १५ घटी में जोड़ने पर योगफल दिनार्द्ध होता है तथा सायन सूर्य दक्षिणीगोल (याम्यगोल) में हो तो पलात्मक चर को १५ घटी में से घटाने पर दिनार्द्ध होगा। दिनार्द्ध को ३० घटी में से घटने पर रात्र्यर्द्ध होता है। केतकी ग्रहगणित में भी इसी विधि का उल्लेख है।[६६]

दिनार्द्ध = ६ घण्टा ± चरमिनट(उत्तराक्रांति होने पर(+) दक्षिणाक्रान्ति होने पर(–))

या दिनार्द्ध = १५ घटी ± चर पल तथा रात्र्यर्द्ध = ३० घटी – दिनार्द्ध

दिनमान = २ x दिनार्द्ध तथा रात्रिमान = २ x रात्र्यर्द्ध

इस प्रकार ग्रहलाघवानुसार दिनमान व रात्रिमान का आनयन किया जा सकता है।

मिश्रमान के साधन की विधि का वर्णन मकरन्द प्रकाश नामक ग्रन्थ में है. जिसके अनुसार मिश्रमान ज्ञात करने के लिये चर पलों में ६० का भाग देकर चर घट्यादि निकालते है। घट्यादि को ४५ घटी में जोड़ने अथवा घटाने पर मिश्रमान स्पष्ट होता है।

सायन सूर्य के उत्तर गोल में होने पर चर घट्यादि को ४५ में जोड़ते है तथा याम्य गोल (दक्षिणगोल) में घटाते है। यह मिश्रमान रात्र्यर्द्ध काल का होता हैं दिनमान और रात्र्यर्द्ध काल का योग मिश्रमान है।[६७] अतः

---

[६४] सूर्यसिद्धान्त, स्पष्टाधिकार श्लोक ६१–६३

[६५] गोलौस्तः सौम्ययाम्यौ क्रियधटरसभे खेचरेऽथायने ते,
नक्रात्कर्काच्च षड्भेऽथ चरपलयुतोनास्तु पञ्चेन्दुनाड्यः।
घस्त्रार्द्धे गोलयोः स्यात् तदयुतखगुणाः स्यान्निशार्द्धन्त्वथाक्ष,
च्छायेषुध्न्यक्षभायाः कृतिदशमलवोना यमाशा पलांशाः। ग्रहलाघव, त्रिप्रश्नाधिकार श्लोक ६

[६६] केतकी ग्रहगणित, स्पष्टाधिकार, श्लोक १२ पृ. ११५

[६७] सायनाक्रस्य यो बाहुस्तद्वशाच्चरखण्डकम्।
राशितुल्यं गतं विद्यादैष्यं तत्पुरतः स्थितम्।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मिश्रमान	= दिनमान + रात्र्यर्द्ध
२ x मिश्रमान	= २ x दिनमान + २ x रात्र्यर्द्ध
	= २ x दिनमान + रात्रिमान
	= दिनमान + (दिनमान + रात्रिमान)
	= दिनमान + ६० घटी
मिश्रमान	= दिनार्द्ध + ३० घटी
तथा दिनमान	= २ मिश्रमान – ६० घटी
दिनमान	= ३० घटी ± (२ x चरपल)
	= ३० घटी ± (५ x चर)
	उत्तराक्रान्ति पर (+) दक्षिणाक्रान्ति पर (–)
रात्रिमान	= ६० घटी – दिनमान

उदाहरणार्थ :– श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग के अनुसार शाके १६२२ वैशाख शुक्ल द्वितीया (५ मई २०००) को सूर्य की उत्तराक्रान्ति १६° – १४′ है। यह पञ्चांग शेखावटी के अक्षांश २८° : ०० पर निर्मित है। हमें इष्ट दिन का दिन–रात्रिमान तथा मिश्रमान निकालना है।

आधुनिक गणितानुसार,

चरांश = Sin^{-1} [tan रविक्रांति x tan अक्षांश]

= $\sin^{-1}$ [tan १६° - १४ x tan २८° . ००]

= $\sin^{-1}$ [०.२६११६ x ०.५३१७१]

= $\sin^{-1}$ [०.१५४८१] = ८.६०५८५ अंश

चर–पल = चरांश x १० = ८.६०५८५ x १० = ८६.०५८५ पल

चर–घट्यादि = १ घटी २६ पल

चूँकि सायनसूर्य उत्तरगोल में है, अतः चर–पल धनात्मक होंगे।

इसलिये दिनार्द्ध = १५ घटी + चरपल (१ घटी २६ पल) = १६ घटी २६ पल

ऐष्यखण्डगुणं कृत्वा बहोर्भागादिकं भजेत्।
खगुणैर्यत्फलं योज्यं गतखण्डे पलात्मकम्।
ततो दण्डादिकं कृत्वा देयं बाणयुगेऽथवा
हेयं गोलक्रमादेवं मिश्रमानं भवेत्स्फुटम् । मकरन्द प्रकाश, स्पष्टाधिकार, श्लोक ३४–३६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

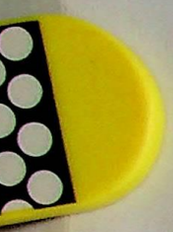

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तथा रात्र्यर्द्ध = ३० घटी – १६ घटी २६ पल = १३ घटी ३१ पल

दिनमान = २ x दिनार्द्ध = २ x १६ घटी २६ पल = ३२ घटी ५८ पल

यह ५ मई सन् २००० ई. को रामगढ़ (शेखावटी) में दिनमान होगा। चूँकि श्री बल्लभ मनीराम पञ्चांग में इस दिन दिनमान ३२ घटी ५७ पल दिया है, जो कि उपर्युक्त गणितानुसार शुद्ध है। इसीप्रकार

रात्रिमान = २ x रात्र्यर्द्ध

= २ x १३ घटी ३१ पल = २७ घटी २ पल

एवं मिश्रमान = दिनमान + रात्र्यर्द्ध

= ३२ घटी ५८ पल + १३ घटी ३१ पल

= ४६ घटी २६ पल

मकरन्द प्रकाश ग्रन्थानुसार मिश्रमान का साधन इस प्रकार से होगा –

चर–पलों में ६० का भाग देकर चर घट्यादि निकालते हैं अर्थात

चरपल ÷ ६० = ८६ पल ÷ ६० = १ घटी २६ पल (धन)

चूँकि सायन सूर्य उत्तरगोल में है अतः चर घट्यादि को ४५ घटी में जोड़ते हैं–

मिश्रमान = ४५ घटी + १ घटी २६ पल = ४६ घटी २६ पल

यह ५ मई सन् २००० ई. को रामगढ़ (शेखावटी) में मिश्रमान होगा।

इस प्रकार ज्योतिष ग्रन्थों में बतलाई उपर्युक्त विधियों के अनुसार हम इष्ट दिन का दिन–रात्रिमान व मिश्रमान ज्ञात कर सकते है। इन विधियों के अतिरिक्त लग्न से सीधे दिनमान ज्ञात करने की एक अन्य विधि भी प्रचलित है जो इस प्रकार है।

जिस स्थान का दिनमान ज्ञात करना हो उस स्थान की लग्न सारणी ग्रहण करें। जिस दिन का दिनमान निकालना हो उस दिन प्रातः निरयनसूर्य स्पष्ट लें। यदि लग्न सारणी २३° अयनांश की हो तो वांछित दिन का अयनांश २३° से जितना अधिक हो उतने कला विकला सूर्य स्पष्ट में जोड़ दें। यदि लग्न सारणी २४° अयनांश की हो तो इष्ट दिन का अयनांश २४° से जितना कम हो उतने कला विकला सूर्य स्पष्ट में से घटा दें। इस सूर्य स्पष्ट को लग्न सारणी में देखकर लग्न गति ग्रहण करें। यह प्रातः कालीन लग्न गति होगी। तत्पश्चात निरयनसूर्य स्पष्ट में ६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राशि जोड़कर इसकी लग्न गति पुनः ग्रहण करें, यह सांय कालीन लग्न गति होगी। सायं की लग्न गति में से प्रातः की लग्नगति घटा दें। प्राप्त अन्तर घटी–पल में इष्ट दिन का स्थानीय दिनमान होगा।

उदाहरणार्थ :– दिनांक ०१ अप्रैल सन् २००१ को जोधपुर मे दिनमान निकालना हैं। इस दिन निर्णय सागर पञ्चांगानुसार जोधपुर में सूर्योदय कालीन नियन सूर्य स्पष्ट ११ : १७० : ३१′ : ४१″ है तथा चित्रा पक्षीय अयनांश २३° : ५२′ : १२″ है। तब

२४° : ० : ० – २३° : ५२′ : १२″ = ० : ७′ : ४८″

पुनः ११रा. : १७° : ३१′ : ४१ – ० : ० : ७′ : ४८″ = ११रा. : १७° : २३′ : ५३″

यह २४° अयनांश पर सूर्य स्पष्ट हुआ।

अब जोधपुर की लग्न सारणी में ११ राशि १७ अंश पर लग्न गति १ घटी १७ पल दी है तथा २३ कला ५३ विकला की आनुपातिक लग्नगति (२३′ ५३″ × ८) ÷ ६ = ३ पल ११ विपल होती है, तब कुल लग्नगति १ घटी २० पल ११ विपल हुई।

सूर्यस्पष्ट में ६ राशि जोड़कर ५ राशि १७ अंश २३ कला ५३ विकला की लग्न गति के लिये जोधपुर की लग्न सारणी में ५ राशि १७ अंश पर लग्नगति ३२ घटी ३ पल दी है तथा २३ कला ५३ विकला की आनुपातिक लग्नगति (२३′ ५३″×१२) ÷ ६० = ४ पल ४६ विपल हुई। अतः कुल लग्न गति ३२ घटी ७ पल ४६ विपल हुई। यह सायंकांल की लग्नगति होगी। तदनुसासर

सांयकालीन लग्नगति	= ३२ घटी ७ पल ४६ विपल
प्रातः कालीन लग्नगति	= २ घटी २० पल ११ विपल
अतंर	= ३० घटी ४७ पल ३५ विपल

यही जोधपुर में १ अप्रैल सन् २००१ ई. को स्थानीय दिनमान होगा। निर्णय सागर पञ्चांग में इस दिन का दिनमान ३० घटी ४६ पल दिया है जो कि प्राप्त मान के लगभग बरावर है। इसप्रकार लग्न से सीधे दिनमान उपर्युक्त विधियानुसार ज्ञात किया जा सकता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(झ) **सूर्योदयास्त** :- जब सूर्य किसी स्थान के क्षितिज पर दिखाई देता है, तो वह उस स्थान के लिये सूर्योदय होता है। भारत के सभी पञ्चांगों में प्रतिदिन का स्थानीय सूर्योदय घण्टा–मिनट में दिया रहता है। सूर्योदय के समय सूर्य की पहली किरण क्षितिज पर जब दिखती है तब से सूर्य को क्षितिज के ऊपर आने में ५–६ मिनट का समय लगता है। जब सूर्य क्षितिज के ऊपर दिखाई देता है तो वह वास्तव में क्षितिज के नीचे ही रहता है। वायुमण्डल के प्रभाव अर्थात् किरण विक्र भवन (Refraction) के सिद्धान्त से सूर्य ऊपर आने के पूर्व ही दिखने लगता है। इसी प्रकार सूर्य डूबने के कुछ देर (लगभग २ मिनट बाद) तक क्षितिज पर दिखाई देता है। किरण वक्री भवन के सिद्धान्त को निम्नलिखित चित्रों की सहायता से समझा जा सकता है।

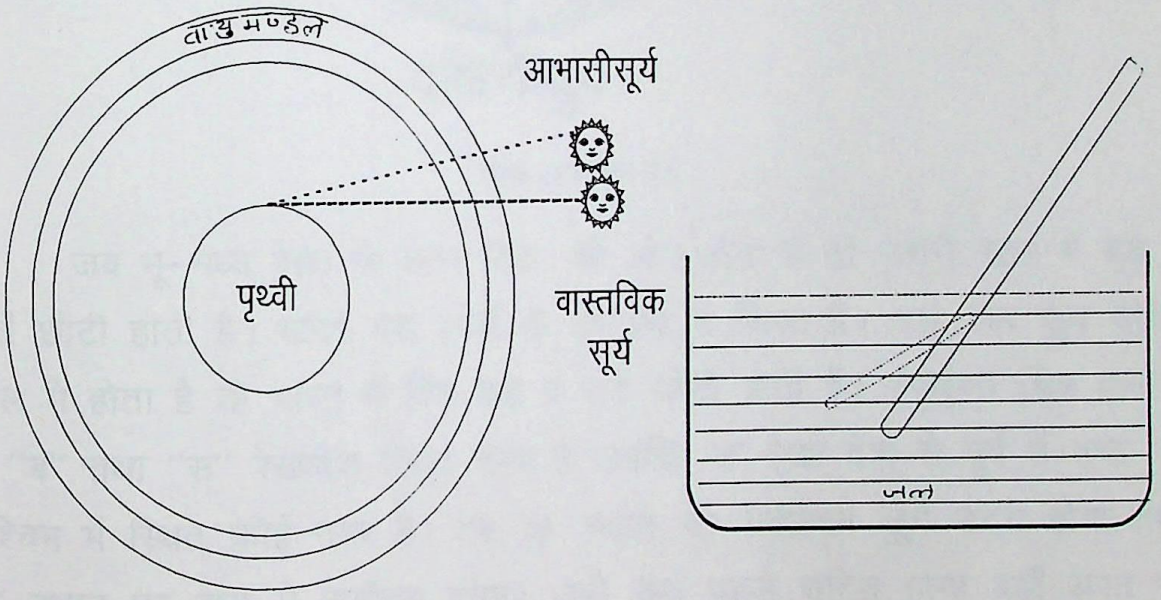

चित्र क्रमांक–१२

इस प्रकार सूर्योदय के समय सूर्य के दर्शन के उपरांत वास्तविक सूर्य को क्षितिज से ऊपर आने में लगभग २ मिनट का समय लगता है। अतः किसी भी अक्षांश पर सूर्योदय तब मानना चाहिये जब क्षितिज पर सूर्य सम्पूर्ण रूप में दिखने लगा हो।

पृथ्वी के घूर्णन के कारण प्रत्येक स्थान (अक्षांश) पर सूर्योदयास्त का समय भिन्न–भिन्न होता है। रेखा देश (उज्जैनी) से पूर्व के देशों में सूर्य पहले उदित होता है तथा पश्चिम के देशों में बाद में। निम्नलिखित चित्र की सहायता से सूर्योदयास्त को समझा जा सकता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

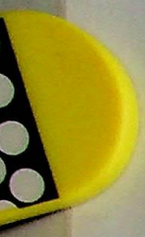

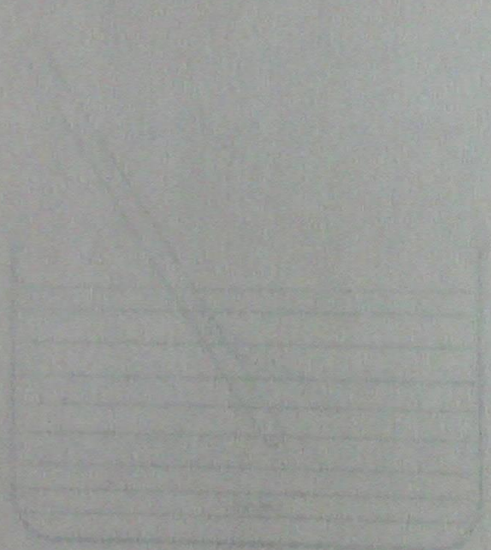

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसके अतिरिक्त सूर्यक्रांति के द्वारा सीधे स्थानीय सूर्योदयास्त निकाल सकते है।

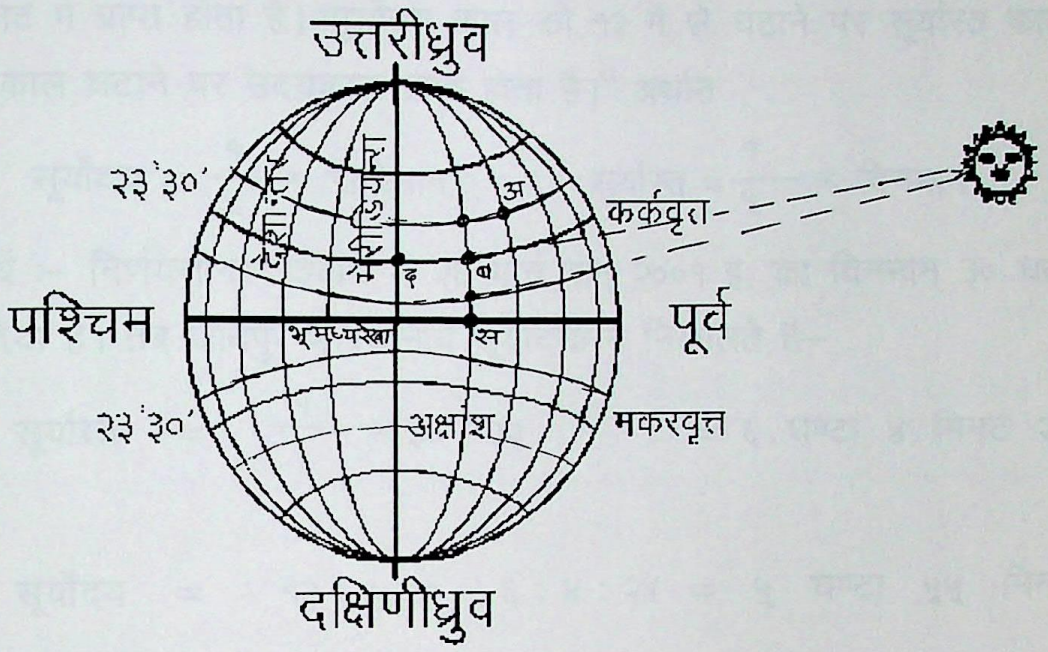

चित्र क्रमांक–१३

जब भू–मध्य रेखा से उत्तर दिशा की ओर होता है तो उत्तरी गोल में बड़े व रातें छोटी होती है। भारत देश पृथ्वी के उत्तरार्ध मे स्थित है। अतः जब सूर्य उत्तरी गोल मे होता है तो भारत मे दिन बड़े व रातें छोटी होती हैं। उपर्युक्त चित्र क्रमांक में ''ब'' तथा ''स'' रेखादेश स्थित नगर है जबकि 'अ' रेखा देश से पूर्व में तथा 'द' पश्चिम में स्थित कोई नगर है। तब 'अ' स्थान पर सर्वप्रथम सूर्य उदय होगा तथा 'द' स्थान पर बाद मे सूर्योदय होगा। जहाँ सूर्य पहले उदित होगा वहाँ अस्त भी पहले ही होगा। अतः ''अ'' स्थान पर पहले तथा ''द'' स्थान पर बाद में सूर्यास्त होगा। ''अ'' स्थान पर सूर्योदय होने के बाद ''ब'', ''स'' स्थान पर क्रमशः सूर्योदय होगा। ''ब'' और ''स'' दोनों एक ही रेखांश पर स्थित है, किन्तु ''ब'' स्थान ''स'' स्थान की अपेक्षा अधिक अक्षांश पर स्थित है। ऐसी स्थिति में ''ब'' स्थान पर ''स'' स्थान की अपेक्षा सूर्य पहले उदित होगा एवं अस्त बाद में होगा अर्थात ''ब'' स्थान का दिनमान ''स'' स्थान की अपेक्षा अधिक होगा। लेकिन जब सूर्य दक्षिणी गोलार्ध में होता है तो स्थिति इसके विपरीत होगी अर्थात ''ब'' स्थान का दिनमान ''स'' स्थान की अपेक्षा कम होगा। इस प्रकार भारत के मानचित्र में विभिन्न स्थलों के लिये सायन सूर्य की स्थित के अनुसार सूर्योदयास्त को समझा जा सकता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

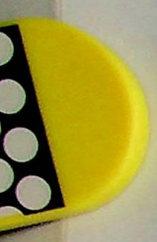

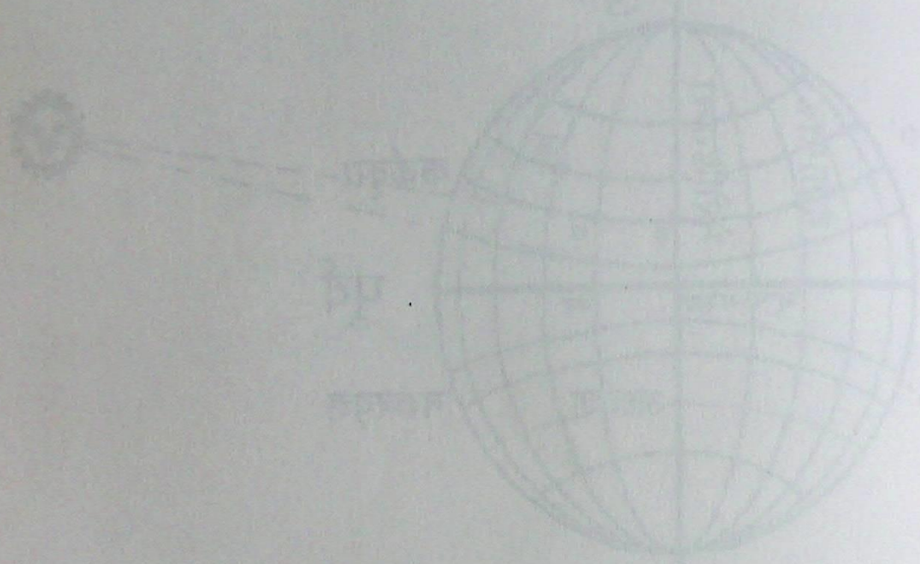

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भारतीय ज्योतिष ग्रन्थों मे सूर्योदयास्त साधन की विधि का स्पष्ट उल्लेख हुआ है। मकरन्द्र प्रकाश ग्रन्थ के अनुसार रात्रिमान मे ५ का भाग देने पर सूर्योदय काल घण्टा–मिनट में प्राप्त होता है तथा दिनमान में ५ का भाग देने पर सूर्यास्त काल घण्टा–मिनट में प्राप्त होता है। सूर्योदय काल को १२ में से घटाने पर सूर्यास्त काल तथा अस्तकाल घटाने पर उदयकाल प्राप्त होता है।[६६] अर्थात

$$\text{सूर्योदय} = \frac{१}{५} \times \text{रात्रिमान}, \qquad \text{सूर्यास्त} = \frac{१}{५} \times \text{दिनमान}$$

उदाहरणार्थ :– निर्णयसागर पञ्चांग में २६ मार्च सन् २००१ इ. का दिनमान ३० घटी २२ पल दिया है। तब जोधपुर में स्थानीय सूर्योदयास्त निकालते हैं–

$$\text{सूर्यास्त} = \frac{१}{५} \times ३० : २२ = ६ \text{ घण्टा } ४ \text{ मिनट } २४ \text{ से.}$$

$$\text{सूर्योदय} = १२ : ० : ० - ६ : ४ : २४ = ५ \text{ घण्टा } ५५ \text{ मिनट } ३६ \text{से.}$$

इसके अतिरिक्त सूर्यक्रान्ति के द्वारा सीधे स्थानीय सूर्योदयास्त निकाल सकते हैं। पञ्चांगों में प्रतिदिन की सूर्यक्रान्ति लिखी रहती है अथवा सायन सूर्य से सूर्यक्रान्ति निकाल लो। जिस दिन का सूर्योदय निकालना हो उस दिन की सूर्यक्रान्ति और इष्ट स्थानीय अक्षांश का फल ''चर सारणी'' में देखकर निकाल लेना चाहिये। यह चरफल मिनट–सेकण्ड इकाई में होता है। सूर्यक्रान्ति उत्तरा होने पर इस फल को ६ घंटे में जोड़ने पर तथा दक्षिणाी होने पर घटाने से इष्ट दिन के स्थानीय सूर्यास्त का समय निकलता है। इसे १२ घंटे में से घटाने पर सूर्योदय काल प्राप्त होता है। सूर्यास्तकाल में ५ गुणा करने पर घट्यादि दिनमान होता है। दिनमान को ६० घटी में से घटाने पर रात्रिमान प्राप्त होता है।

सूर्योदय = ६ घण्टा ± चर मिनट
(उत्तराक्रान्ति होने पर घटायें, दक्षिणा क्रान्ति होने पर जोड़ें)

सूर्यास्त = ६ घण्टा ± चर मिनट
(उत्तराक्रान्ति होने पर जोड़ें, दक्षिणा क्रान्ति होने पर घटायें)

---

६६ रात्रिप्रमाणं शरसंविभक्तं निशीथतः स्यादुदयस्य भानोः।
होरादिको वाऽस्तमयस्य कालः शरोद्धतं मध्यदिनाद्द्युमानम् ।मकरन्द प्रकाश,स्पष्टाधिकार,श्लोक३८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिनमान = सूर्यास्तकाल (घण्टा–मिनट) × ५

रात्रिमान = सूर्योदयकाल (घण्टा–मिनट) × ५

उदाहरणार्थ :– शक १६२२ चैत्र शुक्ल पूर्णिमा (१८ अप्रैल २००० ई.) के दिन विश्वपञ्चांग काशी में सूर्य की उत्तराक्रान्ति १०° : ४६′ दी है। इस दिन के सूर्योदयास्त दिन रात्रिमान निकालेंगे जबकि काशी का अक्षांश २५° : १८′ है।

चर सारणी में देखने पर २५° अक्षांश की पंक्ति १०° क्रांत्यांश के कालम को जिस खाने में काटती है उसका फल १८ मिनट ५२ सेकण्ड दिया है। १८ कला का आनुपातिक फल $\left[\frac{१८\times६०}{६०}\right]$= १८ सेकण्ड होगा। अतः २५°:१८′ अक्षांश पर १०° क्रान्ति का चर सारणी से आनुपातिक मान $\left[\frac{५२\times४६}{६०}\right]$ = ३६ सेकण्ड प्राप्त होता है। अतः

कुलमान = १६ मिनट १० सेकण्ड + ३६ सेकण्ड = १६ मिनट ४६ सेकण्ड

यह काशी (२५° : १८′) में १८ अप्रैल २००० ई. को चर मिनट होंगे, तब काशी में इस दिन स्थानीय समयानुसार–

		घं. : मि. : से.		घं. : मि. : से.		घं. : मि. : से.
सूर्योदय	=	६ : ० : ०	–	० : १६ : ४६	=	५ : ४० : ११
सूर्यास्त	=	६ : ० : ०	+	० : १६ : ४६	=	६ : १६ : ४६
दिनमान	=	६ : १६ : ४६ × ५ = ३१ घटी ५५ पल				
रात्रिमान	=	५ : ४० : ११ × ५ = २८ घटी ०५ पल				

अब हम उत्तर भारत के पञ्चांगों में दिये सूर्योदयास्त, दिनमान, सूर्यक्रान्ति एवं चर के मानों का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे।

वर्तमान में उत्तर भारत के अधिकांश पञ्चांगों में सूर्योदयास्त भारतीय मानक समय में दिया रहता है। श्री आर्यभट्ट पञ्चांग नई दिल्ली, विश्वविजय पञ्चांग नई दिल्ली, श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग, रामगढ़ (शेखावटी), श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग चंडीगढ़, विद्यापीठ पंचांग नई दिल्ली, श्री ब्रजभूमि पञ्चांग, निर्णय सागर पञ्चांग नीमच इत्यादि पञ्चांगों में सूर्योदयास्त काल भारतीय मानक समय में दिया है, जबकि काशी से निकलने वाले पञ्चांगों, जैसे विश्व पञ्चांग, श्री महावीर पञ्चांग, काशी विश्वनाथ पञ्चांग इत्यादि में सूर्योदयास्त काल स्थानीय समय में दर्शाया है। आज से कुछ वर्ष पूर्व निर्णय सागर पञ्चांग, नीमच में सूर्योदयास्त का मान स्थानीय समय (जोधपुर में

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धूपघड़ी का समय) में रहता था किन्तु वर्तमान में यह मान भारतीय मानक समय मे दिया रहता है। यह परिवर्तन अन्य पुराने पञ्चांगों में भी देखने को मिलता है। इसका कारण यह है कि स्थानीय समय की अपेक्षा भारतीय मानक समय में सूर्योदयास्त काल दर्शाना पञ्चांग उपयोग की दृष्टि से अधिक सुविधा जनक प्रतीत होता है। आगे हम उदाहरणों द्वारा इन पञ्चांगों में उल्लेखित सूर्योदयास्त काल दिनमान एवं सूर्यक्रान्ति आदि की समीक्षा करेंगे।

उदाहरणार्थ :– रामगढ़ (शेखावटी) के अक्षांश २८° : ००′ उत्तरी, रेखांश ७४° : ५६′ पूर्वी के आधार पर बने श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग में दिनांक १८ अप्रैल २००० ई. (चैत्र शुक्ल पूर्णिमा शक १९२२) को प्रातः रवि स्पष्ट ०० : ०४° : २२′ : ४६″ दिया है। जबकि इस दिन सूर्यक्रान्ति १०° : ५०′ उत्तरी, सूर्योदय ६:६ बजे, सूर्यास्त ६:५३ बजे एवं दिनमान ३१ घटी ५६ पल दिया है। इसका गणित निम्नानुसार है–

सूर्यक्रान्ति (dic.) = ज्या$^{-१}$ [ज्या सायन सूर्य स्पष्ट × ज्या परमक्रान्ति]

= $\sin^{-1}$ [sin (२८° : १४′ : १०″) × sin (२३° : २६′ : ५०″)]

यहाँ अयनांश २३° : ५०′ : २४″ प्रयुक्त होता है।

= १०° : ५१′ (यह मान लगभग पञ्चांग के मान के तुल्य है)

पुनः केतकीग्रह गणितानुसार,

चरांश = ज्या$^{-१}$ (स्पर्शज्या सूर्यक्रान्ति × स्पर्शज्या अक्षांश)

= $\sin^{-1}$ (tan १०° : ५१′ × tan २८° : ०′)

= $\sin^{-1}$ (०.१९१६६ × ०.५३१८)

= $\sin^{-1}$ (०.१०१६१) = ५.८४६ अंश

चर मिनट = ४ × चरांश = ४ × ५.८४६ = २३ मिनट २२ सेकण्ड

चर पल = १०×चरांश = १०× ५.८४६ = ५८ पल

स्थानीय समय में सूर्यास्त = ६ घण्टा + २३ मिनट २२ सेकण्ड

= ६ घण्टा २३ मिनट २२ सेकण्ड

सूर्योदय = ६ घण्टा – २३ मिनट २२ सेकण्ड

= ५ घण्टा ३६ मिनट ३८ सेकण्ड

∴ दिनमान = ५ × सूर्यास्त (६ : २३ : २२)

= ३१ घटी ५६ पल ५० विपल

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस प्रकार श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग में दिये दिनमान एवं सूर्यक्रान्ति के मान की प्रमाणिकता सिद्ध होती है। अब स्थानीय समय में दिये रामगढ़ (शेखावटी) के सूर्योदयास्त काल को भारतीय मानक समय में परिवर्तित करेंगे। इस हेतु इस स्थानीय सूर्योदयास्त काल में वेलान्तर सारणी में विपरीत वेलान्तर संस्कार तथा विपरीत रेखान्तर संस्कार करेंगे।

देशान्तर = ८२° : ३०′ − ७४° : ५६′ = ७° : ३१′ (ऋण)

∴ समयान्तर = ७° : ३१′ × ४ = ३० मिनट ४ सेकण्ड (ऋण)

	सूर्योदय	सूर्यास्त
	घं. मि. से.	घं. मि. से.
स्थानीय समय में	५ : ३६ : ३८	६ : २३ : २२
विपरीत वेलान्तर संस्कार	(–) ० : ० : ३१	(–) ० : ० : ३१
विपरीत रेखान्तर संस्कार	(+) ० : ३० : ४	(+) ० : ३० : ४
भारतीय मानक समय में	६ : ६ : ११	६ : ५२ : ५५

अतः रामगढ़ में भारतीय मानक समय में १८ अप्रैल सन् २००० ई. को सूर्योदय ६:६ बजे तथा सूर्यास्त ६:५३ बजे होता है। इस प्रकार श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग में दिये सूर्योदयास्त काल की प्रमाणिकता सिद्ध होती है।

श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग में दिये सूर्योदयास्त के समय द्वारा देशान्तर एवं चरान्तर संस्कार करके किसी भी स्थल पर सूर्योदयास्त का समय ज्ञात किया जा सकता है। यदि १८ अप्रैल सन् २००० ई. को दिल्ली में सूर्योदयास्त समय (भारतीय मानक समय में) ज्ञात करना है तब

दिल्ली का रेखांश (७७° : १२′)–रामगढ़ का रेखांश (७४° : ५६′)= देशान्तर (२° : १३′)

इसलिये समयान्तर २० १३′ × ४ = ८ मिनट ५२ सेकण्ड (लगभग ६ मिनट)

चूँकि दिल्ली, रामगढ़ से पूर्व में स्थित है अतः देशान्तर समय ऋणात्मक होगा।

१८ अप्रैल २००० ई. को दिल्ली एवं रामगढ़ के चर मिनटों का अन्तर चरान्तर कहलाता है। इष्ट दिन पञ्चांगानुसार सूर्यक्रान्ति १०° : ५०′ उत्तरी के आधार पर रामगढ़ के चर मिनट २३ मिनट २२ सेकण्ड तथा दिल्ली के चर मिनट २३ मिनट ५६ सेकण्ड प्राप्त होते हैं, तब चरान्तर लगभग ३८ सेकण्ड होगा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चूँकि दिल्ली का अक्षांश रामगढ़ की अपेक्षा अधिक होने तथा सूर्य की उत्तराक्रान्ति होने से यह चरान्तर सूर्योदय में से घटेगा एवं सूर्यास्त में जुड़ेगा। क्योंकि उत्तराक्रान्ति में भूमध्य रेखा से जैसे–जैसे उत्तरीध्रुव की ओर बढ़ते जाते है दिनमान वैसे–वैसे बढ़ता है। तब

		सूर्योदय		सूर्यास्त
		घं.: मि. : से.		घं.: मि. : से.
१८/४/२००० को रामगढ़ में		६ : ६ : ११		६ : ५३ : ५५
देशान्तर	(–)	० : ८ : ५२	(–)	० : ८ : ५२
चरान्तर	(+)	० : ० : ३८	(+)	० : ० : ३८
१८/४/२००० को दिल्ली में		५ : ५६ : ४१		६ : ४४ : ४१

इस प्रकार दिनांक १८/४/२००० को श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग द्वारा दिल्ली में स्टैण्डर्ड समय में सूर्योदय ५ बजकर ५७ मिनट और सूर्यास्त ६ बजकर ४५ मिनट पर होता है। इष्ट दिन को प्राप्त सूर्योदयास्त काल के उपरोक्त मान दिल्ली के विद्यापीठ पञ्चांग में दिये सूर्योदयास्त काल से मिलता है। विद्यापीठ पञ्चांग में दिनांक १८/४/२००० को भारतीय मानक समय में सूर्योदय ५ बजकर ५७ मिनट तथा सूर्यास्त ६ बजकर ४४ मिनट पर दर्शाया है। इस प्रकार हम किसी भी पंचांग में दिये सूर्योदयास्त काल से रेखान्तर एवं चरान्तर संस्कार द्वारा भारत के किसी भी स्थल अथवा नगर का सूर्योदयास्त काल ज्ञात कर सकते हैं एवं किन्ही दो पञ्चांगों में दिये सूर्योदयास्त काल की समीक्षा कर सकते हैं।

अब हम दिल्ली के अक्षांश रेखांश पर बने शक १९२२ आर्यभट्ट पञ्चांग एवं विद्यापीठ पञ्चांग में दिये सूर्यक्रान्ति, सूर्योदयास्त एवं दिनमान के मानों की समीक्षा करते हैं। निम्नलिखित सारणी में दोनों पञ्चांगों में दिये सूर्योदयास्त एवं दिनमान के मानों को व्यक्त किया गया है–

सारणी क्रमांक–७

दिनांक २०००ई.	विद्यापीठ पञ्चांग				श्री आर्यभट्ट पंचांग			
	दिनमान	सूर्यास्त	सूर्यक्रान्ति	वेलान्तर	दिनमान	सूर्यास्त	सूर्यक्रान्ति	वेलान्तर
	घ. प.	घं. मि.	अं. क.	मि. से.	घ. प.	घं. मि.	अं. क.	मि. से.
१६अप्रै.	३२:२	६:४५	११:५	०:४७	३२:२	६:४७	११:०	१:०
२०अप्रै.	३२:५	६:४५	११:२५	१:०	३२:६	६:४७	११:२१	२:०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२१अप्रै.	३२:१०	६:४६	११:४६	१:१३	३२:१०	६:४८	११:४१	२:०
२२अप्रै.	३२:१५	६:४७	१२:६	१:२४	३२:१४	६:४८	१२:२	२:०
२३अप्रै.	३२:१८	६:४८	१२:२६	१:३६	३२:१८	६:४६	१२:२२	२:०

इस सारणी का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि आर्यभट्ट पञ्चांग की अपेक्षा विद्यापीठ पञ्चांगानुसार दिल्ली में सूर्योदय १–२ मिनट पूर्व होता है तथा सूर्यक्रान्ति ४–५ कला अधिक प्राप्त होती है। दिनमान में अधिकतम १ पल का अन्तर किसी–किसी दिन देखने को मिलता है। आगे हम दोनों पञ्चांगों का ग्रहगणित करके देखते हैं–

सर्वप्रथम इन दोनों पञ्चांगों में दिये सूर्यक्रान्ति के मान की प्रमाणिकता का पता केतकी गणित से लगाते हैं। १६ अप्रैल सन् २००० ई. को विद्यापीठ पञ्चांगानुसार

सायन सूर्य स्पष्ट = ०रा : ५° : २६′ : ५६″ + अयनांश २३° : ५०′ : ००″

= ० : २६° : १६′ : ५६″

तथा श्री आर्यभट्ट पञ्चांगानुसार

सायन सूर्य स्पष्ट = ० : ५° : २३′ : ६″ + अयनांश २३° : ५१′ : २४″

= ० : २६° : १४′ : ३०″

तब सूत्र में–

सूर्यक्रान्ति = ज्या [ज्या सायन सूर्य × ज्या परमक्रान्ति]

= $\sin^{-1}$ [sin (२६° १६′ ५६″) × sin (२३° २६′ ५२″)]

= $\sin^{-1}$[०.४८६१×०.३६७६] = ११.२२३ अंश = ११ अंश १३ कला

यह विद्यापीठ पञ्चांग में दिये सायन सूर्य के अनुसार १६ अप्रैल २००० को दिल्ली में सूर्य की उत्तराक्रान्ति का मान हुआ।

पुनः सूर्यक्रान्ति = $\sin^{-1}$ [sin २६° १४′ ३०″ × sin २३° २६′ ५२″]

= $\sin^{-1}$ [०.४८८४×०.३६७६] = ११.२०८ = ११ अंश १३ कला

अर्थात श्री आर्यभट्ट पञ्चांग में दिये सायन सूर्य के अनुसार भी इष्टदिन को दिल्ली में सूर्य की उत्तराक्रान्ति का मान भी ११ अंश १३ कला ही है। इस प्रकार उपरोक्त दोनों पञ्चांगों में दिये सायन सूर्य के आधार पर केतकी गणित से प्राप्त सूर्यक्रान्ति का मान पञ्चांगों में दिये सूर्यक्रान्ति के मान से कम से कम ८ कला का अन्तर दर्शाता है। अब हम इन दोनों पञ्चांगों में दिये सूर्यक्रान्ति के मान के आधार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पर सूर्योदयास्त एवं दिनमान का गणित करते हैं। चूँकि दिल्ली का अक्षांश २८° : ३८′ उत्तरी है इसलिये दिल्ली के अक्षांश के आधार पर सूर्यक्रान्ति से निम्नलिखित सूत्र द्वारा चर मिनट निकालते हैं–

चरांश = $\sin^{-1}$ [tan सूर्यक्रान्ति × tan अक्षांश]

= $\sin^{-1}$ [tan ११° ५′ × tan २८° ३८′] = ६.१३६५ अंश

∴ चरमिनट = ६.१३६५ × ४ = २४ मिनट ३३ सेकण्ड (धन)

∴ सूर्यास्त = ६ घण्टा + २४ मिनट ३३ सेकण्ड = ६ घण्टा २४ मिनट ३३ से.

यह विद्यापीठ पञ्चांग के अनुसार दिल्ली में १६ अप्रैल सन् २००० ई. को स्थानीय सूर्यास्त काल होगा।

∴ दिनमान = ५ × सूर्यास्त = ५× ६:२४:३३ =३२ घटी २ पल ४७ पल

यह विद्यापीठ पञ्चांगानुसार १६ अप्रैल २००० ई. को दिल्ली में दिनमान होगा।

१६ अप्रैल २००० ई. को दिल्ली में स्थानीय सूर्यास्तकाल	=	६ घं. २४ मि. ३३से.
१६ अप्रैल २००० ई. को विपरीत वेलान्तर	=	– ० घं. ० मि. ४७ से.
१६ अप्रैल २००० ई. को देशान्तर	=	+ ० घं. २१ मि. १२से.
भारतीय मानक समय में सूर्यास्त काल	=	६ घं. ४४ मि. ५८से.

इस प्रकार १६ अप्रैल २००० ई. को भारतीय मानक समय में दिल्ली में सूर्यास्त ६:४५ बजे होगा, जो कि विद्यापीठ पञ्चांग में पूर्णतः मिलता है। उपर्युक्त गणितानुसार अन्य दिनों में विद्यापीठ पञ्चांग से सूर्यक्रान्ति द्वारा सूर्यास्त काल एंव दिनमान ज्ञात करते हैं जिसकी सारणी इस प्रकार प्राप्त होती है।–

सारणी क्रमांक–८

दिनांक	सूर्यक्रान्ति उत्तरा	चरांश	चरमिनट	स्थानीय सूर्यास्त	दिनमान	स्टै. समय में सूर्यास्त
	अं. : क.		मि. से.	घ. मि. से.	घ. प. वि.	घं. मि.
१६ अप्रै.	११ : ५	६.१३६५	२४ : ३३	६ : २४ : ३३	३२ : २ : ४७	६ : ४५
२० अप्रै.	११ : २५	६.३२६८	२५ : १६	६ : २५ : १६	३२ : ६ : ३६	६ : ४५
२१ अप्रै.	११ : ४६	६.५३०२	२६ : ७	६ : २६ : ७	३२ : १० : ३६	६ : ४६
२२ अप्रै.	१२ : ६	६.७२१६	२६ : ५३	६ : २६ : ५३	३२ : १४ : २६	६ : ४६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२३ अप्रै.	१२ : २६	६.६१३६	२७ : ३६	६ : २७ : ३६	३२ : १८ : १६	६ : ४७

विद्यापीठ पञ्चांग में दिये सूर्यास्त का समय और केतकी गणित से प्राप्त सूर्यास्त का समय पूर्णतः समान है। इसी प्रकार दिनमान भी विद्यापीठ पञ्चांग के तुल्य प्राप्त होता है। कहीं–कहीं १ पल का सूक्ष्मांतर है। चूँकि आर्यभट्ट पञ्चांग एवं विद्यापीठ पञ्चांग के दिनमान मे कहीं–कहीं १–२ पल का सूक्ष्मांतर है, जो कि नगण्य है, किन्तु सूर्यास्त काल में २ मिनट तक अन्तर है, जो कि एक विरोध है। इसकी शुद्धता का पता हम नवीन गणितानुसार लगाते हैं। चूँकि १६ अप्रैल २००० ई. को आर्यभट्ट पंचांगानुसार सूर्य की उत्तरा क्रान्ति ११ अंश तथा वेलान्तर १ मिनट है। तब–

चरांश = $\sin^{-1}$ [tan सूर्यक्रान्ति × tan अक्षांश]

= $\sin^{-1}$ [tan (११° : ०′) × tan (२८° : ३८′)]

= $\sin^{-1}$ [०.१९४३६ × ०.५४५६७]

= $\sin^{-1}$ [०.१०६१२६] = ६.०६२०६ अंश

चरमिनट = ४×चरांश = ४×६.०६२०६ = २४ मिनट २२ सेकण्ड(धन)

सूर्यास्तकाल (स्थानीय समय में) = ६/०/० + ०/२४/२२

= ६ घण्टा २४ मिनट २२ सेकण्ड

देशान्तर (८२° ३०′ – ७७° १२′) = २१ मिनट १२ सेकण्ड (धन)

वेलान्तर = –१ मिनट

तब भी आर्यभट्ट पञ्चांग की सूर्यक्रान्ति (११° ०′) के अनुसार १६ अप्रैल २००० ई. को दिल्ली में भारतीय मानक समय में सूर्यास्त काल ६ बजकर ४४ मिनट ३४ सेकण्ड पर होगा। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि विद्यापीठ पञ्चांग में दर्शाये सूर्यास्त का समय शुद्ध है। शक १९२१ के श्री काशी विश्वनाथ पञ्चांग के अनुसार :–

सारणी क्रमांक–६

दिनांक	अयनांश	स्पष्ट रवि	सूर्यक्रान्ति	दिनमान	स्थानीय सूर्योदय	स्थानीय सूर्यास्त
		रा. अं. क. वि.	अं. क. उ.	घ. प.	घं. मि.	घं. मि.
१४.६.९९	२३° ५०′ १″	१ २८° २७′ २″	२३° १३′	३३ : ५४	५ : १३	६ : ४७
२०.६.९९	२३° ५०′ २″	२ ४° ६′ १४″	२३° २६′	३३ : ५६	५ : १३	६ : ४७
२१.६.९९	२३° ५०′ २″	२ ५° ६′ १२″	२३° २६′	३३ : ५६	५ : १३	६ : ४७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२२.६.९९	२३° ५०′ २″	२ ६° ३′ ८″	२३° २६′	३३ : ५६	५ : १३	६ : ४७
२३.६.९९	२३° ५०′ २″	२ ७° ०′ ४″	२३° २६′	३३ : ५६	५ : १३	६ : ४७
२५.६.९९	२३° ५०′ २″	२ ८° ५३′ ५४″	२३° २६′	३३ : ५६	५ : १३	६ : ४७
२८.६.९९	२३° ५०′ ३″	२ ११° ४४′ ३७″	२३° १९′	३३ : ५५	५ : १३	६ : ४७

श्री काशी विश्वनाथ पञ्चांग में १४ जून १९९९ से २८ जून १९९९ तक स्थानीय सूर्योदयास्त काल एक सा ही दर्शाया है तथा १८ जून १९९९ से २६ जून १९९९ तक दिनमान ३३ घटी ५६ पल एक समान दिया है। इसका गणित करके देखते हैं। ग्रहलाघवीय गणितानुसार १४ जून १९९९ को सायन स्पष्ट रवि २ राशि २२ अंश १७ कला ३ विकला है। इस दिन की सूर्यक्रान्ति का लाघव गणित करते हैं। सायन सूर्य के भुजांश ८२° : १७′ : ३″ में १० का भाग देने पर लब्धि ८ एवं शेष २° : १७′ : ३″ आता है। लब्धि ८ के अनुसार ग्रहलाघवीय क्रात्यांक चक्र से संख्या २३६ आती है। अब ९ अंक की संख्या २४० में से ८ अंक की संख्या २३६ घटाकर शेषफल ४ में उपर्युक्त शेषफल २° : १०′ : ३″ का गुणा करके प्राप्त गुणनफल ९° : ८′ : १२″ में १० का भाग देने पर प्राप्त फल ०° : ५४′ : ४९″ आता है। इस भागफल को संख्या २३६° में जोड़कर १० का भाग पुनः देने पर लब्धि २३° : ३६′ : ३२″ आती है। यही १४ जून १९९९ को सूर्य की उत्तराक्रान्ति हुई। जो कि पञ्चांग में दी हुई उत्तराक्रान्ति से बहुत अधिक है। श्री काशी विश्वनाथ पञ्चांग में १४ जून १९९९ को प्रातः निरयन रवि स्पष्ट १ राशि २८ अंश २७ कला २ विकला को सायन रवि बनाने के लिये ग्रहलाघवीय अयनांश २४ अंश ३७ कला लेने पर सायन रवि २ राशि २३ अंश ४ कला २ विकला आता है तथा लाघव गणित से सूर्यक्रान्ति २३° ४३′ उत्तरी आती है जो कि असम्भव है।

आगे २० जून १९९९ को सायन सूर्य स्पष्ट २ राशि २७ अंश ५७ कला १६ विकला से ग्रहलाघव ग्रन्थानुसार गणित करने पर सूर्यक्रान्ति २३° ५५′ उत्तरी आती है जो कि असम्भव है क्योंकि सूर्य की परमक्रान्ति २३° ३०′ से अधिक नहीं होती है। अतः ग्रहलाघवीय गणितानुसार इस पञ्चांग की क्रान्ति का आनयन नहीं होता है।

अब आधुनिक गणित के सूत्र–"सूर्यक्रान्ति = ज्या$^{-१}$ (ज्या सायन सूर्य × ज्या परमक्रान्ति)" के द्वारा सूर्यक्रान्ति का आनयन करते हैं। चूँकि श्री काशी विश्वनाथ पञ्चांग में २२ जून तथा २३ दिसम्बर को सूर्यक्रान्ति का अधिकतम मान २३ अंश २६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

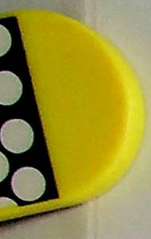

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कला दिया है जो कि सूर्य की परमक्रान्ति के लगभग बराबर है। अतः यहाँ हम सूर्य की परमक्रान्ति २३ अंश २६ कला लेते हैं, तब–

१४ जून को सूर्यक्रान्ति = ज्या$^{-१}$ (ज्या सायन सूर्य × ज्या परमक्रान्ति)

सूर्यक्रान्ति = $\sin^{-1}[\sin(८२^\circ : १७' : ३'') \times \sin(२३^\circ : २६')]$

= $\sin^{-1}[०.९९०९४६ \times ०.३९७६७]$

= $\sin^{-1}[०.३९४०८]$

= २३.२०८६ अंश = २३° : १२' : ३१'' उत्तरी

= २३° १३' उत्तरी (लगभग)

सूर्यक्रान्ति का यह मान श्री काशी विश्वनाथ पञ्चांग में दिये मान के तुल्य है। आगे २० जून से २८ जून तक उपर्युक्त सूत्रानुसार प्राप्त सूर्यक्रान्ति का मान पञ्चांग मे दिये गये सूर्यक्रान्ति के मान के बराबर ही प्राप्त होता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि श्री काशी विश्वनाथ पञ्चांग में दिया सूर्यक्रान्ति का मान केतकी गणितानुसार शुद्ध है।

अब केतकी गणितानुसार श्री काशी विश्वनाथ पञ्चांग में दिये स्थानीय सूर्योदयास्त एवं दिनमान का गणित करते हैं। १४ जून १९९९ ई. को–

चरांश = ज्या$^{-१}$ (स्पर्शज्या सूर्यक्रान्ति × स्पर्शज्या अक्षांश)

= $\sin^{-1}[\tan(२३^\circ १३') \times \tan(२५^\circ १८')$

= ११.६९८५ अंश

∴ चरमिनट = चरांश × ४

= ११.६९८५ × ४ = ४६ मिनट ४७ सेकण्ड (धन)

= ६:०:० + ०:४६:४७ = ६ घण्टा ४६ मिनट ५७ से.

सूर्योदय = १२ घण्टा – सूर्यास्त (६:४६:४७) =५ घं. १३ मि. १३ से.

तथा दिनमान = सूर्यास्त × ५

= ६:४६:४७ × ५ = ३३ घटी ५३ पल ५५ विपल

= ३३ घटी ५४ पल (लगभग)

इसी प्रकार २० जून १९९९ ई. को–

चरांश = $\sin^{-1}[\tan(२३^\circ ३९') \times \tan(२५^\circ १८')]$

= १०° : ४९' : २१''

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चरमिनट = ४७ मिनट १७ सेकण्ड
सूर्यास्त = ६ घण्टा ४७ मिनट १७ सेकण्ड
सूर्योदय = ५ घण्टा १२ मिनट ४३ सेकण्ड
दिनमान = ३३ घटी ५६ पल २७ विपल

इस प्रकार हम देखते हैं कि १४ जून एवं २० जून को केतकी गणितानुसार प्राप्त स्थानीय सूर्योदयास्त एवं दिनमान के मान श्री काशी विश्वनाथ पञ्चांग में दिये मान के तुल्य है। आगे भी केतकी गणितानुसार प्राप्त स्थानीय सूर्योदयास्त एवं दिनमान के मान पञ्चांग में दिये गये मान के बराबर प्राप्त होते हैं। अतः स्पष्ट है कि शक १६२१ के श्री काशी विश्वनाथ पञ्चांग में दिये सूर्यक्रान्ति, स्थानीय सूर्योदयास्त एवं दिनमान के मान केतकी गणितानुसार सिद्ध होते हैं।

श्री काशी विश्वनाथ पञ्चांग में २५ मार्च १९९९ ई. गुरूवार को सूर्योदयकालीन स्पष्ट सूर्य ११ राशि १० अंश २ कला १३ विकला तथा अयनांश २३° : ४९' : ५०'' दिया है। तब ग्रहलाघवीय गणितानुसार इस दिन की सूर्यक्रान्ति एवं दिनमान की गणना करते हैं–

निरयन स्प्ष्ट रवि + अयनांश = सायन स्पष्ट रवि
११रा : १०° : २' : १३'' + २३° : ४९' : ५०''= ०रा. : ३° : ५२' : ३''
२५ मार्च को सायन सूर्य के भुजांश ३° : ५२' : ३'' है, तब
३° : ५२' : ३'' ÷ १० = लब्धि ० शेषांश ३° : ५२' : ३''

अब ग्रहलाघवीय क्रांत्यांक चक्र के अनुसार ० लब्धि का मान ० तथा लब्धि में १ जोड़कर क्रांत्यांक चक्र में १ अंक के नीचे लिखी संख्या ४० है। इसमें शेष ३° : ५२' : ३'' का गुणा करने पर प्राप्त गुणनफल १५०° : ४२' : ०'' है। तब–

१५०° : ४२' : ०'' ÷ १० = १५° : २८' : १२''
१५° : २८' : १२'' ÷ १० = १° : ३२' : ४९''

अतः १ अंश ३२ कला ४९ विकला सूर्यक्रान्ति हुई। चूँकि सायन सूर्य उत्तरी गोल में है, इसलिये यह सूर्य की उत्तराक्रान्ति होगी। २५ मार्च १९९९ ई. को लाघव गणित के प्राप्त सूर्य की उत्तराक्रान्ति का यह मान श्री काशी विश्वनाथ पञ्चांग में दिये सूर्यक्रान्ति के मान १° २५' उत्तरी से नहीं मिलता है।

पुनः केतकी गणितानुसार–

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूर्यक्रान्ति = ज्या$^{-१}$ (ज्या सायन सूर्य × ज्या परमक्रान्ति)

= $\sin^{-1}$ ($\sin$ ३° ५२′ ३″ × $\sin$ २३° २६′)

= $\sin^{-1}$ (०.०६७४४६ × ०.३६७६८)

= १ अंश ३२ कला १३.३ विकला

इस प्रकार ग्रहलाघवी एवं केतकी गणितानुसार २५ मार्च ६६ को सूर्यक्रान्ति का मान १ अंश ३२ कला उत्तरी आता है जो कि पञ्चांग में दिये मान १° : २५′ से सूक्ष्मान्तर दर्शाता है।

श्री काशी विश्वनाथ पञ्चांग में २५ मार्च १६६६ ई. को सूर्यक्रान्ति १° : २५′ दिनमान ३० घटी १० पल एवं स्थानीय समय में सूर्यास्त ६ घण्टा ३ मिनट दिया है। तब लाघव गणित से दिनमान एंव सूर्यास्त का आनयन करते हैं।

चूँकि २५ मार्च १६६६ ई. को सायन स्पष्ट सूर्य ० राशि ३ अंश ५२ कला ३ विकला है तथा काशी की पलभा ५ अंगुल ४५ व्यंगुल है। इसलिये–

चरखण्ड =	प्रथम (× १०)	द्वितीय (× ८)	तृतीय $\left[\times\frac{१०}{८}\right]$
	५ : ४५ × १०	५ : ४५ × ८	५ : ४५ × $\frac{१०}{८}$
	५७ : ३०	= ४६	= १६ : १०

चूँकि सायन सूर्य के भुज में ० राशि है। अतः इसके अंशादिकों को प्रथम चरखण्ड से गुणा करने पर–

३° : ५२′ : ३″ × ५७ : ३० = २२२′ : २२″

चरपल = २२२′ २२″ ÷ ३० = ७ पल २५ विपल (धन)

सायन सूर्य मेषादि होने से चरपल धन होंगे।

चरमिनट = ७ पल २५ विपल × $\frac{२}{५}$ = २ मिनट ५७ सेकण्ड

∴ सूर्यास्त = ६ घण्टा + २ मिनट ५८ सेकण्ड

= ६ घण्टा २ मिनट ५८ सेकण्ड = ६घण्टा ३मिनट(लगभग)

दिनमान = ६ घण्टा २ मिनट ५८ सेकण्ड × ५

= ३० घटी १४ पल ५० विपल

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

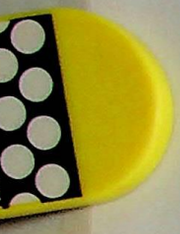

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लाघव गणित से प्राप्त स्थानीय सूर्यास्त का मान पञ्चांग में दिये सूर्यास्त के मान के बराबर है किन्तु दिनमान का मान पञ्चांग मे दिये मान के दिनमान के तुल्य नहीं है। आगे केतकी गणित से दिनमान के मान का सत्यापन करके देखते है–

चरांश = $\sin^{-1}$ [tan अक्षांश × tan सूर्यक्रान्ति]

चरांश = $\sin^{-1}$ [tan २५° : १८′ × tan १° : २५′′]

= $\sin^{-1}$ [०.०११६६] = ०.६६६८०७ अंश

चरमिनट = चरांश × ४ = ०.६६६८०७ × ४ = २मिनट ४१सेकण्ड (धन)

सूर्यक्रान्ति उत्तरी होने पर चर मिनट धनात्मक होंगे। तदनुसार

सूर्यास्त = ६ घण्टा + २ मिनट ४१ सेकण्ड

= ६ घण्टा २ मिनट ४१ सेकण्ड

यह २५ मार्च १६६६ को केतकी गणित से प्राप्त सूर्यास्त का मान है जो कि पञ्चांग में दर्शाये मान के लगभग बराबर है। स्पष्ट है कि केतकी गणित से प्राप्त दिनमान का मान पञ्चांग में दर्शाये मान के तुल्य नहीं होगा। यदि सूर्यक्रान्ति १ अंश ३२ कला उत्तरी लेकर गणित करते हैं तो सूर्यास्त का मान ६ घण्टा २ मिनट ५४ सेकण्ड तथा दिनमान ३० घटी १४ पल २६ विपल प्राप्त होता है। अतः लाघव एवं केतकी गणित से यह सिद्ध होता है कि १६२१ के श्री काशी विश्वनाथ पञ्चांग में २५ मार्च १६६६ को दर्शाया दिनमान एवं सूर्यक्रान्ति का मान शुद्ध नहीं है।

विलोमतः श्री काशी विश्वनाथ पञ्चांग में २५ मार्च १६६६ को दिनमान ३० घटी १० पल दिया है तब दिनार्द्ध १५ घटी ५ पल तथा चरपल ५ होंगे। इसलिये–

चरांश = $\frac{\text{चरपल}}{१०} = \frac{५}{१०}$ = ०.५ अंश = ३० कला

सूत्र, tan सूर्यक्रान्ति = $\frac{\text{Sin चरांश}}{\text{tan अक्षांश}} = \frac{\text{Sin } (०°:३०')}{\text{tan } (२५°:१८')}$ = ०.०१८४६

∴ सूर्यक्रान्ति = $\tan^{-1}$ [०.०१८४६] = १° : ३′ : २७′′

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि जब सूर्यक्रान्ति १ अंश ३ कला २७ विकला उत्तरी होगी तब दिनमान ३० घटी १० पल प्राप्त होगा। सूर्यास्त ६ घण्टा ३ मिनट के आधार पर चरमिनट ३ होंगे तथा चरांश ३ ÷ ४ = ०.७५ अंश होगा।

∴ सूर्यक्रान्ति = $\tan^{-1} \frac{\text{Sin चरांश}}{\text{tan अक्षांश}} = \tan^{-1} \frac{\text{Sin } ०°:७५'}{\text{tan } २५°:१८'} = १°:३५':१०''$

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतः स्पष्ट है कि सूर्यास्तकाल ६ घण्टा ३ मिनट लेने पर सूर्यक्रान्ति १°:३५':१०'' उत्तरी प्राप्त होती है। इस प्रकार केतकी गणित से सिद्ध होता है कि २५ मार्च १९९९ ई. को श्री काशी विश्वनाथ पञ्चांग में दर्शाये सूर्यक्रान्ति एवं दिनमान के मान पूर्णतः शुद्ध नहीं है।

शाके १९२२ के विश्व पञ्चांग, काशी में उल्लेखित सूर्यक्रान्ति, सूर्योदयास्त एवं दिनमान की समीक्षा निम्नलिखित सारणी के अनुसार करते हैं–

सारणी क्रमांक–१०

दिनांक	निरयन सूर्य स्पष्ट	सूर्यक्रान्ति	स्थानीय सूर्योदय		स्थानीय सूर्यास्त		दिनमान
वर्ष २०००ई.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	घण्टा	मिनट	घण्टा	मिनट	घटी पल
१७ अप्रैल	० ४ ६ ३१	१० २५ उ.	५	४०	६	२०	३१ ३६
१८ अप्रैल	० ५ ८ ५	१० ४६ उ.	५	३६	६	२१	३१ ४३
३ जून	१ १६ २६ ३०	२२ १८ उ.	५	१५	६	४५	३३ ४४
२२ जून	२ ७ २६ ४४	२३ २७ उ.	५	१३	६	४७	३३ ५६
२३ दिस.	८ ८ ६ ४६	२३ २६ द.	६	४६	५	१३	२६ ४

विश्व पञ्चांगानुसार काशी का अक्षांश २५° : १५' तथा वर्षारम्भ में अयनांश का मान २३° : ३६' : २८'' है। सर्वप्रथम ग्रहलाघवीय गणितानुसार इस पञ्चांग की सूर्यक्रान्ति का आनयन करते हैं। तब १७ अप्रैल २००० ई. को सूर्य की उत्तराक्रान्ति १०° : ५२' तथा २३ दिसम्बर २००० ई. को सूर्य की दक्षिणा क्रान्ति २३° : २७' प्राप्त होती है। आधुनिक गणित के अनुसार सूत्र–

सूर्यक्रान्ति = ज्या$^{-1}$ (ज्या सायन सूर्य × ज्या परमक्रान्ति)

द्वारा गणित करने पर १७, १८ अप्रैल ३, २२ जून एवं २३ दिसम्बर को सूर्यक्रान्ति क्रमशः १०° : ४१' उ., ११° : २' उ., २२° : २२' उ., २३° : २७' उ. एवं २३° : २६' द., आती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि विश्व पञ्चांग में दिया गया सूर्यक्रान्ति का मान ग्रहलाघवी गणित की अपेक्षा आधुनिक गणित से कम अन्तर दर्शाता है। विश्व पञ्चांग में दिये गये सूर्यक्रान्ति के मान ग्रहलाघव, मकरन्द प्रकाश, केतकी ग्रहगणित इत्यादि से पूर्णतः सिद्ध नहीं होते हैं। इस पञ्चांग में वर्ष २०५७ विक्रमी के आरम्भ कर दिया गया अयनांश का मान २३° : ३६' : २८'' अन्य पञ्चांगों की तुलना में बहुत कम है। इस पञ्चांग में दी हुई चर सारणी ग्रहलाघवी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गणितानुसार बनी ज्ञात होती है जो कि प्रतिवर्ष के लिये समान होती है। अग्रलिखित सारणी में विश्व पञ्चांग में दी गई सूर्यक्रान्ति तथा क्रांत्यांश सारणी के द्वारा प्राप्त चरमिनट तथा स्थानीय सूर्यास्तकाल को दर्शाया है और आधुनिक गणित से प्राप्त चरमिनट एवं सूर्यास्तकाल से तुलना की है।

सारणी क्रमांक–११

सूर्यक्रान्ति	विश्व पञ्चांग में दी क्रांत्यांश सारणीयानुसार				केतकी गणितानुसार			
	चरमिनट		सूर्यास्त		चरमिनट		सूर्यास्त	
अं. क.	मि.	से.	घं.	मि. से.	मि.	से.	घं.	मि. से.
१०° : २५′ उ.	१६	१६ (+)	६	१६ १६	१६	५५ (+)	६	१६ ५५
१०° : ४६′ उ.	१६	३७ (+)	६	१६ ३७	२०	३४ (+)	६	२० ३४
२२° : १८′ उ.	४५	३८ (+)	६	४५ ३८	४४	३७ (+)	६	४४ ३७
२३° : २७′ उ.	४६	१५ (+)	६	४७ १५	४७	१३ (+)	६	४७ १३
२३° : २६′ द.	४७	१३ (–)	५	१२ ४७	४७	११ (+)	५	१२ ४६

स्पष्ट है कि पञ्चांग मे दी गई चर सारणी द्वारा प्राप्त चरमिनट, केतकी गणित से प्राप्त चरमिनट के लगभग बराबर होते हैं। इस प्रकार विश्व पञ्चांग में उल्लेखित सूर्यास्तकाल की सत्यता प्रमाणित होती है। दिनमान में १–२ पल का अन्तर दृष्टिगत होता है–

सारणी क्रमांक–१२

दिनांक वर्ष २०००ई.	विश्व पञ्चांगानुसार				ग्रहलाघवानुसार		
	सूर्यास्त		दिनमान		दिनमान = ५ × स्थानीय सूर्यास्त		
	घं.	मि.	घ.	प.		घ.	प.
१७ अप्रैल	६	२०	३१	३६	६–२० × ५ =	३१	४०
१८ अप्रैल	६	२१	३१	४३	६–२१ × ५ =	३१	४५
३ जून	६	४५	३३	४४	६–४५ × ५ =	३३	४५
२२ जून	६	४७	३३	५६	६–४७ × ५ =	३३	५५
२३ दिसम्बर	५	१३	२६	४	५–१३ × ५ =	२६	५

अब हम काशी के विश्वपञ्चांग एवं विश्वनाथपञ्चांग में दर्शाये सूर्यक्रान्ति, सूर्योदयास्त एवं दिनमान इत्यादि की तुलना निम्नलिखित सारणी के आधार पर करते हैं–

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सारणी क्रमांक–१३

दिनांक	विश्व पञ्चांग				श्री काशी विश्वनाथ पञ्चांग			
वर्ष २०००	निरयनस्पष्टसूर्य	सूर्यक्रान्ति	सूर्यास्त	दिनमान	निरयनसूर्यस्पष्ट	सूर्यक्रान्ति	सूर्यास्त	दिनमान
	रा. अ. क. वि.	अ. क.	घं. मि	घ. प.	रा. अ. क. वि.	अं. क.	घं. मि.	घ. प.
५ अप्रैल	११ २२ २३ ५६	६ ० उ.	६ ११	३० ५७	११ २१ ३८ ११	६ : ६	६ : १२	३० : ५८
६ अप्रैल	११ २३ २२ ५६	६ १४ उ.	६ १२	३१ ०	११ २२ ३७ १३	६ : २६	६ : १२	३१ : २
७ अप्रैल	११ २४ २१ ५४	६ ४६ उ.	६ १३	३१ ४	११ २३ ३६ १३	६ : ५१	६ : १३	३१ : ६

विश्व पञ्चांग अक्षांश २५° : १५′ तथा विश्वनाथ पञ्चांग अक्षांश २५° : १८′ पर निर्मित है। विश्व पञ्चांग में अयनांश का मान २३° : ३६′ : २८″ तथा विश्वनाथ पञ्चांग में अयनांश का मान ० : १६° : ००′ : २४″ तथा विश्वनाथ पञ्चांगानुसार सायन स्पष्ट सूर्य ० : १५° : २८′ : ४६″ है। दोनों पञ्चांगों के सायन स्पष्ट सूर्य में ०° : ३१′ : ३५″ का अन्तर है। साथ, सूर्यक्रान्ति, सूर्यास्त एवं दिनमान में सूक्ष्मान्तर है।

इसी प्रकार हम देखते हैं कि शक १६२२ के विद्यापीठ पञ्चांग में दिनांक ३ जून २००० शनिवार का सूर्योदय ५ घण्टा २७ मिनट, सूर्यास्त ७ घण्टा ११ मिनट तथा दिनमान ३४ घटी २० पल दिया है। इस पञ्चांग के अनुसार इष्ट दिन को सूर्यक्रान्ति २२° : १८′ उत्तरी है। जबकि दिल्ली के ही अक्षांश रेखांश पर निर्मित श्री आर्यभट्ट में ३ जून २००० को सूर्योदय ५ घण्टा २६ मिनट, सूर्यास्त ७ घण्टा १३ मिनट और दिनमान ३४ घटी १६ पल दिया है। इस पञ्चांग की क्रान्ति सारणी के अनुसार सूर्यक्रान्ति २२° : १५′ उत्तरी है। अब सूर्यक्रान्ति एवं अक्षांश के आधार पर चरांश निकालकर आधुनिक विधि से गणना करने पर दिनमान ३४ घटी १८ पल आता है जबकि स्टैण्डर्ड समय में सूर्योदय ५ घण्टा ३१ मिनट और सूर्यास्त ७ घण्टा १५ मिनट आता है। इसके अतिरिक्त श्री आर्यभट्ट पञ्चांग में दी गई चर सारणी एवं वेलान्तर सारणी से भी हम ३ जून २००० के सूर्योदयास्तकाल एवं दिनमान निकालते हैं तो इष्ट दिन का स्टैण्डर्ड समय में सूर्योदय ५ घण्टा १७ मिनट, सूर्यास्त ६ घण्टा ३७ मिनट एवं दिनमान ३४ घटी ११ पल के लगभग आता है। इन दोनों पञ्चांगों की चर सारणी में सूक्ष्मान्तर देखने को मिलता है जिससे सूर्योदयास्त एवं दिनमान में सूक्ष्मान्तर आ जाता है। सामान्यतः सूर्योदयास्त एवं दिनमान निकालने के लिये चर सारणियों का प्रयोग करने की अपेक्षा आधुनिक गणित के सूत्र–चरांश = $\sin^{-1}$ [tan सूर्यक्रान्ति × tan अक्षांश] का प्रयोग करके चर मिनट ज्ञात करना सरल है। इस

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रकार प्राप्त चरमिनट में सूर्योदयास्त एवं दिनमान निकालना अपेक्षाकृत शुद्ध होता है। चरादि सारणियों के प्रयोग द्वारा प्राप्त होने वाले सूर्योदयास्तकाल एवं दिनमान में स्थूलता देखने को मिलती है।

पञ्चांग परिवर्तन :- प्रत्येक पञ्चांग में तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण एवं सूर्योदयास्त, दिनमान इत्यादि के घटी–पलात्मक अथवा घण्टा–मिनट में मान दिये रहते हैं। पञ्चांग में ये कालांक उसी स्थान के संदर्भ में होते हैं, जिस स्थान विशेष के आधार पर पञ्चांग बना होता है। ऐसी स्थिति में पञ्चांग में दिये गये कालमानो में तदनुसार वांछित संशोधन कर इन्हें अभीष्ट स्थल योग्य बनाया जा सकता है। पञ्चांग परिवर्तन के लिये स्थानीय अक्षांश के चर की आवश्यकता होती है। अभीष्ट स्थल एवं पञ्चांग के रचना के चर मिनटों में अन्तर तथा दोनों स्थलों के देशान्तरों में अन्तर ज्ञात करके हम आसानी से पञ्चांग परिवर्तन कर सकते हैं।

जहाँ का पञ्चांग है उस स्थान के देशान्तर से और अपने स्थान के देशान्तर से अन्तर निकाल कर यह अन्तर घण्टा–मिनट या घटी–पल में बना लो। पञ्चांग के स्थान से अपना देश पूर्व में हो तो धन (जोड़ना), पश्चिम में हो ऋण (घटाना) देशान्तर होगा। इसके उपरान्त इष्ट दिन के सायन सूर्य या क्रान्ति से अपने देश के चर निकाल लो। सायन सूर्य मेषादि हों तो चर +, तुलादि हो तो चर – होगा। उससे अपने देश का दिनमान निकल आयेगा। स्थानीय दिनमान एवं पञ्चांग मे दिये दिनमान का अन्तर निकालकर २ का भाग देने पर चरान्तर निकल आयेगा। यह चरान्तर निम्नानुसार ± होगा –

यदि पञ्चांग के स्थान से इष्ट स्थान का अक्षांश अधिक और उत्तराक्रान्ति हो तो (–)
यदि पञ्चांग के स्थान से इष्ट स्थान का अक्षांश कम और दक्षिणाक्रान्ति हो तो (+)
यदि पञ्चांग के स्थान से इष्ट स्थान का अक्षांश कम और उत्तरीक्रान्ति हो तो (–)
यदि पञ्चांग के स्थान से इष्ट स्थान का अक्षांश अधिक और दक्षिणाक्रान्ति हो तो (–)

इस प्रकार चरान्तर एवं देशान्तरा संस्कार मिलकर ± फल संस्कार कहलाता है। पञ्चांग में दिये गये तिथ्यादि के मानों में फल संस्कार करके इष्ट स्थान के मान निकल आते हैं। आगे उत्तर भारत के भिन्न–भिन्न स्थलों के निकलने वाले पञ्चांगों में पञ्चांग परिवर्तन कर तिथ्यादि का तुलनात्मक अध्ययन करेंगे। वर्ष २००० ई. (शक १९२१–२२) की लहरी इण्डियन एफेमेरीज के अनुसार–

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सारणी क्रमांक–१४

दिनांक	तिथि	वार	स्टै.समय में समाप्तिकाल	नक्षत्र	स्टै. समय में समाप्तिकाल	योग	स्टै. समय में समाप्तिकाल	करण	स्टै. समय में समाप्तिकाल	स्टै. समय में सू. उ.	स्टै. समय में सू. अ.	सू. क्रां.
वर्ष ०२			घण्टा–मिनट		घण्टा–मिनट		घण्टा–मिनट		घण्टा–मिनट	घं. मि.	घं. मि.	अ. क.
५ अप्रै.	१	बुध	२१ : ५३	रेवती	१४ : ३०	ऐंद्र / वैधृति	५ : ५३ / २७ : १७	किंस्तु	१० : ४८	५ : २५	१७ : ५३	६ : ६३
६ अप्रै.	२	गुरू	१६ : ४४	अश्वनि	१३ : १०	विषकु	२४ : १७	बावल	८ : ४६	५ : २५	१७ : ५३	
७ अप्रै.	३	शुक्र	१७ : २३	भरणी	११ : ३६	प्रीति	२१ : १२	तैतिल	६ : ३३	५ : २४	१७ : ५४	
१६ मई	१६	शुक्र	१४ : ४८	अनु.	१४ : २७	शिव	२४ : ००	कौलव	१४ : ४८	४ : ५५	१८ : ११	
२० मई	१७	शनि	१६ : ५४	जेष्ठा	१७ : ८	सिद्ध	२४ : ४७	गर	१६ : ५४	४ : ५५	१८ : ११	
२१ मई	१८	रवि	१६ : १८	मूला	२० : ६	साध्य	२५ : ४७	वणिज	६ : ६	४ : ५४	१८ : १२	

लहरी की इण्डियन एफेमरीज का गणित कलकत्ता के अक्षांश २२° : ३५′ तथा रेखांश ८८° : २३′ पर हुआ है। उपर्युक्त सारणी में कलकत्ता में स्टैण्डर्ड समय में सूर्योदयास्तकाल दर्शाया है। कलकत्ता की इस एफेमरीज को दिल्ली के लिये परिवर्तित करेंगे तथा दिल्ली के अक्षांश रेखांश पर बने विद्यापीठ एवं आर्यभट्ट पञ्चांगों से तुलना करेंगे।

चूँकि दिल्ली का अक्षांश २८° : ३६′ उ. तथा रेखांश ७७° : १२′ पू. है। सर्वप्रथम दिल्ली और कलकत्ता के बीच देशान्तर एवं चरान्तर संस्कार ज्ञात करते हैं–

देशान्तर संस्कार :– कलकत्ता का रेखांश = ८८° : २३′

दिल्ली का रेखांश = ७७° : १२′

देशान्तर = ११° : ११′

चूँकि समायान्तर = ११° : ११′ × ४ = ४५ मिनट ४४ सेकण्ड (ऋण)

= ४५ मिनट (लगभग)

चूँकि एफेमरीज के स्थान (कलकत्ता) से अपना देश (दिल्ली) पश्चिम में है। इसलिये यह देशान्तर संस्कार ऋणात्मक होगा।

चरान्तर संस्कार यह ५ अप्रैल २००० को दिल्ली एवं कलकत्ता के चरमिनटों का अन्तर है। ५ अप्रैल २००० को लहरी एफेमरीज के अनुसार सूर्य की उत्तराक्रान्ति ६° : ६′ है। इस सूर्यक्रान्ति के आधार पर केतकी गणित से दिल्ली के चरमिनट + १३ तथा कलकत्ता के चरमिनट + १० प्राप्त होते हैं। तब चरान्तर = ३ मिनट, चूँकि पञ्चांग के स्थान से इष्ट स्थान (दिल्ली) का अक्षांश अधिक तथा सूर्य की उत्तराक्रान्ति है, इसलिये चरान्तर + (धन) ३ मिनट होगा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चूँकि दिल्ली कलकत्ता से पश्चिम में है अर्थात दिल्ली की अपेक्षा कलकत्ता में सूर्योदय पहले तथा सूर्यास्त बाद में होगा। इसलिये दिल्ली में सूर्योदयास्त काल ज्ञात क़रने के लिये समयान्तर ४४ मिनट ४४ सेकण्ड को कलकत्ता के सूर्योदयास्तकाल में जोड़ेंगे। दिल्ली का अक्षांश कलकत्ता के अक्षांश से अधिक होने तथा सूर्य की उत्तराक्रान्ति होने के कारण चरान्तर ३ मिनट को कलकत्ता के सूर्योदयकाल में से घटायेंगे तथा सूर्यास्तकाल में जोड़ेंगे। अर्थात ५ अप्रैल २००० ई. को–

कलकत्ता में स्टैण्डर्ड समय में		सूर्योदय	सूर्यास्त
		७ घण्टा २५ मिनट	५ घण्टा ५३ मिनट
देशान्तर	+	० घण्टा ४५ मिनट	+ ० घण्टा ४५ मिनट
चरान्तर	–	० घण्टा ३ मिनट	+ ० घण्टा ३ मिनट
दिल्ली में स्टैण्डर्ड समय में		५ घण्टा ७ मिनट	६ घण्टा ४१ मिनट

इस प्रकार ५ अप्रैल २००० को दिल्ली में भारतीय मानक समय में सूर्योदय ५ बजकर ७ मिनट पर तथा सूर्यास्त ६ बजकर ११ मिनट पर होगा। इस प्रकार हम किसी भी दिन का सूर्योदयास्तकाल ज्ञात कर सकते हैं। प्राप्त सूर्योदयास्त का मान शक १९२२ के श्री आर्यभट्ट पञ्चांग एवं विद्यापीठ पञ्चांग में ५ अप्रैल २००० को दिये सूर्योदयास्त के मान से ४ मिनट कम है।

तिथि, नक्षत्र, योग व करण के घटीपलात्मक मान में संशोधन :- तिथि, नक्षत्र, योग व करण के समाप्तिकाल भारतीय मानक समय में हो तो पूरे देश में समान रहते हैं अर्थात किसी पञ्चांगानुसार भारतीय मानक समय मे कोई तिथि रात्रि ६.०० बजे समाप्त हो रही है तो भारत की घड़ियों में ६.०० बजते ही वह तिथि पूरे देश में समाप्त हो जायेगी तथा अगली तिथि शुरू हो जायेगी। अलग–अलग स्थलों पर सूर्योदय की भिन्नता के कारण तिथ्यादि के घटी–पलात्मक मानों में अन्तर आ जाता है। यदि पञ्चांग के स्थल से अपने देश में सूर्योदय पहले होता है तो तिथ्यादि के घटी–पलात्मक मान उतने ही बढ़ जाते हैं जितना सूर्योदयकाल में अन्तर है। यदि पञ्चांग के स्थल से अपने देश में सूर्योदय बाद में होता है तो तिथ्यादि के घटी–पलात्मक मान कम हो जाते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

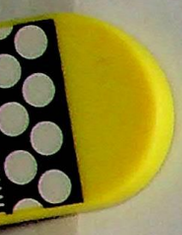

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपरोक्त उदाहरण में ५ अप्रैल २००० को कलकत्ता में सूर्योदय ५ बजकर २५ मिनट पर होता है जबकि दिल्ली में सूर्योदय ६ बजकर ७ मिनट पर हेाता है। यहाँ कलकत्ता की अपेक्षा दिल्ली में सूर्योदय ४२ मिनट बाद होता है। ४२ मिनट मे १ घटी ४५ पल होते हैं अतः कलकत्ता के तिथ्यादि के घटी–पलात्मक मानों में से १ घटी ४५ पल कम दिये जायें तो दिल्ली के तिथ्यादि के घटी–पल बन जायेंगे।

दिल्ली के अक्षांश–रेखांश पर बने शक १९२२ के श्री आर्यभट्ट पञ्चांग मे दिनांक १७, १८ मई २००० ई. को सूर्योदयास्त एवं तिथ्यादि की स्थिति निम्नानुसार है–

सारणी क्रमांक–१५

दिनांक	तिथि	वार	समाप्तिकाल		नक्षत्र	समाप्तिकाल		योग	समाप्तिकाल		करण	समाप्तिकाल		स्टै. समय		दिनमान
२०००			घ.प.	घं.मि.		घ.प.	घं.मि.		घ.प.	घं.मि.		घ.प.	घं.मि.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	घ.प.
१७ मई	१४	बुध	१५:२५	११:४५	स्वा.	११:४०	११:१५	वरी	४४:१५	२३:१७	व	१५:२५	११:४५	५:३५	१९:३	३०:४०
१८ मई	१५	गुरू	१८:४५	१३:४	विशा.	१२:६	१२:६	परिध	४४:४७	२३:१६	ब	१८:४५	१३:४	५:३४	१९:४	३०:४३

श्री आर्यभट्ट पञ्चांग की उपरोक्त सारणी को जालंधर (अक्षांश ३१°:१९' उ. रेखांश ७५°:२४' पू.) के लिये परिवर्तित करेंगे तथा दिवाकर पञ्चांग, जालंधर से तुलना करेंगे।

सूर्योदयास्त में संशोधन :– श्री आर्यभट्ट पञ्चांग में दिया सूर्योदयास्त काल भारतीय मानक समय में दिल्ली का है। दिल्ली के सूर्योदयास्तकाल को देशान्तर एवं चरान्तर संस्कार द्वारा जालंधर के सूर्योदयास्तकाल में परिवर्तित करेंगे–

दिल्ली का रेखांश(७७° : १२') – जालंधर का रेखांश(७५° : २४') = देशान्तर(१° : ४८')

चूँकि समयान्तर = १° : ४८' × ४ = ७ मिनट १२ सेकण्ड

= १° : ४८' × १० = १८ पल

चूँकि जालंधर, दिल्ली से पश्चिम में है इसलिये दिल्ली के सूर्योदयास्तकाल में यह समयान्तर जुड़ेगा ।

श्री आर्यभट्ट पञ्चांगानुसार १७ मई २००० ई. को सूर्यक्रान्ति १९° : १२' उत्तरी है तब १७ मई का दिल्ली में चर मिनट ४४ तथा जालंधर में चर मिनट ४९ होंगे। अतः चरान्तर ५ मिनट है। जालंधर का अक्षांश दिल्ली के अक्षांश से अधिक एवं सूर्यक्रान्ति

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

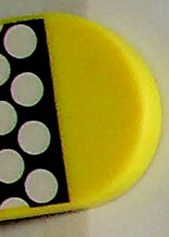

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत्तरा होने के कारण यह चरान्तर दिल्ली के सूर्योदयकाल में से घटेगा तथा सूर्यास्तकाल में जुड़ेगा। अर्थात्

		सूर्योदय		सूर्यास्त
भारतीय मानक समय में				
दिल्ली में	=	५ घण्टा ३५ मिनट		१६ घण्टा ३ मिनट
देशान्तर संस्कार	=	+ ५ घण्टा ७ मिनट	+	० घण्टा ७ मिनट
चरान्तर संस्कार	=	− ० घण्टा ५ मिनट	−	० घण्टा ५ मिनट
जालंधर में	=	५ घण्टा ३७ मिनट		१६ घण्टा १५ मिनट

इस प्रकार १७ मई २००० ई. को जालंधर में भारतीय मानक समय में सूर्योदय ५ बजकर ३७ मिनट तथा सूर्यास्त १६ बजकर १५ मिनट पर होगा। यहाँ स्पष्ट है कि दिल्ली के सूर्योदयकाल में फल संस्कार +२ मिनट तथा सूर्यास्तकाल में फल संस्कार +१२ मिनट करने पर जालंधर में सूर्योदयास्तकाल ज्ञात हो जाता है।

दिनमान में संशोधन :– जालंधर में दिनमान ज्ञात करने के लिये प्राप्त चरान्तर को दुगना करके उसे पलात्मक बनायें तथा दिल्ली के दिनमान काल में जोड़ें। अर्थात्

चरान्तर ५ मिनट × २	=	१० मिनट = २५ पल
१७ मई २००० ई. को दिल्ली में दिनमान	=	३३ घटी ४० पल
चरान्तर × २	=	० घटी २५ पल
	=	३४ घटी ५ पल

यह १७ मई २००० ई. को जालंधर में दिनमान होगा। सूर्योदय में ऋणात्मक (–) चर संस्कार होने से यहाँ दिनमान में धनात्मक (+) चर संस्कार हुआ है।

तिथि, नक्षत्र, योग व करण के घटी–पलात्मक मानों में सशोधन :– १७ मई २००० ई. को दिल्ली में सूर्योदय ५ बजकर ३५ मिनट पर होता है जबकि जालंधर में सूर्योदय २ मिनट बाद अर्थात् ५ बजकर ३७ मिनट पर हेाता है। २ मिनट में ५ पल होते हैं। दिल्ली के तिथ्यादि के घटीपलात्मक मानों में से ५ पल कम रहने पर जालंधर के तिथ्यादि के घटी–पलात्मक मान ज्ञात हो जायेंगे। इस प्रकार श्री आर्यभट्ट पञ्चांग के अनुसार दी गई उपरोक्त तालिका जालंधर के लिये निम्नानुसार होगी–

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सारणी क्रमांक–१६

	दिनांक २००० ई.	तिथि	वार	समाप्तिकाल		न क्ष त्र	समाप्तिकाल		यो ग	समाप्तिकाल		क र ण	समाप्तिकाल		स्टै. समय		दिनमान
				घ.प.	घं.मि.		घ.प.	घं.मि.		घ.प.	घं.मि.		घ.प.	घं.मि.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	घ.प.
संशोधन से	१७ मई	१४	बुध	१५:२०	११:४५	स्वा.	११:३५	१०:१५	व	४४:१०	२३:१७	वब	१५:२०	११:४५	५:३७	१६:१५	३४:५
दिवाकरपञ्चांग से	१७ मई	१४	बुध	१५:३३	११:४७	स्वा.	११:४३	१०:१५		४४:२०	२३:१८		१५:३३	११:४७	५:३४	१६:१४	३४:१०

इस प्रकार हम देखते हैं कि आर्यभट्ट पञ्चांग द्वारा जालंधर के लिये संशोधित तिथ्यादि के प्राप्त मान एवं जालंधर के अक्षांश रेखांश पर बने दिवाकर पञ्चांग के तिथ्यादि के मानों में कुछ पलों का अन्तर आता है। सूर्योदयास्त एवं दिनमान के मानों में सूक्ष्मान्तर आता है। इसी प्रकार हम किसी भी दिन के संशोधित तिथ्यादि, दिनमान एवं सूर्योदयास्त ज्ञात कर सकते हैं। साथ ही, किन्हीं दो स्थलों पर निर्मित पञ्चांगों में दिये तिथ्यादि के मानों, सूर्योदयास्त, दिनमान इत्यादि की तुलनात्मक समीक्षा कर सकते हैं।

अब हम विक्रम संवत् २०५६ के विद्यापीठ पञ्चांग दिल्ली एवं श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग चंडीगढ़ के तिथ्यादि, दिनमान एवं सूर्योदयास्त के मानो की स्थिति की तुलनात्मक समीक्षा करते हैं। निम्नलिखित सारणी में १८ से २० मार्च सन् १९९९ ई. की तिथ्यादि, दिनमान एवं सूर्योदयास्त की स्थिति को दर्शाया है–

सारणी क्रमांक–१७

पञ्चांग	दिनांक मार्च १९९९	दिन मान	तिथि	वार	समाप्तिकाल		नक्षत्र	समाप्तिकाल		योग	समाप्तिकाल		करण	समाप्तिकाल		भा. स्टै. स.		सूर्य क्रान्ति
		घ. प.			घ.प.	घं.मि.		घ. प.	घं.मि.		घ.प.	घं.मि.		घ.प.	घं.मि.	सू.उ. घं.मि.	सू.अ. घं.मि.	अ. क.
विद्या	१८	२९:४५	१	गु.	३७:८	२१:२४	उ.भा.	४०:२	२२:३४	शु.	३७:३७			१०:४३		६:३३	६:२७	१:४१
पीठ	१९	२९:५०	२	शु.	२९:४१	१८:२३	रेव.	३४:२४	२०:१७	ब्र	२८:३६			३:३०		६:३१	६:२७	०:४१
	२०	२९:५५	३	श.	२२:८	१५:२१	अ.	२८:४७	१८:१	ऐं	२९:२३			२२:८	१५:२१	६:३०	६:२८	०:१६
मार्त्त.	१८	२९:४८	१	गु.	३७:४५	२१:३६	उ.भा.	३९:१८	२२:५८		३९:१०	२२:१३		११:३१		६:३३	६:२८	१:१३
	१९	२९:५२	२	शु.	२९:४५	१८:२६	रेव.	३५:१८	२०:३६		३०:२	१८:३३		३:४५		६:३२	६:२६	०:४६
	२०	२९:५८	३	श.	२२:८	१५:१८	अ.	२९:२२	१८:१७		२०:४०	१४:४८		२१:५५	१५:१८	६:३१	६:३०	०:२५

देशान्तर संस्कार :–

दिल्ली का रेखांश (७७°:१२′) – चंडीगढ़ का रेखांश (७६°:५२′) = देशान्तर (०° : २०′)

चूँकि समयान्तर = २० कला × ४ = १ मिनट २० सेकण्ड

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

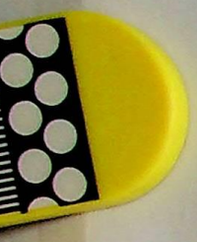

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चर संस्कार :– दिल्ली का अक्षांश २८° : ३८′ तथा चंडीगढ़ का अक्षांश ३०° : ४४′ है। तब १८ मार्च १९९९ को दिल्ली में चर २ मिनट २० सेकण्ड तथा चंडीगढ़ में २ मिनट ५४ सेकण्ड आते हैं। तब चरान्तर ३४ सेकण्ड होगा। इसी प्रकार केतकी गणितानुसार १९ एवं २० मार्च १९९९ को चरान्तर क्रमशः २७ सेकण्ड एवं २३ सेकण्ड के लगभग आता है। दिल्ली एवं चंडीगढ़ के सूर्योदयास्त समय की तुलना करने के लिये देशान्तर एवं चरान्तर संस्कार की आवश्यकता पड़ती है। चूँकि चंडीगढ़, दिल्ली से पश्चिमी दिशा मे है। इसलिये दिल्ली की अपेक्षा चंडीगढ़ में सूर्योदयास्त बाद में होगा। तब देशान्तर संस्कार धन होगा। साथ ही, दिल्ली के अक्षांश की अपेक्षा चंडीगढ़ का अक्षांश अधिक है इसलिये चरान्तर सूर्योदय में धन तथा सूर्यास्त में ऋण करना होगा तब हमें स्टैण्डर्ड समय में चंडीगढ़ में सूर्योदयास्तकाल प्राप्त होगा। अर्थात १८ मार्च १९९९ को चंडीगढ़ में सूर्योदयास्त होगा–

स्टैण्डर्ड समय में		सूर्योदय	सूर्यास्त
दिल्ली में	=	६ घण्टा ३३ मिनट	६ घण्टा २७ मिनट
देशान्तर संस्कार	=	+ ० घण्टा १ मिनट २० से.	० घण्टा १ मिनट २० से.
चरान्तर संस्कार	=	– ० घण्टा ० मिनट ३४ से.	० घण्टा ० मिनट ३४ से.
चंडीगढ़ में	=	६ घण्टा ३३ मिनट ४६ से.	६ घण्टा २८ मिनट ५४ से.

इस प्रकार १८ मार्च ९९ को विद्यापीठ पञ्चांग द्वारा चंडीगढ़ में सूर्योदय ६ बजकर ३३ मिनट ४६ सेकण्ड पर तथा सूर्यास्त ६ बजकर २८ मिनट ५४ सेकण्ड पर होगा। इसी प्रकार १९ एवं २० मार्च को चंडीगढ़ में सूर्योदय क्रमशः ६ बजकर ३३ मिनट ५३ सेकण्ड एवं ६ बजकर ३३ मिनट ५७ सेकण्ड पर तथा सूर्यास्त क्रमशः ६ बजकर २८ मिनट ४७ सेकण्ड एवं ६ बजकर २८ मिनट ४३ सेकण्ड पर होगा। जो कि लगभग मार्त्तण्ड पञ्चांग के बराबर है। निम्नलिखित तालिका में विद्यापीठ पञ्चांग एवं मार्त्तण्ड पञ्चांग के सूर्योदयास्त की तुलना की गई है–

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

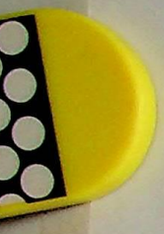

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सारणी क्रमांक–१८

दिनांक १९९९ ई.	भा.स्टै.स. में सूर्योदय		अन्तर मिनट	भा.स्टै.स. में सूर्यास्त		अन्तर मिनट
	विद्यापीठ पं. घं. मि.	मार्त्तण्ड पं. घं. मि.		विद्यापीठ पं. घं. मि.	मार्त्तण्ड पं. घं. मि.	
२१ मार्च	६ २९	६ ३०	–१	६ २८	६ ३०	–२
२१ मई	५ ३२	५ २९	+३	७ ८	७ १०	–९
२१ जून	५ २८	५ २४	+४	७ १८	७ २४	–९
२१ जुलाई	५ ४०	५ ३७	+३	७ १५	७ २०	–५
२२ सितम्बर	६ १२	६ १४	–२	७ १७	७ १९	–२

इस तालिका से स्पष्ट है कि २१ मई, जून, जुलाई को दिल्ली की अपेक्षा चंडीगढ़ में सूर्योदय ३, ४ मिनट पहले तथा सूर्यास्त ५, ९ मिनट बाद हो रहा है। जबकि चंडीगढ़ दिल्ली से पश्चिम दिशा मे है। इसका कारण दिल्ली और चंडीगढ़ की अक्षांशीय स्थिति है। चंडीगढ़ का अक्षांश दिल्ली के अक्षांश से २° : ९′ अधिक है, फलतः २१ मई, जून एवं जुलाई को सूर्य की उत्तराक्रान्ति अधिक होने से चरान्तर भी बढ़ जाता है। चरान्तर इतना अधिक हो जाता है कि उसका मिनट्यादि मान देशान्तर के मिनट्यादि मान से अधिक हो जाता है, इसलिये दिल्ली से पश्चिम में स्थित होने के कारण भी चंडीगढ़ में सूर्योदय पहले होता है। १ सितम्बर १९९९ को देशान्तर एवं चरान्तर के मिनट्यादि लगभग बराबर होते हैं। सूर्य की उत्तराक्रान्ति होने के कारण फलान्तर शून्य होता है। इसलिये १ सितम्बर १९९९ के लगभग दिल्ली एंव चंडीगढ़ में सूर्योदय भारतीय मानक समय में ६ बजकर ३ मिनट पर है। इसी प्रकार १ नवम्बर १९९९ को देशान्तर एवं चरान्तर के मिनट्यादि लगभग बराबर होते हैं। सूर्य की दक्षिणा क्रान्ति होती है। इसलिये १ नवम्बर १९९९ के लगभग दिल्ली एवं चंडीगढ़ में सूर्यास्त एक ही समय ५ बजकर ३३ मिनट पर हेाता है।

२१ जून को सूर्यक्रान्ति परम (२३° : २७′) होती है। तब चंडीगढ़ में चर ९० मिनट तथा दिल्ली में चर ५५ मिनट होंगे। इसलिये चरान्तर ५ मिनट होगा। यहाँ स्पष्ट है कि चरान्तर ५ मिनट देशान्तर १ मिनट २० सेकण्ड से अधिक है। सूर्य की उत्तराक्रान्ति तथा चंडीगढ़ का अक्षांश दिल्ली के अक्षांश से अधिक होने के कारण इस चरान्तर को दिल्ली के सूर्योदयकाल में जोड़ने तथा सूर्यास्तकाल में से घटाने पर २१ जून को चंडीगढ़ में सूर्योदयास्त काल भा.मा.स. में प्राप्त हो जायेगा अर्थात–

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

		सूर्योदय		सूर्यास्त
२१ जून को दिल्ली में	=	५ घं. २८ मि. ० से.		७ घं. १८ मि. ० से.
२१ जून को देशान्तर	=	+ ० घं. १ मि. २० से.	+	० घं. १ मि. २० से.
२१ जून को चरान्तर	=	– ० घं. ५ मि. ०० से.	+	० घं. ५ मि. ०० से.
२१ जून को चंडीगढ़ में	=	५ घं. २३ मि. ४० से.		७ घं. २४ मि. २० से.

अतः २१ जून को चंडीगढ़ में सूर्योदय ५ बजकर २४ मिनट तथा सूर्यास्त ७ बजकर २४ मिनट पर होगा, जो कि मार्त्तण्ड पञ्चांग में दिये सूर्योदयास्तकाल के बराबर है। इसी प्रकार हम विद्यापीठ एवं मार्त्तण्ड पञ्चांग में दिये किसी भी दिन के सूर्योदयास्त की स्थिति की तुलना कर सकते हैं।

चूँकि १८, १६ व २० मार्च को चरान्तर क्रमश ३४ सेकण्ड, २७ सेकण्ड व २३ सेकण्ड आता है। यह चरान्तर दिल्ली के सूर्योदयकाल में से घटाया गया है। इसलिये दिनमान हेतु चर संस्कार धनात्मक होगा चरान्तर मिनट्यादि को दुगना करके पलात्मक बनाकर दिल्ली के दिनमान काल में जोड़ने पर चंडीगढ़ मे दिनमान काल प्राप्त हो जायेगा।

	१८ मार्च ६६	१६ मार्च ६६	२० मार्च ६६
दिल्ली में दिनमान	२६ घटी ४५ पल	२६ घटी ५० पल	२६ घटी ५५ पल
चर संस्कार (धन)	० घटी ३ पल	० घटी २ पल	० घटी २ पल
चंडीगढ़ में दिनमान	२६ घटी ४८ पल	२६ घटी ५२ पल	२६ घटी ५७ पल

प्राप्त दिनमान काल मार्त्तण्ड पञ्चांग में दिये दिनमान काल के लगभग बराबर है। विद्यापीठ पञ्चांग एवं मार्त्तण्ड पञ्चांग में दिये तिथ्यादि के घटीपलात्मक मानों के अन्तर को जानने के लिये दोनों पञ्चांगों में दिये सूर्योदयकाल एवं तिथ्यादि के घण्टा–मिनट में समाप्तिकाल की स्थिति को समझना होगा। १८, १६ व २० मार्च १६६६ को विद्यापीठ पञ्चांगानुसार चंडीगढ़ में सूर्योदय क्रमशः ६ घण्टा ३४ मिनट, ६ घण्टा ३२ मिनट व ६ घण्टा ३१ मिनट पर होता है। साथ ही, प्रतिपदा, द्वितीया एवं तृतीया तिथि क्रमशः २१ घण्टा ४१ मिनट, १८ घण्टा २३ मिनट एवं १५ घण्टा २१ मिनट पर समाप्त होती है तब विद्यापीठ पञ्चांग के अनुसार १८, १६ व २० मार्च १६६६ को चंडीगढ़ में प्रतिपदा, द्वितीया व तृतीया तिथि का घटी–पलात्मक मान क्रमशः ३७ घटी ५ पल, २६ घटी ३८ पल व २२ घटी ५ पल आता है। तिथियों के यह मान मार्त्तण्ड पञ्चांग में दिये मानों के बराबर नहीं है। १८, १६ व २० मार्च १६६६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

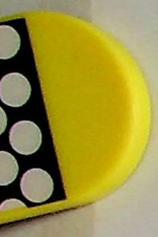

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

को दिल्ली में चंडीगढ़ की अपेक्षा सूर्योदय १ मिनट पूर्व होता है तब इन दिनों चंडीगढ़ की अपेक्षा दिल्ली में तिथ्यादि का ठहराव १ मिनट (या ढाई पल) अधिक होना चाहिये। इस प्रकार विद्यापीठ पञ्चांग में दर्शाये तिथ्यादि के घटीपलात्मक मान, मार्त्तण्ड पञ्चांग में दर्शाये तिथ्यादि के घटी–पलात्मक मानों से अधिक होने चाहिये किन्तु ऐसा देखने को नहीं मिलता है। १८, १९ व २० मार्च १९९९ को विद्यापीठ पञ्चांग की अपेक्षा, मार्त्तण्ड पञ्चांग में प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया तिथियों के घटी–पलात्मक मान अधिक हैं अर्थात इन दिनों में दिल्ली की अपेक्षा चंडीगढ़ में तिथियों का ठहराव अधिक है, जबकि सूर्योदय दिल्ली में १ मिनट पूर्व से होता है। ऐसी ही स्थिति नक्षत्रादि को लेकर हैं इसका कारण यह है कि दोनों पञ्चांगों में तिथ्यादि का समाप्तिकाल भारतीय मानक समय में भिन्न–भिन्न है जबकि तिथ्यादि का समाप्तिकाल भारतीय मानक समय में पूरे देश में एक सा होता है। स्पष्ट है कि दोनों पञ्चांगों के तिथ्यादि साधन में भिन्न–भिन्न गणित का प्रयोग हुआ है अथवा इनमें से किसी एक पञ्चांग के गणित में स्थूलता है। आगे पञ्चांग बनाने की विधियाँ के अन्तर्गत तिथ्यादि के साधन में इस अन्तर के करणों को स्पष्ट करेंगे।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

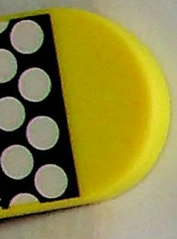

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पंचम अध्याय

पञ्चांग बनाने की विधियाँ

देश के सभी प्रान्तों में भिन्न–भिन्न प्रकार के पञ्चांगों का प्रचलन है, उत्तरभारत में भी अनेक प्रकार के पञ्चांगों का प्रचलन है इन पञ्चांगों के निर्माण की विशेषकर दो विधियाँ हैं :–

(अ) प्राचीन ज्योतिष सिद्धान्त ग्रन्थों द्वारा निर्मित पञ्चांग

(ब) वेध से सिद्ध ग्रहों द्वारा निर्मित दृश्य पञ्चांग

(अ) प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थों द्वारा निर्मित पञ्चांग :-

भारत में काल ज्ञानार्थ हेतु सर्वत्र पञ्चांग बनता है, जिसके आधार पर तिथि, नक्षत्र, योग, करण, वार और स्पष्ट ग्रह के राश्यादि का ज्ञान होता है। उत्तर भारत में पञ्चांग सौर्य, ब्राह्म अथवा आर्यपक्ष के भिन्न–भिन्न ग्रन्थों से बनाये जाते हैं। इन तीनों पक्षों में इतना भेद है कि उनके वर्षमान और ग्रह गतियों में थोड़ी भिन्नता होने के कारण सूर्य संक्रान्तियों में कुछ घटियों का और अन्य ग्रहों के संक्रमण काल में ग्रहों की शीघ्र–मन्द गति के अनुसार कुछ दिनों का अंतर दृष्टिगत होता है। कालांतर में ज्योतिषियों ने अपने समय में वेधोपलब्ध ग्रहों एवं गणितागत ग्रहों की स्थिति में जितना अंतर देखा उसे दूर करने के लिये उन्होंने अपनी इच्छानुसार अलग–अलग बीज संस्कार[1] देकर नये–नये ज्योतिष गणित ग्रन्थों का निर्माण किया। पूर्व में सिद्धान्त ग्रन्थानुसार पञ्चांग का निर्माण होता था, बाद में तंत्र और करण ग्रंथ के अनुसार सुलभ प्रकार से पञ्चांग बनाना आरम्भ हुआ। सिद्धान्त ग्रन्थों में श्रृष्टि के आरम्भ से, तंत्र ग्रन्थों में युग (कलयुगादि) से तथा करण ग्रन्थों में इष्ट शक से इष्टकाल तक अहर्गण वश ग्रहगणित करने की प्रक्रिया का वर्णन है।

सिद्धान्त ग्रन्थों में भगवान सूर्य देव द्वारा रचित सूर्य सिद्धान्त को अन्य सिद्धान्तों की अपेक्षा अधिक महत्व दिया गया है। सूर्य सिद्धान्त को अपेक्षाकृत सूक्ष्म माना गया है। इसमें सिद्धान्त ज्योतिष का ज्ञान एकाएक उच्च स्थिति में पहुँच गया है। पञ्चांग निर्माणार्थ पं. श्री मकरन्दाचार्य ने सूर्य सिद्धान्त के आधार पर 'मकरन्द सारणी' ग्रन्थ का निर्माण किया। इस ग्रन्थ के आरम्भ में लिखा है कि मकरन्द सारणी

---

[1] बीज संस्कार :– जब किसी सिद्धान्त के गणितागत ग्रह वेध से नहीं मिलते हैं तब उनकी गतस्थिति में किया जाने वाला संस्कार बीज संस्कार कहलाता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

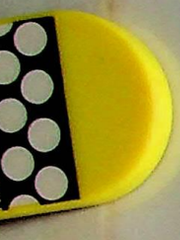

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ग्रन्थ द्वारा लाये गये तिथ्यादिकों के घटी–पल मुख्यतः काशी के आते हैं।[२] इस ग्रन्थ के आधार पर शक १५४० के लगभग दैवज्ञ दिवाकर ने 'मकरन्द विवरण' नामक ग्रन्थ लिखा। यह ग्रन्थ भी काशी में लिखा गया। इसमें केवल सारणी द्वारा गणित प्रक्रिया वर्णित है, फलादेश आदि इसमें नहीं है। इस ग्रन्थ से तिथ्यादिकों के घटी पलात्मकमान एवं स्पष्ट ग्रह थोड़े परिश्रम से आ जाते हैं। शक १८३१ में ज्योतिषमार्त्तण्ड पं. नारायण शर्मा ने मकरन्द सारणी के आधार पर 'मकरन्द प्रकाश' नामक ग्रथ लिखा, जिसमें सारणियों के साथ–साथ फलोदश भी किया गया है। मकरन्द प्रकाश में तिथ्यादि साधन , युगादि से अहर्गण वश मध्यम एवं स्पष्ट ग्रहादि साधन, राश्यादि संचार, मिश्रमान, दिनमान, सूर्योदयास्त साधन, ग्रहोदयास्त विचार, ग्रहगणित, वृष्टिविचार, संवत्सर, वर्षेशादि और धन्यादि सभी के फलादेश हैं। इस प्रकार सूर्य सिद्धान्त को आधार बनाकर अनेक करण व तंत्र ग्रन्थों का निर्माण कालांतर में हुआ।

पञ्चांग के निर्माण में दृश्य एवं अदृश्य गणित का विधान शास्त्र सम्मत हैं। तिथ्यादि के साधन में अदृश्य गणित और ग्रहणोदयास्तादि के साधन में दृश्य गणित की आवश्यकता होती है। सूर्य सिद्धान्त की किरणावली टीका के स्पष्टाधिकार के अंत में लिखा है कि गणितागत ग्रहों के साथ यदि वेधोपलब्ध ग्रह नहीं मिलते हो तो वेध द्वारा अंतर जानकर उससे गणितागत ग्रहों को शुद्ध करके ग्रहयुति ग्रहण तथा श्रृंगोन्नति आदि जो आकाश में स्पष्ट दिखाई दे, उन्हे ग्रहण करें और अदृष्टफल अर्थात् तिथि, वार, नक्षत्र, योग व करण आदि यथास्थित ग्रहों के आधार पर करें।[३] इस प्रकार दृष्ट और अदृष्ट के भेद से दो प्रकार का गणित स्पष्ट होता है। पं. श्री दुर्गाप्रसाद द्विवेदी के मतानुसार अदृष्टफल सिद्धि के लिये जो गणित करना है, वह सूर्य सिद्धान्तादि में कही हुई युक्ति से करो तथा दृश्य गणित जिससे ठीक मिले उस ग्रन्थादि से करो।[४] अनेक विद्वानों का कथन है कि आज सौर्य गणित की प्रचीन स्थिति आधुनिक सूक्ष्म यंत्रों के सामने स्थूल बनकर सान्तरित हो गयी है। हमारा ज्योतिषशास्त्र प्रत्यक्षशास्त्र है, सूर्य, चन्द्रमा इसके साक्षी है। अतः वेध से जो ग्रह आते

---

[२] श्रीसूर्यासिद्धान्तमतेन सम्याग्विश्वोपकाराय गुरूप्रसादात्।
तिथ्यादिपत्रं वितनोति काश्यामानन्दकन्दो मकरन्दनामा ।। मकरन्द सारणी, श्लोक १

[३] सूर्यसिद्धान्त, भूमिका, पृष्ठ १४

[४] सूर्य सिद्धान्त, भूमिका, श्लोक २५ २६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

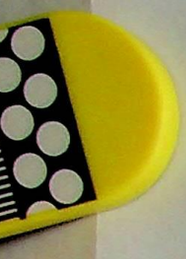

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हैं वे सायन होते हैं। फलतः तिथि, वार, नक्षत्र, योग व करण आदि का सम्पूर्ण गणित सायन ही होना चाहिये। इस प्रकार हम देखते हैं कि दृष्टादृष्टफल को लेकर पञ्चांगकारों में मतभेद है।

ग्रह गणित के दृश्य एवं अदृश्य भेद को ध्यान में रखते हुये शक् १४४२ में श्री गणेश दैवज्ञ ने ग्रहलाघव ग्रन्थ की रचना की। ग्रहलाघव में सौर्य, ब्राह्म एवं आर्य– तीनों पक्षों का स्पष्ट उल्लेख है। कौन सा ग्रह किस ग्रन्थ का आकाश में ठीक मिलता है, इसके विषय में श्री गणेश दैवज्ञ ने लिखा है कि वर्तमान सूर्यसिद्धान्तानुसार सूर्य, चन्द्रोच्च एवं ६ कलाहीन चन्द्रमा वेध से मिलते हैं। आर्यसिद्धान्तानुसार (करणप्रकाश से) लाये हुये गुरू, मंगल और राहु आकाश में ठीक मिलते हैं, इसके शनि में ५ अंश जोड देना चाहिये। ब्राह्मसिद्धान्तानुसार (करणकुतूहल से) लाया हुआ बुधकेन्द्र वेध से मिलता है। ब्राह्मसिद्धान्त (करणकुतूहल) और आर्यसिद्धान्त (करणप्रकाश) दोनों से सिद्धकरके लाये हुये शुक्रकेन्द्रों को जोड़कर आधा करने से प्राप्त शुक्रकेन्द्र आकाश से ठीक मिलता है। इस ग्रन्थ में दी हुई रीतियों के अनुसार ग्रहों को सिद्ध करके ज्योतिषी को अदृश्य गणित अर्थात् पर्व, धार्मिक कृत्य, नीति सम्बन्धित व्यवहार एवं विवाहादि शुभ कार्यों को निर्देश करना चाहिये।[५]

ग्रहलाघव बड़े ही चमत्कार का ग्रन्थ है। इसकी यह विशेषता है कि इसमें ज्या–चापीय उच्चगणित का सम्बन्ध बिल्कुल नहीं रखा गया है। भास्कराचार्य आदि ने करण ग्रन्थों की रचना की फिर भी उक्त आचार्यों के अनुसार बिना ज्याचाप के ग्रहसिद्धि नहीं हो सकती । ग्रहलाघव में भुज ज्याओं का प्रयोग न होते हुये भी उससे लाया हुआ स्पष्ट सूर्य उन करण ग्रन्थों की अपेक्षा अधिक सूक्ष्म होता है जिनमें भुज ज्या हैं। ग्रहलाघव में ग्रह स्पष्ट की रीति अपेक्षाकृत सूक्ष्म है। स्पष्ट रवि चन्द्र से दैनिक तिथ्यादि साधन शुद्ध होता है। अत्यन्त सरल गणित पद्धति युक्त तथा सिद्धान्त की सभी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के कारण इस ग्रन्थ का प्रचार सर्वत्र शीघ्र हो गया। वर्तमान में ग्रहलाघव पञ्चांग निर्माण का प्रमुख ग्रन्थ है। उत्तरभारत में काशी, ग्वालियर व इन्दौर इत्यादि शहरों में ग्रहलाघवीय पञ्चांग बनते हैं।

---

[५] ग्रहलाघव, मध्यमाधिकार, श्लोक १६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

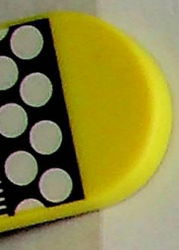

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ग्रहलाघव की रचना के १११ वर्ष बाद शक १५५३ में श्री विश्वनाथ दैवज्ञ ने ग्रहलाघव के ध्रुवांकों में सुधार किया था जो कि विश्वनाथ कृत टीका में आज भी देखे जा सकते हैं।[६] प्राचीन काल से ही ज्योतिष सिद्धान्त के ग्रन्थों में वेध से साम्यता प्राप्त करने के लिये अहर्गणों, तिथ्यादि के क्षेपकों, वर्षमान एवं अन्यान्य खगोलीय ध्रुवांकों में परिवर्तन पर परिवर्तन होते रहे हैं। गणित ज्योतिष के सभी रचनाकारों ने अपने से पूर्ववर्ती ग्रन्थों, ग्रन्थकारों की अशुद्धियों को सुधारने के उद्देश्य से नये नये ग्रन्थ बनाये हैं। श्री बापूदेव शास्त्री और केतकाचार्य ने भारतीय ज्योतिष एवं पाश्चात्य ज्योतिष के ग्रह गणित सिद्धान्तों का सूक्ष्म एवं समन्वयात्मक चित्रण अपनी पुस्तक में किया है।

श्री वेंकटेश बापू केतकर ने शक् १८१२ के लगभग पञ्चांग निर्माणार्थ संस्कृत ग्रन्थ 'केतकी ज्योतिर्गणित' की रचना की। इसमें आरम्भ वर्ष शक् १८०० है। नाटिकल आल्मनाक जिस फ्रेंच ग्रन्थ द्वारा बनता है उसी के आधार पर इसे बनाया गया है। इसके द्वारा लाये हुये ग्रह अत्यन्त सूक्ष्म होते हैं। इसमें और नाटिकल आल्मनाक द्वारा लाये हुये ग्रहों में अधिक अंतर नहीं होता है। इसमें वर्षमान शुद्ध नाक्षत्र ३६५:१५:२२:५३ दिन और अयनगति लगभग ५०.२ विकला प्रतिवर्ष मानी गई है। जीटापीशियम को रेवती का योगतारा मानकर उसका भोग अयनांश माना गया है। इसमें शक १८०० में अयनांश १८°:१०':२५'' दर्शाया है। बाद में केतकर बापूजी का मत बदल गया था और वे भी चित्रापक्ष के समर्थक तथा जीटा पक्ष के विरोधी हो गये थे।[७] उत्तरभारत में अनेक पञ्चांग केतकी ग्रह गणित के आधार पर बनते हैं, जैसे–शताब्दी पञ्चांग, देवभूमि पञ्चांग इत्यादि। अनेक पञ्चांगों में केतकी अयनांश, अहर्गण इत्यादि का प्रयोग किया जाता है।

उत्तरभारत में प्राचीन ज्योतिष सिद्धान्त ग्रन्थों द्वारा निर्मित होने वाले पञ्चांगों में अधिकांश पञ्चांग सूर्य सिद्धान्त, ग्रहलाघव अथवा केतकी ग्रहगणित द्वारा निर्मित हो रहे हैं। आगे हम मुख्यतः इन तीनों ग्रन्थों के आधार पर पञ्चांग निर्माण की विधियों को प्रकट करते हैं।

---

[६] यातेब्देग्रहलाघवस्य धरणीक्षोणीक्षपेशोन्मिते
संवीक्ष्यक्षणदाकरोष्णकरयोः पर्वार्यपक्षाश्रिमत्।
क्षेपान्सध्रुवकान्रवीन्दुराशभृत्तुंगोद्भवान्भादिकान्
दृष्टि प्रत्यय कारकान् गणितविच्छ्री विश्वनाथो ब्रुवे।। ग्रहलाघाव, मध्यमा., श्लोक ८ की टीका

[७] भारतीय ज्योतिष– श्री शिवनाथ झारखण्डी– ज्योतिष सिद्धान्त काल, पृष्ठ ४१८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

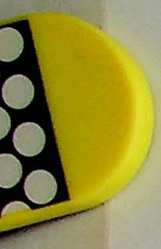

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(क) अहर्गणः- प्राचीन ज्योतिष ग्रन्थों द्वारा निर्मित पञ्चांगों में इष्टदिन का अहर्गण ज्ञात करके तदनुसार मध्यम ग्रह बनाये जाते हैं। उत्तरभारत के पञ्चांगों में मुख्यतः तीन प्रकार का अहर्गण प्रयुक्त होता हैः–

१. सूर्य सिद्धान्तीय अहर्गण २. ग्रहलाघवीय अहर्गण ३. केतकी अहर्गण

१. सूर्यसिद्धान्तीय अहर्गण :- काशी (बनारस) से निकलने वाले अधिकांश पञ्चांगों में इष्ट शक आरम्भ दिन (चैत्र शुक्ल प्रतिपदा) का सूर्य सिद्धान्तीय अहर्गण दिया रहता है, जैसे– श्री हृषीकेष पञ्चांग, विश्व पञ्चांग, श्री महावीर पञ्चांग एवं अन्य सौर्यपक्षीय पञ्चांग इत्यादि।

सूर्य सिद्धान्त में अभीष्ट कालाऽहर्गण साधन की विधि का वर्णन हुआ है। इसमें सृष्टि आरम्भ से लेकर कृतयुग के अंत तक १,६५,३७,२०,००० गत सौर्यवर्ष होते हैं। इन सौर्यवर्षों में त्रेता, द्वापर एवं कलियुग के गत सौर्यवर्ष जोड़ने पर अभीष्ट समय तक गत सौर्यवर्ष प्राप्त होंगे अर्थात –

सृष्टि के आरम्भ से सतयुग के अंत तक गत सौर्यवर्ष	=	१,६५,३७,२०,०००
त्रेतायुग प्रमाणम्	=	१२,९६,०००
द्वापरयुग प्रमाणम्	=	८,६४,०००
द्वापरान्त तक गत सौर्यवर्ष	=	१,६५,५८,८०,०००

उपर्युक्त प्राप्त गत सौर्य वर्ष में कलियुग के इष्टवर्ष तक के गत सौर्य वर्षों को जोड़कर अभीष्ट वर्ष का अहर्गण साधन किया जाता है। सृष्ट्यारम्भ से इष्ट वर्ष तक गत सौर्यवर्षों में १२ का गुणा करके सौर्यमास बनाते हैं, फिर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से गिनकर गतमास जोड़ते हैं, प्राप्त योगफल को दो स्थानों पर रखते हैं। एक स्थान पर युग के अधिमासों से गुणा करके युग के सौर्यमासों का भाग देते हैं, जो लब्धि आवे वह गत अधिमासों की संख्या होती है। इन गत अधिमासों को दूसरे स्थान पर लिखे सौर्यमासों की संख्या में जोड़ते हैं। यह चान्द्रमासगण होता है। इन चान्द्रमासगणों में ३० से गुणा करके चान्द्रदिन बनाते हैं, प्राप्त योगफल चान्द्राहर्गण होता है। चान्द्र अहर्गण को दो स्थानों पर स्थापित करके एक जगह युग के अवम से गुणा करके युग के चान्द्रदिनों का भाग देते हैं। प्राप्त लब्धि जो अवम आवे उसे दूसरी जगह लिखे चान्द्राहर्गण की संख्यामेंसे घटाते हैं। जो शेष रहे वही इष्ट सावन

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

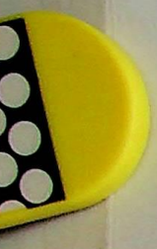

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अहर्गण होता है। चूँकि सृष्ट्यादि में सूर्यवार था इसलिये अहर्गण से सूर्यादिक्रम से दिनेश, मासेश और वर्षेश होते हैं। अहर्गण में ७ का भाग देने पर जो शेष रहे वही सूर्यादिक्रम से गत वारपति होगा।[८]

उदाहरणार्थ :– काशी के विश्व पञ्चांग के अनुसार सृष्ट्यादितश्च १,९५,५८,८५,१०१ विक्रमराज्यकालात्सवत्सराः गताः २०५७ शकारम्भतश्च १९२२ व्यतीताब्दाः एवं मेष संक्रान्तो निशीथे सौर्यमानेनाहर्गणः ७,१४,४०,४१,५९,७९७ दिया है। इसका गणित निम्नानुसार है–

सृष्ट्यारम्भ से द्वापरान्त तक गत सौर्य वर्ष संख्या = १,९५,५८,८०,०००

शक १९२२ तक गतकलियुग प्रमाणम् = ५१०१

अतः सृष्ट्यारम्भ से इष्टशक १९२२ तक गत सौर्यवर्षों की संख्या = १,९५,५८,८५,१०१

तब गत सौर्यमास = १,९५,५८,८५,१०१ x १२ = २३,४७,०६,२१,२१२

चूँकि हमें चैत्रमास में अहर्गण निकालना है इसलिये गत सौर्यमास की संख्या शून्य होगी।

$$\text{अतः इष्ट सौर्यमासों में गत अधिमासों की संख्या} = \frac{\text{इष्टसौर्यमास x युग के अधिमास}}{\text{युग के सौर्यमास}}$$

$$= \frac{२३४७०६२१२१२ \times १५९३३३६}{५१८४०००}$$

= लब्धि ७२१३८४७५५ गतअधिमास है

इसलिये गत सौर्यमास = २३४७०६२१२१२

गत अधिमास = (+) ७२१३८४७५५

---

[८] अत अर्ध्वममी युक्ता गतकालाब्दसख्ड्ययाः।
मासीकृता युता मासैर्मधुशुक्लादिभिर्गतैः।।
पृथकस्थास्तेऽधिमासघ्नाः सूर्यमास विभाजिताः।
लब्धाधिमासकैर्युक्ता दिनीकृत्य दिनान्विताः।।
द्विष्ठास्तिथिक्षयाभ्यस्ताश्चान्द्रवासरभाजिताः।
लब्धोनरात्रिरहिता लक्ड़ायामार्धरात्रिकः।।
सावनो द्युगणः सूर्यादिनमासाब्दपास्ततः।
सप्तभिः क्षयितः शेषः सूर्याद्यो वासरेश्वरः।। सूर्यसिद्धान्त,माध्यमाधिकार, श्लोक ४८–५१

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गत चान्द्रमास = २४१६२००५६६७

गत चान्द्रमास x ३० = २४१६२००५६६७ x ३०

गुणनफल (चान्द्रदिन) = ७२५७६०१७६०१०

गततिथि (जोड़ने पर) = ०० (चूँकि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का अहर्गण निकाल रहे है अतः गत तिथि शून्य होगी)

इसलिये इष्टतिथि तक चान्द्राहर्गण = ७२५७७१७६०१०

अब इष्ट चान्द्रदिनों में अवम संख्या को निम्नलिखित अनुपात से ज्ञात करते हैं–

$$\text{अवम संख्या} = \frac{\text{चान्द्राहर्गण x युग में अवम संख्या}}{\text{युग में चान्द्रदिनों की संख्या}}$$

$$= \frac{७२५७६०१७६०१० \times २५०८२२५२}{१६०३०००००८०}$$

लब्धि (अवम संख्या) = ११३५६०१६२०६६

इसलिये गत चान्द्राहर्गण = ७,२५,७६,०१,७६,०१०

अवम संख्या(तिथिक्षय) = (–) ११,३५,६०,१६,२०६

घटाने पर शेषफल = ७,१४,४०,४१,५६,८०१

यही लंकायामार्धरात्रिकालीन सौर्य सवानोऽहर्गणः होता है। इसी प्रकार हम वर्ष के किसी भी दिन का सूर्य सिद्धान्तीय अहर्गण ज्ञात कर सकते हैं।

२. **ग्रहलाघवीय अहर्गण** :- उत्तरभारत में ग्रहलाघव ग्रन्थ के अनुसार बनने वाले पञ्चांगों में ग्रहलाघवीय अहर्गण दिया रहता है। काशी के श्री हृषीकेष पञ्चांग, श्री महावीर पञ्चांग एवं वाणीभूषण पञ्चांग इत्यादि में ग्रहलाघवी अहर्गण दर्शाया जाता है। ग्रहलाघव में अहर्गणानयन के लिये इष्टशक मेंसे१४४२ को घटायें तथा शेषफल में १२ का भाग दें जो लब्धि मिले उसे 'चक्र' कहते हैं। भाग देने पर जो संख्या शेष रहे उसे १२ से गुणा करें तथा प्राप्त गुणनफल में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से गिनकर इष्टकाल तक जो मास संख्या प्राप्त हो उसको जोड़ दें। प्राप्त योगफल मध्यम मासगण कहलाता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सारणी क्रमांक–१

शुक्ल प्रतिपदा से	चैत्र	वैशाख	जेष्ठ	अषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
कृष्ण अमावस्या तक	वैशाख	जेष्ठ	अषाढ़	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र
गतमास संख्या	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११

मध्यम मासगण को दो स्थानों पर लिखें। एक स्थान पर इसमें द्विगुणित चक्र तथा क्षेपक संख्या १० को जोड़कर प्राप्त योगफल में ३३ का भाग दें। जो लब्धि मिले उसे अधिमास कहते हैं। इस अधिमास संख्या को दूसरे स्थान पर लिखी संख्या में जोड़ दें तथा योग में ३० का गुणा करें। जो गुणनफल प्राप्त हो उसमें गततिथि संख्या शुक्ल प्रतिपदा से गिनकर जोड़ दें, साथ ही चक्र का षष्ठांश शेष रहित जोड़ने से इष्ट समय की अभीष्ट चान्द्रतिथियाँ होती हैं। यह एक प्रकार से अभीष्ट चान्द्रअहर्गण सिद्ध होता है।

चान्द्र अहर्गण को दो स्थान पर लिखें। एक स्थान पर ६४ का भाग देने से जो लब्धिमिले वह क्षयदिवस संख्या है। इस संख्या को दूसरे स्थान पर लिखी चान्द्राहर्गण संख्या में से घटाते हैं। जो शेष रहे वह अहर्गण (दिनों का समूह) कहलाता है।

अहर्गण की शुद्धता :–प्राप्त उपर्युक्त चक्र संख्या को ५ से गुणा करके अहर्गण में जोड़ दें तथा योगफल में ७ का भाग दें। जो शेष रहे सोमवार से उस संख्या तक गिनें, जो वार मिले वही उस दिन का वार होना चाहिये। यदि शून्य शेष रहे तो सोमवार, १ शेष रहे तो मंगलवार इत्यादि। कभी–कभी वार प्राप्ति में एक दिन न्यूनाधिक हो जाता है, वहाँ कम होने पर अहर्गण में १ संख्या जोड़ें तथा अधिक होने पर १ संख्या घटायें। इस प्रकार अहर्गण एवं वार का साधन किया जाता है।[६]

---

[६] द्व्यब्धीन्द्रोनितशक ईशहृत्फलं स्या–
च्चक्राख्यं रविहतशेषकं तु युक्तम्।
चैत्राद्यैः पृथगमुतः सद्दग्ध्नचक्राद् –
दिग्युक्तादमरफलाधिमासयुक्तम्।।
खत्रिघ्नं गततिथियुड्निरग्रचक्रा –
ग्ड़शाढ्यं पृथगमुतोऽब्धिषट्कलब्धैः।
ऊनाहैर्वियुतमहर्गणो भवेद् वै
वारः स्याच्छरहतचक्रयुग्गणोऽब्जात्। ग्रहलाघव, मध्यमाधिकार, श्लोक ४–५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

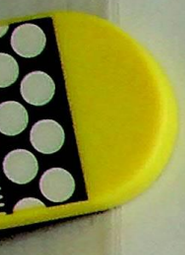

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ग्रहलाघवानुसार ११ वर्षों का एक चक्र होता है। एक चक्र में लगभग ४०१६ दिन होते हैं। अतः ग्रहलाघवीय अहर्गण का मान ४०१६ से अधिक नहीं होता है।

उदाहरणार्थ :– शाके १६२० के श्री हृषीकेष पञ्चांग में ग्रहलाघवीय अहर्गण की स्थिति निम्नानुसार है –

सारणी क्रमांक–२

क्रमांक	माह	पक्ष	तिथि	वार	अहर्गण
१.	चैत्र	शुक्ल	८	शनि	१६०४
२.	वैशाख	शुक्ल	८	सोम	१६३४
३.	जेष्ठ	कृष्ण	८	भौम	१६४६
४.	अषाढ़	कृष्ण	३०	बुध	१६८५
५.	अषाढ़	शुक्ल	१५	गुरू	२०००

सर्वप्रथम हम चैत्रशुक्लाष्टमी शनिवार के अहर्गण का गणित करते हैं :– शाके १६२० में से १४४२ को घटाया तथा शेष ४७८ में ११ का भाग दिया। लब्धि ४३ आयी, इसका नाम चक्र है। शेष वर्ष संख्या ५ को १२ से गुणा किया तब गुणनफल ६० आया, इसे सौर्यमास कहते हैं। इसमें चैत्रादि गतमास ० को जोड़ा तब उतना ही रहा, इसको मध्यम मासगण कहते हैं। इस संख्या ६० को दो स्थानों पर रखा। एक स्थान पर इसमें द्विगुणित चक्र संख्या ४३ x २ = ८६ तथा क्षेपक संख्या १० को जोड़ा तब योगफल १५६ हुआ। योगफल १५६ में ३३ का भाग देने पर लब्धि ४ प्राप्त होती है, यह गत अधिमास संख्या है। गतअधिमास संख्या ४ को दूसरे स्थान पर रखी संख्या ६० में जोड़ा तब लब्धि ६४ प्राप्त होती है। इसको मासगण कहते हैं। मासगण में ३० का गुणा करने पर गुणनफल १६२० प्राप्त होता है, इसमें गततिथि संख्या ७ तथा ६ से विभाजित चक्र संख्या ४३ की लब्धि ७ को जोड़ने पर १६३४ संख्या प्राप्त होती है। इसको मध्यम अहर्गण कहते हैं। मध्यम अहर्गण को पुनः दो स्थानों पर लिखते हैं। एक स्थान पर १६३४ में ६४ का भाग दने पर लब्धि ३० आती है। इस लब्धि को क्षय दिवस कहते हैं। क्षयदिवस संख्या ३० को दूसरे स्थान पर रखे हुये मध्यम अहर्गण १६३४ में से घटाने पर शेषफल १६०४ प्राप्त होता है। इसी को ग्रहलाघवीय अहर्गण कहते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस अहर्गण संख्या में ५ से गुणित चक्रसंख्या (४३ x ५ =२१५) को जोड़ने पर २११६ संख्या प्राप्त होती है। इसमें ७ का भाग देने पर शेषफल ५ आता है। सोमवारादि (०) से गिनने पर इष्टवार शनिवार (५) आता है। इस प्रकार श्री हृषीकेष पञ्चांग में शक १६२० चैत्र शुक्लाष्टमी शनिवार को ग्रहलाघवीय अहर्गण सिद्ध होता है।

अब हम वैशाख शुक्लाष्टमी सोमवार के अहर्गण १६३४ को लाघवगणित करते हैं।

इष्टशक १६२० − १४४२ = ४७८ शेष

४७८ ÷ ११ = लब्धि ४३ (चक्र) तथा शेषफल ५ आता है।

५ x १२ = ६० सौर्यमास

गतमास = +१ (चैत्र शुक्लप्रतिपदा से गिनने पर)

मध्यममास गण = ६१

गतअधिमास = +४

मासगण = ६५

x ३०

१६५०

गततिथि = ७

चक्र का षष्ठांश = +७

मध्यम अहर्गण = १६६४

क्षयदिवस = −३०

स्पष्ट अहर्गण = १६३४

मध्यम मासगण = ६१

द्विगुणितचक्र४३ x २ = ८६

क्षेपक = १०

योगफल– १५७

३३) १५७ (४ गतअधिमास

१३२

२५

६४) १६६४ (३० क्षयदिवस

१६२

४४

इसी प्रकार हम जेष्ठ कृष्ण अष्टमी भौमवार का अहर्गणानयन कर सकते हैं। यहाँ गततिथि संख्या २२ लेनी होती है। तब मध्यम अहर्गण १६७६ आता है तथा १६७६–क्षय दिवस ३० = १६४६ अहर्गण सिद्ध होता है। आगे भी लाघवगणित करने पर अषाढ़ कृष्ण अमावस्या बुधवार का अहर्गण १६८५ तथा अषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा गुरूवार का अहर्गण २००० सिद्ध होता है। इस प्रकार शक १६२० के श्री हृषीकेष पञ्चांग में दिये ग्रहलाघवीय अहर्गण को गणित द्वारा हम सत्य पाते हैं।

अब हम शाके १६२१ के हृषीकेष पञ्चांग में दिये द्युगणः की स्थिति का अवलोकन करते हैं। इस वर्ष हृषीकेष पञ्चांग में अहर्गण की स्थिति निम्नानुसार है :–

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सारणी क्रमांक–३

मास	पक्ष	तिथि	अहर्गण	वार
चैत्र	शुक्ल	८	२२५२	गुरू
चैत्र	शुक्ल	१५	२२५३	बुध
वैशाख	कृष्ण	३०	२२५५	शुक्र
वैशाख	शुक्ल	८	२२५५	शुक्र
शुद्ध जेष्ठ	कृष्ण	७	२२५७	शनि
अधिक जेष्ठ	शुक्ल	८	२२५६	शनि
अधिक जेष्ठ	कृष्ण	८	२३०१	शनि
शुद्ध जेष्ठ	शुक्ल	८	२३०३	शनि

शाके १६२१ में जेष्ठ अधिमास पड़ता है। इसवर्ष के श्री हृषीकेष पञ्चांग में दर्शायी गई अहर्गण की स्थिति ग्रहलाघवीय मत से भिन्न हैं। चूँकि शाके १६२० के श्री हृषीकेष पञ्चांग में चैत्र कृष्ण अमावस्या का अहर्गण २२५१ दिया है जो कि उपर्युक्त विधि से गणित करने पर प्राप्त होता है, किन्तु उसी विधि से गणित करने पर शाके १६२१ चैत्र शुक्ल अष्टमी का अहर्गण २२५२ प्राप्त नहीं होता है। शाके १६२१ में इस पञ्चांग के अनुसार सात–सात दिनों के अंतर पर अहर्गण के मान में १–१ अंक की वृद्धि होती है, जबकि वैशाख कृष्ण अमावस्या शुक्रवार एवं शुक्ल अष्टमी का अहर्गण समान (२२५५) है। इसी प्रकार कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा मंगलवार तथा मार्गशीर्ष अष्टमी का अहर्गण एक जैसा (२३२४) दिया है। दो भिन्न–भिन्न दिनों का अहर्गण एक समान हो, ऐसा लाघवगणित से सम्भव नहीं है। इस पञ्चांग में ग्रहलाघवीय दैनिक ग्रह स्पष्ट दिये है। चूँकि मध्यमग्रह अहर्गण से सिद्ध किये जाते हैं, तब अलग–अलग दिनों में एक समान अहर्गण होने से मध्यम ग्रह भी एक समान होगें जोकि असम्भव है।

शक १६२१ को चैत्र शुक्ल अष्टमी का अहर्गण २२५२ दिया है। इस अहर्गण से गुरूवार की प्राप्ति होती है अर्थात –

अहर्गण = २२५२
चक्र ४३ x ५ = २१५
योगफल = २४६७

७) २४६७ (३५२
२४६४
३ शेषफल

शेष ० से सोमवार, १ से मंगलवार, २ से बुधवार, ३ से गुरूवार इत्यादि। शक १६२१ चैत्र शुक्ल पूर्णिमा का अहर्गण २२५३ तथा इष्टवार बुध दिया है जो कि उपर्युक्त ग्रहलाघवीय विधि से अशुद्ध है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अहर्गण	=	२२५३
चक्र ४३ x ५	=	२१५
योगफल	=	२४६८

७) २४६८ (३५२
२४६४
४ शेषफल

तब इष्टवार शुक्रवार (४) होना चाहिये, किन्तु पञ्चांग में बुधवार दिया है। इस पञ्चांग में शक १६६१ वैशाख कृष्ण अष्टमी को द्युगण २२५४ तथा इष्टवार शुक्रवार और वैशाख कृष्ण अमावस्या का अहर्गण २२५५ तथा इष्टवार शुक्रवार दिया है। जो कि उपर्युक्त विधि से प्राप्त नहीं होता है। इस प्रकार शक १६२१ के श्री हृषीकेष पञ्चांग में अहर्गण की स्थिति ग्रहलाघवीय मत् से भिन्न एवं अशुद्ध प्राप्त होती हैं।

अब हम शाके १६२२ के श्री हृषीकेष पञ्चांग में अहर्गण (द्युगणः) की स्थिति का अवलोकन करते हैं। इस वर्ष के हृषीकेष पञ्चांग में अहर्गण की स्थिति निम्नानुसार हैः–

सारणी क्रमांक–४

क्रमांक	मास	पक्ष	तिथि	वार	अहर्गण
१.	चैत्र	शुक्ल	अष्टमी	बुधवार	२६४३
२.	वैशाख	शुक्ल	अष्टमी	गुरूवार	२६७२
३.	जेष्ठ	शुक्ल	पूर्णिमा	शुक्रवार	२७०८
४.	अषाढ़	कृष्ण	अमावस्या	शनिवार	२७२३
५.	चैत्र	कृष्ण	अमावस्या	रविवार	२६६३

सर्वप्रथम हम चैत्र शुक्ल अष्टमी बुधवार के अहर्गण का गणित करते हैं।

इष्टशक १६२२ – १४४२ = ४८०
४८० ÷ ११ = लब्धि ४३ चक्र तथा शेषफल ७

शेषफल		७ x १२
सौर्यमास	=	८४
गतमास	=	००
मध्यममासगण	=	८४
गतअधिमास	=	५
मासगण	=	८६
		x ३०
	=	२६७०
गततिथि	=	७
४३ ÷ ६	=	७
मध्यमअहर्गण	=	२६८४

मध्यममासगण	=	८४
चक्र ४३ x २	=	८६
क्षेपक	=	१०
योगफल	=	१८०

३३) १८० (५ अधिमास
१६५
१५ शेषफल

६४) २६८४ (४१ क्षयदिवस
२६४४
६० शेषफल

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

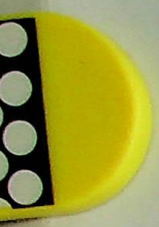

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मध्यमअहर्गण = २६८४
क्षयतिथि = − ४१
अहर्गण = २६४३
पुनः अहर्गण = २६४३
४३ x ५ = +१२५
योगफल = २८५८

७) २८५८ (४०८
२८
५८
५६
२ शेष, तब इष्टवार बुधवार होगा

अतः शक १६२२ चैत्रशुक्ल अष्टमी बुधवार का द्युगण २६४३ सिद्ध होता है। इसी प्रकार आगे भी गणित करने पर द्युगण का मान सत्य पाते हैं। अतः १६२२ के श्री हृषीकेष पञ्चांग में दिया गया अहर्गण ग्रहलाघव विधियानुसार सत्य प्राप्त होता है।

अब हम शक १६१३ के श्री महावीर पञ्चांग में दिये अहर्गण का अवलोकन करते हैं। इस वर्ष के श्री महावीर पञ्चांग दिया अहर्गण का मान निम्नलिखित सारणी में व्यक्त है :–

सारणी क्रमांक–५

क्रमांक	मास	पक्ष	तिथि	वार	अहर्गण
१.	चैत्र	शुक्ल	अष्टमी	शनि	३३५१
२.	चैत्र	शुक्ल	पूर्णिमा	शनि	३३५८
३.	शुद्ध वैशाख	कृष्ण	अष्टमी	रवि	३३६६
४.	अधिक वैशाख	शुक्ल	अष्टमी	सोम	३३८१
५.	अधिक वैशाख	कृष्ण	अष्टमी	भौम	३३६६
६.	शुद्ध वैशाख	शुक्ल	अष्टमी	भौम	३४१०
७.	जेष्ठ	शुक्ल	पूर्णिमा	गुरू	३४४७

इस वर्ष के श्री महावीर पञ्चांग के अनुसार वैशाख अधिमास पड़ता है। सर्वप्रथम शुक्ल अष्टमी शनिवार के अहर्गण का आनयन (गणित) करते हैं :–

इष्टशक १६१३ − १४४२= ४७१
४७१ ÷ ११ = लब्धि ४२ चक्र तथा शेषफल ६

शेषफल ६ x १२
सौर्यमास = १०८
गतमास = ००
मध्यममासगण = १०८
गतअधिमास = +५
मासगण = ११३

म.मासगण = १०८
चक्र ४२ x २ = ८४
क्षेपक = +१०
३३) २०२ (६ गतअधिमास
१६८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मासगण = ११३ x ३०
चान्द्र अहर्गण = ३३६०
गततिथि = ७
४२ ÷ ६ = ७
मध्यम अहर्गण = ३४०४
क्षयदिवस = −५३
अहर्गण = ३३५१

चूँकि इस वर्ष वैशाख अधिमास आता है। अतः यहाँ अधिमास का मान ६ कि स्थान पर ५ ग्रहण करेंगे।

६४) ३४०४ (५३ क्षयदिवस
३२०
२०४
१६२
१२ शेष त्याज्य

पुनः अहर्गण = ३३५१
चक्र ४२ x ५ = +२१०
योगफल = ३५६१
३५६४ ÷ ७ = लब्धि ५०८ तथा शेषफल ५

तब सोमवार आदि (०) से गणना करने पर इष्टवार शनिवार आता है। इसी प्रकार चैत्रशुक्ल पूर्णिमा शनिवार, शुद्ध वैशाख कृष्ण अष्टमी रविवार, एवं कृष्णामावस्या रविवार का अहर्गण निकाल सकते हैं। यहाँ तक गतमास संख्या ० तथा अधिमास का मान ५ ही लेते हैं। इसके आगे अधिक वैशाख शुक्ल पक्ष एवं कृष्ण पक्ष का अहर्गण निकालते समय गतमास संख्या१ तथा अधिमास का मान ५ ही ग्रहण करते हैं, किन्तु शुद्ध वैशाख शुक्ल पक्ष का अहर्गण निकालते समय अधिमास का मान ६ ही ग्रहण करते हैं। अब हम महावीर पञ्चांग में दिये इस वर्ष (शक १६१३) जेष्ठ शुक्ल पूर्णिमा, गुरूवार के अहर्गण का गणित करते हैं :−

इष्टशक १६१३ − १४४२ = ४७१ ÷ ११ = लब्धि ४२ चक्र, शेष ६

शेष ६ x १२ = १०८
गतमास = २
मध्यममासगण = ११०
गतअधिमास = +६
११६ x ३०
चान्द्रदिन = ३४८०
गततिथि = १५
४२÷६ = +७
मध्यमअहर्गण = ३५०२
क्षयदिवस = −५४
अहर्गण = ३४४८

म.मा.ग.= १०८
चक्र ४२ x २ = ८४
क्षेपक = +१०
३३) २०४ (६ गत अधिमास
१६८
६ शेष त्याज्य

६४) ३५०२ (५४ क्षयदिवस
३४५६
शेष ४६ त्याज्य

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अहर्गण	=	३४४८	पुनः अहर्गण	=	३४४८
		−१	चक्र ४२ x ५	=	२१०
शुद्ध अहर्गण	=	३४४७			७) ३६५८ (५२२
					३६५४
					शेष ४ प्राप्तवार शुक्र
					−१
					३ इष्टवार गुरू

चूँकि इष्टवार की प्राप्ति हेतु अहर्गण में एक संख्या जोड़ या घटा देते हैं।

अतः स्पष्ट है कि शक १९१३ के श्री महावीर पञ्चांग में दिया अहर्गण ग्रहलाघवीय है। इस प्रकार हम उत्तरभारत से निकलने वाले पञ्चांगों में दिये ग्रहलाघवीय अहर्गण की शुद्धता का पता लगा सकते हैं।

३. **केतकी अहर्गण** :- उत्तरभारत के अनेक पञ्चांगों में केतकी अहर्गण दिया रहता है। श्री ब्रजभूमि पञ्चांग मथुरा, विद्यापीठ पञ्चांग दिल्ली, वाणी भूषण पञ्चांग गढ़वाल, पं. श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग शेखवटी, श्री सरस्वती पञ्चांग नवलगढ़, श्री देवभूमि पञ्चांग इत्यादि पञ्चांगों में केतकी अहर्गण दिया रहता है। केतकी ग्रहगणित करण ग्रन्थ में अहर्गणानयन की विधि का वर्णन है।

ग्रन्थकार के अनुसार इच्छित शालिवाहन शक वर्ष में से १८०० घटायें, जो शेष रहे उसे 'वर्षगण' कहते हैं। वर्षगण में १९ का भाग देने से जो भागफल आवे, उसे चक्र कहते हैं। जो शेष बचे उसे अवशिष्ट वर्षगण कहते हैं।

अवशिष्ट वर्षगण के अंकों को १२ से गुणा करें, जो गुणनफल आवे उसे (चक्रारम्भ से इष्ट वर्ष पर्यंत) सौर्यमास कहते हैं। सौर्यमास में इष्टमास (यदि चैत्र शुक्ल हो तो १, वैशाख शुक्ल २, जेष्ट शुक्ल ३, अषाढ़ शुक्ल ४ इत्यादि क्रम से) की संख्या जोड़ दें। इसे इष्टवर्षारम्भ से इष्टमास पर्यंत सौर्यमास मानें।

सौर्यमास संख्या को दो जगह लिखें, एक जगह की संख्या में १० जोड़ें और ३३ का भाग दें। जो लब्धि आये उसे अधिकमास कहते हैं। इस अधिकमास की संख्या को दूसरी जगह स्थापित सौर्यमास संख्या में जोड़ दें। जो योगफल आये उसे चान्द्रमास कहते हैं। चान्द्रमास संख्या को ३० से गुणा करें तथा गुणनफल में शुक्ल

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रतिपदा से गिनकर गततिथि संख्या जोड़ दें, जो योगफल प्राप्त होता है उसे तिथिगण कहते हैं।

अब वर्षगण में ६० का भाग देने पर जो लब्धि आये उसे तिथिगण में से घटायें जो शेष बचे उसमें ६४ का पुनः भाग दें , जो लब्धि प्राप्त हो उसे क्षयदिवस कहते हैं। इसे शेष तिथिगण में से पुनः घटाते हैं जो शेष रहे वही संख्या अहर्गण कहलाती है।

अहर्गण शुद्ध परीक्षा :– अहर्गण की संख्या में त्रिगुणित (तीन गुना) चक्र संख्या एवं ४ अंक जोड़कर योगफल में ७ का भाग दें। यदि शेष १ बचे तो रविवार, २ बचे तो सोमवार, ३ बचे तो मंगलवार, ४ बचे तो बुधवार इत्यादि क्रम से जानें। यदि अहर्गण से प्राप्त वार इष्टदिन के वार से मिलता है तो अहर्गण शुद्ध है,यदि वार बराबर न हो तो १ जोड़े या घटायें, तब इष्टवार प्राप्त हो जायेगा। यदि १ जोड़ने या घटानें पर भी इष्टवार प्राप्त नहीं हो तब प्राप्त अहर्गण अशुद्ध समझना चाहिये।[१०]

अब हम उत्तरभारत के पञ्चांगों में उल्लेखित केतकी अहर्गण की स्थिति का अवलोकन करते हैं। शाके १६२२ के श्री ब्रजभूमि पञ्चांग, विद्यापीठ पञ्चांग, श्री बल्लभ मनीराम पञ्चांग, शताब्दी पञ्चांग इत्यादि में विक्रम संवत् २०५७ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा बुधवार का अहर्गण २६२२ दिया है। जिसका गणित निम्नानुसार है–

इष्टशक वर्ष १६२२ – क्षेपक १८०० = वर्षगण १२२

चक्र १६ से भाग देने पर, १२२ ÷ १६ = लब्धि (चक्र) ६ तथा शेषफल ८

अवशिष्ट वर्ष $\frac{८ \times १२}{}$

सौर्यमास = ६६

गतमास = ००

मध्यममासगण = ६६

सौर्यमास = ६६

क्षेपक = १०

३३) १०६ (३ अधिमास

६६

शेष ७ त्याज्य

---

[१०] व्यभ्राभ्रेभकु १८०० शकनदचन्द्र १६ लब्धि–
श्चकाख्या रवि १२ हतशेषकं तु युक्तम्।
चैत्राद्यैः पृथगमुतः शरा ५ प्तचका
शा १० युक्तादमर ३३ फलाधिमासयुक्तम्।।
खत्रि ३० घ्नं गततिथियुक् शरद्गणाभ्रां–
गां ६० शोनं पृथगमुतोऽब्धिषट्क ६४ लब्धैः।
ऊनाहैर्वियुतमहर्गणो भवेद्वै
वारः स्याद्गुण ३ हतचक्रयुग्गणो ज्ञात्।। केतकी ग्रहगणित, मध्यमाधिकार, श्लोक १–२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मध्यममासगण = ६६
अधिमास = +३
चान्द्रमास = ६६
x ३०
गुणनफल = २६७०
गततिथि = + ००
तिथिगण = १६७०
वर्षगण १२२ ÷ ६० = − २
२६६८
क्षयदिवस = − ४६
अहर्गण = २६२२

६४) २६६८ (४६ क्षयदिवस
२५६
४०८
३८४
२४ शेष त्याज्य

यही शक १६२२ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का अहर्गण है।

अहर्गण शुद्ध परीक्षण :− अहर्गण = २६२२
क्षेपक = + ४
त्रिगुणित चक्र ६ x ३ = + १८

७) २६४४ (४२०
२८
१४
१४
०४
००

शेष ४ प्राप्तवार बुधवार

अतः प्राप्त अहर्गण शुद्ध है।

यदि वर्ष के मध्यम में किसी मास एवं दिन (तिथि) का अहर्गण निकालना हो तो मास की संख्या सौर्यमास में तथा तिथि की संख्या तिथिगण में जोड़नी चाहिये। प्रस्तुत उदाहरण में गतमास संख्या ० है। मानलो हमें पौषकृष्ण द्वितीय का अहर्गण निकालना है तब सौर्यमास की संख्या में चैत्र से मार्गशीर्ष तक गिनने पर प्राप्त संख्या ६ जोड़ें।

चान्द्रमास को ३० से गुणा करने पर प्राप्त गुणनफल में पौषशुक्ल प्रतिपदा से पौषकृष्ण प्रतिपदा तक गततिथि १६ जोड़नी चाहिये। तब चक्रारम्भ से शुद्ध तिथिगण बनेगा। उत्तरभारत में कृष्णपक्ष से मासारम्भ मानते हैं। किन्तु शास्त्रानुसार वर्षारम्भ एवं मासारम्भ शुक्ल प्रतिपदा से ही होता है। शुक्ला प्रतिपदा से अमावस्या तक ३०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिथि गिनी जाती हैं। इस प्रकार चक्रारम्भ से लेकर वर्ष के किसी भी दिन का केतकी अहर्गण ज्ञात कर सकते हैं। केतकी अहर्गण गणित में १६ वर्षों का एक चक्र माना है, अर्थात १६ x ३६५.२५= ६६३६ दिन (लगभग)। अतः स्पष्ट है कि केतकी अहर्गण का मान ६६३६ से अधिक नहीं होगा।

श्री गजेन्द्र विजय पञ्चांग, सोलन एवं शताब्दी पञ्चांग के अनुसार शक १६१४ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा शनिवार का अहर्गण ६६३६ दिया है। यह केतकी अहर्गण का अधिकतम मान है। इस वर्ष चक्र संख्या ६ एवं अवशिष्ट वर्ष ० प्राप्त होता है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से केतकी अहर्गण का मान ० से धीरे–धीरे आगे बढ़ता है और १६ वें वर्ष (शक १६३३) में इसका मान पुनः अधिकतम पहुँच जाता है।

उत्तरभारत के कुछ पञ्चांगों में दिया गया केतकी अहर्गण का मान निम्न लिखित सारणी में दर्शाया है।

सारणी क्रमांक–६

क्र.	पञ्चांग नाम	शक	मास	पक्ष	तिथि	वार	के.अहर्गण
१.	पंचवर्षीय श्री सरस्वती पञ्चांग	१६१६	चैत्र	शुक्ल	१	सोम	७३७
२.	श्रीदेवभूमि पंचाग	१६१६	चैत्र	शुक्ल	१	सोम	७३७
३.	श्रीदेवभूमि पञ्चांग	१६१६	वैशाख	शुक्ल	१	बुध	७६६
४.	विद्यापीठ पञ्चांग	१६२१	चैत्र	शुक्ल	१	गुरू	२५३८
५.	विद्यापीठ पञ्चांग	१६२१	श्रावण	शुक्ल	१	मंगल	२६५६
६.	जैनीजीया लाल शिखरचन्द कृत असली पञ्चांग	१६२२	चैत्र	शुक्ल	७	मंगल	२६२८

(ख) ग्रह साधन :- उत्तरभारत में सिद्धान्त ज्योतिष ग्रन्थानुसार बनने वाले पञ्चांगों में इष्ट दिन का अहर्गण बनाकर इष्ट अहर्गण से मध्यमग्रह बनाये जाते हैं। मध्यमग्रह से स्पष्ट ग्रह बनाये जाते हैं। इन पञ्चांगों में ग्रह गणित भिन्न–भिन्न सिद्धान्त, तंत्रया करण ग्रन्थों से किया जाता है। सिद्धान्त ग्रन्थों में बीज संस्कार देकर अलग–अलग काल में तंत्र एवं करण ग्रन्थों की रचना हुई। इन तंत्र एवं करण ग्रन्थों में तत्कालीन समय के स्पष्ट ग्रह दिये रहते हैं। ग्रहलाघव में शक १४४२ शकारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के दिन की स्पष्ट ग्रहों की जो राश्यादिक स्थिति थी, उसे सृष्ट्यादि अहर्गण से ज्ञात कर आचार्य ने उन ग्रहों के राश्यादिक अंकों का नाम 'क्षेपक' (अर्थात शक १४४२ के आगे साधित ग्रहों में जोड़ने के लिये) कहा है। आचार्य गणेश दैवज्ञ के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनुसार शक १४४२ अमान्त फाल्गुन कृष्ण ३० सोमवार को सूर्योदयकालीन क्षेपक निम्नानुसार हैं[११]–

सारणी क्रमांक–७

ग्रहनाम	सूर्य	चन्द्र	चन्द्रोच्च	राहु	भौम	केन्द्र बुध	गुरू	केन्द्र शुक्र	शनि
राशि	११	११	५	०	१०	८	७	७	६
अंश	१६	१६	१७	२७	७	२६	२	२०	१५
कला	४१	६	३३	३८	८	२३	१६	६	२१
विकला	००	००	००	००	००	००	००	००	००

बुध और शुक्र के क्षेपक सूर्य के समान ही हैं।

शक १५३४ के लगभग श्री विश्वनाथ ने ग्रहलाघव करणग्रन्थ को अपने रचित गणित उदाहरणों से विभूषित किया है। इन्होंने अपनी टीका में लिखा है –

क्षेपोभवानन्दभवोऽद्रिवेदा, विश्वे ११/१६/४७/१३ ऽक्र इन्दौ कुभवो गजाऽब्जाः रामेषवो वाणयमा ११/१८/५३/२५ स्तदुच्चे, वाणाः षडब्जाः श्रुतयः कुवेदाः ५/१६/४/४१।।[१२]

अतः स्पष्ट है कि ग्रहों के क्षेपक का मान समय के साथ बदलता है। वास्तव में क्षेपक किसी निर्दिष्ट काल में वेध द्वारा उपलब्ध सूर्यादिग्रहों की क्रान्तिचक्र में मध्यम स्थिति है। भिन्न–भिन्न काल में गणित ज्योतिष के आचार्यो ने वेध द्वारा आकाशस्थ ग्रह पिण्डों की स्थिति का अवलोकन किया तथा तत्कालीन स्थिति के आधार पर अपने स्वविवेक से सिद्धान्त ग्रन्थानुसार ग्रह गणित किया। श्री वेंकटेश बापू केतकर ने शक १८०० के आरम्भ में उज्जयिनी में सूर्योदय समय के वेध द्वारा उपलब्ध ग्रहों के क्षेपक इस प्रकार दिये हैं।[१३]

सारणी क्रमांक–८

	रवि	चन्द्र	चन्द्रतुंग	राहु	कुज	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
राशि	११	११	१०	६	२	१	६	६	११
अंश	१६	२५	२७	२७	६	२२	५	१५	८
कला	५	१७	२२	३७	१२	३०	४०	२८	२१

११

१२ ग्रहलाघव, मध्यमाधिकार, श्लोक ८

१३ ग्रहलाघव, मध्यमाधिकार, श्लोक ६–८, विश्वनाथः भाष्य (केदारदत्त जोशी)
केतकी ग्रहगणित, मध्यमाधिकार, श्लोक ३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इस प्रकार हम देखते हैं कि भिन्न–भिन्न करण ग्रन्थों में उनके आचार्यो ने तत्कालीन आकाशस्थ ग्रह स्थिति के आधार पर क्षेपकों को दर्शाया है।

आचार्य श्री गणेश दैवज्ञ ने ११ वर्षो अर्थात लगभग ४०१६ दिनों का एक चक्र माना है। एक चक्र में ग्रहों की जितनी मध्यम गति होती है, उसे १२ राशि में से घटाने पर जो राश्यादि प्राप्त होते है उसका नाम 'ध्रुव' रखा है। ग्रहलाघव में शक १४४२ के आरम्भ में सूर्यादिग्रहों के ध्रुवांक निम्न प्रकार हैं।[१४]

सारणी क्रमांक–६

ग्रह नाम	रवि	चन्द्र	चन्द्र मंदोच्च	राहु	कुज	केन्द बुध	गुरू	केन्द्र शुक्र	शनि
राशि	००	००	६	७	१	४	०	१	७
अंश	१	३	२	२	२५	३	२६	१४	१५
कला	४६	४६	४५	५०	३२	२७	१८	२	४२
विकला	११	११	०	०	०	०	०	०	०

४०१६ दिनों में जो ग्रहों का मध्यम भोग होता है, उसे १२ राशियों में से घटाने पर उसका ध्रुवांक आता है, ध्रुवांक सदा ऋण रहते हैं। केतकीमतानुसार १६ सौर्यवर्षो अर्थात लगभग ६६४० दिनों का एक चक्र होता है। इसी आधार पर सभी ग्रहों की राश्यादिक ध्रुवा इस प्रकार से है।[१५]

सारणी क्रमांक–१०

ग्रह	रवि	चन्द्र	चन्द्रउच्च	राहु	कुज	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
राशि	०	०	१	११	१	१०	७	१०	७
अंश	०	३	२२	२२	६	२०	६	१८	२२
कला	७	५५	५२	१३	४७	४६	४६	४७	१२
विकला	३८	३६	५६	५८	२०	५०	१२	१०	३८

---

१४ खविधुतानभवास्तरणेर्ध्रुवः खमनला रसवार्द्धय ईश्वराः।
सितरूचो भमुखोऽथ खगायमौ शरकृत गदितो विधुतुंगजः।।
शैला द्वौ खशरा अगोः क्षितिभुवो भूतच्वदन्ता विदः।
केन्द्रस्याब्धि गुणोऽवः सुरगुरोः खं पञ्चमा वास्विलाः।।
द्राक्केन्द्रस्य भृगोः कुशकयमला राश्यदिकोऽथो शने।
शैलाः पञ्च भुवो यमाब्धय इमेऽथ क्षेपकः कथ्यते।। ग्रहलाघव, मध्यमाधिकार, श्लोक ६, ७

१५ केतकीग्रहगणित मध्यमाधिकार, श्लोक १०–१२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतः स्पष्ट है कि चक्र की अहर्गण (दिनों) की संख्या के आधार पर ग्रहों के ध्रुवांक ज्ञात किये जाते हैं। चक्र की वर्ष संख्या के बदलने पर ग्रहों के ध्रुवांक भी बदल जाते हैं। ज्योतिष के इन दोनों करणग्रन्थों में इस प्रकार का गणितीय परिवर्तन अवश्य देखने को मिलता है, किन्तु मध्यम ग्रह लाने की विधि एक सी है। एक चक्र सम्बन्धी ग्रह के ध्रुवांक को अभीष्ट चक्र से गुणा करने से आगत राश्यादिक फल को अहर्गण से उत्पन्न ग्रह में से कम कर देने से अभीष्टशक के अभीष्ट मासादिनादि के सूर्योदय कालीन मध्यम ग्रह निकल आते हैं।

उत्तरभारत के अधिकांश पञ्चांगों में ग्रह साधन ग्रहलाघवीय, मकरन्दी अथवा केतकी दृक्गणित के द्वारा किया जाता है। काशी से निकलने वाले श्री हृषीकेष पञ्चांग में ग्रहलाघवीय दैनिक ग्रह स्पष्ट किये हैं, जबकि श्री वेंकटेश्वर शताब्दी पञ्चांग एवं जोधपुरी गजेन्द्र विजय पञ्चांग में ग्रह स्पष्ट केतकी दृक्गणित के आधार पर हुये हैं। कुछ पञ्चांगों में ग्रह स्पष्ट की विधि एक से अधिक ज्योतिष गणित ग्रन्थों का सम्मिश्रण है, जैसे – अहर्गण किसी ज्योतिष गणित ग्रन्थ से निकाला है तथा अयनांश साधन की विधि दूसरे गणितग्रन्थ से ग्रहण की है। काशी के श्री हृषीकेष पञ्चांग एवं श्री महावीर पञ्चांग में अहर्गण ग्रहलाघवीय है, जबकि अयनांश ग्रहलाघवीय नहीं है। विद्यापीठ पञ्चांग में पाँचों अंगों एवं सूर्य चन्द्र स्पष्टीकरण वैजयन्ती नामक पञ्चांग गणितग्रन्थ से किया जाता है तथा शेष गणित ग्रहगणितमल्लिका ग्रन्थ से किया जाता है। कुछ पञ्चांगों में सिद्धान्त अथवा करण ग्रन्थ के आधार पर बनी सारणियों से अहर्गण ज्ञात कर ग्रह स्पष्ट किये जाता है। श्री केशवाचार्य कृत केशवीजातक ग्रन्थ में ग्रहलाघव की रीति से ग्रह स्पष्ट करने की सारणीयाँ दी गई हैं। ग्रहलाघव में ग्रहस्पष्ट करने की रीति सूक्ष्म एवं सरल है। लाघवगणित से आगत कुछ ग्रह जैसे– सूर्य, चन्द्र, राहु, मंगल व गुरू आधुनिक वेध सिद्ध ग्रहों के साथ सूक्षमांतर से मेल खाते हैं।

१. **मध्यम ग्रह साधनः**- ग्रह स्पष्ट करने के लिये सर्वप्रथम अहर्गण से मध्यम ग्रह साधन करते हैं। अब हम ग्रह साधन की ग्रहलाघवीय रीति को उदाहरण द्वारा स्पष्ट करते हैं –

उदाहरणार्थ :– शक १६२० चैत्र शुक्लाष्टमी शनिवार के दिन ग्रहलाघवी अहर्गण १६०४ है। इस दिन के सूर्योदयकालीन मध्यम ग्रहों का लाघवगणित निम्नानुसार है –

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मध्यम सूर्य, बुध और शुक्र साधन - ग्रहलाघव के मध्यमाधिकार में सूर्य, बुध एवं शुक्रसाधन की रीति का वर्णन हुआ है।[१६] जो इस प्रकार है–

$$\text{अहर्गणोत्पन्न रवि} = \left(\text{अहर्गण} - \frac{\text{अहर्गण}}{७०}\right) - \frac{\text{अहर्गण}}{१५०}$$

अंशादि कलादि

$$= \left(१६०४ - \frac{१६०४}{७०}\right)^{\circ} - \left(\frac{१६०४}{१५०}\right)'$$

$$= (१६०४^{\circ} - २७^{\circ} : १२' : ०'') - ० : १२' : ४१''$$

= २ राशि १६° : ३५' : १६'' यही अहर्गणोत्पन्न रवि हुआ।

रविध्रुवोन क्षेपक = सूर्यक्षेपक – (सूर्यध्रुव x अहर्गण का चक्र)

= ११ रा. : १६° : ४१' : ० – (० : १° : ४६' : ११'' x ४३)

= ११ रा. : १६° : ४१' : ० – २ : १८° : १४' : ५३''

= ६ रा. : १° : २६' : ७'' यही रवि का ध्रुवोन क्षेपक हुआ।

∴ मध्यम रवि = अहर्गणोत्पन्न रवि + रविध्रुवोन क्षेपक

= २ रा. : १६° : ३५' : १६'' + ६ रा.: १° : २६' : ७''

= ११ रा.: १८° : १' : २६'' यही मध्यम रवि है।

जो मध्यम रवि होता है, वही मध्यम बुध व शुक्र भी होता है। अतः

मध्यम रवि = मध्यम बुध = मध्यम शुक्र = ११ रा.: १८° : १' : २६''

मध्यम चन्द्र साधन :- ग्रहलाघव मध्यमाधिकार में मध्यम चन्द्रानयन की विधि का वर्णन है।[१७] जिसके अनुसार

$$\text{अहर्गणोत्पन्न रवि} = \left[(\text{अहर्गण} \times १४) - \frac{\text{अहर्गण} \times १४}{१७}\right] - \frac{\text{अहर्गण}}{१४०}$$

अंशादि कलादि

---

१६ स्वखनगलवहीनो द्युव्रजोऽर्कज्ञशुकाः
खतिथिहृतगणोनो लिप्तिकास्वंशकाद्याः।। ग्रहलाघव, मध्यमाधिकार, श्लोक १० पूर्वार्ध

१७ गणमनुहतिरिन्दुः स्वाद्रिभूभागहीनः
खमनुहृतगणोनो लिप्तिकास्वंशपूर्वः।। ग्रहलाघव, मध्यमाधिकार, श्लोक १० परार्ध

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

$$= \left[(१६०४ \times १४) - \left(\frac{१६०४ \times १४}{१७}\right)\right]^{\circ} - \left(\frac{१६०४}{१४०}\right)'$$

$$= (२६६५६ - १५३८)^{\circ} - ०:१३':३६''$$

$$= २५०८८^{\circ} - ०^{\circ}:१३':३६''$$

$$= २५०८७^{\circ}:४६':२४''$$

$$= ८३६ \text{ रा.} : ७^{\circ}:४६':२४''$$

$$= ८ \text{ रा.} : ७^{\circ}:४६':२४''$$ यही अहर्गणोत्पन्न चन्द्र हुआ।

चन्द्रध्रुवोन क्षेपक = चन्द्र क्षेपक – (चन्द्रध्रुव x चक्र)

$$= ११ \text{ रा.:} १६^{\circ}:६':० - (०:३^{\circ}:४६':११'' \times ४३)$$

$$= ११ \text{ रा.:} १६^{\circ}:६':० - ५ \text{ रा.:} १२^{\circ}:५':५३''$$

$$= ६ \text{ रा.:} ७^{\circ}:०':७''$$ यही चन्द्रध्रुवोन क्षेपक हुआ।

∴ मध्यम चन्द्र = अहर्गणोत्पन्न चन्द्र + चन्द्रध्रुवोन क्षेपक

$$= ८ \text{ रा.} : ७^{\circ}:४६':२४'' + ६ \text{ रा.:} ७^{\circ}:०':७''$$

$$= २ \text{ रा.:} १४^{\circ}:४६':३१''$$ यही मध्यम चन्द्र होगा।

चन्द्रोच्च साधन :- ग्रहलाघव में चन्द्रोच्च साधन की विधि उधृत है।[१८] जिसके अनुसार

अहर्गणोत्पन्न चन्द्रोच्च = $\left(\frac{\text{अहर्गण}}{६}\right) + \left(\frac{\text{अहर्गण}}{७०}\right)$

अंशादि कलादि

$$= \left(\frac{१६०४}{६}\right)^{\circ} + \left(\frac{१६०४}{७०}\right)'$$

अहर्गणोत्पन्न चन्द्रोच्च = $२११^{\circ}:३३':२०'' + ०^{\circ}:२७':१२''$

$$= ७ \text{ रा.} : २^{\circ}:०':३४''$$

यही अहर्गणोत्पन्न चन्द्रमन्दोच्च हुआ।

चन्दोच्च ध्रुवोनक्षेपक = चन्द्रमन्दोच्च क्षेपक – (चन्द्रमन्दोच्च ध्रुव x चक्र)

$$= ५ \text{ रा.} : १७^{\circ}:३३':०'' - (६ \text{ रा.} २^{\circ}:४५':०'' \times ४३)$$

$$= ५ \text{ रा.} : १७^{\circ}:३३':०'' - ३६० \text{ रा.} : २८^{\circ}:१५':०''$$

$$= ५ \text{ रा.} : १७^{\circ}:३३':०'' - ६ \text{ रा.} : २८^{\circ}:१५':०''$$

$$= १० \text{ रा.} : १६^{\circ}:१८':०''$$ यही चन्द्रोच्चध्रुवोन क्षेपक हुआ।

---

[१८] नवहृतदिनसङ्घश्चन्द्रतुग्डं. लवाद्यं।
भवति खनगभक्तद्युव्रजोपेतलिप्तम्।। ग्रहलाघव, मध्यमाधिकार, श्लोक ११ पूर्वार्ध

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

∴ चन्द्रोच्च = अहर्गणोत्पन्न चन्द्रोच्च + चन्द्रोच्चध्रुवोन क्षेपक
= ७ रा. : २° : ०′ : ३४″ + १० रा. : १६° : १८′ : ०″
= ५ रा. : २१° : १८′ : ३४″ यही चन्द्रोच्च हुआ।

मध्यम मंगल साधन :- ग्रहलाघव के मध्यमाधिकार में मध्यम मंगल साधन की विधि का वर्णन है।[१९] जो इस प्रकार है–

अहर्गणोत्पन्न मंगल $= \left(\frac{\text{अहर्गण} \times १०}{१६}\right) - \left(\frac{\text{अहर्गण} \times १०}{७३}\right)$

अंशादि कलादि

$= \left(\frac{१६०४ \times १०}{१६}\right)^{\circ} - \left(\frac{१६०४ \times १०}{७३}\right)'$

= १००२° : ६′ : १६″ − ०° : २६०′ : ४६″
= ३३ रा. : १२° : ६′ : १६″ − ४° : २०′ : ४६″
= ६ रा. : ७° : ४५′ : ३०″ यही अहर्गणोत्पन्न मंगल हुआ।

मंगल ध्रुवोनक्षेपक = मंगल क्षेपक − (मंगल ध्रुव × चक्र)
= १० रा. : ७° : ८′ : ०″ − (१ रा. : २५° : ३२′ : ०″ x ४३)
= १० रा. : ७° : ८′ : ०″ − ७ रा. : १७° : ५६′ : ०″
= २ रा. : १६° : १२′ : ०″ यही मंगल का ध्रुवोनक्षेपक हुआ।

∴ मध्यम मंगल = अहर्गणोत्पन्न मंगल + मंगलध्रुवोन क्षेपक
= ६ रा. : ७° : ४५′ : ३०″ + २ रा. : १६° : १२′ : ०″
= ११ रा. : २६° : ४७′ : ३०″ यही मध्यममंगल हुआ।

बुध केन्द्रसाधन :- ग्रहलाघव के मध्यमाधिकार में बुध केन्द्र साधन की विधि का वर्णन है।[२०] जिसके अनुसार –

अहर्गणोत्पन्न बुधकेन्द्र $= \left[\left(\frac{\text{अहर्गण} \times ३}{२८}\right) + (\text{अहर्गण} \times ३)\right] - \left(\frac{\text{अहर्गण}}{३८}\right)$

अंशादि कलादि

$= \left[\left(\frac{१६०४ \times ३}{२८}\right) + (१६०४ \times ३)\right]^{\circ} - \left(\frac{१६०४}{३८}\right)'$

---

[१९] दिग्घ्नो द्विधा दिनगणो ऽङ्.ककुभिस्त्रिशैलै –
र्भक्तः फलांशकलाविवरं कुजः स्यात्।। ग्रहलाघव,मध्यमाधिकार,श्लोक १२ पूर्वार्ध

[२०] त्रिघ्नो गणः स्ववसुद्दग्लववयुग्ज्ञशीघ्र–
केन्द्रं लवाद्यहिगुणाप्तगणोनलिप्तम्।। ग्रहलाघव, मध्यमाधिकार, श्लोक १२ परार्ध

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

$= (२०४^\circ + ५७१२^\circ) - ०^\circ : ५०' : ६''$

$= ५९१६^\circ - ०^\circ : ५०' : ६''$

$= १६७ \text{ रा.: } ५^\circ : ६' : ५४''$

$= ५ \text{ रा.: } ५^\circ : ६' : ५४''$ यही अहर्गणोत्पन्न बुधकेन्द्र हुआ।

बुधकेन्द्र ध्रुवोनक्षेपक = बुधकेन्द्र क्षेपक − (बुधकेन्द्र ध्रुव x चक्र)

$= ८ \text{ रा.: } २९^\circ : ३३' : ०'' - (४ \text{रा.: } ३^\circ : २७' : ०'' \times ४३)$

$= ८ \text{ रा.: } २९^\circ : ३३' : ०'' - ८ \text{ रा.: } २८^\circ : २१' : ०''$

$= ० \text{ रा.: } १^\circ : ११' : ०''$ यही बुध ध्रुवोन क्षेपक हुआ।

∴ बुधकेन्द्र = अहर्गणोत्पन्न बुधकेन्द्र + बुधकेन्द्र ध्रुवोन क्षेपक

$= ५ \text{ रा.: } ५^\circ : ६' : ५४'' + ० \text{ रा.: } १^\circ : ११' : ०''$

$= ५ \text{ रा.: } ६^\circ : २०' : ५४''$ यही बुधकेन्द्र हुआ।

मध्यमगुरू साधन :- ग्रहलाघव में मध्यम गुरू साधन की रीति का वर्णन है।[२१] जो इस प्रकार है :–

अहर्गणोत्पन्न गुरू $= \left(\frac{\text{अहर्गण}}{१२}\right) - \left(\frac{\text{अहर्गण}}{७०}\right)$

अंशादि कलादि

$= \left(\frac{१६०४}{१२}\right)^\circ - \left(\frac{१६०४}{७०}\right)'$

अहर्गणोत्पन्न गुरू $= १५८^\circ : ४०' : ०'' - ०^\circ : २७' : १२''$

$= ५ \text{रा. : } ८^\circ : १२' : ४८''$ यही अहर्गणोत्पन्न गुरू हुआ।

गुरू ध्रुवोनक्षेपक = गुरूक्षेपक − (गुरूध्रुव x चक्र)

$= ७ \text{रा. : } २^\circ : १६' : ०'' - (०\text{रा. : } २६^\circ : १८' : ०'' \times ४३)$

$= ७ \text{रा. : } २^\circ : १६' : ०'' - १ \text{रा. : } २०^\circ : ५४' : ०''$

$= ५ \text{रा. : } ११^\circ : २२' : ०''$ यही गुरू ध्रुवोनक्षेपक हुआ

∴ मध्यम गुरू = अहर्गणोत्पन्न गुरू + गुरू ध्रुवोन क्षेपक

$= ५ \text{रा. : } ८^\circ : १२' : ४८'' + ५ \text{रा. : } ११^\circ : २२' : ०''$

$= १० \text{रा. : } १६^\circ : ३४' : ४८''$ यही मध्यम गुरू हुआ।

---

[२१] द्युपिण्डोर्कभक्तो लवाद्यो गुरूः स्याद्
द्युपिण्डात् खशैलप्तलिप्ता विहीनः । ग्रहलाघव, मध्यमाधिकार, श्लोक १३ पूर्वार्ध

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शुक्रकेन्द्र साधन :- ग्रहलाघव के मध्यमाधिकार में मध्यम शुक्रकेन्द्र साधन की विधि का वर्णन है।[२२] जिसके अनुसार –

अहर्गणोत्पन्न शुक्रकेन्द्र= $\left(\frac{\text{अहर्गण x ३}}{५}\right) - \left(\frac{\text{अहर्गण x ३}}{१८१}\right)$

अंशादि ° कलादि

$= \left(\frac{१६०४ \text{ x } ३}{५}\right)^{\circ} - \left(\frac{१६०४ \text{ x } ३}{१८१}\right)'$

= ११४२° : २४′ : ०″ + ३१° : ३३′ : २८″

= ११७३° : ५७′ : २८″

= ३रा. : ३° : ५७′ : २८″ यही अहर्गणोत्पन्न शुक्रकेन्द्र हुआ।

शुक्रकेन्द्र ध्रुवोनक्षेपक = शुक्रकेन्द्र क्षेपक – (शुक्रकेन्द्र ध्रुव x ४३)

= ७रा. : २०° : ६′ : ०″ – (१रा. : १४° : २′ : ०″ x ४३)

= ७रा. : २०° : ६′ : ०″ – ३रा. : ३° : २६′ : ०″

= ४रा.: १६°: ४३′ : ०″ यही शुक्रकेन्द्र का ध्रुवन क्षेपक हुआ।

∴ शुक्रकेन्द्र = अहर्गणोत्पन्न शुक्रकेन्द्र + शुक्रकेन्द्र ध्रुवोन क्षेपक

= ३रा. : ३° : ५७′ : २८″ + ४रा.: १६°: ४३′ : ०″

= ७रा.: २०°: ४०′ : २८″ यही शुक्रकेन्द्र हुआ।

मध्यम शनि साधन :- ग्रहलाघव के मध्यमाधिकार में मध्यम शनि साधन की विधि उधृत है।[२३] जिसके अनुसार

अहर्गणोत्पन्न शनि = $\left(\frac{\text{अहर्गण}}{३०}\right) + \left(\frac{\text{अहर्गण}}{१५६}\right)$

अंशादि कलादि

$= \left(\frac{१६०४}{३०}\right)^{\circ} + \left(\frac{१६०४}{१५६}\right)$

= ६३° : २८′ : ०″ + ०° : १२′ : १२″

= २रा. : ३° : ४०′ : १२″ यही अहर्गणोत्पन्न शनि हुआ।

---

[२२] त्रिनिघ्नाद्युपिण्डादद्विधाक्षैः क्विभाब्जै –
रवाप्तांशयोगो भृगोराशुकेन्द्रम्।। ग्रहलाघव, मध्यमाधिकार, श्लोक १३ परार्ध

[२३] खाग्न्युदधृतो दिनगणोंऽशमुखः शनिः स्यात्
षट्पञ्चभूहृतगणात् फललिप्तिकाढ्यः।। ग्रहलाघव, मध्यमाधिकार, श्लोक १४ पूर्वार्ध

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शनिध्रुवोन क्षेपक = शनिक्षेपक – (शनिध्रुव × चक्र)
= ६रा.: १५° : २१′ : ०″ – (७रा.: १५° : ४२′ : ०″ × ४३)
= ६रा. : १५° : २१′ : ०″ – ११रा. : १५° : ६′ : ०″
= १०रा. : ०° : १५′ : ०″ यही शनि ध्रुवोन क्षेपक हुआ।

∴ मध्यम शनि = अहर्गणोत्पन्न शनि + शनि ध्रुवोन क्षेपक
= २रा. : ३° : ४०′ : १२″ + १०रा. : ०° : १५′ : ०″
= ०रा. : ३° : ५५′ : १२″ यही मध्यम शनि हुआ।

मध्यम राहु साधन :- ग्रहलाघव मध्यमाधिकार में मध्यम राहु साधन की विधि का अध्यन है।[२४] जिसके अनुसार –

अहर्गणोत्पन्न राहु = १२ राशि – $\left(\frac{\text{अहर्गण}}{१६}\right)$ – $\left(\frac{\text{अहर्गण}}{४५}\right)$

अंशादि कलादि

= १२ राशि – $\left(\frac{१६०४}{१६}\right)^{\circ}$ – $\left(\frac{१६०४}{४५}\right)'$
= १२ राशि – १००° : १२′ – ४५′ : १६″
= १२ राशि – ३रा. : १०° : ५७′ : १६″
= ८रा. : १६° : २′ : ४१″ यही अहर्गणोत्पन्न राहु हुआ।

राहु ध्रुवोन क्षेपक = राहुक्षेपक – (राहु ध्रुव x चक्र)
= ०रा. : २७° : ३८′ : ०″ – (७रा. : २° : ५०′ : ०″ x ४३)
= ०रा. : २७° : ३८′ : ०″ – ५रा. : १° : ५०′ : ०″
= ७रा. : २५° : ४८′ : ०″ यही राहु ध्रुवोन क्षेपक हुआ।

∴ मध्यम राहु = अहर्गणोत्पन्न राहु + राहु ध्रुवोन क्षेपक
= ८रा. : १६° : २′ : ४१″ + ७रा. : २५° : ४८′ : ०″
= ४रा. : १४° : ५०′ : ४१″ यही मध्यम राहु हुआ।

इस प्रकार ग्रहलाघव गणितानुसार संवत २०५५ शक १९२० चैत्र शुक्ल अष्टमी शनिवार के दिन सूर्योदयकालीन रेखादेशीय (उज्जैन के क्षितिज) के मध्यम ग्रह सिद्ध होते हैं।

---

[२४] नवाकुभिरिषुवेदैर्घस्त्रसङ्घाद् द्विघाऽऽप्तात्
फललवकलिकैक्यं स्यादगुश्चक्रशुद्धः।। ग्रहलाघव, मध्यमाधिकार, श्लोक ११ परार्ध

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२. सूर्य-चन्द्र स्पष्टी करण :- ग्रहलाघव मतानुसार अब हम मध्यमग्रहों से स्पष्ट ग्रहों के आनयन का लाघवगणित करेंगे। मध्यम ग्रहों में से उसका मन्दोच्च निकाल मन्दकेन्द्र के भुजांश परिमित से मन्दफल और गतिफल लावें। इन दोनों फलों का संस्कार क्रमशः मध्यमग्रह व उनकी मध्यम गतियों में करें तो ग्रह व उसकी गति स्पष्ट होगी।

स्पष्ट रवि साधन :- ग्रहलाघव के रविचन्द्र स्पष्टाधिकार के प्रारम्भिक श्लोकों में रवि स्पष्ट साधन की रीति का वर्णन है।[२५] जिसका गणित निम्नानुसार है :–

रविमन्द केन्द्र = रवि मन्दोच्च – मध्यम रवि

= २रा. : १८° : ०′ : ०″ – ११रा. : १८° : १′ : २६″

= १३रा. : ४७° : ५३′ : ६०″ – ११रा. : १८° : १′ : २६″

= २रा. : २६° : ५८′ : ३४″ यही रवि का मन्द केन्द्र हुआ।

इस रविमन्द केन्द्र के भुजांश बनाते हैं। चूँकि रवि केन्द्र ३ राशि (६०°) से कम है। अतः यही भुज होता है। तब –

रविभुज = २रा. : २६° : ५८′ : ३४″ एवं रविमन्दकेन्द्र भुजांश = ८६° : ५८′ : ३४″

$$\text{गुणनफल} = \left[२०^\circ - \frac{\text{रविमन्दकेन्द्र भुजांश}}{६}\right] \times \frac{\text{मन्दकेन्द्रभुजांश}}{६}$$

गुणनफल = (२०° – ६° : ५६′ : ५०″) × ६° : ५६′ : ५०″

= १०° : ०′ : १०″ x ६° : ५६′ : ५०″

= ६६° : ५६′ : ५६″ = १००° अंश लगभग।

$$\text{रविमन्दफल} = \frac{\text{गुणनफल}}{५७^\circ - \frac{\text{गुणनफल}}{६}}$$

$$= \frac{१००^\circ}{५७^\circ - \frac{१००^\circ}{६}} = \frac{१००^\circ}{५७^\circ - ११^\circ : ६′ : ४०″} = \frac{१००^\circ}{४५^\circ : ५३′ : ००″} = २^\circ : १०′ : ४५″$$

अतः रवि का मन्दफल = + २° : १०′ : ४५″

चूँकि रविमन्दकेन्द्र मेषादि होने से रवि का मन्दफल धनात्मक होता है।

---

[२५] ग्रहलाघव, रविचन्द्र स्पष्टाधिकार, श्लोक २०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसलिये मन्दस्पष्ट रवि= मध्यमरवि ± रवि का मन्दफल
= ११रा. : १८° : १' : २६'' + ० : २° : १०' : ४५''
= ११रा. : २०° : १२' : ११'' यह मन्दस्पष्ट रवि हुआ।

अयनांश :– उत्तरभारत से निकलने वाले प्रमुख पञ्चांगों में ग्रहलाघवीय अयनांश की अपेक्षा केतकी अथवा चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग होता है वे पञ्चांग जिनमें ग्रहलाघवीय स्पष्ट ग्रह दर्शाये जाते हैं उनमें भी ग्रहलाघवीय अयनांश का प्रयोग देखने नहीं मिलता है, जैसे – श्री हृषीकेष पञ्चांग, काशी में ग्रहलाघवीय दैनिक स्पष्ट ग्रहों को दर्शाया है किन्तु अयनांश केतकीय है। इस पञ्चांग में शक १६२० चैत्र शुक्ल अष्टमी शनिवार को केतकीय अयनांश २३° : ४८' : ५८'' दिया है। जबकि इस दिन ग्रहलाघवीय अयनांश निम्नानुसार होगा।[२६]

१६२०–४४४ = १४७६ तथा १४७६ ÷ ६० = २४ लब्धि, ३६ शेष।
इसलिये वर्ष के आरम्भ में अयनांश = २४° ३६' ०''
चूँकि एक दिन की अयनगति = १०'''
इसलिये ८ दिन की अयनगति = १०''' × ८ = १'' २०'''

अतः शक १६२० चैत्र शुक्लाष्टमी को ग्रहलाघवीय अयनांश २४° : ३६' : १'' : २० है जो कि केतकीय अयनांश से ४७ कला ३ विकला (लगभग) अधिक है।

सायन रवि = मन्दस्पष्ट रवि + ग्रहलाघवीय अयनांश
= १२रा. : २०° : १२' : ११'' + २४° : ३६' : १''
= ०रा. : १४° : ४८' : १२''

चरसाधन :- रविचन्द्र स्पष्टाधिकार के अनुसार चर साधन की विधि इस प्रकार है–

$$\text{चर} = \frac{(\text{सायन रवि की राशि छोड़कर अंशादि लेने पर}) \times \text{वर्तमान चरखण्ड}}{३०} + \text{गत चरखण्ड}$$

जिस स्थल पर सूर्य स्पष्ट करना है उस स्थल की पलभा को तीन जगह लिखकर क्रम से १०, ८ और $\frac{१०}{३}$ से गुणा करते हैं। यहाँ हम काशी में सूर्य स्पष्ट करते हैं। तब काशी की पलभा ५ अंगुल ४५ प्रतिअंगुल को क्रमशः १०, ८ और $\frac{१०}{३}$ से गुणा करते हैं।[२७]

---

[२६] ग्रहलाघव, रविचन्द्रस्पष्टाधिकार, श्लोक ७ परार्ध एवं भाष्य
[२७] ग्रहलाघव, रविचन्द्र स्पष्टाधिकार, श्लोक ५,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रथम चरखण्ड = ५/४५ x १० = ५७/३०
द्वितीय चरखण्ड = ५/४५ x ८ = ४३/००
तृतीय चरखण्ड = ५/४५ x $\frac{१०}{३}$ = १६/१०

चूँकि सायन रवि के भुजांश .. १४° : ४८′ : १२″ होंगे क्योकि सायन रवि का मान ६० अंश से कम है। भुज में ३०–३० अंश का एक चरखण्ड होता है। यदि भुज में ० राशि हो तो प्रथम चरखण्ड, १ राशि हो तो द्वितीय चरखण्ड तथा २ राशि हो तो तृतीय चरखण्ड वर्तमान चरखण्ड होता है। यहाँ भुज ० राशि है। अतः प्रथम चरखण्ड वर्तमान चरखण्ड होगा। तब

$$\text{चर} = \frac{१४° : ४८ : १२'' \times ५७}{३०} + ० = २६° : ५२′ : १२''$$

यहाँ अंश-कला को विकला-प्रतिविकला लेने पर

चर = – २६ विकला ५२ प्रतिविकला = – २७ विकला लगभग
(चूँकि सायन रवि मेषादि होने से चर ऋणात्मक होगा)

अतः प्रातः स्पष्ट रवि = मन्दस्पष्टरवि – चर
= ११रा. : २०° : १२′ : ११″ – ० : ० : ० : २७″
= ११रा. : २०° : ११′ : ४४″

यह काशी में प्रातः सूर्योदयकालीन रवि स्पष्ट हुआ।

इस प्रकार शक १६२० चैत्र शुक्लाष्टमी शनिवार (४ अप्रैल १६६८ ई.) को सूर्योदय कालीन रवि स्पष्ट का मान ११रा. : २०° : ११′ : ४४″ प्राप्त होता है। जबकि इस दिन श्री हृषीकेष पञ्चांग में सूर्य स्पष्ट ११रा. : २०° : १०′ : ३६″ दिया है।

रवि गति साधन :- ग्रहलाघव के रविचन्द्रस्पष्टाधिकार में रवि गति साधन की विधि का वर्णन है।[२८] जिसका गणित इस प्रकार से है –

रवि मन्दकेन्द्र = २रा. : २६° : ५८′ : ३४″

चूँकि मन्द केन्द्र ३ राशि से कम है इसलिये यही रवि मन्दकेन्द्र भुज होगा।

मन्दकेन्द्र कोटि = ३ राशि – मन्दकेन्द्र भुज ("भुजोनंत्रिभम् कोटिः" से)
कोटि = २रा. : २६° : ५६′ : ६०″ – २रा: २६° : ५८′ : ३४″
कोटि = ०रा. : ०° : १′ : २६″ तथा कोटांश = ०° : १′ : २६″

---

[२८] रविचन्द्र,स्पष्टाधिकार, श्लोक ४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कोटांश ÷ २० = ०° : १' : २६'' ÷ २० = ०° : ०' : ४.३''

अब गतिफल = $\left[\left(११^{\circ} - \frac{\text{रवि भुज कोटांश}}{२०}\right) \times \frac{\text{रवि भुज कोटांश}}{२०}\right] \div १३$

= [(११° − ०° : ०' : ४.३'') x ०° : ०' : ४.३''] ÷ १३

= [(१०° : ५६' : ५५'') x ०° : ०' : ४.३''] ÷ १३

= (०° : ०' : ४७.२६'') ÷ ३० = ० : ० : ४'' (लगभग)

चूँकि रविमन्द केन्द्र मेषादि होने पर गतिफल धनात्मक होता है।

गति स्पष्ट = मध्यमगति ± गतिफल

= ५६' : ८'' + ० : ४'' = ५६' : १२''

इस प्रकार शक १६२० चैत्र शुक्लाष्टमी शनिवार को प्रातः रविस्पष्टगति ५६ कला १२ विकला प्राप्त होती है। इस दिन श्री हृषीकेष पञ्चांग में रवि स्पष्ट गति ५६ कला ४ विकला दी हैं जो कि प्राप्त स्पष्ट गति के लगभग समान है।

स्पष्ट चन्द्र साधन :- पूर्व में प्राप्त मध्यम ग्रह रेखादेशीय सूर्योदय समय के प्राप्त होते हैं। स्वदेशीय खमध्य एवं रेखादेशीय खमध्य के अंतर योजन में ६ का भाग देने पर लब्धि कालादि फल प्राप्त होती है। जिसे देशान्तर संस्कार कहते हैं। यदि स्वदेशीय खमध्य, रेखादेशीय खमध्य से पश्चिम में हो तो प्राप्त संस्कार फल को मध्यम ग्रह में जोड़ दें तथा पूर्व में हो तो घटा दें।[२६] चूँकि चन्द्रमा ग्रह की गति सर्वाधिक है अतः चन्द्रमा की स्थिति में देशान्तर संस्कार आवश्यक होता है। अन्य ग्रहों में भी देशान्तर संस्कार होना चाहिये था किन्तु स्वल्पांतर दोष ग्राह्म समझकर नहीं किया गया है। चन्द्रस्पष्ट करने के लिये सर्वप्रथम मध्यम चन्द्र से त्रिफलसंस्कृतचन्द्र प्राप्त करते हैं

देशन्तर संस्कार :– चूँकि काशी में चन्द्र स्पष्ट ज्ञात करना है। इसलिये काशी से देशान्तर संस्कार ज्ञात करते हैं। प्राचीन मतानुसार काशी नगरी दक्षिणोत्तर रेखा (उज्जयिनी) से ६४ योजना पूर्व में है। अतः

६४ योजन ÷ ६ = १० कला ४० विकला (ऋण)

चरसंस्कार = $\pm \frac{\text{चर} \times २}{६}$ कलादि = $\frac{२७ \text{ विकला} \times २}{६}$ = −६ विकला

मन्दफल संस्कार = ±रविमन्दफल ÷ २(चर ऋणात्मक होने से ऋण संस्कार है।)

---

[२६] ग्रहलाघव – श्लोक ६ मध्यमाधिकार

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मन्दफल संस्कार = ±रविमन्दफल ÷ २७

मन्दफल संस्कार = २° : १०′ : ४५″ ÷ २७ (मन्दकेन्द्रमेषादि होने से धन(+) है।)

= ०° : ४′ : ५१″

∴ त्रिफलसंस्कार = − ०° : १०′ : ४०″ − ०° : ०′ : ६″ + ०° : ४′ : ५१″

= − ०° : ५′ : ५५″

त्रिफलसंस्कारित चन्द्र = मध्यमचन्द्र ± त्रिफल संस्कार

= २रा. : १४° : ४६′ : ३१″ − ०° : ५′ : ५५″

= २रा. : १४° : ४०′ : ३६″

त्रिफलसंस्कृचन्द्र के आधार पर हम चन्द्र स्पष्ट करते हैं। स्पष्टचन्द्र साधन की रीति का वर्णन ग्रहलाघव में है।[३०] जिसका गणित इस प्रकार है –

चन्द्रकेन्द्र = चन्दोच्च − त्रिफल संस्कृत चन्द्र

= ५रा. : २१° : १८′ : ३४″ − २रा. : १४° : ४०′ : ३६″

= ३रा. : ६° : २७′ : ५८″

यह चन्द्रमन्द केन्द्र हुआ। मेषादि होने से धन होगा। चन्द्रकेन्द्र के भुज बनायेंगे –

चन्द्रकेन्द्र भुज = ६राशि − चन्द्र केन्द्र (३रा. : ६° : ३७′ : ५८″)

= २रा. : २३° : २२′ : २″

चन्द्रमन्दकेद्र भुजांश = ८३° : २२′ : २″

भुजषष्ठांश = भुजांश (८३° : २२′ : २″) ÷ ६ = १३° : ५३′ : ४०″

गुणनफल = भुजषष्ठांश x (३०° − भुजषष्ठांश)

= १३° : ५३′ : ४०″ x १६° : ६′ : १६.६″

= २२३° : ४६′ : ४०.६″

$$\therefore \text{चन्द्रमन्दफल} = \frac{\text{गुणनफल}}{५६° - \frac{\text{गुणनफल}}{२०}} = \frac{२२३° : ४६′ : ४०.६″}{५६° - \frac{२२३° : ४६′ : ४०.६″}{२०}}$$

$$= \frac{२२३° : ४६′ : ४०.६″}{५६° : ११° : ११′ : २०″}$$

$$= \frac{२२३° : ४६′ : ४०.६″}{५६° : ११° : ११′ : २०″}$$

= ४०° : ५६′ : ३७.६″

यही चन्द्रमन्दफल हुआ। मन्दकेन्द्र मेषादि होने से मन्दफल धन (+) होगा।

---

[३०] ग्रहलाघव – रविचन्द्रस्पष्टाधिकार –श्लोक ७ एवं भाष्य

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

∴ चन्द्रस्पष्ट = त्रिफलसंस्कृत चन्द्र + चन्द्रमन्दफल
= २रा. : १४° : ४०′ : ३६″ + : ४° : ५६′ : ३८″
= २रा. : १६° : ४०′ : १४″

यह शक १६२० चैत्र शुक्लाष्टमी शनिवार (४ अप्रैल १६६८ ई.) को सूर्योदय कालीन स्पष्ट चन्द्र हुआ। जबकि इस दिन श्री हृषीकेष पञ्चांग में सूर्योदय कालीन स्पष्ट चन्द्र २रा. : १६° : ४५′ : ३८″ दिया है।

चन्द्रगति साधन :- रविचंद्र स्पष्टाधिकार में चंद्रगतिसाधन की रीति का वर्णन है।[३१] जिसका गणित इस प्रकार है।

चन्द्रकेन्द्र = ३रा. : ६° : ३७′ : ५८″ (केन्द्र मेषादि है।)
चन्द्रकेन्द्रभुज = २रा. : २३° : २२′ : २″
कोटि = ३ राशि − भुज (भुजोनंत्रिभम् कोटिः)
= ३ राशि − २रा. : २३° : २२′ : २″
= ६° : ३७′ : ५८″

कोट्यांश ÷ २० = ६° : ३७′ : २८″ ÷ २० = २रा. : ०° : १६′ : ५४″

अब गुणनफल = $\left(११^{\circ} - \frac{\text{चन्द्रकेन्द्रकोट्यांश}}{२०}\right) \times \frac{\text{चन्द्रकेन्द्रकोट्यांश}}{२०} \times २$

= १०° : ४०′ : ६″ × ०° : १६′ : ५४″ × २

= ७° : ४′ : ३६″

∴ गतिफल = गुणनफल + $\frac{\text{गुणनफल}}{६}$

= ७० : ४′ : ३६″ + $\frac{७० : ४′ : ३६″}{६}$ = ८° : १५′ : २२″

अंशादि को कलादि मानने पर
गतिफल = ८′ : १५″ : २२‴
(चन्द्र केन्द्र मेषादि ६ राशि के भीतर होन से यह गतिफल धन (+) होगा)
चन्द्र स्पष्ट गति = मध्यमगति ± गतिफल
= ७६०′ : ३५″ + ८′ : १५″ = ७६८′ : ५०″

---

[३१] ग्रहलाघव, रविचन्द्र स्पष्टाधिकार, श्लोक ७ एवं भाष्य

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अर्थात शक १६२० चैत्रशुक्लाष्टमी शनिवार को प्रातः चन्द्रस्पष्ट गति ७६८ कला ५० विकला प्राप्त होती है। इसदिन हृषीकेष पञ्चांगानुसार चन्द्र स्पष्ट गति ८०७ कला २४ विकला है।

३. पंचतारा स्पष्टीकरण :- मंगल, बुध, गुरू, शुक्र और शनि को पंचतारा कहते हैं। इनमें मंगल, गुरू और शनि को त्रयी तथा शुक्र व बुध को द्वयी कहा है। द्वयीग्रहों का स्पष्टीकरण त्रयीग्रहों के स्पष्टीकरण से भिन्न है। त्रयीग्रह–मंगल, गुरू और शनि अपनी जिस कक्षा के द्वारा सूर्य की परिक्रमा करते हैं, उसी कक्षा के द्वारा वे पृथ्वी की भी परिक्रमा करते हैं अर्थात सूर्य और पृथ्वी दोनों ही उनकी कक्षा के अन्तर्गत हैं।

द्वयीग्रह–बुध और शुक्र जिस कक्षा के द्वारा सूर्य की प्रदक्षिणा करते हैं, उससे वे पृथ्वी की प्रदक्षिण नहीं करते हैं। अपितु पृथ्वी सूर्य के साथ–साथ ही बुध एवं शुक्र की परिक्रमा करती हैं, तब ऐसा लगता है मानों सूर्य, इन दोनों ग्रहों बुध व शुक्र को अपने साथ लिये हुये पृथ्वी के चारों ओर घूम रहा हो। यही कारण है कि बुध और शुक्र दौनों सूर्य से थोड़े अंतर पर उसे आगे या पीछे अथवा केवल प्रातः व सांय काल में ही दिखाई देते हैं। त्रयी ग्रहों की तरह बुध व शुक्र पूर्वी क्षितिज से लेकर पश्चिमी क्षितिज तक आकाश में भ्रमण करते हुये रात में कभी भी नहीं देखे गये हैं। चूँकि आकाश में द्वयीग्रह सूर्य के साथ ही पृथ्वी की प्रदक्षिणा करते हुये प्रतीत होते हैं, अतः सूर्यकक्षा (क्रांतिवृत) ही इनकी भू केन्द्रक कक्षा मान ली गई है। फलतः मध्यम सूर्य ही को मध्यम बुध और मध्यम शुक्र मान लिया गया है। जो वास्तव में मध्यम बुध और मध्यमशुक्र है, उन्हें क्रमशः बुध शीघ्रोच्च एवं शुक्र शीघ्रोच्च की संज्ञा दी गई है। मध्यम सूर्य से इन दोनों के अंतर को क्रमशः बुध केन्द्र और शुक्र केन्द्र कहते हैं।[३२]

किसी निर्दिष्ट क्षण में ग्रह की अपनी कक्षा (क्रांतिवृत) में स्थिति को गणित द्वारा ज्ञात कर लेना ही उसका स्पष्टीकरण कहलाता है। राहु–केतु (छायाग्रहों) के स्पष्टीकरण में हम एक ही क्रिया (मध्यमग्रह स्पष्टीकरण) करते हैं। सूर्य – चन्द्र के स्पष्टीकरण में दो क्रियायें करते हैं – (१) मध्यम ग्रह स्पष्टीकरण (२) मन्द स्पष्टीकरण। सूर्य (पृथ्वी) और चन्द्र अपनी कक्षा के केन्द्र से जहाँ पर दृष्टिगत हों

---

[३२] ज्योतिगणितकौभुदी – चतुर्थ परिच्छेद – पेज ५४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वह उनका मध्यम स्थान तथा जहाँ पर भू केन्द्र दृष्टिगत हों वह उसका मन्दस्पष्ट स्थान है। सूर्य और चन्द्र मन्दस्पष्ट होते ही स्पष्ट हो जाते हैं। पंचतारा के स्पष्टीकरण में हमें तीन क्रियाऐं करनी होती हैं –

(१) मध्यमग्रह स्पष्टीकरण (२) मन्दस्पष्टीकरण (३) शीघ्र स्पष्टीकरण

ग्रह अपनी कक्षा के केन्द्र से जहाँ पर दिखाई दे वह उसका मध्यम स्थान, जहाँ पर सूर्य केन्द्र से अवलोकित हो वह उसका मन्दस्पष्ट स्थान और जहाँ पर भूकेन्द्र से दृष्टिगत हो वह उसका शीघ्रस्पष्ट स्थान होता है।[३३] शीघ्र स्पष्ट हो जाने पर भौमादि पंचतारागण स्पष्ट हो जाते हैं।

पंचतारों के स्पष्टीकरण के लिये मन्दोच्च एवं मन्दफल को भी ज्ञात करना होता है। चूँकि पंचतारे सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं तथा सूर्य उनके कक्षा केन्द्र में न होकर उससे कुछ दूर हटकर स्थित है। अतः स्पष्ट है कि ग्रह कक्षा में जो विन्दु सूर्य से अधिकतम दूरी पर होता है वह मन्दोच्च (Aphelion) और जो विन्दु सूर्य के निकटतम होता है वह मन्दनीच (Aerihelion) कहलाता है। दोनों विन्दुओं में ६ राशि का अंतर होता है। इस दशा में कक्षा केन्द्र एवं सूर्य से एक ही काल में देखे जाने पर भी ग्रह स्थिति में अंतर दृष्टिगत होता है। जो कि मन्दफल कहलाता है। पंचतारों की स्थिति को भूकेन्द्रक बनाने के लिये हमें इनकी मन्दस्पष्ट स्थिति में इनका शीघ्रफल नामक भूकेन्द्रक संस्कार करना होता है। जिस समय पृथ्वी, सूर्य और ग्रह एक सूत्र में हों उस समय शीघ्रफल का अभाव होता है।[३४] आगे हम ग्रहलाघवानुसार पंचतारा इतर ग्रह– मंगल, बुध, गुरू और शनि के स्पष्ट करने की विधि का वर्णन कर रहे हैं। इन पाँचों ग्रहों के साधन के लिये शीघ्रांक एवं मन्दांक की आवश्यकता होती है। शीघ्रांक से शीघ्रफल एवं मंन्दाक से मन्दफल ज्ञात किया जाता है। ग्रह साधन के लिये प्रत्येक ग्रह के मन्दोच्च की भी आवश्यकता होती है। यह सब मान ग्रहलाघव के पंचतारा स्पष्टीकरणाधिकार के अनुसार निम्नलिखित हैं।[३५]

---

[३३] ज्योतिगणितकौभुदी – चतुर्थ परिच्छेद – पेज ५५
[३४] ज्योतिगणितकौभुदी – चतुर्थ परिच्छेद – पेज ६०–६१
[३५] ग्रहलाघव, पंचतारास्पष्टीकरणाधिकार, श्लोक १–५ तथा ७–८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथ भौमादिग्रहाणां शीघ्रांक सारणी क्रमांक-११

शीघ्रांक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
मंगल	०	५८	११७	१७४	२२८	२७९	३२५	३६५	३९३	४००	३६८	२४९	०
बुध	०	४१	८१	११७	१५०	१७८	१९९	२१२	२१२	१९५	१५५	८९	०
गुरू	०	२५	४७	६८	८५	९८	१०६	१०८	१०२	८९	६६	३६	०
शुक्र	०	६३	१२६	१८६	२४६	३०२	३५४	४०२	४४०	४६१	४४३	३२६	०
शनि	०	१५	२८	३९	४५	५४	५७	५७	५३	४५	३३	१८	०

अथ भौमादिग्रहणां मन्दांक सारणी क्रमांक-१२

मन्दांक	०	१	२	३	४	५	६	मन्दोच्चराशि
मंगल	०	२९	५७	५८	१०९	१२४	१३०	४ राशि
बुध	०	१२	२१	२८	३३	३५	३६	७ राशि
गुरू	०	१४	२७	३९	४८	५५	५७	६ राशि
शुक्र	०	६	११	१३	१४	१५	१५	३ राशि
शनि	०	१९	४०	६०	७७	८९	९३	८ राशि

ग्रहलाघव में शीघ्रफल साधन की विधि का वर्णन हुआ है। जिसके अनुसार मध्यमसूर्य में से मंगल, गुरू अथवा शनि कोई मध्यम ग्रह घटाने पर प्राप्त फल उस ग्रह का शीघ्र केन्द्र होगा। मध्यम ग्रह साधन करते समय मध्यम बुध और मध्यम शुक्र के केन्द्र पूर्व में ही उदाहरण द्वारा स्पष्ट कर चुके हैं। बुध और शुक्र का शीघ्रकेन्द्र, जो बुध और शुक्र का केन्द्र निकला था वही लेते हैं। यदि इष्टग्रह का यह शीघ्रकेन्द्र ६ राशि से अधिक हो तो इसे १२ राशि में से घटाकर शेषांश में १५ का भाग देते हैं। जो लब्धि प्राप्त हो उसके आधार पर उस अंक के नीचे ग्रह के उपरोक्त लिखे हुये शीघ्रांक को लेते हैं, यह प्रथम शीघ्रांक कहलाता है। उक्त लब्धि में १ जोड़कर प्राप्त अंक के द्वारा पुनः शीघ्रांक ग्रहण करते हैं, यह अग्रिम (ऐष्य) शीघ्रांक कहलाता है। तत्पश्चात केन्द्रांश में १५ का भाग देने पर प्राप्त शेषांश का इन दोनों शीघ्रांकों के अंतर से गुणा करते हैं। गुणनफल में १५ का भाग देते हैं। जो लब्धि प्राप्त हो उसको अंशादि फल समझें। यदि ग्रहण किये हुये प्रथम शीघ्रांक की तुलना में अग्रिम शीघ्रांक अधिक हो तो प्रथम शीघ्रांक में अंशादि फल को जोड़ दें और यदि अग्रिम शीघ्रांक कम हो तो उसको पहले में से घटा दें। प्राप्त संख्या में १० का भाग दें। जो लब्धि प्राप्त हो उसको इष्ट ग्रह का अंशादि समझें। यदि मेषादि केन्द्र ६ राशि के भीतर हो तो शीघ्रफल धन होता है और यदि तुलादि ६ राशि के भीतर हो तो ऋण होता है।[३६]

---

[३६] ग्रहलाघव, पंचतारा स्पष्टाधिकार, श्लोक ६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

$$\text{शीघ्रफल} = \pm \left[\frac{\text{प्रथम शीघ्रांक} \pm \frac{(\text{शेषांश} \times \text{शीघ्रांक अंतर})}{१५}}{१०} \right] \text{ अंशादि}$$

यदि शीघ्रकेन्द्र मेषादि हो तो + तथा तुलादि हो तो – होगा।

तद्नुसार अपने इष्ट ग्रह के शीघ्रफल का आधा करके शीघ्रफलार्द्ध ज्ञात करें तथा शीघ्रफलार्द्ध को अहर्गणोत्पन्न मध्यम ग्रह में धन अथवा ऋण करें, तब शीघ्र फलार्द्ध संस्कृत ग्रह के राश्यादि प्राप्त होते हैं। अर्थात

शीघ्रफलार्द संस्कृत ग्रह = मध्यम ग्रह ± शीघ्रफलार्द्ध

शीघ्रकेन्द्र मेषादि हो तो + तुलादि हो तो – होता है।

तदन्तर शीघ्रफलार्द्ध संस्कृत ग्रह से मन्दफल सिद्ध करते हैं। ग्रहलाघव में मन्दफल साधन की विधि का वर्णन हुआ हैं जिसके अनुसार इष्टग्रह के मन्दोच्च में से शीघ्रफलार्द्ध संस्कृत ग्रह के राश्यादि घटाने पर इष्टग्रह का मन्दकेन्द्र प्राप्त होगा। मन्दकेन्द्र के भुज बना लें तथा भुजों के अंश बनाये। भुजांशों में १५ का भाग दें तथा प्राप्त लब्धि के अंक में एक जोड़कर पुनः मन्दांक ग्रहण करें, यह प्रथम मन्दांक कहलाता हैं लब्धि के अंक के अनुसार मन्दांक ग्रहण करे, यह अग्रिम (ऐष्य) मन्दांक होता है। केन्द्र भुजांश में १५ का भाग देने पर प्राप्त शेषांश का इन दोंनो मन्दांकों कें अंतर से गुणा करें तथा गुणनफल में १५ का भाग दें। जो लब्धि प्राप्त हो उसको पहले मन्दांक में जोड़ दें। प्राप्त योगफल में १० का भाग दें जो लब्धि प्राप्त हो वह अंशादि मन्दफल होता है।[३७] अर्थात

$$\text{मन्दफल} = \pm \left[\text{प्रथम मन्दांक} \pm \frac{\text{शेषांश} \times \text{मन्दांक अंतर}}{१५} \right] \div १० \text{ अंशादि}$$

मन्दफल + यदि मन्दकेन्द्र मेषादि हो तथा – यदि मन्दकेन्द्र तुलादि हो ।

इस मन्दफल को अहर्गणोत्पन्न मध्यमग्रह में धन अथवा ऋण करने पर मन्दस्पष्ट ग्रह प्राप्त होता है। तत्पश्चात मन्दफल को प्रथम शीघ्र केन्द्र में धन अथवा ऋण करें, तब द्वितीय शीघ्रकेन्द्र प्राप्त होता है। यहाँ विपरीत क्रिया करनी होती है अर्थात यदि मन्दकेन्द्र मेषादि हो तो मन्दफल ऋण और यदि तुलादि हो तो धन होगा। द्वितीय

---

[३७] ग्रहलाघव, पंचतार स्पष्टाधिकार, श्लोक ६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शीघ्रकेन्द्र यदि ६ राशि से अधिक हो तो १२ राशि में से घटायें तथा पूर्वोक्त रीति से पुनः द्वितीय शीघ्रफल ज्ञात करें। इस द्वितीय शीघ्रफल को मन्दस्पष्ट ग्रह में धन अथवा ऋण करने पर ग्रह स्पष्ट होता है। यहाँ द्वितीय शीघ्रकेन्द मेषादि हो तो धन और तुलादि हो तो ऋण होता है।[३८] आगे उदाहरण द्वारा ग्रह स्पष्ट की विधि को प्रकट किया गया है–

स्पष्टभौम साधन :-

भौम शीघ्रकेन्द्र = मध्यमरवि – मध्यम मंगल

= ११रा. : १८° : १′ : २६″ – ११रा. : २६° : ४७′ : ३०″

= ११रा. : २१° : १३′ : ५६″

शीघ्रकेन्द्र ६ राशि से अधिक होता है तो उसे १२ राशि में से घटाते हैं, यदि ६ राशि से कम होता है तो १२ में से घटाते की आवश्यकता नहीं होती है। यहाँ शीघ्रकेन्द्र ६ राशि से अधिक है तब

शोधित शीघ्रकेन्द्र = १२ राशि – भौम शीघ्रकेन्द्र

= १२ राशि – ११रा. : २१° : १३′ : ५६″

= ० : ८° : ४६′ : ४″

शोधित केन्द्रांश ÷१५ = ८° : ४६′ : ४″ ÷ १५ = लब्धि ०, शेष ८° : ४६′ : ४″

लब्धि ० का प्रथम शीघ्रांक = ० तथा ० + १ = १ का एष्य शीघ्रांक = ५८

शीघ्रांतर = प्रथम शीघ्रांक ~ एष्य (अग्रिम) शीघ्रांक

= ० ~ ५८ = ५८

अग्रिम शीघ्रांक अधिक होने पर शीघ्रांतर धन (+) होगा तथा अग्रिम शीघ्रांक कम होने पर शीघ्रांतर ऋण (–) होगा।

$$\therefore \text{भौम शीघ्रफल} = \frac{\text{प्रथम शीघ्रांक} \pm [(\text{शेषांश} \times \text{शीघ्रांतर}) \div १५]}{१०} \text{ अंशकलादि}$$

$$= \frac{० + [(८° : ४६′ : ४″ \times ५८) \div १५]}{१०}$$

= ३° : २३′ : २५″ (ऋण)

शीघ्रकेन्द्र तुलादि होने से शीघ्रफल ऋण (–) होगा।

शीघ्रफलार्द्ध = ३° : २३′ : २५″ ÷ २ = –१° : ४१′ : ४२″

यह शीघ्रफलदल होता है।

---

[३८] ग्रहलाघाव, पंचतारा,श्लोक १०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

∴ फलार्द्धसंस्कृत भौम = मध्यमभौम − शीघ्रफलार्द्ध

= ११रा. : २६° : ४७′ : ३०″ − १° : ४१′ : ४२″

= ११रा. : २५° : ५′ : ४८″

भौममन्दकेन्द्र = भौम मन्दोच्च − शीघ्रफलार्द्ध संस्कृत भौम

= ४रा. : ०° : ०′ : ०″ − ११रा. : २५° : ५′ : ४८″

= ४रा. : ४° : ५४′ : १२″

अब भौम मन्द केन्द्र के भुज बनाते हैं :−

भुज = ६ राशि − भौम मन्दकेन्द्र (४रा. : ४° : ५४′ : १२″)

= १रा. : २५° : ५′ : ४८″

मन्दकेन्द्र भुजांश = ५५° : ५′ : ४८″

पुनः भुजांश (५५° : ५′ : ४८″) ÷ १५ = लब्धि ३ तथा शेष १०° : ५′ : ४८″

गतांक ३ का मन्दांक = ५८ तथा लब्धि ३ + १ = ४ का अग्रिम मन्दांक = १०६

इसलिये मन्दांक का अंतर = १०६ ~ ५८ = २४

अग्रिम मन्दांक अधिक होने से अंतर धन (+) है।

$$\text{भौम मन्दफल} = \left[\text{प्रथम मन्दांक} \pm \frac{\text{शेषांक x अंतर}}{१५}\right] \div १०$$

$$= \left[५८ + \frac{१०° : ५′ : ४८″ \times २४}{१५}\right] \div १०$$

= (५८ + १६° : ६′ : १७″) ÷ १०

= १०° : ६′ : ५६″ मन्दकेन्द्र मेषादि होने से धन (+) होगा।

∴ मन्दस्पष्ट भौम = मध्यम भौम + मन्दफल

= ११ रा. : २६° : ४७′ : ३०″ + ०रा. : १६° : ६′ : १७″

= ०रा. : ६° : ५२′ : २६″ यह मन्द स्पष्ट मंगल हुआ।

भौम द्वितीय शीघ्रकेन्द्र = प्रथम शीघ्रकेन्द्र ± मन्दफल

यहाँ मन्दफल का विपरीत संस्कार होगा अर्थात मन्दकेन्द्र मेषादि होने पर ऋण (−) तथा तुलादि होने पर धन (+) होगा।

= ११रा. : २१° : १३′ : ५६″ − ०रा. : १०° : ६′ : ५६″

= ११रा. : ११° : ७′ : ०″ यह द्वितीय शीघ्रकेन्द्र हुआ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

६ राशि से अधिक होने पर द्वितीय शीघ्रकेन्द्र को १२ राशि में से घटायेगें –

शोधित द्वितीयशीघ्रकेन्द्र= १२ राशि – भौम द्वितीयशीघ्रकेन्द
= १२ राशि – ११रा. : ११° : ७′ : ०″
= ०रा. : १८° : ५३′ : ०″

शोधित द्वितीय शीघ्रकेन्द्र ३ राशि से कम है अतः इसके भुजांश यही होंगे अर्थात

भुजांश = १८° : ५३′ : ०″

भुजांश (१८° : ५३′ : ०″) ÷ १५ = लब्धि, शेषांश ३° : ५३′ : ०″

लब्धि १ का प्रथम शीघ्रांक = ५८ तथा (१ + १ =) २ का अग्रिम शीघ्रांक = ११७
इसलिये शीघ्रांतर = अग्रिम शीघ्रांक (११७) ~ प्रथम शीघ्रांक (५८) = ५६(धन)

अग्रिम शीघ्रांक अधिक होने से शीघ्रांतर धन (+) होगा।

$$\therefore \text{द्वितीय शीघ्रफल} = \frac{\text{प्रथम शीघ्रांक} \pm [\,(\text{शेषांश} \times \text{शीघ्रांतर}) \div १५\,]}{१०} \text{ अंशादि}$$

$$= \frac{५८ + [\,(३० : ५३' : ०'' \times ५६) \div १५\,]}{१०}$$

= ७° : १६′ : ३६″

द्वितीयशीघ्रकेन्द्र तुलादि होने से यह शीघ्रफल ऋण (–) होगा।

∴ प्रातः स्पष्ट भौम = मन्दस्पष्ट भौम – द्वितीय शीघ्रफल
= ०रा. : ६° : ५२′ : २६″ – ०रा. : ७° : १६′ : ३६″
= ११रा. : २६° : ३२′ : ४७″

इस प्रकार ग्रहलाघवीय गणितानुसार शक १६२० चैत्र शुक्लाष्टमी शनिवार को सूर्योदय कालीन भौम स्पष्ट ११रा. : २६° : ३२′ : ४७″ आता है। श्री हृषीकेष पञ्चांगानुसार इसदिन भौम स्पष्ट ११रा. : २६° : ४०′ : ४५″ दिया है। जो कि प्राप्त भौम स्पष्ट मान से लगभग ८ कला अधिक है। इसी प्रकार हम आगे बुध, गुरू, शुक्र एवं शनि ग्रहों के स्पष्ट गणित को करेगें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्पष्ट बुध साधन :- मध्यम ग्रह साधन करते समय पूर्व में ज्ञात कर चुके हैं कि

बुधकेन्द्र = ५रा. : ६° : २०′ : ५४″ तथा

मध्यम बुध = ११रा. : १८° : १′ : २६″ = मध्यमरवि

चूँकि बुधकेन्द्र ६ राशि से कम है अतः इसे १२ राशि में से नहीं घटाते हैं तब

शोधित बुध केन्द्र = ५रा. : ६° : २०′ : ५४″ तथा केन्द्रांश =१५६° : २०′ : ५४″

केन्द्रांश (१५६° : २०′ : ५४″) ÷ १५ = लब्धि १० तथा शेषांश ६° : २०′ : ५४″

लब्धि १० का शीघ्रांक = १५५ तथा (१० + १ =) ११ का अग्रिम शीघ्रांक = ८६

∴ शीघ्रांतर = − ६६ अग्रिम शीघ्रांक कम होने से ऋण है।

$$\text{तब बुधशीघ्रफल} = \frac{\text{प्रथम शीघ्रांक} \pm [\,(\text{शेषांश} \times \text{शीघ्रांतर}) \div १५\,]}{१०}$$

$$= \frac{१५५ - [\,(\,६ : २०' : ५४'' \times ६६\,) \div १५\,]}{१०}$$

= १२° : ४२′ : २४″

शीघ्रफलार्द्ध = १२° : ४२′ : २४″ ÷ २ = ६° : २१′ : १२″

शीघ्रफलार्द्धसंस्कृत बुध= मध्यम बुध + शीघ्रफलार्द्ध

= ११रा. : १८° : १′ : २६″ + ०रा. : ६° : २१′ : १२″

= ११रा. : २४° : २२′ : ३८″ यह बुध शीघ्रदल स्पष्ट हुआ।

बुध मन्दकेन्द्र = बुध मन्दोच्च − बुध शीघ्रदल स्पष्ट

= ७रा. : ०° : ०′ : ०″ − ११रा. : २४° : २२′ : ३८″

= ७रा. : ५° : ३७′ : २२″ यह बुध मन्दकेन्द्र हुआ।

अब बुध मन्दकेन्द्र के भुज बनायेंगे तब −

भुज = ६ राशि − ७रा. : ५° : ३७′ : २२″

= १रा. : २४° : २२′ : ३८″

मन्दकेन्द्र भुजांश = ५४° : २२′ : ३८″

भुजांश (५४° : २२′ : ३८″) ÷ १५ = लब्धि ३ तथा शेष ६° : २२′ : ३८″

अब लब्धि ३ का प्रथम मन्दांक = २८ तथा (३ + १ =) ४ का एष्य मन्दांक = ३३

इसलिये मन्दान्तर = ५ एष्य मन्दांक अधिक होने से धन (+) है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बुध मन्दफल $= \left[\text{प्रथम मन्दांक} \pm \frac{\text{शेषांक} \times \text{मन्दांतर}}{१५} \right] \div १०$

$= \left[२८ + \frac{६०:२२':३८'' \times ५}{१५} \right] \div १०$

$= ३^\circ : ६' : ४५''$ मन्दकेन्द्र तुलादि होने से यह ऋण है।

मन्दस्पष्ट बुध = मध्यम बुध − मन्दफल

= ११रा. : १८° : १' : २६'' − ०रा. : ३° : ६' : ४५''

= ११रा. : १४° : ४५' : ४१''

बुध द्वितीय शीघकेन्द्र = प्रथम शीघ्रकेन्द्र + मन्दफल संस्कार

= ५रा. : ६° : २०' : ५४'' + ०रा. : ३° : ६' : ४५''

= ५रा. : २° : २७' : ३६''

द्वितीय शीघ्रकेन्द्र ६ राशि से कम है अतः इसे १२ राशि में से नही घटाते हैं।

शीघ्रकेन्द्रांश = १५६° : २७' : ३६''

शीघ्रकेन्द्रांश (१५६° : २७' : ३६'') ÷ १५ = लब्धि १० तथा शेष ६° : २७' : ३६''

१० का प्रथम शीघ्रांक = १५५ तथा (१० + १ =) ११ का एष्य शीघ्रांक = ८६

इसलिये शीघ्रांतर = − ६६ यहाँ अग्रिम शीघ्रांक कम होने से ऋण है।

∴ बुध शीघ्रफल $= \frac{\text{प्रथम शीघ्रांक} - [(\text{शेषांश} \times \text{शीघ्रांतर}) \div १५]}{१०}$

$= \frac{१५५ - [(६:२७':३६'' \times ६६) \div १५]}{१०}$

$= १०^\circ : २०' : १४''$ द्वितीय शीघ्रकेन्द्र मेषादि होने से धन है।

∴ प्रातः बुध स्पष्ट = मन्दस्पष्ट बुध + शीघ्रफल

= ११रा. : १४° : ५४' : ४१'' + ०रा. : ११° : २०' : १४''

= ११रा. : २५° : १४' : ५५''

इस प्रकार लाघव गणित करने से शक १६२० चैत्र शुक्लाष्टमी को सूर्योदय कालीन बुध स्पष्ट ११रा. : २५° : १४' : ५५'' प्राप्त होता है। श्री हृषीकेष पञ्चांग में इस दिन बुध स्पष्ट ११रा.: २६° : २४' : २६'' दिया है जो कि प्राप्त बुध स्पष्ट मान से ४°:६':३१'' अधिक है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्पष्ट गुरू साधन :-

गुरू शीघ्रकेन्द्र = मध्यमरवि − मध्यम गुरू

= ११रा. : १८° : १' : २६" − १०रा. : १६° : ३४' : ४८"

= ०रा. : २८° : २६' : ३८"

गुरू का शीघ्रकेन्द्र ६ राशि से कम होने से १२ रशि में से नही घटेगा। तब शोधित गुरू शीघ्रकेन्द= ०रा. : २८° : २६' : २८" तथा केन्द्रांश =२८° : २६' : २८"

केन्द्रांश (२८° : २६' : २८") ÷ १५ = लब्धि १ तथा शेषांश १३° : २६' : २८"

लब्धि एक का प्रथम शीघ्रांक = २५ तथा (१ + १ =) २ का अंतिम शीघ्रांक = ४७

इसलिये शीघ्रांतर = २२ अग्रिम शीघ्रांक अधिक होने से यह धनात्मक होगा।

$$\therefore \text{गुरू का शीघ्रफल} = \frac{\text{प्रथम शीघ्रांक} + [\,(\text{शेषांश} \times \text{शीघ्रांतर}) \div १५\,]}{१०} \text{ अंश कलादि}$$

$$= \frac{२५ + [\,(१३ : २६' : ३८" \times २२) \div १५\,]}{१०}$$

= (२५° + १६° : ४३' : ३.७") ÷ १०

= ४° : २८' : १८" शीघ्रकेन्द्र मेषादि होने से यह धन होगा।

गुरू शीघ्रफलार्द्ध = ४° : २८' : १८" ÷ २ = २° : १४' : ६"

शीध्रफलार्द्धसंस्कृत गुरू = मध्यम गुरू + शीघ्रफलदल

= ११रा. : १६° : ३४' : ४८" + २° : १४' : ६"

= १०रा. : २१° : ४८' : ५७"

गुरू मन्दकेन्द्र = गुरूमदोच्च − शीघ्रफलार्द्धसंस्कृत गुरू

= ६रा. : ०° : ०' : ०" − १०रा. : २१° : ४८' : ५७"

= ७रा. : ८° : ११' : ३"

अब गुरू मन्द केन्द्र के भुज बनाते हैं। तब

भुज = ६ राशि − ७रा. : ८° : ११' : ३"

= १रा.: २१° : ४८' : ५७"

भुजांश = ५१° : ४८' : ५७"

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

भुजांश (५१° : ४८′ : ५७″) ÷ १५ = लब्धि ३ तथा शेषांश ६° : ४८′ : ५७″

लब्धि ३ का प्रथम मन्दांक = ३६ तथा (३ + १ =) ४ का एष्य मन्दांक = ४८

इसलिये मन्दांक अंतर = ६ एष्य मन्दांक अधिक होने से धनात्मक होगा।

$$\therefore \text{गुरू मन्दफल} = \left[\text{प्रथम मन्दांक} + \frac{\text{शेषांक x मन्दांतर}}{१५}\right] \div १०$$

अंशादि

$$= \left[३६^\circ + \frac{६^\circ : २२' : ३८'' \times ५}{१५}\right] \div १०$$

= ४° : १८′ : ३२″ मन्दकेन्द्र तुलादि होने से ऋणात्मक होगा।

∴ मन्दस्पष्ट गुरू = मध्यम गुरू − मन्दफल

= १०रा. : १६° : ३४′ : ४८″ − ०रा. : ४° : १८′ : ३२″

= १०रा.: १५° : १६′ : १६″ यह मन्द स्पष्ट गुरू हुआ।

गुरू द्वितीय शीघ्रकेन्द्र= प्रथम शीघ्रकेन्द्र + मन्दफल (विपरीत मन्दफलसंस्कार से)

= ०रा. : २८° : २६′ : ३८″ + १०रा. : १५° : १६′ : १६″

= १रा. : २° : ४५′ : १०″ यह ६ राशि से कम है तब

केन्द्रांश = ३२° : ४५′ : १०″

केन्द्रांश (३२° : ४५′ : १०″) ÷ १५ = लब्धि २ तथा शेषांश २° : ४५′ : १०″

लब्धि २ का प्रथम शीघ्रांक = ४५ तथा (२ + १ =) ३ का एष्य शीघ्रांक = ६८

इसलिये शीघ्रांतर = २१, द्वितीय शीघ्रांक अधिक होने से यह धनात्मक होगा।

$$\therefore \text{गुरू द्वितीयशीघ्रफल} = \left[\text{प्रथम शीघ्रांक} + \frac{\text{शेषांक x शीघ्रांतर}}{१५}\right] \div १०$$

अंशकलादि

$$= \left[४७^\circ + \frac{२^\circ : ४५' : १०'' \times २१}{१५}\right] \div १०$$

= ५° : ५′ : ७″

द्वितीयशीघ्रकेन्द्र मेषादि होने से यह धनात्मक होगा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रातः स्पष्ट गुरू = मन्दस्पष्ट गुरू + द्वितीय शीघ्रफल
= १०रा. :१५° : १६' : १६'' + ० : ५° : ५' : ७''
= ११रा. : २०° : २१' : २३''

इस प्रकार लाघवगणित से शक १६२० चैत्र शुक्लाष्टमी को सूर्योदयकालीन गुरू स्पष्ट ११रा. : २०° : २१' : २३'' होता है। जबकि श्री हृषीकेष पञ्चांग में इस दिन गुरू स्पष्ट १०रा. : २१° : १०' : २२'' दिया है।

स्पष्ट शुक्र साधनः- पूर्व में ज्ञात कर चुके है कि शुक्रकेन्द्र = ७रा.: २०° : ४०' : ४८'' तथा मध्यम शुक्र = ११रा. : १८° : १' : २६'' = मध्यम रवि

चूँकि शुक्रकेन्द्र ६ राशि से अधिक है अतः इसे १२ राशि में से घटाते हैं –

शोधित शुक्र केन्द्र = १२ राशि – शुक्रकेन्द्र
= १२रा. : ०° : ०' : ०'' – ७रा. : २०° : ४०' : ४८''
= ४रा. : ६° : १६' : १२''

∴ शोधित शुक्र केन्द्र = ४रा. : ६° : १६' : १२'' तथा केन्द्रांश = १२६° : १६' : १२''

केन्द्रांश (१२६° : १६' : १२'') ÷ १५ = लब्धि ८ तथा शेषांश ६° : १६' : १२''

लब्धि ८ का प्रथम शीघ्रांक = ४४० तथा (८ + १ =) ६ का एष्य शीघ्रांक = ४६१

इसलिये शीघ्रांतर = २१, ऐष्यशीघ्रांक अधिक होने से यह धनात्मक है।

$$\therefore \text{शुक्र शीघ्रफल} = \left[\text{प्रथम शीघ्रांक} + \frac{\text{शेषांक} \times \text{शीघ्रांतर}}{१५}\right] \div १० \text{ अंशकलादि}$$

$$= \left[४४० + \frac{६^\circ : १६' : १२'' \times २१}{१५}\right] \div १०$$

= ४५०° : १८' : १७''

= १रा. : १५° : १८' : १७''

शुक्र शीघ्रकेन्द्र तुलादि होने से ऋणात्मक होगा।

शुक्र शीघ्रफलार्द्ध = १रा. : १५° : १८' : १७'' ÷ २ = २२° : ३६' : ८.५'' (ऋण)

शीघ्रफलार्द्धसंस्कृत शुक्र = मध्यम शुक्र – शीघ्रफलार्द्ध
= ११रा. : १८° : १' : २६'' – ०रा. : २२° : ३६' : ८.५''
= १०रा. : २५° : २२' : १७'' यह शुक्र शीघ्रदल स्पष्ट हुआ।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

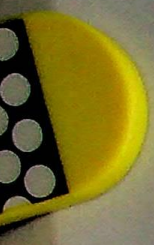

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

∴ शुक्र मन्दकेन्द्र = शुक्र मन्दोच्च − शुक्र शीघ्रदल स्पष्ट

= ३ : ०° : ०′ : ०″ − १०रा. : २५° : २२′ : १७″

= ४रा. : ४° : ३७′ : ४३″

मन्दकेन्द्र भुज = ६ राशि − शुक्र मन्दकेन्द्र (४रा. : ४° : ३७′ : ४३″)

भुज = १रा. : २५° : २२′ : १७″ तथा भुजांश = ५५° : २२′ : १७″

भुजांश (५५° : २२′ : १७″) ÷ १५ = लब्धि ३ तथा शेषांश १०° : २०′ : १७″

लब्धि ३ का प्रथम मन्दांक = १३ तथा (३ + १ =) ४ का एष्य मन्दांक = १४

इसलिये मन्दांक अंतर = १ , एष्य मन्दांक अधिक होने से यह धनात्मक होगा।

$$\therefore \text{शुक्र मन्दफल} = \left[\text{प्रथम मन्दांक} + \frac{\text{शेषांक} \times \text{मन्दांतर}}{१५}\right] \div १०$$

अंशकलादि

$$= \left[१३^{\circ} + \frac{१०^{\circ} : २०' : १०'' \times १}{१५}\right]$$

= १° : २२′ : ८″ मन्दकेन्द्र मेषादि होने से यह धन होगा।

∴ मन्दस्पष्ट शुक्र = मध्यम शुक्र + मन्दफल

= १०रा. : १८° : १′ : २६″ + ०रा. : १° : २२′ : ८″

= ११रा. : १६° : २३′ : ४०″ यह मन्दस्पष्ट शुक्र हुआ।

शुक्र द्वितीयशीघ्रकेन्द्र = प्रथम शीघ्रकेन्द्र − मन्दफल (विपरीत मन्दफल संस्कार से)

= ७रा. : २०° : ४०′ : ४८″ − ०रा : १° : २२′ : ८″

= ७रा : १६° : १८′ : ४०″

यह ६ राशि से अधिक है इसलिये इसे १२ राशि में से घटाते हैं तब

शोधित शीघ्रकेन्द्र = १२ राशि − ७रा. : १६° : १८′ : ४०″

शीघ्रकेन्द्र = ४रा. : १०° : ४१′ : २०″ तथा केन्द्रांश १३०° : ४१′ : २०″

केन्दांश(१३०° : ४१′ : २०″) ÷ १५ = लब्धि ८ तथा शेषांश १०° : ४१′ : २०″

लब्धि ८ का प्रथम शीघ्रांक = ४४० तथा (८ + १ =) ९ का अग्रिम शीघ्रांक = ६६१

इसलिये शीघ्रांतर = २१, अग्रिम शीघ्रांक अधिक होने से यह धनात्मक होगा।

$$\therefore \text{शुक्र द्वितीयशीघ्रफल} = \left[\text{प्रथम शीघ्रांक} + \frac{\text{शेषांक} \times \text{शीघ्रान्तर}}{१५}\right] \div १०$$

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

$$= \left[४४० + \frac{१०^{\circ} : ४१' : २०'' \times २१}{१५} \right] \div १०$$

$$= ४५^{\circ} : २६' : ४७''$$

= १रा. : १५° : २६' : ४७'' (ऋण)

द्वितीय शीघ्रकेन्द्र तुलादि होने से यह ऋणात्मक होगा।

∴ प्रातः स्पष्ट शुक्र = मन्दस्पष्ट शुक्र – द्वितीय शीघ्रफल

= ११रा. : १६° : २३' : ३४'' – १रा. : १५° : २६' : ४७''

= १०रा. : ३° : ५३' : ४७''

इस प्रकार लाघव गणित से शक १६२० चैत्रशुक्लाष्टमी को सूर्योदय कालीन शुक्रस्पष्ट १०रा. : ३° : ५३' : ४७'' आता है। जबकि इसदिन श्री हृषीकेष पञ्चांग में शुक्र स्पष्ट १०रा. : ३° : ५२' : ३०'' दिया है।

स्पष्ट शनि साधन :-

शनि शीघ्रकेन्द्र = मध्यम रवि – मध्यम शनि

= १०रा : १८° : १' : २६'' – ०रा. : ३° : ५५' : १२''

= ११रा. : १४° : ६' : १४''

शीघ्रकेन्द्र ६ राशि से अधिक होने से इसे १२ राशि में से घटाते हैं तब

शोधित शीघ्रकेन्द्र = १२ राशि – ११रा. : १४° : ६' : १४''

शीघ्रकेन्द्र = ०रा. : १५° : ५३' : ४६'' तथा केन्द्रांश =१५° : ५३' : ४६''

केन्द्रांश (१५° : ५३' : ४६'') ÷ १५ = लब्धि १ तथा शेषांश ०° : ५३' : ४६''

लब्धि १ का प्रथम शीघ्रांक = १५ तथा (१ + १ =) २ का एष्य शीघ्रांक = २८

इसलिये शीघ्रांतर = १३ अग्रिम शीघ्रांक अधिक होने से ये धनात्मक होगा।

$$\therefore \text{शनि शीघ्रफल} = \left[\text{प्रथम शीघ्रांक} + \frac{\text{शेषांक} \times \text{शीघ्रान्तर}}{१५} \right] \div १०$$

अंशकलादि

$$= \left[१५ + \frac{०^{\circ} : ५३' : ४६'' \times १३}{१५} \right] \div १०$$

= १° : ४३' : ४०'' शीघ्रकेन्द्र तुलादि होने से यह ऋण है।

शनि शीघ्रफलार्द्ध = १° : ४३' : ४०'' ÷ २ = ०° : ४७' : २०'' (ऋण)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शीघ्रफलार्द्धसंस्कृत शनि= मध्यम शनि – शीघ्रफलार्द्ध

= ०रा. : ३° : ५५′ : १२″ – ०रा. : ०° : ४७′ : २०″

= ०रा. : ३° : ७′ : ५२″

शनि मन्दकेन्द्र = शनि मन्दोच्च – शीघ्रफलार्द्ध संस्कृत शनि

= ८ राशि – ०रा. : ३° : ७′ : ५२″

= ७रा. : २६° : ५२′ : ८″

मन्दकेन्द्र के भुज बनाते हैं। तब

भुज = ६ राशि – शनि मन्दकेन्द्र (७रा. : २६° : ५२′ : ८″)

भुज = १रा. : ३° : ७′ : ५२″ तथा भुजांश = ३३° : ७′ : ५२″

भुजांश ÷ १५ = ३३° : ७′ : ५२″ ÷ १५ = लब्धि २, शेषांश ३° : ७′ : ५२″

लब्धि २ का प्रथम मन्दांक = ४० तथा (२ + १ =) ३ का ऐष्य मन्दांक = ६०

इसलिये मन्दांक अंतर = २० ऐष्य मन्दांक अधिक होने से धनात्मक है।

$$\therefore \text{शनिमन्दफल} = \left[\text{प्रथम मन्दांक} + \frac{\text{शेषांक} \times \text{मन्दान्तर}}{१५}\right] \div १०$$

अंशकलादि

$$\text{मन्दफल} = \left[४० + \frac{३^{\circ} : ७' : ५२'' \times २०}{१५}\right] \div १०$$

= ४° : २५′ : ३०″ (ऋण) क्योंकि मन्दकेन्द्र तुलादि है।

∴ मन्दस्पष्ट शनि = मध्यम शनि – मन्दफल

= ०रा. : १३° : ५५′ : १२″ – ० रा. : ४° : २५′ : ३″

= ११र. : २° : २०′ : ६″

शनि द्वितीय शीघ्रकेन्द्र= प्रथम शीघ्रकेन्द्र + मन्दफल

= ११रा. : १४° : ६′ : १४″ + ०रा. : ४° : २५′ : ३″

= ११रा. : १८° : ३१′ : १७″

चूँकि यह ६ राशि से अधिक है अतः इसे १२ राशि में से घटायेंगे तब

शोधित द्वितीयशीघ्रकेन्द्र= ११ राशि – शीघ्रकेन्द्र (११रा. : १८° : ३१′ : १७″)

= ०रा. : ११° : २८′ : ४३″ तथा केन्द्रांश = ११° : २८′ : ४३″

केन्द्रांश (११° : २८′ : ४३″) ÷ १५ = लब्धि ० तथा शेषांश ११° : २८′ : ४३″

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अब लब्धि ० का प्रथम शीघ्रांक = ० तथा (० + १ =) १ का ऐष्य शीघ्रांक = १५
इसलिये शीघ्रांक अंतर = १५ अग्रिम शीघ्रांक अधिक होने से धनात्मक है।

$$\therefore \text{द्वितीय शीघ्रफल} = \left[\text{प्रथम शीघ्रांक} + \frac{\text{शेषांक} \times \text{शीघ्रान्तर}}{१५}\right] \div १०$$

अंशकलादि

$$= \left[० + \frac{११^{\circ} : २८' : ४३'' \times १५}{१५}\right] \div १०$$

$$= ०\text{रा.} : १०^{\circ} : ८' : ५२''$$

द्वितीय शीघ्रकेन्द्र तुलादि होने से यह ऋणात्मक होगा।

$$\therefore \text{प्रातः स्पष्ट शनि} = \text{मन्द स्पष्ट शनि} - \text{द्वितीय शीघ्रफल}$$

$$= ११\text{रा.} : २६^{\circ} : २०' : ६'' - ०\text{रा.} : १०^{\circ} : ८' : ५२''$$

$$= ११\text{रा.} : २८^{\circ} : ११' : १७''$$

इस प्रकार लाघव गणित से शक १६२० चैत्रशुक्लाष्टमी सूर्योदय कालीन शनि स्पष्ट ११रा. : २८° : ११' : १७'' प्राप्त होता है। जबकि इस दिन श्री हृषीकेष पञ्चांग में शनि के भोग्यांश ११रा. : २५° : ४३' : २'' दिये हैं।

४. **पंचतार गति साधन** :– भौमादि पाँचों ग्रहों की स्पष्ट गति ज्ञात करने के लिये पहले इनकी मन्द स्पष्ट गति ज्ञात करते हैं, जो कि मन्दफल साधन करते समय प्राप्त मन्दांक अंतर में इष्टग्रह के भाजक (मंगल का ५, बुध का ५/२, गुरू का ३०, शुक्र का ५/२ एवं शनि का ७५) का भाग देने पर मन्दगतिफल प्राप्त होता है। इष्टग्रह का मन्दकेन्द्र कक्रादि होने पर मन्दगतिफल धनात्मक (+) एवं मकरादि होने पर मन्दगतिफल ऋणात्मक (–) होता है। ग्रह की मध्यम गति में मन्दगतिफल संस्कार करने पर मन्दस्पष्ट गति प्राप्त होती है।[३९] मन्द स्पष्ट गति में इसी प्रकार शीघ्रगतिफल संस्कार करने पर ग्रह की स्पष्ट गति प्राप्त होती है।[४०] अब हम पंचतार गतिसाधन की ग्रहलाघवीय रीति को उदाहरण द्वारा स्पष्ट करते हैं।

---

[३९] मन्दांकान्तरमार्क्यसृग्गुरूणां भक्तं बाणनगैः शरैः खरामैः।
[४०] विदभृग्वोर्द्विहतेषु भाजितं तद्दद्यात्प्राग्वदितौ मृदुस्फुटा सा।। ग्रहलाघव,पंचतारास्पष्टा.श्लोक ११
ग्रहलाघव, पंचतारास्पष्टाधिकार , श्लोक १२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मंगलगति साधन :- पूर्वोक्त उदाहरण से ज्ञात है कि
भौम मन्दकेन्द्र = ४रा. : ४° : ५४′ : १२″ कक्रादि होने से धनात्मक है।

मन्दफल साधन करते समय जो मन्दांक निकाल कर उनका अंतर निकाला था वह मन्दांक अंतर = २४ (धनात्मक) प्राप्त होता है। इस मन्दांक अंतर में मंगल के भाजक ५ (स्थिर) का भाग देते हैं, तब –

$$\text{मन्दगतिफल} = \frac{\text{मन्दांक अंतर}}{\text{ग्रहभाजक}} = \frac{२४}{५} = ४′ : ४८″ \text{ (धन)}$$

मन्दस्पष्ट गति = भौम मध्यम गति ± मन्दगति फल
= ३१′ : २६″ + ४′ : ४८″ (मन्दकेन्द्र कर्कादि होने से धन)
= ३६′ : १४″

भौम द्वितीय शीघ्रकेन्द्र साधन करते समय प्राप्त शीघ्रांतर = ५६ (धन) है तब

$$\text{शीघ्रगतिफल} = \frac{\text{शीघ्रान्तर}}{\text{भौम भाजक}} = \frac{५६}{५} = ११′ : ४८″ \text{ (धन)}$$

∴ भौम स्पष्टगति = मन्द स्पष्ट गति + शीघ्रगति फल
= ३६′ : १४″ + ११′ : ४८″ = ४८ कला २ विकला

अतः लाघव रीति से शक १६२० चैत्रशुक्लाष्टमी को मंगल की स्पष्ट गति ४८ कला २ विकला प्राप्त होती है। जबकि श्री हृषीकेष पञ्चांगानुसार मंगल की स्पष्ट गति ४५ कला ५४ विकला है।

बुधगति साधन:- पूर्वोक्त उदाहरण से ज्ञात है कि
बुध मन्द्रकेन्द्र = ७रा. : ५° : २७′ : २२″ (मकरादि होने से ऋणात्मक है)

मन्दफल साधन करते समय प्राप्त मन्दांक अंतर = + ५ तथा बुध का भाजक = ~~५~~ २

$$\text{मन्दगतिफल} = \frac{\text{मन्दांतर}}{\text{बुध भाजक}} = \frac{५}{\frac{५}{२}} = ५ \times \frac{२}{५} = २ \text{ कला}$$

मन्दस्पष्ट गति = बुध मध्यमगति – मन्दगति फल
(मन्दकेन्द्र मकरादि होने से गतिफल ऋणात्मक है)

द्वितीय शीघ्रकेन्द्र निकालते समय प्राप्त शीघ्रान्तर = – ६६

तथा बुध का भाजक अंक = $\frac{५}{६}$

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शीघ्रगतिफल = $\frac{\text{शीघ्रान्तर}}{\text{बुध भाजक}} = \frac{-६६}{\frac{५}{६}} = \frac{६६ \times ६}{५} = -\ ७६' : १२''$

बुध स्पष्टगति = मन्दस्पष्ट गति − शीघ्रगति फल

= ५७' : ८'' − ७६' : १२'' = − २०' : ४'' (वक्रीगति)

ऋणात्मक गति अर्थात वक्र गति हुई । इस प्रकार लाघव गणित से शक १६२० चैत्र शुक्लाष्टमी को बुध की स्पष्ट (वक्र) गति २० कला ४ विकला हुई। काशी के श्री हृषीकेष पञ्चांग में इस दिन की बुध की वक्र स्पष्ट गति २२ कला २४ विकला दी है।

गुरू स्पष्ट गति :- पूर्वोक्त उदाहरण द्वारा ज्ञात है कि

गुरूमन्द केन्द्र = ७रा. : ८° : ११' : ३'' (मकरादि होने से ऋण है)

मन्दफल साधन करते समय प्राप्त हुआ मन्दांक अंतर = ६ (ऋण)

तथा गुरू का भाजक अंक = ३०

मन्दगतिफल = मन्दांक अंतर (६) ÷ गुरू का भाजक (३०)

= ०' : १८'' (मन्दांक अंतर ऋण होने से यह ऋणात्मक है)

मन्दस्पष्ट गति = गुरूमध्यम गति − मन्दगतिफ़ल

(गुरूमन्द केन्द्र मकरादि होने से गतिफल ऋणात्मक है)

= ५' : ० : ०' : १८'' = ४' : ४२''

द्वितीय शीघ्रफल ज्ञात करते समय प्राप्त हुआ गुरू का शीघ्रान्तर = + २१

तथा गुरू का भाजक अंक = ३

तब शीघ्रगतिफल = शीघ्रान्तर ÷ गुरूभाजक = २१ ÷ ३ = ७ कला (धन)

∴ गुरू स्पस्ट गति = मन्दस्पष्ट गति + शीघ्रगतिफल

= ४' : ४२'' + ७' : ०'' = ११' : ४२''

इस प्रकार लाघव गणित से शक १६२० चैत्रशुक्लाष्टमी को गुरू की स्पष्ट गति ११ कला ४२ विकला प्राप्त होती है। जबकि श्री हृषीकेष पञ्चांग में इस दिन गुरू की स्पष्ट गति १३कला ११ विकला दी है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शुक्रगति साधन :- पूर्वोक्त उदाहरण से ज्ञात है कि

शुक्र मन्दकेन्द्र = ४रा. : ४° : ३७′ : ४३″ (कर्कादि होने से केन्द्र धनात्मक है)

शुक्रमन्दफल साधन करते समय प्राप्त मन्दांक अंतर = १ (धन)

तथा शुक्र का भाजक अंक = ५/२

तब मन्दगतिफल = मन्दांतर (१) ÷ शुक्र भाजक (५/२)

= २/५ कला = २४ विकला (धन)

∴ मन्दस्पष्ट गति = शुक्र मध्यमगति + मन्दगतिफल (केन्द्र कर्कादि होने से +)

= ५६′ : ८″ + ०′ : २४″ = ५६′ : ३२″

द्वितीय शीघ्रफल ज्ञात करते समय प्राप्त शीघ्रान्तर = २१ (धन)

तथा शुक्र का भाजक अंक = ४

तब शीघ्रगतिफल = शीघ्रान्तर ÷ शुक्रभाजक = २१ ÷ ४ = ५′ : १५″ (धन)

∴ शुक्र स्पष्ट गति = मन्द स्पष्ट गति + शीघ्रगतिफल

= ५६′ : ३२″ + ५′ : १५″ = ६४ कला ४७ विकला

इस प्रकार लाघव रीति से शक १६२० चैत्रशुक्लाष्टमी को शुक्र की स्पष्ट गति ६४ कला ४७ विकला प्राप्त होती है, जबकि श्री हृषीकेष पञ्चांग में शुक्र क स्पष्ट गति ६४ कला ४० विकला दी है।

शनिगति साधन :- पूर्वोक्त उदाहरण से ज्ञात है कि

शनि मन्द केन्द्र = ७रा. : २६° : ५२′ : ८″ (तुलादि होने से ऋणात्मक है)

शनिमन्द साधन करते समय प्राप्त मन्दांतर = + २०

तथा शनि का भाजक अंक = ७५

तब मन्दगतिफल = मन्दांतर ÷ शनिभाजक = २० ÷ ७५ = १६ विकला (ऋण)

∴ मन्दस्पष्ट गति = शनि मध्यमगति − मन्दगतिफल (केन्द्र मकरादि होने से −)

= २′ : ०″ − ०′ : १६″ = १′ : ४४″

पुनः शनि द्वितीय शीघ्रफल साधन करते समय प्राप्त शीघ्रतर = + १५

तथा शनि का भाजक अंक = ५/२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शनि शीघ्रगतिफल = शीघ्रान्तर ÷ शनिभाजक = १५ ÷ (५/२) = ६ कला(धन)

∴शनि स्पष्ट गति = शनि स्पष्ट गति + शीघ्रगतिफल

= १' : ४४'' + ६' : ०'' = ७ कला ४४ विकला

इस प्रकार लाघव गणित से शक १६२० चैत्रशुक्लाष्टमी को शनि की स्पष्ट गति ७ कला ४४ विकला प्राप्त होती है, जबकि श्री हृषीकेष पञ्चांग में इस दिन की शनि की स्पष्ट गति ८ कला ११ विकला दी है।

पञ्चांग समीक्षा :- यहाँ हम शासकीय जीवाजी वेधशाला उज्जैन के आधार पर निर्मित दृकपञ्चांग (Astronomical Ephemeries) में दिये सायन स्पष्ट ग्रहों तथा लहरी इण्डियन एफेमेरीज में दर्शाये निरयन स्पष्ट ग्रहों की स्थिति का तुलात्मक अध्ययन करते हैं। लहरी एफेमेरीज में प्रतिदिन के निरयन स्पष्ट ग्रहों को दर्शाया है तथा प्रतिमाह (अंग्रेजी माह) की १ तारीख का अयनांश दिया है। निम्न लिखित सारणी में शक १६२१ पौष कृष्ण अमावस्या गुरूवार (६ जनवरी सन् २००० ई.) को लहरी एफेमेरीज में दिये निरयन स्पष्ट ग्रहों में अयनांश २३° : ५१' : १२'' जोड़कर सायन स्पष्ट ग्रह बनाकर लिखा गया है, जबकि जीवाजी वेधशाला उज्जैन एफेमेरीज में उल्लेखित सायन स्पष्ट ग्रहों को लिखा गया है –

सारणी क्रमांक–१३

ग्रह	जीवाजी वेधशाला उज्जैन एफेमेरीज के अनुसार दोपहर १२:०० बजे के सायन स्पष्ट ग्रह			अयनांश २३° : ५१' : १२'' जोडकर लहरी एफेमेरीज से								
				प्रातः ५:३० बजे के सायन स्पष्ट ग्रह			६½ घंटा का धन चालन			दोपहर १२:०० बजे के सायन स्पष्ट ग्रह		
	रा.	अं.	क. वि.	गति	रा.	अं.	क. वि.	गति	अं.	क. वि.	रा.	अं.	क. वि.
सूर्य	६	१५	१३ ५६	६१'१०''	६	१४	५७ २३	६१'१०''	०	१६ ४०	६	१५	१३ ५३
चन्द्र	६	६	५६ ०	७१४'०''	६	६	४२ ४१	७१३'३''	३	१३ ७	६	६	५५ ४८
मंगल	११	१	४० ०	४६'०''	११	१	२७ ०	४७'०''	०	१३ ०	११	१	४६ ०
बुध	६	६	२५ ०	६५'०''	६	८	५७ ०	६५'०''	०	२६ ०	६	६	२३ ०
गुरू	०	२५	२६ ०	३'०''	०	२५	२८ ०	४'०''	०	१ ०	०	२५	२६ ०
शुक्र	८	७	२१ ०	७३'०''	८	७	१ ०	७३'०''	०	२० ०	८	७	२१ ०
शनि	१	१०	१६ ०	१'०''	१	१०	१६ ०	१'०''	०	० १६	१	१०	१६ ०
राहु	४	४	४४ ०	३'११''	४	४	४८ ०	३'११''	०	३ ०	४	४	४५ ०

इस तालिका का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि लहरी इण्डियन एफेमेरीज तथा उज्जैन एफेमेरीज में दर्शाये सायन स्पष्ट ग्रहों के भोग्यांश एक समान (बराबर)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

हैं। दोनों ही एफेमेरीज वेधशालाओं के आधार पर बनी हैं। अंतर सिर्फ इतना है कि उज्जैन एफेमेरीज में दोपहर १२:०० बजे के सायन दैनिक स्पष्ट ग्रहों को दर्शाया है, जबकि लहरी एफेमेरीज में प्रातः ५:३० बजे के निरयन दैनिक स्पष्ट ग्रहों को दर्शाया है। उत्तरभारत के अधिकांश पञ्चांगों में प्रातः ५:३० बजे अथवा सूर्योदय कालीन दैनिक निरयन स्पष्ट ग्रहों को लिखा जाता है। इन पञ्चांगों में अयनांश को लेकर मतान्तर है। इनमें लहरी, केतकी एवं वेंकटेंश अयनांश के अतिरिक्त वेधोपलब्ध सायन स्पष्ट सूर्य एवं सैद्धान्तिक गणित आगत निरयन स्पष्ट सूर्य के अंशादि अन्तर के तुल्य अयनांश प्रयुक्त होता है। निरयन स्पष्ट ग्रहों में अयनांश जोड़ने पर वे सायन बन जाते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि उत्तरभारत के जिन पञ्चांगों में दर्शाये ग्रहों के भोग्यांश जीवाजी वेधशाला उज्जैन की एफेमेरीज से अथवा लहरी एफेमेरीज से मिलते हैं, उनका ग्रह गणित वेधसिद्ध दृक्तुल्य सूक्ष्मगणित होना चाहिये। इसके विपरीत जिन पञ्चांगों में दर्शाये स्पष्ट ग्रहों के भोग्यांश लहरी एफेमेरीज से समानता नहीं रखते हैं। वे वेध सिद्ध दृक्तुल्य सूक्ष्म गणितानुसार निर्मित नहीं कहे जा सकते हैं।

वर्तमान में लाघव ग्रहगणितानुसार स्पष्ट ग्रहों तथा वेधसिद्ध स्पष्टग्रहों में कितना अंतर है इसे निम्नलिखित सारणी द्वारा स्पष्ट करते हैं।

सारणी क्रमांक–१४

ग्रह	शक १६२१ पौष कृष्ण अमावस्या गुरूवार (६ जनवरी २००० ई.)									
	श्री हृषीकेष पञ्चांग से स्पष्टग्रह					लहरी इण्डियन एफेमेरीज से स्पष्ट ग्रह				१घंटा १५ मिनट का चालन
	रा.	अं.	क.	वि	गति	रा.	अं.	क.	वि.	गति
सूर्य	८	२०	५४	२	६१'२५"	८	२१	६	११	६१'१०"	३'११"
चन्द्र	८	१३	२६	३	७२४'३१'	८	१२	५१	२६	७१३'३"	३७'८"
मंगल	१०	८	५०	४१	४४'३७"	१०	७	३६	०	४६'०"	२'२३"
बुध	८	१४	२६	३६	१०६'३०"	८	१५	६	०	६५'०"	४'५७"
गुरू	०	३	६	२२	३'१२"	०	१	३७	०	२'०"	०'६"
शुक्र	७	१३	३३	७	७२'२७"	७	१३	१०	०	७३'०"	३'४८"
शनि	०	१५	८	४५	०'३३"	०	१६	२८	०	०'१"	०'३"' (वक्री)
राहु	३	१०	५१	२६	३'११"	३	१०	५७	०	३'११"	०'१०"

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

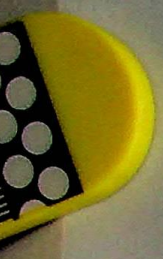

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्री हृषीकेष पञ्चांग में सूर्योदय कालीन स्पष्ट ग्रह दर्शाये है। जबकि लहरी एफेमेरीज में प्रातः ५:३० बजे के स्पष्ट ग्रह दर्शाये है। ६ जनवरी २००० ई. को काशी में सूर्योदय भारतीय मानक समय में ६:४५ बजे होता है अतः लहरी एफेमेरीज में दिये स्पष्ट ग्रहों के भोग्यांशों में १ घंटा १५ मिनट का धन चालन करने पर वे श्री हृषीकेष पञ्चांग काशी के समकालीन हो जायेंगे। लाघवगणित के अनुसार बने श्री हृषीकेष पञ्चांग तथा वेधतुल्य ग्रह स्थितियानुसार निर्मित लहरी इण्डियन एफेमेरीज कलकत्ता में दर्शाये स्पष्ट ग्रहों के भोग्यांशों में अधिक अंतर नहीं है। उपर्युक्त सारणी के आधार पर श्री हृषीकेष पञ्चांग के स्पष्ट ग्रह ६ जनवरी २००० ई. को प्रातः ६:४५ बजे (I.S.T.) लहरी एफेमेरीज से निम्नानुसार न्यूनाधिक आते हैं –

सारणी क्रमांक–१५

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि*	राहु*
न्यूनाधिक	–	+	+	–	+	+	+	+
अंश	०	०	१	०	१	०	१	०
कला	१५	०	१२	४१	३२	१६	१६	५
विकला	२०	२६	१८	२१	१६	१६	१८	४१

* राहु व शनि की वक्री गति होने से चिन्ह भी विपरीत आयेगा।

स्पष्ट है कि मंगल, गुरू एवं शनि में १ से २ अंश के बीच अंतर है श्री हृषीकेष पञ्चांग में मंगल गुरू के अंशादि अधिक तथा वक्री शनि के अंशादि कम हैं । शेष ग्रहों में १ अंश से कम का सूक्ष्मान्तर है। चन्द्रमा में मात्र २६ विकला का अंतर है।

अब हम इस तथ्य का पता लगाते हैं कि ग्रह गणित के सूक्ष्म संशोधनों के परिणाम स्वरूप श्रीयुत वैंकटेशरामकृष्ण केतकर द्वारा शक १८०० (सन् १८७८ ई.) में रचित उस समय के वेधतुल्य ग्रन्थ केतकी ज्योतिर्गणित के ग्रह वेधोपलब्ध ग्रहों से कितना मिलते हैं? नवलगढ़ के अक्षांश एवं रेखांश पर निर्मित शाताब्दी पञ्चांग का ग्रह–गणित केतकी है। अतः विक्रम संवत् २०५१ शाके १९१६ चैत्र शुक्ल द्वितीय बुधवार (१३ अप्रैल १९९४ ई.) को केतकी गणित के शताब्दी पञ्चांग तथा भारत

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सरकार के खगोलीय पञ्चांग (Astronomical ephem.) के स्पष्ट ग्रहों की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं –

सारणी क्रमांक–१६

ग्रह	केतकी गणित के शताब्दी पञ्चांग पृ. ७२३ से शाके १६१६ चैत्रशुक्ल द्वितीय बुधवार					इण्डियन एस्ट्रोनोमीकल एफेमेरीज पेज १६४४ से १३ अप्रैल १६६४ ई. घं. २७:५३ (भा.प्र.स.)					अंतर
	रा.	अं.	क.	वि	गति	रा.	अं.	क.	वि.	गति	
सूर्य	०	०	०	०	५८'४४"	११	२६	५६	२८	५८'४६"	+३'३८"
चन्द्र	१	१	२६	४०	७१४'१२"	१	१	३४	४०	७०८'२३"	–८'००"
मंगल	११	५	३३	४४	४६'४"	११	५	३४	५७	४६'४१"	–१'१३"
बुध	११	१३	२४	५८	१०६'७"	११	१३	२६	२६	१०५'२२"	–४'३१"
गुरू(व)	६	१८	१	४४	७'११"	६	१८	२	८	६'५४"	–०'२४"
शुक्र	०	२१	६	४३	७३'५६"	०	२१	८	१५	७३'३८"	+१'२८"
शनि	१०	१४	४७	२४	५'४४"	१०	१४	५२	४२	५'५३"	–५'१८"
राहु	७	१	५१	१४	३'११"	७	१	५१	५५	३'११"	–०'४१"

शताब्दी पञ्चांग के अनुसार मेष संक्रान्ति २७ घंटा ५५ मिनिट पर होती है। जबकि उपर्युक्त तालिका*में इण्डियन ऐस्ट्रोनोमिकल एफेमेरीज के घंटा २७:५३ बजे के स्पष्ट ग्रहों के भोग्यांश दिये है। उपर्युक्त तालिका के ग्रह भोगों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि केतकी गणितानुसार बने शताब्दी पञ्चांग तथा भारत सरकार के खगोलीय पञ्चांग के ग्रहों में अधिक अंतर नहीं है। केवल चन्द्रमा में सर्वाधिक अंतर ८' का है। इससे सिद्ध होता है कि शताब्दी पञ्चांग का ग्रह गणित दृक् तुल्य है।

आगे हम उत्तर भारत के विभिन्न पञ्चांगों में दर्शाये स्पष्ट ग्रहों के भोग्यांशों की तुलना वेध तुल्य ग्रहों से करके उनकी सूक्ष्मता को अवलोकन करते हैं, निम्न लिखित सारणी में शाके १६२२ वैशाख कृष्ण अमावस्या गुरूवार (४ मई सन् २००० ई.) को ब्रजभूमि पञ्चांग, विद्यापीठ पञ्चांग, आर्यभट्ट पञ्चांग, श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग, पञ्चांग दिवाकर, श्री हृषीकेष पञ्चांग, निर्णय सागर पंचाग में दिये स्पष्ट ग्रहों की तुलना लहरी इण्डियन ऐफेमरीज कलकत्ता से करते हैं –

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सारणी क्रमांक–१७

ग्रह नाम	लहरी इण्डियन ऐफे.					श्री ब्रजभूमि पंचाग					विद्यापीठ पंचाग					श्री आर्यभट्ट पञ्चांग				
	रा	अं	क	वि	गति	रा	अं	क	वि	गति	रा	अं	क	वि	गति	रा	अं	क	वि	गति
सूर्य	०	१६	५८	४१	५८'०६"	०	१६	५८	४४	५८'०६"	०	२०	२	३२	५८'१०"	०	१६	५८	४४	५८'०८"
चन्द्र	०	१७	३६	१०	८७७'१७"	०	१७	३५	४८	८७६'३५"	०	१८	६	५	८७८'२"	०	१७	३५	३५	८७७'१६"
मंगल	१	६	१७	००	४२'०'	१	६	१७	३४	४१'५१"	१	६	२२	३	४२'६"	१	६	१६	५६	४२'६"
बुध	०	१३	५८	००	१२६'०"	०	१४	२	१७	१२१'१८"	०	१४	२	३२	१२६'५"	०	१३	५८	२३	१२६'०"
गुरू	०	२३	२	००	१४'०"	०	२२	५६	४०	१५'०'	०	२३	७	०	१४'१७"	०	२३	१	३५	१४'१७"
शुक्र	०	६	४१	००	७४'०"	०	६	४१	३५	७३'५४"	०	६	४३	२०	७३'५२"	०	६	४१	३६	७३'५०"
शनि	०	२५	४२	००	८'०"	०	२५	४२	६	७'४३"	०	२५	३६	५	७'४३"	०	२५	४२	३१	७'४२"
राहु	३	४	४१	००	३'११"	३	४	३७	५२	३'११'	३	४	३७	४३	३'११"	३	४	३८	४४	३'११"

ग्रह नाम	श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग					पंचाग दिवाकर					श्री हृषीकेष पञ्चांग					निर्णयसागर पञ्चांग				
	रा	अं	क	वि	गति	रा	अं	क	वि	गति	रा	अं	क	वि	गति	रा	अं	क	वि	गति
सूर्य	०	२०	५६	४६	५८'८"	०	१६	५८	४२	५८'६"	०	१६	५४	४४	५७'५८"	०	२०	१	७	५८'६"
चन्द्र	१	२	१२	४६	८८४'५६"	०	१७	३५	५७	८७७'३२"	०	१७	३५	८	८३०'२६"	—	—	—	—	—
मंगल	१	६	५८	५४	४८'३"	१	६	१६	४६	४२'६"	१	६	४३	६	४१'३"	१	६	१६	४६	४२'५"
बुध	०	१६	३	३१	१२७'२"	०	१३	५७	४६	१२५'४६"	०	१६	५८	२२	११८'५८"	०	१३	५६	२६	१२५'१७"
गुरू	०	२३	१५	५०	१४'१७"	०	२३	१	३४	१४'१८"	०	२३	४७	१६	१४'४२"	०	२३	८	०	१३'३८"
शुक्र	०	१०	५५	१८	७३'५०"	०	६	४१	२६	७३'५२"	०	१०	५८	०	७४'४१"	०	६	४३	२१	७४'२६"
शनि	०	२५	४६	५७	७'४३"	०	२५	४२	१५	७'४३"	०	२४	२६	२६	८'१६"	०	२५	३७	५२	७'२०"
राहु	३	४	३५	३६	३'११"	३	४	३८	३५	३'११"	३	४	३३	३	३'११"	३	४	३७	३८	३'११"

लहरी इण्डियन एफेमेरीज में भारतीय मानक समयानुसार प्रातः ५:३० बजे के निरयन स्पष्ट ग्रहों को व्यक्त किया है। इस प्रकार श्री आर्यमट्ट पञ्चांग, दिल्ली, दिवाकर पञ्चांग जालंधर एवं श्री ब्रजभूमि पञ्चांग में भी प्रातः ५:३० बजे के ग्रह स्पष्ट दर्शाये जाते हैं जबकि विद्यापीठ पञ्चांग दिल्ली में भारतीय मानक समयानुसार प्रातः ६:२१ बजे के ग्रह स्पष्ट दर्शाये है। निर्मणसागर पञ्चांग, श्री हृषीकेष पञ्चांग एवं श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग चंडीगढ़ में सूर्योदयकालीन ग्रह स्पष्ट दर्शाये है। इन पञ्चांगों के अनुसार ४ मई सन् २००० ई. को जोधपुर, काशी एवं चण्डीगढ़ में भारतीय मानक समयानुसार सूर्योदय क्रमशः ६:४ बजे, ५:२४ बजे एवं ५:४० बजे होता है। अतः स्पष्ट है कि भिन्न–भिन्न पञ्चांगों में दर्शाये स्पष्ट ग्रह एक ही समय के नहीं हैं। इन पञ्चांगों में दर्शाये स्पष्ट ग्रहों को हम चालन द्वारा प्रातः ५:३० बजे के बनाते हैं तथा इनके भोग्यांशों के अंतर को स्पष्ट करते हैं। इस प्रकार हम पाते हैं कि श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग में स्पष्ट सूर्य के भोग्यांश अन्य पञ्चांगों की अपेक्षा कुछ कला अधिक है। लहरी एफेमेरीज से ५८ कला अधिक है। जो कि सूर्य की लगभग एक दिन की गति के बराबर है। श्री आर्यभट्ट पञ्चांग एवं दिवाकर पञ्चांग में दर्शाये स्पष्ट ग्रहों के भोग्याशों में मात्र कुछ विकला का सूक्ष्मान्तर है। अतः कह सकते हैं कि इन दोनों

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पञ्चांग में दर्शाये स्पष्ट ग्रह एक दूसरे की छाया प्रति हैं। इन दोनों पञ्चांगों का स्पष्ट सूर्य लहरी एफेमेरीज से पूर्णतः मिलता है साथ ही चन्द्र, बुध, मंगल, गुरू, शुक्र एवं शनि कुछ विकलाओं के अंतर से पूर्णतः मिलते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि श्री आर्यभट्ट पञ्चांग एवं दिवाकर पञ्चांग के स्पष्ट ग्रहों के भोग्यांश वेधतुल्य है। श्री ब्रजभूमि पञ्चांग के स्पष्ट सूर्य, चन्द्र एवं मंगल कुछ विकलाओं के अंतर से लहरी एफेमेरीज से मिलते हैं जबकि अन्य ग्रह कुछ कलाओं के अंतर से मिलते हैं। श्री हृषीकेष पञ्चांग के स्पष्ट ग्रहों में शुक्र एवं शनि को छोड़कर शेष ग्रह कुछ कलाओं के अंतर से लहरी एफेमेरीज के स्पष्ट ग्रहों से मिलते हैं। जबकि शुक्र एवं शनि में १ अंश से अधिक का अंतर है। निर्णय सागर पञ्चांग में दर्शाये स्पष्ट ग्रहों के भोग्यांश १ अंश से कम अंतर से लहरी एफेमेरीज में दिये स्पष्ट ग्रहों के भोग्यांश के बराबर है। मार्त्तण्ड पञ्चांग चंडीगढ़ में प्रातः ५:३० बजे के स्पष्ट ग्रह दर्शाये है। इस पञ्चांग में चन्द्रमा को बृष राशि में दिखाया है, जबकि अन्य सभी पञ्चांगों में चन्द्रमा को मेष राशि में ही रहता है। मार्त्तण्ड पञ्चांग द्वारा व्यक्त स्पष्ट सूर्य, बुध एवं शुक्र के भोग्यांश लहरी एफेमेरीज द्वारा व्यक्त स्पष्ट सूर्य, बुध एवं शुक्र के भोग्यांश से १ अंश से भी अधिक अंतर दर्शाते हैं। इस पञ्चांग में बुध स्पष्ट का मान अपेक्षाकृत २ अंश ५ कला ३१ विकला अधिक है। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग चडीगढ़ में दर्शाये स्पष्ट ग्रह वेध तुल्य नहीं है अर्थात् इस पञ्चांग का ग्रह गणित शुद्ध नहीं है। अतः श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग को शुद्ध पञ्चांग नहीं कहा जा सकता है।

इस प्रकार हम उत्तरभारत से निकलने वाले अन्य पञ्चांगों में स्पष्ट ग्रहों के भोग्यांश की स्थिति को देखकर उनकी शुद्धता एवं अशुद्धता का पता लगा सकते हैं। केतकी ग्रह गणित के आधार पर निर्मित पंचवर्षीय श्री सरस्वती पञ्चांग, शताब्दी पञ्चांग, श्री वल्लभमनीराम पञ्चांग, श्री मातृभूमि पञ्चांग तथा अन्य ग्रह गणित ग्रन्थों एवं वेधोपलब्ध स्पष्ट ग्रहों के भोग्यांशों के आधार पर निर्मित पञ्चांगों जैसे– श्री आर्यभट्ट पञ्चांग, श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग, वाणीभूषण पञ्चांग, विद्यापीठ पञ्चांग, दिवाकर पञ्चांग, निर्णयसागर पञ्चांग, विश्वविजय पञ्चांग, श्री ब्रजभूमि पञ्चांग इत्यादि के स्पष्ट ग्रहों के भोग्यांशों का अवलोकन करने पर हम पाते हैं कि इन पञ्चांगों के स्पष्ट ग्रहों के भोग्यांशों में परस्पर सूक्ष्मांतर है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५. **पंचताराओं की वक्र मार्ग गति** :- सभी ग्रह – बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, गुरू, शनि, यूरेनस, नेपच्यून एवं प्लूटो सूर्य के चारों ओर अपने–अपने भ्रमणवृत्तों में पश्चिम से पूर्व की ओर लगभग क्रान्तिवृत्त के धरातल में ही घूमते हैं। भारतीय ज्योतिष में सूर्य को भी एक ग्रह माना है, जबकि पृथ्वी को ग्रह नहीं माना है। जो आकाशचारी पिण्ड किसी ग्रह के चारों ओर घूमते हैं, उसे उस ग्रह का उपग्रह (Satellite) कहा जाता है। चन्द्रमा पृथ्वी के चारों ओर घूमता है अतः चन्द्रमा पृथ्वी का एक उपग्रह है। भारतीय ज्योतिष में चन्द्रमा को भी एक ग्रह माना है। सूर्य, चन्द्र एवं पंचताराओं की स्वाभाविक गति स्थिर नक्षत्रों के बीच सदा पश्चिम से पूर्व की ओर है। उनकी इस गति को **सीधी** गति (Direct Motion) कहते हैं। सूर्य और चन्द्र तो सदा इसी गति से चलते हैं, किन्तु भौमादि ग्रहों की गति में हम (भू–वासियों) को व्यतीक्रम दृष्टिगत होता है। जब ग्रह क्रान्तिवृत में सीधी गति से चलते–चलते अकस्मात् स्थिर हो जाता है और उल्टे (पूर्व से पश्चिम की ओर) चलते प्रतीत होता है, तब उसे **वक्री** (Retrogad) ग्रह कहा जाता है। मार्गीग्रह के भोग्यांश उत्तरोत्तर बढ़ते जाते हैं, जबकि वक्री ग्रह के राश्यादि उत्तरोत्तर घटते जाते हैं।

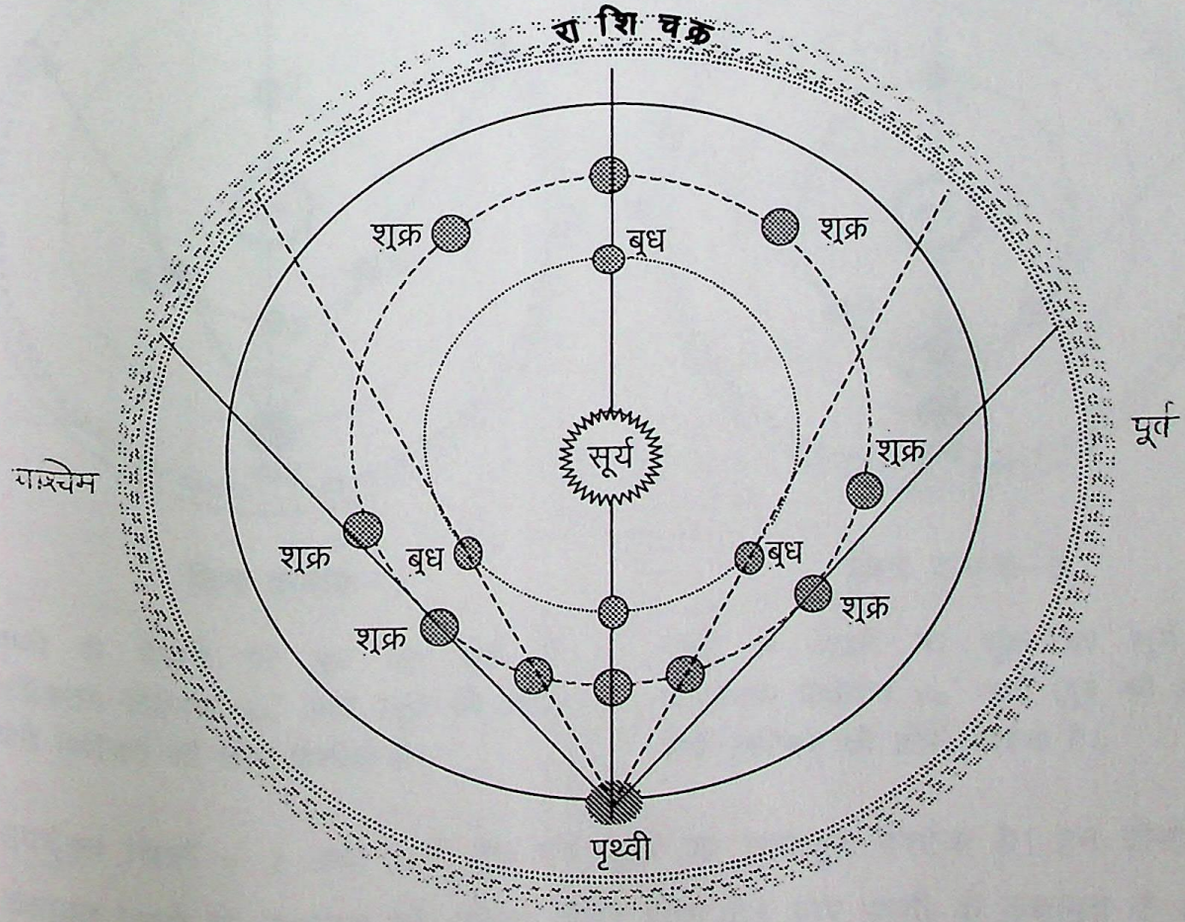

चित्र क्रमांक–१
पृथ्वी से देखने पर राशि चक्र में बुध एवं शुक्र की स्थिति

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

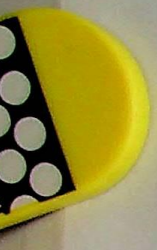

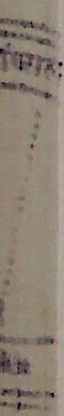

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वास्तविकता तो यह है कि कोई भी ग्रह अपनी कक्षा में कभी भी व्यतीक्रम में (पूर्व से पश्चिम की ओर) नहीं चलता है। लेकिन पृथ्वी की गति व स्थिति के सापेक्ष वह ग्रह हम(भू–वासियों) को कुछ काल के लिये पूर्व से पश्चिम की ओर (उल्टा) चलता प्रतीत होता है। यह बात चित्रों के द्वारा सरलतापूर्वक दर्शायी जा सकती है। उपर्युक्त चित्र क्रमाक–१ में आंतरिक ग्रहों– बुध एवं शुक्र का भ्रमण मार्ग दिखाया है। बुध एवं शुक्र ग्रहों की दैनिक मध्यम गति क्रमशः २४५′ ५२″ एवं ६६′ ८″ होती है। जबकि पृथ्वी (सूर्य) की दैनिक मध्यम गति लगभग १ अंश है।[४१] अतः अपनी–अपनी कक्षाओं में घूमते हुये आंतरिक ग्रह अपनी तीव्र गति के कारण पृथ्वी को पीछे छोड़ जाते हैं और कुछ दिनों बाद अपेक्षाकृत कम गति से चलने वाली पृथ्वी के पास पुनः आ जाते हैं। फिर अपेक्षाकृत अपनी तीव्रगति के कारण पृथ्वी से आगे निकलते हुये पृथ्वी को पुनः पीछे छोड़ जाते हैं। पृथ्वी और आंतरिक ग्रहों के बीच गति का यह चक्र निरंतर चलता रहता है।

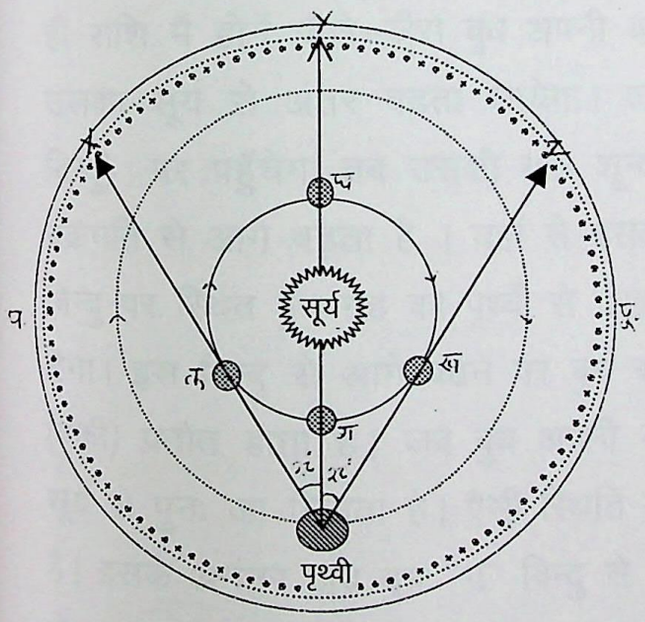

चित्र क्रमांक–२

पृथ्वी से देखने पर बुध का सूर्य से अधिकतम विक्षेपण २८° आगे (पूर्व की ओर) पीछे (पश्चिम की ओर) दर्शाया है।

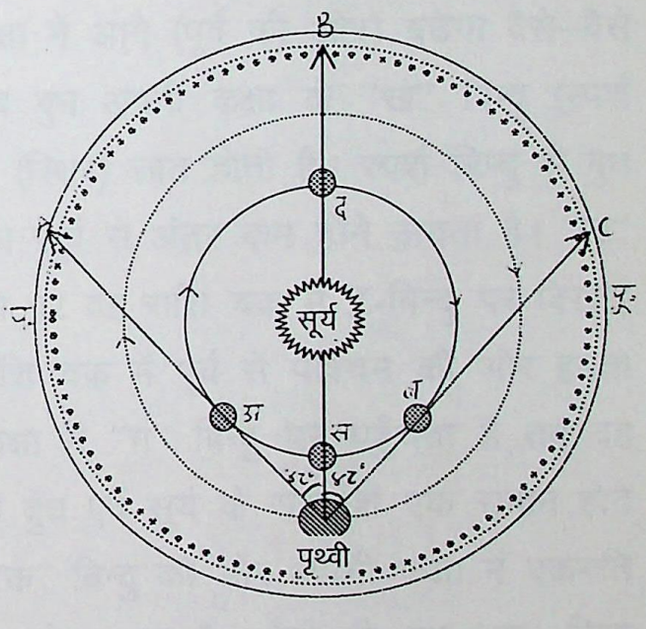

चित्र क्रमांक–३

पृथ्वी से देखने पर शुक्र का सूर्य से अधिकतम विक्षेपण ४८° आगे (पूर्व की ओर) पीछे (पश्चिम की ओर) दर्शाया है।

उपर्युक्त चित्रों – २ तथा ३ में बुध एवं शुक्र का कक्षावृत दर्शाया है। इन दोनों का कक्षावृत पृथ्वी के कक्षावृत की अपेक्षा छोटा होता है। और पृथ्वी के कक्षावृत के अंदर

---

[४१] मकरन्द प्रकाश, स्पष्टाधिकार, श्लोक १६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

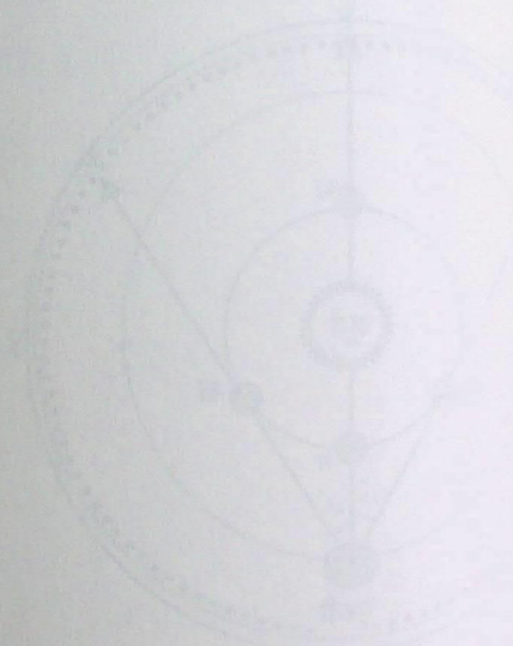

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्थित होता है। पृथ्वी के कक्षावृत से इनके कक्षावृतों का अन्तर कुछ इस प्रकार से है कि पृथ्वी से देखने पर बुध ओर शुक्र दोनों ग्रह राशि चक्र में सूर्य से आगे या पीछे (पूर्व या पश्चिम में) क्रमशः २८° या ४८° से अधिक दूर स्थित दृष्टिगत नहीं होते हैं। अर्थात बुध सूर्य से अधिकतम १ राशि आगे या पीछे तथा शुक्र सूर्य से अधिकतम २ राशि आगे – पीछे जा सकता है।

चित्र – २ के अनुसार पृथ्वी से बुध की कक्षा पर दो स्पर्श रेखाऐं 'पृ–क' तथा 'पृ–ख' खींची गयी है। जब तक बुध दोनों स्पर्श रेखाओं के बाहर गति करता है, तब तक वह पृथ्वी से पश्चिम से पूर्व की ओर जाता हुआ (मार्गी) दिखाई देता है किन्तु जब बुध स्पर्श रेखाओं के भीतर – ख, ग, क विन्दुओं पर होता है, तब वह पृथ्वी की अपेक्षा तीव्रगति गामी होने के कारण पृथ्वी से देखने पर पूर्व से पश्चिम की ओर जाता हुआ (वक्री) प्रतीत होता है। चित्र क्र. २ से जब बुध ''घ'' बिन्दु पर होगा तब पृथ्वी से देखने पर सूर्य से उसका अंतर शून्य होगा अर्थात सूर्य और बुध दोनों एक ही राशि में होगें जैसे–जैसे बुध अपनी कक्षा में आगे (पूर्व की ओर) बढेगा वैसे–वैसे उसका सूर्य से अंतर बढ़ता जायेगा। जब बुध अपनी कक्षा के ''ख'' विन्दु (स्पर्श बिन्दु) पर पहुँचेगा तब उसकी गति शून्य (स्थिर) ज्ञात होती है। स्पर्श बिन्दु से बुध वक्रगति से आगे बढ़ता है । यहाँ से इसका सूर्य से अंतर कम होने लगता है। ''ख'' बिन्दु पर स्थित बुध ग्रह को पृथ्वी से देखने पर वह राशि चक्र में Z-बिन्दु पर दिखाई देगा। इस बिन्दु से आगे बढने पर बुध राशि चक्र में पूर्व से पश्चिम की ओर हटता (वक्री) प्रतीत होता है। जब बुध अपनी कक्षा में ''ग'' बिन्दु पर पहुँचता है तब वह सूर्य से पुनः जा मिलता है। ऐसी स्थिति में बुध एवं सूर्य के राश्यांश एक समान होते हैं। इसके अनंतर जब बुध ''ग'' बिन्दु से ''क'' बिन्दु की ओर अपनी कक्षा में वक्रगति से बढ़ता है। तब उसका सूर्य से अंतर बढ़ने लगता है। जैसे ही बुध ''क'' बिन्दु (स्पर्श बिन्दु) पर पहुँचता है, उस समय उसका सूर्य से परम अंतर २४ अंश होता है। ''क'' बिन्दु पर बुध की गति में स्थिरता दिखाई देती है। ''क'' बिन्दु पर स्थित बुध ग्रह को पृथ्वी से देखने पर वह राशि चक्र में ''X'' बिन्दु पर दृष्टिगत होता है। ''क'' बिन्दु से आगे जब बुध अपनी कक्षा में बढ़ेगा तब वह वक्री से मार्गी हो जायेगा और सूर्य से उसका अंतर निरंतर कम होता जायेगा। यहाँ से बुध रशि चक्र में पश्चिम से पूर्व की ओर हटता (मार्गी) दिखाई देगा। जब बुध अपनी कक्षा में ''घ'' बिन्दु पर पहुँचेगा, तब वह पुनः सूर्य से जा मिलता है अर्थात राशि चक्र में सूर्य एवं बुध के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राश्यांश बराबर होंगे। यहाँ स्पष्ट है कि मार्गी से वक्री होने के पूर्व (''ख'' बिन्दु पर) तथा वक्री से मार्गी होने के पूर्व (''क'' बिन्दु पर) बुध ग्रह दो बार स्थिर सा प्रतीत होता है। बुध का सूर्य से परम अंतर २८ अंश से अधिक नहीं हो सकता है।

यह स्थिति शुक्र की भी है। चित्र क्र. ३ में पृथ्वी एवं शुक्र के कक्षावृतों को दर्शाया है। शुक्र अपनी कक्षा में स्पर्श रेखाओं के बाहर होता है, तब वह मार्गी होता है तथा जब स्पर्श रेखाओं के अंदर होता है , तब वह वक्री होता है। चित्र ३ के अनुसार ''अ'' बिन्दु पर स्थित शुक्र का सूर्य से अंतर ४८ अंश है। पृथ्वी से देखने पर ''अ'' बिन्दु (स्पर्श बिन्दु) पर स्थित शुक्र राशि चक्र में ''A'' बिन्दु पर दिखाई देता है। जब शुक्र ''अ'' बिन्दु से मार्गी गति से आगे बढ़ता है, तब उसका सूर्य से अंतर कम होने लगता है तथा ''द'' बिन्दु पर पहुँचने पर शुक्र सूर्य से जा मिलता है। ''द'' बिन्दु पर सूर्य एवं शुक्र का अंतर शून्य होता है। ''द'' बिन्दु से मार्गी गति से अपनी कक्षा में आगे बढ़ता हुआ जब शुक्र ''ब'' बिन्दु पर पहुँचता है, तब उसका सूर्य से परम अंतर पुनः ४८° होता है। ''ब'' बिन्दु (स्पर्श बिन्दु) पर पहुँचते ही शुक्र की गति मार्गी से वक्री हो जाती है तथा ''ब'' बिन्दु से आगे ''अ'' बिन्दु तक शुक्र, बुध ग्रह की तरह वक्र गति से आगे बढ़ता है। ''अ'' बिन्दु (स्पर्श बिन्दु) पर शुक्र की गति स्थिर हो जाती है। इस बिन्दु से आगे शुक्र अपनी कक्षा में मार्गी गति से बढ़ता है।

इस प्रकार चित्रानुसार राशि चक्र में आंतरिक ग्रहों बुध एवं शुक्र की अपनी–अपनी कक्षाओं में वक्री एवं मार्गी गति को समझाया गया है। उपरोक्त विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि जब बुध और शुक्र दोनों ग्रह सूर्य से पीछे होते हैं तब आकाश में सूर्योदय से पूर्व पूर्वी क्षितिज से कुछ ऊपर तथा जब सूर्य से आगे ८–१० अंश की दूरी पर हों तब आकाश में सूर्यास्त के आद पश्चिमी क्षितिज पर स्पष्ट दिखाई देते हैं। बुध सूर्य के अपेक्षाकृत अधिक पास होने के कारण पूर्वी एवं पश्चिमी क्षितिज पर बहुत कम ऊँचाई पर दृश्य होता है। उसका अवलोकन सरलता से नहीं होता जबकि शुक्र ग्रह को आकाश में सरलता से देखा जाता है। नक्षत्रविदों ने इस प्रातः एवं सांय का तारा कहा जाता है।

अब हम बाह्यग्रहों (Superior Planets) की वक्रता के सिद्धान्त की विवेचना करेंगे। सभी बाह्यग्रहों की दैनिक मध्यम गति पृथ्वी की दैनिक मध्यमगति की अपेक्षा कम होती है। मंगल, गुरू एवं शनि की दैनिक मध्यम गति क्रमशः ३१ कला २६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विकला, ५ कला एवं २ कला ५ विकला होती हैं।[४२] तीव्रगामी पृथ्वी इन मन्दगति वाली

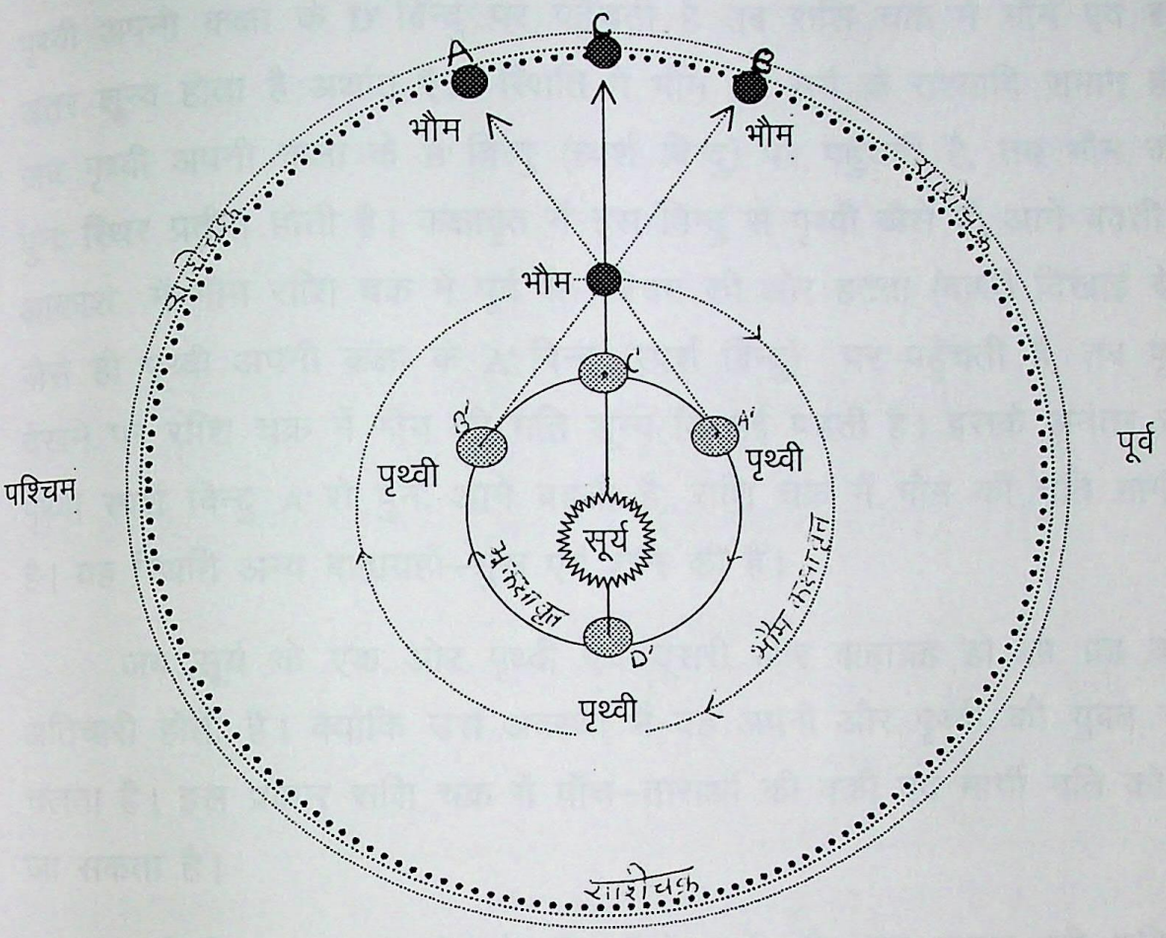

चित्र क्रमांक–४

बाह्यग्रहों को पीछे छोड़कर अपनी कक्षा में आगे बढ़ती रहती है। पृथ्वी की कक्षा बाह्यग्रहों की कक्षा के भीतर स्थिर होती है। उपर्युक्त चित्र (४) में मंगल एवं पृथ्वी के कक्षावृत को दर्शाया है। भौमकेन्द्र से पृथ्वी की कक्षा पर दो स्पर्श रेखाऐं AA' तथा BB' खींची गई हैं। जब तक पृथ्वी भौम सम्बन्धित स्पर्श रेखाओं के बाहर रहती है तब तक भौम पृथ्वी से पश्चिम से पूर्व की ओर जाता हुआ (मार्गी) दिखाई देता है परन्तु जब पृथ्वी उक्त स्पर्श रेखाओं के बाहर भ्रमण करती है, तब मंगल, पृथ्वी की अपेक्षाकृत शीघ्रगति के कारण भू–वासियों को पूर्व से पश्चिम की ओर जाता (वक्री) दिखाई देता है। पृथ्वी के स्पर्श रेखाओं के भीतर (B'C'A') रहते ही भौम भी एक वार मार्गी से वक्री होने के पूर्व तथा दूसरी वार वक्री से मार्गी होने के पूर्व दो वार स्थिर सा दिखाई देता है। चित्रानुसार जब पृथ्वी A' बिन्दु पर होती है तब भौम की स्पष्ट गति शून्य प्रतीत होती है। यहाँ से पृथ्वी अपनी कक्षा में तीव्रगति से आगे बढ़ती है।

---

[४२] मकरन्द प्रकाश, स्पष्टाधिकार, श्लोक १६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तब भौम की आकाश में गति पश्चिम से पूर्व की ओर (मार्गी) दिखाई देती है। जब पृथ्वी अपनी कक्षा के D' बिन्दु पर पहुँचती है तब राशि चक्र में भौम एवं सूर्य का अंतर शून्य होता है अर्थात ऐसी स्थिति में भौम एवं सूर्य के राश्यादि समान होते हैं। जब पृथ्वी अपनी कक्षा के B' बिन्दु (स्पर्श बिन्दु) पर पहुँचती है, तब भौम की गति पुनः स्थिर प्रतीत होती है। कक्षावृत में इस बिन्दु से पृथ्वी जैसे ही आगे बढ़ती है तब आकाश में भौम रशि चक्र में पूर्व से पश्चिम की ओर हटता (वक्री) दिखाई देता है। जैसे ही पृथ्वी अपनी कक्षा के A' बिन्दु (स्पर्श बिन्दु) पर पहुँचती है, तब पृथ्वी से देखने पर रशि चक्र में भौम की गति शून्य दिखाई पड़ती है। इसके अनंतर जैसे ही पृथ्वी स्पर्श बिन्दु A' से पुनः आगे बढ़ती है, राशि चक्र में भौम की गति मार्गी होती है। यह स्थिति अन्य बाह्यग्रहों–गुरू एवं शनि की है।

जब सूर्य के एक ओर पृथ्वी एवं दूसरी ओर बाह्यग्रह हो तो ग्रह की गति अतिचारी होती है। क्योंकि उस अवस्था में वह अपनी और पृथ्वी की युक्त चाल से चलता है। इस प्रकार राशि चक्र में पाँच–ताराओं की वक्री एवं मार्गी गति को समझा जा सकता है।

सूर्य सिद्धान्त ग्रन्थ में भौमादि पाँचों ग्रहों की आठ प्रकार की गतियों का उल्लेख हुआ है। इस ग्रन्थानुसार पंचताराओं में वक्रा, अनुवक्रा, कुटिला, मन्दा, मन्दतरा, समा, शीघ्रतरा, शीघ्रा नामक आठ प्रकार की गतियाँ होती हैं।[४३] भौमादि ग्रहों की उन आठ प्रकार की गतियों में मन्दा, मन्दतरा, समा, शीघ्रतरा एवं शीघ्रा ये पाँचों गतियाँ ऋज्वी अर्थात मार्गी होती है, और शेष तीनों गतियाँ–वक्रा, अनुवक्रा एवं कुटिला वक्रगति होती हैं।[४४] भौमादि ग्रहों की उन आठ प्रकार की गतियों में मन्दा, मन्दतरा, समा, शीघ्रतरा एवं शीघ्रा– ये पाँचों गतियाँ ऋज्वी अर्थात मार्गी होती है, और शेष तीनों गतियाँ – वक्रा, अनुवक्रा एवं कुटिला वक्रगति होती हैं। उपरोक्त आठ प्रकार की गतियों के अधीन आकाश में प्रतिदिन ग्रह जिस प्रकार दृक्तुल्यता दर्शाता है। उसी स्पष्टीकरण की प्रक्रिया को सूर्य सिद्धान्त में कहा है। [४५]

---

[४३] वक्रानुवक्रा कुटिला मन्दा मन्दतरा समा।
तथा शीघ्रतरा शीघ्रा ग्रहाणामष्टधा गतिः ।। सूर्य सिद्धान्त, स्पष्टाधिकार, श्लोक १२

[४४] तत्रातिशीघ्रा शीघ्राख्या मन्दा मन्दतरा समा।
ऋज्वीति पंचध्याक्षेया या वक्रा सानुवकगा।।सूर्य सिद्धान्त, स्पष्टाधिकार, श्लोक १३

[४५] सूर्य सिद्धान्त, स्पष्टाधिकार, श्लोक १४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूर्यसिद्धान्त के अनुसार स्पष्ट गति साधन हेतु मन्दस्पष्ट गति को शीघ्रोच्च गति से घटाने पर जो केन्द्र गतिरूप शेष रहे, उसको त्रिज्या (द्वितीय फल कोटिज्या) और दूसरे शीघ्रकर्ण के अंतर से गुणा करके दूसरे शीघ्रकर्ण का भाग दें, तब जो लब्धि आवे उसको त्रिज्या से दूसरा शीघ्रकर्ण अधिक हो तो मन्दस्पष्ट गति में जोड़ें और यदि त्रिज्या से दूसरा शीघ्रकर्ण कम हो तो घटा दें, तब स्पष्ट गति प्राप्त होती है। यदि फल में मन्दस्पष्ट गति घट जाये तब शेष वक्रगति होती है।[४६]

सूर्य सिद्धान्त इत्यादि ग्रन्थों में भौमादि पाँचों ग्रहों की वक्री एवं मार्गी गति के सम्बन्ध में स्पष्ट हुआ है कि जब इन पाँचों ग्रहों में से सिकी ग्रह के द्वितीय शीघ्र केन्द्र के अंश निम्नानुसार हों तो ग्रह वक्री और मार्गी होते हैं।[४७]

सारणी क्रमांक–१८

ग्रह नाम-	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	योग
द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांश पर वक्री	१६४°	१४४°	१३०°	१६३°	११५°	३६०°
द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांश पर मार्गी	१६६°	२१६°	२३०°	१६७°	२४५°	

सिद्धान्त शिरोमणि के अनुसार जब भौमादि पाँचों ग्रहों के शीघ्र केन्द्रांश क्रमशः १६३°, १४५°, १२५°, १६५°, ११३° होने पर वक्री होते हैं तथा अपने क्रम से १६७°, २१५°, २३५°, १६५°, २४७° शीघ्र केन्द्रांश होने पर वे वक्री से मार्गी हो जाते है।[४८] इस प्रकार हम देखते है कि सूर्य सिद्धान्त एवं सिद्धान्त शिरोमणि के मतों में सूक्ष्मान्तर है। श्री नारायण दैवज्ञ विरचित मकरन्द्र प्रकाश में मंगल, बुध एवं शनि ग्रहों के वक्री मार्गी होने के लिये द्वितीय शीघ्र केन्द्रांश सूर्य सिद्धान्तानुसार ग्रहण किये है तथा गुरू और शुक्र ग्रहों के वक्री मार्गी होने के लिये द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांश ग्रहलाघव से मिलते हैं।[४९] ग्रहलाघव में भौमादि पाँचों ग्रहों के वक्री–मार्गी होने के लिये दर्शाये द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांश सिद्धान्त शिरोमणि के अनुसार ही हैं, किन्तु आचार्य गणेश के मतानुसार शुक्र द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांश १६७° पर वक्री तथा १६५° होने पर मार्गी होता है। [५०]

---

[४६] सूर्य सिद्धान्त, स्पष्टाधिकार, श्लोक ५०, ५१
[४७] सूर्य सिद्धान्त, स्पष्टाधिकार, श्लोक ५३, ५४
[४८] सिद्धान्त शिरोमणि– गणिताध्याय, स्पष्टाधिकार, श्लोक ४१
[४९] मकरन्द प्रकाश, वक्रमार्गोदयास्ताधिकार, श्लोक २, ४–५ , ७–६
[५०] ग्रहलाघव, पंचतारास्पष्टाधिकार, श्लोक १५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पूर्वोक्त उदाहरण में हमने ग्रहलाघवीय गणितानुसार शक १६२० चैत्रशुक्लाष्टमी शनिवार को सूर्योदयकालीन ग्रह स्पष्टों की विधि को दर्शाया है। स्पष्टीकरण में मंगल, बुध, गुरू, शुक्र एवं शनि के द्वितीय शीघ्र केन्द्रांश क्रमशः ३४१°, १५६°, ३२°, २२६° एवं ३४८° प्राप्त होते हैं। यहाँ स्पष्ट है कि केवल बुध के शीघ्रकेन्द्रांश १४५° से २१५° के बीच हैं, अतः बुध ग्रह की गति वक्री होगी। जबकि शेष ग्रहों के शीघ्रकेन्द्रांश वक्रगति के अंतर्गत नहीं आते हैं। अतः शक १६२० के श्री हृषीकेष पञ्चांग में चैत्र शुक्लाष्टमी शनिवार के स्पष्ट ग्रहों में केवल बुध ग्रह को वक्री दर्शाया है।

जब ग्रह वक्रगतिक होते हैं तब वे मेषादि से वृषादि राशि में सीधा गमन न करके मेषादि से मीनान्त में प्रतिकूल गमन करते है। जब ग्रह मार्ग गतिक होते है तब वे मेषादि से वृषादि राशि में सीधा गमन करते हैं। बुध ग्रह लगभग ११६ दिनों में, शुक्र ५८४ दिनों में, मंगल ७८० दिनों में, गुरू ३६६ दिनों में और शनि ३७८ दिनों में एक बार वक्री अवश्य होता है।

उत्तरभारत के शाके १६२२ के पञ्चांगों में दर्शाये भौमादि पाँचों ग्रहों के वक्रत्वकाल को निम्नलिखित तालिका में व्यक्त किया है –

सारणी क्रमांक–१६

ग्रह	बुध		गुरू		शुक्र		शनि	
पञ्चांग	.....से..... तक		.....से .....तक		..... से .....तक		..... से .....तक	
विद्यापीठ	२७/६/०० – १७/७/००	१८/१०/०० ८/११/००	३०/६/००– २५/१/०१		६/३/०१ – २०/४/०१		१२/६/००	२५/१/०१
ब्रजभूमि	२६/६/०० १८/७/००	१६/६/०० ८/११/००	१/०/००	२५/१/०१	६/३/०१	२०/४/०१	१४/६/००	२५/१/०१
आर्यभट्ट	२३/६/०० १७/७/००	१८/१०/०० ८/११/००	२६/६/००	२५/१/०१	८/३/०१		१२/६/००	२४/१/०१
वाणीभूषण	२४/५/०० १८/७/००	१६/१०/०० ६/११/००	३०/६/००	२६/१/०१	१०/३/०१		१४/६/००	२६/१/०१
विश्व पं.	२१/६/०० ११/७/००	१३/१०/०० ५/११/००	२/१०/००	२/१/०१	१८/३/०१		६/६/००	२६/१/०१
दिवाकरं	२३/६/०० १८/७/००	१६/१०/०० ८/११/००	३०/१०/००	२५/१/०१	६/३/०१		१२/६/००	२४/१/०१
निर्णय सागर	२१/६/०० १८/७/००	१७/१०/०० ८/११/००	२६/६/००	२६/१/०१	१०/३/०१		१२/६/००	२५/१/०१
हृषीकेष	२१/६/०० ११/७/००	१५/१०/०० ३/११/००	१०/१०/००	१६/१/०१	४/३/०१		१७/६/००	२१/१/०१

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपर्युक्त तालिका–१६ में बुध, गुरू, शुक्र व शनि का वक्रत्व काल दिया है। इस वर्ष शक १६२२ में मंगल वक्री नहीं होता है। यहाँ स्पष्ट है कि उत्तरभारत के इन पञ्चांगों में दिये स्पष्ट ग्रहों का वक्री एवं मार्गी होने का समय एक समान नहीं है। किसी पञ्चांग में कोई ग्रह कुछ दिन पूर्व ही वक्री हो रहा है, तब दूसरे पञ्चांग में वही ग्रह कुछ दिन बाद वक्री होता दर्शाया है। जैसे– दिवाकर, विद्यापीठ एवं वाणी भूषण पञ्चांगों में गुरू का वक्रकाल लगभग समान है किन्तु आर्यभट्ट एवं निर्णय सागर पञ्चांगानुसार गुरू १ दिन पूर्व ही वक्री होता हैं, जब कि विश्व पञ्चांग में २ दिन बाद तथा हृषीकेष पञ्चांग से १० दिन बाद वक्री होता दर्शाया है।

६. पंचताराग्रहों का उदयास्त :- पृथ्वी के अपनी धुरी पर २४ घंटों में पश्चिम से पूर्व की ओर घूमने के कारण सूर्य हमेशा प्रतिदिन पूर्व में उदित होकर पश्चिम में अस्त होता है। जब अपनी–अपनी कक्षाओं में भ्रमण करते हुये भौमादि पाँच ग्रह सूर्य के समीप आते जाते हैं। तब सूर्य की तीव्र प्रभा के कारण ग्रह का आकाश में दृष्टिगत होना बंद हो जाता है। इसी को **अस्त** कहते हैं। जब ग्रह सूर्य से दूर निकलकर दिखाई देता है इसी को **उदय** कहते है।[५१] पृथ्वी के प्रत्येक स्थान पर क्रान्तिवृत का आधा भाग अर्थात १८० अंश हमेशा हमें दृष्टिगोचर होता है। अतः जो भौमादि ग्रह क्रान्तिवृत के इस दृश्य भाग में विद्यमान होंगे, केवल उन्ही ताराओं को हम देख सकते हैं, बशर्ते कि उस समय दिन न हो अर्थात सूर्य अस्त हो चुका हो। स्पष्ट है कि सूर्य के साथ या उसके आसन्न वाले क्रान्तिवृत (राशिचक्र) के भाग में स्थित ग्रह हमें दृष्टिगत नहीं होते हैं। जो ग्रह सूर्य से आगे या पीछे कुछ अंतर (७–८ अंश से अधिक की दूरी) पर स्थित हों, वे ही हमें सूर्योदय के पहिले या सूर्यास्त के बाद आकाश में दिखाई देते है। उदाहरणार्थ – यदि राशिचक्र में सूर्य वृष राशि में १० अंश पर स्थित है तथा शुक्र मेष राशि में २८ अंश पर और गुरू वृष राशि में २८ अंश पर स्थित है, तब स्पष्ट है कि शुक्र सूर्य से १२ अंश पीछे पश्चिम की ओर स्थित है। अतः शुक्र सूर्योदय के समय पूर्वी क्षितिज से १२ अंश की ऊँचाई पर दिखाई देगा। चूँकि गुरू सूर्य से १८ अंश आगे पूर्व की ओर स्थित है। अतः गुरू सूर्यास्त के समय पश्चिमी क्षितिज से १८ अंश की ऊँचाई पर स्पष्ट दिखाई देगा। इसी तरह सूर्य के

---

[५१] सूर्य सिद्धान्त, उदयास्ताधिकार, श्लोक १

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सापेक्ष स्थिति के अनुसार पंचतारा ग्रहों की आकाश में स्थिति का ज्ञान किया जाता है।

आंतरिक ग्रह – बुध एवं शुक्र पृथ्वी की अपेक्षा तीव्रगति वाले हैं। जब ये मार्गी गति कर रहे होते हैं, तब ये अपने से आगे पूर्व की ओर जा रहे सूर्य को जा मिलते हैं। ऐसी स्थिति में अस्त होने से पहिले सूर्य से पीछे (पश्चिम की ओर) स्थित होते हैं, तब इन्हें सूर्योदय से पहले पूर्वी क्षितिज के ऊपर देखा जा सकता है। दिन–प्रतिदिन सूर्य से इनका अंतर कम होने के कारण सांध्य प्रभा में प्रविष्ट होकर अस्त हो जाते है। अस्त होने के कुछ दिनों बाद मार्गी आंतरिक ग्रह अपनी तीव्र गति से सूर्य से आगे पूर्व की ओर निकलकर सूर्य की प्रभा सीमा के बाहर पुनः दैदीप्यमान हो उठते हैं। ऐसी स्थिति में वे सूर्यास्त के बाद पश्चिमी क्षितिज के ऊपर दृष्टिगत होते हैं।

जब आंतरिक ग्रह वक्री होकर पूर्व से पश्चिम की ओर जाते हुये दृष्टिगत होते हैं, तब वे राशि चक्र में सूर्य से आगे पूर्व की ओर स्थित होते हैं। ऐसी स्थिति में वे सूर्यास्त के बाद पश्चिमी क्षितिज से ऊपर दृष्टिगत होते हैं। कुछ दिनों में सूर्य से इनका अंतर कम हाने के कारण ये अदृश्य हो जाते है। अपनी तीव्र गति के कारण अस्त होने के कुछ ही दिनों बाद सूर्य से पीछे पश्चिम की ओर सूर्य की प्रभा सीमा के बाहर दैदीप्यमान हो उठते हैं। इस स्थिति में वे सूर्योदय से पूर्व पूर्वी क्षितिज पर उदित (दृश्य) हो जाते है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मार्गी आंतरिक ग्रह (बुध, शुक्र) पूर्व में अस्त और पश्चिम में उदित तथा वक्री आंतरिक ग्रह पश्चिम में अस्त तथा पूर्व में उदित हुआ करते हैं।[५२]

भौमादि बाह्यग्रह पृथ्वी की अपेक्षा कम गति वाले है। अतः राशि चक्र में पश्चिम से पूर्व की ओर चलता हुआ सूर्य (वास्तव में पृथ्वी) इससे जा मिलता है। जब बाह्यग्रह अस्त होने के पहले सायंकाल में सूर्यास्त के बाद पश्चिमी क्षितिज पर दिखाई देता है, तब वह पश्चिम में ही अस्त होता है। अस्त होने के कुछ दिनों बाद तीव्र गति से चलता हुआ सूर्य उससे कई अंश आगे निकल जाता है, तब वे सूर्य की

---

[५२] सूर्यसिद्धान्त, उदयास्ताधिकार, श्लोक २ परार्ध, श्लोक ३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उज्जवल प्रभा सीमा के बाहर सूर्य से पीछे (पश्चिम की ओर) सूर्योदय से पहिले पूर्व क्षितिज पर उदित होते है।[५३]

इस प्रकार स्पष्ट है कि बाह्यग्रह हमेशा पूर्व में उदित तथा पश्चिम में अस्त होता है। जबकि आंतरिक ग्रह कभी पूर्व में उदित तथा पश्चिम में अस्त तो कभी पूर्व में अस्त तथा पश्चिम में उदित हुआ करते हैं।

अस्त अथा उदित होने वाला प्रत्येक ग्रह सूर्यास्त के बाद पश्चिमी क्षितिज पर तथा सूर्योदय के पूर्व पूर्वी क्षितिज पर कुछ अंशों की ऊँचाई पर दृष्टिगत होता है। जो ग्रह पूर्व में अस्त हाने जा रहा होता है, उसकी प्रातः पूर्वी क्षितिज से तथा जो ग्रह पश्चिम में अस्त होने जा रहा होता है उसकी सांय पश्चिमी क्षितिज से अंशात्मक दूरी प्रतिदिन कम होती जाती है। अंततः एक दिन अस्तगत ग्रह एवं सूर्य का पारस्परिक अंतर शून्य हो जाता है। कुछ दिनों बाद अस्तगत ग्रह का सूर्य से अंतर दूसरी दिशा में (यदि ग्रह पूर्व के अस्त हुआ हो तो पश्चिम की ओर यदि पश्चिम में अस्त हुआ हो तो पूर्व की ओर) बढ़ने लगता है। कुछ दिनों बाद यह अंतर इतना अधिक हो जाता है कि अस्तगत ग्रह पूर्वी या पश्चिमी क्षितिज पर फैली सूर्य प्रभा में पुनः दिखाई देने लगता है। इसे हम उस ग्रह का उदय कहते है।

सिद्धान्तशिरोमणि के अनुसार सूर्य सामीप्य से अस्त होने के बाद जब बाह्यग्रहों– मंगल, गुरू एवं शनि के द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांश क्रमशः २८°, १४° एवं १७° होते हैं तब ये पूर्व दिशा में उदित होते हैं तथा जब ये द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांश क्रमशः ३३२°, २४६° एवं ३४३° होते हैं तब ये पश्चिम दिशा में अस्त होते हैं।[५४] आंतरिक ग्रहों बुध एवं शुक्र के सूर्य सामीप्य अस्त होने के अनंतर जब बुध के द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांश ५०° तथा शुक्र केन्द्रांश २४° होते हैं तब इनका पश्चिम दिशा में उदय होता है। जब बुध, शुक्र ये द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांश क्रमश १५५°, १७७° होते हैं तब इनका पश्चिम दिशा में लोप (अस्त) होता है। इसी प्रकार जब बुध, शुक्र के द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांश २०५°, १८३° होते हैं, तब इनका पूर्व दिशा में उदय तथा केन्द्रांश ३१०°, ३३६° होने पर ये पूर्व दिशा में अस्त हो जाते हैं।[५५] ग्रहलाघव में भी भौमादि पाँचों ग्रहों के उदयास्त

---

[५३] सूर्यसिद्धान्त, उदयास्ताधिकार, श्लोक २ पूर्वार्ध
[५४] सिद्धान्तशिरोमणि, स्पष्टाधिकार, श्लो ४२
[५५] सिद्धान्तशिरोमणि, गणिताध्याय, स्पष्टाधिकार, श्लोक ४३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ज्ञान के लिये सिद्धान्त शिरोमणि के ही द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांशों को ग्रहण किया है।[५६] मकरन्द प्रकाश में ग्रहों की उदयास्त स्थिति के विषय में सिद्धान्त शिरोमणि के तुल्य ही द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांश ग्रहण किये है, किन्तु शनि की स्थिति भिन्न है। आचार्य नारायण दैवज्ञ के मत से शनि के द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांश १४° होने पर पूर्वोदय तथा ३३६° होने पर पश्चिमास्त होता है।[५७]

पूर्वोक्त उदाहरण में शक १६२० चैत्र शुक्लाष्टमी शनिवार (४ अप्रैल १६६८ ई.) को सूर्योदय कालीन भौमादि पाँच ग्रहों के स्पष्टीकरण का ग्रहलाघवीय गणित किया है। तद्नुसार लाघवगणित से इष्ट दिन बाह्यग्रहों – भौम, गुरू एवं शनि के द्वितीय शीघ्रकेन्द्र क्रमशः ३४१°, ३२°, एवं ३४८° के लगभग आते है। यहाँ स्पष्ट है कि मंगल के केन्द्रांश ३४१° उसके अस्तगत केन्द्रांश ३३२° से अधिक है अतः मंगल पश्चिम दिशा में अस्त हो चुका है। गुरू केन्द्रांश २८° एवं ३४६° के बीच अर्थात ३२° है। अतः गुरू का पूर्व दिशा में उदय हो चुका है। चूँकि शनि के केन्द्रांश ३४८° उसके अस्तगत केन्द्रांशों ३४३° से अधिक है अतः मंगल की तरह शनि भी पश्चिम दिशा में अस्त हो चुका है।

इस प्रकार इष्ट दिन (४ अप्रैल १६६८ ई.) को आंतरिक ग्रहों– बुध, शुक्र के द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांश क्रमशः १५६°, २२६° के लगभग है। तब स्पष्ट है कि बुध के लिये द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांश १५६° न तो ५०° और १५५° के बीच है और न हीं २०५° और ३१०° के बीच है। ऐसी स्थिति में इष्ट दिन में बुध पश्चिम दिशा में अस्त हो चुका है। इसी प्रकार शुक्र के द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांश २२६° होने से शुक्र पश्चिम दिशा में अस्त हो चुका है। काशी के श्री हृषीकेष पञ्चांग में दिनांक ६/१०/६८ को शुक्रस्त पूर्वे तथा दिनांक २८/११/६८ को शुक्रोदय पश्चिम दर्शाया है। जबकि पंचवर्षीय श्री सरस्वती पञ्चांग में दिनांक ८/१०/६८ को शुक्रस्त पूर्वे तथा दिनांक २६/११/६८ को शुक्रोदय पूर्व दर्शाया है।

इस प्रकार हम द्वितीय शीघ्रकेन्द्रांश के द्वारा भौमादि पाँचोंग्रहों की उदयास्त स्थिति को ज्ञात कर सकते है।

---

५६ ग्रहलाघव, पंचतारा स्पष्टाधिकार, श्लोक १६–१७

५७ मकरन्दप्रकाश, वक्रमार्गोदयास्ताधिकार, श्लोक १–६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ग्रहलाघव ग्रन्थ में आंतरिक ग्रहों बुध एवं शुक्र के उदयास्त एवं वक्री मार्गी होने के विषय में लिखा है कि बुध पूर्वास्त के ३२ दिनों बाद पश्चिम में उदय, पश्चिमोदय के ३२ दिन बाद वक्री, वक्री के ३ दिनों बाद पश्चिमास्त होता है।[५८]

निम्न लिखित सारणी में बुध, शुक्र ग्रहों के उदयास्त एवं वक्री मार्गी होने के दिनों को व्यक्त किया है–

सारणी क्रमांक–२०

ग्रह	पूर्वास्त के इतने दिनों बाद पश्चिमोदय	पश्चिमोदय के इतने दिनों बाद वक्री	वक्री के इतने दिनों बाद पश्चिमास्त	पश्चिमास्त के इतने दिनों बाद पूर्वोदय	पूर्वोदय के इतने दिनों बाद मार्गी	मार्गी के इतने दिनों बाद पूर्वास्त
बुध	३२ दिन	३२ दिन	३ दिन	१६ दिन	३ दिन	३२ दिन
शुक्र	२ मास	८ मास	२२ दिन	८ दिन	२२ दिन	८ मास

पूर्वास्त के उपरांत यही क्रम जारी रहता है।

शक १६२२ के उत्तरभारत में पञ्चांगों में बुध एवं शुक्र ग्रहों के उदयास्त एवं वक्रत्व मार्गत्व को इस प्रकार बतलाया है –

विद्यापीठ पञ्चांगानुसार सारणी क्रमांक-२१

	पूर्वे अस्त	पश्चिमोदय	वक्री	पश्चिमास्त	पूर्वोदय	मार्गी	पूर्वास्त
बुध	२७/४/००	२०/५/००	२६/६/००	२७/६/००	१५/७/००	१७/७/००	६/८/००
	६/८/००	५/६/००	१८/१०/००	२३/१०/००	५/११/००	८/११/००	१/१२/००
	१/१२/००	१५/१/०१	४/२/०१	६/२/०१	१६/२/०१	२६/२/०१	१०/४/०१
शुक्र	६/५/००	१७/७/००	६/३/०१	१८/३/०१	३१/३/०१	२०/४/०१	२०/१२/०१

निर्णय सागर पञ्चांगानुसार सारणी क्रमांक-२२

	पूर्वे अस्त	पश्चिमोदय	वक्री	पश्चिमास्त	पूर्वोदय	मार्गी	पूर्वास्त
बुध	२७/४/००	२३/५/००	२१/६/००	२७/६/००	१५/७/००	१८/७/००	१०/८/००
	१०/८/००	५/६/००	१७/१०/००	२४/१०/००	४/११/००	८/११/००	२/१२/००
	२/१२/००	१५/१/०१	४/२/०१	६/२/०१	१६/२/०१	२७/२/०१	६/४/०१
शुक्र	६/५/००	१४/७/००	६/३/०१	२८/३/०१	१/४/०१	२०/४/०१	२१/१२/०१

---

[५८] पूर्वास्तादृदयः परेऽनृजुगतिस्तोयास्तमैन्द्र्युदगमो।
मार्गोऽस्तोऽत्र च, दन्तदन्तदहनाष्ट्यज्याशदन्तैदिनैः।।
चान्द्रेस्तत्परतत्परं त्वथ भृगोस्तद्वादिद्वमास्या तंतो
ऽष्टाभिर्व्यघ्रिभुवाड्घ्रिणा, विचरणैकेनाष्टमासैः क्रमात् ।।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगानुसार सारणी क्रमांक-२३

	पूर्वे अस्त	पश्चिमोदय	वक्री	पश्चिमास्त	पूर्वोदय	मार्गी	पूर्वास्त
बुध	२७/४/००	२०/५/००	२३/६/००	२७/६/००	१५/७/००	१८/७/००	६/८/००
	६/८/००	५/६/००	१६/१०/००	२३/१०/००	५/११/००	८/११/००	१/१२/००
	१/१२/००	१५/१/०१	४/२/०१	५/२/०१	१६/२/०१	२५/२/०१	———
शुक्र	५/५/००	१६/७/००	६/३/०१	२७/३/०१	३१/३/०१	२०/४/०१	१६/१२/०१

पञ्चांग दिवाकर के अनुसार सारणी क्रमांक-२४

	पूर्वे अस्त	पश्चिमोदय	वक्री	पश्चिमास्त	पूर्वोदय	मार्गी	पूर्वास्त
बुध	२७/४/००	२०/५/००	२३/६/००	२८/६/००	१५/७/००	१८/७/००	६/८/००
	६/७/००	५/६/००	१६/१०/००	२४/१०/००	५/११/००	८/११/००	१/१२/००
	१/१२/००	१५/१/०१	४/२/०१	६/२/०१	१६/२/०१	२४/२/०१	———
शुक्र	६/५/००	१६/७/००	६/३/०१	२७/३/०१	———	२०/४/०१	———

उत्तरभारत के विद्यापीठ, निर्णयसागर, श्री मार्त्तण्ड एवं दिवाकर आदि पञ्चांगों में बुध एवं शुक्र ग्रहों के दिये उदयास्त एवं वक्री मार्गी कालों का अवलोकन करने पर हम देखते है कि ग्रहलाघाव का उपर्युक्त कथन (श्लोक – १६) इन पञ्चांगों पर पूर्णतः लागू नहीं होता है। जैसे – विद्यापीठ पञ्चांगानुसार बुध के पूर्वास्त के २३ दिन बाद बुध का पश्चिमोदय तथा पश्चिमोदय के ३५ दिन बाद बुध बक्री होता है। वक्री होने के १ दिन बाद बुध पश्चिम में अस्त तथा पश्चिम में अस्त होने के १८ दिन बाद पूर्वोदय होता है। पूर्वोदय होने के २ दिन बाद बुध मार्गी हो जाता है। अन्य पञ्चांगों में भी बुध की ऐसी ही स्थिति है। इस प्रकार हम शुक्र को देख सकते है। विद्यापीठ पञ्चांग में शुक्र पूर्वास्त होने के २ मास ८ दिन बाद पश्चिमोदय तथा पश्चिमोदय होने के ७ माह २० दिन बाद वक्री होता है। वक्री होने के १६ दिन बाद पश्चिमास्त एवं पश्चिमास्त के २ दिन बाद पूर्वोदय होता है। पूर्वोदय के २० दिन बाद शुक्र मार्गी होकर चलता है तथा मार्गी होने के ८ माह बाद पूर्व दिशा में अस्त हो जाता है।

ग्रहलाघव में बाह्यग्रहों – मंगल, गुरू एवं शनि के उदयास्त एवं वक्री मार्गी होने का उल्लेख हुआ है जिसके अनुसार मंगल के अस्त होने के उपरांत उसका ४ मास बाद पूर्वोदय, उदय के १० मास बाद वक्री, वक्री के २ मास बाद मार्गी एवं मार्गी के १० मास बाद अस्त होता है। इस प्रकार गुरू ग्रह अस्त होने के पश्चात् १ मास बाद पूर्वोदय, पूर्वोदय के $४\frac{१}{४}$ मास बाद वक्री, वक्री होने के ४ मास बाद मार्गी एवं मार्गी होने के $४\frac{१}{४}$ मास बाद पश्चिमास्त होता है। शनिग्रह पश्चिम दिशा में अस्त

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होने के बाद ४ $\frac{१}{४}$, ३ $\frac{१}{२}$, ४ $\frac{१}{२}$ एवं ३ $\frac{१}{२}$ मास बाद क्रमशः उदय, वक्र, मार्ग एवं अस्त होता है।[५६]

अग्रलिखित सारणी में मंगल, गुरू एवं शनि ग्रहों के उदयास्त एवं वक्री मार्गी होने के दिनों को व्यक्त किया है–

सारणी क्रमांक–२५

बाह्य ग्रह	पश्चिम में अस्तोपरांत पूर्वोदय	पूर्वोदय के बाद वक्री	वक्री के बाद मार्गी	मार्गी के बाद पश्चिम में अस्त
मंगल	४ मास (१२० दिन)	१० मास (३०० दिन)	२ मास (६० दिन)	१० मास (३०० दिन)
गुरू	१ मास (३० दिन)	१२८ दिन	४ मास (१२० दिन)	१२८ दिन
शनि	३८ दिन	१०५ दिन	१३५ दिन	१०५ दिन

पश्चिम में अस्त होने के उपरांत यही क्रम जारी रहता है।

उत्तरभारत के शक १६२२ के पञ्चांगों में हम बाह्य ग्रहों की उदयास्त एवं वक्री–मार्गी स्थिति का अवलोकन करते है।

सारणी क्रमांक–२६

पञ्चांग	ग्रह	पश्चिमास्त	पूर्वोदय	वक्री	मार्गी
विद्यापीठ पञ्चांग से	मंगल	१/५/२०००	२५/८/२०००	११/५/२००१	२०/७/२००१
	गुरू	२८/४/२०००	२४/५/२०००	३०/६/२०००	२५/१/२००१
	शनि	२२/४/२०००	२८/५/२०००	१२/६/२०००	२५/१/२००१
निर्णय सागर पञ्चांग से	मंगल	१/५/२०००	२५/८/२०००	४/५/२००१	११/७/२००१
	गुरू	२८/४/२०००	२४/५/२०००	२६/६/२०००	२४/१/२००१
	शनि	२२/४/२०००	२८/५/२०००	१२/६/२०००	२४/१/२००१
श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग से	मंगल	१/५/२०००	२५/८/२०००	११/५/२००१	१६/७/२००१
	गुरू	२७/४/२०००	२५/५/२०००	३०/६/२०००	२५/१/२००१
	शनि	२३/४/२०००	२८/५/२०००	१३/६/२०००	२५/१/२००१
पञ्चांग दिवाकर से	मंगल	१/५/२०००	२५/८/२०००	११/५/२००१	१६/७/२००१
	गुरू	२७/४/२०००	२४/५/२०००	३०/६/२०००	२५/१/२००१
	शनि	२३/४/२०००	२८/५/२०००	१२/६/२०००	२५/१/२००१

उत्तरभारत के विद्यापीठ, निर्णय सागर, श्री मार्त्तण्ड एवं दिवाकर पञ्चांगों में दिये बाह्य ग्रहों के उदयास्त एवं वक्री–मार्गी काल का अवलोकन करने पर हम देखते है कि

---

[५६] ग्रहलाघव, पंचतारा स्पष्टाधिकार, श्लोक २०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ग्रहलाघव के (श्लोक २०) का कथन इन पञ्चांगों पर पूर्णतः लागू नहीं होता है। जैसे– श्री मार्त्तण्ड पञ्चांगानुसार मंगल के पश्चिम में अस्त होने के ११५ दिनों के उपरांत पूर्व में उदय तथा पूर्वोदय के २५३ दिनों बाद वक्री ओर वक्री के होने के ६८ दिनों बाद वह मार्गी होता है। इसी प्रकार हम गुरू एवं शनि को देख सकते हैं। उत्तरभारत के अन्य पञ्चांगों में भी बाह्यग्रहों की स्थिति कुछ ऐसी ही है। काशी के श्री हृषीकेष पञ्चांग में केवल शुक्र एवं गुरू के उदयास्त को दर्शाया है। श्री हृषीकेष पञ्चांगानुसार शक १६२२ में शुक्र का पूर्व में अस्त ८ मई २००० ई. को तथा पश्चिमोदय ६ जुलाई २००० ई. (५८ दिनों में) को होता है। जबकि गुरू पश्चिम में अस्त दिनांक २६/४/२००० को तथा पूर्वोदय (२५ दिन बाद) दिनांक २४/५/२००० को होता है।

इस प्रकार हम उत्तरभारत के विभिन्न पञ्चांगों में भौमादि पाँच ग्रहों के उदयास्त एवं वक्री मार्गी काल की तुलनात्मक स्थिति का अवलोकन करते है। इन पञ्चांगों में भौमादि पाँचोंग्रहों के उदयास्त एवं वक्री मार्गी होने का काल एक समान नहीं पाया जाता है। किसी पञ्चांग में ग्रह के उदय या अस्त को २–३ दिन पूर्व दर्शाया है तो किसी पञ्चांग में २–३ दिन बाद। ऐसी ही स्थिति ग्रहों के वक्री–मार्गी होने के विषय में है। जैसे – विद्यापीठ पञ्चांग से शुक्र पूर्व दिशा में दिनांक ६/५/२००० को अस्त होता है। तब श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग से शुक्र पूर्व दिशा में दिनांक ५/५/२००० (तीन दिन पूर्व) को अस्त होता है। विद्यापीठ पञ्चांग से बुध का पश्चिमोदय दिनांक २०/५/२००० को होता है तो निर्णय सागर पञ्चांग से बुध का पश्चिमोदय दिनांक २३/५/२००० को (३ दिन बाद) होता है। जबकि दोनों पञ्चांगानुसार बुध दिनांक २७/४/२००० को पूर्व दिशा में अस्त हो चुका था। इसी प्रकार निर्णय सागर पञ्चांगानुसार मंगल दिनांक ४/५/२००१ को वक्री होकर दिनांक ११/७/२००१ को मार्गी होता है। जबकि मार्त्तण्ड पञ्चांग एवं विश्व विजय पञ्चांगानुसार मंगल दिनांक ११/५/२००१ को वक्री होकर दिनांक २०/७/२००१ को मार्गी होता है।

सारणी क्रमांक-२७

पञ्चांग	ग्रह	पूर्वास्त	पश्चिमोदय	वक्री	पश्चिमास्त	पूर्वादय	मार्गी
लहरी एफेमरीज	बुध	२३/४/०० १२/८/००	१७/५/०० ७/६/००	२३/६/०० १८/१०/००	२६/६/०० २१/१०/००	१६/७/०० ४/११/००	१७/७/०० ८/११/००
	शुक्र	८/५/००	५/७/००	६/३/०१	---	---	२०/४/०१

क्रमशः

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पञ्चांग	ग्रह	पूर्वास्त	पश्चिमोदय	वक्री	पश्चिमास्त	पूर्वादय	मार्गी
उज्जैन एफेमरीज	बुध	२३/४/०० १२/८/००	१७/५/०० ७/६/००	२३/६/०० १८/१०/००	२६/६/०० २१/१०/००	१६/७/०० ४/११/००	१७/७/०० ८/११/००
	शुक्र	८/५/००	५/७/००	---	---	---	---
श्री वल्लभ मनीराम	बुध	२७/४/०० ६/८/००	२०/५/०० ५/६/००	२१/६/०० १७/१०/००	२७/६/०० २४/१०/००	१५/७/०० ४/११/००	१८/७/०० ८/११/००
	शुक्र	३०/४/००	८/७/००	६/३/०१			
ब्रजभूमि	बुध	२७/४/०० ६/८/००	२०/५/०० ५/६/००	२३/६/०० १६/१०/००	२७/६/०० २४/१०/००	१५/७/०० ४/११/००	१८/७/०० ८/११/००
	शुक्र	७/५/००	१३/७/००	६/३/०१			
वाणी भूषण	बुध	१६/४/०० ११/८/००	१८/५/०० १५/६/००	२३/६/०० १८/१०/००	२५/६/०० १७/१०/००	१६/७/०० ४/११/००	१७/७/०० ८/११/००
	शुक्र	२७/४/००	६/७/००	६/३/०१			
आर्यभट्ट	बुध	२७/४/०० ६/८/००	२०/५/०० ५/६/००	२३/६/०० १८/१०/००	२७/६/०० २३/१०/००	१५/७/०० ५/११/००	१७/७/०० ८/११/००
	शुक्र	८/५/२०००		१६/७/००	६/३/२००१		

सारणी क्रमांक-२८

पञ्चांग	ग्रह	पश्चिमास्त	पूर्वादय	वक्री	मार्गी
१. लहरी एफे २०००	मंगल	११/५/२०००	१६/८/२०००		
	गुरू	२६/४/२०००	२४/५/२०००	२६/६/२०००	२५/१/०१
	शनि	२६/४/२०००	३१/५/२०००	१२/६/२०००	२५/१/०१
२. उज्जैन एफे २०००	मंगल	११/५/२०००	१६/८/२०००		
	गुरू	२८/४/००	२४/५/२०००	२६/६/२०००	२५/१/०१
	शनि	२६/४/२०००	३१/५/२०००	२१/६/२०००	२५/१/०१
३ श्री वल्लभ मनीराम	मंगल	१/५/२०००	२५/८/२०००		
	गुरू	२८/४/००	२४/५/२०००	३०/६/२०००	२४/१/०१
	शनि	२२/४/२०००	२८/५/२०००	१२/६/२०००	२५/१/०१
४. श्री ब्रजभूमि	मंगल	१/५/२०००	२६/८/२०००	—	—
	गुरू	२८/४/००	२३/५/२०००	१/१०/२०००	२५/१/०१
	शनि	२३/४/२०००	२८/५/२०००	१४/६/२०००	२५/१/०१
५ वाणी भूषण	मंगल	७/५/२०००	२०/८/२०००	—	—
	गुरू	२५/४/२०००	२६/५/२०००	३०/६/२०००	२५/१/०१
	शनि	२४/४/००	२/६/२०००	१२/६/२०००	२५/१/०१
६ श्री आर्यभट्ट	मंगल	१/५/२०००	२५/८/२०००	—	—
	गुरू	२८/४/००	२४/५/२०००	२६/६/२०००	२५/१/०१
	शनि	२३/४/२०००	२८/५/२०००	१२/६/२०००	२४/१/०१

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उपर्युक्त सारणी २७ और २८ में विक्रम संवत् २०५७ में उत्तरभारत के पञ्चांगों श्री वल्लभ मनीराम, श्री ब्रजभूमि, वाणीभूषण, आर्यभट्ट एवं एफेमरीज इत्यादि में बुधादि पाँचों ग्रहों के उदयास्त एवं वक्री–मार्गी होने के काल को दर्शाया है। एफेमरीज में दर्शाये इन पाँचों ग्रहों के उदयास्त एवं वक्री–मार्गी काल की तुलना उत्तरभारत के शेष पञ्चांगों में व्यक्त किये काल से करते हैं। सर्वप्रथम सारणी २७ से हम आंतरिक ग्रहों– बुध, शुक्र के विषय में विचार करते है। लहरी एफेमरीज एवं उज्जैन एफेमरीज में बुध और शुक्र के उदयास्त एवं वक्री मार्गी होने के दिन एक ही हैं, किन्तु अन्य पञ्चांगों में ऐसा नहीं है। लहरी एफेमरीज में बुध का पूर्वास्त दिनांक २३/४/२००० को व्यक्त किया है तो श्री बल्लभ मनीराम, श्री ब्रजभमि एवं आर्यभट्ट पञ्चांगों में बुध का पूर्वास्त २७/४/२००० (४ दिन बाद) दिखाया है। तथा वाणीभूषण पञ्चांग में बुध का पूर्वास्त १६/४/२००० (८ दिन पूर्व) ही दिखाया है। इसी प्रकार लहरी एफेमरीज की तुलना में श्री वल्लभ मनीराम, श्री ब्रजभूमि एवं आर्यभट्ट पञ्चांगों में बुध का पश्चिमोदय ३ दिन बाद तथा वाणीभूषण पञ्चांग में १ दिन पहिले ही दर्शाया है। लहरी एफेमरीज की तुलना में अन्य पञ्चांगों में बुध के वक्री–मार्गी होने के दिन में १–२ दिन का अंतर देखने को मिलता है।

विवाह आदि मुहूर्तों में शुक्र एवं गुरू की उदयास्त स्थिति को देखा जाता है। लहरी एफेमरीज के अनुसार शुक्र का पूर्व में अस्त दिनांक ८/५/२००० को तथा पश्चिमोदय दिनांक ५/७/२००० को होता है। किन्तु श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग में शुक्र का पूर्वास्त ८ दिन पूर्व तथा वाणीभूषण पञ्चांग में ११ दिन पूर्व दिखाया है तथा पश्चिमोदय क्रमशः दिनांक ८/५/२००० तथा दिनांक ६/५/२००० को दर्शाया है। वाणीभूषण पञ्चांग की स्थिति तो और भी विचित्र है इसमें दिनांक १८/१०/२००० को बुध वक्री होता है तथा वक्री होने के एक दिन बाद ही बुध पश्चिम में अस्त हो जाता है जो कि एक विरोधामास है।

श्री ब्रजभूमि पञ्चांग में शुक्र का पश्चिमोदय ८ दिन बाद दिनांक १३/७/२००० को तथा श्री आर्यभट्ट पञ्चांग में ११ दिन बाद दिनांक (१६/७/२००० को) दिखाया है। इस प्रकार हम देखते है कि उत्तरभारत के विभिन्न पञ्चांगों में बुध, शुक्र ग्रहों के उदयास्त काल में कई दिनों का अंतर देखने को मिलता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सारणी २८ के अनुसार एफेमरीज में मंगल ग्रह पश्चिम में अस्त दिनांक ११/५/२००० को तथा पूर्वोदय दिनांक १६/८/२००० को दर्शाया है। जबकि श्री वल्लभ मनीराम, श्री ब्रजभूमि एवं श्री आर्यभट्ट इत्यादि पञ्चांगों में मंगलग्रह का पश्चिम में अस्त १० दिन पूर्व (दिनांक १/५/२००० को) तथा पूर्वोदय ६ दिन बाद (दिनांक २५/८/२०००) दिखाया है। वाणीभूषण पञ्चांगानुसार मंगल का पश्चिम में अस्त ४ दिन पूर्व तथा पूर्वोदय ४ दिन बाद होता है। लहरी एफेमरीज में गुरू का पश्चिम में अस्त दिनांक २६/४/२००० को दिखाया है जबकि उज्जैन एफेमेरीज, श्री वल्लभ मनीराम, ब्रजभूमि, आर्यभट्ट पञ्चांगों में गुरू का पश्चिम में अस्त २ दिन बाद दिनांक २८/५/२००० को दर्शाया है। अतः स्पष्ट है कि उत्तरभारत के पञ्चांगों में ग्रहों की उदयास्त स्थिति को लेकर भिन्नता है।

(ग) पाँचों अंगों - तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण का आनयन :-

भारतीय ज्योतिष मे पञ्चांग निर्माण की कई विधियाँ प्रचलित हैं। ये विधियाँ ऋषी प्रणीत अलग–अलग ज्योतिष ग्रन्थों द्वारा प्रतिपादित है। उत्तर भारत के पञ्चांगों में तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण में से केवल वार आनयन की विधि सुस्पष्ट एवं एक ही है, जबकि तिथ्यादि अंगों को भिन्न–भिन्न ज्योतिष ग्रन्थों की विधियों के अनुसार निकाला जाता है। फलतः इनका गणित भिन्न–भिन्न होने से तिथ्याादि के स्पष्ट मानों में अन्तर आ जाता है।

सूर्य और चन्द्र दो ऐसे आकाशीय पिण्ड हैं, जिन्हें सभी लोग जानते एवं पहचानते हैं। इनको प्रतिदिन उदयास्त होते हुये, एक दूसरे के निकट आते हुये तथा दूर जाते हुये आकाश में देखा जा सकता है। तिथि, नक्षत्र एवं योग का गणित इन्हीं दोनों की दैनिक गति से होता है।

सूर्य सिद्धान्त, नारद पुराण, सिद्धान्त शिरोमणि, ताजिक नीलकण्ठी एवं ग्रहलाघव आदि ग्रन्थों में उधृत तिथ्यादि आनयन की विधि का गणित लगभग एक जैसा है, किन्तु मकरन्दी गणित भिन्न है। मकरन्द सारणी ग्रन्थ का निर्माण सूर्य सिद्धान्त के आधार पर हुआ है।[६०] मकरन्द सारणी द्वारा पाक्षिक तिथ्यादि का आनयन इष्ट शक से किया जाता है जबकि सूर्य सिद्धान्तादि ग्रन्थों में स्पष्ट रवि एवं चन्द्र से

---

[६०] मकरन्द सारणी, प्रथमाध्याय, श्लोक १

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दैनिक तिथ्यादि साधन की विधि वर्णित है। स्पष्ट रवि–चन्द्र तिथ्यादि साधन की विधि अधिक सुस्पष्ट एवं वैज्ञानिक है। उत्तरभारत के पञ्चांगों में दोनों ही प्रकार की विधियों का प्रयोग दृष्टिगत होता है, जैसे काशी के श्री हृषिकेष पञ्चांग में मकरन्दीया तिथिनक्षत्र योगादया स्पष्ट होने का संकेत है तथा विद्यापीठ आदि पञ्चांगों में स्पष्ट रवि–चन्द्र से तिथ्यादि आनयन प्रतीत होता है। यहाँ हम सूर्य सिद्धान्त आदि ग्रन्थों में उधृत तिथ्यादि आनयन की विधि का वर्णन करेंगे।

१. तिथि का आनयन :- चन्द्रमा प्रतिदिन ७६० कला ३५ विकला की मध्यम गति से पृथ्वी की पश्चिम से पूर्व की ओर परिक्रमा करता रहता है। चन्द्रमा की गति बढ़ती घटती रहती है, जिससे तिथ्यादि के मानों में भी क्षय–वृद्धि होती रहती है। चन्द्रमा की न्यूनतम गति ६६० कला और अधिकतम गति ६२० कला तक हो जाती है। ग्रहों की कक्षा (भ्रमणमार्ग) चाहे जितनी बड़ी अथवा छोटी हो सभी को एक समान ३६० अंशों में विभाजित किया गया है। अमानाम्नी चन्द्रमा की १६वीं कला क्षय–वृद्धि रहित है, केवल १५ कलाओं की ह्रास–वृद्धि होती रहती है। स्थानीय क्षितिज पर जहाँ सूर्यचन्द्रांतर १२ अंश का हो जाता है वहाँ चन्द्रमा का १५वाँ भाग दर्शन योग्य हो जाता है। यह स्पष्ट सिद्धान्तोक्त शुद्ध अन्तर्लक्षणा तिथि का निर्वचन है। इसे अदृश्य तिथि भी कहा जाता है।

सूर्यसिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक तिथि का भोग ७२० कला है।[६१] एक चान्द्रमास में ३० तिथियाँ होती हैं तथा चन्द्रमा पृथ्वी की पूर्ण प्रदक्षिणा करता है तब चक्रकला २१६०० ÷ ३० = ७२० कला एक तिथि भोग हुआ। तिथि आनयन हेतु स्पष्ट चन्द्रमा में से स्पष्ट सूर्य को घटाने पर जो शेष रहे, उसकी कला करके उनमें तिथि के भोग (७२० कला) का भाग देने पर प्राप्त फल गततिथि संख्या होगी। गत गम्यकलाओं को ६० से गुणा करके उनमें स्पष्ट सूर्य–चन्द्र की गत्यन्तर का भाग देने से वर्तमान तिथि की गतगम्य घड़ियाँ होती हैं।[६२] महर्षि नारद एवं भास्कराचार्य ने भी तिथि साधन की इसी विधि का समर्थन किया है।[६३]

---

६१ भभोगोऽष्टशतीलिप्ताः ..... दिनादिकम्। सूर्यसिद्धान्त, स्पष्टाधिकार, श्लोक ६४

६२ अर्कोन चन्द्रलिप्ताभ्यस्तिथयो भोगभाजिताः।
गता गम्याश्च षष्टिघ्ना नाड्यो भुक्त्यन्तरोद्धृताः।। सूर्यसिद्धान्त, स्पष्टाधिकार, श्लोक ६६ एवं नारद पुराण, पूर्वभाग २, अध्याय ५४, श्लोक १२२ परार्ध–१२३ पूर्वार्ध

६३ सिद्धान्त शिरोमणि, गणिताध्याय, स्पष्टाधिकार, श्लोक ६६, ६७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आचार्य गणेश दैवज्ञ के अनुसार जिस दिन तिथि स्पष्ट करनी हो उस दिन सूर्योदय कालीन स्पष्ट चन्द्र में से स्पष्ट सूर्य को घटा दें और शेष अंशों में १२ का भाग दें, प्राप्त लब्धि गतितिथि होती है तथा शेष अंशात्मक भुक्त तिथि (तिथि का बीता हुआ भाग) होती है। भुक्त तिथि को १२ अंशों में से घटाने पर जो शेष आता है वह भोग्य तिथि (तिथि का वह भाग जो अभी भोगना है) होती है। अब भोग्यतिथि के मान को ६० से गुणा करके सूर्य–चन्द्र की स्पष्टगति के अन्तर से भाग देने पर प्राप्त लब्धि वर्तमान तिथि का समाप्तिकाल घटी–पल मे होती है।[६४]

अतः स्पष्ट है कि सूर्यसिद्धान्त नारद पुराण, सिद्धान्त शिरोमणि एवं ग्रहलाघव में तिथि आनयन की विधि एक समान है। चूँकि पञ्चांग में दृश्य एवं अदृश्य गणितों का विधान शास्त्र सम्मत कहा जाता है। तदनुसार तिथ्यादि साधन में अदृश्य एवं ग्रहणोदयास्तादि में दृश्य गणित की आवश्यकता है। मकरन्द के बाद श्री गणेश दैवज्ञ ने उक्त विषय को ध्यान में रखते हुये ग्रहलाघव ग्रन्थ की रचना की। अतः आगे हम ग्रहलाघव गणितानुसार पञ्चांगों में तिथि के मानों का गणित करेंगे तथा पञ्चांग में दर्शाये तिथ्यादि घटीपलात्मक मानों की समीक्षा करेंगे।

काशी के श्री हृषिकेष पञ्चांग के शक १६२२ चैत्र शुक्ल बुधवार को अष्टमी तिथि का मान ४ घटी ३४ पल दिया है। इस दिन सूर्योदय कालीन स्पष्ट सूर्य ११रा. २८° : ३०′ : ३४ गति ५८′ ४६″ तथा स्पष्ट चन्द्र ३रा. ३° : ३०′ : १२″ गति ८५३′ ५८″ दी गई है। लाघव गणित से इस दिन अष्टमी तिथि का मान ज्ञात करेंगे।

स्पष्ट चन्द्र	= ३रा. ३° : ३०′ : १२″
स्पष्ट सूर्य	= ११रा. २८° : ३०′ : ३४″
अन्तर	= ३रा. ४° : ५६′ : ३८″

शेषांश (६४° : ५६′ : ३८″) ÷ १२ = लब्धि ७, शेषफल १०° : ५६′ : ३८″

तब गततिथि सप्तमी हुई तथा शेष १० अंश ५६ कला ३८ विकला भुक्त अष्टमी तिथि हुई। इसको १२ अंशों में से घटायेंगे –

१२ अंश – १०° : ५६′ : ३८″ = १° : ०′ : २२″

---

[६४] भक्ता व्यर्कविधोर्लवा यमकुभिर्याता तिथिः स्यात्फलं,
शेषं यातमिदं हरात्प्रपतितं भोग्यं विलिप्तास्तयोः। ।ग्रहलाघव, रविचन्द्रस्पष्टाधिकार, श्लोक ६, १०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अर्थात १ अंश ० कला ३२ विकला भोग्य अष्टमी तिथि हुई। अब भोग्य अष्टमी की विकला बनाई तो ३६२२ विकला हुई। इनको ६० से गुणा करने पर गुणनफल २१७३२० प्राप्त हुआ। इस गुणनफल में गत्यन्तर (चन्द्रगति ८५३' ५८'' – सूर्यगति ५८' ४६'') ७६५' १२'' का भाग देने पर

२१७३२० ÷ ४७७१२ = ४ घटी ३३ पल १७.३ विपल

प्राप्त मान अष्टमी तिथि की भोग्य घटिका–पला होंगी।

इसी प्रकार शुक्ल अष्टमी १० अंश ५६ कला ३८ विकला की विकलाऐं बनाई तो ३६५७८ हुई, उनको ६० से गुणा करने पर गुणनफल २३७४६८० हुआ। इस गुणनफल में गत्यन्तर ४७७१२ विकला का भाग देने पर भागफल ४६ घटी ४६ पल १६ विपल आया। यह अष्टमी तिथि की भुक्त घटिका–पला होंगी।

हृषिकेष पञ्चांगानुसार इसमें ग्रहस्पष्ट ग्रहलाघवीय है तथा ग्रहलाघवीय विधियानुसार शक १६२२ चैत्र शुक्ल बुधवार को अष्टमी भी तिथि का मान ४ घटी ३३ पल १७ विपल आता है, जो इस पञ्चांग में दिये मान के बराबर है। इस पञ्चांग में ६वीं तिथि का क्षय दर्शाया है।

उपरोक्त विधिनुसार हम नवमी तिथि का गणित करते हैं तो नवमी तिथि की भोग्य घटिका (लगभग) ५४ घटी ४० पल आती है। अतः श्री हृषिकेष पञ्चांग में दिये तिथि के मान लाघव गणितानुसार सूक्ष्मांतर से मिलते हैं किन्तु शक १६२२ चैत्र शुक्ल पक्ष का मकरन्द सारणियों के आधार पर मकरन्दी गणित करने से अष्टमी (८) तिथि का मान ४ घटी १३ पल तथा बुधवार (४) आता है, बुधवार (४) को नवमी तिथि का क्षय होता है तथा नवमी का स्पष्ट मान ५८ घटी ३३ प्राप्त होता है। चूँकि मकन्द सारणियो के आधार पर गणित करने से काशी मे तिथ्यादि के घटी–पलात्मक मान प्राप्त होते हैं; अतः अष्टमी एवं नवमी तिथि के उपरोक्त मान काशी के होंगे। किन्तु श्री हृषिकेष पञ्चांग में दर्शाये चैत्र शुक्ल पक्ष में अष्टमी एवं नवमी तिथि शक १६२२ के मान मकरन्दी गणित से पूर्णतः प्राप्त नहीं होते हैं। साथ ही हम देखते हैं कि अष्टमी एवं नवमी तिथि का मान ग्रहलाघवी एवं मकरन्दी गणित से भिन्न–भिन्न प्राप्त होता है।

काशी के विश्व पञ्चांग में शक १६२२ चैत्र शुक्ल बुधवार को अष्टमी तिथि का मान ५ घटी ५६ पल दिया है, जो कि काशी के हृषिकेष पञ्चांग में दिये अष्टमी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तिथि के मान से १ घटी २२ पल (३३ मिनट) अधिक है। दोनों ही पञ्चांग काशी के अक्षांश एवं देशांतर पर बनते हैं। इनकी तुलनात्मक स्थिति निम्नानुसार है –

सारणी क्रमांक-२६

पञ्चांग	दिनमान	तिथि	वार	घ. प.	सू. उ.	स्पष्ट सूर्य	स्पष्ट चन्द्र
विश्व	३१:१८	७	मं.	११ ५१	५ ४४	११:२७°:१८':३५''	२:१५°:४४':१५''
	३१:२२	८	बु.	५ ५६	५ ४४	११:२८°:१३':२४''	३:०°:३':५०''
	३१:२६	९	वृ.	० १७	५ ४३	११:२९°:१६':१०''	३:१४°:१९':४५''
श्री हृषिकेष	३१:१९	७	मं.	१० २७	५ ४४	११:२८°:३०':३४''	३:३°:३०':१२''
	३१:२३	८	बु.	४ ३४	५ ४४		
	३१:२६	९	बु.	५४ २१	५ ४३		

काशी विश्व पञ्चांग में मिश्रमान कालिक दैनिक स्पष्ट सूर्य–चन्द्र हैं, जबकि हृषिकेष पञ्चांग में सूर्योदय कालिक स्पष्ट सूर्य–चन्द्र दिये हैं। विश्व पञ्चांग में अष्टमी तिथि के मान का सूर्य सिद्धान्तीय गणित करते हैं।

		घ.	प.	घ.	प.		घ.	प.
मिश्रमान = दिनमान + रात्र्यर्द्ध	=	३१ :	२२ +	१४ :	१९	=	४५	४१
अष्टमी बुधवार को स्पष्ट चन्द्र	=	३रा :	०° :	९' :	५०''	गति	८५५'	५५''
स्पष्ट सूर्य	=	११रा :	२८° :	१३' :	२४''	गति	६२'	४६''
अन्तर	=	३रा :	१° :	५६' :	२६''	गति	७६३'	६''

शेष ३रा. १° ५६' ३६'' की कलादि बनाने पर ५५१६ कला २६ विकला होती है। इसमें ७२० कला का भाग देने पर लब्धि ७ तथा शेष ४७६ कला २६ विकला आता है। लब्धि ७ से तात्पर्य है कि सप्तमी तिथि समाप्त हो चुकी है तथा शेष ४७६ कला २६ विकलाअष्टमी तिथि का भोग्य मान है। इसे ७२० कला में से घटाने पर शेषफल २४३ कला ३४ विकला हुआ। इसके विकलादि १४६१४ को ६० से गुणा करके गुणफल ८७६८४० में गत्यंतर ७६३' : ६'' अर्थात ४७५८६ विकला का भाग देने पर भागफल १८ घटी २५ पल ३० विपल प्राप्त होता है। यह रात्र्यर्द्ध से लेकर अष्टमी तिथि की घटिका पला होंगी। चूँकि रात्र्यर्द्ध १४ घटी १६ पल को १८ घटी २५ पल ३० विपल में से घटाने पर शेषफल ४ घटी ६ पल ३० विपल प्राप्त होता है जो कि बुधवार को सूर्योदय से लेकर अष्टमी तिथि का मान होगा। इस प्रकार विश्व पञ्चांग में दिया अष्टमी तिथि का घटीपलात्मक मान उपरोक्त सूर्य सिद्धान्तीय गणितानुसार प्राप्त नहीं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होता है। यदि हृषिकेष पञ्चांग के सन्दर्भ में देखें तो विश्व पञ्चांग में दिया गया अष्टमी तिथि का मान अशुद्ध है।

हृषिकेष पञ्चांग में नवमी तिथि का क्षय बतलाया है। इसमें नवमी तिथि बुधवार की रात्रि ५४ घटी २१ पल पर समाप्त हो रही है अर्थात गुरूवार को सूर्य उदय से १ घटी ५ पल पूर्व ६वी तिथि समाप्त हो चुकी है। जबकि विश्व पञ्चांग में नवमी तिथि का क्षय नहीं बतलाया है। इसमें गुरूवार को ६वीं तिथि का मान १७ पल दिया है। अतः स्पष्ट है कि दोनों पञ्चांगों में दी गई अष्टमी एवं नवमी तिथि में मानों में १ घटी २२ पल का अन्तर आता है। मेरी दृष्टि में हृषिकेष पञ्चांग में अष्टमी एवं नवमी का मान शुद्ध है।

दिल्ली के आर्यभट्ट पञ्चांग में शक १६२२ चैत्र शुक्ल मंगलवार को अष्टमी तिथि का क्षय बतलाया है। इस पञ्चांग के अनुसार बुधवार को ६वी तिथि आती है। आर्यभट्ट पञ्चांगानुसार –

सारणी क्रमांक-३०

तिथि	वार	समाप्तिकाल		सू. उ.	सूर्य स्पष्ट (गति)	चन्द्र स्पष्ट (गति)
		घ. प.	घं. मि.	घं. मि.		
७	मं.	४ ४५	८ ३०	६ ६	११:२७°:३३':११''(५८'५१'')	१:२०°:६':५५''(८४३'५३'')
८	मं.	५६ ५५	२८ ००	६ ६		
६	बु.	५५ ३०	५ १७	६ ५	११रा:२७°:३२':२''(५८'४६'')	३:४°:१३':४८''(८३५'५५'')

इस पञ्चांग में प्रातः ५:३० के दैनिक ग्रह स्पष्ट दिये हैं। जबकि अष्टमी मंगलवार को सूर्योदय ३६ मिनट बाद होता है। इसके घटी–पल बनायेंगे तो १ घटी ३० पल होंगे। अब सूर्य सिद्धान्तानुसार स्पष्ट चन्द्र में से स्पष्ट सूर्य घटायेंगे –

स्पष्ट चन्द्र	= २रा : २० : ६' : ५५''	गति ८४३' : ५३''
स्पष्ट सूर्य	= ११रा : २७ : ३३' : ११''	गति ५८' : ५१''
अन्तर	= २रा : २२ : ३६' : ४४''	गत्यंतर ७८५' : २''

शेषफल की कलादि बनाने पर ४६५६ कला ४४ विकला हुई। तब

४६५६' ४४'' ÷ ७२० = लब्धि ६, शेष ६३६ कला ४४ विकला

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्पष्ट है कि स्पतमी तिथि के भुक्तादि होंगे। इसे ७२० कला में से घटायेंगे –

७२० कला – ६३६ कला ४४ विकला= ८३ कला १६ विकला शेष

शेष के विकलादि ४६६६को ६०से गुणा करके गुणनफल २६६७६० में गत्यन्तर ७८५'२''

गत्यान्तर का भाग देते हैं तब (२६६७६० ÷ ४७१०२ =) ६ घटी २२ पल प्राप्त हुआ। अतः शक १६२२ चैत्र शुक्ल मंगलवार को प्रातः ५:३० बजे (अर्थात सूर्योदय से १ घटी ३० पल पूर्व) के स्पष्ट सूर्य–चन्द्र से सप्तमी तिथि का मान ६ घटी २२ पल प्राप्त होता है।

६ घटी २२ पल – १ घटी ३० पल = ४ घटी ५२ पल

अतः मंगलवार को सप्तमी तिथि सूर्योदय से ४ घटी ५२ पल तक रहेगी। जबकि पञ्चांग में सप्तमी तिथि का मान ४ घटी ४५ पल दिया है। अब हम उपर्युक्त विधियानुसार अष्टमी तिथि का मान निकालेंगे। आर्यभट्ट पञ्चांगानुसार बुधवार प्रातः ५:३० बजे के स्पष्ट चन्द्र में से स्पष्ट सूर्य घटाने पर,

स्पष्ट चन्द्र =	३रा : ४° : १२' : ४८''	गति	८३५' : ५५''
स्पष्ट सूर्य =	११रा : २८° : ३२' : २''	गति	५८' : ४६''
शेष =	३रा : ५° : ४०' : ४६''	गत्यंतर	७७७' : ६''

शेषांश ६५° : ४०' : ४६'' ÷ १२ = लब्धि ७, शेष ११° : ४०' : ४६''

अर्थात बुधवार को प्रातः ५:३० बजे तक सप्तमी तिथि समाप्त होकर अष्टमी तिथि चल रही थी।

१२ अंश – ११ अंश ४० कला ४६ विकला = १६ कला १४ विकला। यह बुधवार प्रातः ५:३० बजे के बाद भोग्य अष्टमी तिथि के अंशादि हैं। तदनुसार –

[(१६ X ६० + १४) X ६०] ÷ ७७७' ६'' = ६६२४० ÷ ४६६२६ = १ घटी २६ पल

यह बुधवार प्रातः ५:३० बजे के बाद अष्टमी तिथि की घटिका–पला हुई।

अब १ घटी २६ पल – १ घटी ३० पल = –१ पल

अर्थात बुधवार को सूर्योदय से १ पल पूर्व अष्टमी तिथि समाप्त हो गई। तब मंगलवार को अष्टमी तिथि का मान = ६० घटी – ४ घटी ५२ पल

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तथा ५५ घटी ८ पल – १ पल = ५५ घटी ७ पल

अतः ५:३० बजे के स्पष्ट सूर्य चन्द्र के आधार पर अष्टमी तिथि का मान ५५ घटी ७ पल प्राप्त होता है। जबकि इस पञ्चांग में अष्टमी तिथि का मान ५६ घटी ५५ कला दिया है। जो कि असम्भव है क्योंकि इस पञ्चांगानुसार मंगलवार को सप्तमी तिथि का मान ४ घटी ४५ पल है तब

५६ घटी ५५ पल + ४ घटी ४५ पल = ६४ घटी ४० पल

एक वार में एक सूर्योदय से लेकर दूसरे सूर्योदय तक ६० घटी होती हैं। यहाँ मंगलवार में सप्तमी एवं अष्टमी तिथि की घटियों का योग ६४ घटी से भी अधिक है जो कि असम्भव है। अतः आर्यभट्ट पञ्चांग में दर्शाया अष्टमी तिथि का मान अशुद्ध है।

कलकत्ता के अक्षांश रेखांश पर बनी लहरी एफेमरीज में भारतीय मानक समय में तिथ्यादि का समाप्तिकाल लिखा जाता है। लहरी एफेमरीज में शक १९२२ चैत्र शुक्ल (१२ अप्रैल २०००) बुधवार को अष्टमी तिथि ६ बजकर ३ मिनट तक तथा नवमी तिथि २८ बजकर १७ मिनट तक दर्शाई है। इसके अनुसार बुधवार को नवमी तिथि का क्षय होता है। लहरी एफेमरीज के अनुसार –

सारणी क्रमांक-३१

वार	तिथि	समाप्तिकाल सू.उ.		स्पष्ट सूर्य(गति)	स्पष्ट चन्द्र(गति)
मं.	७	८:०१	५:२०	११रा:२७°:३३':१५''(५८–'५१'')	२:२०°:१०':३०''(८४३'–५३'')
बु.	८	६:०३	५:१६	११रा:२८°:३२':६''(५८'–४६'')	३:४°:१४':२३'' (८३५'–५५'')
बु.	९	२८:१७	५:१६	––––––''––––––––––	––––––''––––––––––

उपर्युक्त सारणी–३१ में १२ अप्रैल बुधवार को स्पष्ट सूर्य एवं चन्द्र कलकत्ता के सूर्योदय से ११ मिनट बाद अर्थात प्रातः ५:३० बजे के हैं। तब ११ मिनट के २६ पल होंगे।

बुधवार को स्पष्ट चन्द्र	= ३रा : ४° : १४' : २३''	गति	८३५' : ५५''
स्पष्ट सूर्य	= ११रा : २८° : ३२' : ६''	गति	५८' : ४६''
अन्तर	= ३रा : ५° : ४२' : १७''	गत्यंतर	७७७' : ६''

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

∴ शेषांश ६५° : ४२′ : १७′′ ÷ १२ = लब्धि ७, शेष ११° : ४२′ : १७′′

अर्थात बुधवार को प्रातः ५:३० बजे तक सप्तमी तिथि समाप्त होकर अष्टमी तिथि के ११ अंश ४२ कला १७ विकला व्यतीत हो चुके हैं तब अष्टमी तिथि का शेष भाग, १२ अंश – ११ अंश ४२ कला १७ = १७ कला ४३ विकला

तदनुसार [(१७ X ६० + ४३) X ६०] ÷ ७७७ कला ६ विकला

= ६३७८० ÷ ४६६२६

६३७८० ÷ ४६६२६ = १ घटी २२ पल

यह बुधवार को प्रातः ५:३० बजे के बाद अष्टमी तिथि का घटी पल में माना होगा। चूँकि बुधवार को सूर्योदय ५ बजकर १६ मिनट पर होता है तब सूर्योदय से अष्टमी तिथि का घटी–पल में मान–

१ घटी २२ पल + २६ पल = १ घटी ४८ पल

१ घटी ४८ पल के ४३ मिनट १२ सेकण्ड होंगे। कलकत्ता के सूर्योदय काल ५ बजकर १६ मिनट में ४३ मिनट १२ सेकण्ड जोड़ने पर योग ६ बजकर २ मिनट १२ सेकण्ड आता है। यह बुधवार को कलकत्ता मे सूर्योदयकाल से अष्टमी तिथि का समाप्तिकाल होगा। लहरी ऐफेमरीज में १२ अप्रैल बुधवार को अष्टमी तिथि का समाप्ति काल ६ बजकर ३ मिनट दिया है, जो कि उपर्युक्त लाघव गणितानुसार शुद्ध है। इस प्रकार हम उत्तर भारत के किसी भी पञ्चांग में तिथि का स्पष्ट मान निकालकर उसका समाप्तिकाल (भा.स्टे.स.) ज्ञात कर सकते हैं तथा यह पता लगा सकते हैं कि पञ्चांग में दिये तिथि के घट्यादि मान शुद्ध है अथवा अशुद्ध।

उत्तर भारत में भिन्न–भिन्न स्थलों(अक्षांश एवं रेखांश) से अलग–अलग पञ्चांग निकलते हैं। इन पञ्चांगों में सूर्योदय से तिथि का समाप्तिकाल घटी–पल में दिया रहता है। चूँकि अलग–अलग देशांतर पर सूर्य के उदित होने का समय पूर्व के स्थलों जैसे – दिसपुर, कलकत्ता पटना इत्यादि शहरों में सूर्य पहले उदित होगा तथा जबलपुर, ग्वालियर , दिल्ली, गाँधीनगर जेसे शहरों मे सूर्य बाद में उदित होगा। इस प्रकार एक ही तिथि का मान घटी–पल मे अलग–अलग पञ्चांगों में अलग–अलग हो सकता है। किन्तु भारतीय मानक समय से पूरे देश में तिथि का समाप्ति समय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निश्चित होता है। उदाहरणार्थ – यदि प्रतिपदा तिथि भारतीय मानक समय से सांय ६ बजे समाप्त हो रही है तो पूरे देश में सांय ६ बजे प्रतिपदा तिथि समाप्त मानी जायेगी। सभी पञ्चांगों में प्रतिपदा तिथि का समाप्तिकाल भारतीय मानक समय में ६ बजे ही लिखा होना चाहिये।

दिल्ली के अक्षांश रेखांश पर बने विद्यापीठ पञ्चांग में शक १६२२ चैत्र शुक्ल बुधवार (१२ अप्रैल २०००) को नवमी तिथि का क्षय दर्शाया है, तथा अष्टमी तिथि का मान ५२ पल (समाप्तिकाल प्रातः ६ बजकर २५ मिनट) दिया है। मथुरा के अक्षांश एवं रेखांश पर बने श्री ब्रजभूमि पञ्चांग में इसी दिन (१२ अप्रैल २०००) को अष्टमी तिथि का मान मात्र २ पल (समाप्तिकाल प्रातः ६:३) दिया है जबकि देशांतर = मथुरा का रेखांश (७७° : ४१′)–दिल्ली का रेखांश (७७° : १२)= २६′ अर्थात २६′ X ४ = ११६ सेकण्ड = २ मिनट (लगभग) तब दोनों पञ्चांगों के सूर्योदय में केवल २ मिनट का अन्तर है अर्थात भा.मा.स. से मथुरा में दिल्ली की अपेक्षा लगभग २ मिनट पूर्व सूर्योदय होता है। तब विद्यापीठ पञ्चांग के अनुसार मथुरा में १२ अप्रैल २०००, बुधवार को अष्टमी तिथि का मान ५७ पल ३० विपल होना चाहिये किन्तु दोनों पञ्चांगों में दिये अष्टमी तिथि के समाप्तिकाल में २२ मिनट का अन्तर है। विद्यापीठ पञ्चांग के अनुसार अष्टमी तिथि भारतीय मानक समय में पूरे देश में प्रातः ६ बजकर २५ मिनट पर समाप्त होती है जबकि श्री ब्रजभूमि पञ्चांग के अनुसार अष्टमी तिथि प्रातः ६ बजकर ३ मिनट पर समाप्त हो चुकी है। इन दोनों पञ्चांगों मे दिये ८वी तिथि के घटी–पल मान की शुद्धता का गणित ग्रहलघवानुसार करते हैं। विद्यापीठ पञ्चांग में प्रातः ६ बजकर २१ मिनट के ग्रह स्पष्ट दिये हैं तथा श्री ब्रजभूमि पञ्चांग में प्रातः ५ बजकर ३० मिनट के स्पष्ट ग्रह दिये हैं। दोनों पञ्चांगों दिये स्पष्ट ग्रहों को चालन द्वारा सूर्योदय कालीन बनायेंगे।

विद्यापीठ पञ्चांगानुसार १२ अप्रैल बुधवार को सूर्योदय कालीन स्पष्ट सूर्य के भोग्यांश ११रा : २८° : ३५′ : १७″ गति ५८′ : ४६″ तथा स्पष्ट चन्द्र के भोग्यांश ३रा : ४° : २६′ : ४२″ गति ८३८′ : २५″ प्राप्त होती है। श्री ब्रजभूमि पञ्चांगानुसार इसी दिन सूर्योदय कालीन स्पष्ट सूर्य के भोग्यांश ११रा. :२८° :३३′ : २६″गति ५८′:४६″ तथा चन्द्र के भोग्यांश ३रा : ४° : ३२′ : ३१″ गति ८३८′ : २७″ प्राप्त होती है। विद्यापीठ पञ्चांगानुसार अष्टमी तिथि के भोग्यांश ५ कला ३५ विकला तथा ब्रजभूमि पञ्चांगानुसार अष्टमी तिथि के भोग्यांश ५५ विकला आते हैं। आगे लाघव गणित से

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विद्यापीठ पञ्चांगानुसार अष्टमी तिथि का मान २६ पल एवं श्री ब्रजभूमि पञ्चांगानुसार अष्टमी तिथि का मान ४ पल आता है। अतः लाघव गणित से ब्रजभूमि पञ्चांग में दिया अष्टमी तिथि का मान विद्यापीठ पञ्चांग की अपेक्षा शुद्ध है। विद्यापीठ में दिये अष्टमी तिथि के स्पष्ट मान का गणित सम्भवतः ग्रहलाघव नहीं है। इस पञ्चांग में तिथ्यादि स्पष्ट करने की विधि किसी अन्य ग्रन्थ, सम्भवतः वैजयंती नाम पञ्चांग गणित से है।

२. नक्षत्र का आनयन :- ज्योतिष के अधिकांश ग्रन्थों में नक्षत्र आनयन की विधि एक सी है। तिथि की तरह से नक्षत्र का आनयन भी किया जा सकता है। ग्रहलाघव मतानुसार नक्षत्र ज्ञात करने के लिये स्पष्ट चन्द्र की कलादि बनाकर उसमें ८०० का भाग दें, जो लब्धि मिले वह अश्वनियादि से गिनने पर गत नक्षत्र होता है, जो शेष रहे वह वर्तमान नक्षत्र का भुक्तभाग होगा। उस गतभाग को ८०० कला में से घटाने पर जो शेष रहे, वह भोग्य नक्षत्र (नक्षत्र का भोग्यभाग) होता है। इसके बाद नक्षत्र के भुक्त एवं भोग्य भागों की विकलाऐं बनाकर ६० का गुणा करें और चन्द्र स्पष्टगति का भाग दें जो लब्धि मिले वह क्रम से वर्तमान नक्षत्र की भुक्त एवं योग्य घटिकाऐं होंगी।[६५]

शाके १९१४ के श्री महावीर पञ्चांग, काशी के अनुसार चैत्र शुक्ल अष्टमी को पुनर्वसु नक्षत्र का मान निम्नानुसार है –

सारणी क्रमांक–३२

दिनांक	तिथि	वार	नक्षत्र	घ. प.	घं. मि.	सू. उ.	स्पष्ट चन्द्र (गति)
१०.४.१९९२	८	शु.	पुनर्वसु	४६ : ४१	रा.१२:२५	५ :४५	२रा:२३°:५२′:७′′(८४०′:८′′)

स्पष्ट चन्द्र २रा:२३°:५२′:७′′ की विकलाऐं = ५०३२′ : ७′′

५०३२′ : ७′′ ÷ ८०० = लब्धि ६, शेष २३२ कला ७ विकला

---

[६५] दर्धाच्चाथ विधोश्च सार्कसितगोर्लिप्ताः खखाष्टोद्धृताः।
याते स्तो भयुती क्रमाद् गगनषण्णिघ्ने गतैष्ये तयो।। ग्रहलाघव, रविचन्द्रस्पाधिकार, श्लोक १०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अश्विनी नक्षत्र से गिनने पर ६वाँ नक्षत्र आर्द्रा गत नक्षत्र होता है तथा वर्तमान नक्षत्र (७वाँ नक्षत्र) पुनर्वसु होगा। शेष २३२ कला ७ विकला पुनर्वसु नक्षत्र का भुक्त भाग होगा।

८०० कला – २३२ कला ७ विकला = ५६७ कला ५३ विकला

यह मान पुनर्वसु नक्षत्र का भोग्य भाग होगा।

अब [(२३२ X ६० + ७) X ६०] ÷ चन्द्र स्पष्ट गति ८४०′ ८″

८३५६२० ÷ ५०४०८ = १६ घटी ३५ पल

यह पुनर्वसु का भुक्तकाल हुआ।

[(५६७ × ६० + ५३) × ६०] ÷ चन्द्र स्पष्ट गति ८४०′ ८″

२०४४३८० ÷ ५०४०८ = ४० घटी ३३ पल

यह पुनर्वसु नक्षत्र का भोग्य काल हुआ।

६० घटी – १६ घटी ३५ पल = ४३ घटी २५ पल

यह गुरूवार को आर्द्रा नक्षत्र का भोग्य काल होगा। किन्तु महावीर पञ्चांग में आर्द्रा नक्षत्र का मान ५० घटी ३२ पल एवं पुनर्वसु नक्षत्र का मान ४३ घटी ४१ पल दिया है। इस पञ्चांग में नक्षत्रों के दिये घटी पलात्मक मान लाघवगणित से स्पष्ट नक्षत्रों के घटी पलात्मक मानों से नहीं मिलते हैं। अतः शक १६१४ के महावीर पञ्चांग में दिये नक्षत्रों के घटी पलात्मक मान लाघवगणित से अशुद्ध प्राप्त होते हैं।

इसी प्रकार काशी के श्री हृषिकेष पञ्चांगानुसार शक १६२२ वैशाख शुक्ल अष्टमी गुरूवार को चन्द्र स्पष्ट ३रा. २६ अं. ५३ क. १८ वि. व गति ८४८ क. ३३ वि. दी है। स्पष्ट चन्द्र की कलाओं ७०१३ कला १८ विकला में ८०० का भाग देने पर लब्धि ८ आती है। अतः ८वाँ नक्षत्र पुष्य गत नक्षत्र होगा एवं वर्तमान नक्षत्र आश्लेषा होगा। शेष ६१३ कला १८ विकला आश्लेषा नक्षत्र का भुक्त भाग एवं ८००′–६१३′१८″ = १८६ कला ४२ विकला भोग्य भाग होगा। आश्लेषा नक्षत्र के भुक्त भाग एवं भोग्य भाग में चन्द्र स्पष्ट गति ८४८′ ३३″ का भाग देंगे तब

[(१८६ X ६० + ४२) X ६०] ÷ ८४८′ ३३″=६७२१२० ÷ ५०६१३ = १३ घटी १२ पल

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यह गुरूवार को आश्लेषा नक्षत्र का घटी–पलात्मक मान (भोग्यकाल) हुआ।

पुनः $[(६१३\times६० + १८)\times ६०] \div ५०६१३ = २२७८८० \div ५०६१३ = ४३$ घटी २२ पल

यह बुधवार को आश्लेषा नक्षत्र का घटी पलात्मक मान (भुक्तकाल) हुआ।

६० घटी – ४२ घटी २२ पल = १६ घटी ३८ पल

यह बुधवार को पुष्य नक्षत्र का घटी पलात्मक प्राप्त हुआ। श्री हृषिकेष पञ्चांग में शक १६२२ चैत्र शुक्ल सप्तमी बुधवार को पुष्य नक्षत्र का मान १६ घटी ३८ पल तथा अष्टमी गुरूवार को आश्लेषा नक्षत्र का मान १३ घटी १२ पल दिया है जो उपर्युक्त लाघवगणित से प्राप्त मानो से पूर्णतः मिलते हैं। अतः हृषिकेष पञ्चांग में नक्षत्रों का घटी पलात्मक मान शुद्ध है।

काशी के विश्व पञ्चांग में शक १६२२ वैशाख शुक्ल बुधवार को पुष्य नक्षत्र का घटी पलात्मक मान १४ घटी ३५ पल है तथा गुरूवार को आश्लेषा नक्षत्र का मान ११ घटी ४४ पल दिया है। इसमें ११ मई गुरूवार को प्रातः ५:३० बजे स्पष्ट चन्द्रमा ३रा:२८°:५३':३०'' गति ८२० कला १२ विकला दी गई हैं। लाघवगणित से विश्व पञ्चांग मे दिया आश्लेषा नक्षत्र का मान प्राप्त नहीं होता है और ना ही पुष्य नक्षत्र का। विश्व पञ्चांग एवं श्री हृषिकेष पञ्चांग में स्पष्ट चन्द्रमा के भोग्यांशों में भी अन्तर है। अतः लाघव मतानुसार विश्व पञ्चांग के तिथ्यादि के मानों को स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

दिल्ली के अक्षांश रेखांश पर बने विद्यापीठ पञ्चांग एवं श्री आर्यभट्ट पञ्चांग में शक १६२२ वैशाख शुक्ल अष्टमी गुरूवार (११ मई २०००) को आश्लेषा नक्षत्र का मान क्रमशः ८ घटी २२ पल (भा.स्टे.टा. ७:२२ प्रातः) एवं ४ घटी ३२ पल (भा.स्टे.टा. ७:२७ प्रातः) दिया है। दोनों पञ्चांगों में दिये आश्लेषा नक्षत्र के मान में १० पल (५ मिनट) का अन्तर है, जो कम है। इस प्रकार उत्तर भारत के सभी पञ्चांगों में दिये नक्षत्रों के घटी–पलात्मक मानों की तुलनात्मक स्थिति का अध्ययन किया जाता है।

३. योग का आनयन :- तिथि आनयन की तरह से योग साधन की विधि सूर्य सिद्धान्त, सिद्धान्त शिरोमणि, नारद पुराण एवं ग्रहलाघव में एक समान है। इसके अनुसार स्पष्ट सूर्य एवं चन्द्रमा के योग की कलाओं में ८०० का भाग देने पर जो

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लब्धि मिले वह गतयोग होता है और जो शेष कलादि बचे वह वर्तमान योग का भुक्तभाग होता है। भुक्त भाग को ८०० कला में से घटाने पर जो शेष कलादि रहे वह वर्तमान योग का भोग्यभाग होता है। अब योग के भुक्तभाग एवं भोग्यभाग दोनों को ६० से गुणा करें विकला बनायें तथा दोनों पुनः ६० का गुणा करके सूर्यचन्द्र की स्पष्ट गति के योग की विकलाओं का भाग दें। जो लब्धि प्राप्त हो, वह क्रमशः भुक्तयोग एवं भोग्ययोग की घटिका–पला होंगी। ग्रहलाघव में भी इसी प्रकार योगानयन की विधि को समझाया है।[६६]

उदाहरणार्थ :– श्री हृषिकेष पञ्चांग में शक १६२० चैत्र शुक्लाष्टमी शनिवार (४ अप्रैल १६६८) को अतिगण्ड योग की स्थिति को निम्नानुसार दर्शाया है–

सारणी क्रमांक–३३

दिनांक	वार	योग	घ. प	घ. मि.	सू. उ.	स्पष्ट सूर्य (गति)	स्पष्ट चन्द्र (गति)
३ अप्रैल	शु.	शोभन	४६:२०	२४:२२	५:५०		२:१६°:४५':३६''/८०७':२४''
४ अप्रैल	श.	अति गण्ड	४२:२६	२२:४८	५:५०	११:२०°:१०':३६''/५८':४''	

अतिगण्ड योग का गणित सूर्यसिद्धारन्तानुसार निम्नलिखित होगा –

शनिवार को स्पष्ट सूर्य = १० रा : २०° : १०' : ३६'' गति ५६' : ४''

शनिवार को स्पष्ट चन्द्र = ३ रा : १६° : ४५' : ३६'' गति ८०७' : २४''

योगफल = १० रा : ६° : ५६' : १२'' गतियोग ८६६' : २८''

योगफल की कलाऐं २३६६'–१२'' में ८०० का भाग देने पर लब्धि २ शेष ७६६ कलाऐं १२ विकलाऐं प्राप्त हुई। तब विष्कम्भ योग से गिनने पर गत योग (दूसरा) प्रीति आता है तथा वर्तमान योग आयुष्मान होगा। किन्तु श्री हृषिकेष पञ्चांग में वर्तमान योग अतिगण्ड दिया हैं जो सूर्य सिद्धान्तानुसार अशुद्ध है। इसी पञ्चांग में शक १६२० चैत्र शुक्ल पूर्णिमा शनि को व्याघात योग दिया है, जिसका मान ४० घटी ३८ पल है। इसका गणित निम्नानुसार है –

---

[६६] रवीन्दुयोगलिप्ताभ्यो .....भुक्तियोगाप्त नाडिकाः। सूर्यसिद्धान्त, स्पष्टाधिकार, श्लोक ६५ ; नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५४/१२१–१२२ पूर्वार्ध एवं ग्रहलाघव, रविचन्द्रस्पष्टा., श्लोक १० परार्ध

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पूर्णिमा शनिवार को स्पष्ट सूर्य = ११रा : २७° : ३′ : २२″ गति ५८′ : ४६″

स्पष्ट चन्द्र = ५रा : १७° : २८′ : ५१″ गति ७२१′ : १५″

योगफल = ५रा : १४° : ३२′ : १२″गतियोग ७८०′ : ४″

योगफल की विकलाओं ६८७२′ में ८०० का भाग देने पर लब्धि १२ एवं शेषफल २७२ कला १२ विकला प्राप्त हुआ। अब विष्कम्भादि योग से गिनने पर गतयोग (१२वाँ) ध्रुव आता है तथा वर्तमान योग (१३वाँ) व्याघात होगा। व्याघात योग की भुक्त कलाऐं २७२′ : १२″ तथा भोग्य कलाऐं (८००–२७२′:१३″=) ५२७′ : ४७″ होंगी। दोनों की विकलाऐं बनाकर ६० का गुणा करते हैं। तथा गुणनफल में गतियोग (७८०′ : ४″) का भाग देंगे। अर्थात

व्याघात योग की भुक्त विकलाऐं = १६३३३ X ६० = ९७६६८०

व्याघात योग की भोग्य विकलाऐं = ३१६६७ X ६० = १६०००२०

तथा ९८६६८० ÷ ४६८०४ = २० घटी ५६ पल १६ विपल

यह भुक्त व्याघात योग की घटिकाऐं एवं पलाऐं हुईं।

पुनः १६०००२० ÷ ४६८०४ = ४० घटी ३५ पल ४२ विपल

यह भोग्य व्याघात की घटिकाऐं एवं पलाऐं हुईं।

श्री हृषिकेष पञ्चांग में चैत्र शुक्ल चतुर्दशी (१४) शुक्रवार को ध्रुव योग की घटिका २९ पला ३ दी हुई है। तब शुक्रवार को व्याघात योग की घटिका २० पला ५७ होंगी। अतः श्री हृषिकेष पञ्चांग में शक १९२० चैत्र शुक्ल पूर्णिमा शनिवार को दर्शाये व्याघात योग की घटिका ४० पला ३८ सूर्यसिद्धान्त के गणित से प्राप्त व्याघात योग की घटिका–पला के लगभग बराबर है। तब पूर्णिमा को दर्शाया व्याघात योग सिद्ध होता है।

इसी प्रकार श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग में शक १९२१ वैशाख शुक्ल चतुर्थी (४) सोमवार को सौभाग्य योग को इस प्रकार दर्शाया है–

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सारणी क्रमांक–३४

दिनांक	वार	योग	घ. प.	घं. मि.	सू. उ.	प्रातः ५:३० स्पष्टसूर्य	प्रातः ५:३० स्पष्टचन्द्र
१८अप्रैल	र.	आयुष्मा	२४:३०	१५:४४	५:५६	० : ३° : ४०′ : ५०″	० : ३° : ४०′ : ५०″
१९अप्रैल	सो.	सौभा.	१४:४५	११:४६	५:५५	० : ४° : ३६′ : ३१″ (५८′ ४१″)	१ : १४° : २८′ : ५८″ (६०१′ ५६″)

सौभाग्य योग का सूर्य सिद्धान्तीय गणित निम्नानुसार होगा –

सर्वप्रथम प्रातः ५:३० बजे के स्पष्ट सूर्य एवं चन्द्र में २६ मिनट का चालान करके सूर्योदय कालीन स्पष्ट सूर्य एवं चन्द्र बनायेंगे तब –

सोमवार को सूर्योदय कालीन स्पष्ट सूर्य= ०रा : ४° : ४′ : २८″ गति ५८′ : ४१″

स्पष्ट चन्द्र = १रा : १४° : ४५′ : १५″ गति ६०१′ : ५६″

योगफल = १रा : १९° : २५′ : ४३″ गतियोग ६६०′:३७″

योगफल की विकलाऐं २९६५७′ : ४३″ ÷ ८०० = लब्धि ३, शेष ५६५′ : ४३″

अतः विष्कम्भ योग से गिनने पर गतयोग (तीसरा) आयुष्मान तथा वर्तमान योग (चौथा) सौभाग्य होगा।

सौभाग्य योग का भुक्तभाग = ५६५′ : ४३″ = ३३९४३ विकलाऐं

सौभाग्य योग का भोग्यभाग = ८००′–५६५′ : ४३″ = २३४′ : १७″=१४०५७ विकलाऐं

अब सौभाग्य योग के भुक्तभाग एवं भोग्यभाग की विकलाओं को ६० से गुणा करके गतियोग की विकलाओं में ५७६३७ का भाग देने पर–

(३३९४३×६०) ÷ ६६०′ ३७″ = २०३६५८० ÷ ५७६३७ = ३५ घटी २० पल ५ विपल

यह भुक्त सौभाग्य योग की घटिका–पला हुई।

(१४०५७×६०) ÷ ६६०′ ३७″ = ८४३४२० ÷ ५७६३७ = १४ घटी ३७ पल ५६ विपल

यह भोग्य सौभाग्य योग की घटिका–पला हुई।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग में भुक्त सौभाग्य योग की घटिका ३५ पला ३० तथा भोग्य सौभाग्य योग की घटिका १४ एवं ४५ दी हुई है जो कि उपर्युक्त सूर्य सिद्धान्तीय गणितानुसार प्राप्त भुक्तयोग एवं भोग्ययोग की घटिकाओं पलाओं के बराबर नहीं है। अतः मार्त्तण्ड पञ्चांग में वैशाख शुक्ल सोमवार चतुर्थी को दर्शाये सौभाग्य योग का मापन अशुद्ध है। इस प्रकार हम उत्तर भारत के सभी पञ्चांगों में दिये योग के घटी–पलात्मक मानों की शुद्धता का पता लगाते हैं।

४. करण का आनयन :- सूर्यसिद्धान्त, नारद पुराण, सिद्धान्त शिरोमणि एवं ग्रहलाघव में करण साधन प्रणाली को समझाया है। सूर्यसिद्धान्त की अपेक्षा नारद पुराण की करण साधन विधि अधिक स्पष्ट है। सूर्यसिद्धान्त में तिथियों में करणों का विभाजन किया है। जिसके अनुसार प्रतिमास कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के उत्तरार्द्ध में शकुनि, अमावस्या के पूर्वार्ध में नाग एवं उत्तरार्ध में चतुष्पद तथा शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के पूर्वार्ध में किंस्तुध्न नामक करण होता है। शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के उत्तरार्ध से लेकर कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के पूर्वार्ध तक बवादि ७ चर करण आठ बार आते हैं। इस प्रकार एक चान्द्रमास में बवादि ७ करणों की आठ आवृत्तियाँ होती है। प्रत्येक करण तिथि का आधा होता है।[६७]

यदि इष्ट दिन अभीष्ट तिथि का मान ३० घटी से कम हो तो उत्तरार्ध करण की भोग्य घटिकाऐं तथा ३० घटी से अधिक हो तो पूर्वार्ध करण की भोग्य घटिकाऐं पञ्चांग में लिखी जाती हैं। ग्रहलाघव मतानुसार जिस समय का करण निकालना हो उस समय गत तिथ की संख्या को दोगुना करके ७ का भाग दें। जो लब्धि मिले उसे छोड़ दें तथा शेष संख्या को ग्रहण करें। बवादि करण से शेष संख्या तक गिने। जो प्राप्त हो वह तिथि के पूर्वार्ध का करण होगा। उत्तरार्ध का करण इसके बाद का होगा।[६८] करण ज्ञात करने की यह विधि नारद पुराण के अनुसार है।[६९] पञ्चांग का परिचय एवं परिभाषा (प्रकरण) अध्याय में शुक्ल पक्ष एवं कृष्ण पक्ष की तिथियों के पूर्वार्ध एवं उत्तरार्ध भाग के करण सारणी में स्पष्ट किये हैं।

---

६७ सूर्यसिद्धान्त, स्पष्टाधिकार, श्लोक ६७–६६

६८ पूर्वार्द्धे करणं बवाद्गततिथिर्द्विघ्नद्रितष्टा भवेत्। ग्रहलाघव, रविचन्द्रस्पष्टाधिकार, श्लोक ६ परार्ध

६९ तिथयः शुक्लप्रतिपदो द्विघ्नाः सैका न गाहताः।
शेषं बवो बालवश्च कौलवस्तैतिलो गरः।। नारद पुराण, पूर्वभाग २/५४/१२३ परार्ध–१२५ पूर्वार्ध

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उदाहरणार्थ :– श्री हृषिकेष पञ्चांग में शक १९२२ चैत्र शुक्ल पूर्णिमा मंगलवार (१८ अप्रैल २०००) को पूर्णिमा तिथि ४१ घटी ३२ पल तक है। इसमें तिथि के पूर्वार्ध भाग का करण नही लिखा है, केवल तिथि के उत्तरार्ध भाग का करण लिखा रहता है। पञ्चांग में १८ अप्रैल २००० को तिथि के उत्तरार्ध करण बव का मान ४१ घटी ३२ पल दिया है। इसका लाघव गणित निम्नानुसार है–

गततिथि १४ × २ = २८ तथा २८ : ७ = लब्धि ४, शेष ०

अतः पूर्णिमा के पूर्वार्ध में विष्टि (भद्रा) करण और उत्तरार्ध में बव करण हुआ। पुनः सोमवार को पूर्णिमा तिथि की भुक्त घटिका १८ पल १८ एवं मंगलवार को पूर्णिमा तिथि की भोग्य घटिकाऐं ४१ पल ३२ हैं तब पूर्णिमा तिथि की कुल घटिका ५९ पल ५० होंगे। इसका आधा किया तो २९ घटी ५५ पल हुआ। इसमें पूर्णिमा तिथि की भुक्त घटिका घटाने पर शेष ११ घटी ३७ पल हुआ। यह मंगलवार को विष्टि करण (पूर्वार्ध करण) की घटिका एवं पला हुई। तिथि के उत्तरार्ध करण बव की घटिका २९ पला ५५ होंगी। इस विधि से हम किसी भी समय का करण ज्ञात कर सकते हैं तथा पञ्चांग में दिये करण के मान की शुद्धता का पता लगा सकते हैं।

काशी के विश्व पञ्चांग एवं श्री महावीर पञ्चांग में तिथि के पूर्वार्ध एवं उत्तरार्ध के दोनों करणों का उल्लेख रहता है कि महावीर पञ्चांग में शक १९२३ चैत्र शुक्ल सोमवार (२९ मार्चर्ध २००१) को प्रतिपदा तिथि का मान २ घटी ५८ पल (७ घंटा ६ मिनट) दिया है। तिथि के पूर्वार्ध का करण बव का मान २ घटी ५८ पल एवं उत्तरार्ध के करण बालव का मान ३३ घटी २७ पल है। इसका लाघव गणित निम्नानुसार होगा।

चूँकि प्रतिपदा तिथि सोमवार को २ घटी ५८ पल तक रहती है अर्थात सोमवार को प्रतिपदा तिथि के उत्तरार्ध भाग के घटी पल प्राप्त होते हैं। अतः स्पष्ट है कि सोमवार को बव करण २ घटी ५८ पल तक रहेगा। इसके बाद बालव करण शुरू हो जायेगा, जो कि द्वितीया तिथि के पूर्वार्ध भाग में पड़ेगा। सोमवार में द्वितीया तिथि का मान, ६० घटी – २ घटी ५८ पल = ५७ घटी २ पल होगा तथा मंगलवार को द्वितीया तिथि ३ घटी ५९ पल तक है। अतः द्वितीय तिथि का कुल मान ६० घटी ५८ पल होगा, जिसका आधा ३० घटी २९ पल होता है। इस प्रकार सोमवार को २ घटी ५८ पल के बाद वालब करण शुरू होता है जो कि ३० घटी २९ पल तक रहता है

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतः बालव करण का मान, ३० घटी २६ पल + २ घटी ५८ पल = ३३ घटी २७ पल। श्री महावीर पञ्चांग में बालव करण का मान सिद्ध होता है।

इसी प्रकार श्री वेंकटेश्वर शताब्दी पञ्चांग में शक १६२२ वैशाख कृष्ण ४ मई २००० गुरूवार को अमावस्या तिथि की घटिका ६ पला ४० तथा नाग करण की घटिका ६ पला ४० दी हुई है। इसका लाघव गणित करते हैं।

ग्रहलाघव मतानुसार अमावस्या के पूर्वार्ध में चतुष्पद एवं उत्तरार्ध में नाग करण (स्थिर) आता है। चूँकि बुधवार को चतुर्दशी तिथि का मान १४ घटी ५२ पल है तब बुधवार को अमावस्या तिथि का मान = ६० घटी – १४ घटी ५२ पल = ४५ घटी ८ पल होगा।

अतः अमावस्या तिथि का कुलमान = ४५ घटी ८ पल + ६ घटी ४० पल = ५४ घटी ४८ पल होगा। इसका आधा २७ घटी २४ पल होगा। स्पष्ट है कि अमावस्या तिथि का आधे से अधिक भाग बुधवार को व्यतीत हो जाता है, तब गुरूवार को अमावस्या तिथि का शेष भाग ६ घटी ४० पल भोगा जाता है जो कि तिथि के उत्तरार्ध का हिस्सा है। अतः गुरूवार को नाग करण ६ घटी ४० पल तक रहेगा, जबकि नाग करण का कुल मान २७ घटी २४ पल होगा। इस प्रकार शताब्दी पञ्चांग में करण का मान सिद्ध होता है।

श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग में शक १६२२ वैशाख शुक्ल शनिवार (१३ मई २०००) को दसवीं तिथि की घटिका १० पला ३३ तथा गर करण की घटिका १० पला ३३ दी हुई है। इसका लाघवगणित करते हैं।

गततिथि ६ X २ = १८ तथा १८ ÷ ७ = शेषफल ४

बवादि से गिनने पर चौथा करण तैतिल आता है। अतः तैतिल दसवीं तिथि के पूर्वार्ध का करण एवं पाँचवा करण गर दसवीं तिथि के उत्तरार्ध का करण होगा। चूँकि शुक्रवार को नवमी तिथि का मान (६० घटी–१२ घटी ४८ पल) = ४७ घटी १२ पल होगा। अतः दसवीं तिथि का कुलमान, ४७ घटी १२ पल + १० घटी ३३ पल = ५७ घटी ४५ पल होगा। इसका आधा भाग २८ घटी ५२ पल ३० विपल होगा। इस प्रकार शुक्रवार को दसवीं तिथि के पूर्वार्ध का करण तैतिल का मान (१२ घटी ४८ पल से २८ घटी ५२ पल ३० विपल तक) ४१ घटी ४० पल ३० विपल होगा। इसके बाद

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दसवीं तिथि के उत्तरार्ध का करण गर की घटिका = ६० घटी–४१ घटी ४० पल ३० विपल = १८ घटी २९ पल ३० विपल। इस प्रकार गर करण का यह भाग शुक्रवार को व्यतीत हो गया।

तब शनिवार को गर करण का शेषभाग = २८ घटी ५२ पल ३० विपल – १८ घटी २९ पल ३० विपल = १० घटी ३३ पल होगा। अर्थात वैशाख शुक्ल शनिवार को दसवीं तिथि के उत्तरार्ध करण गर की घटिका १० एवं कला ३३ होगी। इस प्रकार वल्लभ मनीराम पञ्चांग में दिये गर करण की घटिका–पला सिद्ध होती है।

जोधपुर के अक्षांश रेखांश पर बने निर्णय सागर पञ्चांग, नीमच में शक १६२३ वैशाख कृष्ण पंचमी गुरूवार को कौलव करण की घटिका २३ पला २४ दी है। जबकि बुधवार को चतुर्थी तिथि का मान ५२ घटी ३२ पल एवं गुरूवार को पंचमी तिथि का मान ५४ घटी १५ पल दिया है। इसका लाघव गणित निम्नानुसार है।

गततिथि ४ + १५ = १९ कृष्णपक्ष की चतुर्थी।

१९ X २ = ३८ व ३८ ÷ ७ = शेषफल ३ अर्थात बवादि के गणना करने पर पंचमी के पूर्वार्ध में तीसरा करण एवं उत्तरार्ध में चौथा करण अर्थात पंचमी के पूर्वार्ध में कौलव करण एवं उत्तरार्ध में तैतिल करण होगा।

बुधवार को पंचमी तिथि का मान = ६० घटी–५२ घटी ३२ पल = ७ घटी २८ पल। अतः पंचमी तिथि का कुलमान=७ घटी २८ पल+५४ घटी १५ पल=६१ घटी ४३ पल। पंचमी तिथि का आधा भाग = ३० घटी ५१ पल ३० विपल।

इस प्रकार पंचमी के पूर्वार्ध भाग के करण कौलव का कुल मान ३० घटी ५१ पल ३० विपल होगा। चूँकि पंचमी तिथि की ७ घटी २८ पल बुधवार में व्यतीत होती हैं अर्थात कौलव करण की ७ घटी २८ पल बुधवार में व्यतीत होती हैं तब गुरूवार को कौलव करण का शेषभाग (३० घटी ५१ पल ३० विपल–७ घटी २८ पल) = २३ घटी २३ पल ३० विपल होगा। अतः सूर्योदय से २३ घटी २३ पल ३० विपल तक शनिवार को कौलव करण रहेगा। इस प्रकार निर्णय सागर पञ्चांग में कौलव करण का मान सिद्ध होता है।

इस प्रकार लाघव गणितानुसार उत्तर भारत के पञ्चांगों के तिथि के पूर्वार्ध भाग एवं उत्तरार्ध भाग के करणों की घटिका–पला की गणना करने पर हम पाते हैं

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कि अधिकांश पञ्चांगों में दिये करणों के मान शुद्ध हैं। चूँकि करण तिथि का मान परिवर्तित होता है तो करण के घटी–पल भी बदलेंगे। उत्तर भारत के पञ्चांगों में तिथि के घटी–पलात्मक मानों में एक रूपता नहीं है।

आगे हम उत्तर भारत के पञ्चांगों में दिये तिथि, नक्षत्र योग और करण की समीक्षा करेंगे एवं उनकी घटी–पलात्मक मानों में अन्तर के कारणों को स्पष्ट करेंगे। निम्नलिखित सारणी में विभिन्न पञ्चांगों में दिये शाके १९२२ चैत्र शुक्ल पक्ष के तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण के घटी–पलात्मक मानों को दर्शाया है–

सारणी क्रमांक–३५

पञ्चांग	तिथि	वार	समाप्तिकाल		नक्षत्र	समाप्तिकाल		योग	समाप्तिकाल		करण	समाप्ति
			घ. प.	घं. मि.		घ. प.	घं. मि.		घ. प.	घं. मि.		घ. प.
श्री हृषिकेष	७	मं.	१०:२७	६:५४	आर्द्रा	३:२१	७:३	अतिगण्ड	१२ : ४२	१० : ४६	वणिज	१० : २७
						५५:५६	२६:२५					
	८	बृ.	४:३४	७:३४	पुष्य	५५:३०	२७:५५	सुकर्मा	५ : ४	७ : ४६	बव	४ : ३४
	९	बु.	५४:२१	२९:१७	–	–	–	धृति	५२ : ४४	२८ : ४४	–	–
निर्णयसागर	७	मं.	५ : २६	८ : ३५	पुनर्व.	५४ : १७	२८: ७	अतिगण्ड	७ : १२	७ : १७	वणिज	५ : २६
	८	बु.	० : २०	६ : ३२	पुष्य	५१ : २७	२६: ५८	सुकर्मा	० : ५३	६ : ४५	बव	० : २०
	९	बु.	५५:४५	२८: ४१	–	–	–	धृति	१२ : ४८	१२ : ४८	–	–
श्री मार्त्तण्ड	७	मं.	४ : ५४	८ : १	पुनर्व.	५४:४३	२७:५७	अतिगण्ड	८ : ३८	९ : ७	वणिज	४ : ५४
	८	बु.	० : १	६ : ३	पुष्य	५२:६	२६:५४	सुकर्मा	० : ५३	६ : २४	बव	० : १
	९	बु.	५५:३६	२८:१७	–	–	–	धृति	५४ : ३२	२७ : ५१	–	–
श्री वल्लभ	७	मं	५ : १३	८ : ३५	पुनर्व.	५४ : ०	२८ : ६	अतिगण्ड	६ : ५७	९ : १७	वणिज	५ : १३
मनीराम	८	बु.	० : ३	६ : ३१	पुष्य	५१ : १०	२६:५८	सुकर्मा	० : १	६ : २८	बव	० : ३
	९	बु.	५५:२५	२८:४०	–	–	–	धृति	५३ : ३१	२७ : ५४	–	–
शताब्दी	७	मं.	५ : २०	८ : २२	पुनर्व.	५४:८	२७ : ५३	अतिगण्ड	७ : ४	९ : ४	वणिज	५ : २०
	८	बु.	० : १०	६ : १८	पुष्य	५१:१८	२६ : ४५	सुकर्मा	० : ५३	६ : ३५	बव	० : १०
	९	बु.	५५:२२	२८: २३	–	–	–	धृति	५२ : २६	२७ : १२	–	–
लहरी	७	मं.	–	८ : १	पुनर्व.	–	२७ : ५७	अतिगण्ड	–	९ : ७	वणिज	–
एफेमेरीज	८	बु.	–	६ : ३	पुष्य	–	२६ : ५४	सुकर्मा	–	६ : २४	बव	–
	९	बु.	–	२८:१७	–	–	–	धृति	–	२७ : ५१	–	–
विद्यापीठ	७	मं.	६ : ०	८ : २६	पुनर्व.	५४ : ५६	२८ : ५	अतिगण्ड	७ : ४२	९ : ८	वणिज	६ : ०
	८	बु.	० : ५२	६ : २५	पुष्य	५२ : १२	२६ : ५७	सुकर्मा	० : ४७	६ : २३	बव	० : ५२
	९	बु.	५६ :१४	२८:३४	–	–	–	धृति	५४ : २३	२७ : ४६	–	–
श्री ब्रजभूमि	७	मं.	४ : ५५	८ : १	पुनर्व.	५४ : ४५	२७ : ५७	अतिगण्ड	७ : ४०	९ : ७	वणिज	४ : ५५
	८	बु.	० : २	६ : ३	पुष्य	५२ : १०	२६ : ५४	सुकर्मा	० : ५५	६ : २४	बव	० : २
	९	बु.	५५ :३८	२८:१७	–	–	–	धृति	५४ : ३२	२७ : ५१	–	–

क्रमशः

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पञ्चांग	तिथि	वार	समाप्तिकाल		नक्षत्र	समाप्तिकाल		योग	समाप्तिकाल		करण	समाप्ति
			घ. प.	घं. मि.		घ. प.	घं. मि.		घ. प.	घं. मि.		घ. प.
श्री आर्यभट्ट	७	मं.	४ : ४५	८ : ०	पुनर्व.	५४ : ३२	२७ : ५५	अतिगण्ड	७ : ३२	६ : ७	वणिज	४ : ४५
	८	मं.	५६: ५५	३०: ४	—	—	—	—	—	—	—	—
	६	बु.	५५ :३०	२८: १७	पुष्य	५२ : २	२६ : ५४	सुकर्मा	० : ४५	६ : २३	बालव	२७ : ३७
									५४ : २७	२७ : ५२		
दिवाकर	७	मं.	४ : ४३	८ : १	पुनर्व.	५४ : ३३	२७ : ५७	अतिगण्ड	७ : २७	६ : ७	वणिज	४ : ४३
	८	मं.	५६: ४७	३०: ३	—	—	—	—	—	—	—	—
	६	बु.	५५ :२५	२८: १७	पुष्य	५१ : ५८	२६ : ५४	सुकर्मा	० : ४३	६ : २४	बालव	२७ : ३६
								धृति	५४ : २०	२७ : ५१		
विश्व	७	मं.	११: ५१	१०: २८	आर्द्रा	० : ३५	५ : ५७	अतिगण्ड	१४ : ४	२३ : २२	वणिज	११ : ५१
			—	—	पुनर्व.	५६ : १२	२८ : २६	—	—	—	—	—
	८	बु.	५: ५६	८ : ५	पुष्य	५३ : २७	२७ : ६	सुकर्मा	६ : १७	८ : १५	बव	५ : ५६
			—	—	—	—	—	धृति	५२ : ४५	२६ : २०	—	—
	६	गु.	० : १७	५: ४६	आश्ले.	५० : ४५	२६ : १	शूल	५२ : २		कौलव	० : १७

उपर्युक्त सारणी–३५ का अवलोकन करने पर स्पष्ट है कि उत्तर भारत के सभी पञ्चांगों में तिथि, नक्षत्र, योग, करण का समाप्तिकाल एक ही नहीं है। इन पञ्चांगों तिथ्यादि के मानों को लेकर भिन्नता है। लहरी ऐफेमरीज, मार्त्तण्ड पञ्चांग, श्री ब्रजभूमि पञ्चांग, श्री आर्यभट्ट पञ्चांग एंव दिवाकर पञ्चांग के अनुसार मंगलवार को सप्तमी तिथि भा.मा. समयानुसार प्रातः ८ बजकर १ मिनट पर समाप्त हो रही है तो श्री हृषिकेष पञ्चांग में प्रातः ६ बजकर ५४ मिनट पर (१ घंटा ५३ मिनट बाद), श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग, निर्णय सागर पञ्चांग में ३४ मिनट बाद (प्रातः ८ बजकर ३५ मिनट पर), विद्यापीठ पञ्चांग में २८ मिनट बाद (प्रातः ८ बजकर २६ मिनट पर) तथा विश्व पञ्चांग में २ घंटा २७ मिनट बाद (प्रातः १० बजकर २८ मिनट पर) समाप्त हो रही है। ऐसी ही स्थिति इन पञ्चांगों में नक्षत्र, योग एवं करण के समाप्तिकाल को लेकर है। इन पञ्चांगों मे तिथ्यादि के भारतीय मानक समय में समाप्तिकाल को लेकर एक रूपता नहीं है। पञ्चांगों में तिथ्यादि की यह स्थिति खेद का विषय है। इसका मूल कारण यह है ये पञ्चांग किसी एक सिद्धान्त ग्रन्थ के गणितानुसार नहीं बनते हैं। इन पञ्चांगों में स्पष्ट सूर्य चन्द्र के भोग्यांशों को लेकर इतना अन्तर नहीं है जितना कि इन पञ्चांगों में दिये तिथ्यादि के मानों में है। पञ्चांग निर्माण की विभिन्न पद्धतियों एवं मत मतान्तरों के कारण पञ्चांगों मे तिथि की क्षय–वृद्धि से व्रत–पर्वोत्सव इत्यादि में अन्तर आ जाता है। इसका कारण यह विषय उपहास का पात्र बनता जा रहा है। विद्वानों को इस दिशा में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(घ) लग्न (The Ascend or the rising sign) :- ज्योतिषशास्त्र में लग्न पञ्चांग का एक आवश्यक अंग है। जन्मकुण्डली अथवा प्रश्नकुण्डली ने लग्नभाव का फलित की दृष्टि से अत्यधिक महत्व है अतः इसको समझना परमावश्यक है। पृथ्वी के दैनिक पूर्वाभिमुख आवर्त्तन के कारण सम्पूर्ण राशिचक्र हमें पृथ्वी की पश्चिमाभिमुख प्रदक्षिणा करता हुआ प्रतीत होता है, जिससे एक अहोरात्र में सभी राशियाँ क्रमशः पूर्वी क्षितिज पर उदित तथा पश्चिमी क्षितिज पर अस्त होती हैं।[७०] किसी इष्टकाल में जो राशि पूर्वी क्षितिज पर उदित होती है वही उस काल की लग्न कहलाती है। कपिलेश्वर शास्त्री ने सूर्य सिद्धान्त के श्रीतत्वामृतभाष्य में लग्न की परिभाषा कुछ इस प्रकार से दी है–

लगतीति लग्नमिति व्युत्पत्याऽभीष्टकाले क्रान्तिवृत्तस्य यः।
प्रदेशः उदयक्षितिजे लगति तदेव राश्यादिकं लग्नम्।।[७१]

इस प्रकार लग्न दिन का वह भाग (अंशादि) है जितने में किसी एक राशि का पूर्वी क्षितिज पर उदय होता है। एक अहोरात्र (२४ घण्टे) में १२ राशियों का उदय होता है। उदीयमान १२ राशियाँ ही क्रमानुसार मेषादि १२ लग्न कहलाती हैं। मेष राशि के आरम्भ से उस लग्न बिन्दु पर्यन्त का जो अन्तर होता है, वही स्पष्ट लग्न होती है।

यदि राशि चक्र का आश्रयभूत क्रान्तिचक्र, नाड़ीवृत्त के साथ समतल तथा समानान्तर रहता तब सभी राशियों का उदयमान एक सा ही अर्थात २ घण्टा (या ५ घटी) होता, क्योंकि २४ घण्टा (या ६० घटी) में १२ राशियों (लग्नों) को उदित होना होता है, परन्तु व्यवहार में ऐसा नहीं है। चूँकि क्रान्तिवृत्त, नाड़ीवृत्त को लगभग २३° २८′ के कोंण पर प्रतिच्छेदन करता है, इसलिये १२ राशियों के उदयमान में न्यूनाधिकता है। क्रान्तिपातों के समीपस्थ राशियों के उदय में कम समय तथा दूरस्थ राशियों के उदय में अपेक्षाकृत अधिक समय लगता है। जिस राशि को प्राच्य क्षितिज के ऊपर आने में जितना समय लगता है, वही उस राशि (लग्न) का **उदयमान** कहलाता है। लग्न साधन के लिये इष्ट स्थान का उदयमान ज्ञात करना

---

७० उदयक्षितिजे लग्नमस्तं गच्छच्च तद्वशात्।
लंकोदयैर्यथा सिद्धं खमध्योपरि मध्यमम्।। सूर्यसिद्धान्त, ज्योतिषोपनिषदध्याय, श्लोक १३

७१ सूर्य सिद्धान्त– पृष्ठ–१३२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतिआवश्यक है। सूर्यसिद्धान्त एवं नारद पुराण में राशियों के उदयमान निकालने की प्रक्रिया दर्शायी है जो कि वैज्ञानिक एवं विद्वानों द्वारा स्वीकृत है।[७२] इसी प्रक्रिया के आधार पर उदयमान साधन किया जाता है। सूर्यसिद्धान्त, सिद्धान्तशिरोमणि[७३] ग्रहलाघव[७४] एवं केतकी ज्योतिर्गणित[७५] आदि ज्योतिषग्रन्थों के आधार पर प्राप्त लंकोदय (निरक्षोदय) उदयमान इस प्रकार है–

सारणी क्रमांक-३६

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	इकाई
सू.सि.	२७८	२६६	३२३	३२३	२६६	२७८	२७८	२६६	३२३	३२३	२६६	२७८	पल
ना.पु.	१६७०	१७६५	१६३५	१६३५	१७६५	१६७०	१६७०	१७६५	१६३५	१६३५	१७६५	१६७०	असु
सिद्धा. शिरो.	१६७०	१७६३	१६३७	१६३७	१७६३	१६७०	१६७०	१७६३	१६३७	१६३७	१७६३	१६७०	असु
ग्र. ला.	२७८	२६६	३२३	३२३	२६६	२७८	२७८	२६६	३२३	३२३	२६६	२७८	पल
केतकी	२७६	२६६	३२२	३२२	२६६	२७६	२७६	२६६	३२२	३२२	२६६	२७६	पल

(चूँकि १ पल = ६ असु)

प्राचीन ज्योतिर्विद लंका को भू–मध्यरेखा पर मानते थे। भू–मध्यरेखा पर दिनरात सदा समान अवधि के होते हैं तथा मेषादि राशियों का उदयमान भी सदा स्थिर रहता है। अपना देश लंका से उत्तर या दक्षिण में स्थित है। स्वदेशीय राशियों का उदयमान निकालने के लिये लंका (भूमध्य रेखा) पर राशियों का उदयमान जानना

---

७२ त्रिभद्युकर्णार्धगुणाः स्वाहोरात्रार्धमाजिताः,
क्रमादेकद्वित्रिभज्यास्तच्चापानि पृथक–पृथक्।
स्वाधोऽधः परिशोध्याथः मेषाल्लक्ड़ोदयासवः,
खागाष्टयोऽर्थगोऽगैकाः शरत्र्यक्डहिमांशवः।।
सूर्यसिद्धान्त, त्रिप्रश्ना, श्लोक ४२–४३ एवं नारद पुराण २/५४/१४२ परार्ध–१४४ पूर्वार्ध

७३ तेऽभ्राद्रिभूपा १६७० गुणगोऽद्रिचन्द्राः १७६३,
सप्ताग्निनदेन्दुमिता १६३७ अथैते।
क्रमोत्क्रमस्थाश्चरखण्डकैः स्वैः क्रमोत्क्रमस्थैश्च विहीनयुक्ताः।।
सिद्धान्त शिरोमणि, स्पष्टाधिकार, श्लोक ५८

७४ ग्रहलाघव, त्रिप्रश्नाधिकार, श्लोक १

७५ केतकी ग्रहगणित, त्रिप्रश्नाधिकार, श्लोक ११

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आवश्यक है अतः उसका पलादि मान ज्योतिषग्रन्थों में लिखा जाता है। ग्रहलाघवानुसार मेष, कन्या, तुला एवं मीन राशि का लंका में उदय २७८ पल (१६६८ असु) पर होता है तो केतकी मतानुसार त्रिकोणमिति के आधार पर इन राशियों का लंकोदय मान २७६ पल है। इसी प्रकार ग्रहलाघवानुसार मिथुन, कक्र, धनु एवं मकर राशियों का लंका में उदय ३२३ पल (१६३७ असु) पर होता है जबकि केतकी मतानुसार इन राशियों का लंकोदय मान ३२२ पल (१६३१ असु) है। वृष, सिंह, वृश्चिक एवं कुम्भ राशियों का लंकोदय मान ग्रहलाघव एवं केतकीय मतानुसार एक समान २६६ पल (१७६५ असु) है। ग्रहलाघव एवं सूर्य सिद्धान्त के लंकोदय लग्नमान समान है। ग्रहलाघव की रचना से पूर्व पृथ्वी का अक्षीय झुकाव २३° ३०′ से अधिक था अतः निकटतम २४ अंश मान कर इन उदयमानों की गणना की गई थी। सूर्य सिद्धान्त एवं मानसागरी में भी २४ अंश परमक्रांति मान कर सूर्यक्रान्ति की गणना की गई है।[७६] परन्तु आधुनिक मतानुसार वर्तमान में (१ जनवरी १६६६) पृथ्वी का वेधसिद्ध झुकाव २३ अंश २६ कला १४.२ विकला है अतः पृथ्वी के झुकाव में कालांतर में अंतर आ जाने के कारण प्राचीन एवं आधुनिक ज्योतिष गणित ग्रन्थों में दिये लंकोदय लग्नमानों में सूक्ष्मान्तर आ गया है।

संलग्न रेखाचित्रों से विषुवत रेखा पर विभिन्न लग्नमानों की उपरोक्त समानता की पुष्टि हो जाती है।

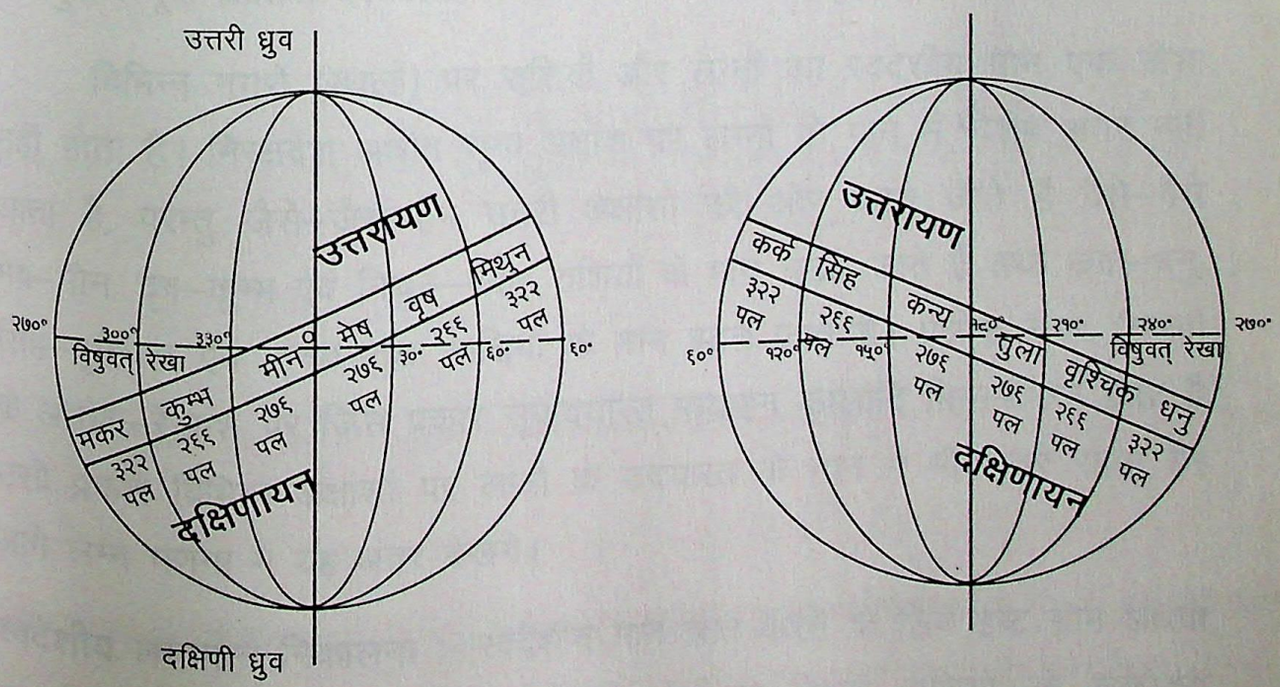

[७६] सूर्य सिद्धान्त, स्पष्टाधिकार, श्लोक २८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

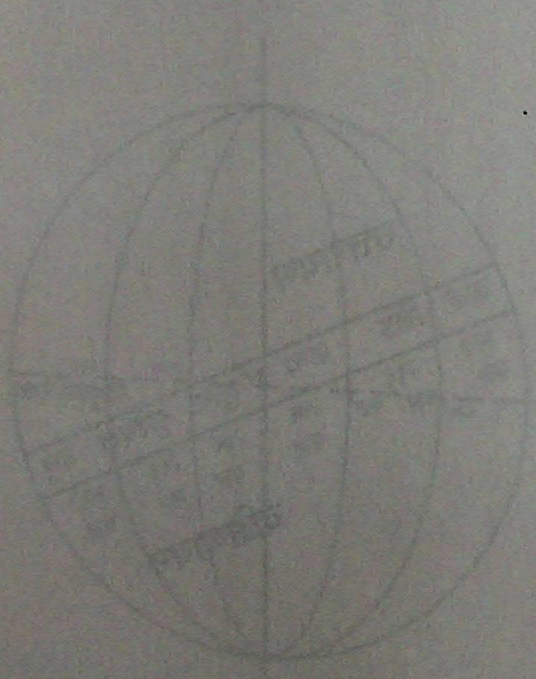

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पृथ्वी द्वारा अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व की ओर चक्कर लगाने से सभी राशियाँ आरोही क्रम मे पूर्व में उदय होती हैं तथा पश्चिम की ओर चलकर पश्चिम में अस्त होती दिखाई देती हैं। पृथ्वी की झुकी हुई धुरी के कारण सूर्यपथ (Ecliptic) तिरछा (Oblique) है, अतः सभी लग्नों का उदयमान एकसमान २–२ घंटे न होकर न्यनाधिक होता है। चूँकि एक राशि में ३० अंश होते हैं। तब सूर्यपथ के तिरछा होने के कारण ३०–३० अंश की देशान्तरीय पट्टी (एक राशि) में सूर्यपथ की लम्बाई असमान होती है। इसलिये मेष से मिथुन तक तथा मीन से मकर तक लग्नमान बढ़ते हैं और कक्र से कन्या तथा धनु से तुला तक लग्नमान घटते हैं। यदि पृथ्वी की धुरी झुकी हुई नहीं होती तो सभी लग्नमान समान अवधि २–२ घण्टे के होते। सभी लग्नमानों का योग २४ घण्टा या ६० घटी अथवा ३६०० पल होता है।

सूर्य लगभग एक माह तक एक राशि में रहता है। इसलिये एक राशि के तारे एक माह तक प्रातः काल में उदित होते हैं। सूर्य जिस राशि में होता है वही राशि उस माह प्रातः पूर्वी क्षितिज पर उदित होती है। सूर्य के अगली राशि में चले जाने पर अगली राशि प्रातःकाल पूर्वी क्षितिज पर उदित होती है। पृथ्वी के सन्दर्भ में सूर्य लगभग १° प्रतिदिन सूर्यपथ पर आगे बढ़ जाता है अर्थात प्रत्येक राशि का लग्न १–१ अंश प्रतिदिन बढ़ता जाता है। प्रत्येक अगले दिन वह अंश पिछले दिन की अपेक्षा औसतन ४ मिनट पहिले उदय हो जाता है। इस प्रकार सौर्यवर्ष में १२ राशियाँ क्रमानुसार पूर्वी क्षितिज पर उदित होती हैं।

विभिन्न नगरों (स्थलों) पर राशियों और लग्नों का स्वदेशीय मान एक जैसा नहीं होता है। निरक्षदेश अर्थात शून्य अक्षांश पर लग्नों के मान में विशेष अंतर नहीं आता है, परन्तु जैसे–जैसे हम उत्तरी अक्षांशों की ओर बढ़ते जाते हैं वैसे–वैसे मेष–मीन, वृष–कुम्भ एवं मिथुन–मकर राशियों के मान घटते जाते हैं तथा कक्र–धनु, सिंह–वृश्चिक एवं कन्या–तुला राशियों के मान बढ़ते जाते हैं। प्रत्येक नगर (स्थल) के अक्षांश–रेखांश पर जिस प्रकार सूर्योदयास्त मध्याह्न कालादि भिन्न–भिन्न होता है उसी प्रकार विभिन्न अक्षांशों पर लग्नों के उदयास्त के मान में भी अंतर रहता है। आगे लग्न गणना मे यह अंतर देखेंगे।

स्वदेशीय लग्नमान निकालना :- स्वदेशीय मान ज्ञात करने के लिये इष्ट ग्राम अथवा नगर के चरखण्ड लेकर उनको क्रम से मेष–वृष–मिथुन राशियों के लंकोदय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लग्नमानों (पलों) में से घटाते हैं तथा कक्र–सिंह–कन्या राशियों के लंकोदय लग्नमानों (पलों) में विपरीत क्रम से जोड़ते हैं। तब मेष राशि से कन्या राशि तक के स्वदेशीय उदयकाल प्राप्त होते हैं। इसी के विपरीत क्रम से तुला राशि से लेकर मीन राशि तक के उदयकाल प्राप्त होते हैं।[७७]

उदाहरणार्थ :– हम दिल्ली में सायन लग्नमान (स्वोदय लग्नमान) ज्ञात करते हैं। सर्वप्रथम हम दिल्ली के चरखण्ड ज्ञात करेंगे। चूँकि दिल्ली का अक्षांश २८° ३८′ उत्तरी है तब दिल्ली की पलभ = Tan (२८° ३८′) X १२ = ६ अंगुल ३३ व्यंगुल ६ प्रतिव्यंगुल होगी। इस पलभा को तीन स्थानों पर रखकर क्रमशः १०, ८ एवं १०/३ से गुणा करने पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पलात्मक चरखण्ड बनते हैं। अर्थात

दिल्ली के चरखण्ड–

प्रथम चरखण्ड = पलभा X १० = ६/३३/६ X १० = ६५/३१/०० पलादि

द्वितीय चरखण्ड = पलभा X ८ = ६/३३/६ X ८ = ५२/२४/४८ पलादि

तृतीय चरखण्ड = पलभा X $\frac{१०}{३}$ = ६/३३/६ X $\frac{१०}{३}$ = २०/५०/२० पलादि

यहाँ चरखण्डों की प्रथम संख्या (पलात्मक) को ग्रहण करते हैं तथा 'अर्धाधिके ग्राह्यं अर्ध्यल्पं च त्याजम्' के नियमानुसार ३० से अधिक विपलों का १ पल और ३० से कम विपलों को त्याग देने पर हमें दिल्ली के चरखण्ड क्रमशः ६६ पल, ५२ पल एवं २१ पल प्राप्त होंगे। इन चरखण्डों का वेधोपलब्ध पलात्मक राशिमान (निरक्षोदयमान) में संस्कार किया तो दिल्ली का स्वदेशीय लग्नमान आया–

राशि		लंकोदयमान		चरखण्ड संस्कार	दिल्ली का स्वदेशीमान		राशि ठहराव
मेष	=	२७६	–	६६	२१३	=	मीन १घं.२५मि.
वृष	=	२६६	–	५२	२४७	–	कुम्भ १घं.३६मि.
मिथुन	=	३२२	–	२१	३०१	=	मकर २घं.०मि.
कक्र	=	२६६	+	२१	३४३	=	धनु २घं.१७मि.
सिंह	=	२६६	+	५२	३५१	=	वृश्चि. २घं.२०मि.
कन्या	=	२७६	+	६६	३४५	=	तुला २घं.१८मि.
		योग– १८०० पल			योग– १८०० पल		११घं.५६मि.

[७७] स्वदेशचरखण्डोना भवन्तीष्टोदयासवः, व्यस्ता व्यस्तैर्युताः स्वैः स्वैः कर्कटाद्यास्ततस्त्रयः।
उत्क्रमेण षडेवैते भवन्तीष्टास्तुलादयः।। सूर्यसिद्धान्त, त्रिप्रश्नाधिकार, श्लोक ४४, ४५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिल्ली के उपरोक्त स्वदेशीय मान दिल्ली के सायन राशि लग्नमान हैं। इनमें अयनांश संशोधन करके निरयन लग्नमान ज्ञात किये जा सकते हैं। विद्यापीठ पञ्चांग में दिल्ली, गाजीयाबाद, मेरठ, नैनीताल, रोहतक इत्यादि शहरों के लिये स्वोदयपल २१३, २४७, ३००, ३४४, ३५१, ३४५ दिये हैं। तृतीय चरखण्ड २२ पल लेने पर (अक्षांश २८° ३६' से) यह मान प्राप्त होते हैं।

१. लग्नगणना :- सूर्य सिद्धान्त, सिद्धान्त शिरोमणि, करणकुतूहल, ताजिकनीलकण्ठी, ग्रहलाघव एवं केतकी ग्रहगणित इत्यादि ज्योतिष ग्रन्थों में लग्नानयन की विधि उधृत है। सूर्य सिद्धान्त, नारद पुराण एवं सिद्धान्त शिरोमणि में दर्शाई लग्न साधन की क्रिया प्रणाली एक समान है किन्तु कथन प्रणाली में अंतर है।[७८] भास्कराचार्य ने लग्न स्पष्ट करने की विधि बहुत ही सरल भाषा में समझाई है।[७९] यहाँ हम आचार्य गणेश दैवज्ञ के अनुसार लग्न साधन प्रणाली को समझेंगे, जिसका गणित सूर्य सिद्धान्त एवं केतकी ग्रहगणित से मिलता जुलता है।

आचार्य गणेश के मत से जिस दिन जिस समय का लग्न स्पष्ट करना हो उस दिन उस समय के सूर्य स्पष्ट में अयनांश जोड़कर सायन स्पष्ट सूर्य बनाते हैं। सायन सूर्य के भोग्यांशों को भोग्य राशि के स्वोदयपलों से गुणा करके ३० का भाग देने पर प्राप्त लब्धफल क्रमशः भोग्यकाल एवं भुक्तकाल के पल होते हैं। तत्पश्चात अपनी इष्ट घटियों के पल बनाकर उसमें से भोग्यकाल के पल घटायें, जो शेष रहे उसमें से जिसे राशि के स्वोदय पलों का गुणा किया था उससे आगे की राशि के

---

[७८] सूर्य सिद्धान्त, त्रिप्रश्नाधिकार, श्लोक ४६–४८ एवं नारद पुराण, पूर्वभाग २/५४/१४६–१४८

[७९] तात्कालिकार्केण युतस्य राशे–
रभुक्तभागैर्गणितोदयात् स्वात्।
भोग्यासबः खाग्निहृतादवाप्ता,
भुक्तासवो भुक्तलवैः स्युरेवम्।।
इष्टासु संघादपनीय भोग्यां–
स्तदग्रतो राश्युदयांश्च शेषम्।
अशुद्धहृत् खाग्निगुणं लवाद्य,
मशुद्धपूर्वेर्भवनैरजाद्यैः।।
युक्तं तनुः स्यादनांशहीन–
मिष्टासवोल्पा यदि भोग्यकेभ्य।
त्रिंशद्गुणाः स्वोदयभाजितास्ते,
लब्धांशयुक्तो रविरेव लग्नम्।। सिद्धान्त शिरोमणि, त्रिप्रश्ना, श्लोक २, ३, ४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्वोदय पलों को घटायें। जब तक घटते रहें तब तक क्रमानुसार स्वोदयपलों को घटाते जायें। जब घटाना सम्भव नहीं हो तब शेष पलों को ३० से गुणा करें तथा प्राप्त गुणनफल में से उस राशि के स्वोदयपलों का भाग दें जिसके स्वोदय पलों को घटाया नहीं जा सका हो। भाग देने पर जो अंशादि लब्धि प्राप्त हो उसमें मेष राशि से लेकर जितनी राशियों के स्वोदयपल घटाये हों उतनी राशियाँ जोड़ दें। प्राप्त योगफल में से अयनांश घटा दें शेषमान अपने अभीष्ट काल का राश्यादि लग्न होता है।[८०]

उदाहरणार्थ :– दिल्ली में १ अप्रैल १९९९ ई. को प्रातः १०:०० बजे लाघव गणितानुसार लग्न स्पष्ट करना है। विद्यापीठ पञ्चांगानुसार दिनांक १/४/९९ को दिल्ली में सूर्योदय ६:१६ बजे होता है तथा इस दिन प्रातः ६:२१ बजे (स्टै. समय) निरयन सूर्य स्पष्ट ११रा.:१७°:२':४२'' एवं दैनिक गति ५९ कला १३ विकला दी हैं। जबकि अयनांश २३° : ३८' : ०० हैं। तब–

लग्न स्पष्टकाल		१०:०० बजे	(भारतीय मानक समय में)
सूर्योदय	(–)	६:१६ बजे	(भारतीय मानक समय में)
घटाया		३:४४ बजे	शेष

$$\therefore \quad \text{इष्टकाल} = 3 \text{ घण्टा } 44 \text{ मिनट} \times \frac{5}{2} = 6 \text{ घटी } 20 \text{ पल}$$

अब तात्कालिक सूर्य स्पष्ट करते हैं। पञ्चांग में दिनांक १/४/९९ को प्रातः ६:२१ बजे का सूर्य स्पष्ट दिया है। अतः ३ घण्टा ३९ मिनट का चालन करेंगे।

$$\frac{\text{सूर्य की दैनिक गति } 59':13'' \times 3 \text{ घ. } 39 \text{ मि.}}{24} = 6 \text{ कला (लगभग)}$$

---

[८०] तत्कालार्कः सायनः स्वोदयघ्ना–
भोग्यांशाः खत्र्युद्धृता भोग्यकालः।
एवं यातांशैर्भवेद् यातकालो,
भोग्यः शोध्योऽभीष्टनाडोपलेभ्यः।।
तदनु जहीहि गृहोदयाँश्च शेषं
गगनगुणघ्नमशुद्ध हल्लवाद्यम्।
सहितमजादिगृ हैरशुद्धपूर्वे,
र्भवति विलग्नमदोऽयनांशहीनम्।। ग्रहलाघव, त्रिप्रश्नाधिकार, श्लोक २, ३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अतः तात्कालिक निरयन सूर्य स्पष्ट = ११रा.: १७° : २' : ४२'' + चालन ६ कला

= ११रा. : १७° : ११' : ४२''

पुनः तात्कालिक निरयन सूर्य स्पष्ट = ११रा. : १७° : ११' : ४२''

अयनांश = + ० : २३° : ३८' : ००''

सायन सूर्य स्पष्ट = ०रा. : १०° : ४६' : ४२''

यहाँ पर मेष राशि (०) का भुक्तांश १०° : ४६' : ४२'' प्राप्त होता है। तब

मेष राशि का भोग्यांश = ३० अंश – १०° : ४६' : ४२''

= १६° : १०' : १८''

अब मेष राशि के भोग्यांशों १६° : १०' : १८'' को दिल्ली में मेष के स्वोदयपल २१३ से गुणा करने पर–

१६° : १०' : १८'' X २१३ = ४०८३ पल ३३ विपल

इस गुणनफल में ३० का भाग देने पर

४०८३ पल ३३ विपल ÷ ३० = १३६ पल ७ विपल

यह मेष के भोग्य पल प्राप्त हुये।

अब इष्ट ६ घटी २० पल के पल बनाने पर ५६० पल इष्ट आता है। इष्ट पलों में से मेष के भोग्य पल घटायेंगे–

५६० पल – १३६ पल = ४२४ पल

चूँकि ऊपर मेष के उदयमान से गुणा करके भोग्यकाल निकाला था अतः उससे आगे वाली राशियों के उदयमानों को ४२४ पलों में से घटाते जायेंगे–

४२४ पल – वृष लग्न के २४७ पल = १८७ पल

चूँकि वृष राशि तक उदयमान इष्टकाल के पलों में से घट जाता है इसलिये वृष शुद्ध राशि एवं मिथुन अशुद्ध राशि कहलायेगी।

शेष १८७ पल को ३० से गुणा करने पर, १८६ X ३० = ५६१०

इस गुणनफल में अशुद्ध राशि के उदयमान से भाग देंगे–

५६१० ÷ ३०१ = १८° : ३८' : १६''

अतः सायन मिथुन लग्न के १८° ' ३८' : १६'' प्राप्त होते हैं अर्थात १ अप्रैल १९९९ ई. को प्रातः १०:०० बजे दिल्ली में सायन लग्न मान २रा. : १८° : ३८' : १६'' होगा। सायन लग्न में से इष्ट दिनांक का अयनांश घटा देने पर हमें निरयन लग्न स्पष्ट हो जायेगा। अर्थात

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निरयनलग्न स्पष्ट = सायन लग्न (२रा.:१८°:३८':१६'') – अयनांश (०:२३°:३८':०'')

निरयन लग्न स्पष्ट = १रा. : २५° : ०' : १६''

इस प्रकार १ अप्रेल १९९९ ई. को दिल्ली में प्रातः १०:०० बजे निरयन लग्न स्पष्ट वृषराशि पर २५ अंश १६ विकला प्राप्त होती है। विद्यापीठ पञ्चांग की दैनिक लग्न सारणी में १ अप्रैल १९९९ ई. को ८ बजकर २६ मिनट से १० बजकर २५ मिनट तक वृष लग्न को दर्शाया है।

स्पष्ट है कि हम चरखण्डों के संस्कार द्वारा लंकोदय लग्नमान से किसी भी स्थल या नगर के स्वोदयपल निकाल सकते हैं तथा उपर्युक्त विधियानुसार लाघव गणित से सायन सूर्य स्पष्ट द्वारा दिन के किसी भी भाग (समय) में निरयन लग्न स्पष्ट कर सकते हैं। आगे हम लाघव गणित के आधार पर उत्तर भारत के पञ्चांगों में दी गई दैनिक लग्न सारणी की समीक्षा करेंगे।

२. **दैनिक लग्न सारणी :-** वर्तमान में उत्तर भारत के सभी पञ्चांगों में दैनिक लग्न प्रवेश सारणी दी रहती है। इन पञ्चांगों में अपने निर्माण स्थल पर लग्न के प्रारम्भ अथवा समाप्त होने का समय घण्टा मिनट (स्टेण्डर्ड) मे दिया रहता है। दैनिक लग्न सारणी के द्वारा दिनरात में कभी भी लग्नराशि का बोध हो सकता है। ये सारणियाँ किसी स्थान विशेष के अक्षांश तथा अयनांश के आधार पर निर्मित होती है। जैसे–विश्वविजय एवं आर्यभट्ट पञ्चांगों में दी गई दैनिक लग्न सारणियाँ दिल्ली के अक्षांश २८° ३८' उत्तरी (पलभा ६/३३/६) पर निर्मित हुई हैं। भिन्न–भिन्न पञ्चांगों में दर्शाया लग्न का आरम्भ अथवा समाप्तिकाल एक समान न होकर कुछ मिनटों का अंतर दर्शाता है, जो कि एक विचारणीय विषय है।

उत्तर भारत में निरयन पञ्चांगों का निर्माण होता है जबकि भारतीय ज्योतिष के सिद्धान्त ग्रन्थों में निरपेक्ष देश (लंका) में सायन लग्नों का उदयमान दिया है। पञ्चांग निर्माण करते समय इन सायन लंकोदयासुओं को निरयन लंकोदयासुओं मे परिवर्तित करके दैनिक लग्नानयन करते हैं। यहाँ हम उत्तर भारत में पञ्चांगों में दी गई दैनिक लग्न सारणियों का तुलनात्मक अध्ययन करते हुये उनकी गणितीय शुद्धता का अवलोकन करेंगे। पूर्व में हमने अक्षांश २८° ३८' उत्तरी (पलभा ६/३३/६ अंगुलादि) के आधार पर सायन लग्न उदयासुओं को निकाला है। यहाँ हम अयनांश २३° ३८' के आधार पर दिल्ली में निरयन स्वोदय पल निकालते हैं। चूँकि अयनांश

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२३° ३८′ का अर्थ है कि संक्रान्ति से २३ दिन पूर्व ही सूर्य उस राशि में चला जाता है। पञ्चांग में मेष संक्रान्ति से वृष संक्रान्ति होने तक हम मेष राशि में ही सूर्य को मानते हैं परन्तु वास्तव में सायन सूर्य निरयन मेष संक्रान्ति होने के २३ दिन पहिले ही मेष राशि में आ जाता है।

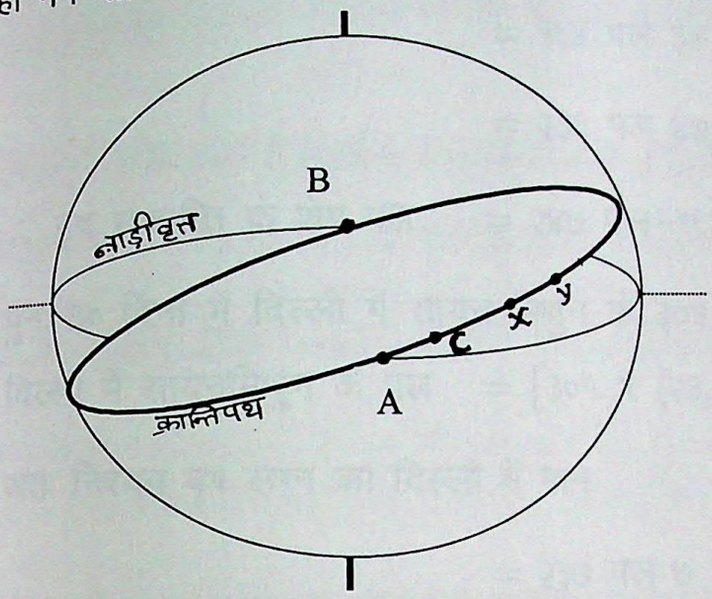

A. सायन मेषारम्भ बिन्दु
B. सायन तुलारम्भ बिन्दु
C. निरयन मेषारम्भ बिन्दु
AC. अयनांश
AX. सायन मेष राशि
CY. निरयन मेष राशि

चित्र क्रमांक–६

सायन और निरयन के विषय में हम पूर्व में उल्लेख कर चुके हैं। उत्तर भारत के पञ्चांगों में निरयन स्पष्ट सूर्य दिया रहता है। निरयन सूर्य एवं सायन सूर्य के बीच का अंतर अयनांश तुल्य होता है। इस प्रकार जो सूर्य मेष राशि में २३ दिन पूर्व ही आ चुका है वह निरयन संक्रान्ति के उपरान्त लगभग ७ दिन ही सायन मेष राशि मे रहेगा। तदन्तर पुनः २३ दिन तक सायन वृष राशि में भ्रमण करेगा। अतः प्रत्येक निरयन लग्न के दो खण्ड होते हैं, जिसमें पहला खण्ड अपने सायन स्वरूप का है जो ३० अंशों में से अयनांश घटाने पर प्राप्त होता है और दूसरा आगामी सायन लग्न का खण्ड है, जो अयनांश परिमित है। इस प्रकार सायन लग्न मान को निरयन लग्न मान बनाने के लिये त्रैराशिक लगाते हैं, अर्थात–

३० दिन (अंश) में दिल्ली में सायन मेष के २१३ पल होते हैं तो २३ दिन ३८ घटी में दिल्ली में सायन मेष के पल = [२१३ X (२३/३८)] ÷ ३० = १६७ पल ४७ विपल

∴ मेष संक्रान्ति के शेष पल = २१३ पल–१६७ पल ४७ विपल = ४५ पल १३ विपल

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

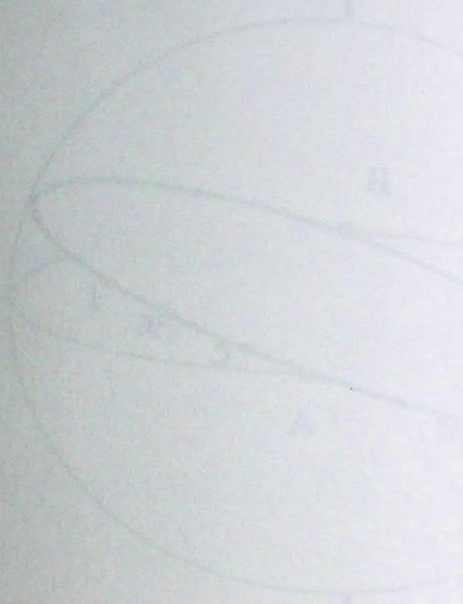

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुनः ३० दिनों में दिल्ली में सायन वृष के २४७ पल होते हैं तो २३ दिन ३८ घटी में दिल्ली में सायन वृष के पल = [२४७ X (२३/२८)] ÷ ३० =१६४ पल ३४ विपल

अतः निरयन मेषलग्न का दिल्ली में मान

= १६४ पल ३४ विपल + ४५ पल १३ विपल

= २३६ पल ४७ विपल

∴ वृष संक्रान्ति के शेष पल = २४७ पल–१६४ पल ३४ विपल=५२ पल २६विपल

पुनः ३० दिनों में दिल्ली में सायन मिथुन के ३०१ पल होते हैं तब २३दिन ३८घटी में दिल्ली में सायनमिथुन के पल = [३०१ X (२३/३८)] ÷ ३० = २३७ पल ७ विपल

अतः निरयन वृष लग्न का दिल्ली में मान

= २३७ पल ७ विपल + ५२ पल २६ विपल

= २८६ पल ३३ विपल

तथा मिथुन संक्रान्ति के शेष पल = ३०१ पल–२३७ पल ७ विपल= ६३ पल ५३विपल

आगे ३० दिनों में दिल्ली सायन कक्र के ३४३ पल होते हैं तब २३/३८ दिनों में दिल्ली में सायन कक्र के पल = [३४३ X (२३/३८)] ÷ ३०

= २७० पल १२ विपल

अतः नियन मिथुन लग्न का दिल्ली में मान

= २७० पल १२ विपल + ६३ पल ५३ विपल

= ३३४ पल ५ विपल

इसी प्रकार आगे भी कक्र आदि राशियों के भी निरयन लग्नमान निकालते हैं निम्नलिखित सारणी में दिल्ली के अक्षांश २८° ३८′ उत्तरी तथा अयनांश २३° ३८′ पर लग्नोदय मानों को दर्शाया है–

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

दिनांक १४ अप्रैल १९९९ ई. की निरयन लग्न सारणी क्रमांक ३७

क्र.	राशिनाम	सायन लग्नमान	निरयन लग्नमान	घंटा	मिनट	सेकण्ड
१	मेष	२१३ पल	२४० पल	१	३६	००
२	वृष	२४७ पल	२६० पल	१	५६	००
३	मिथुन	३०१ पल	३३४ पल	२	१३	३६
४	कक्र	३४३ पल	३४६ पल	२	१६	३६
५	सिंह	३५१ पल	३४६ पल	२	१८	२४
६	कन्या	३४५ पल	३४५ पल	२	१८	००
७	तुला	३४५ पल	३५० पल	२	२०	००
८	वृश्चिक	३५१ पल	३४५ पल	२	१८	००
९	धनु	३४३ पल	३१० पल	२	४	००
१०	मकर	३०१ पल	२५८ पल	१	४३	१२
११	कुम्भ	२४७ पल	२२० पल	१	२८	००
१२	मीन	२१३ पल	२१३ पल	१	२५	१२
योगफल		**२६०० पल**	**३६०० पल**	**२४**	**००**	**००**

इस प्रकार अयनांश २३° २८′ लेकर दिल्ली में निरयन लग्नमान प्राप्त होता है।

विद्यापीठ पञ्चांग के अनुसार निरयन सूर्य दिनांक १४ अप्रैल सन् १९९९ ई. को दिन में १० बजकर ३० मिनट पर मेष राशि में प्रवेश करता है। इस पञ्चांगानुसार १५ अप्रैल सन् १९९९ ई. को दिल्ली में सूर्योदय ६:०० बजे होता है तथा इस दिन लग्न प्रवेश सारणी के अनुसार लग्नमान निम्नानुसार दर्शाया है–

सारणी क्रमांक-३८

मेष	वृष	मिथुन	कक्र	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
५:५९	७:३३	९:२८	११:४२	१४:२	१९:२०	१८:३८	२०:५८	२३:१९	१:२०	३:४	४:३२
१:३९	१:५५	२:१४	२:२०	२:१८	२:१८	२:२०	२:१८	२:४	१:४४	१:२८	१:२५

इस सारणी क्रमांक–३८ में नीचे की पंक्ति में प्रत्येक निरयन लग्न का दिल्ली में ठहराव दर्शाया है। स्पष्ट है कि निरयन मेष लग्न का मान १ घंटा ३९ मिनट (२४०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पल), वृष लग्न का मान १ घंटा ५५ मिनट इत्यादि है। इस प्रकार हम देखते हैं कि विद्यापीठ पञ्चांग में दर्शाये गये निरयन लग्न के मान गणित द्वारा आगत १४ अप्रैल १९९९ ई. की निरयन लग्न सारणी–२ में दिये गये निरयन लग्नमानों से मिलते हैं। अतः इससे सिद्ध होता है कि विद्यापीठ पञ्चांग में दी गई दैनिक लग्न सारणी पूर्णतः शुद्ध है।

अब हम विद्यापीठ पञ्चांग, विश्वविजय पञ्चांग एवं आर्यभट्ट पञ्चांग में दी गई दैनिक लग्न प्रवेश सारणियों की तुलनात्मक समीक्षा करते हैं। विद्यापीठ पञ्चांग की दैनिक लग्न सारणी में प्रत्येक मास की प्रत्येक तारीख में प्रत्येक लग्न के प्रारम्भ होने का समय भारतीय स्टैण्डर्ड समय में घंटा–मिनट में दिया है तो आर्यभट्ट पञ्चांग एवं विश्वविजय पञ्चांग में प्रत्येक लग्न का समाप्तिकाल भारतीय स्टैण्डर्ड समय (घंटा–मिनट) मे दर्शाया है। शक सम्वत् १९२२ के विद्यापीठ, विश्वविजय एवं आर्यभट्ट पञ्चांगों के अनुसार १५ अप्रैल सन् २००० ई. को सूर्योदय एवं लग्नोदय की स्थिति निम्नलिखितानुसार है–

सारणी क्रमांक-३९

पञ्चांग	सू.उ.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
विद्यापीठ	६:००	५:५७	७:३३	९:२८	११:४२	१४:२	१९:२०	१८:३८	२०:५८	२३:१९	१:२०	३:४	४:३२
विश्ववि.	६:०१	५:५६	७:३२	९:२७	११:४०	१३:५६	१९:१७	१८:३४	२०:५३	२३:१२	१:१६	२:५६	४:२७
आर्यभट्ट	६:०१	५:५६	७:३२	९:२७	११:४०	१३:५६	१९:१७	१८:३४	२०:५३	२३:१२	१:१६	२:५६	४:२७

इस सारणी क्रमांक–३९ में द्वादश लग्नों का आरम्भकाल स्टैण्डर्ड घंटा–मिनट में दिखाया है। सारणी–३९ का अवलोकन करने पर स्पष्ट है कि विश्वविजय पञ्चांग तथा श्री आर्यभट्ट पञ्चांग के लग्नमान पूर्णतः मिलते हैं जबकि विद्यापीठ पञ्चांग में लग्न के प्रारम्भ होने का समय ३–४ मिनट बाद हैं। इस अंतर का कारण इनके लंकोदय मानों में सूक्ष्मांतर है। केतकी ज्योतिर्गणित एवं सूर्यसिद्धान्त के लंकोदमासु पूर्णतः नहीं मिलते है। अतः लंकोदयासु में सूक्ष्मांतर होने से स्वदेश में लग्नों के उदयमान में सूक्ष्मांतर आ जाता है।

काशी के श्री हृषिकेष पञ्चांग, श्री महावीर पञ्चांग एवं विश्व पञ्चांग में दी गई दैनिक लग्न प्रवेश सारणियों की तुलनात्मक समीक्षा करते हैं। शक सम्वत् १९२३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के इन पञ्चांगों के अनुसार ५ अप्रैल सन् २००१ ई. को सूर्योदय एवं लग्नोदय की स्थिति निम्नानुसार है–

सारणी क्रमांक-४०

पञ्चांग	सू.उ.	मेष	वृष	मिथुन	कक्र	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
श्रीहृषिकेष	५:४	६:१२	७:४६	९:४५	११:५६	२:१७	४:३१	६:४४	९:०	११:१७	१:२३	३:१०	४:४२
महावीर	५:४८	६:१५	७:५३	९:५१	१२:४	२:२१	४:३५	६:४८	९:४	११:२१	१:२६	३:१२	४:४३
विश्व	५:४६	६:१४	७:५२	९:४८	१२:१	१४:१६	१६:३३	१८:४६	२१:२	२३:१६	१:२६	३:११	४:४५

इस सारणी क्रमांक–४० में सूर्योदय तथा द्वादस लग्नों के प्रवेश का समय स्थानीय समय घंटा–मिनट में दिया है। स्थानीय समय को स्टैण्डर्ड समय मे बदलने के लिये काशी के पञ्चांगों में रे. अ. घंटा–मिनट में + अथवा – दिया रहता है। ५ अप्रैल सन् २००१ ई. को श्री हृषिकेष पञ्चांगानुसार रेलांतर + १ मिनट है। इसका अर्थ है कि पञ्चांगों में दिये सूर्योदय एवं लग्नों के प्रवेश काल घंटा–मिनट में + १ मिनट घटाने पर काशी में स्टैण्डर्ड समय में सूर्योदय एवं लग्नों का प्रवेशकाल प्राप्त होता है अर्थात काशी में ५ अप्रैल सन् २००१ ई. को स्टैण्डर्ड समयानुसार सूर्योदय ५:४७ बजे तथा मेष लग्न ६ बजकर ११ मिनट से ७ बजकर ४८ मिनट तक रहेगी और वृष लग्न ७ बजकर ४८ मिनट से आरम्भ होती है। उपर्युक्त सारणी क्रमांक–४० का अवलोकन करने पर हम देखते हैं कि तीनों पञ्चांगों–श्री हृषिकेष, श्री महावीर, विश्व पञ्चांग में दर्शाया लग्नों का आरम्भकाल एक समान न होकर २–३ मिनट आगे–पीछे है। जैसे–श्री हृषिकेष पञ्चांगानुसार मेष लग्न का आरम्भ ६ बजकर १२ मिनट (स्टैण्डर्ड) से होता है तो विश्व पञ्चांगानुसार २ मिनट बाद से तथा महावीर पञ्चांगानुसार ३ मिनट बाद से मेष लग्न का आरम्भ होता है। वास्तव में ऐसा नहीं होना चाहिये क्यों कि तीनों पञ्चांग काशी के अक्षांश पर निर्मित हैं।

यहाँ हम काशी मे निरयन लग्नमान ग्रहलाघव गन्थ के अनुसार ज्ञात करते हैं। श्री हृषिकेष पञ्चांगानुसार काशी का अक्षांश २५° १८′ उत्तरी (पलभा ५:४१ अंगुलादि) है। तब पलभा को क्रमशः १०, ८ तथा १०/३ से गुणा करने पर काशी में चर पल सिद्ध होंगे।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५ : ४१ X १० = ५६ : ५० प्रथम चरखण्ड स्वल्पान्तरात्
५ : ४१ X ८ = ४५ : ८ द्वितीय चरखण्ड स्वल्पान्तरात्
५ : ४१ X १०/३ = १८ : ५७ तृतीय चरखण्ड स्वल्पान्तरात्

इन चरखण्डों को ग्रहलाघवानुसार निरक्षोदय मान में संस्कार किया तो काशी में स्वदेशीय सायन लग्नमान प्राप्त होता है।

राशि	लंकोदयमान		चरखण्ड संस्कार		काशी का स्वदेशीयमान
मेष–मीन	२७८	–	५७	=	२२१
वृष–कुम्भ	२६६	–	४५	=	२५४
मिथुन–मकर	३२३	–	१६	=	३०४
कर्क–धनु	३२३	+	१६	=	३४२
सिंह–वृश्चिक	२६६	+	४५	=	३४४
कन्या–तुला	२७८	+	५७	=	३३५
योगफल	१८००		योगफल		१८००

शक सम्वत् १६२२ के हृषिकेष पञ्चांग की लग्न सारणी अयनांश २३°/४३'/४८'' के आधार पर बनी है। अतः अयनांश २३° ४४' लेकर काशी के स्वदेशीय सायन लग्न मानों से निरयन लग्नमानों को ज्ञात करते हैं –

३० अंश – अयनांश २३° ४४' = ६° १६'

निरयन में लग्न का मान = [(२२१ X ५ : १६) + (२५४ X २३ : ४४)] ÷ ३०
= २४७ पल ६ विपल = १ घंटा ३८ मिनट ५० सेकण्ड

निरयन वृष लग्न का मान = [(२५४ X ६: १६) + (३०४ X २३ : ४४)] ÷ ३०
= २६३ पल ३३ विपल= १ घंटा ५७ मिनट २५ सेकण्ड

निरयन मिथुन लग्न का मान = [(३०४ X ६ : १६) + (३४२ X २३ : ४४)] ÷ ३०
= ३३४ पल ४ विपल= २ घंटा १३ मिनट ३७ सेकण्ड

निरयन कक्र लग्न का मान = [(३४२ X ६ : १६) + (३४४ X २३ : ४४)] ÷ ३०
= ३४३ पल ३४ विपल= २ घंटा १७ मिनट २६ सेकण्ड

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसी प्रकार आगे गणित करने पर सिंह, कन्या एवं तुलादि लग्नों के निरयन काश्युदयमान प्राप्त होते हैं जिन्हें निम्नलिखित सारणी में दर्शाया है–

सारणी क्रमांक-४१

क्र.	राशिनाम	सायन लग्नमान	निरयन लग्नमान	घंटा	मिनट	सेकण्ड
१	मेष	२२१ पल	२४७ पल ६ विपल	१	३८	५०
२	वृष	२५४ पल	२६३ पल ३२ विपल	१	५७	२५
३	मिथुन	३०४ पल	३३४ पल ४ विपल	२	१७	२६
४	कक्र	३४२ पल	३४३ पल ३४ विपल	२	१७	२६
५	सिंह	३४४ पल	३३६ पल ३१ विपल	२	१४	४५
६	कन्या	३३५ पल	३३५ पल ०० विपल	२	१४	००
७	तुला	३३५ पल	३४२ पल ७ विपल	२	१६	५१
८	वृश्चिक	३४४ पल	३४२ पल ७ विपल	२	१६	५८
९	धनु	३४२ पल	३११ पल ५६ विपल	२	४	४७
१०	मकर	३०४ पल	२६४ पल २५ विपल	१	४५	४७
११	कुम्भ	२५४ पल	२२७ पल ५३ विपल	१	३१	१०
१२	मीन	२२१ पल	२२१ पल ०० विपल	१	२८	२४
योगफल		**३६०० पल**	**३६०० पल**	**२३**	**५६**	**००**

इस सारणी क्रमांक–४१ से स्पष्ट है कि काशी में प्रत्येक लग्न का ठहराव कितने घटी–पल अथवा घंटा–मिनट–सेकण्ड होता है। श्री हृषीकेष पञ्चांग, श्री महावीर पञ्चांग एवं विश्व पञ्चांग के अनुसार काशी में निरयन लग्नमान को घंटा–मिनट मे निम्नलिखित सारणी मे दर्शाया है।

सारणी क्रमांक-४२

पञ्चांग	मेष	वृष	मिथुन	कक्र	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	योग
श्रीहृषिकेष	१:३७	१:५६	२:१४	२:१८	२:१४	२:१३	२:१६	२:१७	२:६	१:४७	१:३१	१:३१	२४
महावीर	१:३८	१:५८	२:१३	२:१७	२:१४	२:१३	२:१६	२:१७	२:५	१:४६	१:३१	१:३१	२३:५६
विश्व	१:३८	१:५६	२:१३	२:१८	२:१४	२:१३	२:१६	२:१७	२:७	१:४५	१:३४	१:२६	२४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सारणी–४१ से स्पष्ट है कि तीनों पञ्चांगों में दिये लग्नमान समान हैं। किसी–किसी लग्न के मान में २–३ मिनट का सूक्ष्मान्तर है। ग्रहलाघव के सायन लंकोदय लग्नमानों को निरयन काश्युदयमान में परिवर्तित करने पर हम देखते हैं कि इन तीनों पञ्चांगों के लग्नमान सूक्ष्मांतर (२,३ मिनट) से मिलते हैं। इस सूक्ष्मांतर का कारण इन पञ्चांगों में दर्शाये अयनांश का भिन्न होना तथा काशी के सायन लग्नमानों मे अंतर होना है। तीनों पञ्चांगों– हृषीकेष, महावीर एवं विश्व पञ्चांग में काशी के अक्षांश एवं पलभा को अलग–अलग दर्शाया है। जैसे विश्व पञ्चांगानुसार काशी का अक्षांश २५° : १५′ उत्तरी, श्री हृषीकेष पञ्चांगानुसार काशी का अक्षांश २५° : १८′ उत्तरी तथा श्री महावीर पञ्चांग में काशी का अक्षांश २५° : १८′ उत्तरी दिया है। इसी प्रकार इन पञ्चांगों में प्रयुक्त काशी की पलभा के मान में सूक्ष्मांतर है। श्री महावीर पञ्चांग में काशी की पलभा ५ : ४५ अंगुलात्मक दी है, जब हमने काशी की पलभा का मान ५ : ४१ अंगुलात्मक ग्रहण किया है।

पलभा के मान में सूक्ष्मांतर होने से चरखण्डों में सूक्ष्मांतर आ जाता है। फलतः काशी में स्वदेशीय लग्नमानों में सूक्ष्मांतर आ जाता है। इस सूक्ष्मांतर को समाप्त करने के लिये हमें एक ही अयनांश एवं पलभा का मान प्रयुक्त करना होगा। यही कारण है कि भिन्न–भिन्न स्थानों (अक्षांशों) पर अयनांश एवं पलभा बदलने से लग्नमान भी परिवर्तित हो जाते हैं। एक ही दिन में एक ही लग्न का कलकत्ता में आरम्भ काल कुछ होगा तो उसी दिन उसी लग्न का दिल्ली में आरम्भकाल कुछ भिन्न होगा।

इसी प्रकार हम निर्णय सागर पञ्चांग, नीमच में दी गई दैनिक लग्न प्रवेश सारणी की गणितीय शुद्धता का परीक्षण करते हैं। इस पञ्चांग में प्रत्येक मास के प्रत्येक दिन की १२ लग्नों का आरम्भ काल भा. स्टै. समय में दर्शाया है। दिनांक १५ अप्रैल २००१ को इस पञ्चांगानुसार १२ लग्नों का प्रवेश काल इस प्रकार है–

सारणी क्रमांक-३६

पञ्चांग	सू.उ.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
	घ.मि.	प्रातः	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	दिवा	सांय	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि	रात्रि
नि.सागर	६:२०	६:१७	७:५४	६:५०	१२:३	२:२२	४:४६	६:५४	६:१२	११:२६	१:३४	३:१६	४:५०
ल.ठहराव	–	१:३७	१:५६	२:१३	२:१६	२:२७	२:६	२:१८	२:१७	२:५	१:४५	१:३१	१:२७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निर्णय सागर पञ्चांग का निर्माण जोधपुर के अक्षांश २६° : १६' उत्तरी पर होता है। इस पञ्चांग में दी गई लग्न सारणियाँ २४ अयनांश के आधार पर बनी हैं। निरक्षोदय या लंकोदयमान ' लंकोदया विघटिका गजमानिगोक्ड़दस्त्रा, त्रिपक्ष दहना"–इस प्रमाण से २७८ पल मेष, २६६ पल वृष, ३२३ पल मिथुन, ३२३ पल कक्र, २६६ पल सिंह, २७८ पल कन्या तथा तुला का लंकोदय मान एवं २६६ पल वृश्चिक, ३२३ पल धुन, ३२३ पल मकर, २६६ पल कुम्भ एवं २७८ पल मीन का स्थिर उदयमान होता है। यह लंकोदयमान भास्काराचार्यकृत सिद्धान्त शिरोमणी के अनुसार है। स्वदेशी उदयमान निकालने के लिये हम जोधपुर में चरखण्ड ज्ञात करते हैं–

चूँकि जोधपुर की पलभा = ५/५६/६

५/५६/६ X १० = ५६/२१ प्रथम चरखण्ड स्वलपांतरात्

५/५६/६ X ८ = ४७/२८ द्वितीय चरखण्ड स्वलपांतरात्

$५/५६/६ X \frac{१०}{३}$ = १६/४७ तृतीय चरखण्ड स्वलपांतरात्

इन चरखण्डों को सिद्धान्त शिरोमणि ग्रन्थानुसार निरक्षोदय मान में संस्कार करने पर जोधपुर में स्वदेशीय सायन लग्नमान प्राप्त हो जाते हैं –

राशिनाम	लंकोदयमान		चरखण्ड संस्कार		जोधपुर का स्वदेशी मान
मेष–मीन	= २७८ पल	–	५६/२१ पल	=	२१८/३६ पल
वृष–कुम्भ	= २६६ पल	–	४७/२८ पल	–	२५१/३२ पल
मिथुन–मकर	= ३२३ पल	–	१६/४७ पल	=	३०३/१२ पल
कक्र–धनु	= ३२३ पल	+	१६/४७ पल	=	३४२/४७ पल
सिंह–वृश्चिक	= २६६ पल	+	४७/२८ पल	=	३४६/२८ पल
कन्या–तुला	= २७८ पल	+	५६/२१ पल	=	३३७/२१ पल
योगफल	१८०० पल				१८००/००

प्राप्त स्वदेशी (जोधपुर के) सायन लग्नमानों से निरयन लग्नमान प्राप्त करते हैं–

३०° – अयनांश २४° = ६°

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

निरयन मेष लग्न का मान = [(२१८/३६ X ६) + (२५१/३२ X २४)] ÷ ३०
= २४४ पल ५७ विपल= १ घंटा ३७ मिनट ५६ सेकण्ड

निरयन वृष लग्न का मान = [(२५१/३२ X ६) + (३०३/१३ X २४)] ÷ ३०
= २६२ पल ५२ विपल= १ घंटा ५७ मिनट ६ सेकण्ड

निरयन मिथुन लग्न का मान = [(३०३/१३ X ६) + (३४२/४७ X २४)] ÷ ३०
= ३३४ पल ५२ विपल= २ घंटा १३ मिनट ५७ सेकण्ड

निरयन कक्र लग्न का मान = [(३४२/४७ X ६) + (३४६/२८ X २४)] ÷ ३०
= ३४५ पल ४३ विपल= २ घंटा १८ मिनट १७ सेकण्ड

इसी प्रकार सिंह, तुलादि लग्नों का जोधपुर में ठहराव (काल) ज्ञात करते हैं। तब जोधपुर में १५ अप्रैल २००१ को १२ लग्नों का मान इस प्रकार प्राप्त होता है –

सारणी क्रमांक-४४

क्र.	राशिनाम	सायन लग्नमान	निरयन लग्नमान	जोधपुर में ठहराव		
		पल विपल	पल विपल	घंटा	मिनट	सेकण्ड
१	मेष	२७८ : ३६	२४४ : ५७	१	३७	५६
२	वृष	२५१ : ३२	२६२ : ५२	१	५७	०६
३	मिथुन	३०३ : १३	३३४ : ५२	२	१३	५७
४	कक्र	३४२ : ४७	३४५ : ४३	२	१८	१७
५	सिंह	३४६ : २८	३३६ : १०	२	१५	४०
६	कन्या	३३७ : २१	३३७ : २१	२	१४	५६
७	तुला	३३७ : २१	३४४ : ३८	२	१७	५१
८	वृश्चिक	३४६ : २८	३४३ : ३१	२	१७	२४
९	धनु	३४२ : ४७	३११ : ८	२	४	२७
१०	मकर	३०३ : १३	२६१ : ५२	१	४४	४५
११	कुम्भ	२५१ : ३२	२२५ : १३	१	३०	०६
१२	मीन	२१८ : ३६	२१८ : ३६	१	२७	२८
योगफल		३६०० : ००	३५९६ : ५७	२३	५६	५६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सारणी क्र. ४३ तथा सारणी क्र. ४४ का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि निर्णय सागर पञ्चांग में दिनांक १५ अप्रैल २००१ को दर्शाया सिंह एवं कन्या लग्न का समय शुद्ध नही है। इस पञ्चांगानुसार इष्ट दिन में सिंह एवं कन्या लग्न का जोधपुर में ठहराव क्रमशः २ घंटा २७ मिनट तथा २ घंटा ६ मिनट दिखाया है जबकि शुद्ध गणितानुसार इष्ट दिन को सिंह एवं कन्या लग्न का जोधपुर में ठहराव क्रमशः २ घंटा १६ मिनट तथा २ घंटा १५ मिनट प्राप्त होता है। निर्णय सागर पञ्चांग में १५ अप्रैल २००१ को दर्शाया शेष लग्नों का ठहराव काल शुद्ध प्राप्त होता है।

इसी प्रकार हम उत्तर भारत के किसी भी पञ्चांग में दैनिक लग्न प्रवेश सारणी की शुद्धता का मूल्यांकन कर सकते हैं।

आगे विद्यापीठ पञ्चांग के आधार पर उत्तर भारत के अन्य पञ्चांगों– श्रीमार्त्तण्ड पञ्चांग, पञ्चांग दिवाकर श्री व्रजभूमि पञ्चांग मे दी गई दैनिक लग्न प्रवेश सारणियों की तुलनात्मक समीक्षा करते हैं। उपरोक्त चारों पञ्चांगों में दिनांक १५/४/२००० को १२ लग्नों का प्रवेश काल स्टैण्डर्ड समय में इस प्रकार से दिखाया है–

सारणी क्रमांक-४५

पञ्चांग	मेष	वृष	मिथुन	कक्र	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
विद्यापीठ	५:५७	७:३३	६:२८	११:४२	१४:२	१६:२०	१८:३८	२०:५८	२३:१६	१:२०	३:४	४:३२
मार्त्तण्ड	५:५२	७:२८	६:२२	११:३७	१३:५६	१६:१६	१८:३६	२०:५८	२३:१८	१:२३	३:४	४:२६
दिवाकर	५:५६	७:३२	६:२७	११:४२	१४:२	१६:२२	१८:४२	२१:४	२३:२४	१:२८	३:६	४:३४
श्री वृजभूमि	५:५५	७:३२	६:२७	११:४३	१४:२	१६:१६	१८:३५	२०:५४	२३:११	१:१५	२:५६	४:२८

विद्यापीठ पञ्चांग, श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग, पञ्चांग दिवाकर एवं ब्रजभूमि पञ्चांग में दी गई दैनिक लग्न प्रवेश सारणी भिन्न–भिन्न अक्षांश एवं अयनांश पर आधारित होने के कारण लग्नों के प्रवेश काल (स्टैण्डर्ड) में कुछ मिनटों का अंतर है। चंडीगढ़ के अक्षांश ३०° ४४' उत्तरी पर बनी श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग में दी गई दैनिक प्रवेश सारणी को भारत के अन्य प्रमुख नगरों की लग्न प्रवेश सारणी बनाने के लिये शक १९२३ के श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग के पेज २०८ पर संस्कार सारणी दी है। संस्कार सारणी के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनसुार श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग से दिल्ली, जालंधर एवं मथुरा में लग्न प्रवेशकाल में संस्कार करना होगा–

सारणी क्रमांक-४६

पञ्चांग	मेष	वृष	मिथुन	कक्र	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
दिल्ली	+ ३	+ ३	+ ३	+ १	− १	− ३	− ५	− ६	− ६	− ४	− २	०
जालंधर	+ ५	+ ५	+ ५	+ ६	+ ६	+ ६	+ ६	+ ६	+ ६	+ ६	+ ६	+ ५
मथुरा	+ ३	+ ४	+ ३	+ १	− २	− ६	− ६	− १०	− १०	− १०	− ४	०

चूँकि १५ अप्रैल २००० ई. को चंडीगढ़ में कक्र लग्न १३ बजकर ५६ मिनट पर समाप्त होती है तब जालंधर में कक्र लग्न १४ बजकर ४ मिनट पर समाप्त होगी। क्योंकि संस्कार सारणी में कक्र लग्न के नीचे तथा जालंधर के आगे +६ मिनट लिखा है। इसी प्रकार १५ अप्रैल २००० ई. को दिल्ली में कक्र लग्न १४ बजे (अर्थात दिन के २ बजे) समाप्त होती है किन्तु विद्यापीठ पञ्चांग में १५ अप्रैल २००० को कक्र लग्न का समाप्ति समय १४ बजकर २ मिनट दिया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राप्त कक्र लग्न का मान दोनों पञ्चांगों मे दिये कक्र लग्न के मान से २ मिनट का अंतर रखता है। साथ ही विद्यापीठ पञ्चांग एवं दिवाकर पञ्चांग १५ अप्रैल २००० ई. को कक्र लग्न का समाप्तिकाल एक समान दिया है जबकि व्यवहार में ऐसा होना असम्भव है। इस प्रकार हम देखते हैं कि उत्तर भारत के इन पञ्चांगों में दी गई लग्न प्रवेश सारणी में २, ४ मिनट का अंतर होता है अथवा कुछ मिनटों की अशुद्धि पाई जाती है। इन लग्न सारणियों में अंतर होने का एक प्रमुख कारण भिन्न–भिन्न अयनांश का प्रयुक्त होना है। अतः लग्न सारणियों में पाये जाने वाले अंतर को समाप्त करने के लिये एक निश्चित अयनांश का उपयोग किया जाना आवश्यक है।

३. **लग्नसारणी** :- लग्न सारणियाँ दो प्रकार की होती है–एक तो निरयन लग्न सारणी, दूसरी सायन लग्न सारणी। सायन लग्न सारणी प्रायः प्रत्येक पञ्चांग में दी रहती है जो कि किसी स्थान विशेष के स्वोदयपलों पर निर्मित होती है। यहाँ हम दोनों प्रकार की लग्न सारणियाँ बनाना बतलाते हैं। सायन लग्न सारणी में अयनांश परिवर्तित होने से प्रतिवर्ष उसमें सूक्ष्मान्तर आ जाता है, किन्तु निरयन लग्न सारणी हमेशा एक ही बनी रहती है तथा सदा उपयोग में आती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(अ) निरयन लग्न सारणी बनाना :- निरयन लग्न सारणी बनाने के लिये जिस स्थान की लग्न सारणी निर्मित करनी हो वहाँ की पलभा ज्ञात कर स्वोदयपल निकालते हैं। चूँकि एक राशि में ३० अंश होते है इसलिये प्रत्येक राशि के स्वोदयपलों को ३० अंशों में वाँटा जाता है। इस प्रकार किसी राशि के स्वोदयपल में ३० का भाग देने से जो उत्तर आता है उसे ध्रुव कहते हैं। इसी ध्रुव के आधार पर सारणी बनाई जाती है।

उदाहरणार्थ :– दिल्ली का अक्षांश २८° ३८′ तथा पलभा ६/३३/६ अंगुलात्मक है तब स्वोदयपल इस प्रकार होंगे–

सारणी क्रमांक-४७

राशिनाम	लंकोदय पल	चरखण्ड पल : विपल	स्वोदय पल : विपल	ध्रुवांक (राशि का ३०वाँ भाग) पल : विपल : अनुपल
मेष–मीन	२७६	६५ : ३१	१२३ : २६	७ : ६ : ५८
वृष–कुम्भ	२६६	५२ : २५	२४६ : ३५	८ : १३ : १०
मिथुन–मकर	३२२	२० : ५०	३०१ : १०	१० : २ : २०
कक्र–धनु	३२२	२० : ५०	३४२ : ५०	११ : २५ : ४०
सिंह–वृश्चिक	२६६	५२ : २५	३५१ : २५	११ : ४२ : ५०
कन्या–तुला	२७६	६५ : ३१	३४४ : ३१	११ : २६ : २

अब एक सारणी चक्र इस प्रकार बनाते हैं जिसमें सबसे ऊपर वाली पंक्ति में ३० कोठे (खाने) बनाकर उनमें ० से २६ अंश तक लिखते हैं तथा वायीं ओर के प्रथम स्तम्भ में मेष से मीन तक १२ राशियाँ लिखते हैं। मेष के नीचे ०, वृष के नीचे १, मिथुन के नीचे २ इत्यादि लिखते हैं। मेष के नीचे ० लिखने का अर्थ है कि ० राशि अर्थात मीन राशि पूर्ण होकर ये अंश मेष के कहलायेंगे।

अब मेष के ० अंश के नीचे ० घटी ० पल ० विपल ० अनुपल लिखते हैं और इसमें आगे प्रत्येक राशि का ध्रुवांक जोड़ते जाते हैं, जैसे– ० से मेष का ध्रुवांक ७ पल ६ विपल ५८ अनुपल जोड़ा तो यही आया और उसे १ अंश के नीचे मेष के आगे लिखा। फिर इसमें इसी ध्रुवांक को पुनः जोड़ा तो १४ पल १३ विपल ५६ अनुपल

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

आया इसे २ अंश के नीचे लिखा तथा ३ अंश के नीचे २१ पल २० विपल ५४ अनुपल लिखते हैं। इस प्रकार मेष का ध्रुवांक २६ अंश तक जोड़ते जाना हैं। अंत में ध्रुवांक जोड़ने से ३ घटी २५ पल २२ विपल २ अुनपल प्राप्त हुआ, इसे २६ अंश के नीचे रखा। फिर इसी में मेष का ध्रुवांक पुनः जोड़ा तो ३ घटी ३३ पल २६ विपल आया। इसको वृष के ० अंश के नीचे लिखा।

इससे आगे फल ३ घटी ३३ पल २६ विपल ० अनुपल में वृष का ध्रुवांक ८ पल १३ विपल १० अनुपल जोड़ते हैं तो ३ घटी ४१ पल ४२ विपल १० अनुपल आया, इसे वृष के १ अंश के नीचे लिखा। इस प्रकार आगे वृष का ध्रुवांक २६ अंश तक जोड़ते जाते हैं और क्रमानुसार प्राप्त फल रखते जाते हैं। अंत में २६ अंश के नीचे ७ घटी ३१ पल ५० विपल ५० अनुपल आया। इसमें वृष का ध्रुवांक जोड़ा तो ७ घटी ४० पल ४ विपल आया, इसे मिथुन के ० अंश के नीचे लिखते हैं। इससे आगे मिथुन का ध्रुवांक १० पल २ विपल २० अनुपल जोड़ते जाते हैं। मिथुन का ध्रुवांक २६ अंश तक जोड़ने के उपरांत आगे की कक्र राशि उपर्युक्त निर्देशानुसार कर्क का ध्रुवांक जोड़ा जायेगा। इसी रीति को ध्यान में रखते हुये आगे की राशियो का ध्रुवांक जोड़कर निरयन लग्न सारणी को बनाया जाता है।

नीचे दिल्ली के स्वोदयपलों पर निरयन लग्न सारणी को दर्शाया है। बहुधा पञ्चांगों में दी गई सारणियों के अंक घटी पल अथवा घटी–पल–विपल में होते हैं। इसलिये इस सारणी में हमने चौथा अंक अनुपल छोड़ दिया है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

निरयन लग्न सारणी

अक्षांश २८° ३८', पलभा ६/३३/६

सायन मेषारम्भ स्वोदयपल– २७६, २६६, ३२२

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ध्रुव
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	०
मे प.	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	०	८	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	५	१२	१९	२६	७
ष वि.	०	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	५७	५४	१	८	१५	२२	६
० अ.	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	१४	१२	१०	८	६	४	२	५८
घ.	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	०
वृ प.	३३	४१	४९	५८	६	१४	२०	३१	३९	४७	५५	३	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५८	७	१५	२३	३१	८
ष वि.	२९	४२	५५	८	२१	३४	४८	१	१४	२७	४०	५३	७	२०	३३	४६	५९	१२	२६	३९	५२	५	१८	१३	४५	५८	११	२४	३७	५०	१३
१ अ.	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	१०
मि घ	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	०
थु प.	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	१२
न वि.	४	९	८	११	१३	१५	१८	२०	२२	२५	२७	२९	३२	३४	३६	३९	४१	४३	४५	४८	५०	५३	५५	५७	०	२	४	७	९	११	२
२ अ.	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	२०
घ.	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	०
क प.	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	१
र्क वि	१४	३९	५	३१	५६	२२	४८	१३	३९	५	३०	५६	२०	४७	१३	३९	४	३०	५६	२१	४७	१३	३८	४	३०	५५	२१	४७	१२	३८	५
३ अ.	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०
घ.	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	०
सिं प	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१६	२८	४०	५२	३	११
ह वि.	४	४६	२९	१२	५५	३८	२१	३	४६	२९	१२	५५	३८	२०	३	४६	२९	१२	५५	३७	२०	३	४६	२९	१२	५४	३७	२०	३	४६	४२
४ अ.	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	५०
क घ.	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	०
≈ प.	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	११
या वि	२९	५८	२७	५६	२५	५४	२३	५२	२१	५०	२९	४८	१७	४६	१५	४५	१४	४३	१२	४१	१०	३९	८	३७	६	३५	४	३३	२	३१	२९
५ अ.	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२	२४	२६	५८	३०	३२	३४	६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	२

क्रमशः...२

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Kareumdi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

| ૦ | ૧ | ૨ | ૩ | ૪ | ૫ | ૬ | ૭ | ૮ | ૯ | ૧૦ | ૧૧ | ૧૨ | ૧૩ | ૧૪ | ૧૫ | ૧૬ | ૧૭ | ૧૮ | ૧૯ | ૨૦ | ૨૧ | ૨૨ | ૨૩ | ૨૪ | ૨૫ | ૨૬ | ૨૭ | ૨૮ | ૨૯ | ૩૦ | ૩૧ | ૩૨ | ૩૩ | ૩૪ | ૩૫ | ૩૬ | ૩૭ | ૩૮ | ૩૯ | ૪૦ | ૪૧ | ૪૨ | ૪૩ | ૪૪ | ૪૫ | ૪૬ | ૪૭ | ૪૮ | ૪૯ | ૫૦ | ૫૧ | ૫૨ | ૫૩ | ૫૪ | ૫૫ | ૫૬ | ૫૭ | ૫૮ | ૫૯ | ૬૦ | ૬૧ | ૬૨ | ૬૩ | ૬૪ | ૬૫ | ૬૬ | ૬૭ | ૬૮ | ૬૯ | ૭૦ | ૭૧ | ૭૨ | ૭૩ | ૭૪ | ૭૫ | ૭૬ | ૭૭ | ૭૮ | ૭૯ | ૮૦ | ૮૧ | ૮૨ | ૮૩ | ૮૪ | ૮૫ | ૮૬ | ૮૭ | ૮૮ | ૮૯ | ૯૦ | ૯૧ | ૯૨ | ૯૩ | ૯૪ | ૯૫ | ૯૬ | ૯૭ | ૯૮ | ૯૯ | અંક |
|---|---|---

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सारणी की शुद्धता हेतु सभी राशियों के स्वोदय पलों को घटी–पल–विपल में लिखते हैं। मेष का पूरा स्वोदय घटी–पल जितना होगा वही अंक वृष राशि के ० अंश के नीचे मिलेगा। जैसे– मेष का स्वोदय पल (२१३ : २६=) ३ घटी ३३ पल २६ विपल है यही मान सारणी में वृष के ० अंश के नीचे मिलता है। इस स्वोदय में आगे की राशियों का स्वोदय घटी–पल–विपल जोड़ते जायें तो उनके आगे की राशियों के शून्य अंश के नीचे वह मान प्राप्त होगा।

सारणी क्रमांक-४८

राशिनाम	स्वोदय				राशियों का योग	उदयकाल		
	पल : विपल =	घ.	प.	वि.		घ.	प.	वि.
मेष	२१३ : २६ =	३	३३	२६	मेष	३	३३	२६
वृष	२४६ : ३५ =	४	६	३५	(मेष + वृष)	७	४०	४
मिथुन	३०१ : १० =	५	४२	५०	(मेष + वृष + मिथुन)	१२	४१	१४
कर्क	३४२ : ५० =	५	४२	५०	(मेष से कर्क तक)	१८	२४	४
सिंह	३५१ : २५ =	५	५१	२५	मेष से सिंह तक)	२४	१५	२६
कन्या	३४४ : ३१ =	५	४४	३१	(मेष से कन्या तक)	३०	०	०
तुला	३४४ : ३१ =	५	४४	३१	(मेष से तुला तक)	३५	४४	३१
वृश्चिक	३५१ : २५ =	५	५१	२५	मेष से वृश्चिक तक)	४१	३५	५६
धनु	३४२ : ५० =	५	४२	५०	(मेष से धनु तक)	४७	१८	४६
मकर	३०१ : १० =	५	१	१०	(मेष से मकर तक)	५२	१६	५६
कुम्भ	२४६ : ३५ =	४	६	३५	(मेष से कुम्भ तक)	५६	२६	३१
मीन	२१३ : २६ =	३	३३	२६	(मेष से मीन तक)	६०	०	०

इस सारणी से लग्न देखने के लिये सूर्य में अयनांश जोड़कर सायन सूर्य पर से लग्ने देखते हैं और जो लग्न आती है वह सायन लग्न होती है। उसमें से अयनांश घटा देने से निरयन लग्न आ जाती है।

(ब) सायन लग्न सारणी बनाना :- उत्तर भारत के प्रायः सभी पञ्चांगों में सायन लग्न सारणी दी रहती है। निरयन सारणी और इस सारणी में थोड़ा सा ही अंतर है। जो अंक निरयन सारणी में रखे गये हैं उन्हीं अंकों को सायन सारणी में रखते हैं,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अंतर सिर्फ इतना है कि इसमें अयनांश के अनुसार जो खाना (कोठा) आता है उसी अंश के नीचे से ध्रुवांक जोड़ना आरम्भ करते हैं।

वर्तमान सम्वत् में जो अयनांश प्राप्त हो उसे १२ राशि (१ भचक्रे) में से घटाते हैं जो शेष राश्यादि प्राप्त हो उस राशि के अंश के नीचे सारणी में शून्य रखते हैं। वहाँ से मेष का ध्रुवांक आगे जोड़ना प्रारम्भ करते हैं और २६ अंश के आगे अंत में मेष का ध्रुवांक लिखते हैं जिससे भूल न हो। इस प्रकार मीन के अंतर में मेष का ध्रुवांक, मेष के अंत में वृष का ध्रुवांक, वृष के अंत में मिथुन का ध्रुवांक इत्यादि लिखते हैं।

जैसे– शक १६२२ में विद्यापीठ पञ्चांगानुसार अयनांश २३° : ३८′ लिया है। तब अयनांश २३° : ३८′ को १२ राशि में से घटाया अर्थात

१२ राशि – अयनांश (२३° ३८′) = ११ राशि ६ अंश २२ कला शेष

चूँकि शेषफल ११ राशि ६ अंश २२ कला प्राप्त हुआ जिसका अर्थ मीन राशि के ६ अंश पूर्ण होकर ७वाँ अंश है। इस प्रकार सायन लग्न सारणी में मीन के सामने ७ अंश के नीचे शून्य रखते हैं और इससे आगे मीन के ८ अंश के नीचे मेष का ध्रुवांक ७ पल ६ विपल ५८ अनुपल रखते हैं। तदनुसार मेष के ध्रुवांक को मीन के २६ अंश तक जोड़ते जाते हैं तब मीन के २६ अंश के नीचे २ घटी ३६ पल ३३ विपल १६ अंश प्राप्त होता है।

आगे संख्या २ घटी ३६ पल ३३ विपल १६ अनुपल में मेष का ध्रुवांक जोड़ा तो २ घटी ४३ पल ४० विपल १४ अनुपल आया। इसे मेष के ० अंश के नीचे रखते हैं। इस प्रकार आगे के ७ अंश से वृष का ध्रुवांक ८ पल १३ विपल १० अनुपल जोड़ना आरम्भ करते हैं जिसे वृष राशि के ६ अंश तक जोड़ते है।। वृष राशि के ७ अंश से मिथुन का ध्रुवांक १० पल २ विपल २० अनुपल जोड़ते जाते हैं। इस प्रकार प्रत्येक राशि के ७ अंश से उस राशि से आगे की राशि का ध्रुवांक जोड़ना आरम्भ होता है जो कि आगे है।

चूँकि निरयन लग्न सारणी में मेष के ० अंश के नीचे ० रखकर आगे के मेष का ध्रुवांक जोड़ते हैं, जबकि सायन लग्न सारणी में अयनांश के आधार पर मीन के अंश के नीचे ० रखकर आगे से मेष का ध्रुवांक जोड़न आरम्भ किया। दोनों सारणी के अंक उसी क्रमानुसार है। सायन सारणी की शुद्धता हेतु हम देखेंगे कि सारणी में प्रत्येक राशि के ७ अंश के नीचे उस राशि का स्वोदय मान प्राप्त होता है। जैसे– मेष के ७ अंश के नीचे स्वोदय ३ घटी ३३ पल २६ विपल मिलेगा तथा कन्या के ७ अंश के नीचे मेष से सिंह तक का योग ३० घटी ० पल ० विपल ० अनुपल मिलेगा।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

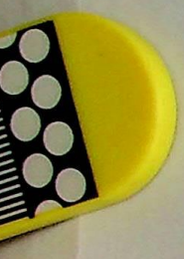

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

सायन लग्न सारणी

अक्षांश २८° ३८', अयनांश २३° ३८' पलभा ६/३३/६

स्वोदयपल– २१३ : २६, २४६ : ३५, ३०१ : १०

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ध्रुव
	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	०
मे	प.	४३	५०	५७	५	१२	१६	२६	३३	४१	४६	५८	६	१४	२०	३१	३६	४७	५५	३	१२	२०	२८	३६	४४	५३	१	६	१७	२६	३४	७
ष	वि.	४०	५७	५४	१	८	१५	२२	२६	४२	५५	८	२१	३४	४८	१	१४	२७	४०	५३	७	२०	३३	४६	५६	१२	२६	३६	५२	५	१८	६
०	अ.	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५८
	घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	०
वृ	प.	४२	५०	५८	७	१५	२३	३१	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	८
ष	वि.	१३	४५	५८	११	२४	३७	५०	४	६	८	११	१३	१५	१८	२०	२२	२५	२७	२९	३२	३४	३६	३९	४१	४३	४६	४८	५०	५३	५५	१३
१	अ.	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	१०
मि	घ	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	०
थु	प.	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	४	१५	२६	३८	४६	१	१२	२४	३५	४६	५८	६	२१	३२	४४	५५	६	१८	२६	४१	५२	१०
न	वि.	५७	०	२	४	७	६	११	१४	३६	५	३१	५६	२२	४८	१३	३६	५	३०	५६	२०	४७	१३	३६	४	३०	५६	२१	४७	१३	३८	२
२	अ.	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०
	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	०
क	प.	४	१५	२६	३८	४६	१	१२	२४	३५	४७	५६	१०	२२	३४	४६	५७	६	२१	३२	४४	५६	८	१६	३१	४३	५४	६	१८	३०	४१	११
र्क	वि	४	३०	५५	२१	४७	१२	३८	४	४६	२६	१२	५५	३८	२१	३	४६	२६	१२	५५	३८	२०	३	४६	२६	१२	५५	३७	२०	३	४६	२५
३	अ.	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	५०	४०	३०	२०	४०
	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	०
सिं	प	५३	५	१६	२८	४०	५२	३	१५	२६	३८	४६	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३७	४४	५६	७	१६	३०	४२	५३	५	१६	२८	११
ह	वि.	२६	१२	५४	३७	२०	३	४६	२६	४८	२७	५६	२५	५४	२३	५२	२१	५०	१६	४८	१७	४६	१५	४५	१४	४३	१२	४१	१०	३६	८	४२
४	अ.	१०	०	५०	४०	३०	२०	१०	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	५०
	घ	२८	२८	२६	२६	२६	२६	२६	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	०
क	प.	३६	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२६	४०	५२	३	१५	२६	३८	४६	१	१२	११
या	वि	३७	६	३५	४	३३	२	३१	०	२६	५८	२७	५६	२५	५४	२३	५२	२१	५०	१६	४८	१७	४६	१५	४४	१३	४२	११	४०	६	३८	२६
५	अ.	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	२

क्रमशः...२

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ध्रुव
०	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५
१	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
२	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
५	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
६	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
७	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
८	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
९	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
१०	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
११	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
१२	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
१३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
१४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
१५	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
१६	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
१७	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
१८	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
१९	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
२०	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
२१	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
२२	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
२३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
२४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
२५	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
२६	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
२७	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
२८	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
२९	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४
ध्रुव	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	अंश

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

स्पष्ट है कि सायन और निरयन सारणी के अंक समान है। अयनांश के कारण अंकों के प्रारम्भ होने का स्थान भिन्न हैं। निरयन लग्न सारणी में जहाँ मेष के ० अंश से अंकों की शुरूवात करते हैं वहीं सायन लग्न सारणी में मीन के ८ अंश से अंकों की शुरूवात करते हैं। यहाँ हमने लग्न सारणी में घटी–पल–विपल एवं अनुपल को दर्शाया है। जबकि उत्तर भारत के पञ्चांगों के दी गई लग्न सारणियाँ घटी–पल अथवा घटी–पल–विपल ही व्यक्त करती है, अनुपल नहीं। शोध प्रबन्ध के आकार को ध्यान में रखते हुये उत्तरभारत के पञ्चांगों में दी गई लग्न सारणियों को यहाँ नहीं दर्शाया है अपितु उनका समीक्षात्मक अवलोकन करते हुये निष्कर्षतः यही कहा जा सकता है कि उत्तरभारत के पञ्चांगों में दी गई लग्न सारणियाँ एक रूपता नहीं दर्शाती हैं। शक १६२१ के श्री वल्लभ मनीराम, श्री आर्यभट्ट, निर्णय सागर, विश्व पञ्चांग एवं दिवाकर इत्यादि पञ्चांगों में दर्शायी लग्न सारणियाँ २४ अयनांश के आधार निर्मित हैं, फलतः इन पञ्चांगों की लग्न सारणियों में मीन के ६ अंश के नीचे ० घटी ० पल लिखा होता है जबकि विद्यापीठ, मार्त्तण्ड एवं श्री हृषीकेष पञ्चांगों की लग्न सारणीयों में मीन के ६ अंश के नीचे ० घटी ० पल नहीं लिखा होता है। विद्यापीठ पञ्चांग में मीन के ६ अंश के नीचे ५६ घटी ५७ पल, मार्त्तण्ड पञ्चांग में मीन के ६ अंश के नीचे ५६ घटी ५६ पल व्यक्त किया है। अतः स्पष्ट है कि उत्तरभारत के पञ्चांग में दर्शायी लग्न सारणीयों में प्रयुक्त अयनांश को लेकर मतान्तर है।

४. दशम सारणी बनाना :- सूर्य सिद्धान्त एवं नारद पुराण में दशम लग्न साधन की एक समान विधि बतलायी है। दशम लग्न साधन के विषय में लिखा है–

प्राक् पश्चान्नतनाडी भिस्तस्माल्लंकोदयासुभिः।
भानौ क्षयधने कृत्वा मध्यलग्नं तदा भवेत्।।[१]

दशम सारणी भी लग्न सारणी के अनुसार बनती है। लग्न सारणी की तरह से दशम सारणी भी दो प्रकार की होती है– १. सायन २. निरयन

निरयन सारणी लंकोदय (निरक्षोदय) पलों के आधार पर बनाई जाती है। जबकि लग्न सारणी स्वोदय पलों के आधार पर निर्मित होती है। दशम सारणी बनाने के लिये प्रत्येक राशि के लंकोदय पलों में ३० का भाग देकर ध्रुवांक ज्ञात करते हैं। इसी ध्रुवांक को लग्न सारणी की तरह जोड़ते जाते हैं। दशम सारणी बन जाती है।

[१] सूर्य सिद्धान्त, त्रिप्रश्ना, श्लोक ४६ एवं नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५४/१४६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लंकोदय राशियाँ			लंकोदय पल	ध्रुवांक
				घ. प. वि.
१. मेष	६ कन्या	७ तुला १२ मीन	२७८	० : ६ : १६
२. वृष	५ सिंह	८ वृश्चिक ११ कुम्भ	२६६	० : ६ : १८
३. मिथुन	४ कर्क	६ धनु १० मकर	३२३	० : ६ : ४६

क्र.	राशिनाम	लंकोदय घटी : पल	राशियों का योग	उदयकाल घटी : पल
१.	मेष	४ : ३८	केवल मेष	०४ : ३८
२.	वृष	४ : ५६	मेष + वृष	०६ : ३७
३.	मिथुन	५ : २३	मेष + वृष + मिथुन	१५ : ००
४.	कर्क	५ : २३	मेष से कर्क तक	२० : २३
५.	सिंह	४ : ५६	मेष से सिंह तक	२५ : २२
६.	कन्या	४ : ३८	मेष से कन्या तक	३० : ००
७.	तुला	४ : ३८	मेष से तुला तक	३४ : ३८
८.	वृश्चिक	४ : ५६	मेष से वृश्चिक तक	३६ : ३७
६.	धनु	५ : २३	मेष से धनु तक	४५ : ००
१०.	मकर	५ : २३	मेष से मकर तक	५० : २३
११.	कुम्भ	४ : ५६	मेष से कुम्भ तक	५५ : २२
१२.	मीन	४ : ३८	मेष से मीन तक	६० : ००

जिस प्रकार निरयन एवं सायन लग्न सारणीयाँ बनाई थीं ठीक उसी प्रकार से निरयन एवं सायन दशम सारणीयाँ बनाई जा सकती हैं। इसमें लंकोदय के ध्रुवांकों का प्रयोग होता है जिन्हें लंकोदय पलों में ३० का भाग देकर ज्ञात किया जा चुका है उत्तरभारत के अधिकांश पञ्चांगों में दी गई दशम लग्न सारणीयाँ २३ अंश अथवा २४ अंश अयनांश पर निर्मित हैं। विद्यापीठ पञ्चांग में दी गई सायन दशम लग्न सारणी २३° ३८′ अयनांश पर निर्मित है। अयनांश में अंतर होने से विश्वविजय पञ्चांग एवं विद्यापीठ पञ्चांग की दशम लग्न सारणीयों में सूक्ष्मान्तर है। शक १६२२ के श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग के पृष्ठ २४ पर दी गई दशम सारणी पूर्णतः अशुद्ध दर्शाई है जबकि श्री आर्यभट्ट पञ्चांग एवं विश्वविजय पञ्चांग में दी गई दशम लग्न सारणीयाँ एक समान हैं। आगे हमने ग्रहलाघवी लंकोदयपलों के आधार पर २४° अयनांश की सायन दशम लग्न सारणी को बनाया जो कि उत्तर भारत के अधिकांश शुद्ध पञ्चांगों में दी गई दशम लग्न सारणी के आसन्न है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

सायन दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अक्षांश २८° ३८' अयनांश २४° पलभा ६/३३/६ — लंकोदयपल– २७८, २६६, ३२३

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०°	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ध्रुवांक
मेष घ.	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	०
० प.	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	६
वि.	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४६	३८	३६	३८	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	५८
वृष घ.	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	०
१ प.	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२६	४०	५०	१	१२	३२	३३	१०
वि.	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	४६
मिं घ.	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	०
थुन प.	४४	५५	६	१६	२७	३८	४६	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	६	१६	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	१०
२ वि.	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	४६
कं घ.	१६	१६	१६	१६	१६	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	०
र्क प.	७	१८	२६	३६	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	६
३ वि.	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	५८
सिं घ.	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	०
ह प.	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४६	५६	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५६	८	१८	२७	३६	४५	६
४ वि.	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	१८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	१६
क घ.	२८	२६	२६	२६	२६	२६	२६	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	०
न्या प.	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	६	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	६	१६	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	६
५ वि.	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	१६
तु घ.	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	०
ला प.	३३	४२	५१	०	१०	१६	२८	२८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	६
६ वि.	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४६	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	६	५८
वृश्चि घ.	३८	३८	३८	३८	३६	३६	३६	३६	३६	३६	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	०
चक प.	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२६	४०	५०	१	१२	३२	३३	१०
७ वि.	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	४६
धनु घ.	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	०
३ प.	४४	५५	६	१६	२७	३८	४६	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	६	१६	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	१०
वि.	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	४६
मक घ.	४६	४६	४६	४६	४६	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	०
र प.	७	१८	२६	३६	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	६
६ वि.	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	५८
कुं घ.	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	०
म्भ प.	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४६	५६	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५६	८	१८	२७	३६	४५	६
१० वि.	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	१८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	१६
मी घ.	५८	५६	५६	५६	५६	५६	५६	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	०
न प.	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१६	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	९
११ वि.	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	१६

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha
CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Kareli, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

सायन दशम लग्न सारणी (सर्वत्र उपयोगी)

अक्षांश २८° ३८′ अयनांश २४° पलभा ६/३३/६ लंकोदयपल– २७८, २६६, ३२३

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ध्रुवांक
मेष घ.	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	०
० प.	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	६
वि.	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४६	३८	३६	३८	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	५८
वृष घ.	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	०
१ प.	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	३२	३३	१०
वि.	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	४६
मिं घ.	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	०
थुन प.	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	६	१६	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	१०
२ वि.	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	४६
क घ.	१६	१६	१६	१६	१६	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	०
र्क प.	७	१८	२९	३६	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	६
३ वि.	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	५८
सिं घ.	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८	०
ह प.	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४६	५६	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५६	८	१८	२७	३६	४५	६
४ वि.	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	१८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	१६
क घ.	२८	२६	२६	२६	२६	२६	२६	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	०
न्या प.	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	६	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	६	१६	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	६
५ वि.	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	१६
तु घ.	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	०
ला प.	३३	४२	५१	०	१०	१६	२८	२८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	६
६ वि.	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४६	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	६	५८
वृश्चि घ.	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	०
चक प.	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	३२	३३	१०
७ वि.	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	४६
धनु घ.	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	०
३ प.	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	०	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	६	१६	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	१०
वि.	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२	४६
मक घ.	४६	४६	४६	४६	४६	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	०
र प.	७	१८	२९	३६	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	६
६ वि.	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६	५८
कुं घ.	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	०
म्भ प.	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४६	५६	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५६	८	१८	२७	३६	४५	६
१० वि.	१४	१२	१०	८	६	४	२	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	१८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	१६
मीं घ.	५८	५६	५६	५६	५६	५६	५६	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	३	३	३	०
न प.	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	०	६	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	६	१६	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३	६
११ वि.	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	१६

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Kareundi, Jabalpur.MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

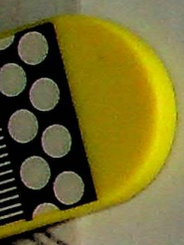

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत्तर भारत के अधिकांश पञ्चांग में दशम लग्न साधन के लिये सायन दशम सारणी दी रहती है। यह सारणी सर्वत्र उपयोगी होती है। चूँकि यह सारणी स्थानीय अक्षांश (पलभा) से प्रभावित नहीं होती है इसलिये सभी पञ्चांगों में दी गई दशम सारणी लगभग समान (एक ही) होती है। मात्र लंकोदय पलों में सूक्ष्मांतर होने से भिन्न–भिन्न पञ्चांगों की दशम सारणियों मे सूक्ष्मांतर देखने को मिलता है। जिस प्रकार सायन और निरयन लग्न सारणियाँ बनती हैं। उसी प्रकार सायन और निरयन दशम सारणियाँ भी बनती हैं।

(ब) वेधशाला के द्वारा निर्मित दिक्सिद्ध पञ्चांग :-

उत्तर भारत में मुख्यतः लहरी इंडियन एफेमेरीज कलकत्ता एवं एस्ट्रोनॉमीकल एफेमेरीज उज्जैन का निर्माण वेधशालाओं के आधार पर होता है। इन एफेमेरीज में दर्शाये हुये स्पष्ट ग्रह नाटिकल अल्मनाक द्वारा लाये हुये ग्रहों के तुल्य होते हैं। जिन पंचाांगों के तिथ्यादि एवं ग्रह स्पष्ट इन एफेमेरीज से मिलते हों उन्हें हम दिक्सिद्ध पञ्चांग कह सकते है चाहे उन पञ्चांगों का गणित किसी भी सिद्धान्त अथवा करण ग्रन्थ के अनुसार हो।

भारतीय ज्योतिष के सिद्धान्त अथवा करण ग्रन्थों का निर्माण भी कई शताब्दीयों तक लगातार खगोलीय अन्वेषण करने के उपरांत हुआ है। इन सिद्धान्त ग्रन्थों के गणित के द्वारा आनीत स्पष्ट ग्रह का वेध के द्वारा ज्यों का त्यों दिखाई देना आवश्यक है, तभी ज्योतिष शास्त्र की प्रत्यक्षता सिद्ध होती है। भारतीय ज्योतिष के सिद्धान्त ग्रन्थों में प्रतिपादित ग्रहों की गति, स्थिति, उदयास्त, वक्रत्व, मार्गत्व एवं ग्रहणादि के गणितीय सिद्धान्तों को प्रत्यक्ष रूप से देने में हमारे मनीषी आचार्यों ने सुदूरतन प्राचीन काल से वेध की प्रक्रिया का आश्रय लिया है। वेध का अर्थ है– यष्टि, शालाका अथवा किसी अन्य वस्तु द्वारा सूर्यादि खस्थ पिण्डों को देखना या अवालोकन करना है। दूसरे शब्दों में सिद्धान्त ग्रन्थों में जिन यन्त्रों का विधान किया गया है उन यन्त्रों के द्वारा आकाशस्थ ग्रह–पिण्डों को देखने की प्रक्रिया वेध कहलाती है। जिस स्थान पर इन यंत्रों को एक साथ रखकर ग्रह नक्षत्रों की स्थिति का अवलोकन किया जाता है। उसे **'वेधशाला'** कहते है। भारत में सवाई राजा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

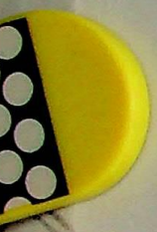

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

जयसिंह ने उज्जैन, काशी, दिल्ली, जयपुर एवं मथुरा में इस प्रकार की वेधशालाओं का निर्माण करवाया तथा ज्योतिषशास्त्र की उत्तरोत्तर प्रगति के लिये अथक प्रयास किया। भारतीय ज्योतिर्सिद्धान्त में उज्जैन की स्थिति ठीक कक्र रेखा पर होने से तथा भारतीय ज्योतिष पूर्णतः उज्जैन खमध्य रेखा पर आधारित होने से उज्जैन वेधशाला का विशेष महत्व है। हमारे ज्योतिष ग्रथों में सूर्य की परमक्रान्ति २४ अंश मानी गई है।[८२] क्रान्तिवृत्त से इतना झुकाव शक पूर्व २५०० वर्ष के लगभग था। यह झुकाव क्रमशः कम होता जा रहा है। शक ४०० के आस–पास यह झुकाव लगभग २३°/३६′ था[८३] तथा शक १८०० में यह झुकाव (परमक्रान्तिः) २३°/२८ था[८४] जोकि शक १८१८ के आरम्भ में घटकर २३°/२७′/१०″ रह गया । नवीन अन्वेषणों के आधार पर यह ज्ञात हुआ है कि पृथ्वी के झुकाव में लगभग २६ प्रति विकला प्रतिवर्ष की गति से कमी हो रही है। आजकल यह झुकाव २३°/२६′ है। यही सूर्य की परमक्रान्ति का शुद्ध मान है जो कि वेध सिद्ध है। इस प्रकार हम देखते है कि आज से लगभग ४५०० वर्ष पूर्व जब सूर्य की परमक्रान्ति एवं उज्जैन के अक्षांश लगभग बरावर थे तब सायन सूर्य उज्जैन के ख–मध्य में आकर ही अपना परमोत्तर गमन पूर्ण कर दक्षिणाभिमुख होता था । निरक्षदेश लंका (वर्तमान लंका से भिन्न स्थान) की याम्योत्तर रेखा तथा कक्र रेखा का सम्पात विन्दु उज्जैन के ख–मध्य में होने के कारण उज्जैन की याम्योत्तर रेखा को भारतवर्ष की मध्यरेखा मान लिया गया था। यही कारण है कि उज्जैन वेधशाला का विशेष महत्व था। राजा जयसिंह द्वारा निर्मित इन वेधशालाओं में उस समय के ज्योतिष वेध प्रक्रिया द्वारा ग्रह गणित के सिद्धान्तों पर शोधकार्य करते थे। ये सभी वेधशालाऐं पाषाणखण्डों से बनाई गई थी जिनमें कालक्रमेण अब स्थूलता आ गई है। इन वेधशालाओं के यन्त्रों की स्थूलता का निराकरण करने, वेध की प्रक्रिया को इस युग में प्रचारित करने के लिये और ज्योतिषशास्त्र की प्रत्यक्षता को आम लोगों के समक्ष लाने के लिये समय–समय पर उनके प्रयास हुये हैं। इस दिशा में वेधशालाओं के निर्माण के विशेषज्ञ एवं अधिकारी विद्वान **पं. श्री कल्याण दत्त शर्मा जी** का विशेष योगदान रहा है। आपने काशी में म. म. श्री सुधाकर द्विवेदी वेधशाला तथा श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत

---

८२ सूर्यसिद्धान्त, स्पष्टाधिकार, श्लोक २८

८३ भारतीय ज्योतिषः शंकर बालकृष्ण दीक्षित, ज्योतिष सिद्धान्तकाल, पृ. २७८

८४ केतकी ज्योतिर्गणित, त्रिप्रश्नाधिकार, श्लोक ७ एवं भाष्य

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

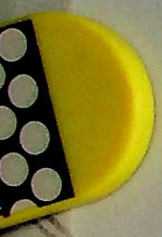

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

विद्यापीठ नई दिल्ली के तत्वाधान में स्थित वेधशाला के निर्माण में अद्वितीय योगदान दिया है। इन वेधशालाओं के द्वारा प्राप्त ग्रह–नक्षत्र की स्थिति का सामन्जस्य सैद्धान्तिक गणित से स्थापित करके पञ्चांगों का निर्माण करते हैं।

(क) वेध यन्त्रों का परिचय एवं प्रयोग विधि :- प्राचीन काल में हमारे यहाँ राजाश्रय द्वारा वेध का कार्य होता था। भिन्न–भिन्न ज्योतिषियों ने समय–समय पर मध्यम ग्रहों में बीज संस्कार देकर ग्रह गणित की स्थूलता को दूर करने का प्रयास किया है। भारतीय ज्योतिष के सिद्धान्त एवं करण ग्रन्थों में ग्रहस्थिति मापक एवं कालमापक अनेक यन्त्रों का वर्णन हुआ है। सूर्य सिद्धान्त के ज्योतषोपनिषदध्याय में तथा सिद्धान्त शिरोमणि के **गोलबन्धाधिकार और यन्त्राध्याय** में अनेक वेध यन्त्रों का वर्णन हुआ है। यहाँ हम वेध यन्त्रों का वर्णन एवं उनके द्वारा पञ्चांग निर्माण की विधि का वर्णन करेंगे।

१. **शंकु यन्त्र :-** सारा गणित ज्योतिष अनेक यन्त्रों का निर्माण करते हुये भी एक शंकु यन्त्र को बड़ा ही महत्व देता है। सभी देशों में शंकु यन्त्र के माप से तत्तदेशीय छायाऐं नाप ली जाती थीं जिससे अनेक खगोलीय अनुभव ठीक बैठते थे। सिद्धान्त ग्रन्थों के त्रिप्रश्नाधिकार मे दिक्, देश एवं काल इन तीनों प्रश्नों का विचार किया गया है। शंकु यन्त्र की सहायता से किसी भी स्थान पर इन तीनों प्रश्नों का उत्तर दिया जा सकता है। त्रिप्रश्नाधिकार में शंकु यन्त्र के द्वारा पलभा, अक्षज्य, लम्बज्या, उन्नतांशज्या, नतांश कोटिज्या, छाया, छायाकर्ण, नतांश, अग्रा, नतकाल, पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशा–विन्दुओं का ज्ञान आदि का वर्णन सिद्धान्त ग्रन्थों में किया है। आधुनिक काल में कम्पास व दूरदर्शक आदि यन्त्रों की सहायता से दिक्, देश व काल का ज्ञान सुगमता से किया जाता है। प्राचीन यन्त्रों द्वारा प्राप्त मान आधुनिक यन्त्रों की उपेक्षा स्थूल है किन्तु अधिक आसन्न है। वर्तमान में प्राप्त स्थूल मान को लम्बन, किरण वक्रीभवन, अक्ष विचलन एवं काल समीकरण इत्यादि संस्कारों से संस्कृत कर अर्वाचीन यन्त्रों के द्वारा प्राप्त मान के समकक्ष बना लिया जाता है।

किसी ठोस पदार्थ अथवा धातु का बना हुआ दण्ड, जो कि १२ अंगुल या फीट लम्बा, गोल और ऊपर से नीचे तक समान मोटा हो तथा दण्ड का अग्रिम भाग अधिकतम नुकीला हो। उस दण्ड को क्षितिज वृत्त के धरातल के निर्मित चबूतरे के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

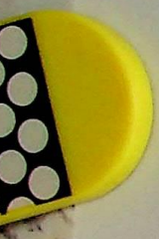

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मध्य में लम्बवत गाड़ दिया जाता है। दण्ड की छाया से कलादि लाने की रीति त्रिप्रश्नाधिकार में दी है। इसी को शंकु यन्त्र कहा जाता है।

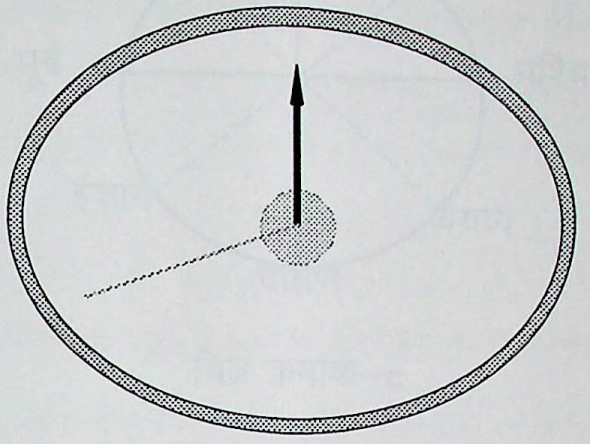

चित्र क्रमांक–७

शंकु द्वारा दिशा ज्ञात :- स्पष्ट मध्याह्न काल में सूर्य प्रतिदिन जब याम्योत्तरवृत्त का लंघन करता है तब धूपघड़ी के अनुसार ठीक १२ बजे का समय होता है। उदय के बाद सूर्य दक्षिण दिशा की ओर खिसकता हुआ आगे बढ़ता है, दोपहर में सूर्य जब ठीक दक्षिण दिग्विन्दु को स्पर्श करता है तब शंकु की छाया विपरीत दिशा मे पड़ने के कारण ठीक उत्तर दिग्विन्दु को स्पर्श करती है। स्पर्शकालीन शंकु की छायारेखा के ठीक मध्य में सरल रेखा खींचने पर याम्योत्तर रेखा का ज्ञान हो जाता है। यह रेखा उत्तर–दक्षिण दिग्विन्दुओं से होकर जाती है। इस याम्योत्तर रेखा के ठीक मध्य में पूर्व–पश्चिम की ओर लम्बवत् रेखा खींचने पर यह रेखा पूर्व–पश्चिम दिग्विन्दुओं से होकर गुजरती है। इस प्रकार शंकु की मध्याह्नकालीन छाया से दिशाओं का सही ज्ञान हो जाता हे।

प्राचीनकाल में गणितज्ञ भिन्न–भिन्न प्रकार से शंकु की छाया द्वारा दिशाओं का ज्ञान करते थे। आचार्य गणेश दैवज्ञ के अनुसार जिस समय दिनरात समान अवधि के हों उस समय प्रातः काल में शंकु की छाया का अग्रभाग वृत को जहाँ स्पर्श करे, वह पश्चिम दिग्विन्दु तथा सांयकाल शंकु की छाया का अग्रभाग वृत्त के जिस विन्दु को स्पर्श करे, वह पूर्व दिग्विन्दु होगा। पूर्व–पश्चिम के दिग्विन्दुओं को मिलाने वाली एक सीधी रेखा खींचें, वह पूर्वापर रेखा होती है। उस पूर्वापर रेखा पर वृत्त के मध्य से एक लम्ब रेखा खींचें, यह लम्ब रेखा ही दक्षिणोत्तर रेखा होती है।[८५]

---

[८५] ग्रहलाघव, त्रिप्रश्नाधिकार, श्लोक २२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

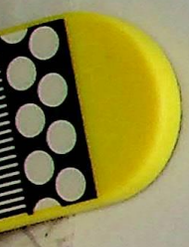

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

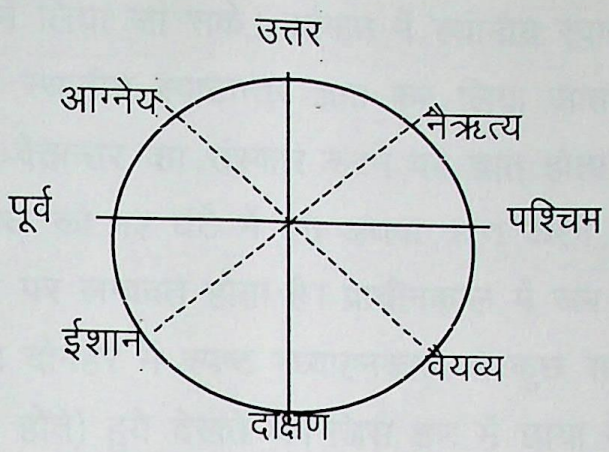

चित्र क्रमांक–८

पूर्व–पश्चिम एवं उत्तर दक्षिण का ज्ञान हो जाने पर क्षितिज वृत्तीय चाप का आधा करने से केन्द्र से परिधि तक क्रमशः अग्नि, नैऋत्य, वायु तथा ईशान दिशाओं का ज्ञान होता है।

वर्तमान में दिशासूचक यन्त्रों–कम्पास, कुतुबनुमा आदि के माध्यम से किसी भी समय चारों दिशाओं का बोध हो सकता है।

शंकु द्वारा देश (अक्षांश तथा पलभा) का ज्ञान :- वर्तमान में सायन सूर्य २१ मार्च को मेष राशि में तथा २३ सितम्बर को तुला राशि में प्रवेश करता है। इन दिनों में सर्वत्र (पूरी पृथ्वी पर) ही दिन और रात्रि समान अवधि के होते हैं, अर्थात ३० घटी का दिनमान एवं ३० घटी का ही रात्रिमान होता है। निरक्षदेश अर्थात भू–मध्य रेखा पर २१ मार्च एवं २३ सितम्बर को समतल भूमिस्थ शंकु की छाया स्पष्ट मध्याह्नकाल में शून्य होती है। सायन मेष संक्रान्ति या तुला संक्रान्ति के दिन स्पष्ट मध्याह्नकाल में १२ अंगुल शंकु की छाया जितनी होगी, उतनी ही अपने स्थान की पलभा का प्रमाण होता है। ग्रहलाघव में शंकु यन्त्र द्वारा पलभा मापने की विधि का वर्णन इस प्रकार से है–

मेषादिगे सायनभागसूर्य्ये दिनार्द्धजा भा पलभा भवेत्सा।।[८६]

सुगमता के लिये शंकु का माप १२ गज, १२ फुट या १२ इंच भी ले सकते हैं, जिससे २१ मार्च व २३ सितम्बर को शंकु की छाया का माप स्पष्ट मध्याह्नकाल में

---

[८६] ग्रहलाघव, रविचन्द्र स्पष्टाधिकार, श्लोक ३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गज, फुट अथवा इंच में लिया जा सके। वर्तमान में स्थानीय स्पष्ट मध्याह्नकाल ज्ञात करने के लिये अभीष्ट स्थानीय स्पष्टान्तर ज्ञात कर लिया जाता है। यह स्पष्टान्तर स्थानीय मध्यमान्तर में वेतान्तर का संस्कार करने पर ज्ञात होता है। दिन के अभीष्ट स्थानीय स्पष्टान्तर काल को १२ घंटे में धन अथवा ऋण करने पर भारतीय स्टैण्डर्ड समय में अभीष्ट स्थान पर लम्बवत होता है। प्राचीनकाल में जब यान्त्रिक घड़ियों का अभाव था तब गणितज्ञ दोपहर में स्पष्ट मध्याह्नकाल से कुछ समय पूर्व ही शंकु की छाया को घटते (छोटी होते) हुये देखते थे। जिस क्षण में छाया का घटना बंद होकर बढ़ना (लम्बी होना) शुरू हो जाता था उसी क्षण का स्थानीय स्पष्ट मध्याह्नकाल मानकर छाया के मध्यभाग पर रेखा खींच लेते थे और रात्रि में ठीक उसी रेखा पर ध्रुवयाष्टिका रखकर ध्रुव तारा को देखकर निर्णय कर लेते थे कि मध्याह्नकाल में खींची गई रेखा शुद्ध याम्योत्तर रेखा ही है। कुछ गणितज्ञ दूसरे प्रकार से भी मध्याह्नकाल का पता लगाते थे। उनके अनुसार याम्योत्तर रेखा पर लम्बरूप भित्ति में पश्चिम की ओर भित्ति के दक्षिण की ओर शंकु रखकर उसकी छाया जिस क्षण भित्ति पर दृष्टिगोचर होती है वह समय स्थानीय स्पष्ट मध्याह्नकाल का होता है। याम्योत्तर रेखा पर नलिका द्वारा ध्रुव दर्शन हो जाये उसी जगह नलिका स्थिर कर दें, नलिका दण्ड पृथ्वी पर जहाँ स्पर्श करे उस जगह जितने अंश का कोंण बने वही उस स्थान का अक्षांश होता है। इस प्रकार नलिका द्वारा यदि उत्तरी ध्रुव दिखाई दे तब हम उत्तरी गोलार्द्ध वाले भाग में हैं, यदि दक्षिणीध्रुव दिखाई दे तब हम दक्षिणी गोलार्द्ध वाले भाग में हैं ऐसा समझना चाहिये। भारतवर्ष उत्तरी गोलार्द्ध वाले भाग में होने से हमें हमेशा उत्तरी ध्रुव (तारा) दिखाई देता है। इस प्रकार किसी स्थान पर अक्षांश उस स्थान पर ध्रुवोन्नति है। शंकु यन्त्र के द्वारा पलभा ज्ञात कर निम्नलिखित सूत्रानुसार किसी भी स्थान पर अक्षांश ज्ञात किया जा सकता है–

सूत्र :– पलभा = अक्षांश की स्पर्श ज्या. X १२ (दण्ड की ऊँचाई)

$\therefore$ अक्षांश = Tan^{-1} (पलभा ÷ १२)

तथा पलकर्ण = $\sqrt{\text{शंकु}^२ + \text{भुज}^२}$

पलकर्ण = $\sqrt{१२^२ + \text{पलभा}^२}$

पलकर्ण = $\sqrt{१४४ + \text{पलभा}^२}$

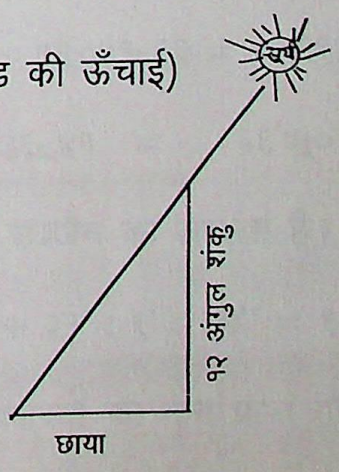

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

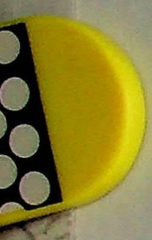

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उदाहरणार्थ :– सायन मेष तथा तुला संक्रान्ति के समय स्पष्ट मध्याह्नकाल में उज्जैन में द्वादशांगुल शंकु की छाया का प्रमाण ५ अंगुल ८ व्यंगुल प्राप्त होता है। यही उज्जैन की पलभा होती है। उज्जैन की पलभा को आधुनिक दशमलव प्रणाली में परिवर्तित करने पर ५.१३३३३ प्राप्त होता है। तब उज्जैन में पलकर्ण का मान होगा–

पलकर्ण^२ = शंकु^{२} + पलभा^{२}

पलकर्ण = $\sqrt{१४४ + ५.१३३३३}$

= $\sqrt{१७०.३५१११}$ = १३.०५१८६२ = १३ अंगुल ३ व्यंगुल

इस प्रकार ५.१३३३३ अंगुलात्मक पलभा मान तथा १३.५१८६२ अंगुलात्मक पलकर्ण का मान होता है। अब अक्षज्या का मान ज्ञात करेंगे–

अक्षज्या = पलभा ÷ पलकर्ण

= ५.१३३३३ ÷ १३.०५१८६२ = ०.३९३३०२७

अक्षांश = ज्या $^{-१}$ (०.३९३३०२७)

= २३.१६०१६३ = २३ अंश ९ कला ३७ विकला

इस प्रकार उज्जैन का अक्षांश २३° : ९′ : ३७″ होगा तथा यही उज्जैन में क्षितिज में ध्रुव की कोणात्मक ऊँचाई होगी। इस प्रकार शंकु यन्त्र की सहायता से किसी भी स्थल या नगर की पलभा एवं अक्षांशीय स्थिति को ज्ञात कर सकते हैं।

पलकर्ण को विषुवतकर्ण भी कहते हैं। शंकु की माप में पलकर्ण का भाग देने पर लम्बाज्या का मान प्राप्त होता है अर्थात

लम्ब ज्या = १२ ÷ पलकर्ण = १२ ÷ १३.०५१८६२ = ०.९१९४०६

लम्बांश = ज्या $^{-१}$ (०.९१९४०६) = ६६.८३६८४१ = ६६°:५०′:२३″

यह मान ही उज्जैन का लम्बांश है।

चूँकि लम्बांश + अक्षांश = ९०° अतः ६६° : ५०′ : २३″ + २३° : ९′ : ३७″ = ९०°

चूँकि अक्षज्या में लम्ब या ज्या का भाग देने पर अक्ष स्पर्शज्या का मान प्राप्त होता है अर्थात $\text{Tan}\,\theta = \frac{\text{Sin}\,\theta}{\text{Cos}\,\theta}$

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

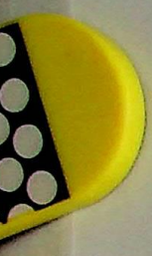

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अक्षस्पर्शज्या $= \frac{\text{अक्षांशज्या}}{\text{लम्बांशज्या}} = \frac{०.३६३३०२७}{०.६१६४०६} =$ ०.४२७७७७७

तथा लम्बकोटिज्या $= \frac{\text{अक्षांशज्या}}{\text{लम्बांशज्या}} = \frac{१}{०.४२७७७७७} =$ २.३३७६६२६

इस प्रकार शंकु यन्त्र की सहायता से पृथ्वी के किसी भी भाग में किसी भी स्थल पर उसकी अक्षज्या, लम्बज्या, अक्षस्पर्शज्या एवं लम्बकोटिज्या इत्यादि ज्ञात कर सकते हैं। इसका नाम ही देशज्ञान है।

शंकु द्वारा कालज्ञान :- किसी भी दिन की मध्याह्नकालिक समतल भूमि में गड़े हुये शंकु की छाया को त्रिज्या से गुणाकर छायाकर्ण से भाग देने पर इष्टदिन की नतांशज्या प्राप्त होती है। उसका धनु बनाने पर मध्याह्नकालिक नतांश का मान प्राप्त होता है। यह नतांश उस स्थान पर इष्टदिन की सूर्य क्रान्ति एवं अक्षांश के अन्तर के तुल्य होता है। इस प्रकार नतांश का मान ज्ञात होने पर हम क्रान्ति का मान ज्ञात कर सकते हैं। नतांश की कोटिज्या को ही उन्नतांश की ज्या कहते हैं। मध्याह्नकाल में १२ अंगुल शंकु को उसकी छाया की ज्या से गुणाकर नतांश की कोटी ज्या से भाग देने पर प्राप्त लब्धि मध्याह्नकाल की छाया का मान होता है अर्थात –

नतांश स्पर्शज्या = छाया ÷ १२

या छाया = १२ × Tan नतांश = १२ Tan θ

तथा नतांश + उन्नतांश = ९०°

नतांश कोटिज्या $= \frac{१२}{\text{छायाकर्ण}}$ या छायाकर्ण $\frac{१२}{\text{Cos } \theta}$

अब जिस क्षण का ज्ञान करना हो उस क्षण शंकु की छाया से समय का ज्ञान हो सकता है। एस्ट्रोनोमीकल एफेमरीज, उज्जैन में १ जून को सूर्य क्रान्ति का मान २२°:६′ उत्तरी दिया है। तब १ जून को जिस क्षण दिन में समय ज्ञात करना हो उस क्षण में शंकु द्वारा छाया का मान ग्रहण करते हैं। मान लो १ जून को उज्जैन में किसी क्षण शंकु द्वारा प्राप्त छाया १२.५५ अंगुल है। तब खमध्य से नतकाल ज्ञात करेंगे। इसके लिये छायामान में १२ का भाग देंगे। अर्थात–

नतांश स्पर्शज्या = १२.५५ ÷ १२ = १.०४५८३३३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नतांश = Tan^{-1} (१.०४४५८३३३) = ४६.२८३३६७ = ४६° : १७′

अब नतकाल कोटिज्या = नतांश कोटिज्या − $\frac{\text{अक्षज्या} \times \text{क्रान्तिज्या}}{\text{Sin अक्षांश} \times \text{Sin सूर्यक्रान्ति}}$

नतकाल कोटिज्या = Cos नतांश − $\frac{}{\text{Cos अक्षांश} \times \text{Cos सूर्यक्रान्ति}}$

= Cos (४६° : १७′) − $\frac{\text{Sin (२३° १०′)} \times \text{Sin (२२° ६′)}}{\text{Cos (२३° १०′)} \times \text{Cos (२३° ६′)}}$

= ०.६६१०६१६ − $\frac{०.३६३४०७१ \times ०.३७६२२४२}{०.६१६३६४३ \times ०.६२६५२८६}$

= ०.६६१०६१६ − ०.१७३७५७ = ०.५१७३३४८

∴ नतकाल = Cos^{-1} (०.५१७३३४८) = ५८.८४६३५३

= ५८° : ५०′ : ४६″

नतकाल = ५८.८४६३५६ × ४ = २३५ मिनट २३ सेकण्ड

इस नतकाल को १२ घंटा (बजे) में से घटायेंगे, अर्थात

१२ घंटा − ३ घंटा ५५ मिनट २३ सेकण्ड = ८घंटा ४ मिनट ३७ सेकण्ड

माह १ जून को अभीष्ट क्षण में उज्जैन में धूपघड़ी का समय हुआ। इसको भारतीय स्टैण्डर्ड समय में परिवर्तित करने के लिये १ जून को उज्जैन में विपरीत स्पष्टान्तर संस्कार करना होगा।

उज्जैन में देशान्तर = − २७ मिनट

१ जून को वेलान्तर = + २ मिनट

स्पष्टान्तर = − २५ मिनट

तब विपरीत स्पष्टान्तर संस्कार करने पर १ जून को उज्जैन में शंकु की छाया के अनुसार स्टैण्डर्ड समय ८ बजकर २६ मिनट ३७ सेकण्ड होगा। यह प्रातःकाल का भारतीय स्टैण्डर्ड समय हुआ क्योंकि यहाँ नतांश पूर्व कपाल के मान गये हैं। यदि नतांश पश्चिम कपला के होते तो मध्याह्नोत्तरकाल का भारतीय स्टैण्डर्ड समय होता

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अर्थात सांय के ४ बजकर २० मिनट २३ सेकण्ड भारतीय स्टैण्डर्ड समय होता। इस प्रकार किसी भी क्षण (पूर्व कपाल या पश्चिम कपाल) में द्वादशांगुल शंकु की छाया द्वारा हम समय ज्ञात कर सकते हैं। अतः शंकु के द्वारा त्रिप्रश्नाधिकार के तीनों प्रश्नों दिक्, देश व काल का ज्ञान हो सकता है।

२. **नाड़ीवलय यन्त्र** :- एक चक्र बनाकर उसकी नेमि पर ६० घटियों के चिह्न बनावें। उसके मध्य में एक शलाका स्थापित करें जो कि उस पर लम्ब हो। शलाका को ध्रुवाभिमुख करने से उसकी छाया परिधि पर गिरेगी। उससे नतोन्नकाल का ज्ञान होगा। आकाशील नाड़ीवलय के धरातल में चक्र बनाने पर पृथ्वी पर नाड़ीवलय यन्त्र बन जाता है। आकाशीय स्थानीय अक्षांश तुल्य कोंण पर बना हुआ वृत्त ही पृथ्वी पर नाड़ीवलय वृत्त बनाता है।

विषवद्वृत्त के धरातल में निर्मित इस यन्त्र के उत्तर–दक्षिण दो भाग होते हैं। छः माह तक जब सूर्य उत्तरी गोल में होता है, तब नाड़ीवलय यन्त्र के उत्तर का गोल भाग प्रकाशित रहता है तथा जब सूर्य अगले छः माह तक दक्षिणी गोल में होता है तब यन्त्र का दक्षिण का गोल भाग प्रकाशित रहता है। इन दोनों भागों के बीच में पृथ्वी की धुरी के समानान्तर लगी कील की छाया से स्थानीय स्पष्ट समय ज्ञात होता है।

कोई ग्रह अथवा नक्षत्र उत्तरी गोलार्ध में है या दक्षिणी गोलार्ध में, यह जानने के लिये इस यन्त्र का उपयोग किया जाता है। उत्तरी गोलार्ध में ग्रह–नक्षत्र के ज्ञान के लिये यन्त्र के उत्तरी भाग के गोल किनारे के किसी उपयुक्त विन्दु से अभीष्ट ग्रह अथवा नक्षत्र को देखिये। यदि वह दिखाई दे तो उसे उत्तरी गोलार्ध में स्थित समझें अन्यथा वह दक्षिणी गोलार्ध में होगा। इस प्रकार नाड़ीवलय यन्त्र से ग्रह–नक्षत्रों का गोल ज्ञान हो जाता है।

स्थानीय समय ज्ञात करने के लिये इस यन्त्र के केन्द्रस्थ शंकु की छाया का प्रमाण (घंटा–मिनट) लिया जाता है। शंकु की छाया जितने घंटा–मिनटों पर स्थिर दिखे, वही उस क्षण का स्थानीय समय होता है। स्थानीय समय में पूर्वोक्त रीति से स्पष्टान्तर संस्कार करने से भारतीय स्टैण्डर्ड समय का ज्ञान होता है। सूर्य के उत्तर गोल में होने पर उत्तरी की ओर बने यन्त्र से तथा दक्षिण गोल में होने पर दक्षिण की ओर बने यन्त्र से समय का ज्ञान होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूर्य जिस गोलार्ध मे उपस्थित हो उसके विपरीत दिशा में स्थित यन्त्र के चक्र से सटकर देखने पर ६ मास तक सूर्य दिखाई नहीं देता है।

३. **सम्राट यन्त्र** :- इस यन्त्र का निर्माण विषुवद्वृत्तीय धरातल में होता है। यन्त्र के बीच की सीढ़ी (शंकु) की दीवाल पृथ्वी की धुरी के समानान्तर होती है तथा इस सीढ़ी की सीध में आकाश की ओर देखने पर ध्रुव तारा दिखाई देता है। इस यन्त्र में सीढ़ी के रूप में यह तिरछी रेखा कर्णात्मक होती है। इस सीढ़ी या कर्णात्मक रेखा का झुकाव प्रत्येक स्थान पर स्थानीय अक्षांश के अनुसार होता है, जैसे– उज्जैन में तिरछी रेखा (सीढ़ी) का झुकाव (अक्षज्या) २३° : ११′ हैं। दिल्ली में इस सम्राट यन्त्र की तिरछी रेखा का झुकाव २८° : ३६′ है। इस प्रकार प्रत्येक देश में यह कर्ण रेखा के नाम से व्यवहार में लाई जाती है। इस यन्त्र के पूर्व तथा पश्चिम की ओर विषुवद्वृत्त के धरातल में स्थानीय समय बताने के लिये एक चौथाई गोल भाग बना हुआ है जिस पर घंटे मिनट एवं सेकण्ड के भाग खुदे हुये होते हैं।

सम्राट यन्त्र की दीवाल (कर्णशंकु) के दोनों ओर ६०°–६०° अंश के चाप अंकित होते हैं। दोनों ओर के चाप घंटा–मिनटादि में विभाजित किये हुये होते हैं। जब आकाश में सूर्य चमकता है तब दीवाल के किनारे की छाया पूर्व अथवा पश्चिम की ओर समय सूचक किसी निशान पर दिखाई देती है। इस निशान पर घंटा–मिनट आदि की गिनती से स्थानीय (जहाँ पर यह यन्त्र लगा हो) समय ज्ञात हो जाता है। प्रातः काल से लेकर स्पष्ट मध्याह्नल काल तक की गणना यन्त्र के पश्चिम की ओर बने चाप द्वारा की जाती है। ठीक स्पष्ट मध्याह्नकाल के बाद लगभग २ मिनट तक छाया लुप्त रहती है। उसके बाद सूर्य पश्चिम कपाल में प्रवेश करता है तब छाया पूर्व के पार्श्वभाग में बने चाप पर धीरे–धीरे खिसकती हुई दृष्टिगोचर होती है। इस प्रकार सम्राट यन्त्र द्वारा प्राप्त स्थानीय समय में पूर्वोक्त रीति से स्पष्टान्तर संस्कार करने पर भारतीय स्टैण्डर्ड समय प्राप्त होता है।

सम्राट यन्त्र द्वारा रात्रि में भी समय ज्ञात किया जा सकता है। चूँकि सभी स्थानों पर सूर्य का याम्योत्तर लंघनकाल धूपघड़ी के समयानुसार दिन के ठीक १२.०० बजे होता है, परन्तु रात्रि में ग्रह एवं नक्षत्रों का याम्योत्तर लंघनकाल भिन्न–भिन्न समय में होता है। इस यन्त्र द्वारा अभीष्ट ग्रह व नक्षत्र का रात्रि में याम्योत्तरलंघन काल बताकर भारतीय स्टैण्डर्ड समय ज्ञात किया जाता है। रात्रि में समय जानने के

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

लिये रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, लुब्धक, प्रजापति, आश्लेषा, मघा, हस्त, चित्रा, स्वाती, मूल, श्रवण, अगस्त्य, अभिजित एवं पूर्वाभाद्रपदादि नक्षत्रों का रात्रि में वेध द्वारा याम्योत्तर लंघनकाल निकालना होता है। अभीष्ट नक्षत्र के याम्योत्तर लंघनकाल का पता लगाने के लिये सर्वप्रथम भचक्र के सायन मेषारम्भ विन्दु के याम्योत्तर लंघनकाल को जानना होगा। प्रतिवर्ष २१ या २२ मार्च को सायनमेषदशमारम्भ विन्दु स्थानीय मध्यम मध्याह्नकाल के लगभग याम्योत्तरलंघन करता है, तत्पश्चात ३ मिनट ५८ सेकण्ड प्रतिदिन के अन्तर से याम्योत्तरलंघन करता है।

सम्राट यन्त्र के द्वारा यह ज्ञात किया जा सकता है कि आकाश में अभीष्ट ग्रह व नक्षत्र विषुवद्वृत्त से उत्तर अथवा दक्षिण कितनी दूरी पर स्थित है। वेध द्वारा चाप (चौथाई गोल) के किनारे पर ऐसे स्थान को ज्ञात कीजिये जहाँ से दृष्टा को सीढ़ी (कर्ण–शंकु) की दीवाल के किनारे के किसी विन्दु पर जो अंक हो वही उस ग्रह अथवा नक्षत्र की विषुवद्वृत्त से दूरी होगी। जिसे उस ग्रह अथवा नक्षत्र की क्रान्ति कहेंगे। इस यन्त्र के कर्णाग्रा पर बने स्पर्श रेखा चिन्हों से अभीष्ट ग्रह अथवा नक्षत्र की उत्तरी व दक्षिणी क्रान्ति का पता चलता है।

इसी प्रकार सम्राट यन्त्र के द्वारा सायन मेष एवं तुला संक्रान्ति में पलभा द्वारा स्थानीय अक्षांश से मध्यान्तर (देशान्तर) तथा कल्पित सूर्य तथा स्पष्टसूर्य के याम्योत्तरलंघन काल के अन्तर द्वारा वेलान्तर ज्ञात करते हैं। इसके अतिरिक्त धूपघड़ी के समय तथा भारतीय मानक समय के अन्तर द्वारा स्पष्टान्तर और ग्रह एवं नक्षत्रों की क्रान्ति व शर के मान ज्ञात किये जाते हैं।

४. **तुरीय यन्त्र** :- वृत्त के चतुर्थ भाग को तुर्य कहते हैं अथवा अंग्रेजी अक्षर (D) का आधा ही तुरीय कहलाता है। इस तुरीय चाप को ६०° अंशों में विभाजित कर भिन्न–भिन्न यन्त्रों का निर्माण हो जाता है। इसे मध्याह्नकालीन याम्योत्तर वृत्त के धरातल में स्थापित करने पर याम्योत्तरीय तुरीय यन्त्र बन जाता है। इसका मुख्य कार्य ग्रह नक्षत्रों का याम्योत्तर लंघनकाल बतलाना तथा ग्रह–नक्षत्र का किसी समय खमध्य से नतांश ज्ञात करना है। नतांश के द्वारा उस ग्रह अथवा नक्षत्र की क्रान्ति का ज्ञान तथा क्रान्ति के द्वारा उदयास्तकाल, दिनमान, गोलज्ञान, सायनभोग्यांशादि तथ्यों का पता चलता है। चूँकि सूर्य का याम्योत्तर लंघनकाल स्थानीय धूपघड़ी के अनुसार ठीक १२:०० बजे ही होता है। इसलिये तुरीय यन्त्र के मध्य में शंकु रखकर

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धूपघड़ी के अनुसार दोपहर १२: ०० बजे शंकु की छाया यन्त्र के जितने अंशादि पर दृष्टिगोचर हो वे अंशादि उस स्थान पर स्पष्ट मध्याह्नकाल के नतांश होते हैं। ''क्रान्त्यक्षजसंस्कृतिर्नतांशाः'' इस सिद्धान्त के आधार पर नतांश वास्तव में अक्षांश में क्रान्ति के योग–वियोग रूप ही होते हैं। जब सूर्य दक्षिण गोल मे होता है तब अक्षांश में क्रान्ति के योग से नतांश प्राप्त होते हैं। इसके विपरीत जब सूर्य उत्तरगोल में होता है। तब अक्षांश में क्रान्ति के वियोग (घटाना) से नतांश प्राप्त होते हैं। चूँकि प्रत्येक स्थान का अक्षांशीय मान तो स्थिर है किन्तु क्रान्ति का मान प्रतिदिन बढ़ता रहता है, फलतः नतांश का मान भी घटता–बढ़ता रहता है। सायन मेष एवं तुला संक्रान्तियों के समय क्रान्तिमान शून्य होता है इसलिये इन दिनों में अक्षांश के बराबर ही नतांश मान होता है।

नतांश = अक्षांश ± सूर्यक्रान्ति, उत्तराक्रान्ति होने पर ऋण (–)

दक्षिणा होने पर धन (+)

२१ मार्च व २३ सितम्बर को सूर्यक्रान्ति का अभाव होने से चर पलों का भी अभाव होता है। [चरांश = Sin^{-1} (Tan सूर्यक्रान्ति × अक्षांश)] चाराभाव होने से उस दिन सर्वत्र दिनमान व रात्रिमान बराबर होते हैं। २१ मार्च के बाद उत्तरी गोलार्ध में शंकु की छाया का मान प्रतिदिन घटता जाता है। २२ जून को शंकु की छाया न्यूनतम होती है अर्थात नतांश का मान न्यूनतम होता है। इस दिन दिनमान अधिकतम होगा। २२ जून के बाद उत्तरीगोलार्ध में शंकु की छाया का मान प्रतिदिन बढ़ता जाता है और २३ सितम्बर को शंकु की छाया स्थानीय अक्षाशं के तुल्य होती है अर्थात नतांश और अक्षांश तुल्य होते हैं। २३ सितम्बर के बाद शंकु की छाया का मान अर्थात नतांश बढ़ता है जो २३ दिसम्बर को अधिकतम होता है इस दिन दिनमान न्यूनतम होता है।

स्पष्ट है कि २१ मार्च के बाद नतांश के मान में जितनी कमी होती है वह उस दिन की उत्तरा क्रान्ति के तुल्य होती है। २३ सितम्बर के बाद नतांश के मान में जितनी वृद्धि होती है वह उस दिन की दक्षिणाक्रान्ति के तुल्य होती है।

इस यन्त्र के द्वारा प्रतिदिन की सूर्यक्रान्ति निकालकर चरांश ज्ञात किये जा सकते हैं। चरांश से चर–पल एवं चर–मिनट ज्ञात कर ६ घंटे में योग–वियोग करने

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पर स्थानीय समय में सूर्योदयास्तकाल निकालते हैं। स्थानीय सूर्यास्ताकल में ५ का गुणा करने पर दिनमान प्राप्त होता है। सूर्योदयास्त काल में स्पष्टान्तर का विपरीत संस्कार करने पर भारतीय स्टैण्डर्ड समय में सूर्योदयास्तकाल ज्ञात हो जाता है।

सायन कर्क एवं मकर संक्रान्ति के समय (२२ जून तथा २३ दिसम्बर) को यह यन्त्र सूर्य की परमक्रान्ति का मान २३ अंश २७ कला लगभग प्रदर्शित करता है। प्रतिदिन की क्रान्ति उपलब्ध होने से उस क्रान्तिमान की ज्या में सूर्य की परमक्रानितज्या का भाग देने पर उस दिन का स्पष्ट मध्याह्न में सूर्य का सायन भोग्यांश मान प्राप्त होता है। अर्थात–

$$\text{सूर्य सायन भोग्यांश} = \frac{\text{ज्या (सूर्यक्रान्ति)}}{\text{ज्या (परमक्रान्ति)}} \text{ राश्यंश}$$

उदाहरणार्थ :– तुरीय यन्त्र पर २१ मार्च को मध्याह्नकाल में ग्वालियर में शंकु की छाया २६ अंश १४ कला (पलभा ५ अंगुल ५५ व्यंगुल) पर गिरती है। तब २६° १४′ ग्वालियर का अक्षांश प्राप्त होगा। २१ मार्च के बाद दिन–प्रतिदिन मध्याह्नकाल में शंकु की छाया का मान कम होता जाता है। मान लो २१ मार्च के बाद किसी दिन स्पष्ट मध्याह्नकाल में शंकु की छाया १५° अंश पर गिरती है तब उस दिन नतांश का मान १५° अंश होगा। तब सूर्यक्रान्ति का मान निम्नलिखित सूत्र द्वारा प्राप्त होता है–

$$\text{सूर्यक्रान्ति} = \text{अक्षांश} - \text{नतांश}$$

$$= २६^\circ १४' - १५^\circ ०' = ११^\circ १४'$$

चूँकि २१ मार्च के बाद सायन सूर्य उत्तरगोल में होता है अतः ११° १४′ सूर्य की उत्तराक्रान्ति हुई। इसी प्रकार सायन सूर्य के दक्षिणगोल में होने पर सूर्य की दक्षिणक्रान्ति का मान ज्ञात कर सकते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि सूर्य के उत्तरगोल में होने पर नतांश में क्रान्तिमान जोड़ने पर तथा सायन सूर्य के दक्षिणगोल में होने पर नतांश में क्रान्तिमान घटाने पर स्थानीय अक्षांश का ज्ञान होता है। इस प्रकार सूर्यक्रान्ति की गणना अक्षांश (२६° १४′) अंकित हो वहाँ से दक्षिण की ओर छाया दिखाई देने पर क्रान्तिमान प्राप्त होता है।

सायनसूर्य की विषुवत वृत्त से उत्तर या दक्षिण की ओर अधिकतम विस्थापन सूर्य की परमक्रान्ति कहलाती है। २२ जून एवं २३ दिसम्बर को विषुवत रेखा पर इस

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

यन्त्र द्वारा स्पष्टा मध्याह्नकाल में नतांश २३° अंश २७′ कला प्राप्त होता है जो कि परमक्रान्ति मान है। इस प्रकार हम देखते हैं कि २२ जून को उत्तरीगोल में २३° अंश २७ कला अक्षांश (लगभग कक्र रेखा) पर हम यंत्र द्वारा स्पष्ट मध्याह्नकाल में शंकु की छाया का अभाव होता है। २३ दिसम्बर को दक्षिणी गोल में २३° अंश २७′ कला अक्षांश (लगभग मकर रेखा) पर भी ऐसी ही स्थिति बनती है। २३ सितम्बर से सायनसूर्य दक्षिणी गोल में प्रवेश करता है। इस दिन ग्वालियर में स्पष्ट मध्याह्नकाल में इस यन्त्र द्वारा शंकु की छाया पुनः २६° अंश १४′ कला पर गिरती है। इसके बाद दिन प्रतिदिन शंकु की छाया का मान बढ़ता जाता है। अक्षांश से जितने अधिक नतांश होंगे वे ही उस दिन के क्रान्त्यंश होंगे। चूँकि सायनसूर्य दक्षिणगोल में होता है अतः सूर्य की दक्षिणा क्रान्ति होगी। इस प्रकार तुरीय यन्त्र के द्वारा सूर्य की परमक्रान्ति, अक्षांश तथा प्रतिदिन के नतांश व क्रान्त्यंश ज्ञात होते हैं। तत्पश्चात निम्नलिखित सूत्रानुसार चर–पल या मिनट निकालकर सूर्योदयास्त एवं दिनमान निकालते हैं –

चरांश = ज्या$^{-१}$ [अक्ष स्पर्शज्या × क्रान्ति स्पर्श ज्या]

चरांश = Sin^{-1} [Tan (२६° १४′) × (११° १४′)]

= Sin^{-1} [०.४६२७८३८ × ०.१६८६०६६]

= Sin^{-1} [०.०६७८७१७] = ५.६१६६३२= ५° ३७′

∴ चर मिनट = चरांश × ४

= ५.६१६६३२ × ४ = २२ मिनट २८ सेकण्ड

स्थानीय सूर्यास्त = ६ घंटा ± चर मिनट

सूर्यक्रान्ति उत्तरा होने पर + , सूर्यक्रान्ति दक्षिणा होने पर –

स्थानीय सूर्यास्त = ६ घंटा + २२ मिनट २८ सेकण्ड

= ६ घंटा २२ मिनट २८ सेकण्ड

स्थानीय सूर्यास्त = १२ घंटा – सूर्यास्त

= १२ घंटा – ६ घंटा २२ मिनट २८ सेकण्ड

= ५ घंटा ३७ मिनट ३२ सेकण्ड

दिनमान = स्थानीय सूर्यास्त × ५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

= ५ घंटा ३७ मिनट ३२ सेकण्ड × ५

= ३१ घटी ५२ पल

रात्रिमान = ६० घटी – ३१ घटी ५२ पल = २८ घटी ८ पल

चूँकि किसी दिन ग्वालियर में सायन सूर्य की उत्तराक्रान्ति का मान ११° अंश १४′ कला है तथा वर्तमान परमक्रान्ति मान २३° अंश २७ कला है तब इस दिन सूर्य का सायन स्पष्टराश्यादि मान निम्नलिखित सूत्रानुसार प्राप्त होता है–

$$\text{सायनसूर्य के भोग्यांश} = \text{ज्या}^{-1}\left[\frac{\text{सूर्यक्रान्तिज्या}}{\text{परमक्रान्तिज्या}}\right]$$

$$= \text{Sin}^{-1}\left[\frac{\text{Sin } ११^\circ\ १४'}{\text{Sin } २३^\circ\ २७'}\right]$$

$$= \text{Sin}^{-1}\left[\frac{०.१९४८०५०}{०.३९७९४८३}\right]$$

$$= \text{Sin}^{-1}\,[०.४८९५२३]$$

$$= २९.३०९२३९ = २९^\circ\ १८'\ ३३''$$

सायन सूर्य के मेषादि होने से गणितागत मान ही सायन सूर्य स्पष्ट होता है। कर्मादि होने से ६ राशि में से घटाने पर, तुलादि होने से ६ राशि में जोड़ने पर एवं कमरादि होने से १२ राशि में से गणितागत मान को घटाने पर सायन स्पष्ट सूर्य के राश्यादि विकलात्मक मान प्राप्त होते हैं।

इस प्रकार तुरीय यन्त्र की सहायता से हम सायन स्पष्ट सूर्य के राश्यादि मान ज्ञात करते हैं।

५. **भारतीय तारामण्डल** :- इसे धीयन्त्र, दिगंश यन्त्र या मिश्रयन्त्र भी कहते हैं। इस यन्त्र द्वारा दिगंश, दिशा, अग्रा, अक्षांश, नतांश, उन्नतांश, अयन, क्रान्ति, गोलज्ञान, सूर्योदयास्त, दिनमान, राशिसंक्रमण, पलभा एवं ध्रुवदर्शन इत्यादि तथ्यों का पता

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

चलता है। धीयन्त्र कटोरे के समान होता है जिसके मध्य में शंकु स्थित होता है जिससे एक डोरी बँधी होती है।

पूर्व–पश्चिम दिशा के विन्दु से क्षितिजवृत्त की कोणात्मक दूरी दिगंश कहलाती है। दिगंश ज्ञात करने के लिये अभीष्टकाल में धीयन्त्र में लगे शंकु की छाया जिस स्थान पर लगे वहाँ शंकु से जुड़ी हुई डोरी लगाने पर उस विन्दु पर जितने अंशादि मिले उनकी उत्तर विन्दु से गणना करने पर दिगंश प्राप्त होते हैं। इस यन्त्र के क्षितिज पर पूर्व–पश्चिम, उत्तर–दक्षिण विन्दु ही दिशा द्योतक हैं। इस यन्त्र के द्वारा सायन मेष एवं तुला संक्रान्ति के समय स्पष्ट मध्याह्नकाल में प्राप्त शंकु की छाया का माप पलभा है, इस शंकु की छाया के अग्रभाग के विन्दु से वृत्तपाली तक रेखा खींचने पर विषुवद्भाग्रगा रेखा बन जाती है। २१ मार्च एवं २३ सितम्बर को अग्रा का मान शून्य होता है। प्रातः कालीन शंकु की छाया तथा विषुवद्भाग्रगा रेखा के बीच जो अन्तर होता है, उसे अग्रा कहते हैं।

धीयन्त्र में क्षितिज वृत्त के समानान्तर शून्य से नब्बे अंश तक वृत्त खींच दिये जाते हैं, जिनसे उन्नतांश का मान प्राप्त होता है। जिस समय सूर्य का उन्नतांश ज्ञात करना हो उस समय शंकु की छाया जितने अंश के वृत्त पर पड़े वही उस समय में सूर्य का उन्नतांश होगा। प्राप्त उन्नतांश के मान को ६० अंशों में से घटाने पर शंकु के मूल से नतांश का मान प्राप्त होता है। स्पष्ट मध्याह्नकाल में प्राप्त नतांशों द्वारा स्थानीय अक्षांश एवं क्रान्तिमान ज्ञात किया जा सकता है। इसके द्वारा चर–मिनट निकालकर स्थानीय सूर्योदयास्त एवं दिनमान ज्ञात करते हैं। सूर्योदयास्त काल में विपरीत स्पष्टान्तर संस्कार करके भारतीय स्टैण्डर्ड समय में सूर्योदयास्तकाल प्राप्त होता है। जब स्पष्टामध्याह्नकाल में प्राप्त नतांश का मान स्थानीय अक्षांश से अधिक हो तब सायन सूर्य के दक्षिणी गोलार्ध में तथा कम होने पर सायन सूर्य के उत्तरी गोलार्ध में होने का पता चलता है। दक्षिण गोल में नतांश की संख्या स्थानीय अक्षांश से जितनी अधिक हो उतने अंशादि सूर्य की दक्षिणाक्रान्ति होती है। इसके विपरीत उत्तरगोल मे नतांश की संख्या स्थानीय अक्षांश से जितनी कम होती है, उतना ही उत्तराक्रान्ति का मान होता है।

धीयन्त्र में बने मेषादि अहोरात्रों पर जिस दिन शंकु की छाया मेष या तुला अहारात्र को स्पर्श करती है उस दिन मेष या तुला राशि में सूर्य का संक्रमण होता

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है। इसी प्रकार जिस राशि वाले अहोरात्रवृत्त को जिस दिन शंकु की छाया स्पर्श करें, उस दिन उस राशि में सूर्य के संक्रमणकाल का बोध होता है। इस यन्त्र के द्वारा स्पष्टमध्याह्न काल में प्राप्त क्रान्ति के अंशादि की ज्या बनाकर परमक्रान्ति (२३°:२७′) की ज्या का भाग देकर सायन सूर्य के भोग्यांश की ज्या प्राप्त हो जाती है। उसका अंशात्मक चाप बनाकर मेषादि तीन राशि में सूर्य के स्थित होने पर जो चापांश बने वही सायन सूर्य के स्पष्टाश्यादि होते हैं।

६. **भित्तियन्त्र** :- भित्तियन्त्र द्वारा ग्रह–नक्षत्रों के नतांश, क्रान्ति, अयन, गोलज्ञान आदि तथ्यों का पता लगता है। इस यन्त्र का उत्तर–दक्षिण वृत्त, उत्तर–दक्षिण विन्दु तथा दृष्टा के खमध्य विन्दु को मिलाने वाली रेखा के धरातल में बना होता है। जब ग्रह–नक्षत्र उत्तर–दक्षिण रेखा को पार करते हैं तब उनका मध्याह्नकाल होता है। इस यन्त्र के ऊपरी सिरे पर दो कीलें लगी होती हैं। जिस ग्रह अथवा नक्षत्र का वेध करना होता है उसे यदि पूर्व–पश्चिम वृत्त, पूर्व–पश्चिम विन्दु तथा खमध्य को मिलाने वाली रेखा से दक्षिणभाग में हो तो दक्षिण की तथा उत्तरभाग में हो तो उत्तर की कील का प्रयोग करते हैं।

जिस क्षण ग्रह अथवा नक्षत्र उत्तर–दक्षिण गोल के पार जाने लगे तब कील में बँधे हुये डोरे को अपनी आँख के साथ यन्त्र की दीवाल पर ऐसे स्थान पर स्थिर करते हैं कि जिससे गोल के पार जाने वाला ग्रह अथवा नक्षत्र कील की छाया की सीध में दिखाई दे।

यन्त्र की सफेद गोल पट्टी पर डोरे के स्पर्श विन्दु पर अंकित अंक ग्रह अथवा नक्षत्र के नतांश होते हैं।

७. **कर्क, तुला एंव मकर राशिवलय यन्त्र** :- ये यन्त्र सम्राट यन्त्र के तरह की होते हैं। इनके द्वारा कक्रादि, तुलादि एवं मकरादि राशियों में सायनसूर्य के भोग्यांश ज्ञात किये जाते हैं। इनसे ग्रह का सायन भोग्यांशादि प्राप्त हो जाता है। ये यन्त्र बड़े उपयोगी हैं जब सायन कक्रारम्भादि विन्दु याम्योत्तर लंघन करेगा तब मकरराशिवलय पर वेध करने पर सायनसूर्य के जितने अंशादि प्राप्त होंगे उतना ही सायन सूर्य स्पष्ट होगा। सायन सूर्य में से अयनांश का वियोग करने पर दृक्पक्षीय निरयन सूर्य स्पष्ट होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

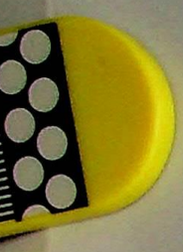

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कर्क यन्त्र एवं तुलायन्त्र पर जब कक्र अथवा मकर राशियों के प्रारम्भिक विन्दु का याम्योत्तर लंघन होता है, तब आकाश में किसी भी ग्रह का वेध करने पर उस ग्रह के सायन भोग्यांश प्राप्त होते हैं। अयनांश घटाने पर दृक्पक्षीय निरयन ग्रह के स्पष्ट राश्यादिक मान प्राप्त होते हैं।

उपर्युक्त यन्त्रों के अतिरिक्त भास्कराचार्य ने सिद्धान्तशिरोमणि ग्रन्थ के गोलबन्धाधिकार एवं यन्त्राध्याय में मुख्यतः ६ यन्त्रों का वर्णन किया है। उन्होंने उनका मुख्य उद्देश्य काल साधन ही बतलाया है। यहाँ उनका संक्षिप्त वर्णन करते हैं–

(१) **चक्रयन्त्र** :- धातुमय अथवा काष्ठमय एक चक्र बनाकर उसके बीच मे छिद्र करते हैं। चक्र की परिधि पर ३६० अंश अंकित करें। चक्र की नेमि पर यन्त्र को धारण करने के लिये श्रृंखलादि आधार बनाते हैं। इस आधार एवं चक्र के मध्य विन्दु से होकर जाती हुई एक लम्ब रेखा खींचते हैं, जिसके ऊपर मध्यविन्दु से गुजरती हुई दूसरी लम्ब रेखा खींचते हैं। चक्र के मध्यविन्दु में स्थित छिद्र में एक शलाका इस प्रकार डालते हैं जो चक्र पर लम्ब हो, यही अक्ष है। आधार द्वारा चक्र को इतना घुमाते हैं कि उसकी परिधि ठीक सूर्य के सामने आ जाये। ऐसा करने पर अक्ष की छाया परिधि में जहाँ लगे वहाँ से उस ओर की तिर्यक रेखा पर्यन्त सूर्य का उन्नतांश और छाया से चक्राधोविन्दु पर्यन्त नतांश का बोध होता है। चक्र को शून्य शरवाले तारों (पुष्य, मघा आदि) की सीध में रखकर ग्रहों के भोगशर को ज्ञात किया जाता है। इस यन्त्र के द्वारा रात्रि में भी अभीष्ट ग्रह–नक्षत्रों की क्रान्ति का ज्ञान होता है।

(२) **गोलयन्त्र** :- इस यन्त्र के द्वारा लग्न का ज्ञान होता है। लग्न जानने के लिये क्रान्तिवृत्त में इष्ट दिन के रविस्थान का विन्दु निर्धारित करें। खगोल बने भगोल को घुमा कर उस विन्दु को क्षितिज में स्थापित करें। भगोलीय विषुवतवृत्त का जो विन्दु क्षितिज के सामने आवे उसे रेखांकित करें। भगोल को पुनः इस प्रकार घुमायें कि रवि चिह्न (विन्दु) की छाया पृथ्वीगोल पर दृष्टिगत हो। इस स्थिति में विषुवतवृत्तीय चिह्न से क्षितिज पर्यन्त नाड़ीवलय में जितनी घटियाँ हो उन्हें सूर्योदय से गत घटी समझकर ग्रहण करें। उस समय क्रान्तिवृत्त का जो विन्दु क्षितिज में दृष्टिगत होगा वही उस समय की लग्न होगी।

(३) **याष्टियन्त्र** :- समतल भूमि पर अर्द्धव्यास का वृत्त बनाकर उस पर दिशाओं को रेखांकित करें। यन्त्र के पूर्व–पश्चिम भागों में ज्यार्ध की तरह अग्रा बनाये। वृत्त

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के केन्द्र से द्युज्यामिति व्यासार्द्ध का एक दूसरा छोटा वृत्त बनावें। उस पर ६० घटियों के चिह्न अंकित करे। यन्त्रालय में इस यन्त्र को देखा जा सकता है। इस यन्त्र के द्वारा पलभादि एवं दिन के प्रहर इत्यादि का ज्ञान होता है।

(४) **घटिका यन्त्र** :- ताँवे का एक कटोरा बनाओ, इसको घटिका कहते हैं। इसके पेंदे में एक छोटा सा छेद करो तथा दूसरे जल से भरे पात्र में छोड़ दिया जाता है। छिद्र द्वारा पानी धीरे–धीरे कटोरे में भीतर जाने लगता है। जितने समय में घटिका ठीक एक घटी पानी में डूब जाती है उससे समय का ज्ञान होता है। घटियों का प्रमाण छाया पद्धति से लो। घटियों की गिनती करते रहो। इससे ज्ञात होगा कि दिन की कितनी घटियाँ व्यतीत हो चुकी हैं

इनके अतिरिक्त चापयन्त्र, नाड़ीवलय यन्त्र, तुरीय यन्त्र, फलकयन्त्र एवं शंकुयन्त्र का उल्लेख भास्कराचार्य ने यन्त्राध्याय में किया था। इन यन्त्रों की संरचना एवं प्रयोग विधि का वर्णन हम पूर्व में कर चुके हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

षष्ठ अध्याय

पञ्चांग द्वारा शुभाशुभ का ज्ञान

ज्योतिर्विज्ञान की अविछिन्न परम्परा वैदिककाल से लेकर अद्यपर्यन्त हमको मिलती आ रही है, जिसका उपयोग हमारे धार्मिक एवं व्यवहारिक कार्यों में सनातनाकाल से सतत् होता रहा है। इस काल विधानशास्त्र ज्यातिर्विज्ञान के द्वारा हमें शुभाशुभ समय का ज्ञान होता है। समय शुद्धि को देखकर ही भारतीय महर्षियों ने किसी कार्य को करने का आदेश मुहूर्तग्रन्थों में किया है। समय का शुद्ध ज्ञान पञ्चांग के द्वारा होता है। नारद संहिता में इस प्रकार सुविदित है कि ज्योतिर्विज्ञान के बिना हमारे श्रौत और स्मार्त्त कर्म सिद्ध नहीं हो सकते हैं।[1] इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राचीनकाल में वैदिक, स्मार्त्त एवं गृहस्थों के सभी धार्मिक एवं सांकल्पिक अनुष्ठान आदि कृत्यों का मार्गदर्शन पञ्चांग के तिथ्यादि अंगों द्वारा ही सिद्ध होता था।

पञ्चांग का निर्माण चाहे किसी भी मत से हो, सभी मतों का एक मात्र उद्देश्य शुभाशुभत्व का कथन करना ही होता है। काल के पाँचों अंगों–तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण का शुभाशुभत्व वर्णन हमें ज्योतिष ग्रन्थों में स्पष्ट रूप से मिलता है, ये पाँचों ही संहिता स्कंध के महत्वपूर्ण अंग है। इनका उपयोग विभिन्न प्रकार के लोकोपयोगी मुहूर्तादि साधन में किया जाता है। जिस प्रकार जन्तु अपनी पंचेन्द्रियों के माध्यम से पदार्थ के गुण–दोषों का आंकलन करके उसकी उपयोगिता को सिद्ध करता है उसी प्रकार काल के ये पाँचों अंग – तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण मानवजीवन को सुखी एवं कल्याणकारी बनाने के लिये शुभाशुभत्व समय का ज्ञान कराते हैं। पञ्चांग मानव को चारों पुरूषार्थ–धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष प्रदान करने में सहायता करता है। मानवजीवन विविध कर्म श्रृंखलाओं से बँधा हुआ होता है। उसे अपने समस्त जीवनकाल में अनेक ऐसे धार्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक कार्य करने होते हैं जिनके आधार पर उसके जीवन की सार्थकता और निर्रथकता अभिव्यक्त होती है। मनुष्य विविध प्रकार के कार्यों की सफलता को लेकर ही इस लोक में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। वह सफलता प्राप्ति के लिये सदैव अपने कार्यक्षेत्र में लगा रहता है परन्तु सभी कार्यों में उसे पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हो पाती है। जब मनुष्य

---

[1] विनैतदखिलं श्रोतस्मार्त्तकर्म न सिद्धयति।
तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा रचितं पुरा।। नारद संहित, प्रथमाध्याय, श्लोक ७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

षष्ठ अध्याय

पञ्चांग द्वारा शुभाशुभ का ज्ञान

ज्योतिर्विज्ञान की अविछिन्न परम्परा वैदिककाल से लेकर अद्यपर्यन्त हमको मिलती आ रही है, जिसका उपयोग हमारे धार्मिक एवं व्यवहारिक कार्यों में सनातनाकाल से सतत् होता रहा है। इस काल विधानशास्त्र ज्यातिर्विज्ञान के द्वारा हमें शुभाशुभ समय का ज्ञान होता है। समय शुद्धि को देखकर ही भारतीय महर्षियों ने किसी कार्य को करने का आदेश मुहूर्तग्रन्थों में किया है। समय का शुद्ध ज्ञान पञ्चांग के द्वारा होता है। नारद संहिता में इस प्रकार सुविदित है कि ज्योतिर्विज्ञान के बिना हमारे स्रोत और स्मार्त्त कर्म सिद्ध नहीं हो सकते हैं।[1] इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राचीनकाल में वैदिक, स्मार्त्त एवं गृहस्थों के सभी धार्मिक एवं सांकल्पिक अनुष्ठान आदि कृत्यों का मार्गदर्शन पञ्चांग के तिथ्यादि अंगों द्वारा ही सिद्ध होता था।

पञ्चांग का निर्माण चाहे किसी भी मत से हो, सभी मतों का एक मात्र उद्देश्य शुभाशुभत्व का कथन करना ही होता है। काल के पाँचों अंगों–तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण का शुभाशुभत्व वर्णन हमें ज्योतिष ग्रन्थों में स्पष्ट रूप से मिलता है, ये पाँचों ही संहिता स्कंध के महत्वपूर्ण अंग है। इनका उपयोग विभिन्न प्रकार के लोकोपयोगी मुहूर्तादि साधन में किया जाता है। जिस प्रकार जन्तु अपनी पंचेन्द्रियों के माध्यम से पदार्थ के गुण–दोषों का आंकलन करके उसकी उपयोगिता को सिद्ध करता है उसी प्रकार काल के ये पाँचों अंग – तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण मानवजीवन को सुखी एवं कल्याणकारी बनाने के लिये शुभाशुभत्व समय का ज्ञान कराते हैं। पञ्चांग मानव को चारों पुरूषार्थ–धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष प्रदान करने में सहायता करता है। मानवजीवन विविध कर्म श्रृंखलाओं से बँधा हुआ होता है। उसे अपने समस्त जीवनकाल में अनेक ऐसे धार्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक कार्य करने होते हैं जिनके आधार पर उसके जीवन की सार्थकता और निर्रथकता अभिव्यक्त होती है। मनुष्य विविध प्रकार के कार्यों की सफलता को लेकर ही इस लोक में प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। वह सफलता प्राप्ति के लिये सदैव अपने कार्यक्षेत्र में लगा रहता है परन्तु सभी कार्यों में उसे पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हो पाती है। जब मनुष्य

---

[1] विनैतदखिलं श्रोतस्मार्त्तकर्म न सिद्धयति।
तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा रचितं पुरा।। नारद संहित, प्रथमाध्याय, श्लोक ७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

असफल होता है तब उसकी असफलता के कारणों को समझने का प्रयत्न किया जाता है। ज्योतिषीय दृष्टि से मानव की असफलता के प्रमुख कारण पुरूषार्थहीनता एवं विपरीत समय ही माना जाता है। कोई भी व्यक्ति जब अपने सामर्थ्य के अनुरूप परिश्रम करके भी अभीष्ट कार्यसिद्धि नही कर पाता है तब उसे पुरूषार्थ में कमी न मानकर उसके विपरीत समय को ही कारण मानना पड़ता है। विपरीत समय पर किया कार्य कभी भी सफल नहीं हो पाता है, यदि सफल भी हुआ तो बड़ी कठिनाइयों का सामना करने के उपरान्त ही होगा। कभी–कभी विपरीत परिस्थितियों के पराभूत होकर व्यक्ति अनेक अनिष्ट कार्य स्वतः कर लेता है, जिससे उसका जीवन और अधिक कष्टकारी हो जाता है। मानवजीवन के समस्त घटनाक्रम का अवलोकन करते हुये हमारे दिव्यद्रष्टा महर्षियों ने समय की शुद्धाशुद्ध पहिचान ज्योतिष के माध्यम से की, जिसका सहारा लेकर मानव अपने दैनिक जीवन के सभी कार्यों को सरलतापूर्वक कर सकता है और अपने उन तमाम कष्टों से छुटकारा पा सकता है जिनके कारण वह प्रताड़ित हो रहा है।

(अ) मुहूर्त :- पञ्चांग में दैनिक जीवन में काम आने वाले शुभाशुभ मुहूर्तों को दिया जाता है। ये मुहूर्त व्यक्ति के हित साधक होकर परम्परा से राष्ट्र का हित करते आ रहे हैं। मुहूर्त पाँचों अंगों–तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण और लग्नादि का योग होता है। यह योग शुभकारी भी होता है और अशुभकारी भी। शुभकारी योग के शुभ मुहूर्त एवं अशुभकारी योग के अशुभ मुहूर्त होते हैं।[२] मुहूर्त शब्द का अर्थ होता है– "कुछ विशिष्ट समय"। सामान्यतः मुहूर्त २ घटी के लगभग होता है। मुहूर्तों का हमारे जीवन में बहुत प्रभाव होता है। इनका अनादिकाल से लोकव्यवहार से सम्बन्ध चला आ रहा है। सम्प्रति विवाहादि संस्कार तो बिना मुहूर्त के होते ही नहीं हैं। गृहारम्भ, गृहप्रवेश, बोआई–कटाई, नामकरण, मुण्डन, उपनयन इत्यादि संस्कार एवं अन्य धार्मिक कृत्य, पूजन आदि कर्म बिना मुहूर्त के नहीं होते हैं। केवल वैदिक धर्मी ही नहीं लिंगायत और जैन भी अनेकानेक कृत्यों के लिये मुहूर्त का उपयोग करते हैं। पारसी और मुसलमानों के भी कुछ कार्य मुहूर्तानुसार ही होते हैं। ज्योतिष के ज्ञान की वृद्धि होने

---

२ तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा रचितं पुरा।। नारद संहित, प्रथमाध्याय, श्लोक ७
नारदीय ज्योतिष–चतुर्थ अध्याय, पृष्ठ २१०–२११

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

का और उसका आज तक अस्तित्व में बने रहने का एक प्रमुख कारण मुहूर्त की आवश्यकता है।[३]

ऋग्वेदज्योतिष[४] नारद पुराण[५] मुहूर्त चिन्तामणि[६] एवं मुहूर्तमार्त्तण्ड[७] आदि ज्योतिष ग्रन्थों में दिनमान के १५वें भाग को दिन का मुहूर्त तथा रात्रिमान के १५वें भाग को रात्रि का मुहूर्त कहा है। अतः इन ग्रन्थों के आधार पर हम दिनमान (अथवा रात्रिमान) के १५वें भाग को मुहूर्तकाल मानते हैं। प्रायः एक मुहूर्त २ घड़ी का होता है किन्तु दिनमान में परिवर्तन होने पर इसमें कुछ पलों का अन्तर आता रहता है। इन ज्योतिष ग्रन्थों में दिन और रात के कुल ३० मुहूर्तों का उल्लेख उनके देवताओं सहित मिलता है। मुहूर्तमार्त्तण्ड में दिन एवं रात के ३० मुहूर्तों के देवताओं को बतलाया है, जिनमें दिन के १५ मुहूर्तों के मुहूर्ताधिप इस प्रकार हैं–
१. शिव २. सर्प ३. मित्र ४. पितृ. ५. वसु ६. अम्बु ७. विश्वदेव ८. अभिजित् ९. ब्रह्मा १०. इन्द्र ११. इन्द्राग्नि १२. राक्षस १३. वरूण १४. अर्यमा १५. भग।
इसी प्रकार रात्रि के १५ मुहूर्तों के मुहूर्ताधीश हैं–
१. शिव २. अजपात् ३. अहिर्बुध्न ४. पूषा ५. आश्विः ६. यम ७. अनल ८. ब्रह्मा ९. इन्द्र १०. अदिति ११. जीव १२. विष्णु १३. सूर्य १४. त्वष्टा १५. समीर।
इन मुहूर्तों में नक्षानुसार कर्म किये जाते हैं।[८]

मुहूर्तबोधक चक्रम्

मुहूर्त संख्या	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
दिन मुहूर्ताः	आर्द्रा	आश्लेषा	अनु.	मघा	धनिष्ठा	पू. षा.	उ. षा.	अभि.	रोहि.	जेष्ठा	विशाखा	मूल	शतभि.	उ.फा.	पू. फा.
रात्रि मूहूर्ताः	आर्द्रा	पू. भा.	उ. भा.	रेवती	अश्वि	भरणी	कृति.	रोहि.	मृग शिरा	पुन र्वसु	पुष्य	श्रवण	हस्त	चित्रा	स्वाती

---

३ भारतीय ज्योतिष, अनुवादक श्री शिवनाथ झारखण्डी, पृष्ठ ६१५
४ ऋग्वेदज्योतिष, श्लोक १६, १७
५ नारद पुराण, पूर्वभाग २, अध्याय ५६, श्लोक २२४–२२६
६ मुहूर्त चिन्तामणि, विवाहप्रकरण, श्लोक ५२, ५३
७ मुहूर्तमार्त्तण्ड, नक्षत्रप्रकरण, श्लोक ४
८ अह्नः स्युः शिवसार्पमित्रपितरो वस्वम्बुविश्वेऽभिजि–
त्केन्द्रेन्द्राग्निनिशाचरा अपि जलाधीशोऽर्यमाख्यो भगः।
रात्रेः स्युः स्मरहा त्रयोऽजचरणात्पञ्चाश्वितोऽथोदिति–
र्जीवा विष्णुरिनान्त्रयस्तिथिलवाः कर्मेषु भोक्तं स्मृतम्।। मुहूर्तमार्त्तण्ड, नक्षत्रप्रकरण, श्लोक ४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

तात्पर्य यह है कि जातक को जिस वार में दिन अथवा रात्रि में जिस नक्षत्र से सम्बन्धित कर्म करना हो किन्तु उस वार में वह नक्षत्र उपलब्ध नहीं हो तब जातक उस नक्षत्र के मुहूर्त में अपना कार्य कर सकता है।

उदाहरणार्थ :– किसी व्यक्ति को गृहप्रवेश करना है। गृहप्रवेश का कार्य स्थिर संज्ञक नक्षत्रों–रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा एवं उत्तराभाद्रपद में करना शुभप्रद होता है। मान लो जिस दिनांक को गृह प्रवेश करना है उस दिनांक में स्थिर संज्ञक नक्षत्रों में से कोई नहीं हो, तब उस जातक के लिये दिन का ७वाँ, ६वाँ एवं १४वाँ मुहूर्त उपयुक्त होगा। यदि इष्ट दिनांक को दिनमान ३० घटी ४५ पल हो तब दिनमान में १५ का भाग देने पर एक मुहूर्त का दण्डादि मान प्राप्त हो जायेगा। अर्थात ३० घटी ४५ पल ÷ १५ = २ घटी ३ पल एक मुहूर्त का मान होगा। अब ७वें मुहूर्त का समयांतर निकालते हैं– २ घटी ३ पल × ६ = १२ घटी १८ पल अर्थात ७वाँ मुहूर्त सूर्योदय के बाद १२ घटी १८ पल से १४ घटी २१ पल तक रहेगा। इसी प्रकार ६वाँ मुहूर्त दिन में १६ घटी ४२ पल तक रहता है। अतः इन्ही मुहूर्तो में गृहप्रवेश करना उत्तम होगा।

रविवार आदि वारों के योग से कुछ मुहूर्तों को शुभकार्यों में वर्जित माना गया है। महर्षि नारद के मत से रविवार को अर्य्यमा मुहूर्त, चन्द्रवार में ब्रह्मा तथा राक्षस मुहूर्त, मंगलवार को वह्नि और पितर, बुधवार को अभिजित, गुरूवार को जल और राक्षस, शुक्रवार को ब्रह्मा और पितर, शनिवार को शिव और सर्प मुहूर्त निन्दनीय माने गये हैं। शुभकार्यों में उक्त निन्दनीय मुहूर्तो का परित्याग कर देना चाहिये।[९]

मुहूर्त चिन्तामणि में रविवार आदि वारों में पड़ने वाले चार मुहूर्तो – कुलिक, कालवेला, यमघण्ट, कण्टक का उल्लेख हुआ है।[१०] जिन्हें निन्दित कहा है। इसमें आगे लिखा है कि रविवार को ६/७/८/१०/१४वाँ मुहूर्त, सोमवार को ४/६/८/९/१२/१३/१४वाँ मुहूर्त, भौमवार को २/३/४/६/१०वाँ मुहूर्त, बुधवार को २/४/८/९/१०/१४वाँ मुहूर्त, गुरूवार को २/६/१२/१४/१५/१६वाँ मुहूर्त, शुक्रवार को

---

[९] मुहूर्तमानं द्वरावक्षणर्क्षाणि समेश्वरम्। अर्यमा राक्षसब्राह्मो पित्र्याग्नेयौ तथाभिजित्।।
राक्षससाख्यौ ब्राह्मपित्र्यौ भर्गाजांशाविनादिषु। वारेषु वर्जनीयास्ते मुहूर्ताः शुभकर्मसु।।
नारद पुराण, पूर्वभाग २/५६/२२७–२२८

[१०] कुलिकः कालवेला च यमघण्टश्च कटकः।
वाराद्द्विघ्ने क्रमान्मन्दे बुधे जीवे कुजे क्षणः।। मु. चि., शुभाशुभप्रकरण, श्लोक ३७, पृ. ४४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४/५/६/९/१०/१२/१४वाँ मुहूर्त और शनिवार को १/२/८/१०/११/१२वाँ मुहूर्त निन्दित होता है। इन मुहूर्तों में कोई दुष्टमुहूर्त, कोई कुलिक, कण्टक, कालवेला, अर्धयाम् और यमघण्ट होता है।[११]

दुष्टमुहूर्त बोध सारणी

नाम वार	रवि	सोम	भौम	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
कुलिक	१४	१२	१०	८	६	४	२
कालवेला	८	६	४	२	१४	१२	१०
यमघण्ट	१०	८	६	४	२	१४	१२
कण्टक	६	४	२	१४	१२	१०	८
अर्धयाम	७	१२	३	९	१५	५	११
अर्धयाम	८	१४	४	१०	१६	६	१२
दुष्टक्षण	—	९	—	—	—	९	१

जिस नक्षत्र में जो काम करने को कहा गया है उसी नक्षत्र के देवता के मुहूर्त में यात्रादि कर्म करना चाहिये। मध्याह्न मे जब अभिजित मुहूर्त हो तो उसमें समस्त शुभ कार्य करना उत्तम होता है यद्यपि उस दिन कितने भी दोष हों, केवल दक्षिण दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिये।[१२] पुराणों एवं मुहूर्त ग्रन्थों में अनेक प्रकार के मुहूर्तों का उल्लेख मिलता है। कुछ मुहूर्तों का हम यहाँ उल्लेख करते हैं जो कि अधिकांश पञ्चांगों मे दिये रहते हैं।

१. **स्त्रियों का प्रथम रजोदर्शन** :- युवतियों को तेरह वर्ष की आयु के आसपास मासिक धर्म प्रारम्भ होता है। सबसे पहले का जो रक्तस्राव है वह स्त्रियों का प्रथम रजोदर्शन कहा जाता है। महर्षि नारद के मतानुसार अमावस्या, रिक्ता (४/९/१४) अष्टमी, छठी, द्वादशी एवं प्रतिपदा तिथि में; परिधि योग के पूर्वार्ध, व्यतीपात और वैधृति में, सन्ध्या समय, सूर्य और चन्द्र के ग्रहणकाल में तथा भद्रा (विष्टि करण) में स्त्री का प्रथम मासिक धर्म अशुभकारी होता है। रवि, सोम, मंगल आदि वारों में प्रथम

---

[११] मुहूर्त चिन्तामणि, शुभाशुभ प्रकरण, श्लोक ३८, ३९

[१२] यास्मिन्नृक्षे हि यत्कर्म कथितं निखिलं च यत्। तद्दैवत्ये तन्मुहूर्त कार्य यात्रादिकं सदा।।
दिनमध्येऽभिजित्संज्ञे दोषमन्येषु सत्स्वपि। सर्व कुर्याच्छुभं कर्म याम्यदिग्गमनं बिना।।
सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्याय, मुहूर्तप्रकरण, पृ. ९७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

रजोदर्शन होने पर वह स्त्री क्रमशः रोगयुक्त, पति की प्रिया, दुःखयुक्ता, पुत्रवती, भोगवती, पतिव्रता और क्लेशयुक्त होती है। इसी प्रकार से भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा, जेष्ठा, विशाखा एवं तीनों पूर्वा–इन नक्षत्रों तथा चैत्र, अषाढ़, कार्तिक एवं पौष चान्द्रमासों में स्त्री का प्रथम रजोदर्शन शुभ नहीं होता है। अशुभयोग, निन्द्यनक्षत्र और निन्दित दिन में प्रथम मासिक धर्म होने पर वह स्त्री कुटला होती है।[१३] महर्षि नारद ने इन सबस दोषों की शान्ति के लिये तिल, धृत और दुर्वा से गायत्री मन्त्र द्वारा १०८ बार आहुति तथा सुवर्णदान, गौदान एवं तिलदान का उपाय बताया है।[१४]

श्रीरामदैवज्ञ ने वैशाख, जेष्ठ, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ एवं श्रवण इन ७ चान्द्रमासों के शुक्लपक्ष में, शुभ वारों (सोम, बुध, गुरू, शुक्र) में, शुभलग्नों (२/३/४/६/७/९/१२) में और दिन के समय में स्त्रियों का प्रथम रजोदर्शन होना उत्तम है।[१५] इन्होंने भाद्रमास में भी प्रथम रजोदर्शन अशुभ माना है। आश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, उ. भा., श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तराषाढ़ा, रेवती–इन १५ नक्षत्रों में श्वेत वस्त्र पहने हुये प्रथम मासिक धर्म का होना शुभ होता है। कृतिका, पुनर्वसु, मघा, विशाखा, मूल–इन ५ नक्षत्रों में प्रथम रजोदर्शन मध्यम और शेष भरणी, आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वाफाल्गुनी, जेष्ठा, पूर्वाषाढ़ा एवं पूर्वाभाद्रपद–इन ७ नक्षत्रों में प्रथम रजोदर्शन अशुभ होता है।[१६] प्रथम रजस्वला स्त्री को आश्विनी मृगशिरा, रोहिणी, हस्त, स्वाती, अनुराधा, जेष्ठा, धनिष्ठा एवं तीनों उत्तरा–इन ११ नक्षत्रों में, शुभ वारों में, शुभ तिथियों (२/३/५/७/११/१२/१३) में स्नान करना चाहिये। ऐसा करने से रजस्वला स्त्री शीघ्र गर्भधारण करती है।[१७]

आचार्य श्री नारायणदैवज्ञ के मतानुसार प्रथम रजोदर्शन में चैत्र, जेष्ठ, अषाढ़, कार्तिक, पौष, भाद्रपद–ये ६ चान्द्रमास और प्रतिपदा ४, ६, ८, ९, १२, १४ एवं अमावस्या–ये आठ तिथियाँ अशुभ हैं। क्रूर वार (रवि, मंगल, शनि) एवं मूल को छोड़कर तीक्ष्ण संज्ञक नक्षत्र (आर्द्रा, आश्लेषा, जेष्ठा) अशुभ हैं। विष्कम्भ, अतिगण्ड,

---

[१३] नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/३१२ परार्ध–३१६

[१४] तिलाज्यदूर्वा जुहुयाद् गायत्र्याष्टशतं बुधः।
सुवर्णगोतिलान्दद्यात् सर्वदोषापनुत्तये।। नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/३१७/पृष्ठ ४६८

[१५] मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक १

[१६] मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक २

[१७] मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक ४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

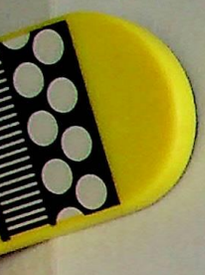

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

व्याघात, वज्र, व्यतीपात, परिध, वैधृति इन ६ योगों में एवं गर, वणिज, विष्टि, शकुनि, चतुष्पद, नाम, किंस्तुघ्नं, बव–इन ८ करणों में प्रथम रजोदर्शन होना अशुभकारी माना जाता है। दूसरे का घर एवं कुपद (शमशान, रास्ता आदि स्थान) में, रात के समय, दिन का तृतीय भाग एवं दोनों सन्ध्याकाल में प्रथम रजोदर्शन अशुभ होता है। ऋतु में लाल से भिन्न वर्ण, अत्यल्प या अत्यधिक खून निकलना और दिव्य–भौम–आन्तरिक इन तीन उत्पात का होना अशुभ होता है।[१८]

२. **गर्भाधान मुहूर्त** :- मासिक धर्म ही गर्भाधान का प्रमुख कारण है। चिकित्सकों का कथन है कि एक स्वस्थ स्त्री को २८ दिन में मासिक धर्म आता है। मासिक धर्म के चौदवें दिन गर्भधारण करने योग्य डिम्ब स्त्री को प्राप्त होता है। उस समय यदि कोई पुरूष उस स्त्री के साथ संसर्ग करे तो संयोग से गर्भधारण होता है।

ज्योतिष में गर्भाधान मुहूर्त की व्यवस्था पाँचों अंगों – तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण एवं लग्नादि की शुभाशुभ स्थितियानुसार बतलाई हैं। स्त्री के रजस्वला होने पर गर्भाधान के लिये पुरूष स्त्री से संयोग कब करे और कब नहीं, इस विषय में महर्षि नारद ने लिखा है कि पुत्र की कामना रखने वाले व्यक्ति को ऋतुदर्शन के बाद समरात्रियों में जब चन्द्रमा विषम राशि और विषम नवांश में स्थित हो तथा लग्न पर रवि, मंगल और गुरू आदि पुरूष ग्रह की दृष्टि हो तब सम तिथियों में तथा आश्लेषा, मघा, मूल एवं रेवती नक्षत्रों को छोड़कर अतिरिक्त नक्षत्रों में स्त्री संसर्ग करना अभीष्ट फलदायक होता है।[१९]

श्री रामदैवज्ञ के अनुसार रजोदर्शन आरम्भ से ४ रात्रि में, भद्राकरण, षष्ठी, पर्वदिन, रिक्ता तिथि, सन्ध्या समय, क्रूरवार, तिथि–नक्षत्र–लग्नों की संधियाँ (गण्डान्त), माता–पिता का श्राद्ध से पूर्व का दिन, व्यतीपात एवं वैधृति योग, जन्मतारा, आश्विनी, भरणी, मूल, मघा और रेवती नक्षत्र, जन्म का दिन, संक्रान्तिकाल

---

[१८] मुहूर्त मार्त्तण्ड, संस्कारप्रकरण, श्लोक १, पृष्ठ १०

[१९] आद्या निशश्चतस्रस्तु याज्या ह्यपि समा परैः। ओजराश्यंशगे चन्द्रे लग्ने पुंग्रहवीक्षिते।।
उपवीती युग्मतिथावनग्नः कामयेत्स्त्रियम्। पुत्रार्थी पुरूषस्त्यक्त्वा पौष्णमूलाहिपित्र्यभम्।।
नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/३१८–१६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूर्य–चन्द्रग्रहण इत्यादि इन सब में गर्भाधान को त्याग देना उत्तम होता है।[२०] श्री नारायणदैवज्ञ के मत से गर्भाधान के लिये ऋतु प्रारम्भ होने के ४ रात्रि बाद सम रात्रियों में रोहिणी, हस्त, स्वाती, मृगशिरा, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा एवं तीनों उत्तरा नक्षत्रों में, चन्द्रमा के शुभ होने पर तथा सूर्य–चन्द्र–गुरू–लग्न के बली होकर विषम राशि और विषम नवमांश में होने पर स्त्री के साथ संसर्ग करने पर उत्तम पुत्र की प्राप्ति होती है तथा विषम रात्रियों में सूर्य–चन्द्र–गुरू–लग्न के समराशि में एवं सम नवमांश में होने पर स्त्री के साथ संसर्ग करने से कन्या की प्राप्ति होती है। इन्होंने आश्विनी, पुनर्वसु, चित्रा एवं पुष्य नक्षत्रों में गर्भाधान को मध्यम कहा है।[२१] ज्योतिष शास्त्र में मासिक धर्म से आरम्भ की ४ रात्रियाँ गर्भधारण के लिये त्याज्य कही हैं क्योंकि उन ४ रात्रियों में डिम्ब की प्राप्ति न होने के कारण गर्भधारण नहीं हो सकता है।

३. पुंसवन एवं सीमान्तोन्नयन का मुहूर्त :- महर्षि नारद ने सीमान्तोन्यन को गर्भधारण के चौथे, छठे एवं आठवें महिने में सम्पादित कराना उत्तम माना है। ये दोनों संस्कार तब करना चाहिये जब स्त्री और पुरूष दोनों के चन्द्रादि ग्रह बलवान हो तथा उस महिना का स्वामी भी पूर्ण बली हो।[२२] आचार्य श्री नारायण दैवज्ञ के मतानुसार पुंसवन संस्कार गर्भधारण के दूसरे–तीसरे महीने में कराना चाहिये।[२३] पारस्कर महासूत्र भी पुंसवन संस्कार को गर्भाधान के दूसरे तीसरे महिने में करने को कहता है।[२४] महर्षि नारद के अनुसार अमावस्या एवं रिक्ता (४, ६, १४) तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मंगल, गुरू, रवि वारों में एवं मिश्रसंज्ञक (कृतिका, विशाखा) नक्षत्रों को छोड़कर अन्य नक्षत्रों में सीमान्तोन्नयन संस्कार करना उत्तम होता है। चन्द्रमा के विषम राशि

---

[२०] गण्डान्तं त्रिविधं त्यजेन्निधनजन्मर्क्षे च मूलान्तकं, दास्रं पौष्णमथोपरागदिवसं पातं तथा वैधृतिम्।
पित्रोः श्राद्धदिनं दिवा च परिघाद्यर्ध स्वपत्नीगमे, भान्युत्पातहतानि मृत्युभवनं जन्मर्क्षतः पापभम्।।
मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक ५, ६

[२१] स्वस्त्रीं प्राड्.निट्चतुष्कासमदिनविवरश्राद्धतत्प्राग्दिनानि,
त्यक्त्वा मूल मधान्त्ये वसुकलिजनिभाहानि पर्वाणि।
याहीज्यार्केन्दुलग्नै विंषमभलवगैरूद्वलैर्भोः सुतार्थिन्,
व्यस्तैरेतैरिहैवायुगहनि मुदितः कन्यकेच्छो ! सुचन्द्रे।। मुहूर्तमार्त्तण्ड, संस्कारप्रकरण, श्लोक ३

[२२] प्रसिद्धे प्रथमे गर्भे तृतीये वा द्वितीयके।
मासे पुंसवनं कार्य सीमंतं च यथा तथा।। नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/३२०–३२१

[२३] पूर्वोदितैः पुंसवनं विधेयं मासे तृतीये त्वथ विष्णुपूजा। मुहूर्त चिन्तामणि,संस्कारप्रकरण,श्लोक १०

[२४] पारस्कर, ग्रहसूत्र, कण्डिका १८

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और उसके विषम नवमांश शुभ होते हैं। शुभ लग्न से १, ४, ५, ७, ६, १०वें स्थानों पर चन्द्रमा के होने पर पुंसवन और सीमान्तोन्नयन कर्म शुभ होते हैं।[२५]

मुहूर्तकारों ने दोनों संस्कारों के लिये एक ही मुहूर्त बतलाया है। मुहूर्त मार्त्तण्ड के अनुसार भी यह स्पष्ट है कि पुंसवन कर्म गर्भधारण के दूसरे तीसरे मास में एवं सीमान्तान्नयन कर्म गर्भधारण के चौथे, छठे, आठवें मास में शुभ होता है। रिक्ता पर्व तिथियों को छोड़कर, पुरूष संज्ञक नक्षत्रों (पुष्य, हस्त, पुनर्वसु, अभिजित् इत्यादि) में, पुरूष वारों–रवि–मंगल–गुरू में, मिथुन राशि को छोड़कर अन्य विषम लग्न एवं विषम नवमांश में, लग्न से ५ वाँ और १२ वाँ भाव शुभ हो तब इन दोनों संस्कारों को करना चाहिये।[२६]

आचार्य श्री रामदैवज्ञ के अनुसार गर्भधारण समय के ६वे, ८वे मास में सीमान्तोन्नयन संस्कार को श्रेष्ठ बतलाया है। इन्होंने रवि–भौम–गुरू वारों में पुष्य, मूल, श्रवण, मृगशिरा, पुनर्वसु, हस्त इन ६ नक्षत्रों में; १/२/३/५/७/१०/११/१३ तिथियों में, गर्भ के मास स्वामी के बली होने पर, शुभग्रहों के केन्द्र एवं त्रिकोंण में होने पर, पापग्रहों के ३/६/११वें स्थानों में होने पर तथा पुरूष राशि के लग्न और नवमांश में होने पर सीमान्तोन्नयन संस्कार करना उत्तम होता है। मुहूर्त चिन्तामणि में गर्भवती स्त्री के गर्भ के प्रथम मास का स्वामी शुक्र, दूसरे मास का स्वामी मंगल, तीसरे मास का स्वामी वृहस्पति, चौथे मास का स्वामी सूर्य, पाँचवें मास का स्वामी चन्द्र, छठवें मास का स्वामी शनि, सातवें मास का स्वामी बुध, आठवें माास का स्वामी (गर्भाधान के समय का लग्नाधीश), नवमें मास का स्वामी चन्द्र एवं दसवें मास का स्वामी सूर्य बतलाया है।[२७]

४. प्रसूतास्नान का मुहूर्त :- बालक के जन्म के उपरान्त जब स्त्री (जच्चा) को सर्वप्रथम स्नान कराते हैं तब उस स्नान हेतु प्रसूतास्नान मुहूर्त पञ्चांगों में दिया रहता है। प्रसूतास्नान मुहूर्त का उल्लेख मुहूर्त चिन्तामणि में इस प्रकार हुआ है कि रेवती, ध्रुवसंज्ञक नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, रोहिणी), मृगशिरा, हस्त, स्वाती, आश्विनी तथा अनुराधा–इन १४ नक्षत्रों में तथा रवि–मंगल–गुरू वारों में

---

२५ नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/३२२–२४
२६ मुहूर्त मार्त्तण्ड, संस्कार प्रकरण, श्लोक ४
२७ मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक ६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूतिका स्नान कराना शुभप्रद होता है। भरणी, कृतिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, श्रवण, चित्रा, विशाखा, मूल इन १० नक्षत्रों में; बुध–शनि वारों में तथा रिक्ता, षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी तिथियों में सूतिका स्नान शुभ नहीं है। शेष नक्षत्रों एवं वारों में मध्यम श्रेणी का सूतिका स्नान माना जाता है।[२८]

५. स्तनपान कराने का मुहूर्त :- श्री रामदैवज्ञ ने बच्चे के स्तनपान का मुहूर्त दिया है जिसके अनुसार रिक्ता तिथि, मंगलवार, भद्रा, व्यतीपात एवं वैधृति को छोड़कर शुभतिथि को सोम, बुध, गुरू, शुक्र वारों में पुनर्वसु, पुष्य, मृगशिरा, हस्त, श्रवण, रेवती इन ६ नक्षत्रों में बच्चे को प्रथम स्तनपान कराना उत्तम माना जाता है।[२९]

६. जलपूजन करने का मुहूर्त :- श्री रामदैवज्ञ के अनुसार प्रसवकाल से एक मास व्यतीत होने पर गुरू एवं शुक्र के अस्त होने पर तथा चैत्र एवं पौष खर मासों में प्रसूती स्त्री को जल पूजा नहीं करनी चाहिये। जन्म के अनंतर प्रथम मास की समाप्ति पर बुध, गुरू, सेाम वारों में; रिक्ता रहित तिथियों में तथा मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, मूल, श्रवण–इन ७ नक्षत्रों में प्रसूता स्त्री को जल पूजन (कुआं पूजना) श्रेष्ठ है।[३०]

७. जातकर्म तथा नामकरण संस्कार का मुहूर्त :- जातकर्म अर्थात शिशु के जन्म के तुरन्त बाद का कार्य बाल छेदन से पूर्व तथा सूतक निवृति के उपरान्त जन्म से अपने कुल परम्परा के अनुसार बच्चे का नामकरण करना उचित होता है।[३१] महर्षि नारद के मतानुसार यदि किसी कारणवश नामकरणादि के समय का अतिक्रमण हो जाये तो शुक्र और गुरू के उदयकाल में, चन्द्रादि ग्रहों तथा लग्न का बल देखकर चर, स्थिर, क्षिप्र और मृदु संज्ञक नक्षत्रों में उसे सम्पादित करना चाहिये।[३२] नारद

---

२८ पौष्णध्रुवेन्दुकरवातहयेषु सूती–स्नांन समित्रभरवीज्यकुजेषु शस्तम्।
नार्दात्रयश्रुतिमघान्तकमिश्रमूलत्वाष्ट्रे ज्ञसौरिवसुषड्विरिक्ततिथ्यम्।।
मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक १२

२९ रिक्ता भौमं परित्यज्य विष्टिं पातं सवैधृतिम्।
मृदुध्रुवक्षिप्रभेषु स्तन्यपानं हितं शिशोः।। मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, पृष्ठ २४२

३० कवीज्यास्तचैत्राधिमासे न पौषे जलं पूजयेत्सुतिकामासपूर्त्तो।
बुधेन्द्वोज्यवारे विरिक्ते तिथौ हि श्रुतिज्यादितीन्द्वक्रनैर्ऋत्यमैत्रैः।।
मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक १६

३१ सूतकांते नामकर्म विधेयं तत्कुलोचितम्। नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/३२७

३२ नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/३२८–३२९

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पुराण में नामकरण का स्पष्ट मुहूर्त न बतलाकर अपने कुल परम्परा के अनुसार नामकरण करने की बात कही है। मुहूर्त मार्त्तण्ड में अशौच बीत जाने पर क्षिप्रसंज्ञक, रोहिणी, तीनों उत्तरा, चरसंज्ञक, मृदुसंज्ञक नक्षत्रों में जातकर्म करने तथा जन्म से १२वें दिन ब्राह्मण, १६वें दिन क्षत्रिय, २०वें दिन वैश्य एवं २१वें दिन शूद्र बच्चे का नामकरण करने की बात कही है। रिक्ता तथा अष्टमी तिथि, मंगल–शनिवार, चरलग्न से १२वें स्थान में किसी भी ग्रह की उपस्थिति, रात और दिन के तीसरे भाग में नामकर्म कदापि न करें।[३३] मुहूर्त चिन्तामणि में जातकर्म तथा नामकरण के मुहूर्त का प्रतिपादन किया है जिसके अनुसार पर्व, रिक्ता तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में; सोम–बुध–गुरू–शुक्र वारों में, जन्म से ११वें या १२वें दिन, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती–इन १६ नक्षत्रों में बालक का जातकर्म एवं नामकरण करना उत्तम होता है।[३४]

८. **दोलारोहण झूले में झूलने का मुहूर्त** :- आचार्य श्री रामदैवज्ञ ने दोलारोहण मुहूर्त का प्रतिपादन करते हुये लिखा है कि सूर्य वर्तमान में जिस नक्षत्र में हो उससे अगले ५ नक्षत्रों में बालक को दोलारोहण झूले में झुलाने पर वह निरोगी रहे, उससे अगले ५ नक्षत्रो में झुलाने पर उसका मरण हो, उससे अगले ५ नक्षत्रों में झुलाने पर वह दुर्बल रहे, उससे अगले ५ नक्षत्रों में झुलाने पर बालक को व्याधि हो एवं उसके बाद के शेष्ज्ञ ७ नक्षत्रों में झुलाने पर बालक सुखी होता है। इस प्रकार दोलारोहण कालिक नक्षत्र का सूर्य के नक्षत्र के अधिकतम आगे या पीछे होना शुभप्रद होता है।[३५] दूसरे जन्म के दिने स १०/१२/१६/१८/३२वें दिन, शुभवार (चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र) एवं आश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, तीनों उत्तरा और रेवती–इन ११ नक्षत्रों में बालक का दोलारोहण शुभ माना जाता है।[३६]

९. **बालक के प्रथमवार घर से निकलने का मुहूर्त** :- श्री नारायण दैवज्ञ के अनुसार जन्म से चौथे मास में यात्रा की तरह समयादि शुद्धि का विचार करके बालक को

---

३३ मुहूर्त मार्त्तण्ड, संस्कार प्रकरण, श्लोक ५

३४ तज्जातकर्मादि शिशोर्विधेयं पर्वाख्यरिक्तौनतिथौ शुभेऽह्नि।
एकादशे द्वादशकेऽपि घस्रे मृदुध्रुवक्षिप्रचरोडुषु स्यात्।।
मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक ११

३५ दोलारोहेऽक्रमात् पञ्चशरपञ्चेषुसप्तभैः।
नैरूज्यं मरणं कार्श्यं व्याधिः सौख्यं क्रमाच्छिशोः।। मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक १४

३६ जन्माहाद्वादशेऽह्निध्रुवमृदुलघुभैर्वा त्यसेत्पालकेऽर्म।। मु. मार्त्तण्ड,संस्कार प्रकरण,श्लोक ६ पूर्वार्ध

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

प्रथमवार घर से बाहर निकालना उत्तम होता है।[३७] श्री रामदैवज्ञ ने इसके अतिरिक्त बालक को जन्म से बारहवें दिन बिना मुहूर्त विचार के घर से प्रथमवार ले जाना शुभ होता है।[३८]

१०. भूमि पर प्रथमोपवेशन का मुहूर्त :- झूलारोहण के बाद शिशु को सर्वप्रथम भूमि पर बैठाते हैं, उसका भी एक शुभ मुहूर्त हेाता है। आचार्य श्री रामदैवज्ञ के अनुसार जन्म से पाँचवे मास में रिक्ता तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में शुभ वार में, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिरा, जेष्ठा, अनुराधा, हस्त, आश्विनी एवं पुष्य– इन १० नक्षत्रों में पृथ्वी एवं भगवान, वराह की पूजा करके कमर में करधनी या काला सूत्रादि बाँधकर शिशु को भूमि पर बैठाना शुभ होता है।[३९] श्री नारायण दैवज्ञ ने भूम्युपवेशनं मुहूर्त में उपरोक्त नक्षत्रादि को ग्रहण किया है।[४०] इस समय बालक के सामने विविध वस्तुऐं– शस्त्र, पुस्तक, लेखनी, सोना, चाँदी आदि रखें। उन वस्तुओ में से जिसे बालक सर्वप्रथम स्वेच्छानुसार उठावे उसी से बालक की आजीविका समझी जाती है।[४१]

११. अन्नप्राशन कराने का मुहूर्त :- मुहूर्त ग्रन्थों में लड़की और लड़के का भिन्न–भिन्न महीनों में अन्नप्राशन कहा गया है। महर्षि नारद के अनुसार लड़के का जन्म से ६वें या ८वें मास में और लड़की का जन्म से ५वें या ७वें मास में अन्नप्राशन कर्म शुभ होता है उसमें रिक्ता, नन्दा, तिथिक्षय, अष्टमी एवं द्वादशी तिथियों एवं रात्रि का समय त्याग देना चाहिये। चर, स्थिर, मृदु एवं क्षिप्र संज्ञक नक्षत्रों में शुभवार में, शभराशि के लग्न में जिसके केन्द्र (१, ४, ७, १०वें भाव), त्रिकोंण (५, ६वें भाव), ८वें तथा १२वें भाग में पाप ग्रह लग्न हो, पाप ग्रह लग्न से ३, ६, ११वें भाव में हो तथा लग्न शुभग्रह निरीक्षित शुभनवमांश युक्त हो, चन्द्रमा ६, ८, १२वें भाव से भिन्न भाव में

---

३७ व्यग्वाशास्ये पयोऽथास्य गमवदुदितो निष्क्रमो मासि तुर्ये। मु. मा.,संस्कार प्रकरण,श्लोक ६ परार्ध

३८ मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक १५

३९ पृथ्वीवराहमभिपूज्य कुजे विशुद्धेऽरिक्ते तिथौ व्रजति पञ्चममासि बालम्।
बद्ध्वा शुभेऽहिन कटिसूत्रमथ ध्रुवेन्दुज्येष्ठर्क्षमैत्रलघुभैरूपवेशयेत् कौ।। मु.चि.,संस्कार,श्लोक २१

४० सौम्याश्वीज्यध्रुवैन्दैर्भुवि शुभदिवसे पञ्चमे मासि दध्यात्। मुहूर्त मार्त्तण्ड, संस्कार, श्लोक ६

४१ मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक २२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बली हो तब दोपहर के प्रथम भाग में अन्नप्राशन शुभ होता है।[४२] श्री रामदैवज्ञ लड़के का जन्म से सम (६, ८, १०, १२वें) मासों में तथा बालिका का जन्म से विषम (५, ७, ९, ११वें) मासों में अन्नप्राशन स्वीकार करते हैं। इसके अतिरिक्त अमावस्या तिथि, मंगल–रविवार, जन्मराशि एवं जन्मलग्न से आठवीं राशि का लग्न व नवमांश, मीन, मेष, वृश्चिक राशि के लग्न को वे दोषयुक्त मानते हैं।[४३] अन्नप्राशन लग्न से केन्द्र, त्रिकोंण, तृतीय भाग में शुभग्रह (पूर्ण चन्द्रमा, बुध, गुरू, शुक्र) तथा चन्द्रमा की १, ६, ८वें स्थानों के अतिरिक्त अन्य स्थानों में उपस्थिति को उत्तम मानते हैं।[४४] परन्तु श्री नारायण दैवज्ञ नारदपुराणोक्त जन्म मासों में, तिथियों में, नक्षत्रों में तथा श्री रामदैवज्ञ द्वारा बताई लग्नों में अन्नप्राशन स्वीकार करते हैं किन्तु वे जन्म नक्षत्र को इसमें वर्जित करते हैं।[४५]

गर्भाधान से अन्नप्राशन तक (गर्भाधान, पुंसवन, सीमान्त, दोलारोहण, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण एवं अन्नप्राशन) सभी संस्कारों का समय नियमित होता है। अतः श्री नारायण दैवज्ञ के मत से इन संस्कारों के लिये गुरू–शुक्र के बाल्य वार्धक एवं अस्तकाल, सिंह के गुरू, दक्षिणायन क्षयमास एवं अधिमास ये सब समय के निरोध से त्याज्य नहीं हैं। अर्थात इन संस्कारों को गर्हित समय में भी किया जा सकता है। किन्तु चूड़ाकरण, उपनयन, वेदारम्भ (विद्यारम्भ), समावर्तन, केशान्त तथा विवाहादि संस्कारों मे गर्हित समय वर्जित होता है।[४६]

---

४२ शुभलग्ने शुभांशे च निधने शुद्धिसंयुते। षष्ठे मास्यष्टमे वापि पुंसां स्त्रीणां तु पञ्चमे।सप्तमेमासि वा कार्य नवान्नप्राशनं शुभम्।। नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/३३०–३३४

४३ रिक्तानन्दाष्टदर्श हरिदिवसमथो सौरिभौमाक्रवारौं–
ल्लग्नं जन्मर्क्षलग्नाष्टमगृहलवगं मीनमेषालिकं च।। मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार, श्लोक १७

४४ लग्नाष्टषष्ठरहितं शशिनं ..... मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक १८

४५ मासे षष्ठेऽष्टमे नुर्निगदितमशनं पञ्चमे सप्तमे वा,
भीरोरूज्झन्ति नन्दाहरिवसुरजनीरिक्तकाः स्वर्क्षमेके।
सद्दक्कांशान्ह्यचान्द्रे ध्रुवमदुचरभक्षिप्रभेऽजालिमीनो–
नांगे केन्द्रत्रिकोणान्त्यमृतिषु विमलास्विन्दुरिष्टोऽखिलोऽगे।। मुहूर्त मार्त्तण्ड, संस्कार, श्लोक ८

४६ गर्भाद्यन्नाशनान्तेषु न गुरूसितयोर्बाल्यवार्ध्यं च मौढ्यं,
जह्यात्कालस्य रोधाद्धरिगुरूमयनं याम्यमूनाधिमासौ।
एतच्चौलादिष्वुज्झेदथ गुरूसितयोर्बाल्यवार्ध्ये नगाहे,
चाथो शाखेशमौढ्ये व्रतमपि निगमारम्भमार्यो न कुर्यात्।। मुहूर्त मार्त्तण्ड, संस्कार, श्लोक ६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१२. कर्णभेद का मुहूर्त :- बालक अथवा बालिका का कान छेदन का मुहूर्त होता है। वर्तमान में बालक के कान छेदन की परम्परा नहीं है। नारद पुराण में कर्णछेदन मुहूर्त उल्लेख नही मिलता है किन्तु मुहूर्त चिन्तामणि, मुहूर्त मार्त्तण्ड आदि ग्रन्थों में इस मुहूर्त का उल्लेख है। श्री रामदैवज्ञ ने कर्णछेदन में चैत्र, पौष (दोनों खरमास), रिक्तातिथि, तिथिक्षय, हरिशयन (अषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक), जन्ममास, जन्मतारा (जन्म नक्षत्र से १, १०, १६वें नक्षत्र में) और समवर्ष को त्याज्य बतलाया है। इसमें जन्म से १२वें, १६वें दिन अथवा ६वें, ७वें, ८वें मास में, शुभवारों में, विषम वर्षो में और अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, धनिष्ठा, श्रवण एवं रेवती–इन १० नक्षत्रों में बालकों का कर्णभेद श्रेष्ठ बतलाया है।[४७] जन्मदिन से १२वें दिन में अथवा ६वें, ८वें मास में या ३रे, ५वें वर्षो में शुभ तिथि–वार–नक्षत्रादि में बालक का पहले दायां फिर बायां कान और बालिका का पहले बायां फिर दायां कान छेदना चाहिये।[४८]

श्री नारायण दैवज्ञ ने श्रीराम दैवज्ञ द्वारा व्यक्त कर्णछेदन के मुहूर्त को स्वीकार किया है किन्तु इन्होंने कार्तिक, फाल्गुन मासों, रवि संक्रान्ति, अष्टमी एकादशी, रात्रि, दोनों संध्याओं और जन्म से विषम वर्ष में भी कर्णभेद को उत्तम कहा है।[४९]

१३. चौल संस्कार का मुहूर्त :- बालक के जन्मोपरान्त प्रथमकेश कर्त्तन को चौल, चूड़ाकरण तथा लोक व्यवहार में मुण्डन कहते हैं। अपने कुल की परम्परा के अनुसार इष्टदेव व तीर्थस्थान पर मुण्डन संस्कार किया जा सकता है। महर्षि नारद के मतानुसार–अपने कुल के आचार–व्यवहार के अनुसार इष्ट वर्षो में अथवा बालक के जन्म समय से तीसरे–पाँचवें वर्ष में, उत्तरायण में, गुरू–शुक्र के उदय होने पर, पर्व तथा रिक्ता तिथियों के अतिरिक्त, सोम–गुरू–शुक्रवारों में, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, मृगशिरा, जेष्ठा, रेवती, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा–इन नक्षत्रों

---

४७ मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक २४

४८ मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक २५

४९ मैत्रैः क्षिप्रैः स्थिरभचरभैर्व्यानिलांभः पकर्क्षै–
श्चै–का–फा–पौष्विन–शनि–कुजर्क्षाशवारानपास्य।
रिक्तापर्वेश्वरवसुतिथीन् रात्रिसन्ध्ये समाब्दं,
पुंस्त्रीकर्णौ सविधि पटुना दक्षबामादि वेध्यौ।। मुहूर्त मार्त्तण्ड, संस्कार प्रकरण, श्लोक ७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

में तथा अपने जन्म नक्षत्र में, अपने–अपने गृह्यसूत्र में बतलाई विधि के अनुसार चूड़ाकरण कर्म करना चाहिये।[५०]

आचार्य श्री रामदैवज्ञ ने जन्म समय से तीसरे वर्ष या विषम वर्षों मे, रिक्ता, प्रतिपदा, षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी तिथियों एवं पर्वो (अमा.–पूर्णिमा) को छोड़कर शेष तिथियों में, चैत्रमास को छोड़कर उत्तरायण में, सोम–बुध–गुरू–शुक्र ग्रहों के वारों में तथा इनकी राशि एवं नवमांश में, जन्मलग्न एवं जन्मराशि से ८वीं राशि के लग्न के अतिरिक्त अन्य लग्नों में अष्टमशुद्ध हो, ३, ६, ११वें स्थान में पापग्रह हों और अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, जेष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती– इन १२ नक्षत्रों में बालक का मुण्डन संस्कार कराना शुभ होता है।[५१] महर्षि नारद ने मुण्डन संस्कार में बुध को वर्जित तथा प्रतिपदा, षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी तिथियों को स्वीकार किया है।

आचार्य श्री नारायण दैवज्ञ ने जन्म से द्वितीय, तृतीय, पंचम वर्षों में, चैत्र मास को छोड़कर माघादिक पाँच मासों में तथा अपने कुल की परम्परा के अनुसार चूड़ाकरण शुभ कहा है। इनके अनुसार यदि बालक की माता को पाँच माह से अधिक का गर्भ हो तो ५ वर्ष से कम आयु के बालक का मुण्डन संस्कार नहीं कराना चाहिये। यदि उपयनय के साथ ही चूड़ाकरण हो तो चैत्र मास तथा माता का गर्भ रूप प्रतिबंधक नही होगा।[५२] श्री नारायण दैवज्ञ ने भी माता को ५ माह से अधिक का गर्भ हो तब बालक की आयु ५ वर्ष से अधिक होने पर ही मुण्डन कराना उत्तम माना है।[५३]

साधारणतः प्रत्येक वर्ण के लिये सोम, बुध, गुरू एवं शुक्र वारों में चूड़ा कर्म कराना प्रशस्त माना गया है। श्री नारायण दैवज्ञ ने कृष्ण पक्ष के सोमवार को शुभ नहीं माना है। इनके अनुसार ब्राह्मणों को रविवार में, क्षत्रियों को मंगलवार में, वैश्य

---

५० तृतीये पञ्चमे चाब्दे स्वकुलाचारतोऽपि वा। बालानां जन्मतश्चौलं स्वगृह्योक्तविधानतः।।
नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/३३५–३३८

५१ चूड़ा वर्षात्तृतीयात् प्रभवति विषमेऽष्टाक्ररिक्ताद्यषष्ठी–
पर्वोनाहे विचैत्रोदगयनसमये ज्ञेन्दुशुक्रेज्यकानाम्।
वारे लग्नांशयोश्चास्वभनिधनतनौ नैधने शुद्धियुक्ते,
शाक्रोपेतैर्विमैत्रैर्मृदुचरलघुभैरायषट्त्रिस्थपापैः।। मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक २६

५२ मुहूर्त मार्त्तण्ड, संस्कार प्रकरण, श्लोक १०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

एवं शूद्रों को शनिवार मे चूड़ा कर्म कराना चाहिये। चूड़ाकरण में लग्न से ७वें स्थान में शुक्र की स्थिति भी मृत्युदायक होती है जबकि अष्टम में शुक्र की स्थिति शुभ होती है। १२वें स्थान में चन्द्रमा को छोड़कर सभी ग्रह शुभ होते हैं।[५४]

१४. क्षौरकर्म का मुहूर्त :- मुण्डन में बतलाये शुभाशुभ तिथि–वार–नक्षत्रों में ही क्षौरकर्म (चूड़ाकर्म के बाद केश कर्तन), नख काटना एवं दाँत साफ करना शुभ होता है। महर्षि नारद ने तेल लगाकर, चंदन लगाकर, दोनों संध्याओं में, रात्रि में, भोजन के बाद, यात्रा के दिन, युद्ध में जाने से पूर्व, सैय्या पर बैठकर, मंगलवार को क्षौरकर्म कराना वर्जित माना है। इनके अनुसार राजाओं को ५वें दिन के अन्तर से क्षौरकर्म कराना चाहिये। विशेष परिस्थितियों में राजा की आज्ञानुसार माता–पिता के स्वर्गवास पर, कारागृह से छूटने पर, विवाह के अवसर पर नक्षत्र एवं वार आदि के निषिद्ध होने पर भी क्षौरकर्म करने का विधान है। समस्त मांगलिक कार्यों में मंगलार्थ इष्टदेवता के समीप क्षुरों का अर्पण करना चाहिये।[५५] श्री रामदैवज्ञ एवं श्री नारायण दैवज्ञ ने भी विशेष परिस्थितियों में क्षौरकर्म कराने के नारद के मत का समर्थन किया है। श्री रामदैवज्ञ के अनुसार जिस पुरूष की स्त्री गर्भवती उसे क्षौरकर्म नहीं कराना चाहिये।[५६] जबकि श्री नारायण दैवज्ञ के मत से श्री भास्कर क्षेत्र में, गंगा के तट पर, यज्ञों में, अग्निहोत्र में, माता–पिता के मरण में ब्राह्मण तथा राजा की आज्ञा से इनमें क्षौरकर्म शुभ होता है।[५७]

१५. अक्षरारम्भ कराने का मुहूर्त :- बालक को विद्यारम्भ कराने से पूर्व अक्षर, अंक आदि ज्ञानार्थ अक्षरारम्भ का विचार होता है। श्री रामदैवज्ञ के अनुसार जन्म से ५वें वर्ष में जब सूर्य उत्तरायण में हो तब २/३/५/६/१०/११/१२ तिथियों में, शुभवारों (सोम, बुध, गुरू, शुक्र) में, अश्विनी, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण एवं रेवती इन १० नक्षत्रों में, चर लग्नों (१/४/७/१० राशियों) को छोड़कर शुभ

---

५३ मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक ३१
५४ मुहूर्त मार्त्तण्ड, संस्कार प्रकरण, श्लोक ११
५५ नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/३४०–३४३
५६ मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक ३५
५७ मुहूर्त मार्त्तण्ड, संस्कार प्रकरण, श्लोक १३ पूर्वार्ध

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

राशि के लग्नों में श्री गणेश, सरस्वती एवं लक्ष्मी की विधिवत् षोड़शोपचार से पूजन करके बालक को अक्षरारम्भ (अक्षर ज्ञान) कराना शुभ होता है।[५८]

श्री नारायण दैवज्ञ के अनुसार शिशु के जन्म से ५वें वर्ष में उपनयन होने से पूर्व जब सूर्य उत्तरायण में हो किन्तु कुम्भ राशि में न हो तब अश्विनी, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, जेष्ठा, श्रवण एवं रेवती इन ६ नक्षत्रों में अक्षरारम्भ कराना शुभ होता है।[५९] इन्होंने पुष्य नक्षत्र को ग्रहण नहीं किया है।

१६. विद्यारम्भ कराने का मुहूर्त :- पञ्चांगों में विद्यारम्भ कराने का मुहूर्त दिया रहता है। नारद पुराण एवं मुहूर्त मार्त्तण्ड में विद्यारम्भ कराने के मुहूर्त का उल्लेख नहीं मिलता है। आचार्य श्री रामदैवज्ञ के अनुसार अश्विनी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा एवं तीनों पूर्वा इन १६ नक्षत्रों में, रवि–बुध–'गुरू–शुक्र वारों में, २/३/५/६/१०/११/१२ तिथियों में, और शुभ लग्न के केन्द्र एवं त्रिकोंण में शुभग्रहों के रहने पर ८वां स्थान शुद्ध हो, पापग्रह ३/६/११वें स्थान में हो तब बालक का विद्यारम्भ कराना उत्तम होता है।[६०]

१७. उपनयन संस्कार का मुहूर्त :- पुराण एवं मुहूर्त ग्रन्थों में ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य तीनों के लिये उपनयन संस्कार (यज्ञोपवीत परिधान) विधान है। नारद पुराण[६१], मनुस्मृति[६२], आश्वलायन गृह्यसूत्र[६३], मुहूर्त चिन्तामणि एवं मुहूर्त मार्त्तण्ड आदि ग्रन्थों के अनुसार बालक के गर्भ अथवा जन्म से ब्राह्मण को ८वें वर्ष में, क्षत्रिय को ११वें वर्ष में तथा वैश्य को १२वें वर्ष में उपनयन संस्कार करना शुभ होता है। श्री रामदैवज्ञ ने इन वर्षो के अतिरिक्त जन्मकाल या गर्भकाल से ब्राह्मणों को ५वें वर्ष में, क्षत्रियों को ६वें वर्ष में एवं वैश्यों को ८वें वर्ष में उपनयन कराने की बात कही है तथा उपरोक्त वर्षो

---

५८ मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक ३७

५९ मुहूर्त मार्त्तण्ड, संस्कार प्रकरण, श्लोक १३ परार्ध

६० मृगात्कराच्छतेस्त्रयेऽश्विमूलपूर्विकात्रये,
गुरूद्वयेऽक्रजीववित्सितेऽह्नि षट्शरत्रिके।
शिवाक्रदिग्द्विके तिथौ ध्रुवान्त्यमित्रभे परैः,
शुभेरधीतिरूत्तमा त्रिकोणकेन्द्रगैः स्मृता।। मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक ३८

६१ आधानादष्टमे वर्षे जन्मतो वाग्रजन्मनाम्.....। नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/३३८

६२ मनुस्मृति २/३७

६३ अष्टमे वर्षे ब्राह्मणमुपनयेत्। गर्भाष्टमेवा। एकादशे क्षत्रियम्। द्वादशे वैश्यम्।
आश्वलायन गृह्यसूत्र १/१९/१–६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

के बीत जाने पर दुगने वर्षों तक तीनों वर्णों के लिये उपनयन का गौणकाल माना है अर्थात ब्राह्मण ६ से १६ वर्ष तक, क्षत्रिय १२ से २२ वर्ष तक और वैश्य १३ से २४वें वर्ष तक उपनयन करा सकते हैं।[६४] श्री नारायण दैवज्ञ ने भी तीनों वर्णों के लिये उपनयन का गौण काल इसी प्रकार माना है किन्तु विद्यारम्भ की इच्छा से ब्राह्मण के लिये ५वें वर्ष में, क्षत्रिय के लिये ८वें वर्ष में और वैश्य के लिये ९वें वर्ष में उपनयन कराना उत्तम माना है।[६५]

उपनयन हेतु वर्ष गणना में पर्याप्त मतभेद मिलता है। उपनयन के लिये कतिपय विद्वान गर्भ से वर्षों की गणना करते हैं और कुछ उत्पत्तिकाल या जन्मकाल से। याज्ञवल्क्य स्मृति में वर्षों की गणना गर्भाधान काल से करते हैं।[६६] नारद पुराण में उपनयन हेतु वर्षों की संख्या गर्भ से या जन्म से स्वीकार की है।

महर्षि नारद के मत से शरद ऋतु में वैश्यों के, ग्रीष्म में क्षत्रियों के और वसन्त में ब्राह्मणों के उपनयन का मुख्य काल है। माघ से जेष्ठ तक ५ मासों में ब्राह्मणादि वर्णों का साधारण काल है। माघ मास में जिसका उपनयन होता है वह अपने कुलोचित आचार एवं धर्मज्ञाता होता है। फाल्गुन में यज्ञोपवीत धारण करने वाला मनुष्य विधिज्ञ तथा धनवान, चैत्र में उपनयन होने पर वह ब्रह्मचारी, वेद–वेदांग में पारांगत, वैशाख में उपनयन होने पर मनुष्य धनवान, वेदशास्त्र एवं विविध विद्याओं में निपुण होता है तथा जेष्ठ यज्ञोपवीत लेने वाला द्विज विधिज्ञों में श्रेष्ठ एवं बलवान होता है।[६७] इसके अतिरिक्त नारद के मत से यज्ञोपवीत संस्कार के लिये शुक्लपक्ष की २/३/५/७/१०/१३ तिथियाँ ग्राह्य हैं तथा ६/११/१२ तिथियाँ विशेष शुभ हैं। कृष्णपक्ष की केवल २/३/५ तिथि ग्राह्य हैं। नक्षत्रों में आश्विनी, रोहिणी, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, तीनों उत्तरा एवं रेवती उपनयन हेतु शुभ हैं किन्तु जन्म नक्षत्र से १०/१६/१८/२३/२५वाँ नक्षत्र उपनयन में वर्जित माना है। बुध, गुरू एवं शुक्र वारों को श्रेष्ठ तथा सौम, रवि वारों

---

६४ मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक ३६
६५ मुहूर्त मार्त्तण्ड, संस्कार प्रकरण, श्लोक १४
६६ याज्ञवल्क्य स्मृति– १/१४
६७ नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/२५२–५४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

को मध्यम मानकर उपनयन में ग्रहण किया है।[६८] श्री रामदैवज्ञ ने शुक्ल सप्तमी एवं त्रयोदशी को छोड़कर नारदपुराणोक्त सभी तिथियों तथा सभी नक्षत्रों को स्वीकार किया है। इन्होंने मूल नक्षत्र, कृष्णपक्ष में १ से ५वीं तिथि को भी उपनयन के लिये शुभ कहा है। भरणी, कृतिका, मघा, विशाखा एवं जेष्ठा– इन ५ नक्षत्रों के लिये अशुभ माना है।[६९] जबकि महर्षि नारद ने मूल नक्षत्र को इस संस्कार के लिये शुभ नहीं माना है। श्री नारायण दैवज्ञ ने नारद पुराणोक्त ५ मासों एवं वारों को उपनयन में श्रेष्ठ कहा है। इन्होंने शुक्ल पक्ष में, दिन में पूर्वार्ध में, अनध्याय में, रिक्तातिथि, सप्तमी एवं त्रयोदशी तिथियों को छोड़कर शेष तिथियों में उपनयन शुभ माना है। साथ ही नारद पुराणोक्त नक्षत्रों एवं मूल नक्षत्र को उपनयन में स्वीकार किया है।[७०]

महर्षि नारद ने उपनयन विषयक शुभलग्न का विचार करते हुये कहा है कि शुभ लग्न में, शुभग्रह के अंश में, मृत्युस्थान शुद्ध हो, लग्न एवं मृत्यु स्थान शुभग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो, लग्न अभीष्ट स्थान में स्थित वृहस्पति, सूर्य और चन्द्रमा आदि पाँच ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो अथवा स्थानादि के बल से पूर्ण चार ही शुभग्रह युक्त ग्रहों द्वारा लग्न स्थान देखा जाता हो और वह २१ महादोषों रहित हो तो यज्ञोपवीत करना श्रेष्ठ होता है। उपनयन में लग्न से ३/६/११वें भावों में पाप ग्रहों का होना, ६/८/१२वें भावों को छोड़कर अन्य भागों में शुभग्रह का होना तथा चन्द्रमा का १/६/८/१२ भावों में न होना शुभ होता है।[७१] श्री रामदैवज्ञ ने बालक के उपनयन के समय गुरू–शुक्र एवं चन्द्रमा का लग्नेश होकर ६वें और ८वें स्थान में होना तथा लग्न से ५वें, ८वें स्थान में पापग्रह का होना शुभ नहीं माना है जबकि पूर्ण चन्द्रमा का कक्र या वृष राशि में होना उत्तम कहा है।[७२] इनके अनुसार जन्म–नक्षत्र, जन्म–मास, जन्म–तिथि, जन्म–लग्न एवं जन्म–वार में प्रथम गर्भ से उत्पन्न ब्राह्मण

---

६८ शुक्लपक्षे द्वितीया च तृतीया पंचमी तथा। त्रयोदशी च दशमी सप्तमी व्रतबंधने।।
श्रेष्ठा त्वेकादशी षष्ठी द्वादश्यन्यास्तु मध्यमाः। कृष्णे द्वित्रिषुसंख्याश्च मिथ्योऽन्या ह्यतिनिंदिताः।
धिष्णान्यक्रत्रयांतेज्यरूद्रादित्युत्तराणि च। विष्णुत्रयाश्विमित्रब्जयोनिभान्युपनायने।
जन्मभाद्दशमं कर्म संघातर्क्ष तु षोडशम्। अष्टादशं समुदयं त्रयोविंशं विनाशनम्।।
नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/३५५–३५८

६९ मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक ४०

७० मुहूर्त मार्त्तण्ड, संस्कार प्रकरण, श्लोक १६, १७

७१ नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/३७५

७२ मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक ४१, ४२

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

बालक का उपनयन किया जा सकता है किन्तु क्षत्रिय एवं वैश्य बालक का नहीं। इन दोनों के प्रथम गर्भ को छोड़कर दूसरे गर्भ से उत्पन्न बालक का उपनयन किया जा सकता है।[७३] उपनयन संस्कार को मुहूर्त ग्रन्थों मे विस्तार से समझाया है।

१८. क्षुरिका बन्धन का मूहूर्त :- क्षुरिका बन्धन (कमर में तलवार या छुरी बाँधना) का संस्कार भी एक विशिष्ट मुहूर्त में होता है। महर्षि नारद ने केवल क्षत्रियों को विवाह से पहले क्षुरिका बन्धन का अधिकारी माना है। इसके अनुसार विवाह के कहे हुये मासों में, शुक्लपक्ष में जब शुक्र, गुरू एवं मंगल अस्त न हों, चन्द्रमा और तारा बल श्रेष्ठ हो उस समय उपनयन के लिये प्रशस्त तिथ्यादि में मंगलवार के अतिरिक्त अन्य वार में क्षुरिका बन्धन कर्म करना चाहिये। देवताओं के समीप क्षुरिका (कटार) की विधिवत् पूजा करके शुभलग्न में क्षुरिका को अपनी कटि में बाँधना चाहिये।[७४] श्री रामदैवज्ञ ने भी नारद की तरह से केवल क्षत्रियों के लिये विवाह से पूर्व क्षुरिका बन्धन संस्कार को स्वीकार किया है। इनके मत से यज्ञोपवीत संस्कार हो जाने पर विवाह होने से पूर्व चैत्रमास को छोड़कर उपनयन के तिथि, वार, नक्षत्र एवं मासादि में, रवि–मंगल वारों के अतिरिक्त अन्य वारों में क्षत्रियों का क्षुरिका बन्धन शुभ होता है।[७५] परन्तु श्री नारायण दैवज्ञ ने शूद्रों को भी क्षुरिका बन्धन संस्कार कराने की बात कही है, क्योंकि वे उपनयन के अधिकारी नहीं होते हैं। इनके अनुसार शूद्रों का उपनयन नहीं होने से उन्हें उपनयन में विहित तिथ्यादि में, मंगल–गुरू–शुक्र के उदित होने पर, मंगलवार एवं मंगल का नवमांश छोड़कर अन्य वार एवं नवमांशों में विहित मासों में क्षुरिका बन्धन करना उत्तम होता है।[७६]

१९. समावर्तन संस्कार का मुहूर्त :- उत्तरभारत के अधिकांश पञ्चांगों में इस संस्कार का उल्लेख नहीं हुआ है। वर्तमान में यह संस्कार नाम मात्र का रह गया है, क्योंकि समावर्तन संस्कार वेदाध्ययन के बाद होता है किन्तु अधिकांश ब्राह्मण वेदाध्याय नहीं करते हैं। आजकल यह संस्कार उपनयन संस्कार के साथ ही करा दिया जाता है।

---

[७३] मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक ४५

[७४] क्षुरिकाबन्धनं वक्ष्ये नृपाणं प्राक्करग्रहात्। विवाहोक्तेषु मासेषु शुक्लपक्षेऽप्यनस्तगे।।
जीवे शुक्रे च भूपुत्रे चन्द्रताराबलान्विते। माजीबन्धोक्ततिथिषु कुजवर्जितवासरे।।
नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/३८०–३८४

[७५] मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक ५६

[७६] शूद्राणां मौञ्ज्यभावात्तदुदिततिथिभेऽनस्तेभौमेज्यशुक्रे।
व्यारे वारे लवे मास्युपयमविहिते क्षुरिकाबन्धमाहुः।। मुहूर्त मार्त्तण्ड, संस्कार प्रकरण, श्लोक १६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महर्षि नारद के मत से उत्तरायण मे जब गुरू–शुक्र दानों उदित हों तब चित्रा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्र, पुनर्वसु, पुष्य, रेवती, श्रवण, अनुराधा– इन ६ नक्षत्रों में रवि–सोम–बुध–गुरू–शुक्र ग्रहों के वार एवं राशि के लग्न व नवमांश में, रिक्ता, पर्व, संक्रान्ति, प्रतिपदा, सप्तमी, अष्टमी एवं नवमी तिथियों के अतिरिक्त अन्य तिथियों में गुरूकुल से अध्ययन समाप्त करके घर लौटने वाले जितेन्द्रिय द्विजकुमारौ का समावर्तन संस्कार (मुण्डन, हवन आदि) करना चाहिये।[७७]

(ब) विवाह मुहूर्त :- उत्तरभारत के सभी पंचांगों में विवाह मुहूर्तो को सुस्पष्ट दर्शाया जाता है। यहाँ विवाह संस्कार के प्रत्येक भाग का हम मुहूर्त ग्रन्थों के आधार पर अध्ययन करेंगे–

१. विवाह संस्कार का विचार :- हमारे शास्त्रों में द्विजातियों के लिये १६ संस्कार बतलाये हैं, इनमें से विवाह सर्वश्रेष्ठ है। विवाह के पश्चात ही पुरूष पुरूषत्व को और स्त्री स्त्रीत्व को प्राप्त होती है। भारतीय मनीषियों ने बतलाये चार आश्रमों– ब्रह्मचर्य, ग्रहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास में से गृहस्थ आश्रम में मनुष्य विवाह के पश्चात ही प्रवेश करता है। यह संस्कार ही वस्तुतः धर्मार्थकाममोक्षस्वरूपी चतुवर्ग फल प्राप्ति का भी आधार है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश के उपरान्त ही स्त्री–पुरूष स्वयं सदाचार में तत्पर होते हुये सदाचारी उत्तम सन्तान उत्पन्न करके ऋषि एवं पितृऋण से मुक्ति पाते हैं। यही कारण है कि ऋषि मुनियों ने विवाह अर्थात गृहस्थाश्रम को विशेष महत्व दिया है। उन्होंने विवाह संस्कार के समय का निर्णय अतिसूक्ष्मता से किया है। धर्मशास्त्रोक्त अष्टविधि विवाहों में विशेष रूप से वर्तमान में गान्धर्व विवाह (प्रेम विवाह) पद्धति एवं ब्राह्म विवाह पद्धति को अपनाया जाता है।[१] ब्राह्म विवाह पद्धति में मुख्यरूप से वर–कन्या की गोत्रादि भिन्नता, मेलापक (नक्षत्र, गुण व मंगली आदि का मिलान) जाति का विचार किया जाता है।

मुहूर्त ग्रन्थों में स्त्री को धर्म, अर्थ एवं काम की प्रदात्री तथा सुसन्तति सिद्धि का मुख्य साधन मानकर विवाह के समय का विशेष विचार बतलाया है।[२]

---

७७ धूम्रग्रर्हभयोर्नैव व्रणं श्रेयोंत्यभागगम्.....। नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/३६१–३६५ पूर्वार्ध

१ नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/५१०–५११

२ भार्या त्रिवर्गकरणं शुभशीलयुक्ता शीलं शुभं भवति लग्नेवशेन तस्याः। मु.चि., विवाह प्र. श्लोक १

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२. **विवाह की आयु** :- विवाह किस आयु मे होना चाहिये इस बारे मे विद्वानों में एक मत नहीं है। शास्त्रों में ऋषियों ने रजोदर्शन के पूर्व विवाह करने पर विशेष बल दिया है।[३] नारद के मत से जन्म से सम वर्षो में कन्या का तथा विषम वर्षो में पुरूष का विवाह होना शुभ होता है। इसके विपरीत वर्षो में विवाह होना अमंगलकारी है।[४]

श्री रामदैवज्ञ के मत से कन्या का विवाह सम (८/१०/१२) वर्षो मे रजोदर्शन के पूर्व वृहस्पति की शुद्धि से और वर का विवाह सूर्य की शुद्धि से विषम वर्षो में तथा दोनों का विवाह चन्द्र की शुद्धि से कर देना चाहिये।[५]

वैदिक काल में व्रतबन्ध के उपरान्त गुरूकुल में ब्रह्मचर्य पूर्वक निवास करके वेदाभ्यास के बाद समावर्तन संस्कार होता था। समावर्तन संस्कार के बाद समान वर्ण वाली तथा अच्छे लक्षण वाली कन्या के साथ विवाह किया जाता था।[६] इस प्रकार स्पष्ट है कि विवाह के लिये वर की आयु २५ वर्ष भी हो सकती है, क्योंकि ब्रह्मचर्य आश्रम जन्म से २५ वर्ष तक रहता है। आधुनिक युग में विवाह हेतु वर–कन्या की आयु का विशेष विचार नहीं होता है।

३. **मेलापक** :- किसी कन्या और किसी वर की कुण्डली देखकर यह बतलाना कि दोनों का विवाह शुभ रहेगा या नहीं, जन्म कुण्डली मिलान कहलाता है। इसे मेलापक भी कहते हैं। वर–कन्या की कुण्डली में सभी आचार्यो द्वारा वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, भकूट और नाड़ी–इन आठ बातों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। इनमें वर्ण का १, वश्य का २, तारा के ३, योनि के ४, ग्रहमैत्री के ५, गणमैत्री के ६, भकूट के ७ तथा नाड़ी के ८ गुण उत्तरोत्तर वृद्धि से ग्रहण किये जाते हैं। इस प्रकार इन सभी गुणों का योग ३६ होता है। वर–कन्या क मेलापक में गुणयोग १८ से अधिक होने पर शुभ अर्थात योग्य विवाह माना जाता है।[७]

---

३ रजस्वला यदा कन्या गुरूशुद्धिर्न चिन्तयेत्।
अष्टमेऽपि प्रकर्तव्यो विवाहस्त्रिगुणार्चनात्।। ज्योतिर्निबंध

४ युग्मेऽब्दे जन्मतः स्त्रीणां प्रीतिदं पाणिपीडनम्।
एतत्पुंसामयुग्मेऽब्दे व्युत्यये नाशनम् तयोः।। नारद पुराण, पूर्वभाग २, अध्याय ५६ श्लोक ४१५

५ गुरूशुद्धिवशेन कन्यकानां समवर्षेषु षडब्दकोपरिष्टात्।
रविशुद्धिवशाच्छुभो वराणामुभयोश्चन्द्रविशुद्धितो विवाहः।। मु.चिन्तामणि, विवाह प्र., श्लोक १२

६ सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्याय, विवाह प्रकरण, पृष्ठ ७१५

७ मुहूर्त चिन्तामणि, विवाह प्रकरण, श्लोक २१ एवं मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक १

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वर–कन्या के जन्म नक्षत्र या नाम के प्रथम अक्षर को आधार को मानकर दोनो के वर्ण–वश्यादि को अलग–अलग जगह पर लिखकर निम्नानुसार मिलाते चले जाना चाहिये–

(अ) वर्णगुण :- सर्वप्रथम वर–कन्या की राशि का पता करें और देखें कौन–कौन से वर्ण की है। ज्योतिष ग्रन्थों में कर्क, वृश्चिक, मीन राशियों को ब्राह्मण वर्ण; मेष, धनु, सिंह राशियों को क्षत्रिय वर्ण; वृष, मकर, कन्या राशियो को वश्य वर्ण; तथा मिथुन, कुम्भ, तुला राशियों को शूद्रवर्ण कहा जाता है। वर का राशि वर्ण कन्या के राशि वर्ण से अधिक हो तो शुभ होता है, इसके विपरीत अशुभ होता है।[८]

मुहूर्त चिन्तामणि के आधार पर वर्ण-गुण बोधक चक्र

वधू\वर	ब्राह्मण(४,८, १२)	क्षत्रिय(१, ५, ९)	वैश्य (२, ६, १०)	शूद्र(३,७, ११)
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	१
शूद्र	१	१	१	१

कन्या के वर्ण से वर का वर्ण समान और अधिक हो तो गुण १ होता है अन्यथा गुण ० होता है।[९]

(ब) वश्य गुण :- इस गुण का उल्लेख नारद पुराण में नहीं है। पंचांगों में दी जाने वाली वश्यगुण सारणी में अन्तर देखने को मिलता है क्योंकि पंचांगा शास्त्रानुसार बनते हैं तथा शास्त्रों में वश्य की गण की सारणी में मतभेद है। मुहूर्त चिन्तामणि ग्रन्थ में मेष, वृष एवं धनु का उत्तरार्ध, चतुष्पद; मिथुन, कन्या, तुला और धनु का पूर्वार्ध नर; कर्क, मकर, कुम्भ तथा मीन को जलचर और वृश्चिक को कीट राशि माना है जबकि मुहूर्त मार्त्तण्ड ग्रन्थ में मकर का पूर्वार्ध चतुष्पद एवं कुम्भ को नर राशि माना है। दोनों के मत से सभी जलचर राशियाँ मनुष्य (नर) राशि के भक्ष्य होती हैं तथा सिंह को छोड़कर शेष राशियाँ नर के वश्य होती है। वृश्चिक को

---

८ नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/५०८; मुहूर्त चिन्तामणि, विवाहप्रकरण, श्लोक २२ एवं

९ मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक १ परार्ध
मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक १० पूर्वाध एवं मुहूर्त चिन्तामणि, विवाहप्रकरण, पृष्ठ ३३७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

छोड़कर अन्य सभी राशियाँ सिंह के वश्य होती हैं। सिंह का वृश्चिक शत्रु है। नर राशि के सिंह एवं सभी जलचर शत्रु होते हैं।[१०] इस गुण में वर के लिये कन्या वश्य, भक्ष्य उचित होती है। यदि वर और कन्या की राशि परस्पर भक्ष्य हो तो १/२ गुण, दोनों में मैत्री हो तो २ गुण, वैरभक्ष्य हो तो ० तथा वैरवश हो तो १ गुण मिलता है।[११]

मुहूर्त चिन्तामणि के आधार पर वश्य-गुण बोधक चक्र

वधु\वर	चतुष्पद	द्विपद	जलचर	वन्य	कीट
चतुष्पद (१, २, ६, १०)	२	१	१/२	०	१
द्विपद (३,६, ७, ६, ११)	१	२	१	०	१
जलचर (४, १०, १२)	१/२	१	२	१	१
वन्य (५)	०	०	१	२	०
कीट (८)	१	१	१	०	२

(स) तारा (नक्षत्र) गुण :- आचार्य श्री रामदैवज्ञ के अनुसार इस गुण के मिलान हेतु कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक और वर के जन्म नक्षत्र से कन्या के जन्म नक्षत्र तक पृथक–पृथक गिनें तथा प्राप्त संख्याओं में ६ का अलग–अलग भाग दें, यदि शेष ३/५/७ बचे तो तारा अशुभ तथा शेष १/२/४/६/८/६ बचे तो तारा शुभ होती है।[१२] श्री नारायण दैवज्ञ ने भी इसी तारा गुण मिलान को व्यक्त किया है।[१३]

---

१० मुहूर्त चिन्तामणि, विवाह प्रकरण, श्लोक २३ एवं मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक २ पूर्वार्ध

११ खं वैराशनके धरारिवशकेऽथो सद्भयोरग्नयः। मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक १०

१२ मुहूर्त चिन्तामणि, विवाह प्रकरण, पृष्ठ ३३८

१३ भे गण्येऽक्ऽहते मिथस्त्र्यगशराः शेषं न सच्चाश्विभा–
दश्वेभाव्यहिभोगिनः श्ववृकभुड्मेषाखुभुग्द्वयुन्दुराः।। मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक २

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुहूर्त चिन्तामणि के आधार पर तारा-गुण बोधक चक्र

	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१½	३	१½	३	१½	३	३
२	३	३	१½	३	१½	३	१½	३	३
३	१½	१½	०	१½	०	१½	०	१½	१½
४	३	३	१½	३	१½	३	१½	३	३
५	१½	१½	०	१½	०	१½	०	१½	१½
६	३	३	१½	३	१½	३	१½	३	३
७	१½	१½	०	१½	०	१½	०	१½	१½
८	३	३	१½	३	१½	३	१½	३	३
९	३	३	१½	३	१½	३	१½	३	३

महर्षि नारद ने ''स्त्रीदूर'' नामक दोष स्पष्ट किया है जो तारागुण से कुछ भिन्न है। यदि कन्या के नक्षत्र से वर का नक्षत्र प्रथम ९ नक्षत्रो के भीतर हो तो यह स्त्रीदूर दोष होता है जो कि अतिनिन्दनीय है। यदि वर का नक्षत्र १० से १८वें नक्षत्रों के बीच हो तो मध्यम कहा जाता है। यदि १९ से २७वें नक्षत्रों के बीच हो तो दोनों का विवाह श्रेष्ठ कहा गया है।[१४] यदि कन्या एवं वर की ताराऐं शुभ हों तो ३ अंक, यदि एक की शुभ दूसरे की अशुभ हो तो १.५ अंक, और यदि दोनों की अशुभ हो तो ० अंक देते हैं।[१५]

(द) योनि गुण :- योनि का विचार वर–वधु के साथ साझेदारी, स्वामी–सेवक, गुरू–शिष्य एवं गाँव–नगर का स्वयं से साथ भी विचारणीय होता है। इस गुण का विचार नक्षत्रों के आधार पर होता है। महर्षि नारद ने अभिजित सहित २८ नक्षत्रों को १४ योनियाँ इस प्रकार विभाजित किया है–

१. अश्व २. गज ३. मेष ४. सर्प ५. सर्प ६. श्वान ७. मार्जार

८. मेष ९. आश्लेषा १०. मूषक ११. मूषक १२. गौ १३. महिष (भैंस) १४. व्याघ्र

---

[१४] नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/४६८–४६९

[१५] मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक १०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

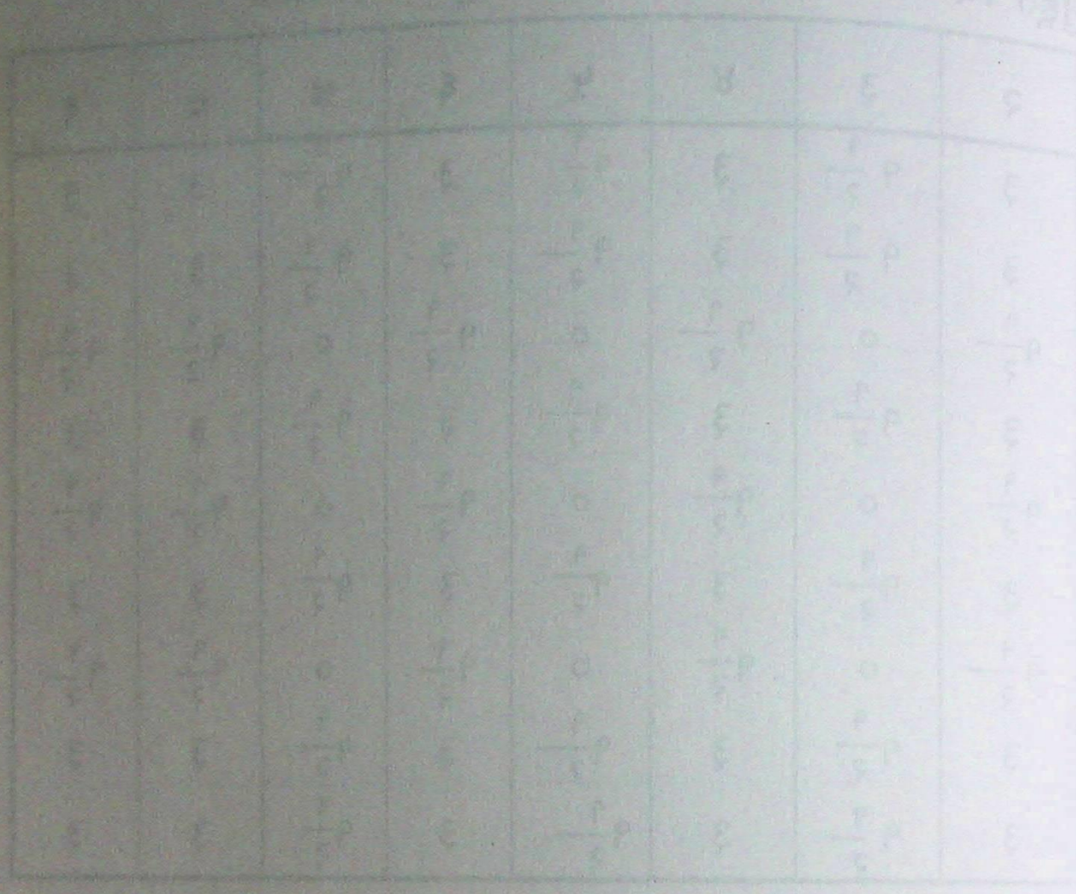

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१५. महिष १६. व्याघ्र १७. मृग (हिरण) १८. मृग १९. श्वान २०. वानर(कपि) २१. नकुल २२. नकुल २३. वानर २४. सिंह २५. अश्व २६. सिंह २७. गाय २८. हाथी ये क्रमशः अश्विनी से लेकर रेवती तक अभिजित् सहित २८ नक्षत्रों की योनियाँ हैं।[१६]

आचार्य श्री रामदैवज्ञ ने भी २८ नक्षत्रों की १४ योनियाँ का विचार इसी प्रकार से किया है, किन्तु इन्होंने श्रवण (२२) की वान एवं अभिजित् (२३) की नकुल योनि मानी है।[१७] आचार्य श्री नारायण दैवज्ञ ने भी रामदवैज्ञ के मत का समर्थन किया है।[१८]

आचार्यों द्वारा बतलायी १४ योनियों में से व्यवहारतः कुछ योनियों में मित्रता तथा कुछ में घोर शस्त्रुता होती है। सिंह और हस्ती में, महिष (भैंसा) और घोड़ा में, मार्जार और मूष में, श्वान और मृग में, वानर और मेष में , गौ और व्याघ्र में, नेवल और सर्प में पारस्परिक वैर होता है।[१९] इन योनि वाले नक्षत्रों में जन्म कन्या–वर का विवाह नहीं करना चाहिये।

मुहूर्त चिन्तामणि ग्रन्थानुसार स्पष्ट ज्ञानार्थ योनि-गुण बोधक सारणी

वधू\वर	अश्व	महिष	सिंह	गज	मेष	कपि	नकुल	सर्प	मृग	श्वान	मार्जा.	मूषक	व्याघ्र	गौ
अश्व	४	०	१	२	३	२	२	१	३	२	३	३	१	३
महिष	०	४	१	३	३	२	२	२	२	२	२	२	१	३
सिंह	१	१	४	०	१	२	२	२	१	१	२	१	२	१
गज	२	२	०	४	२	२	२	२	२	२	३	२	१	२
मेष	३	३	१	२	४	०	३	१	३	२	३	२	१	३
कपि	२	२	२	२	०	४	२	१	२	२	२	२	१	२

क्रमशः

---

[१६] अश्वेभमेष सर्पाहिह्योतुमेषोतुमूषकाः।
आखुगोमहिषव्याघ्रकालीव्याघ्रमृगद्वयम्।।
श्वानः कपिर्बभ्रुयुगं कपि सिंहतुरंगमाः।
सिंहगोदंतिनो भानां योनयः स्युर्यथाश्विभात्।। नारद पुराण, पूर्वभाग २/५६/५०५–५०६

[१७] मुहूर्त चिन्तामणि, विवाह प्रकरण, श्लोक २५, २६

[१८] मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक २

[१९] नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/५०७, मुहूर्त चिन्तामणि, विवाह प्रकरण, श्लोक २६ एवं मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक ३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

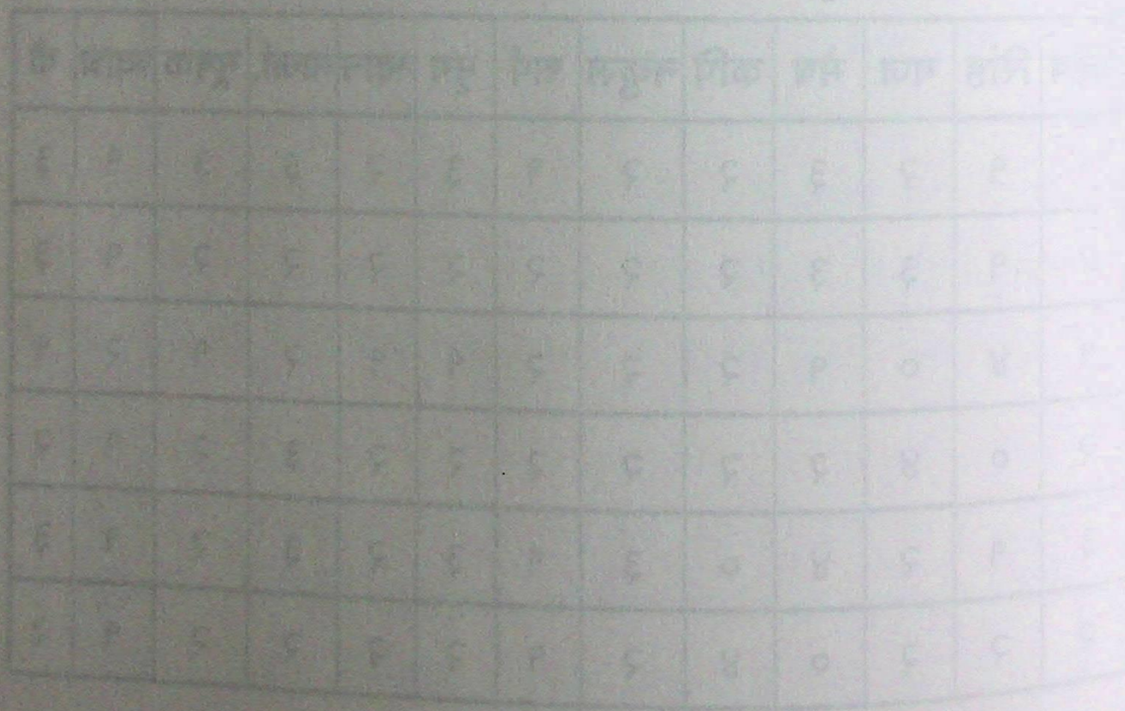

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

वधू\वर	अश्व	महिष	सिंह	गज	मेष	कपि	नकुल	सर्प	मृग	श्वान	मार्जा.	मूषक	व्याघ्र	गौ
नकुल	२	२	२	२	३	२	४	०	२	१	२	२	२	२
सर्प	१	२	२	२	१	१	०	४	१	१	१	१	२	१
मृग	३	२	१	२	३	२	२	१	४	०	२	२	१	२
श्वान	२	२	१	२	२	२	१	१	०	४	१	१	१	१
मार्जार	३	२	२	३	३	२	२	१	२	१	४	०	२	२
मूषक	३	२	१	२	२	२	२	१	२	१	०	४	२	२
व्याघ्र	१	१	२	१	१	१	२	२	१	१	२	२	४	०
गौं	३	३	१	२	३	२	२	१	२	१	२	२	०	४

समान योनि होने पर योनि के पूर्ण ४ गुण, मित्रता में २ गुण, समभाव में २ गुण, सामान्य में १ गुण और शत्रुता में ० गुण प्राप्त होता है।[२०]

(इ) **राशिश गुण** :- मेलापक में राशि स्वामियों की मित्रता–शत्रुता का बहुत महत्व होता है। चन्द्रमा मन का द्योतक है, इससे व्यक्ति की मनोवृति का पता चलता है। दो अपरिचित व्यक्तियों के बीच मित्रता–शत्रुता किस अनुपात में रहेगी यह उनकी राशि लग्न से जाना जा सकता है।

मुहूर्त चिन्तामणि एवं मुहूर्त मार्त्तण्ड ग्रन्थों में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरू, शुक और शनि के बीच परस्पर मित्रता, शत्रुता एवं समभाव को बतलाया है।[२१] विवाह में वर–कन्या की राशियों के स्वामियों के बीच मित्रता, शत्रुता एवं समभाव का विचार कर इस गुण को बतलाया जाता है। यदि वर–वधू दोनों का राशिश एक ही ग्रह हो तो पूरे ५ गुण, एक सम तथा दूसरा मित्र हो (यथा–मिथुन–सिंह) तो ४ गुण, दोनों सम हो (यथा–धनु–मकर) तो ३ गुण, एक मित्र दूसरा शत्रु हो (यथा–मिथुन–कर्क) तो १ गुण और यदि एक सम दूसरा शत्रु हो (यथा–कन्या–धनु) तो १/२ गुण तथा दोनों शत्रु हो (मेष–कुम्भ) तो ० गुण होता है।[२१अ]

---

[२०] मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक १०

[२१] मुहूर्त चिन्तामणि, विवाह प्रकरण २७, २८ एवं मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक ४, ५ पूर्वार्ध

[२१अ] मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाहप्रकरण, श्लोक ११ पूर्वार्ध

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मुहूर्त चिन्तामणि ग्रन्थानुसार ग्रहमैत्री गुणबोधक सारणी पृष्ठ ३४४

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	१/२	१/२
मंगल	५	४	५	१/२	५	३	१/२
बुध	४	१	१/२	५	१/२	५	४
गुरू	५	४	५	१/२	५	१/२	३
शुक्र	०	१/२	३	५	१/२	५	५
शनि	०	१/२	१/२	४	३	५	५

(ई) गण गुण :- अश्विनी से लेकर रेवती पर्यन्त २७ नक्षत्रों को देव, मुनष्य, असुर– इन तीन वर्गो में बांटा गया है। जिन्हें हम सत्व, रज, तम नामक तीन गुणों में भी जाते हैं। ज्योतिष के अधिकांश ग्रन्थों में यह विभाजन समान ही हैं।[२२]

आचार्य श्री रामदैवज्ञ के अनुसार समान गण वाले वर–वधु में आपस में प्रेम होता है। देवता और मनुष्य गण वाले वर–वधु के बीच मित्रभाव होता है। दैत्यगण के साथ मुनष्य गण वाले अथवा देवता गण वाले व्यक्ति का विवाह होना अशुभ होता है।[२३]

मुहूर्त चिन्तामणि ग्रन्थानुसार गणमैत्री बोधक सारणी

कन्या \ वर	देव	मनुष्य	दैत्य (राक्षस)
देव	६	५	०
मनुष्य	५	६	०
राक्षस	०	०	६

---

[२२] नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/४६६–५०१, मुहूर्त चिन्तामणि, विवाह प्रकरण, श्लोक २६ एवं मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक ५

[२३] निजनिजगणमध्ये प्रतिरत्यत्तमा स्यादमरमनुजयोः सा मध्यमा सम्प्रदिष्टा।
असुरमनुजयोश्चेन्मृत्युरेव प्रदिष्टोदनुजविबुधयोः स्याद्वैरमेकान्ततोऽत्र।।
मुहूर्त चिन्तामणि, विवाह प्रकरण, श्लोक ३०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

श्री नारायण दैवज्ञ ने गुण वितरण भिन्न प्रकार से किया है। उनके मत से वर देवगण और कन्या मनुष्यगण हो तो ६ गुण तथा विपरीत स्थिति में ५ गुण होते हैं। गण की समानता पर ६ गुण होते हैं। यदि वर राक्षस और कन्या देवगण हो तो १ गुण तथा इसके विपरीत ० गुण होता है।[२४]

(ए) **राशिकूट गण** :- वर कन्या की राशियों में पारस्परिक दूरी को भकूट या राशिकूट कहते हैं। महर्षि नारद के मतानुसार वर–कन्या की राशियों को परस्पर गिनने पर यदि वे छठी और आठवीं हों तो दोनों के लिये मृत्यु या कष्टकारी, यदि वे पाँचवी या नवमी हों तो दोनों के लिये सन्तान की हानि तथा दूसरी और बारहवीं हों तो वर–वधु दोनों निर्धन होते हैं। इससे भिन्न राशि–सम्बन्ध हों तो दोनों में परस्पर प्रेम रहता है।[२५] साथ ही इस दोष का परिहार इस प्रकार बतलाया है

श्री रामदैवज्ञ ने नारद के मत का समर्थन करते हुये समसप्तक, तृतीय–एकादशी तथा चतुर्थ–दशम को शुभ बतलाया है[२६] जबकि श्री नारायण दैवज्ञ के मत से वर और कन्या की एक ही राशि होने पर अनेकों सुख, सौभाग्य, धनादि होते हैं, किन्तु दोनों का नक्षत्र चरण एक ही नहीं होना चाहिये।[२७]

मुहूर्त चिन्तामणि ग्रन्थानुसार भकूट गुण बोधक सारणी

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१. मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
२. वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
३. मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
४. कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
५. सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
६. कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७

क्रमशः

---

२४ मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक १ का भाष्य।

२५ मृत्युः षष्टाष्टके पंचनवमे त्वनपत्यता।
नैः स्व्यं द्विर्दादशेऽन्येषु दंपत्योः प्रीतिरूत्तमा।। नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/५०३

२६ मृत्युः षष्ठाष्टके ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे।
द्विर्दादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत्। मुहूर्त चिन्तामणि, विवाह प्रकरण, श्लोक ३१

२७ शेषेऽर्था विविधा विभैकचरणे भिन्नर्क्षराश्यैक्यकं।
भिन्नाङ्घ्रयेकभमेतयोर्गणखगौ नाडी नृदूरं च न।। मूहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक ६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
७. तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
८. वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
९. धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
१०. मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
११. कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
१२. मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

(ऐ) **परिहार** :- महर्षि नारद ने भकूट का परिहार इस प्रकार लिखा है कि वर कन्या की नाड़ी शुद्ध होने पर दोनों की जन्म राशियों के स्वामी एक हो अथवा राशि स्वामियों में परस्पर मित्रता हो तो विवाह शुभ होता है।[२८] श्री रामदैवज्ञ ने दोनों के नक्षत्रों के शुभ एवं उत्तम होने पर भी विवाह शुभ कहा है।[२९]

श्री नारायण दैवज्ञ के मतानुसार यदि वर अथवा कन्या की राशि सम हो तो षट्काष्टक दोष नहीं लगता है, यथाः– वृष–तुला, कर्क–धनु, कन्या–कुम्भ इत्यादि। इसी प्रकार समराशि अपनी दूसरी राशि (आगे की राशि) के साथ हों तो शुभ होती है, यथाः– वृष–मिथुन, मकर–कुम्भ इत्यादि। विषय राशियों मे केवल सिंह (५) अपने से अगली कन्या राशि के साथ शुभ होती है।[३०]

(ओ) **नाड़ीगुण** :- ज्योतिष के अधिकांश मुहूर्त ग्रन्थों में नाड़ीगुण के विषय में एक मत है। इस गुण के अंतर्गत अश्विनी से रेवती पर्यन्त २७ नक्षत्रों को तीन प्रकार की नाड़ियों में विभाजित करते हैं–आदि, मध्य और अन्त्य। इन्हें हम वात, पित्त और कफ भी कह सकते हैं। आश्विनी, आर्द्रा, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, जेष्ठा, मूल, शतभिषा एवं पूर्वाभाद्र–इन ६ नक्षत्रों की आदि नाड़ी होती है। भरणी, मृगशिरा, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा,

	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

---

२८ एकाधिपे मित्रभावे शुभदं पाणिपीडनम्।
द्विर्द्वादशे त्रिकोणे च न कदाचित्षडष्टके।। नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/५०४

२९ मुहूर्त चिन्तामणि, विवाह प्रकरण, श्लोक ३२

३० मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक ७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

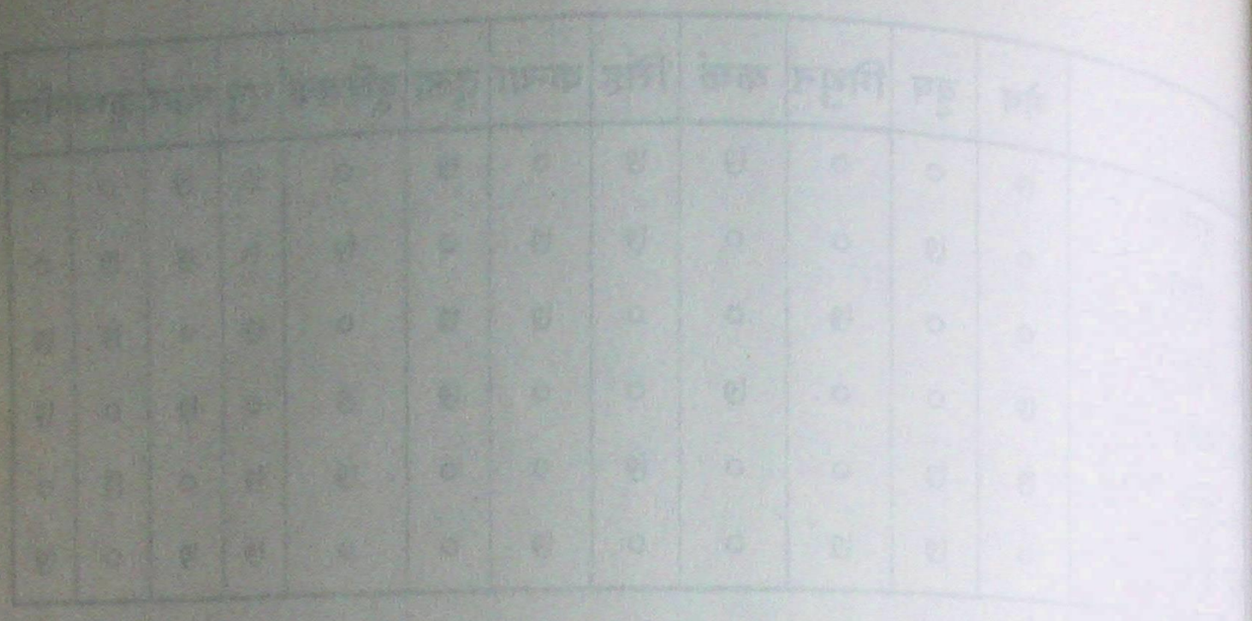

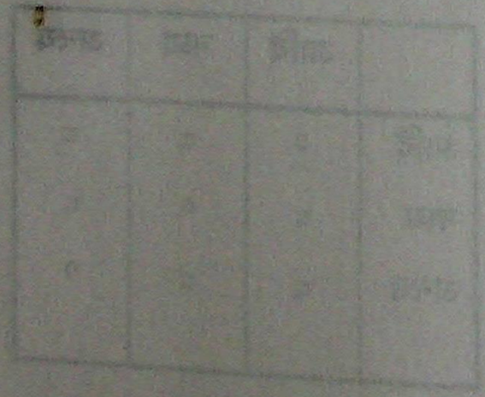

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अनुराधा, धनिष्ठा, पूर्वाषाढ़ा और उत्तराभाद्रपद–इन ६ नक्षत्रों की मध्य नाड़ी होती है। कृतिका, रोहिणी, आश्लेषा, मघा, स्वाती, विशाखा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण एवं रेवती–इन ६ नक्षत्रों की अन्त्य नाड़ी होती है। वर–वधु की एक ही नाड़ी अशुभ फल देती है। मध्य नाड़ी दोनों को ही मृत्युदायक होती है। वर–वधु की भिन्न–भिन्न नाड़ी होना उत्तम होता है।[३१]

परिहार :- यदि वर–वधु दोनों की राशि एक हो किन्तु नक्षत्र भिन्न–भिन्न हो तो नाड़ी दोष नहीं होता है। यदि वर–वधु दोनों का नक्षत्र एक हो किन्तु चरण भिन्न–भिन्न हो अथवा राशि अलग–अलग हो तो नाड़ी और गण का दोष नहीं लगता है।[३२]

इस प्रकार वर–वधु के जन्म नक्षत्र एंव राशि के आधार पर हम गुण मिलान करते हैं।

४. **मासशुद्धि :-** महर्षि नारद ने विवाह हेतु माघ, फाल्गुन, वैशाख और जेष्ठ–इन ४ मासों को श्रेष्ठ तथा कार्तिक एवं मार्गशीर्ष इन २ मासों को मध्यम माना है। अन्य मास निन्दित होते हैं।[३३]

श्री रामदैवज्ञ ने अषाढ़मास को विवाह में शुभ माना है। इसमें चन्द्रमास की अपेक्षा सौर्यमास को प्रधानता दी गई। इन्होंने जब निरयन सूर्य मेष–वृष–मिथुन एवं वृश्चिक–मकर–कुम्भ राशियों में होता है तब विवाह करना उत्तम होता है। मिथुन राशि के सूर्य में अषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा से दशमी पर्यन्त तक विवाह करना चाहिये। हरिशयन के बाद मिथुन राशि के सूर्य में विवाह निषेध है। जब सूर्य, वृश्चिक, मकर एवं कुम्भ राशियों में हो तब क्रमशः कार्तिके, पौष एवं चैत्र मासों मे विवाह उत्तम होता है।[३४] जबकि नारायणदैवज्ञ ने कार्तिक मास को विवाह के लिये स्वीकार नहीं किया है।

---

[३१] नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/३०६–३१० पूर्वार्ध, मुहूर्त चिन्तामणि, विवाह प्रकरण, श्लोक ३४ एवं मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक ८

[३२] राश्यैक्ये चेभ्दिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाड़ीदोषो नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्।।मु.चि., विवाह प्रकरण, श्लोक ३५

[३३] माघफाल्गुनवैशाखजेष्ठमासाःशुभप्रदाः। नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/४१६

[३४] मिथुनकुम्भमृगालिवृषाजगे मिथुनगेऽपि रवौ त्रिलवे शुचेः।
अलिमृगाजगते करपीडनं भवति कार्त्तिकपौषमधुष्वपि।। मुहूर्त चि.,विवाह प्र.,श्लोक १३ परार्ध

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ज्येष्ठमास, जेष्ठवर, जेष्ठकन्या–यह त्रिज्येष्ठ कहलाता है। यहाँ जेष्ठ शब्द का अर्थ प्रथम गर्भ से उत्पन्न वर–कन्या हैं। यदि वर–कन्या में से एक जेष्ठ हो तो जेष्ठमास होने पर जेष्ठ द्वन्द होता है। महर्षि नारद ने प्रथम गर्भ से उत्पन्न वर–कन्या के विवाह को अनिष्टकारक कहा है[३५] जबकि आचार्य रामदैवज्ञ ने जेष्ठ द्वन्द में विवाह को मध्यम बतलाया है तथा त्रिजेष्ठ (वरकन्या दोनों का जन्म जेष्ठमास में हुआ हो) को विवाह में त्याज्य बतलाया है।[३६] श्री नारायण दैवज्ञ ने भी नारद के मत का समर्थन किया है।[३७]

५. **गुरू-शुक्रास्त शुद्धि** :- ज्योतिष ग्रन्थों के मत से चूड़ाकरण, कर्णवेध, उपनयन, समावर्तन तथा विवाह मे गुरू–शुक्रास्त का पूर्णतया निषेध है। नारद के मत से जब गुरू और शुक्र अस्त हो, बाल अथवा वृद्ध हों तथा केवल गुरू–सिंह राशि या उसके नवांश में हो उस समय विवाह से सम्बन्धित शुभकार्य नहीं करने चाहिये।[३८] आचार्य रामदैवज्ञ ने शुक्र और गुरू के बाल्य एवं वृद्धत्व काल को महर्षि नारद द्वारा बतलाये काल के अनुसार ही कहा है। दोनों के मतानुसार शुक्र पूर्व दिशा में उदित होने के बाद ३ दिनों तक तथा पश्चिम दिशा में उदित होने के बाद १० दिनों तक बाल्य (कम चमकीला) रहता है। शुक्र पूर्व में अस्त होने के १५ दिन पहले और पश्चिम में अस्त होने के ५ दिन पहले वृद्धत्व को प्राप्त होता है। गुरू का बालत्व एवं वृद्धत्व–दोनों १५–१५ दिन के होते हैं।[३९] आचार्य नारायण दैवज्ञ का मत गुरू–शुक्र के बाल–वृद्धत्व के विषय में कुछ भिन्न हैं, इन्होंने गुरू और शुक्र दोनों का उदय के बाद ७ दिन बाल्य एवं अस्त के पहले ७ दिन पूर्व से वार्ध्य (वृद्धत्व) माना है।[४०]

६. **नक्षत्र शुद्धि** :- नारद के मत से रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल, रेवती और तीनों उत्तरा–ये ११ नक्षत्र वेध रहित हों तो इनमें विवाह करना उत्तम होता

---

३५ नैवाद्वाहो जेष्ठ पुत्रीपुत्रयोश्च परस्परम्।
जेष्ठमासे तयोरेकज्येष्ठे श्रेष्ठश्च नान्यथा।। नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/४२२

३६ जेष्ठद्वन्दं मध्यमं सम्प्रदिष्टं त्रिजेष्ठं चेन्नैव युक्तं कदापि।मुहूर्त चिन्तामणि,विवाहप्रकरण,श्लोक१५

३७ मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक १३ परार्ध

३८ नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/४१८

३९ नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/४१६ एवं मुहूर्त चिन्तामणि, संस्कार प्रकरण, श्लोक २७

४० एतच्चौलादिषूज्झेदय गुरूसितयोर्बाल्यवार्ध्ये नगाहे।
चाथो शाखेशमौढ्ये व्रतमपि निगमारम्भमार्यो न कुर्यात्। मुहूर्त मार्त्तण्ड, संस्कारप्रकरण, श्लोक ६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है। विवाह में वर का सूर्य बल और कन्या का गुरू बल अवश्य देखना चाहिये।[४१] श्री रामदैवज्ञ के अनुसार पञ्चशलाका चक्र में सूर्यादि ग्रहों से वेध रहित नारद पुराणोक्त ११ नक्षत्रों में, शुभ वार (सोम, बुध, गुरू व शुक्र) में तथा रिक्ता, अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथि में विवाह करना उत्तम होता है।[४२] श्री नारायण दैवज्ञ ने महर्षि नारद द्वारा बतलाये ११ नक्षत्रों को ही विवाह के लिये उत्तम माना है जो नक्षत्र किसी पाप ग्रह से भुक्त होकर चन्द्रमा से भुक्त नहीं हो अथवा किसी ग्रह से विद्ध हो वे विवाह मे निन्दित होते हैं।[४३]

(अ) **पञ्चशलाका वेधचक्र** :- नारद पुराण में पञ्चशलाका चक्र बनाना बतलाया है। पञ्चशलाका वेधबोधकचक्र से दो–दो नक्षत्रों में परस्पर वेध होता है इन दोनों नक्षत्रों में से किसी नक्षत्र पर कोई ग्रह हो तो दूसरा नक्षत्र विद्ध हो जाता है। विद्ध नक्षत्र में विवाह को निन्दित कहा जाता है।[४४]

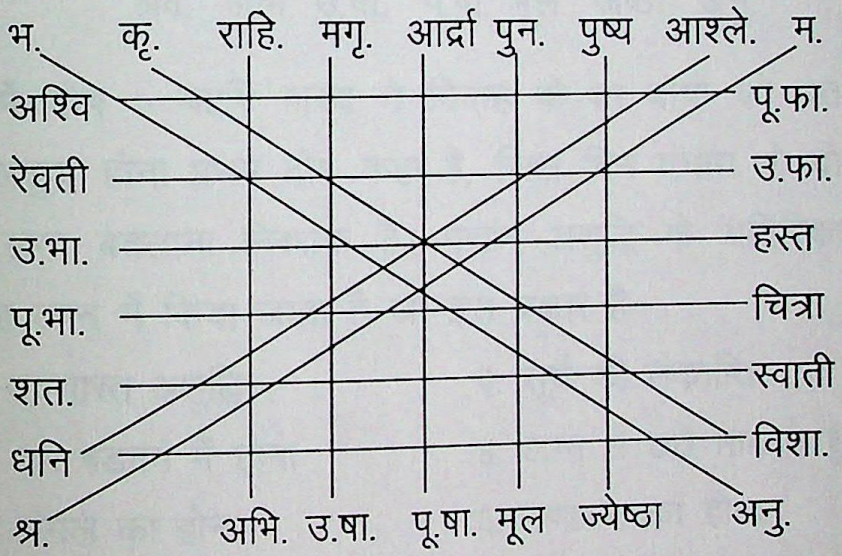

(ब) **सप्तशलाका वेधचक्र** :- पञ्चशलाका चक्र की तरह सप्तशलाका चक्र में भी दो–दो नक्षत्रों का वेध होता है। शुभग्रहों के वेध होने पर नक्षत्र का चरण एवं पापग्रह

---

४१ नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/४२६–४२७

४२ मुहूर्त चिन्तामणि, विवाह प्रकरण, श्लोक ५५

४३ मूलान्त्यार्कमघास्थिरेन्द्वनिलयुडमैत्रं विवाहे शुभं।
पापत्यक्तमनिन्दुभुक्खलयुतं भोग्यं च विद्धं न सत्।। मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक १४

४४ तिर्यक्पचोर्ध्वगाः पञ्च रेखा द्वे द्वे च कोणयोः। नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/४८३ पूर्वार्ध;
मुहूर्त चिन्तामणि, विवाह प्रकरण, श्लोक ५६ एवं मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक १४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

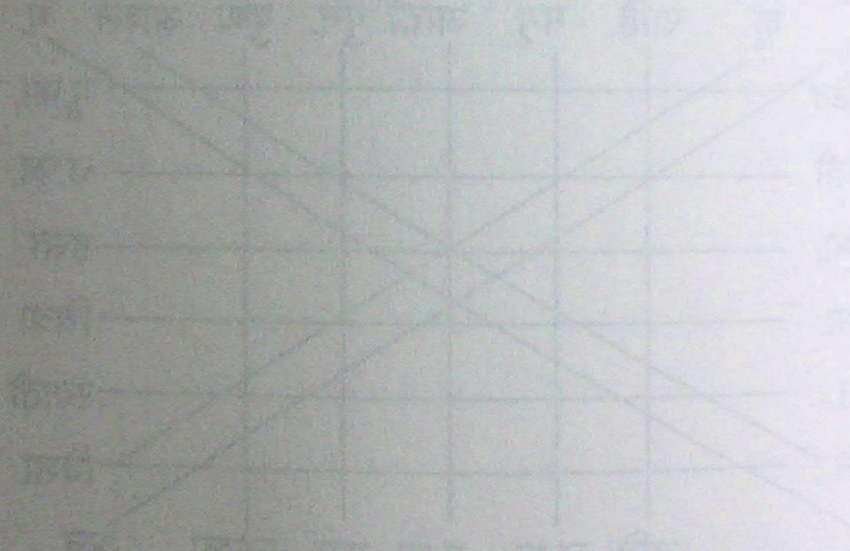

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

से वेध होने पर पूर्ण नक्षत्र को त्याग देना चाहिये।[४५]

सप्तशलाका वेधचक्र

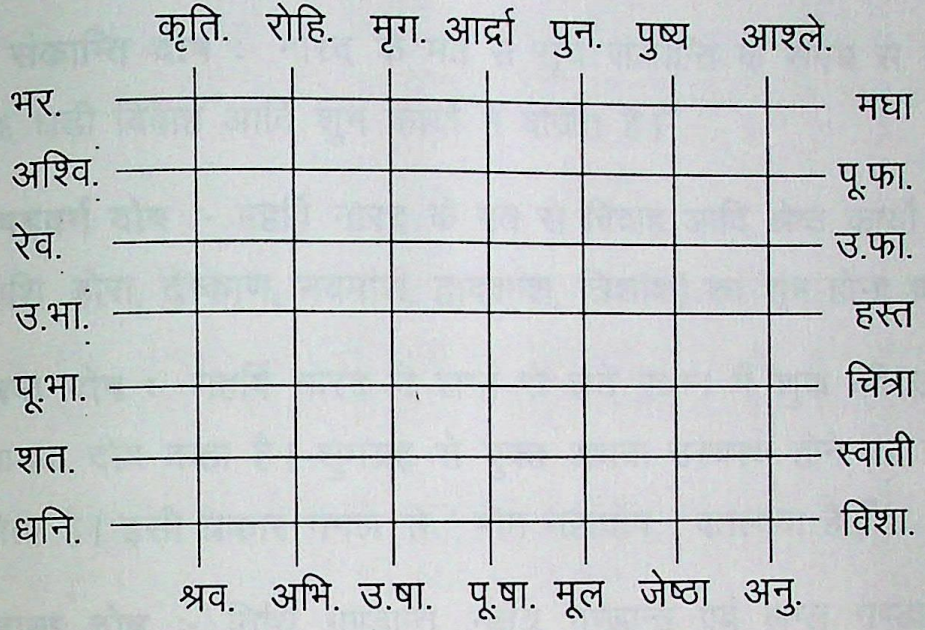

७. विवाह में दोष :- महर्षि नारद ने विवाह के २१ दोषों को बतलाया है जिनमें पंचांग का अशुद्ध होना प्रथम दोष कहा है, जिस दिन पंचांग के दोष हों उस दिन विवाह की लग्न बतलाना निरर्थक है। पंचांग अशुद्धि के अतिरिक्त २० दोषों का विचार विवाह लग्न में किया जाता है जो इस प्रकार है–

१. ग्रहों की उदयास्त अशुद्धि
२. सूर्य की संक्रान्ति
३. पाप ग्रहों का षड्वर्ग में होना
४. लग्न से छठे भाव मे शुक्र का होना
५. अष्टम में मंगल का होना
६. गण्डान्त का होना
७. कर्त्तरी योग का होना
८. चन्द्रमा का ६, ८, १२वें भाव में होना
९. वर–कन्या की राशि से
१०. विषघटी
११. दुर्मुहूर्त
१२. वारदोष
१३. खार्जूर
१४. नक्षत्रैकचरण
१५. ग्रहण एवं उत्पात के नक्षत्र का होना
१६. पापग्रह से विद्ध नक्षत्र का होना
१७. पापग्रह से युक्त नक्षत्र का होना
१८. पापग्रह का नवमांश
१९. महापात
२०. वैधृति

---

[४५] शाक्रेज्ये शतभानिले जलशिवे पौष्णार्यमर्क्षे वसु–द्वीशे वैश्वसुधांशुभे हयभगे सार्पानुराधे तथा। हस्तोपान्तिमभे विधातृविधिभे मूलादिती त्वाष्ट्रभे–ऽजाङ्घ्री याम्यमघे कृशानुहरिभे विद्धेऽद्रिरेखेमिथः। मुहूर्त चिन्तामणि, विवाह प्रकरण, श्लोक ५७ एवं मूहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक १५

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

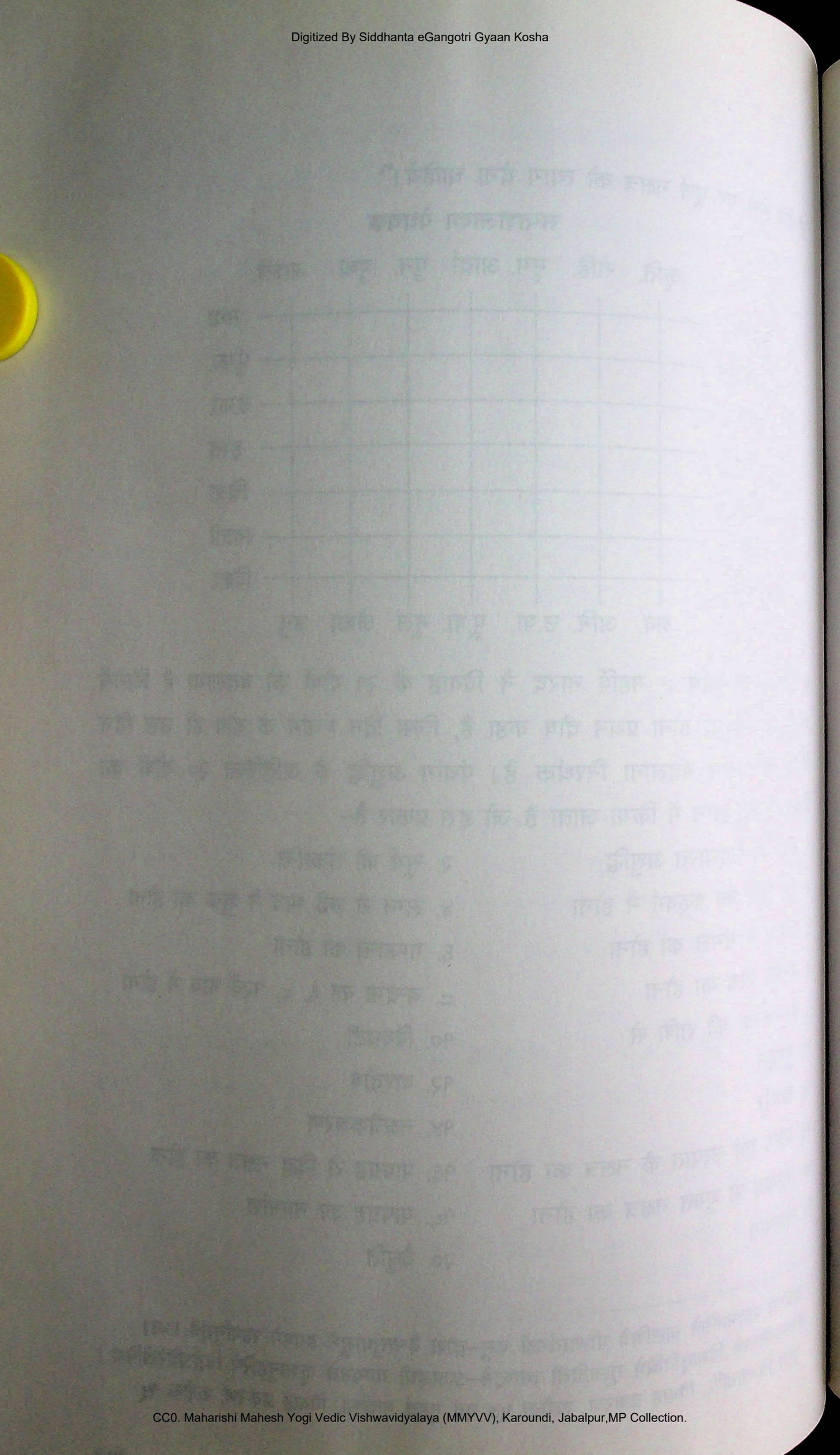

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

नारद ने इन २१ दोषों से रहित लग्न मे विवाह उत्तम कहा है।[४६] विभिन्न मुहूर्त ग्रन्थों में विवाह के दोषों का उल्लेख मिलता है यहाँ हम कुछ प्रमुख दोषों को संक्षेप में समझते हैं–

(अ) सूर्य संक्रान्ति दोष :- नारद के मत से सूर्य संक्रान्ति के समय से पूर्व एवं बाद की १६–१६ घड़ी विवाह आदि शुभ कार्यों में वर्जित हैं।[४७]

(ब) लग्नषड्वर्ग दोष :- महर्षि नारद के मत से विवाह आदि श्रेष्ठ कार्यों में लग्न का षड्वर्ग (राशि, होरा, द्रेष्काण, नवमांश, द्वादशांश, त्रिशांश) का शुभ होना चाहिये।[४८]

(स) भृगषष्ठ दोष :- महर्षि नारद ने लग्न से छठे स्थान में शुक्र की उपस्थिति को भृगषष्ठ नामक दोष कहा है। शुभग्रह से युक्त अथवा उच्चस्थ होने पर इस दोष का परिहार होता है। इसी प्रकार मंगल से ' भौम महादोष ' बतलाया है।[४९]

(स) गण्डान्त दोष :- तिथि गण्डान्त, नक्षत्र गण्डान्त एवं लग्न गण्डान्त काल में विवाह करना निषिद्ध कहा है।[५०]

(इ) कर्तरी दोष :- नारायण दैवज्ञ के मत से लग्न या चन्द्रमा से दूसरे एवं बारहवें स्थान में पापग्रह हो तो कर्तरी दोष होता है। यदि दूसरे स्थान में वक्री तथा बारहवें स्थान में मार्गी पापग्रह हो तो महाकर्तरी दोष होता है।[५१] महर्षि नारद ने महाकर्तरी दोष को ही कर्तरी दोष कहा है।[५२]

---

४६ नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/४३५–४३८

४७ त्याज्याः सूर्यस्य संक्रान्तेः पूर्वतः परतस्तथा।
विवाहादिषु कार्येषु नाड्यः षोडशषोडश।। नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/४४३ परार्ध–४४४ पूर्वार्ध

४८ षड्वर्गः शुभदः श्रेष्ठो विवाहस्थानादिषु। नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/४४४ परार्ध

४९ भृगुषष्ठाह्वयो दोषो लग्नात्पष्ठगते सिते।
उच्चगे शुभ संयुक्ते तल्लनं सर्वदा त्यजेत्।। नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/४४५–४४६

५० नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/४४७–४४६, मुहूर्त चिन्तामणि, विवाह प्रकरण, श्लोक ४६–५१ एवं मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक २२

५१ इन्दोर्वा हरिजादव्ययस्वगतोयोः स्यात्कूरयोः कर्तरी।
स्वेवक्यन्त्य ऋतुर्महत्यथ गुरौ रिःफे शुभे वा तनौ।। मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक २८

५२ नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/४५०

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(प) लग्न दोष :- महर्षि नारद के मत से चन्द्रमा का ६/८/१२वें भाव मे जाना "लग्न दोष" है। ऐसा लग्न हर स्थिति में त्याज्य है।[५३] यदि गुरू १२वें हो या शुभ ग्रह लग्न हो तो यह दोष नहीं होता है।

(फ) विषघटी दोष :- ज्योतिष ग्रन्थों में विषघटी दोष का स्पष्ट उल्लेख हुआ है। इनमें प्रत्येक नक्षत्र का मान ६० से तुल्य मानकर नक्षत्रों की विषघटी कही है। अश्विनी, भरणी, कृतिका आदि २७ नक्षत्रों में कमशः ५०/२४/३०/४०/१४/२१/३२/३०/२०/ १८/२१/२०/१४/१४/१०/१४/५६/२४/२०/१०/१०/१८/१६/२४/३० घटी (दण्ड) से आगे की ४ घटी (दण्ड) विषघटी होती है। विषघटिकाओं को शुभ कार्यों में त्याज्य कहा है।[५४]

(झ) सूर्यचन्द्रकांतिसाम्य दोष :- मुहूर्त चिन्तामणि ग्रन्थ में इस दोष को बतलाया है। जिसके अनुसार सूर्य और चन्द्रमा के परस्पर मेष–सिंह, वृष–मकर, तुला–कुम्भ, कन्या–मीन, कर्क–वृश्चिक एवं धनु–मिथुन राशियों में रहने पर कान्तिसाम्य दोष होता है। यह विवाह लग्न के लिये अनिष्टकारी होता है।[५५]

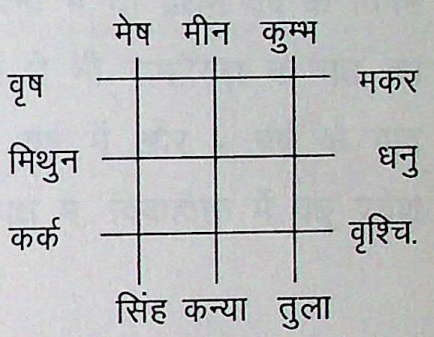

ज्योतिष ग्रन्थों मे विवाह लग्न के समय होने वाले सम्भावित अनेक दोषों को बतलाया है। इन दोषों के होने पर विवाह नहीं करना चाहिये। साथ ही इन दोषों का परिहार ही बतलाया है। श्री रामदैवज्ञ के मत से विवाह लग्न के समय कन्द्र (१/४/७/१० स्थानों) में बुध हो तो १००, शुक्र हो तो २००, गुरू हो तो लाख दोषों का नाश होता है। यदि विवाह लग्न का स्वामी एवं नवमांश का स्वामी ११वें स्थान में हो तो समस्त दोषों को नष्ट करता है।[५६]

---

५३ नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/४५

५४ नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/४६३–४६८ एवं मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक २२

५५ मुहूर्त चिन्तामणि, विवाह प्रकरण, श्लोक ६१

५६ त्रिकोणे केन्द्रे वा मदनरहिते दोषशतकं,
हरेत् सौम्यः शुक्रो द्विगुणमपि लक्षंसुरगुरूः।
भवेदाये केन्द्रऽग्ड़प उत लवेशो यदि तदा,
समूहं दोषाणां दहन इव तूलं शमयति।। मुहूर्त चिन्तामणि, विवाह प्रकरण, श्लोक ६१

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसी प्रकार अभिजित एवं गौधूल लग्न को विवाह में परम शुभ माना है। इससे पुत्र, पौत्र की वृद्धि होती है। अभिजित् लग्न से सम्पूर्ण दोषों का नाश होता है। अतः स्पष्ट है कि विवाह मूहूर्त का प्रतिपादन समस्त शुभाशुभ स्थितियों को ध्यान में रखकर करना चाहिये।[५७]

८. **वधु प्रवेश मुहूर्त** :- महर्षि नारद के मत से वधु प्रवेश विवाह के दिन से ६, ७, ८वें और १०वें दिन श्रीवृद्धिकारी होता है। द्वितीय वर्ष, जन्मराशि, जन्मलग्न एवं जन्मदिन को छोड़कर सम्मुख शुक्र के होने पर वैवाहिक यात्रा (वधु प्रवेश) शुभ होती है।[५८] आचार्य श्री रामदैवज्ञ के मत से विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर सम दिन में और ५, ७, ९वें विषम दिन में वधु प्रवेश शुभ होता है। यदि १६ दिन में वधु प्रवेश नहीं हो पाता है तो उसके बाद प्रथम मास के विषम दिनों में या प्रथम वर्ष के विषम मासों में वधु प्रवेश शुभ होता है।[५९] श्री नारायण दैवज्ञ ने भी रामदैवज्ञ के मत का समर्थन किया है। इन्होंने १ वर्ष के बाद ३रे या ५वें वर्ष में और ५ वर्ष के बाद इच्छानुसार वैशाख, फाल्गुन, मार्गशीर्ष मासों में, शुक्ल पक्ष में, विवाहोक्त में वधु प्रवेश कहा है।[६०]

श्री रामदैवज्ञ के मत से वधु का पतिग्रह में प्रथम प्रवेश अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, मघा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूला, धनिष्ठा, श्रवण, तीनों उत्तरा एवं रेवती– इन १६ नक्षत्रों में रिक्ता तिथि एवं भौम–रविवारों को छोड़कर–अन्य तिथि एवं वारों में होना उत्तम होता है।[६१]

९. **द्विरागमन का मूहूर्त** :- प्रथम वार पतिग्रह में प्रवेश हो जाने के बाद पिता के घर आकर पुनः द्वितीय वार पति के घर जाना द्विगरामन कहलाता है। नारद पुराण में

---

५७ चतुर्थमभिजिल्लग्नमुदयर्क्षाच्च सप्तम्,
गोधूलिकं तदुभयं विवाहे पुत्रपौत्रदम्।
प्राच्यानां च कलिंगानां मुख्यं गोधूलिकं स्मृतम्,
अभिजित्सर्वदेशेषु मुख्यों दोषविनाशकृत।। नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/५१२–१३

५८ नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/५२२–२३

५९ समाद्रिपञ्चाकदिने विवाहद्वधुप्रवेशोऽष्टिदिनान्तराले।
शुभः परस्ताद्विषमाब्दमासदिनेऽक्षवर्षात्परतो यथेष्टम्।। मुहूर्त चिन्तामणि, वधुप्रवेशप्रकरण,श्लोक १

६० मुहूर्त मार्त्तण्ड, विवाह प्रकरण, श्लोक ४०

६१ ध्रुवक्षिप्रमृदुश्रोत्रवसुमूलमघानिके।
वधुप्रवेशः सन्नेष्टो रिक्तरार्के बुधे पुरैः।। मुहूर्त चिन्तामणि, वधुप्रवेश प्रकरण, श्लोक २

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्विरागमन का मुहूर्त नहीं मिलता है। आचार्य रामदैवज्ञ के मतानुसार विवाह के बाद विषम वर्षों में, सूर्य के मेष, वृश्चिक, कुम्भ राशियों में भ्रमण के समय शुभ तारों में, सूर्य और गुरू के शुद्ध रहने पर, वृष, मिथुन, कनया, तुला, मीन लग्नों में तथा अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, धनिष्ठा, श्रवण, शतभिषा, तीनों उत्तरा एवं रेवती– इन १७ नक्षत्रों में द्विरागमन शुभ होता है।[६२]

इन संस्कारीय मुहूर्तो के अतिरिक्त दैनिक कृत्योपकारी मुहूर्तो का ज्ञान पंचांग के द्वारा होता है, जैसे–यात्रा मुहूर्त, गृहप्रेवश मुहूर्त, भूमिकय–विकय मुहूर्त, सम्पर्क मुहूर्त, मशीनरी शुभाशुभ मुहूर्त इत्यादि।

इस प्रकार स्पष्ट है कि पंचांग के द्वारा अनेक शुभाशुभ मुहूर्तो का ज्ञान होता है। इन मुहूर्तो में अभीष्ट कार्य का सम्पादन करने पर वांछित सफलता प्राप्त होती है।

---

६२ चरेदथौजहायने घटालिमेषगे रवौ रवीज्यशुद्धियोगतः शुभग्रहस्य वासरे।
नृयुग्ममीनकन्यकातुलावृषे विलग्न के द्विरागमनं लघुध्रुवे चरेऽम्रपे मृदूडुनि।।
मुहूर्त चिन्तामणि, द्विरागमन प्रकरण, श्लोक १

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

द्विरागमन का मुहूर्त नहीं मिलता है। आचार्य रामदैवज्ञ के मतानुसार विवाह के बाद विषम वर्षों में, सूर्य के मेष, वृश्चिक, कुम्भ राशियों में भ्रमण के समय शुभ तारों में, सूर्य और गुरू के शुद्ध रहने पर, वृष, मिथुन, कनया, तुला, मीन लग्नों में तथा अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, धनिष्ठा, श्रवण, शतभिषा, तीनों उत्तरा एवं रेवती– इन १७ नक्षत्रों में द्विरागमन शुभ होता है।[६२]

इन संस्कारीय मुहूर्तो के अतिरिक्त दैनिक कृत्योपकारी मुहूर्तो का ज्ञान पंचांग के द्वारा होता है, जैसे–यात्रा मुहूर्त, गृहप्रेवश मुहूर्त, भूमिक्रय–विक्रय मुहूर्त, सम्पर्क मुहूर्त, मशीनरी शुभाशुभ मुहूर्त इत्यादि।

इस प्रकार स्पष्ट है कि पंचांग के द्वारा अनेक शुभाशुभ मुहूर्तो का ज्ञान होता है। इन मुहूर्तो में अभीष्ट कार्य का सम्पादन करने पर वांछित सफलता प्राप्त होती है।

---

६२ चरेदथौजहायने घटालिमेषगे रवौ रवीज्यशुद्धियोगतः शुभग्रहस्य वासरे।
नृयुग्ममीनकन्यकातुलावृषे विलग्न के द्विरागमनं लघुध्रुवे चरेऽम्रपे मृदूडुनि।।
मुहूर्त चिन्तामणि, द्विरागमन प्रकरण, श्लोक १

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सप्तम अध्याय

पञ्चांग द्वारा फल निरूपण

पञ्चांग द्वारा युग, संवत्सर, अयन, गोल, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण एवं लग्न इत्यादि का फल निरूपण व्यक्त होता है। इनके अतिरिक्त राशिफल, संक्रान्तिफल, शनि की साढ़े साती एवं ढैया का राशियों पर शुभाशुभ फल एवं विश्व तथा भारत की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति का दिग्दर्शन पञ्चांग के माध्यम से होता है।

पञ्चांग में ग्रहों की नक्षत्रों एवं राशियों में प्रतिवर्ष की स्थिति को दर्शाया जाता है। ग्रहों की स्थिति में परिवर्तन होने से घटित होने वाली अनेक शुभाशुभ घटनाओं का उल्लेख पञ्चांग में किया जाता है। मानव जीवन एवं पर्यावरण पर ग्रह गोचर की स्थिति का क्या प्रभाव पड़ेगा इसका पूर्वानुमान पञ्चांग के द्वारा ही होता है। अनेक लोग वर्षफल निकलवाकर यह जानने का प्रयास करते हैं कि नवीन वर्ष सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं पारिवारिक दृष्टि से कैसा रहेगा ?

भारत वर्ष में सामान्यतः प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नूतन चान्द्रवर्ष के पञ्चांग की शुरूवात होती है। इस पञ्चांग में नवीन वर्ष की ग्रह गोचर की स्थिति के आधार पर अनेक शुभाशुभ फलों का निरूपण किया जाता है। वर्ष के परिवर्तित होने पर नवीन वर्ष में ग्रहमण्डल के विधानसभा के अधिकारी वर्षेशादि बदल जाते हैं जिससे नवीन संवत्सर का फल भी भिन्न होता है। पञ्चांग द्वारा फल निरूपण में हम निम्नलिखित तथ्यों का अध्ययन करते हैं–

(अ) संवत्सर का फल :- वृहस्पति के एक राशि भोग के काल मान को संवत्सर कहते हैं। गुरूमान से प्रभवादि ६० संवत्सर होते हैं। नवीन वर्ष के आरम्भ में जो संवत्सर होता है, वही उस वर्ष का संवत्सर होता है। यह प्रतिवर्ष क्रमशः बदलता रहता है तथा ६० के पूर्ण होने पर पुनः १ से शुरू होता है। उत्तरभारत के पञ्चांगों मे प्रतिवर्ष का संवत्सर एवं उसका फल निरूपण व्यक्त किया जाता है। भविष्य पुराण में शंकर–पार्वती संवाद के तहद श्विजी प्रभवादि संवत्सर का फल विवेचन करते हैं[1] जो इस प्रकार है–

---

१ .....एम.एन.डे प्रका.१, संवत्सरफलविचाराधिकार, पृ.१३९-१४९

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१. **प्रभव** :- शंकर जी, पार्वती जी से कहते हैं कि है वरानने ! प्रभव संवत्सर में पृथ्वी पर सुवृष्टि अधिक होती है सम्पूर्ण पृथ्वी धन–धान्य से परिपूर्ण रहती है। गायें अधिक दुग्धवती होती हैं। समस्त प्राणी व्याधि और पीड़ा से रहित होते हैं। राजागण शान्तिभाव से अपना समयापन करते हैं।

२. **विभव** :- विभव संवत्सर में पृथ्वी पर सर्वत्र सुभिक्ष रहता है। सभी वर्ग के लोग अपने कार्य को सुचारू रूप से करते हैं। सभी प्रजा निरोगी और सुखी रहती है एवं पृथ्वी शस्य श्यामला बनी रहती है। धरा पर किसी प्रकार का रोग व्याधि नहीं रहता है।

३. **शुक्ल** :- हे वरानने ! शुक्ल संवत्सर में हाथी, घोड़े एवं नगरों में विविध प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं जिससे प्राणियों का अत्याधिक विनाश होता है।

४. **प्रमोद** :- प्रमोद (प्रमादि) संवत्सर में सम्पूर्ण संसार धन्य–धान्य से समृद्ध होता है। सम्पूर्ण प्रजा सुखी एवं प्रसन्न चित्त रहती है। विश्व के समस्त प्राणी उन्मत्त रहते हैं।

५. **प्रजापति** :- प्रजापति संवत्सर में पृथ्वी पर किसी प्रकार का रोग, व्याधि एवं उपद्रव नहीं होते हैं। वसुन्धरा शस्य से परिपूर्ण होती है। दुग्धादि रस पदार्थ का उत्पादन अधिक होता है।

६. **अंगिरस** :- हे प्रिये ! अंगिरस संवत्सर में सम्पूर्ण जगत धन एवं यौवन से परिपूर्ण रहता है प्रजावर्ग में नानाप्रकार के मांगलिक कार्य नित्य होते रहते हैं।

७. **श्रीमुख** :- श्रीमुख संवत्सर में धरा पर सुवृष्टि होती है। सर्वत्र नैरूज्यता दृष्टिगत होती है। शान्ति एवं सुभिक्ष से परिपूर्ण पृथ्वी शस्यों से अभिवृद्धि को प्राप्त होती है।

८. **भावी** :- हे वरानने ! भावी (भव) संवत्सर में पृथ्वी पर धान्यादि की उपज उत्तम होती है। गायें दूध अधिक देती हैं। धरा विशेष शस्य श्यामला होती है।

९. **युवा** :- हे प्रिये ! युवा संवत्सर में घी, तेल और विविध प्रकार के रस पदार्थों के मूल्यों में ह्रास होता है। प्रजाजन का विकास होता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

१०. **धातृ** :- हे प्रिये ! धातृ संवत्सर में सभी प्राणियों की शाली, गेंहूँ, कोदो, तन्तु एवं इक्षुरस से निवृत्ति होती है और इन वस्तुओं का उत्पादन अधिक होता है।

११. **ईश्वर** :- ईश्वर संवत्सर में सर्वत्र निरोगता, सुभिक्ष एवं रूई, लवण, मधु, दुग्धादि पदार्थ महर्घ होते हैं।

१२. **बहुधान्य** :- हे वरानने ! वहुधान्य संवत्सर में धरा पर सर्वत्र कल्याण, निरूज्यता एवं चोरादि भय से रहित राजागण निवास करते हैं।

१३. **प्रमाथी** :- हे सुलोचने ! प्रमाथी संवत्सर में पृथ्वी पर तस्करों का आक्रान्त, अर्थ हानि एवं दुर्भिक्ष का प्रभाव अधिक रहता है।

१४. **विक्रम** :- हे प्रिये ! विक्रम संवत्सर में पृथ्वी पर सर्वत्र सभी प्रकार के धन–धान्य की निष्पत्ति होती है और मधु, मदिरा एवं घृतादि रस मंहगे होते हैं।

१५. **वृष** :- हे सुलोचने ! वृष संवत्सर में कोदो, साठी, चावल, मूँग, कौनी और उड़द आदि पदार्थों के भावों में तेजी होती है।

१६. **चित्रभानु** :- चित्रभानु संवत्सर में सभी पदार्थ सस्ते होते हैं। चावल, मूँग, उड़द और धान्य की फसलें अधिक होती हैं।

१७. **स्वर्भानु** :- हे सुलोचने ! स्वर्भानु (सुभानु) संवत्सर में पृथ्वी पर सभी प्राणी परस्पर उत्तम व्यवहार करते हैं। सर्वत्र सुभिक्ष दृष्टिगत होता है। सुखी और निरोगी होकर सभी प्राणी जीवन यापन करते हैं।

१८. **तारण** :- तारण संवत्सर में पृथ्वी पर अतिवृष्टि होती है। धान्य एवं औषधियों की हानि और साधारण शस्योत्पत्ति होती है।

१९. **पार्थिव** :- हे सुलोचने ! पार्थिव संवत्सर सौराष्ट्र एवं मालव और अन्य देशों में निःसंदेह धन–धान्य की उपज अच्छी होती है।

२०. **व्यय** :- हे प्रिये ! व्यय संवत्सर में पृथ्वी पर घोर दुर्भिक्ष होता है। अनावृष्टि और दैहिक, दैविक एवं भौतिक तीनों प्रकार के कष्टों से प्रजा अत्यन्त व्याकुल रहती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२१. **सर्वजित** :- हे प्रिये ! सर्वजित संवत्सर में मेघों द्वारा उत्तम वर्षा होती है। पृथ्वी शस्य–श्यामला होती है।

२२. **सर्वधारी** :- सर्वधारी संवत्सर में सम्पूर्ण वर्ष शुभ एवं व्याधि रहित होता है। कोदव, चावल, मूँग, कौनी और उड़द की उपज अच्छी होती है।

२३. **विरोधी** :- हे वरानने ! विरोधी संवत्सर में धान्य एवं औषधियों की हानि तथा क्षुधाग्नि से पीड़ित सभी प्राणी कष्टमय जीवन व्यतीत करते हैं।

२४. **विकृत** :- विकृत नामक संवत्सर में समस्त प्रजा ज्वर, व्याधि से व्याकुल, मस्तिष्क रोग से पीड़ित, पैर के रोगों से विकृत एवं चिंतित रहती है।

२५. **खर** :- खर संवत्सर में सम्पूर्ण विश्व में चोरों, चूहों एवं पक्षियों के उपद्रव से प्रजा पीड़ित होती है और नानाप्रकार के उत्पात से राष्ट्र विभाजन की स्थिति अद्‌भुत होती है।

२६. **नन्दन** :- नन्दन संवत्सर में प्रजा स्वस्थ एवं आनंदित होकर जीवन व्यतीत करती हैं। पृथ्वी पर सर्वत्र सुभिक्ष, कल्याण एवं आरोग्यता तथा गोवंश की अभिवृद्धि से दुग्धोत्पादन अधिक होता है।

२७. **विजय** :- विजय संवत्सर में खण्डवृष्टि होने के कारण निःसंदेह फसलें नष्ट हो जाती हैं।

२८. **जय** :- जय संवत्सर में क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, नर और नर्तक जाति के लोग कष्टित रहते हैं। शेष जन समुदाय के लिये शुभकार होता है।

२९. **मन्मथ** :- हे प्रिये ! मन्मथ संवत्सर में पृथ्वी पर समस्त जन समुदाय शिरारोग एवं वायु विकास से तथा ज्वरादि उपद्रव से व्यथित होते हैं।

३०. **दुर्मुख** :- दुर्मुख संवत्सर में तुस, धान्य की हानि और सर्वधान्य की महर्घता एवं प्रजाजन में व्यवहार की क्षति होती है।

३१. **हेमलम्ब** :- हेमलम्ब संवत्सर में सभी देशों मे धन–धान्य की हानि होती है। नानाप्रकार के उत्पात होते हैं। प्रजावर्ग को पीड़ा अधिक होती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

३२. **विलम्बी** :- विलम्बी संवत्सर में पृथ्वी पर तस्करों का भय, राजभय, महामारी आदि विविध रोगों से धरा आक्रान्त रहती है और अन्न की सामान्य उपज होती है।

३३. **विकारी** :- विकारी संवत्सर मे हर जगह विरोध, नानाप्रकार के भय, विविध प्रकार के उत्पात, अशान्ति और सामाजिक स्थिति में वैशम्यता होती है।

३४. **सर्वरी** :- सर्वरी संवत्सर में पृथ्वी पर खण्डवृष्टि होती है। देशों में अशान्ति के कारण प्रजा में व्यवहार में विषमता होती है।

३५. **प्लब** :- प्लब संवत्सर में पृथ्वी पर घोर अकाल पड़ता है। वर्षा स्वल्प होती है गर्मी अत्यधिक पड़ती है और सारी प्रजा पीड़ित होती है।

३६. **शुभकृत** :- हे प्रिये ! शुभकृत संवत्सर में सोना, चाँदी और धन–धान्यादि के भाव सस्ते होते हैं। पृथ्वी पर सभी प्रकार की फसल उत्पन्न होती है। ब्राह्मण और वणिज वर्ग पूर्ण संतुष्ट होते हैं।

३७. **शोभन** :- शोभन संवत्सर में सुभिक्ष, कल्याण, आरोग्यता एवं शुभकार्य सर्वत्र होते रहते हैं। गाय, ब्राह्मण, प्रजावर्ग स्वस्थ एवं प्रशन्नचित्त रहते हैं। सभी देशों में शान्ति बनी रहती है।

३८. **क्रोधी** :- हे प्रिये ! क्रोधी संवत्सर में प्रजाजन में क्रोध अधिक व्याप्त रहता है। सम्पूर्ण संसार में शत्रुता व्याप्त रहती है। परस्पर वैमनस्यता के कारण सभी वर्ग अशान्ति एवं दुःखी रहते हैं।

३९. **विस्वावसु** :- हे देवी ! विस्वावसु संवत्सर में सर्वत्र शान्ति रहती है। धन–धान्य एवं कपास के भावों में वृद्धि होती है।

४०. **पराभव** :- पराभव संवत्सर में सभी प्रजावर्ग भयभीत एवं पीड़ित रहते हैं। समस्त राजावर्ग प्रबल एवं स्वस्थ रहते हैं।

४१. **प्लवंग** :- प्लवंग संवत्सर में वर्षा और धान्य की हानि होती है। किन्हीं–किन्हीं स्थानों पर ग्रीष्म धान्य की उपज होती है। राष्ट्र की प्रजा में क्लेश व्याप्त रहता है।

४२. **कीलक** :- कीलक संवत्सर में पृथ्वी पर सुवृष्टि होती है। फसलोत्पादन अधिक मात्रा में होता है। प्रजा भय एवं उपद्रव रहित होती है। राजाओं की वृद्धि सौम्य एवं शुभप्रद होती है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

४३. **सौम्य** :- सौम्य संवत्सर में समस्त राष्ट्रों में सर्वत्र सुभिक्ष, अच्छी फसल और उपद्रव रहित प्रजा सुखमय जीवन व्यतीत करती है। राजा सौम्य भाव से आनन्दित जीवन जीते हैं।

४४. **साधारण** :- साधारण संवत्सर में समय–समय पर सुवृष्टि होती रहती है। मेघों द्वारा जल पृथ्वी को प्राप्त होता रहता है, किन्तु मूषक, कीट, पतिंगों आदि से फसल की हानि होती है।

४५. **विरोधक** :- विरोधक संवत्सर में खण्डवृष्टि होती हैं बादल कहीं–कहीं वर्षा करते हैं। कान्यकुब्ज और अहि क्षेत्र (नागपुर) में कृषि कार्य मे विशेष हानि होती है।

४६. **परिधावी** :- परिधावी संवत्सर में अग्नि का उत्पात अधिक होता है। आँधी एवं तूफान का प्रकोप बना रहता है। विविध प्रकार के कष्टों से सम्पूर्ण राष्ट्र एवं अन्य देशों के जनसमुदाय भी दुःखी रहते हैं।

४७. **प्रभाथी** :- हे प्रिये ! प्रभाथी संवत्सर में सभी फसलें अधिक मात्रा में उद्‌भूत होती है और जन समुदाय में प्रमाद की अधिकता होती है।

४८. **आनन्द** :- आनन्द संवत्सर में फसलों द्वारा निर्मित वस्तुओं में महँगी–तेजी होती है। तेल, घी एवं रस पदार्थ के भावों में समानता होती है। प्रजावर्ग आनन्दित रहते हैं।

४९. **राक्षस** :- राक्षस संवत्सर में कोदो, शाली और मूँग की फसलो की हानि होती है। स्थूल धान्य की पैदावार होती है। प्रजावर्ग में वाचालता बढ़ती है।

५०. **अनल** :- अनल संवत्सर में (पाठन्तर नल) घोर अकाल पड़ता है। धान्यादि की फसलें नष्ट होती हैं। वायु प्रकोप के कारण नानाप्रकार के उपद्रव होते हैं।

५१. **पिंगल** :- हे वरानने ! पिंगल संवत्सर में दुर्भिक्ष, राष्ट्रविभाजन एवं अग्नि भय होता है। प्रजा व्याधि शोकाधि से ग्रसित समय व्यतीत करती है।

५२. **कालयुक्त** :- कालयुक्त संवत्सर में घोर विवाद, सभी फसलों में महंगाई, प्रजावर्ग को पीड़ा एवं नृप वर्ग को अधिक कष्ट होता है।

५३. **सिद्धार्थ** :- सिद्धार्थ नामक संवत्सर में जलों से लदे हुये बादल, फसलों से परिपूर्ण धरा, कठोर प्रकृतियुक्त (दयाहीन) राजागण होते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

५४. **रौद्र** :- हे देवी ! रौद्र संवत्सर में पृथ्वी पर बादलों द्वारा कम वर्षा होती है। शुक, कीट, पतंग आदि पक्षी व्याधि ग्रसित होते हैं।

५५. **दुर्मति** :- दुर्मति संवत्सर मे पृथ्वी पर सर्वत्र घोर अकाल पड़ता है, सभी राष्ट्रों में तस्कारों का भय, आपसी कलह, और राजभय से जनसमुदाय पीड़ित होता है।

५६. **दुन्दुभि** :- हे प्रिये ! दुन्दुभि संवत्सर में पृथ्वी पर सर्वत्र सुभिक्ष, हर प्रकार से कल्याण, सभी आरोग्य एवं ब्राह्मण वर्ग सुखी रहते हैं। पृथ्वी शस्य से परिपूर्ण रहती है।

५७. **रूधिरोद्गारी** :- रूधिरोद्गारी संवत्सर में हिरण्यादि धातुपदार्थों को बेचकर, चाँदी, ताँबा इत्यादि को बेचकर धान्य संग्रह करना चाहिये। इस संवत्सर में सर्वत्र दुर्भिक्ष फैलता है, घोर अकाल पड़ता है। नृप वर्ग क्रूर स्वभाव के हो जाते हैं। परस्पर राजाओं में युद्ध एवं कलह होता है। स्पल्पवृष्टि होती है सर्वत्र अशुभ लक्षण ही दिखाई देते हैं।

५८. **रक्ताक्ष** :- रक्ताक्ष संवत्सर में पृथ्वी क्षरित होती है, धान्य एवं औषधि आदि की बहुत हानि होती है। पाप और रोग की अधिकता होती है।

५९. **क्रोधन** :- क्रोधन संवत्सर में राजाओं में युद्ध होता है। नानाप्रकार के उपद्रव होते हैं, अनेक प्रकार की विषमताऐं रहती हैं। दुर्भिक्ष अधिक होता है।

६०. **क्षय** :- क्षय संवत्सर में समुद्र, पहाड़ सहित पृथ्वी कम्पायमान रहती है। सम्पूर्ण संसार में चर एवं अचर प्राणियों का विनाश होता है। सौराष्ट्र, मालव, दक्षिण और कौंकण आदि देशों में घोर अकाल पड़ता है। कौमुदी और धर्म नदी के बीच, यमुना और नर्मदा के तट के बीच विंध्याचल–सैंधव के मध्वर्ती देशों का विनाश होने की विशेष सम्भावना होती है। सिंहल कामरूप कालञ्जर आदि देशों में सभी प्रकार के उपद्रव से विशेष हानि होती है।

उत्तरभारत के पञ्चांगों में संवत्सर का फल एक समान न होकर अलग–अलग शब्दों प्रतिपादित किया जाता है। महर्षि नारद के मत से संवत्सर के राजा, मंत्री,

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सस्येश एवं धान्येश आदि ग्रहों के बलाबल जानकर तथा उनकी तात्कालिक स्थिति को ठीक से समझकर ही संवत्सर का फल निरूपण करना चाहिये।[२]

(ब) ग्रहमण्डल की विधानसभा के अधिकारियों का फल :- उत्तरभारत में प्रतिवर्ष (सम्वत्) निकलने वाले सभी पञ्चांगों में ग्रहमण्डल की विधानसभा के अधिकारियों का परिचय एवं उनका फल निरूपण किया जाता है। सम्वत् (वर्ष) के १० पदाधिकारी होते हैं–

(१) राजा (२) मंत्री (३) सस्येश (४) धान्येश (५) मेघेश
(६) रसेश (७) नीरसेश (८) फलेश (९) धनेश (१०) दुर्गेश।

उत्तरभारत में नये सम्वत् का आरम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है। इस आधार पर नये वर्ष (सम्वत्) के प्रथम वार का अधिपति ग्रह उस वर्ष का राजा होता है।[३] चूँकि चैत्रादि मासों में क्रमशः मेषादि संक्रान्तियाँ होती है अर्थात चैत्रमास (१४ अप्रैल) में मेष संक्रान्ति, वैशाख मास (१४ मई) में वृष संक्रान्ति, जेष्ठमास (१५ जून) में मिथुन संक्रान्ति, अषाढ़मास (१६ जुलाई) मं कक्र संक्रान्ति, श्रावणमास (१० अगस्त) मे सिंह संक्रान्ति, भाद्रपद (१७ सितम्बर) में कन्या, आश्विन (१७ अक्टूबर) मे तुला, कार्तिके (१६ नवम्बर) मे वृश्चिक, मार्गशीर्ष (१५ दिसम्बर) में धनु, पौष (१४ जनवरी) में मकर, माघ (१२ फरवरी) में कुम्भ, फाल्गुनमास (१४ मार्च) में मीन संक्रान्ति होती है। सूर्य की तीव्र एवं मन्द गति के कारण तारीखों में अन्तर आ जाता है। मेष संक्रान्ति जिस वार को पड़े उस वार का अधिपति ग्रह वर्ष का मंत्री (भूपति) होता है। कक्र संक्रान्ति का वारेश उस वर्ष का सस्येश होता है। इसी प्रकार तुला संक्रान्ति का वारेश रसेश एवं मकर संक्रान्ति का वारेश निरसेश (रसाधिपति) होता है।[४]

पञ्चांगों का अवलोकन करने पर हमने पाया कि जब निरयन सूर्य की मिथुन संक्रान्ति होती है उस समय जो वार होता है उस वार का अधिपति मेघेष कहलाता है। इसी प्रकार कन्या संक्रान्ति का वारेश धनेश, वृश्चिक संक्रान्ति का वारेश फलेश

---

[२] नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/१२४
[३] चैत्र शुक्ल प्रतिपदि यो वारः स नृपः स्मृतः। नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/१ परार्ध
[४] नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/२ एवं नारद संहिता, द्वितीय अध्याय, श्लोक ६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और मीन संक्रान्ति का वारेश दुर्गेश कहलाता है।[५] ये दशाधिकारी अपने–अपने पदानुसार प्रकृति के पदार्थों या विभागों का प्रतिनिधित्व करते हैं, यथा–राजा ग्रह परिषद का प्रधान होता है। मंत्री राजा का सलाहकार एवं सहयोगी, सस्येश चौमासी फलसों का स्वामी, धान्येश शीतकालीन फसलों का स्वामी, मेघेश मौसम–वर्षा–पानी का स्वामी, रसेश गुड़, खाण्ड, रसकस आदि का स्वामी, नीरसेश सर्वविधि धातु आदि व्यापार के स्वामी, फलेश फल–फूल आदि का स्वामी और दुर्गेश सुरक्षा–प्रतिरक्षा आदि का स्वामी होता है। जिस वर्ष राजा सहित जिस विभाग का स्वामी बली होता है उस वर्ष में उस विभाग से सम्बन्धित वस्तु–व्यक्ति की स्थिति शुभप्रद होती है।

महर्षि नारद के मत से यदि वर्ष का अधिपति सूर्य हो तो मध्यम फल, चन्द्रमा हो तो उत्तम फल, मंगल–शनि हो तो अशुभफल और बुध–गुरू–शुक्र हो तो अतिउत्तम फल प्राप्त होता है। आगे इन ग्रहों के बलाबल देखकर ही फल निरूपण करना उत्तम होता है।[६] ज्योतिष के फलित ग्रन्थों में उनके सूचनाकारों ने नवग्रहों के दशाधिकारी बनाने पर उनका अलग–अलग फल निरूपण किया गया है।

(स) ग्रहगोचर का फल :- गोचर (गौ+चर) का अर्थ होता है–आकाश मे चलने वाले तारे। इन निरन्तर चलने वाले ग्रहों का प्रत्येक मनुष्य पर प्रभाव पड़ता है। सूर्यादि नौ ग्रहों की तात्कालिक स्थिति का पता शुद्ध पञ्चांग से लगता है। गोचर के फल मे जन्म राशि को प्रधानता होती हैं। जन्मराशि से कोई ग्रह किस स्थान पर क्या प्रभाव डालता है यही गोचर का फल कहलाता है।

आचार्य श्री रामदैवज्ञ ने नौग्रहों का गोचरवश फल इस प्रकार बतलाया है कि जन्मराशि से ३/६/१०/११वीं राशि मे स्थित सूर्य शुभफलदायक होता है, यदि यही सूर्य शनि को छोड़कर किसी अन्य ग्रह की सप्तम दृष्टि से विद्ध हो तो अशुभफल दायक हो जाता है। मंगल, शनि एवं राहु जन्मराशि से छठी राशि में स्थित हो तो शुभ होते हैं यदि नवमी राशि पर कोई ग्रह स्थित हो तो ये विद्ध हो जाते हैं, किन्तु

---

[५] चैत्रशुक्लादिमार्त्तण्डोदयवारेश्वरोनृपः। मेषार्कदिनपो मंत्रां तदाद्यो वर्षपः परे।
आर्द्रार्ककर्कतुलाचापमकरार्कदिनेश्वराः। मेघशस्यरसा धान्यनीरसेशौ शुभैः शुभम्।।
सुगम ज्योतिष, संज्ञाध्याय प्रथम, प्रकीर्ण प्रकरण, पृ. २१३

[६] समोद्यधीश्वरः सूर्यो मध्यश्चोत्तमो। नेष्टः कुजो बुधो जीवो भृगुस्त्वतिशुभंकर।
अधमो रविजो वाच्यो ज्ञात्वा चैषा बलाबलम्। नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/२ परार्ध, ३

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सूर्य–शनि का वेध नहीं होता है। इसी प्रकार ये तीनों ग्रह तीसरी राशि पर हो तो शुभ किन्तु बारहवीं राशि पर स्थित ग्रह से विद्ध तथा ११वीं राशि में हो तो शुभ किन्तु पाँचवी राशि पर स्थित ग्रह से विद्ध हो जाते हैं।

चन्द्रमा जन्मराशि से १/३/६/७/१०/११वीं राशि में हो तो शुभ फलदायक होता है किन्तु जन्मराशि से क्रमशः ५/९/१२/२/४/८वीं राशि में कोई ग्रह हो तो यह विद्ध हो जाता है। यहाँ भी पिता–पुत्र (चन्द्र–वुध) का वेध नहीं होगा।

इसी प्रकार बुध जन्मराशि से दूसरे में शुभ–पाँचवे से विद्ध, ४थे में शुभ–३रे से विद्ध, ६ठे में शुभ–९वें से विद्ध, ८वें में शुभ–लग्नस्थ ग्रह से विद्ध, १०वें में शुभ–८वें से विद्ध, ११वें में शुभ–१२वें से विद्ध होता है।

गुरू भी जन्मराशि से ५वीं राशि में शुभ तथा चौथी राशि स्थित ग्रह से विद्ध होता है। २रे में शुभ–१२वें से विद्ध, ९वें मे शुभ–१०वें से विद्ध, ५वें में शुभ–३रे से विद्ध, ११वें में शुभ–३रे से विद्ध होता है।

शुक्र भी जन्मराशि से प्रथम (लग्न) स्थान में शुभ तथा अष्टम स्थान में स्थित ग्रह से विद्ध होता है। इसी प्रकार २–७, ३–१, ४–१०, ५–९, ८–५, ९–११, १२–, ११–३ स्थानों में क्रमशः शुभ एवं विद्ध होता है।

दुष्टग्रह (सूर्य, मंगल, शनि आदि) विपरीत वेध होने पर भी शुभ फलदायक होते हैं, यथा–मंगल ९वीं राशि पर शुभ तथा ९वीं राशि से विद्ध होता है। किन्तु किसी भी वर्ष लग्न में मंगल ९वें स्थान में हो तथा ९वें स्थान में कोई ग्रह स्थित हो तब यह मंगल शुभफलदायक होता है।

आचार्य रामदैवज्ञ ने शुक्लपक्ष में चन्दमा २–९, ९–८, ५–४ स्थानों में क्रमशः शुभ एवं विद्ध होता है।[७]

ग्रह	सूर्य				चन्द्र						शुक्लेचन्द्र			भौ.श.रा.के.		
शुभ	३	९	१०	११	१	३	९	७	१०	११	२	५	९	३	९	११
वेध	९	१२	४	५	५	९	१२	२	४	८	४	९	८	१२	९	५

[७] मुहूर्त चिन्तामणि, गोचर प्रकरण, श्लोक १–४

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

ग्रह	बुध					गुरू						शुक्र								
शुभ	२	४	६	८	१०	११	२	५	५	६	११	१	२	३	४	५	८	६	११	१२
वेध	५	३	६	१	५	१२	१२	३	४	१०	३	८	७	१	१०	६	५	११	३	६

यहाँ स्पष्ट है कि प्रत्येक ग्रह ११वें स्थान में शुभ होता है यदि उसका वेध न हो। ऊपर बतलाये शुभ स्थानों को छोड़कर अन्यत्र स्थित ग्रह का फल अशुभ होता है। यथा सूर्य का द्वितीय स्थान में अशुभ फल होगा।

मुहूर्त चिन्तामणि में वेध नियम को दो प्रकार से बतलाया है।[८] नारद के मतानुसार जन्मराशि से गोचर में कोई ग्रह शुभ स्थान में है तो उसका वेध जन्मराशि से ही देखा जायेगा।[९] यथा–गोचर में जनमराशि से सूर्य तीसरे स्थान में है तो जन्मराशि से नवमें स्थान में स्थित ग्रह से ही सूर्य का वेध होता है। कुछ अन्य आचार्यों के मतानुसार हिमालय एवं विंध्याचल के बीच वाले देश (उत्तरभारत) में ग्रहाधिष्ठित राशि से ग्रह का वेध होता है। यथा–गोचर में जन्मराशि से सूर्य तृतीय स्थान में है तो तृतीय स्थान से नवमें स्थान में स्थित ग्रह से सूर्य का वेध होता है।

महर्षि नारद के मतानुसार तारा बल से चन्द्रमा बली होता है, चन्द्रमा के बली होने पर सूर्य बली हो जाता है। संक्रमणकारी सूर्य के बली होने पर अन्य सब ग्रह बली समझे जाते हैं।[१०] जो ग्रह गोचर में वेधयुक्त हो जाता है वह शुभ या अशुभ फल को नहीं देता है। यदि शुभ और पाप दोनों ग्रह यदि अपने शत्रु ग्रह से दृष्ट हो अथवा नीचस्थ हो अथवा अस्त हो तब वह भी अपना शुभाशुभ फल नहीं देते हैं।[११]

ताराबल को मुहूर्त मार्त्तण्ड में इस प्रकार बतलाया है कि जन्म के नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तक गिनने पर प्राप्त संख्या में ६ का भाग दें यदि ३/५/७ शेष रहे तो अशुभ होता है। ताराओं के नाम इस प्रकार हैं– (१) जनम (२) सम्पत् (३) विपत्

---

८ स्वजन्मराशेरिह वेधमाहुरन्ये ग्रहाधिष्ठितराशितः सः।
हिमाद्रिविन्ध्यान्तर एव वेधो न सर्वदेशेष्विति काश्यपोक्तिः। मुहूर्त चिन्तामणि,गोचरप्रकरण,श्लोक५

९ नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/२७१–२७६

१० नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/२७०

११ नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५६/२७७–२७६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

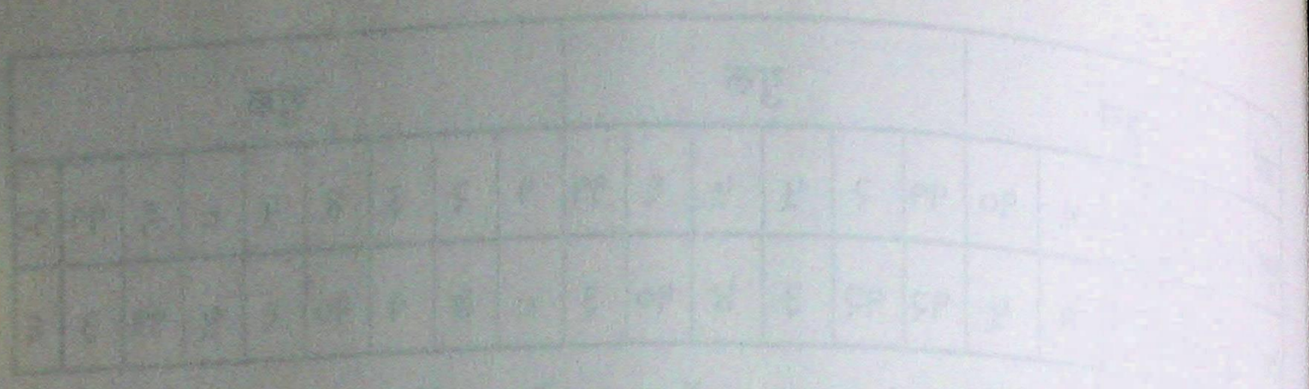

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

(४) क्षेम (५) प्रत्यरि (६) साधक (७) वध (८) मैत्र (९) अतिमैत्र। ये तारा अपने नामानुकूल फल देने वाली हैं।[१२]

ग्रहगोचर फल का समय :- महर्षि नारद के मत से सूर्य और मंगल राशि में प्रवेश के समय, शुक्र और वृहस्पति राशि के मध्य में तथा चन्द्रमा और शनि राशि के अंत (तृतीयांश) में पहुँचने पर अपना राशि सम्बन्धी फल देते हैं। बुध सर्वदा अपना शुभाशुभ फल देता है।[१३]

(द) संक्रान्ति का फल :- सभी ग्रहों में सूर्य को ही प्रधान ग्रह माना जाता है क्योंकि सभी ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं। जिस समय सूर्य एक राशि को छोड़कर दूसरी राशि में प्रवेश करता है उसे संक्रान्ति कहते हैं।[१४] सूर्य जिस राशि में प्रवेश करता है उसी राशि के नाम से संक्रान्ति को जाना जाता है। जब सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है तब मेष संक्रान्ति तथा जब वृष राशि में प्रवेश करता है तब वृष संक्रान्ति होती है। मेष संक्रान्ति और तुला संक्रान्तियों को ' विषुवती ' संक्रान्ति कहते हैं।[१५] मकर संक्रान्ति को ' सौम्यायन ' तथा कक्र संक्रान्ति को ' याम्यायन ' संक्रान्ति कहते हैं।[१६]

महर्षि नारद ने रवि आदि वारों में सूर्य की संक्रान्ति होने पर उनके भिन्न–भिन्न नाम एवं फल कहे हैं। इन्होंने रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र और शनिवार को सूर्य संक्रान्ति होने पर उसे क्रमश घोरा, ध्वांक्षी, महोदरी, मन्दा, मन्दाकिनी, मिश्रा एवं राक्षसी कहा है। यह घोरा आदि संक्रान्तियाँ क्रमशः शूद्र, चोर, वैश्य, ब्राह्मण, क्षत्रिय, गौ आदि पशु तथा चारों वर्णो के अतिरिक्त मनुष्यों को सुख देने वाली होती है।[१७]

महर्षि नारद के मतानुसार सूर्य संक्रान्ति यदि पूर्वाह्न में हो तो क्षत्रियों को मध्याह्न में हो तो ब्राह्मणों को, अपराह्न में हो तो वैश्यों को, सूर्यास्त समय में हो तो

---

[१२] मुहूर्त मार्त्तण्ड, गोचर प्रकरण, श्लोक १

[१३] पृष्ठोभवकोदपर्क्षस्थितास्त्वंत्यांतरादिषु। प्रवेशे भास्कर कुजौ भृग्वीज्यौ मध्यगौ तथा।
नारद पुराण, पूर्वभाग, २/५५/२७५

[१४] पूर्वराशिं परित्यज्य उत्तरं याति भास्करः।
सराशिः संक्रमाख्यः स्थान्मासर्त्वयनहायने।। सुगम ज्योतिष,संज्ञाध्याय,संक्रान्ति प्रकरण, श्लोक १

[१५] तुलाजौ विषवं। मुहूर्त चिन्तामणि, संक्रान्तिप्रकरण, श्लोक ४ परार्ध एवं ना.पु. २/५६/२६३ परार्ध

[१६] सौम्याम्यायनं मकरकक्रटयोर्निरूक्तम् । मुहूर्त चिन्तामणि, संक्रान्तिप्रकरण, श्लोक ३ परार्ध एवं
नारद पुराण, पूर्वभाग २/५६/२६४ पूर्वार्ध।

[१७] नारद पुराण, पूर्वभाग २/५६/२५० परार्ध–२५२ पूर्वार्ध

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

शूद्रों को, रात्रि के प्रथम प्रहर में हो तो पिशाचों को, रात्रि के द्वितीय प्रहर में हो तो निशाचरों को, रात्रि के तृतीय प्रहर में हो तो नाट्यकारों को, रात्रि के चतुर्थ प्रहर में हो तो गोपालकों को और सूर्योदय के समय हो तो लिंगधारियों (पाखण्डियों, बहरूपियों आदि) को हानि पहुँचाती है।[१८]

जबकि आचार्य श्री रामदैवज्ञ ने जिस समय सूर्य संक्रान्ति हो उस समय के वार और नक्षत्र के सम्बन्ध संक्रान्ति के भिन्न–भिन्न नाम एवं फल बतलाये हैं। इनके अनुसार यदि रविवार को उग्र संज्ञक नक्षत्र में सूर्य का राशि परिवर्तन हो तो उसे घोर संक्रान्ति कहते हैं, यह संक्रान्ति शूद्रों को सुखप्रद होती है। सोमवार को लघु संज्ञक नक्षत्र (अश्विनी, पुष्य, हस्त, अभिजित्) में सूर्य संक्रान्ति पड़े तो ध्वांक्षी संक्रान्ति कहते हैं, यह वैश्यों के लिये सुखदायक होती है। जब मंगलवार में चर संज्ञक नक्षत्र (स्वाती, पुनर्वसु आदि) में सूर्य संक्रान्ति हो तो उसे महोदर संक्रान्ति कहते हैं, जो कि चोरों को सुखी बनाती है। बुधवार में मैत्रीसंज्ञक नक्षत्र (चित्रा आदि) में सूर्य संक्रान्ति हो तो उसे मन्दाकिनी संक्रान्ति कहते हैं, जो कि क्षत्रियों को सुखी बनाती है। गुरूवार को स्थिरसंज्ञक नक्षत्र (रोहिणी आदि) में सूर्य का राशि परिवर्तन हो तो उसे मन्दा संक्रान्ति कहते हैं, यह संक्रान्ति ब्राह्मणों के लिये सुखप्रद होती है। शुक्रवार को मिश्रसंज्ञक नक्षत्र (कृतिका आदि) में सूर्य संक्रान्ति हो तो उसे मिश्रा संक्रान्ति कहते हैं, जो कि पशुओं को सुख प्रदान करती है। शनिवार को तीक्ष्णसंज्ञक नक्षत्र (जेष्ठा,मूल आदि) में सूर्य संक्रान्ति लगे तो वह राक्षसी संक्रान्ति कहलाती है, इसमें चमार, डोम आदि जाति के लोग सुखी होते हैं।[१९]

दिन का तीसरा भाग तृतीयांश कहलाता है। संक्रान्ति दिन के प्रथम तृतीयांश में हो तो वह क्षत्रिय जाति का विनाश करती है। संक्रान्ति यदि दिन के द्वितीय तृतीयांश में लगे तो वह ब्राह्मण जाति का और यदि तीसरे तृतीयांश में लगे तो शूद्र जाति का नाश करती है।[२०]

---

[१८] नारद पुराण, पूर्वभाग २/५६/२५२ परार्ध–२५४ पूर्वार्ध

[१९] घोराक्रसङ्क्रमणमुग्रवौ हि शूद्रान ध्वाङ्क्षी विशो लघुविधौ च चरर्क्षभौमे।
चौरान् महोदरयुता नृपतीन् ज्ञमैत्रे मन्दाकिनी स्थिरगुरौ सुखयेच्च मन्दा।।
विप्रांश्च मिश्रभभृगौ तु पशूँश्च मिश्रा तीक्ष्णाक्रजेऽन्त्यजसुखा खलु राक्षसी चर।
मुहूर्त चिन्तामणि, संक्रान्तिप्रकरण, श्लोक १–२ पूर्वाध

[२०] त्र्यंशे दिनस्य नृपतीन् पृथमे निहन्ति मध्ये द्विजानपि विशोऽपरके च शुद्रान्।
मुहूर्त चिन्तामणि, संक्रान्तिप्रकरण, श्लोक २ परार्ध

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पहली राशि का अन्त और अगली राशि का आरम्भ जिस बिन्दु पर होता है, उसे राशि–सन्धि बिन्दु कहते हैं। जब निरयन सूर्य का केन्द्र बिन्दु राशि सन्धि बिन्दु से मिलता है वह काल सूर्य संक्रान्ति काल कहलाता है, किन्तु इस सूक्ष्म काल का शुद्ध ज्ञान प्राप्त करना अत्यंत कठिन है। ऐसी स्थिति में मुहूर्तकारों ने पुण्यकाल का सृजन किया। पुण्यकाल में दान, जप, हवन, पुण्यकार्य, श्राद्ध, स्नानादि को महाफलदायक माना जाता है।[२१]

सूर्य संक्रान्ति काल से पहिले और बाद की १६–१६ घटियाँ (कुल ३२ घटियाँ या १२ घंटा ४८ मिनट) पुण्यकाल कहलाता है। यदि संक्रान्ति रात ठीक १२ बजे से पहिले लगे तो पुण्यकाल अगले दिन सूर्योदय से दोपहर १२ बजे तक होता है।[२२]

(इ) ग्रहण का फल :- आचार्य श्री रामदैवज्ञ ने सूर्य–चन्द्रग्रहण के राशिफल के विषय में लिखा है कि जिसके जन्म नक्षत्र पर सूर्य–चन्द्रग्रहण होता है उसका मरण होता है। जिसकी जन्मराशि पर ग्रहण लगे उसे शरीर बाधा (घात) होती है। जन्मराशि से दूसरी पर ग्रहण हो तो धनहानि, तीसरी राशि पर ग्रहण हो तो चिन्ता होती है। इसी प्रकार छठी, सातवीं, आठवीं, नवमीं, दशमीं, ग्याहरवीं एवं बारहवीं राशि पर ग्रहण हो तो क्रमशः सौख्यं, कलत्र (पत्निस्वास्थ्य हानि), मृत्यु, मानहानि, सुख, लाभ एवं हानि (अत्यधिक व्यय) होती है। ग्रहण दर्शन जनित अशुभ फल की शान्ति के लिये जप, स्वर्णदान, गोदान और शान्ति करानी चाहिये।

जिन राशियों में ग्रह का अशुभ फल हो उन राशि के लोगों का ग्रहण नहीं देखना चाहिये।[२३]

राशि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	घात	क्षति	धन	पीड़ा	चिन्ता	सौख्यं	कलत्र	मृत्यु	मानहानि	सुख	लाभ	व्यय

---

[२१] रवेः सक्रमणं राशौ संक्रान्तिरिति कथ्यते।
स्नान, दान, जप, श्राद्ध, होमादिषु महत्फलम्।। प. चिन्तामणि

[२२] संक्रान्तिकालादुभयत्र नाडिकाः पुण्या मताः षोडश षोडशोष्णगोः।
निशीथतोऽर्वागपरत्र सड्क्रमे पूर्वापराहान्तिमपूर्वभागयोः।। मु. चि., संक्रान्तिप्रकरण, श्लोक ५

[२३] जन्मर्क्षे निधनं ग्रहे जनिभतो घातः क्षतिः श्रीर्व्यथा,
चिन्ता सौख्यकलत्रदौस्थ्यभृतयः स्युर्माननाशः सुखम।
लाभोपाय इति क्रमात्तदशुभध्वस्त्यै जपः स्वर्णगो–
दानं शान्तिरथो ग्रहं त्वशुभदं नो वीक्ष्यमाहुः परे।। मुहूर्त चिन्तामणि, गोचरप्रकरण, श्लोक ६

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

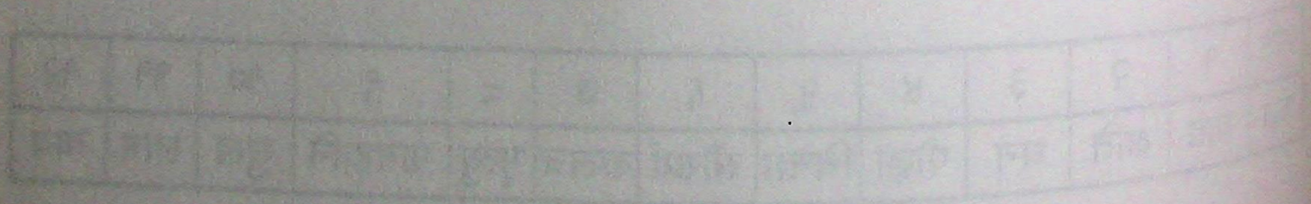

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

" उपसंहार "

भारतीय संस्कृति अपनी शक्ति और प्रेरण वेदों से ही ग्रहण करती है। वेद केवल हमारे धार्मिक, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक सिद्धान्तों के स्रोत ही नहीं हैं अपितु वे साहित्य, संगीत, कला, विज्ञान, औषधि शास्त्र, ज्योतिष शास्त्र एवं गणितशास्त्र इत्यादि के उत्स–स्थल भी हैं। वेदन अनन्त हैं– "अनन्ता वै वेदाः"। वेद शब्द का अर्थ है– ज्ञान–परमज्ञान। वेदों को अपौरूषेय कहा जाता है। श्रीमद् पुराण का कथन है कि ब्रह्मा जी ने बह्माण्ड की सृष्टि वैदिक मन्त्रों द्वारा की है। इससे स्पष्ट होता है कि सृष्टा एवं मन्त्र सृष्टा महर्षियों के पूर्व भी वेद विद्यमान थे ज्योतिष शास्त्र का आधार वेद विज्ञान है इस शास्त्र को समग्रता से समझने के लिये वैदिक विज्ञान का प्रारम्भिक ज्ञान आवश्यक है ज्योतिष का मूल सिद्धान्त है कि सम्पूर्ण विज्ञान आकाशीय पिण्डों द्वारा प्रभावित होता है। इस सम्बन्ध को वेदों में स्पष्ट रूप से दर्शाया है ज्येातिष के मूल सिद्धान्त वेदों में निहित हैं जिनके आधार पर क्रमशः वेदांग, ज्योतिष, गर्गादि, संहिताऐं एवं सिद्धान्त ग्रन्थों की रचनाऐं हुयी। प्रथम शास्त्रकारों ने ज्योतिष को भगवान वेद की आँख की उपमा देते हुये लिखा है–

वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिःशास्त्रम् कल्मषम्। (महर्षि नारद)

प्राचीनकाल में वेद और वेदांग उल्लेखित गणित के आधार पर ज्योतिषीय गणना करके मानव पूर्वानुमान एवं भविष्यवाणियाँ करता था किन्तु आज भविष्यफल कथन पञ्चांग के माध्यम से किया जाता है। पञ्चांग भारतीय ज्योतिष की कुंजी है यह काल के यथार्थ का एक प्रमुख साधन है। पञ्चांग न केवल उत्तरभारत में बल्कि सम्पूर्ण भारत में ज्योतिषीय आस्था के प्रतीक के रूप में प्रचलित है। जिस तरह गंगा के जल को लाकर भगवान शंकर के शीर्ष पर चढ़ा दिया जाता है जबकि गंगा का जल वह निर्मल नीर स्वतः भगवान शंकर की जटाओं से प्रभाहित हो रहा है ठीक उसी तरह मैने उत्तर भारत के पञ्चांगों का समीक्षात्मक अध्ययन कर पञ्चांगों की उस पुण्य भागीरथी को इस शोध विषय में प्रवाहित करने का प्रयास किया है जबकि पञ्चांग में व्याप्त ज्योतिष मेरे इस शोध विषय– **"उत्तरभारत के पञ्चांगों का समीक्षामक अध्ययन"** में स्वतः प्रभाहित हो रहा है। यह एक आश्चर्य की बात है कि उत्तरभारत में प्रचलित अनगिनत पञ्चांगों जिनमें तिथि, नक्षत्र, वार, योग व करण–इन सब में घटी–पल के आधार पर विविधताऐं होते हुये भी एकता का भाव परिलक्षित

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होता है। उत्तरभारत के पञ्चांगों का जब मैंने विशद् अध्ययन किया तब मैने पाया कि पञ्चांग का मानव जीवन से ही नहीं वरन् प्रकृति के विभिन्न आयामों से भी अटूट सम्बन्ध है। मानव जीवन की बुद्धि, शक्ति, आस्था, विवेक, भावना, क्रियाशीलता–ये सभी पञ्चांगों की क्षत्रछाया में पल्लवित होती दिखती है। यात्रायोग, ग्रहनिर्माण, शिशुजन्म, विवाह, यद्यपि मानवीय शोडषसंस्कार पञ्चांगों की सत्यता को उत्तरभारत की अवनी पर अपने अंचल में समेटे हुये है। पञ्चांगों में निहित निर्णीत सत्य कथन ज्योतिष के सारभूत केन्द्र हैं। उत्तरभारत का जनमानस पञ्चांगों की आस्था को अपने अन्तस् में समाहित किये हुये उत्तरभारत में प्रचलित विविध पञ्चांग–श्री हृषीकेष पञ्चांग, श्री महावीर पञ्चांग, विश्व पञ्चांग, श्री गणेश आपा पञ्चांग (काशी), विद्यापीठ पञ्चांग, श्री विश्वविजय पञ्चांग, श्री आर्यभट्ट पञ्चांग (दिल्ली), श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग (बम्बई), श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग (चंडीगढ़), दिवाकर पञ्चांग (जालंधर), निर्णय सागर पञ्चांग (नीमच), श्री सरस्वती पञ्चांग, शताब्दी पञ्चांग (नवलगढ़), विक्रम पञ्चांग (उज्जैन) तान्त्रिक पञ्चांग (दतिया) इत्यादि मानवीय आस्था के जीवन्त प्रमाण हैं। धर्म और संस्कृति से भरा उत्तरभारत का हृदय पञ्चांगों के बिना उसी तरह से अपने को शून्य पाता है जैसे जल विहीन कुम्भ।

परमोपयोगी एवं लोकोपकारी ज्योतिष शास्त्र का लाभ जन–जन तक पहुँचाने के लिये ज्योतिष के आचार्यों ने पञ्चांग पद्धति को अपनाया तथा वे सफल भी हुये। पञ्चांग के द्वारा प्रकृति के पाँच तत्वों के प्रतीक तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण का ज्ञान होता है। जिस प्रकार अव्यक्त शरीरी (आत्मा) का व्यक्त रूप शरीर है ठीक उसी प्रकार अव्यक्त काल का व्यक्त रूप पञ्चांग है। पञ्चांग के द्वारा न केवल शुभाशुभ घटनाओं का पूर्वानुमान होता है वरन् इसके द्वारा मनुष्यों को धर्म की सिद्धि होती है। यदि मनुष्यकाल रूपी पञ्चांग के द्वारा सही समय पर अपने कार्यो का सम्पादन करें तो निश्चित ही उसे किसी प्रकार के कष्ट का सामना नहीं करना पड़ेगा और उसे सुख शान्ति प्राप्त होगी।

गृहस्थ सम्बन्धी समस्त कार्यो को ऋषियों द्वारा आदेशित विधि से पूरा करने के लिये अनिवार्यतः प्रयुक्त होने वाले पञ्चांग रूप वस्तु में तिथ्यादि के साथ ही अन्य अनेक महत्वपूर्ण विषयों का उत्तरभारत में प्रचलित पञ्चांगों में समावेश रहता है। धार्मिक कृत्यों के सही निर्णय के लिये पञ्चांगों की महत्ता उत्तरभारत के जनसमुदाय में सर्वोपरि मानी जाती है। प्रायः यह कहा जाता है कि मनुष्य के जन्म के साथ ही

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

धर्म का अभ्युदय होता है। समग्र मानव जीवन में जप, तप, नियम, होम इत्यादि शुभ समय पर कैसे किये जायें, जिससे मानव जीवन में धर्म की अलौकिक दीप शिखा प्रज्जवलित हो, इसके लिये उत्तरभारत के धार्मिक हृदयों में पञ्चांग एक मित्र के रूप में कार्य करता है। पञ्चांग प्राण वायु है जिसका सामीप्य ग्रहण कर मानव को नवजीवन प्राप्त होता है। पञ्चांग ज्योतिष के ठोस धरातल पर खड़ा होकर भविष्य का स्पष्ट संकेत करने में पूर्ण रूपेण सफल है। इतना ही नहीं यह ज्योतिष पुरातन पीढ़ियों को नवीन सही मार्ग दिखाकर एक दिग्दर्शक का कार्य करती रही है।

भारतीय ज्योतिष विज्ञान प्रकृति के ऐसे नियमों का विज्ञान है, जिसमें भूत–भविष्य–वर्तमान समाहित हैं। आज–कल और कब क्या होगा? इसकी ज्योतिष एक साकार कहानी है। आधुनिकता की चकाचौंध के प्रमाण एवं वर्षों से उपहास का पात्र रहे इस विज्ञान की ओर लौटकर जाने वालों को रूढ़िवादी कहने वालों को प्रकृति ने अपना प्रभाव दिखाकर समयानुसार नाकाम किया है। यही कारण है अनुभव जन्य मानवों के हृदय में ज्योतिष विज्ञान आज भी प्रतिष्ठित है। मानवीय भावनाऐं, संयम व सक्षमता का परिचय ज्योतिष का सानिध्य पाकर बलबती हुई है। कार्य और कारण के सिद्धान्त पर भी हम ज्योतिष की स्थिति को समझ सकते हैं। किसी भी घटना का घटित होना उस समय विशेष में बनी ब्रह्माण्डीय स्थिति से सम्बन्धित होता है, यदि वैसी स्थिति पुनः ब्रह्माण्ड में स्थापित होती है तो भविष्य में उस घटना की पुनरावृत्ति होने की सम्भावना अवश्य बनती है क्योंकि भविष्य संश्लिष्ट रूप से अतीत एवं वर्तमान से जुड़ा होता है। जिस प्रकार मछलियों को सामुद्रिक तूफान की पूर्वानुभूति हो जाती है उसी भाँति ऋषियों द्वारा प्रणीत ज्योतिषीय सूत्रों से भूत–भविष्य–वर्तमान की सूचनाऐं ज्योतिष शास्त्र के अनुशीलन द्वारा ज्ञात की जा सकती है। भारतीय ज्योतिष शास्त्र के व्यवहारिक सिद्धान्त वैदिक काल से लेकर आज तक उत्तरोत्तर विकसित होते चले आ रहे हैं। वैदिककाल मे जहाँ यह ज्योतिष विज्ञान मात्र यज्ञ–यागादि के काल निर्धारण तक सीमिति था वही ज्योतिष विज्ञान आज मनुष्य को अनेकानेक शुभाशुभ घटनाओं की पूर्व सूचना प्रदत्त करता है। भारतीय ज्योतिष की शास्त्रसिद्ध एवं प्रयोग सिद्ध परम्परा उत्तरभारत में पञ्चांग के माध्यम से हमारे जीवन को आलोकित करती आ रही है। उत्तरभारत में पञ्चांग निर्माण की अनेक विधियाँ प्रचलित हैं, यहाँ प्रमुख रूप से सूर्यसिद्धान्त, ब्रह्मपक्ष, मकरन्द, ग्रहलाघव एवं केतकी दृश्यगणित आदि से पञ्चांगीय परिगणित किया जाता

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

है। समय–समय पर सिद्धान्त ज्योतिष के प्रमुख आचार्यो ने पञ्चांग निर्माण की पद्धतियों में परिवर्तन कर सूक्ष्मवेध यन्त्रों से प्रत्यक्ष वेध के द्वारा शुद्ध दृक प्रत्यय से तुल्यता दिखाने वाला गणित का आधार लिया। कालरूपी ईश्वर, धर्मशास्त्र एवं शुभ मुहूर्तो से सम्बन्ध रखने वाले पञ्चांग की रचना प्रत्यक्ष वेध सिद्ध दृक्तुल्य सूक्ष्म गणित से ही होनी चाहिये। यही हमारी भारतीय ज्योतिष की परम्परा है। हमारे देश में प्राचीन काल से ही ऋषि प्रणीत सिद्धान्तों द्वारा दृक्तुल्य पञ्चांगों का निर्माण होता रहा है। इसका सबसे पुष्ट प्रमाण यही है कि प्राचीनकाल से ही ज्योतिष सिद्धान्त के ग्रन्थों मे वेध से मान्यता प्राप्त करने के लिये अहर्गणों, तिथ्यादि के क्षेपकों, वर्षमान एवं अन्यान्य खगोलीय ध्रुवांकों में परिवर्तन पर परिर्वन होते रहे हैं। आर्यभट्ट, बराहमिहिर, ब्रह्मपुत्र, भास्कराचार्य, मकरन्द, केशवानन्द, गणेश दैवज्ञ एवं केतकाचार्य जैस इत्यादि अनेक गणितज्ञों एवं ज्योतिर्विदों ने काल गणना के विविध आयामों को कालक्रमानुसार उद्घाटित एवं समृद्ध किया है। मूर्धन्य ज्योतिषाचार्यो ने सिद्धान्त ग्रन्थों के आधार पर कालान्तर में आकाशस्थ ग्रह–नक्षत्रों की तात्कालीन स्थिति का वेध द्वारा दृष्टि–पर्यवेक्षण करके नवीन ग्रन्थ एवं टीकाऐं लिखी और ग्रहगणित की स्थूलता एवं व्यापकता से बचने के लिये सुलभ सारणीयाँ बनायीं, जैसे–मकरन्दाचार्य ने सूर्यसिद्धान्त के आधार पर मकरन्द्र सारणीयाँ निर्मित की। यह सुविदित है कि सूक्ष्मवेध यन्त्रों से प्रत्यक्ष वेध द्वारा दृग्गणितैक्य युक्त सिद्धान्त बनाने पर भी समय के भेद और काल गति से ग्रहों के गणित में सूक्ष्मान्तर आ ही जाता है जिसको यथा समय ज्येातिषतत्वज्ञ विद्वानों ने संस्कार द्वारा दृक्तुल्य किया है। प्रत्यक्ष वेधोपयोगी परिवर्तन की सनातन परम्परा को अपनाते हुये आचार्य श्री गणेश दैवज्ञ ने ग्रहलाघव करण ग्रन्थ की रचना की। ग्रहलाघव के उदयास्ताधिकार में इन्होंने लिखा है कि प्राचीन आचार्य कथित शुक्र के कालांश में २ अंश कम कर देने से उदयास्त का ठीक अनुभव होता है, इसे मैने स्वयं देखा है–

पूर्वोक्त भृगुचन्द्रयोः क्षणलवा स्पष्टा भृगोश्चोनिता।
द्वाभ्यं तैरूदयास्तदृष्टिसमता स्याल्लक्षितैषा मया।।

(ग्रहलाघव, उदयास्ताधिकार, श्लोक २१)

अत्यन्त सरल गणित पद्धति युक्त एवं सिद्धान्त की सभी आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाले इस ग्रन्थ का सर्वत्र शीघ्र ही प्रचलित हो जाना स्वाभाविक है। ग्रहलाघव के आधार पर निर्मित अनेक पञ्चांग उत्तरभारत में प्रचलित हैं। ज्या चापीय

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

गणित से अनभिज्ञ लोग सदियों बाद भी ग्रहलाघव को ही अपने पञ्चांग–गणित का आधार बनाये बैठे हैं जबकि ग्रन्थकार ने स्वयं उसकी भविष्य में होने वाली स्थूलता को मुक्त कण्ठ से स्वीकार करके उसमें यथा स्थितियानुसार सुधार करने को कहा है।

कोई भी सिद्धान्त कितना ही शुद्ध क्यों न हो किन्तु समय के भेद एवं काल गति से उसमे त्रुटियाँ पैदा हो जाना स्वाभाविक है। ग्रहलाघव की रचना को आज लगभग ५०० वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। इस ग्रन्थ द्वारा अहर्गण वश प्राप्त स्पष्ट ग्रह, प्रत्यक्ष वेध द्वारा आगत ग्रहों से सूक्ष्मान्तर दर्शाते हैं। लाघव गणित से स्थूल अयनांश प्राप्त होता है। आचार्य गणेश ने शक ४४४ में अयनांशाभाव मानकर अयनांश की वार्षिक गति ६० विकला मानी है जिसकी समीचीनता में संशय होता है। अतः आज ग्रहलाघव का ग्रहगणित सांतरित प्रतीत होता है। ग्रहलाघव के गणित को प्रत्यक्ष वेध द्वारा प्राप्त गणित की तुलना में अत्यन्त शिथिल देखकर दृक्तुल्य ग्रह साधन के लिये श्री वेंकटेश बापू केतकर ने " केतकी ज्योतिवर्गणित " ग्रन्थ की रचना की जिसके आरम्भ में आप लिखते हैं–

श्रीमद्गणेशरचितं ग्रहलाघवाख्यं भूमण्डलेविजयतेकरणं तथापि।
दृक्प्रत्ययंऽतिशिथिलं समभूदिदानी सद्वेघसिद्ध गणितं रचयामि तस्मात्।।

(ज्योतिर्गणित, श्लोक १)

उत्तरभारत में अनेक पञ्चांग केतकी गणितानुसार बनते हैं। सूर्यसिद्धान्त ग्रहलाघव की अपेक्षा केतकी गणित से प्राप्त स्पष्ट ग्रह वेध द्वारा आगत ग्रहों के अधिक आसन्न होते हैं। केतकी ग्रहगणित के द्वारा बने शताब्दी पञ्चांग तथा भारत सरकार के खगोलीय पञ्चांग के ग्रहों में बहुत अधिक अंतर प्राप्त नहीं होता है। श्री केतकर ने अयन की वार्षिक गति ५०.२ विकला ग्रहण की है जो कि ग्रहलाघव की अपेक्षा अधिक शुद्ध है। उत्तरभारत के अनेक पञ्चांगों में केतकी अहर्गण एवं अयनांश प्रयुक्त हो रहा है, जैसे–विद्यापीठ पञ्चांग दिल्ली, श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग शेखावटी, शताब्दी पञ्चांग नवलगढ़, श्री देवभूमि पञ्चांग इत्यादि में केतकी अहर्गण को दर्शाया है। केतकी अयनांश को लहरी अयनांश के अधिक आसन्न पाकर अनेक पञ्चांगकार लहरी अयनांश का प्रयोग भी करते हैं।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अपने शोधकार्य के अन्तर्गत मैंने पाया कि आधुनिक नवीन युक्ति के पञ्चांगों का गणित आर्य ग्रन्थों से भिन्न होने के कारण प्राचीन परम्परा के पञ्चांगकार उन्हें धर्मशास्त्रों के अनुकूल नहीं मानते हैं क्योंकि उनके अनुसार धर्मशास्त्र लिखता है– ''वाणवृद्धि रसक्षयः'' अर्थात् तिथि का परमाधिकमान ६५ घटी एवं परम अल्पमान ५४ घटी तक होता है। मैंने प्रायः अनेक पञ्चांगों में देखा कि ''वदतो व्याघातः'' ''वाणवृद्धि रसक्षयः'' कथन का उन्हीं के पञ्चांगों में विरोध हो रहा है। वास्तव में ज्योतिष के आचार्यों ने पूर्वकालीन गणितज्ञों के गणित को जहाँ–जहाँ स्थूल पाया, उसकी स्वकालीन ग्रन्थों में सूक्ष्मता गणित से सिद्ध की। इस प्रगति ने ग्रहगणित की दिशा में एक अनुकरणीय ऐतिहासिक सही मोड़ लिया। इस गणित से ''वाणवृद्धि रसक्षयः'' के स्थान पर ''सप्तवृद्धिः ७ दश १० क्षयः'' गणित को ही प्रमाणिक या आर्ष माना गया है। कुछ विद्वानों का विचार है कि देशी–विदेशी वेधाशालाओं से उपलब्ध कराये गये आँकड़ों से बने पञ्चांग भारतीय धार्मिक परम्पराओं के अनुकूल नहीं हैं। उनके मत के विषय में यही कहा जायेगा कि पञ्चांग चाहे किसी भी पद्धति का हो वह ग्राह्य तभी होगा जब उसमें दर्शाये ग्रहणकाल, ग्रहयुति, ग्रहों का उदय–अस्त एवं वक्रत्व–मार्गत्व, ग्रह–नक्षत्र युतिकाल एवं ग्रह का क्रान्तिचक्र में स्थान इत्यादि वेध द्वारा आकाश में प्रत्यक्ष दृष्टिगत हों। इनका यथार्थ अनुभव होने के लिये पञ्चांग गणित में दो तथ्यों का पूर्णतः शुद्ध होना अतिआवश्यक है– पहला किसी ग्रह का किसी समय का निश्चित स्थान, दूसरा उसकी वास्तविक गति। इन दोनों तथ्यों के शुद्ध रहने पर पञ्चांग द्वारा सर्वदा दृक्प्रत्ययद स्थिति आवेगी। दृक्प्रत्ययद स्थिति के महत्व को दर्शाते हुये फलदीपिका में लिखा है कि ज्योतिषशास्त्र में वर्णित विविध यन्त्रों की सहायता से शुद्ध एवं सूक्ष्म रूप से घटी, पलादि तक विशेष आयास पूर्वक जातक जन्मकाल स्थिर करना चाहिये। गणित एवं करण ग्रन्थों द्वारा इष्टकाल के ग्रहस्पष्ट करना चाहिये। अनेकानेक पञ्चांगों एवं करण ग्रन्थों से स्पष्ट ग्रहों के स्थान (राशि, अंश, कला, विकला) में अंतर हो तो दृक् पञ्चांग को शुद्ध मानना चाहिये। तत्पश्चात भाव स्पष्ट करके और ग्रहों एवं भावों का बलाबल ज्ञात कर फल निरूपण करें–

पदाभाद्यैर्यन्त्रैर्जननसमयोऽत्र प्रथमतो
विशेषाद्विज्ञेयः सह विघटिकाभिस्त्वथ तदा।
गतैदृक्तुल्यत्वं गणितकरणैः खेचरगतिं
विदित्वा तभ्दावं बलमपि फलं तैः कथयतु।।

(फलदीपिका, प्रथमअध्याय राशिभेद, श्लोक ३)

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत्तरभारत में सर्वत्र प्रचलित आधुनिक पञ्चांग आकाश से ठीक–ठीक नहीं मिलते हैं ऐसी स्थिति में इन पञ्चांगों में व्याप्त ग्रहस्थितियों को या तो शुद्ध किया जाना चाहिये अथवा पञ्चांग बनाने के लिये वेध सिद्ध दृक्प्रत्यय स्थिति दर्शाने वाले नवीन ग्रन्थों का निर्माण होना चाहिये। पूर्व लिखित ज्योतिष ग्रन्थों का इतिहास स्पष्ट बतलाता है कि हमारे ज्योतिषी ग्रहगणित के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव होने के लिये सदा प्राचीन ग्रन्थों में बीज संस्कार देकर नवीन ग्रन्थों का सृजन करते रहे हैं। हमें भी इस समय ऐसी करना चाहिये तभी पञ्चांगों की इस विवादास्पद स्थिति से बचा जा सकेगा।

निष्कर्षतः मैंने पाया कि उत्तरभारत में प्रचलित पञ्चांग पृथक–पृथक सिद्धान्त ज्योतिष के ग्रन्थों पर आधारित हैं। इन सिद्धान्त ग्रन्थों का सृजन भिन्न–भिन्न काल में हुआ है। इनमें पञ्चांग गणित के सूत्रीय मान (जैसे–वर्षमान, अयनगति, लंकोदय पल इत्यादि) में अंतर होने तथा तिथि, नक्षत्र, योग व करण आनयन की रीति भिन्न–भिन्न होने के कारण उत्तरभारत के पञ्चांगों में ग्रहों के वक्री–मार्गी, उदय–अस्त एवं राशि परिवर्तन इत्यादि में तथा तिथि क्षयवृद्धि के कारण व्रत–पर्वोत्सव में अंतर आ जाता है। भिन्न–भिन्न पद्धतियों एवं मत–मतान्तरों के कारण उत्तरभारत के पञ्चांगों में व्याप्त अंतर को दूर करने के लिये आज भी प्रत्यक्ष फलदायक ज्योतिषशास्त्र की पञ्चांग रूपी शाखा पर सूक्ष्म अध्ययन एवं अनुशीलन की आवश्यकता है जिसे वर्तमान में पञ्चांग निर्माताओं ने स्वीकार किया है। भारतीयों की उपेक्षावृत्ति एवं अध्ययन के प्रति दुराग्रही तथा एकांगी दृष्टिकोंण के कारण जो भ्रान्तियाँ उत्पन्न हुई हैं उनका समाधान तत्काल किये जाने की आवश्यकता है तथा इस बात की भी आवश्यकता है कि समस्त पञ्चांगकार प्रत्यक्ष सूर्यचन्द्रादि पर आधारित निर्विवादित ज्योतिषशास्त्र की एक ही शुद्ध पञ्चांगीय पद्धति का अनुसरण करें जिससे न केवल पञ्चांगों की वरन् ज्योतिष शास्त्र की महति प्रतिष्ठा को कायम रखा जा सके।

इतना मतान्तर के बाद भी अन्ततोगत्वा पञ्चांग विशेषकर उत्तरभारत में प्रचलित पञ्चांगों का समीक्षात्मक अध्ययन कर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि पञ्चांग उत्तर भारत में जनता की आस्था का सम्बल बने हुये हैं जो प्रत्यक्ष फलदायक सिद्ध हुये हैं। जिस तरह भारत की ज्योतिष भारतीय लोगों की असावधानता और उपेक्षावृत्त से यह विज्ञान विदेशियो के हाथ लगा और उन्होंने

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

इसको अपनाकर अद्भुत
एवं अंग्रेजों ने ज्योतिष सम्
ज्योतिष विद्या के प्रभाव
अमेरिका आदि उन्नत देशों
शास्त्र से मार्गदर्शन ले र
जानता ? वहाँ की जनता
विज्ञान के अनुसंधान में प्र
दशा बड़ी सोचनीय है। य
नहीं मिला। पाराशर, जैमि
खेद का विषय है कि भार
आज विदेशों में लोग लाभ
इस शास्त्र का आश्रय
समुत्थान हेतु पञ्चांगों का
हिन्दू धर्म, दर्शन, संस्कृति
चकाचौंध से दूर आकर्षण
विविध पञ्चांग सच्ची साधन
बने हुये हैं। यह निर्विवाद
संरक्षक बनकर सनातन हि
चमत्कार अपने इस शोध
पञ्चांगों के अध्ययन से यह
दिव्य मूर्ति हैं।

नाम एवं अलौकिक
म्बन्धी ग्रन्थ लिखे अं
से लोगों को आश्च
ों में चिकित्सक, पुरि
रहे हैं। ग्रीनविच की
। एवं सरकार अब
प्रयत्नशील है किन्तु
हाँ इस शास्त्र को भ
मेनी, वराहमिहिर आ
रतवासी ज्योतिष से
ा उठा रहे हैं। यही
ग्रहण कर भारतीय
। प्रणयन किया। उ
। के सदैव सजग
। विहीन मानवीय
ना से समाहित होक
द सत्य है कि उत्त
हिन्दू धर्म संस्कृति के
प्रबन्ध में दिखाने
ह पाया है कि उत्तर

था अनेक मुसलमानों
पश्चिमी संसार इस
है। इंग्लैण्ड, जर्मनी,
नोवैज्ञानिक ज्योतिष
ाला को कौन नहीं
रूपये व्यय कर इस
गम स्थान भारत की
लना चाहिये था वह
भारत में हुये; पर
ने पा रहे हैं जितना
सबसे व्यथित होकर
ारतीय संस्कृति के
त अनगिनत पञ्चांग
वैभव विलासता की
र्ये उत्तरभारत के
राट सत्य के द्योतक
मानवीय मूल्यों के
। हैं। मैंने ऐसा कोई
या है किन्तु विविध
नेकता में एकता की

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महर्षि ज्योतिष/चिन्तन

विश्व वन्दनीय महर्षि महेश योगी जी ने आत्मा में सम्पूर्ण वेद और वैदिक वाड्.मय का दर्शन प्रमाणित किया है। उनके अनुसार वेद वैदिक वाड्.मय के स्वन्दनों से, वेद प्राणी के स्पन्दनो से, अर्थात आत्मा की चैतन्य वृत्तियों से ही भौतिक शरीर के अंग–प्रत्यंग बने हैं अर्थात शरीर के दर्शन में ही वेद दर्शन हैं। शरीर के भीतर की चेतना में जो सृजनकारिणी शक्तियों की प्रक्रियाऐ है उनके ज्ञान और प्रयोगों से परिचित होकर जो आवश्यक हो सब कुछ किया जा सकता है। जिस प्रकार प्रत्येक का शरीर वेदवाणी के स्पन्दनों से बना है, उन्हीं से समस्त विश्व का शरीर बना है।

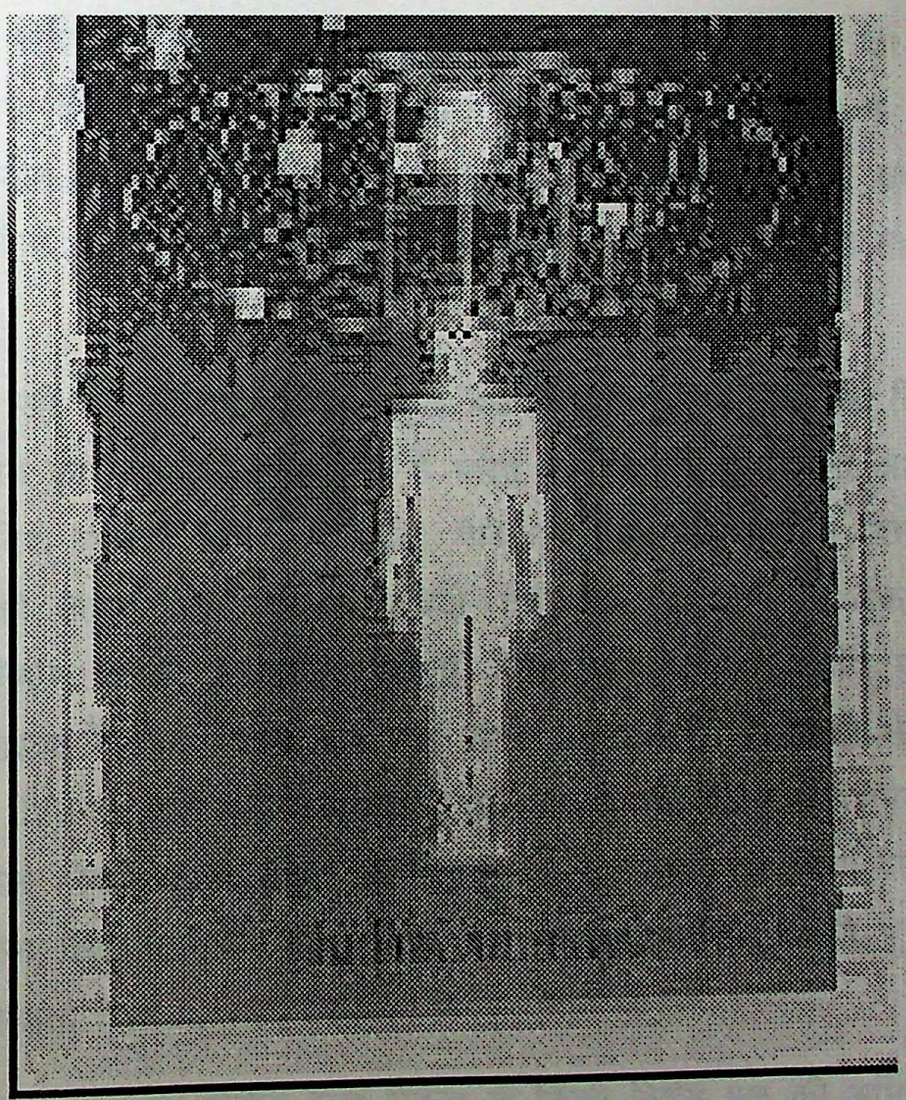

" यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे "

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

महर्षि जी के निर्देशन में इस वैज्ञानिक खोज के प्रधान अन्वेषणकर्ता डॉ. टोनी नेडर ने यह बताया है कि भौतिक शरीर के विभिन्न अंग, प्रत्यंगों और तन्तुओं का निर्माण वैदिक वाड्.मय के ४० प्रकार के चेतना स्पन्दनों से हुआ है। चाहे वह किसी भी धर्म, देश अथवा जाति का हो, वह वैदिक ही है और इन्हीं से सम्पूर्ण संसार का निर्माण होता है। यह सिद्धान्त भौतिक विज्ञान से और महर्षि चेतना विज्ञान–वेदविज्ञान से प्रमाणित है।

इस खोज से यह सिद्ध हो गया कि शरीर की बनावट में दैवीय खोज हुई है वह यह है कि सबके भौतिक शरीर का आधार जो वैदिक वाड्.मय के स्पन्दन हैं अर्थात जो ऋषि–देवता–छन्द के स्पन्दन हैं, ऋषि–देवता–छन्द इन तीन गुणों के अलग–अलग स्पन्दन हैं और वे सदा संहिता के एकत्व में स्पन्दित हैं, जिनसे शरी बना है और संचालित वैदिक वाड्.मय है। वैदिक वाड्.मयके ४० क्षेत्रों का उपयोग किसी भी क्षेत्र की सफलता के लिये किया जाता है। इस सम्बन्ध में ज्योतिष, स्थापत्यवेद, योग और आयुर्वेद का बहुत महत्व है और वास्तविकता तो यह है कि सभी ४० गुणों में से प्रत्येक गुण का महत्व है, किसी का भी दूसरे से कम महत्व नहीं है।

महर्षि जी के निर्देशन में यह बहुत बड़ी वैज्ञानिक उपलब्धि हुई कि जिस वैदिक वाड्.मय का पाठ वैदिक परिवारो में भारत में सदा से होता चला आ रहा है और जिन वैदिक ऋषियों (सप्तऋषि आदि), वैदिक देवताओं (राम, कृष्ण, शिव आदि) और छन्दों की चैतन्य सत्ता विभिन्न ऋषियो, देवी–देवताओं का रूप लेकर मानव शरीर का निर्माण करती है उसको अपनी चेतना को जगाकर महर्षि जी द्वारा मार्गदर्शित शाश्वत् वैदिक विधानों द्वारा यह संभव हो गया है कि किसी भी व्यक्ति द्वारा समस्त देवी–देवताओं की अनन्त शक्तियो को अपनी चेतना में जागृत करके ऋषि–सिद्धिवान होकर समस्त प्रकृति के नियमों का स्वामित्व प्राप्त किया जा सकता है और विभिन्न दैवी चेतनाओं की संहिता में " **अहं ब्रह्मास्मि** " की पूर्णता का अनुभव कर सकता है।

वैदिक वाड्.मय का प्रत्येक शब्द चेतना के किसी विशेष गुण की अभिव्यक्ति है और वह अपने ही गुण की अभिव्यक्ति करता हुआ भौतिक रूप लेता है। शरी सम्बन्धी भौतिक विज्ञान की खोज से यह स्पष्ट हुआ है कि आध्यात्मिक सत्ता ही अधिदैव है

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

और अधिदैव ही अधिभूत है। डॉ. टोनी नेडर ने भौतिक शरीर के तन्तुओं को गिन–गिनकर उनकी परस्पर भाषा में वेद के अक्षरों को मिलाया है और प्रकृति की भाषा–वेदवाणी का प्रयोग करके प्रकृति के भौतिक क्षेत्र पर अधिकार पाने की भूमिका सुनिश्चित की है। यह हजारों वर्षों के मानवीय इतिहास में एक नये ज्ञान सूर्य का उदय हुआ है। मानवीय जीवन के लिये प्रकृति की भाषा का प्रयोग करके चाहे जो कुछ कर सकने की योग्यता प्राप्त की जा सकती है।

महर्षि जी के अनुसार प्रकृति की भाषा वेद भाषा है। उन्होंने अपने चेतना विज्ञान का भौतिक विज्ञान के साथ जो समन्वय किया उसका विलक्षण परिणाम यह हुआ है कि मस्तिष्क का एक–एक तन्तु जो भाषा आपस में बोलता है, जिसमें की झंकार है और सृष्टि प्रक्रिया की मौलिक शब्दावली है, वह प्रकृति की भाषा वेद भाषा है। वेद भाषा के प्रयोग से प्रकृति के किसी भी क्षेत्र पर अधिकार किया जा सकता है।

महर्षि जी के अनुसार वेद प्राणी आत्मा की वाणी है। यह आत्मा की प्रकृति की वाणी है। आत्मचेतना दो गुण वाली है– (१) पुरूष का गुण (२) प्रकृति का गुण

पुरूष का गुण है– शान्त, अन्तर्मुखता में संक्षिपत।

प्रकृति का गुण है– वृत्तिमान क्रिया शीलता।

पुरूष का साक्षित्व जो अव्यक्त भाषा बोलता है वह पुरूष की मूक भाषा ही वृत्तिमान होकर, व्यक्त होकर श्रुति के रूप में प्रकृति की भाषा होती है। यही प्रकृति की भाषा वेद भाषा है। यही वेदवाणी है। वेद वाणी आत्मा के सहज स्वभाव का ही प्रवाह है।

प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा दो प्रकार से अभिव्यक्ति होती है–

१. वाणी के प्रवा में।
२. भौतिक शरीर की अभिव्यक्ति में।

पुरूषत्व के साक्षित्व के आधार पर आत्मा अखण्ड रूप से अपने स्वरूप में स्थित रहती है और अपने पुरूषत्व की प्रकृति की वृत्तियो के सहारे अपने अखण्ड एकत्व में अनन्त वृत्तिमान विश्व ब्रह्माण्ड को सत्तावान बनाये रखती है। यहीं चरितार्थ होता है–

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

" मध्याध्यक्षणे प्रकृतिः सूयते सचराचरम् "

अव्यक्त आत्मा– " स्वरूपे अवस्थानम् " गुणवाली आत्मा की प्रकृति वृत्तिमान होकर समस्त विश्व का निरयन करती है। प्रकृति की भाषा–वेदवाणी उन सहज स्वाभाविक शाश्वत नियमों का चैतन्य प्रवाह है जिससे समस्त विश्व का निर्माण एवं संचालन होता है।

जिस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति के शरीर के अंग–प्रत्यंग परस्पर जो भाषा बोलते हैं, उसी प्रकार विश्व ब्रह्माण्ड में सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र आदि जो परस्पर भाषा बोलते हैं वह वेद भाषा ही है। इसी से विश्व में सब कुछ की अनन्त अनेकताऐं परस्पर पूर्ण सम्बद्ध रहती हैं। आत्मा की वृत्तियाँ जो वेदवाणी के रूप में प्राप्त हैं–प्रकृति के नियम है जो व्यक्ति और विश्व की समस्त क्रियाओं को निरयन करते हैं। इसलियें व्यक्ति कि जीवन में, मससत विश्व में सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रादिकों का प्रभाव सदा पड़ता हरता है। व्यक्ति की बुद्धि, मन, इन्द्रियाँ, शरीर और सम्पूर्ण व्यवहार सदा बाहर से प्रभावित होता रहता है।

कर्म के विषय मे महर्षि जी का कथन है कि **" गहना कर्मणो गतिः "** कर्म का प्रभाव अत्यन्त गहन है, अत्यन्त दूरगामी है। कोई भी व्यक्ति जो कुछ सोचता है, बोलता है, कर्म करता है, व्यवहार करता है उसका प्रभाव उसके आस–पास और दूर–दूर तक जाता है–सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र आदि सब पर उसका प्रभाव दृष्टिगत होता है। प्रत्येक मनुष्य बीते हुये कुछ करता हुआ व्यक्तिकाल के प्रवाह में और पिछले जन्मों में जो कुछ करता हुआ व्यक्तिकाल के प्रवाह में चला आ रहा है उस सबका प्रभाव क्या है, कैसे अनिष्ट प्रभावों को बदला जा सकता है और कैसे भौतिक शरीर का निर्बाध रूप से विकास किया जा सकता है जिससे उसकी क्रियाऐ, चेतनमन और बुद्धि वृत्तियों को सदा स्वाभाविक रूप से ही ऊर्ध्वगामी विकास की दिशा मे प्रवृत्त करती रहें, कभी कोई ऐसा काम न हो जाये जो अपेन धर्म, कर्म, सदाचार, सदविचार के विपरीत हो– ऐसी स्वाभाविक चेतना की जागृति होती चाहिये, ऐसा शरीर का गठन हो जाना चाहिये, ऐसी वाणी बोलने की और ऐसे कार्य करने की आदत हो जानी चाहिये जो अपने या दूसरों को जीवन पर दूषित प्रभाव न डालें।

महर्षि के अनुसार स्वरूप लखण से आत्म चेतना की अव्यक्त अनन्तता को जाग्रत करके जब दैवी आराधना के पूजा विधानों में शान्त आत्म चेतना क्रियावान

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

होती है तो आत्म चेतना मे जो दैवी गुण है, जो ऋषित्वे, देवत्व और छन्दत्व के मौलिक गुण निर्गुण संहिता रूप आत्मा में है। वे जाग्रत ही जाते हैं। इस प्रकार शानत–प्रशान्त भावातीत चेतना में पुरूषत्व का संक्षिप्त और प्रकृति की क्रियाशीलता दोनों साथ–साथ जागती है। फलरूप में आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक तीनों क्षेत्रों का विकास होता है। इस वैदिक दिनचर्या के द्वारा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों की साथ–साथ प्राप्ति होती है।

महर्षि जी का भारतीय त्यौहारों के विषय में कथन है कि भारतीय जीवन की जो त्यौहार मनाने की प्रथायें हैं उनका जीवन के स्वाभाविक विकास से घनिष्ठ सम्बन्ध है। पूरे जीवन के लिये प्रत्येक दिन एक नया दिन होता है।

काल का अपार अनन्त क्षेत्र दिन, सप्ताह, मास, वर्ष, युग, चर्तुयुगी, मन्वन्तर, कल्प आदि छोटे–बड़े काल के माप की पुनरावृत्ति में बंधा है। इससे स्पष्ट है कि जो सूर्य का, चन्द्रमा का, नक्षत्र आदि का प्रभाव व्यक्ति के शरीर पर, मन, बुद्धि, अहंकार और व्यवहार पर पड़ता है वह सभी को प्रभावित करता है। दिनों के अनुसार, तिथियों के अनुसार, ऋतुओं के अनुसार, कालचक्र के अनुसार जो त्यौहार मनाने की परम्परायें अपने वेदभूमि भारत मे है वे अत्यन्त स्वास्थप्रद है, वैज्ञानिक हैं और व्यक्ति एवं समाज के सर्वविधि विकास के लिये अत्यन्त मूल्यवान है।

वेदभूमि पूर्णभूमि भारत का प्रत्येक दिन त्यौहार है। प्रत्येक दिन नया उत्सव मनाने के लिये आता है। इसका आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक सभी क्षेत्रों के विकास से पूरा सम्बन्ध है।

तिथियों के अनुसार प्रत्येक दिन किसी न किसी देवता से, ग्रहों से, नक्षत्रों से सम्बन्धित होता है। इस सबका विस्तार पञ्चांग में लिखा मिलता है। इसी के आधार पर सभी त्यौहारों और पर्वो की परम्परायें हैं, कुम्भ स्नान आदि की परम्परायें हैं। इसका जीवन के विकास से घनिष्ठ सम्बन्ध है। विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ हर दिन नये देवता का दिन है, हर दिन एक नये त्यौहार या उत्सव का दिन है।

महर्षि जी के अनुसार ग्रह शान्ति और वास्तुशान्ति की सबके लिये आवश्यकता है। उनका कथन है कि नित्य, त्रिकाल (सूर्योदय, मध्याह्न और सूर्यास्तकाल) संध्यावंदन, भावातीत ध्यान, पूजा करते हुए भी यदि कार्यो में विघ्न आते हैं, सफलता

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

कम होती है तो समझना चाहिये कि ग्रह शान्ति की आवश्यकता है, वास्तुशान्ति की आवश्यकता है, दैवी सहायेाग कम हो रहा है। इतनी सतक्रता से दैनिक जीवन वैदिक अर्थात ज्ञान समन्वित रहेगा, चतुर्दिक सफलता का राजमार्ग उसके लिये सदा खुला रहेगा।

स्थापत्यवेद की महिमा उतनी ही पारावार है, उतनी ही अपार है जितनी वेदशास्त्र के अन्य क्षेत्रों की महिमा है। यदि मकानों, ग्रामों, नगरों का निर्माण स्थापत्यवेद के आनुसार नहीं होगा तो ''वास्तु'' कुपित रहेगा और जो वहाँ रह रहे हैं उनकी बुद्धि में एक ऐसा आवरण रहेगा जो उन्हें सफलता नहीं देगा। कुटुम्ब में और भीतर–बाहर जीवन के सभी क्षेत्रों में सफलता के द्वार बन्द से रहेंगे। चिन्ता, असफलता ये सब नकारात्मक प्रभावों से वह घिरा रहेगा। स्थापत्य वेद के विधान वैदिक गणित के वे अत्यन्त प्रभावशाली, दूरगामी प्रभाव उत्पन्न करने वाले विधान हैं, जो सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रादि का भूतल पर प्रत्येक वस्तु से सम्बन्ध जोड़ते हैं, जो पर्वत, नदियाँ आदि तीर्थ माने जाते हैं– समय–समय पर उसे दर्शन का महत्व हजारों वर्षो से चला आ रहा है। यह सब भारतीय संस्कृति के विधान स्थापत्य वेद और इसके साथ–साथ ज्योतिष शास्त्र के विधान है। जो इसको आचरण में लाते है। वे सदा सुखी रहते हैं।

महर्षि ज्योतिष दो शब्दों से मिलकर बना है– महर्षि + ज्योतिष। महर्षि का अर्थ होता है–महान् दृष्टा, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर शुद्ध चेतना का विकास एवं दर्शन कराने की शक्ति होती है। ज्योतिष का अर्थ होता है– चमकीला, जो कि प्रकाश का सुन्दरतम रूप है अर्थात चेतना का प्रकाश। इस प्रकार महर्षि ज्योतिष शुद्ध चेतना के स्तर समाहित ज्योतिष है।

महर्षि ज्योतिष ऋग्वेद की गतिशील संरचना है, जो कि ऋग्वेद की संरचना में व्याप्त समस्त ज्ञात गुणों को प्रकाशित करता है। चेतना की दृष्टि से ज्योतिष के अन्तर्गत वे सभी प्राकृतिक नियम सम्मिलित हैं जो कि ऋषि की विशेषता (गुणों) को बढ़ाने में आवश्यक है।

ज्योतिष को आत्मचेतना में जागृत करके तथा यज्ञों द्वारा ग्रहों की शान्ति होने से ज्योतिष्मती प्रज्ञा का उदय किया जा सकता है भारतीय मन्त्र दृष्टा ऋषियों ने ज्योतिष को आत्मचेतना में दर्शनकर अनुभव किया। ज्योतिष जीवन का ऐसा

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

मार्गदर्शक विज्ञान है; जो " **हेयंदुःखमनागतम्** " के सिद्धान्त को सार्थक करता है। महर्षि का कथन है कि सहजता से प्रकृति के नियमों का पालन करने से आने वाले दुःख का निवारण किया जा सकता है। उनका कथन है कि व्यक्तिगत तथा सामूहिक जीवन में समस्या का मूल कारण प्राकृतिक नियमों उल्लंघन है। जाने अथवा अनजाने में प्रकृति विरूद्ध कार्य से जीवन में बाधायें आती हैं। प्रकृति का ज्ञान एवं अनुभव करने की सहज युक्ति से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के सूक्ष्म से स्थूल तत्वों तक का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है–

" अणोरणीयान् महातमहीयान् "

प्रकृति के साथ सुसंबद्धता स्थापित होने से मानवीय चेतना का वैश्विक चेतना (Cosmic Conciousness) से सम्बन्ध स्थापित होने लगता है। इस दर्शन के योग को एकीकरण या एकीकृत क्षेत्र (Unified Field) कहते हैं। भावातीत ध्यान की सहज युक्ति स्नायु संस्थान को तनाव मुक्त कर शुद्धता प्रदान करती है; जो प्रकृति के नियमों के अनुरूप मानव के चिन्तन एंव आचरण का लक्षण है। भावातीत ध्यान के नियमित अभ्यास से सूक्ष्म शरीर, ब्रह्माण्ड के सूक्ष्म परतों अथवा सौर मण्डल (Solar System) का सम्बन्ध सरलता से स्थापित होता है; जिससे ज्योतिष (ज्योतिर्विज्ञान) के मूल सिद्धान्त पुष्ट होते हैं।

ज्योतिष शास्त्र का आधार वेद विज्ञान है। इस शास्त्र को समग्रता से समझने के लिये वैदिक विज्ञान का प्रारम्भिक ज्ञान आवश्यक है। परमपूज्य महर्षि जी द्वारा प्रतिष्ठापित एवं सिद्धान्तित वेद–विज्ञान तथा प्राकृतिक नियमों को हृदयंगम करने से इस शास्त्र की वैज्ञानिकता का प्रमाण किसी भी जिज्ञासु को प्राप्त हो सकता है। परम पूज्य महर्षि जी द्वारा व्याख्यायित वेद विज्ञान के द्वारा ही, व्यक्ति और आकाशीय ग्रह–नक्षत्रों के अतिसूक्ष्म सम्बन्धों को समझने में लोग समर्थ हो सकते हैं। आधुनिक विज्ञान के सिद्धान्त उसकी ज्ञान प्रणाली आदि ज्योतिषशास्त्र को समझने, जाँचने–परखने में सर्वथा अनुपयोगी और असमर्थ सिद्ध हो चुका है और अपनी असमर्थता को छिपाने तथा साख बचाने के लिये ही तथा कथित आधुनिक वैज्ञानिक, निर्मल ज्योतिष शास्त्र को अवैज्ञानिक मनवाने की जिद पकड़े हुऐ हैं।

महर्षि जी के अनुसार "मानवीय चेतना" सभी के जीवन की धारा बदल सकती है। इसे प्राप्त कर व्यक्ति धन्य हो सकता है, महर्षि ज्योतिष, महर्षि आयुर्वेद

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

अथवा वेद विज्ञान की किसी भी शाखा का लाभ उठा सकता है और दूसरों को भी अपने ज्ञान से लाभान्वित और आनन्दित कर सकता है; इसमें सन्देह कुछ भी नहीं है परन्तु प्रश्न उठता है कि इस ''मानवीय चेतना'' को कैसे प्राप्त किया जाये? इसे सम्पूर्ण रूप से प्राप्त करने का वर्तमान में एक मार्ग पूज्य महर्षि जी प्रणीत '' भावातीत ध्यान और सिद्धि कार्यक्रम'' है। इस मानवीय चेतना को सुलभ एवं सहज रूप से प्राप्त करने के लिये सुबह–शाम ध्यान के माध्यम का आश्रय लेकर कोई भी व्यक्ति सफलता प्राप्त कर सकता है। महर्षि जी का कथन है कि चेना की चौथी अवस्था जिसे तुरीयावस्था (Transendental Conssciousness) कहते हैं– यह समस्त सम्भावनाओं का क्षेत्र (Field of All Possibilities) है। यही अवस्था सम्पूर्ण प्रकृति नियमों का निवास स्थान है। सभी देवी–देवताओं का निवास स्थान है। प्रातः सायं ध्यान करके इसे प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि इसकी विधि अत्यन्त सरल है। सिद्धि कार्यक्रम द्वारा व्यक्ति ज्योतिष्मती प्रज्ञा को जाग्रत कर सर्वज्ञ–त्रिकालज्ञ की श्रेणी प्राप्त कर सकता है। इस विद्या का प्रयोग कर महर्षि ज्योतिष द्वारा लोगों को दुखों से, कष्टों से छुटकारा दिलाया जा रहा है। सुलता पूर्वक उनके अरिष्टों का निवारण किया जा रहा है। महर्षि जी की प्रेरणा से यह कार्य विश्व कोने–कोने में चल रहा है। प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रन्थ जातकादेशमार्ग में आया है कि ग्रहों के मण्डल में संचार वश समस्त विश्व के लिये शुभ और अशुभफल होते हैं। अतः ग्रहचार वश जब वे अनिष्ट फल देते हों तो उनकी पूजा, स्तुति, प्रणाम आदि करने से उनकी शान्ति करने से अनिष्ट फल देने वाले वही ग्रह प्रसन्न होकर शुभ फल एवं लक्ष्मी प्रदान करते हैं–

'' इत्थं समस्तजगतामशुभं शुभं च संजायते हि निखिलं ग्रहचारशक्त्या।

पूजास्तुतिप्रणितिभिर्मुदिता ग्रहास्ते कुर्वन्त्यनिष्टगतयोऽपि जनस्य लक्ष्मीम्।।''

अतः प्रत्येक ज्योतिषी का यह पुनीत कर्तव्य होना चाहिये कि महर्षि जी के दिखाये मार्ग का अनुसरण करते हुए अपनी, चेतना, ज्ञान एवं ज्योतिष्मती प्रज्ञा का विकास करते हुए जन–जन तक अरिष्ट निवारण का ''हेयं दुःखमनागतम्'' का संदेश दें एवं इस शास्त्र का सम्यक् प्रयोग कर लोक को आनन्दित करें।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उल्लेखनीय है कि हमारे ऋषियों ने ध्यान साधना द्वारा ही ज्योतिष के सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रादि का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति के जीवन तथा सम्पूर्ण विश्व में सदैव पड़ता रहता है। व्यक्ति की बुद्धि, मन, इन्दियाँ, शरीर और सम्पूर्ण व्यवहार सदा बाहर से प्रभावित होता रहता है। अतः वैदिक ज्योतिष के सिद्धान्तों की सम्पूर्ण क्षमता का प्रयोग महर्षि ज्योतिष में किया जाता है।

महर्षि ज्योतिष के ९ ग्रह, १२ राशि एवं २७ नक्षत्र– ये तीन आधारभूत संघटक हैं; जो कि प्राकृतिक नियमानुसार संचालित रहते हैं। ९ ग्रहों में से ७ ग्रहों– सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरू, शुक्र और शनि को सौर्य मण्डल में देखा जा सकता है जबकि राहु, केतु दोनों को छायाग्रह माना जाता है वास्तव में राहु, केतु उस स्थान का नाम है जहाँ पर चन्द्र मार्ग, पृथ्वी मार्ग को काटता है अर्थात चन्द्रमा जब पृथ्वी के मार्ग को दक्षिण से उत्तर की ओर जाने में जिस बिन्दु को पार करता है, उसका नाम राहु (Dragon's Head) तथा उससे ठीक १८० अंशों की दूरी पर केतु (Dragon's tail) स्थित होता है। इन दोनों की गति उल्टी होती है। प्रायः १९ वर्ष में इनकी एक परिक्रमा पूर्ण होती है।

१२ राशियों के चक्र को राशिचक्र कहते हैं जिसमें प्रत्येक राशि का स्थान ३० अंश (१२ × ३०° = ३६०°) निर्धारित है। इसी प्रकार २७ नक्षत्रों के चक्र को नक्षत्र मण्डल कहते हैं। जिसमें प्रत्येक नक्षत्र का स्थान १३° २०′ (२७ × १३° २०′ = ३६०°) होता है ये दोनों चक्र स्थिर तथा ०° मेष राशि से शुरू होते हैं। ९ ग्रह इन दोनों चक्रों के अन्दर पृथ्वी के चारों ओर भ्रमणशील रहते है। पृथ्वी एवं उस पर निवास करने वाले सभी प्राणी नवग्रह से प्रभावित होते रहते हैं।

अतः महर्षि ज्योतिष एक व्यक्ति के जीवन के विभिन्न क्षेत्रों जैसे– स्वास्थ्य, व्यवसाय, परिवार, प्रेम आदि तथा संगठन कम्पनी, देश अथवा सम्पूर्ण विश्व के सम्बन्ध में वैदिक रीति से भविष्यफल बतलाने वाला विज्ञान है। इसके अंतर्गत वैदिक रीति से महर्षि यज्ञ, अनुष्ठान आदि कराके जीवन की व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान तथा सौभाग्य की प्राप्ति की जाती है। प्रत्येक व्यक्ति वर्तमान में ही महर्षि ज्योतिष की सहायता से भविष्य में अपने जीवन को सुखी, आरोग्य एवं समृद्ध बना सकता है।

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

पूर्ण ज्ञान–विज्ञान का मानचित्र

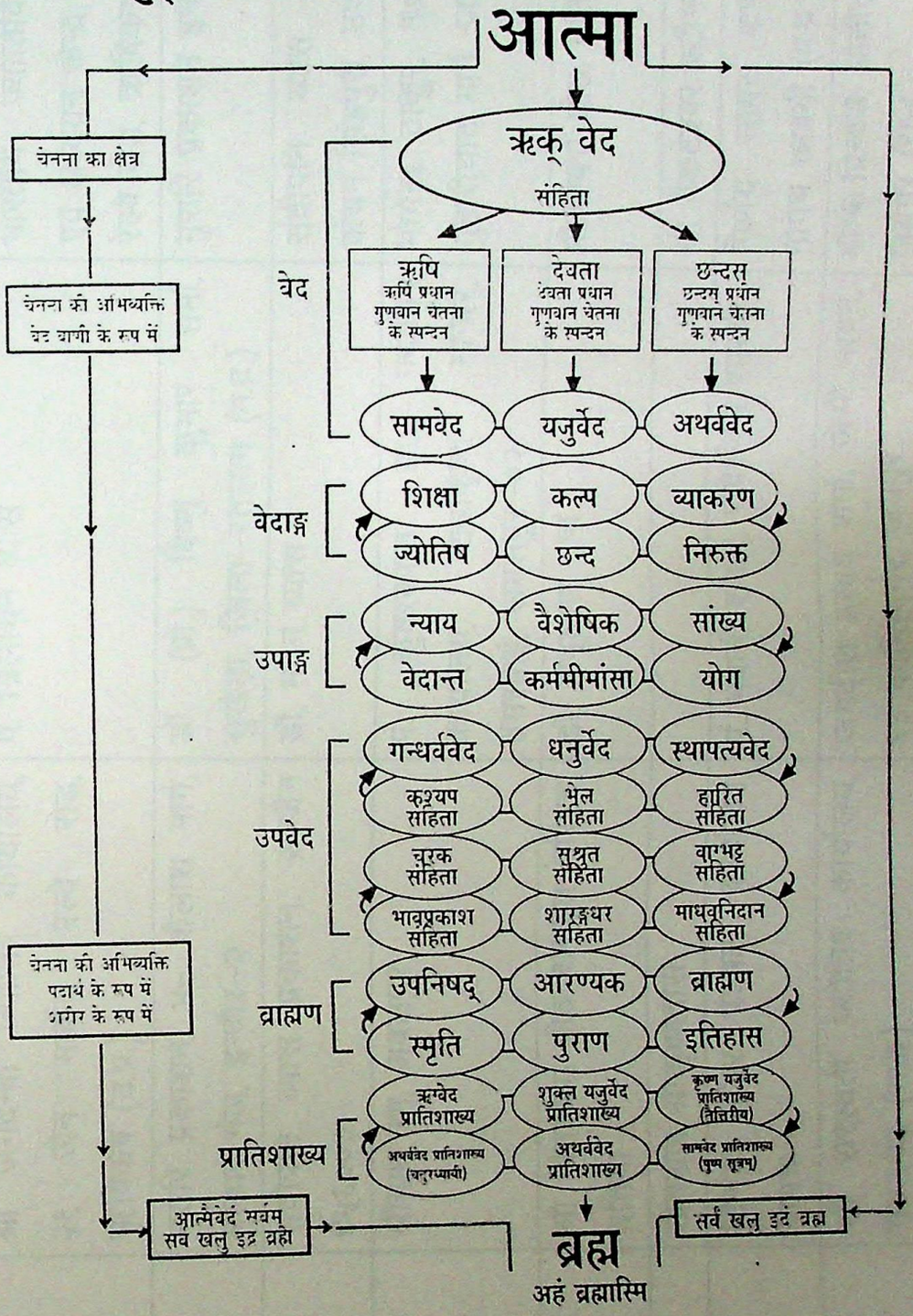

आत्मा के–आत्मचेतना के जो स्पन्दन वेद वाणी के स्पन्दन बने हैं और जो वैदिक वाङ्मय के स्पन्दनों के रूप में प्रकट हैं उन्हीं चेतना के स्पन्दनों का सबका भौतिक शरीर बना है और उन्हीं से यह समस्त भौतिक जगत बना है। जिसकी चेतना इस ज्ञान–विज्ञान में जागृत है वह ब्रह्म है–पूर्ण है।

मुद्रित : एज आफ एनलाइटनमेंट पब्लिकेशन (प्रिन्टर्स) भारत — १९९७

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

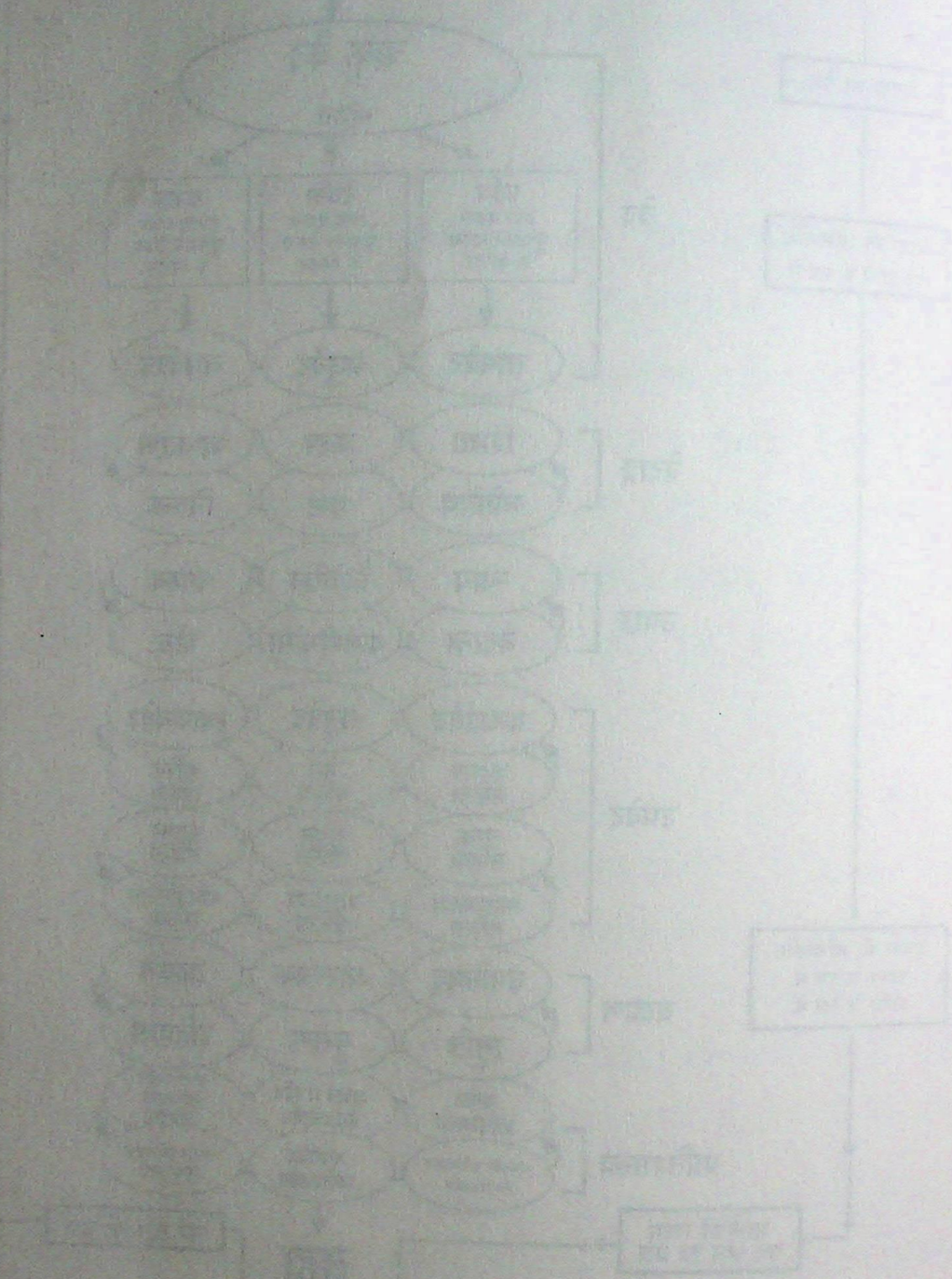

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

क्र.	पञ्चांग	प्रकाशक	सम्पादक	प्राप्ति स्थल/विक्रय स्थल
१७.	पं. श्री वल्लभ मनीराम पञ्चांग	श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई	पं. श्रीराम कुवरात्मज ग्यासीलाल शर्मा, हनुमान रोड़, विलेपार्ले, मुम्बई–५७	खेमराज श्रीकृष्णदास, मुम्बई–४
१८.	श्री वाणीभूषण पञ्चांग	श्री जगदम्बा ज्योतिष कार्यालय, २६ जैन मार्केट, रेल्वे रोड़, ऋषिकेष (उ.प्र.)	पं. त्रिलोचन व्यास	भारतीय ज्योतिर्विज्ञान अनुसंधान एवं अध्ययन केन्द्र, २६ जैन मार्केट, रेल्वे रोड़, ऋषिकेष–२४६२०१
१९.	श्री मातृभूमि पञ्चांग	मुरारि प्रकाशन, ४८ कैलाश मार्ग, मल्हार गंज, इन्दौर–२	डॉ. (प्रो.) विष्णु कुमार शर्मा, सुखेड़ा, जिला–रतलाम (म.प्र.)	मुरारि प्रकाशन इन्दौर
२०.	विक्रम विजय पञ्चांग	संदीपनि व्यास प्रकाशन, उज्जैन ४५६००३	डॉ. मदन व्यास	संदीपनि व्यास प्रकाशन, १४३ कंचन सिंहपुरी, उज्जैन–०६
२१.	लोक विजय पञ्चांग	श्रीनाथ झा, जबलपुर	पं. कुंवरकान्त झा, ज्योतिष कार्यालय, राधाकृष्ण मन्दिर, तमरहाई, जबलपुर–०२	भोगेन्द्र ठाकुर, १७०४, पॉलीपाथर, गुहारीघाट मार्ग, जबलपुर–०८
२२.	तांत्रिक पञ्चांग	श्री पीताम्बरा पीठ संस्कृत परिषद, दतिया	डॉ. बाबूलाल गुप्त	पीताम्बरा पीठ, दतिया (म.प्र.)
२३.	शताब्दी पञ्चांग	खेमराज श्रीकृष्णदास		श्री वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, मुम्बई
२४.	निर्णय सागर पञ्चांग	निर्णय सागर पञ्चांग कार्यालय, नीमच	पं. भवानी शंकर, रविशंकर शास्त्री	निर्णय सागर पञ्चांग कार्यालय, नीमच छावनी (म.प्र.)
२५.	श्री सरस्वती पञ्चांग	श्री सरस्वती ज्योतिष कार्यालय, नवलगढ़ (राज.)	जगदीश प्रसाद शर्मा, जे.पी. भवन, ४४ कान्तिनगर, जयपुर	बॉम्बे प्रिन्टर्स, मोतीलाल अटल रोड़ जयपुर (राज.)

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Kachhwahi, Jabalpur (M.P.) Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

क्र.	पञ्चांग	प्रकाशक	सम्पादक	प्राप्ति स्थल/विक्रय स्थल
८.	विश्वविजय पञ्चांग	ज्योतिष्मती प्रकाशन, सोलन १७३२१८ (हि. प्र.)	श्री सुधाकर शर्मा त्रिवेदी, सोलन	
९.	असली पञ्चांग	धर्मसन प्रकाशन	पं. जैनी जियालाल जी चौधरी, फरूखनगर, जिला–गुड़गांव, (हरि.)	धर्मसन प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली – ११०००६
१०.	श्री मार्त्तण्ड पञ्चांग	मार्त्तण्ड पञ्चांग कार्यालय कुराली, रोपड़	डॉ. प्रियदत्त शर्मा, डॉ. शक्तिधर शर्मा, डॉ. इन्दुशेखर शर्मा	रूचिका पब्लिकेशन्स, ७/६४११, देवनगर, आर्यसमाज मार्ग, करोलबाग, नई दिल्ली–११०००५
११.	पञ्चांग दिवाकर	पं. देवी दयाल ज्योतिषी एण्ड सन्स माई हीरां गेट, जालन्धर शहर	पं. सुनील शर्मा	धर्मसन प्रकाशन
१२.	श्री ब्रजभूमि पञ्चांग	श्री राजधानी पञ्चांग कार्यालय, दिल्ली	पं. श्री कौशल किशोर कौशिक	श्री ब्रजभूमि पञ्चांग कार्यालय, जी–६७ जगजीत नगर, दिल्ली ११००५३
१३.	रामजन्मभूमि पञ्चांग	विंध्येश्वरी प्रसाद शुक्ल	विंध्येश्वरी प्रसाद शुक्ल	श्रीरामजन्मभूमि पञ्चांग कार्यालय, हनुमान गढ़ी, अयोध्या
१४.	राष्ट्रीय पञ्चांग (हिन्दी)	प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार	एस. के. भटनागर, कलकत्ता	दी पोजिशिनल एस्ट्रोनॉमी सेन्टर, डिपार्टमेन्ट ऑफ मिहिरीयोलॉजी, न्यू अलीपुर, कलकत्ता
१५.	लहरी इण्डियन एफेमेरीज		श्री ए. के. लहरी	एस्ट्रो रिसर्च ब्यूरो, १७ ब्रिन्दावन मुलिक प्रथम पंक्ति, कलकत्ता–०६
१६.	दृश्य ग्रह स्थिति पञ्चांग	शा. जीवाजी वेधशाला, उज्जैन	निदेशक, जगदीश कुमार रघुवंशी	विक्रय पर्यवेक्षक, शा. जीवाजी वेधशाला, उज्जैन

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV) Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत्तरभारत के प्रमुख पञ्चांगों की सूची

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

उत्तरभारत के प्रमुख पञ्चांगों की सूची

क्र.	पञ्चांग	प्रकाशक	सम्पादक	प्राप्ति स्थल/विक्रय स्थल
१.	काशी विश्वनाथ पञ्चांग	हृषीकेष प्रेस एण्ड पब्लिकेशन्स बी २/१११ भदैनी, वाराणसी	घनश्याम उपाध्याय, अजय उपाध्याय	हृषीकेष पञ्चांग कार्यालय, बी–२/१०६ वाराणसी–२२१००१
२.	विश्व पञ्चांग	पञ्चांग विभाग प्राच्य विद्या धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी	ज्योतिष विभागाध्यक्ष, प्रा.वि.ध.वि.सं. का.हि.वि.वि. वाराणसी–२२१००५	ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स बुक सेलर्स, कचौड़ी गली, वाराणसी–२२१००१ (उ.प्र.)
३.	गणेश आपा पञ्चांग	राजराजेश्वरी पुस्तकालय प्रकाशन, वाराणसी	डॉ. गणेश म्हस्कर	राजराजेश्वरी पुस्तकालय, कालभैरव मार्ग, वाराणसी–२२१००१
४.	श्री महावीर पञ्चांग	ठाकुर प्रसाद बुक सेलर, चौक, वाराणसी	श्री रामेश्वर नाथ ओझा बी–२०/१५६ भेलूपुर, वाराणसी	ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स बुक सेलर्स, कचौड़ी गली, वाराणसी–१
५.	बापूदेवशास्त्री प्रवर्तित दृक्सिद्ध पञ्चांग	सं.सं.वि.वि. वाराणसी–२२१००२	ज्योतिष विभागाध्यक्ष, वेद वेदांग संकाय सं.सं.वि.वि. वाराणसी–२	विक्रयाधिकारी, विक्रय विभाग, सं.सं.वि.वि. वाराणसी–२२१००२
६.	विद्यापीठ पञ्चांग	ज्योतिष विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली	कुलपति, निदेशक ज्योतिष पाठ्यक्रम ज्योतिष विभागाध्यक्ष	विक्रय विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, कटवारीया सराय, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली
७.	श्री आर्यभट्ट पञ्चांग	धर्मसन प्रकाशन	धर्मपाल अग्रवाल, आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र २/४५–ए, वैस्ट ऐवन्य मार्ग, पंजाबी बाग, नई दिल्ली–२६	धर्मसन प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली – ११०००६

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.
Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

उत्तरभारत के प्रमुख पञ्चांगों की सूची

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

उत्तरभारत के प्रमुख पञ्चांगों की सूची

क्र.	पञ्चांग	प्रकाशक	सम्पादक	प्राप्ति स्थल/विक्रय स्थल
१.	काशी विश्वनाथ पञ्चांग	हृषीकेष प्रेस एण्ड पब्लिकेशन्स बी २/१११ भदैनी, वाराणसी	घनश्याम उपाध्याय, अजय उपाध्याय	हृषीकेष पञ्चांग कार्यालय, बी–२/१०६ वाराणसी–२२१००१
२.	विश्व पञ्चांग	पञ्चांग विभाग प्राच्य विद्या धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी	ज्योतिष विभागाध्यक्ष, प्रा.वि.ध.वि.सं. का.हि.वि.वि. वाराणसी–२२१००५	ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स बुक सेलर्स, कचौड़ी गली, वाराणसी–२२१००१ (उ.प्र.)
३.	गणेश आपा पञ्चांग	राजराजेश्वरी पुस्तकालय प्रकाशन, वाराणसी	डॉ. गणेश म्हस्कर	राजराजेश्वरी पुस्तकालय, कालभैरव मार्ग, वाराणसी–२२१००१
४.	श्री महावीर पञ्चांग	ठाकुर प्रसाद बुक सेलर, चौक, वाराणसी	श्री रामेश्वर नाथ ओझा बी–२०/१५६ भेलूपुर, वाराणसी	ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स बुक सेलर्स, कचौड़ी गली, वाराणसी–१
५.	बापूदेवशास्त्री प्रवर्तित दृक्सिद्ध पञ्चांग	सं.सं.वि.वि. वाराणसी–२२१००२	ज्योतिष विभागाध्यक्ष, वेद वेदांग संकाय सं.सं.वि.वि. वाराणसी–२	विक्रयाधिकारी, विक्रय विभाग, सं.सं.वि.वि. वाराणसी–२२१००२
६.	विद्यापीठ पञ्चांग	ज्योतिष विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली	कुलपति, निदेशक ज्योतिष पाठ्यक्रम ज्योतिष विभागाध्यक्ष	विक्रय विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ कटवारीया सराय, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली
७.	श्री आर्यभट्ट पञ्चांग	धर्मसन प्रकाशन	धर्मपाल अग्रवाल, आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र २/४५–ए, वैस्ट ऐवन्य मार्ग, पंजाबी बाग, नई दिल्ली–२६	धर्मसन प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली – ११०००६

CC-0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.
Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

परिमितोऽयं शोध प्रबन्धः

सदानन्द शुक्लः
27.4.2002

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

-: सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

१.	**ऋग्वेद**	:	श्रीराम शर्मा, आचार्य, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
२.	**यजुर्वेद**	:	श्रीराम शर्मा, आचार्य, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
३.	**अथर्ववेद**	:	श्रीराम शर्मा, आचार्य, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
४.	**ऋग्वेद संहिता**	:	वेनीराम शर्मा
५.	**ऋग्वेद संहिता**	:	सायण भाष्य काशी से प्रकाशित
६.	**अथर्ववेद संहिता**	:	बेनीराम शर्मा
७.	**अथर्ववेद संहिता**	:	बेनीराम शर्मा
८.	**तैत्तिरीय ब्राह्मण**	:	आनन्दाश्रम, पूना
९.	**ऋग्वेद ज्योतिष**	:	सोम–सुधाकर भाष्य
१०.	**याजुष ज्योतिष**	:	मास्टर खिलाड़ीलाल एण्ड सन्स, काशी
११.	**अथर्व ज्योतिष**	:	सुधाकर सोमकर भाष्य सहित, मास्टर खिलाड़ीलाल एण्ड सन्स, काशी
१२.	**वेदांग ज्योतिष**	:	वेंकटेश्वर प्रेस, बम्बई
१३.	**बृहद् नारदीय पुराण**	:	तारिणीश झा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
१४.	**नारद संहिता**	:	
१५.	**मनुस्मृति**	:	हरिहर पाण्डेय द्वारा सम्पादित
१६.	**याज्ञवल्क्य स्मृति**	:	चौखम्बा संस्कृत सीरीज, वाराणसी
१७.	**पारस्कर ग्रह्यसूत्र**	:	महादेव गंगाधर वापरे द्वारा सम्पादित
१८.	**सूर्यसिद्धान्त**	:	पं. माधव प्रसाद पुरोहित, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान नई दिल्ली
१९.	**ब्रह्म सिद्धान्त**	:	ब्रजभूषण दास एण्ड सन्स, काशी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

२०.	**ब्राह्मस्फुट सिद्धानत**	:	बनारस संस्कृत सीरीज
२१.	**आर्य सिद्धान्त**	:	ब्रजभूषण दास एण्ड सन्स, बनारस
२२.	**आर्य भटीय**	:	
२३.	**बटेश्वर सिद्धान्त**	:	इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ एस्ट्रोनॉमिकल एण्ड संस्कृत रिसर्च, नई दिल्ली
२४.	**सिद्धान्त शिरोमणि**	:	केदारदत्त जोशी, काशी विश्वविद्यालय
२५.	**सिद्धान्त शिरोमणि**	:	रामनाथ मजूमदार स्ट्रीट हरिसन रोड़, कलकत्ता
२६.	**ताजिक नीलकण्ठी**	:	
२७.	**ग्रहलाघव**	:	डा. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
२८.	**ग्रहलाघव**	:	केदारदत्त जोशी, मोतीलाल बनारसी दास
२९.	**सर्वानन्दकरणम्**	:	सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी
३०.	**मकरन्द सारणी**	:	
३१.	**मकरन्द प्रकाश**	:	पं. लवणलाल झा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
३२.	**केतकी ज्योतिर्गणित**	:	श्रीयुत वैंकटेश रामकृष्ण केतकर
३३.	**कतकी ग्रहगणितम्**	:	श्रीरामकृष्णसूनुः श्री वेंकटेश
३४.	**ज्योतिर्गणित**	:	खेमराज श्री कृष्णदास प्रकाशन, बम्बई
३५.	**माधुरी खण्ड दो**	:	ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स, वाराणसी
३६.	**वृहत् संहिता**	:	चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी
३७.	**बृहज्जातकम्**	:	मास्टर खिलाड़ी लाल एण्ड सन्स
३८.	**मानसागरी पद्धति**	:	चौखम्बा संस्कृत सीरीज, काशी

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

३९. **मानसागरी पद्धति** : कल्याण – मुम्बई

४०. **केशवीय जातक** : पं. जगदीश प्रसाद, खेमराज, मुम्बई

४१. **नारदीय ज्योतिष** : डॉ. बिन्दा प्रसाद मिश्र, विद्यानिधि प्रकाश, नईदिल्ली

४२. **मुहूर्त चिन्तामणि** : चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी

४३. **मुहूर्त मार्त्तण्ड** : चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी

४४. **सचित्र ज्योतिष शिक्षा**: (द्वितीय खण्ड) बाबूलाल ठाकुर, मोतीलाल बनारसीदास

४५. **भारतीय ज्योतिष** : श्री शिवनाथ झारखण्डी, उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

४६. **भारतीय ज्योतिष** : डॉ. नेमीचन्द शास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ नईदिल्ली

४७. **सारावली** : मोतीलाल बनारसीदास

४८. **फलदीपिका** :

४९. **सुगम ज्योतिष** : केदारदत्त जोशी

५०. **वृहदवकहड़ा चक्रम्** : चौखम्बा पब्लिशर्स, वाराणसी

५१. **भारतीय लग्न सारणी**: गोपेश कुमार ओझा, मोतीलाल बनारसीदास

५२. **प्राचीन भारत** : रामशरण शर्मा शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

CC0. Maharishi Mahesh Yogi Vedic Vishwavidyalaya (MMYVV), Karoundi, Jabalpur,MP Collection.